CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

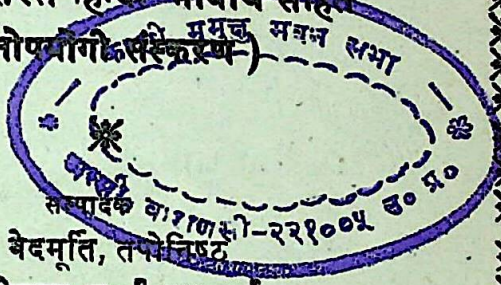
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवी भागवत

[प्रथम खण्ड]

(मूल एवं सरल हिन्दी भाष्य सहित
जनोपयोगी संस्करण)



वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

चारों वेद, १०८ उपनिषद्, षट् दर्शन, २० स्मृतियाँ
योग वासिष्ठ, १८ पुराणों के प्रसिद्ध
भाष्यकार और लगभग १५० हिन्दी-
ग्रन्थों के रचयिता।

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

खवाजाकुतुब (वेदनगर) बरेली-२४३००३ (उ० प्र०)

फोन नं० ७४२४२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशक :

डॉ० चमन लाल गौतम

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)

बरेली २४३००३ (उ० प्र०)

फोन : ७४२४२

❀

सम्पादक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

❀

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन



❀

संशोधित संस्करण

सन् १९८९

❀

मुद्रक :

शैलेन्द्र वी० माहेश्वरी

नव ज्योति प्रेस

सेठ भीकचन्द मार्ग, मथुरा (उ० प्र०)

❀

मूल्य :

अठारह रुपये मात्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमिका

भारतीय-धर्म की तीन प्रमुख शाखायें हैं—शैव, वैष्णव और शाक्त। इनके अतिरिक्त सौर, गाणपत्य आदि कुछ शाखायें पहिले और भी पाई जातीथीं, पर अब उनका चिह्न मात्र ही कहीं-२ दृष्टिगोचर होता है। इन तीन प्रमुख शाखाओं की अनेक उपशाखायें भी प्रचलित हो गई, जिनको लोग स्वतन्त्र सम्प्रदाओं के रूप में मानते हैं। पर जब उनके मूल तत्व पर विचार किया जाता है तो उनको इन्हीं तीन में से किसी के अन्तर्गत पाया जाता है। वैसे दार्शनिक सिद्धान्त अथवा अध्यात्म ज्ञान की दृष्टि से इन तीनों शाखाओं का समावेश भी एकही आत्म तत्व मूलक धर्म में किया जा सकता है, और अनेक प्राचीन तथा नवीन समन्वयवादी विद्वानों ने ऐसा किया भी है। पर व्यवहार रूप में इनके अनुयायियो में इतना पार्थक्य दिखलाई पड़ता है और इनके साम्प्रदायिक ग्रंथों में इतना भेदभाव मिलता है कि अधिकांश विद्वान इनका वर्णन पृथक्-पृथक् ही करते हैं।

यदि शास्त्रोक्त विवेचन की दृष्टि से विचार किया जाय तो शक्ति पूजा भी उतनी ही प्राचीन है जितनी की शिव और विष्णुकी उपासना सभी सम्प्रदायों के पुराण-ग्रंथों में एक सर्वोपरि परमात्मा तत्व से एक ही साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेश और महाशक्ति (देवी) की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। सबसे पहले संसार के आदि-ग्रंथ वेद ने ही इस सिद्धान्त का बड़े स्पष्ट रूप में प्रतिपादन किया है—

इन्द्रं मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥
(ऋग्वेद १-१६४-४६)

अर्थात्—'वह सत्-तत्व (परमात्मा) एक-ही है यद्यपि ज्ञानी लोग अपने स्वतंत्र विचारानुसार उसका वर्णन इंद्र, मित्र, वरुण, अग्नि, गरुण, यम मातरिश्वा (वायु देव) आदि अनेक नामों और रूपों में करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋग्वेद के देवी सूक्त में यह भी कहा गया है कि वह आदि शक्ति समस्त देव शक्तियों का मूल स्रोत है—

"मैं रुद्रों और वसुओं के साथ विचरण करती हूँ । मैं आदित्यों और देवों के साथ रहती हूँ। मैं मित्र और वरुण को धारण करती हूँ और मैं ही इंद्र, अग्नि, अश्विनी कुमारों का आश्रय स्थान हूँ।"

वेदों के अर्थ स्पष्ट करने वाले 'निरुक्त'में भी इसी तथ्य का संक्षेप में प्रतिपादन किया गया है।

महाभाग्याद् देवताया एक आत्मा, वहुधा स्तूयते।

अर्थात्—अपनी विशिष्ट शक्ति के अनुसार एक ही आत्माकी स्तुति अनेक रूपों में की जाती है।"

वैदिक साहित्य के अन्य ग्रंथों में भी जगह-जगह 'भगवती-शक्ति' का उल्लेख इन्हीं भावों की पुष्टि करते हुए किया गया है —

यदन्तः स्थानि भूतानि यतः सर्व प्रवर्त्तते।
यदाहुस्तत् परं तत्व सैका भगवती सदा॥

अर्थात्—"यह स्थूल-सूक्ष्म समस्त प्रपंच जिस सूक्ष्म-स्वरूप में विलीन रहता है, और जिसकी इच्छा से सचराचर जगत् के रूप में प्रकट होता है, जो स्वयं 'भगवती' शब्द द्वारा कीर्तित होता हैं वही परम तत्व हैं।"

ययेदं भ्राम्यते विश्वं योयिभिर्या विचिन्त्यते।
यद्भासा भासते विश्व सैका दुर्गा जगन्मयी॥

अर्थात्—"जिसके द्वारा यह संसार चक्र चलता रहता है,योगीजन जिसका सदैव चिन्तन करते हैं, जिसके प्रकाश से यह समस्त जगत् प्रकाशित हो रहा है। वही जगद्व्यापी दुर्गा तत्व है।"

पुराणों में सर्वत्र 'देवी' अथवा 'शक्ति' की महिमा गाई गईहै और उसे जगत् की संचालिका तथा आदि शक्ति वतलाया गया है—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ब्रह्म की चित्-शक्ति चैतन्य शरीर में स्पंदन-शक्ति वायु में और जड़ शक्ति पत्थर आदि में दृष्टिगोचर होती है।"

"वह देवीही एक मात्र अद्वितीय, सर्वगामी, सूक्ष्म, कूटस्थ, अचल और नित्य स्वरूप है। योगीजन ही उसके उपाधि रहित परमपद के दर्शन करने में समर्थ हैं और वे ही उसके परात्पर तत्व, शाश्वत, कल्याणकारी और अविनाशी स्वरूप का अनुभव कर सकते हैं।"

(कूर्म पुराण)

शक्ति ही विश्व का मूल आधार है—

समस्त हिन्दू-शास्त्र इस प्रकार के वाक्यों से भरे पड़े हैं। अतएव में इस देश के प्राचीर ब्रह्मज्ञानी मनीषी जानते थे कि 'अग्नि' और 'उष्णता' में शब्द-भेद के कारण अन्तर मानना और उसे सिद्ध या असिद्ध करने के लिए ऊहापोह करना समय को बर्बाद करना अथवा कोरा वाग्विलास है। वे जानते थे कि परब्रह्म (चैतन्य-सत्ता) तथा प्रकृति (जड़-तत्व) अनादि और अनन्त है और इनके संयोगसे ही विश्व में तरह-तरह के परिवर्तन होते रहते हैं। इनमें से सृष्टि का विकास होने पर जो रचनात्मक, स्थित्यात्मक और संहारात्मक शक्तियाँ कार्य करने लगती हैं, उन्हीं की व्याख्या 'त्रिदेव' के रूप में की गई है। आगे चलकर इस तत्व को सामान्य लोगों को समझाने के लिए कुछ विद्वानों ने विष्णु की वैष्णवी-शक्ति, ब्रह्मा की ब्रह्माणी-शक्ति और रुद्रकी रुद्राणी शक्ति का वर्णन करके प्रत्येक देव-तत्व के दो विभाग कर दिये और उनके आधार पर धर्म-भावना की वृद्धि के लिये पौराणिक उपाख्यानों की रचना होने लग गई। इन उपाख्यानों में से अनेक वैदिक सिद्धान्तों, सृष्टि रचना के नियमों और गूढ़ प्राकृतिक शक्तियों की सरल व्याख्या करने के उद्देश्य से रचे गये और कितनों का ही उद्देश्य लोगों को धार्मिक-भावों ओंर सत् कर्मों की प्रेरणा देना था। कितने ही पुराण रचयिताओं ने कम बुद्धि वाले स्त्री-पुरुषों को समझाने और आकर्षित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने के लिये अनेक अतिरंजित कथायें भी इनमें सम्मिलित कर दी हैं। आलोचकगण अथवा अन्य धर्मों के खण्डन-मण्डन करने वाले प्रचारक प्रायः इन्हीं बातो को लेकर तरह तरह के आक्षेप करने लगते हैं। पर वास्तविकता यही है कि वे या तो मूलतत्व से अपरिचित होते हैं या जान बूझकर केवल अपने व्रतिपक्षी की निन्दा करना ही उनका उद्देश्य है।

आधुनिक काल के विद्वानों ने भी इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया है और अन्त में वे इसी निर्णय पर पहुँचे हैं कि चाहे आज का अशिक्षित जन-समुदाय भ्रम में पड़कर देवी-पूजा के सम्बन्ध में कैसे भी अन्ध विश्वासों का पालन क्यों न कर रहा हो पर यदि इसके शुद्ध रूप पर विचार किया जाय तो यह सृष्टि-क्रम के मूल तत्व का ही परिचायक है। इस सिद्धान्त की विवेचना करते हुए भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान तथा साधक स्वामी शिवानन्द जी ने प्राचीन और अर्वाचीन सिद्धान्तों का ससन्वय करते हुए जो विचार प्रकट किये हैं वे निःसन्देह मनन करने योग्य हैं—

देवी अथवा 'शक्ति' का आशय उस सत्ता से है जो समग्र सृष्टिको उत्पत्ति, स्थिति और लय का मूल है। वास्तव में जैसा सामान्यतः माना जा रहा है देवी-पूजा, यह कोई सम्प्रदाय अथवा किसी तरह के 'तान्त्रिक-चक्र' का गुप्त भेद नहीं है। अथवा जन साधारण का बिश्वास है, यह देवी विष्णु या शिव की अर्द्धाङ्गिनी के रूप में भी नहीं है। 'देवी अथवा शक्ति का उल्लेख हम सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान चराचर जगत् की उत्पत्ति के कारण रूप में ही करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो जगत् की उत्पत्ति का मूल का कारण अक्षर ब्रह्म का व्यक्त स्वरूप यह शक्ति' ही है। परमात्मा इसी में दिखाई पड़ने वाली शक्तिके द्वारा जगत की उत्पत्ति स्थिति करता है, शक्ति के द्वारा ही संरक्षण संहार और शक्ति द्वारा ही लय करता है। शक्तिमान एक ही है। सत्ता के मूल को पृथक् नहीं किया जा सकता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिए शक्ति-पूजा का अर्थ प्रभु की महिमा और प्रमुख तथा सर्वोपरि होनेकी पूजाहै। यह सर्वशक्तिमान की आनन्दमय सेवाहै। यह बड़े खेद की बात है कि कितने ही लोग देवी को रक्त की प्यासी हिन्दू देवी' के नाम से याद करते हैं। देवी केवल हिन्दुओं की ही नहीं है, 'देवी' किसी एक विशेष धर्म से सम्बन्धित भी नहीं है। ईतना ही नहीं, देवी और देवी की भिन्नता लिंग भेद पर भी आधारित नहीं है। हमको यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि देव की प्रत्यक्ष शक्ति ही देवी कही जाती है। 'देवी' शक्ति और दूसरे कितने ही नाम और उनके भिन्न-भिन्न स्वरूप तो मनुष्य से संकुचित ज्ञान के परिणाम ल्वरूप निर्दिष्ट किए गये है। उस शक्ति' की कोई व्याख्या अन्तिम नही कही जा सकती। मूल शक्ति तो मनुष्य की बुद्धि से परे (अगम्य) है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है—यह मेरी 'अपरा' (नीची) प्रकृति है। इसके अतिरिक्त परा अर्था श्रेष्ठ। (जीव स्वरूपी) दूसरी प्रकृति है—जिसके द्वारा समग्र जगत् का संचालन होता हैं। उपनिषद में भी कहाँ गया हैं कि परमात्मा की पराशक्ति (श्रेष्ठ शक्ति) अनेक प्रकारकी कही जाती है। सच्ची बात तो यह है कि समग्र जगत् किसी न किसी प्रकार शक्ति का ही उपासक है, क्योंकि संसार में एक भी प्राणी ऐसा नहींहै जो किसी तरह की शक्ति की अभिलाषा न रखता हो। भौतिक विज्ञान के उपासकों ने भी यहीं सिद्ध किया है कि जगत् में सब कुछ अनन्त क्रियात्मक है। इस क्रिया शक्ति की प्रतिक्षण स्थिर रखने वाली देवी 'शक्ति' वाली देवी 'शक्ति' वाली एक सम्भव स्वरूप है।

'शक्ति' की पूजा अक्षर (निराकार) रूप में नहीं की जा सकती इसलिए उसके प्रत्यक्ष स्वरूप की कल्पना उत्पत्ति. स्थिति और लय के आधार पर करनी पड़ती है। इन तीनों शक्तियों का नाम क्रम से सरस्वती, लक्ष्मी और काली रख दिया गया है। वस्तुतः ये तीन भिन्न भिन्न देवियाँ नहीं हैं, वरन् एक ही निराकर देबी की पूजा के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन स्वरूप हैं। इन शक्तियों के अनुरूप देव ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी इस प्रकार तीन अलग-अलग देव नहीं हैं, वरन् एक ही निराकार परमात्मा के तीन रूप कल्पित किए गए हैं। नवरात्रि के उत्सव में जगत् की इन तीन शक्तियों—महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की पूजा ही की जाती है।

'सरस्वती' का आशय आधिभौतिक बुद्धि, संवेदना और ज्ञान से है। अतः सरस्वती की पूजा आधिभौतिक बुद्धि, विवेक का उदय, विचारशक्ति तथा ज्ञान (आत्म प्रकाश) के लिए है। लक्ष्मी का आशय केवल धन धान्य की वृद्धि ही नहीं है, वरन् इस तरह की उन्नति, सम्मान, बड़प्पन, आनन्द, ऐश्वर्य का समावेश लक्ष्मी के स्वरूप में ही हो जाता है। अप्पय दीक्षित ने तो अन्तिम मुक्ति को भी 'मोक्ष साम्राज्य लक्ष्मी' कहा है। इसलिए लक्ष्मी पूजा का अर्थ है जगत् की स्थिति की केन्द्र रूपी दैवी शक्ति की पूजा। महाकाली का आशय है देवी स्वरूपान्तरशक्ति' ओ अनेक को एक में लय कर देती है। इस दृष्टि से देवी-पूजा का अर्थ होता है अनेक प्रकार की आधिदैविक साधनाओं को पूर्ण करने की विधि।

समस्त देवों का प्रादुर्भाव शक्ति से ही हुआ है—

जो बात सूत्र रूप से वेद में कही गई है कि 'सत् (परब्रह्म) एक ही है' वही बात 'देवी भागवत' में भी देवी ने अपने मुख से कही है। अन्तर इतना ही है कि वहाँ वह सिद्धान्त रूप से एक ऋचा में ही कह दी गई और 'देवी भागवत' में ब्रह्मा. विष्णु और शिव तीनों को स्त्री के रूप में परिणत करके और उसके द्वारा अलग-अलग स्तुति किये जानें पर देवी ने अपने वास्तविक स्वरूप का परिचय दिया है। देवी ने कहा है—

'एक मात्र सत् ही ब्रह्म है और इसमें तथा मुझ में कोई भेद नहीं। जो वह है वही मैं हूँ, किन्तु लोक मतिके भ्रमसे उसमें और मुझ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में भेद समझती हैं। जो हम दोनोंमें स्थित सूक्ष्म अवान्तर भेदको जान लेता है, वह इस संसार चक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। एक मात्र ब्रह्म ही अद्वितीय है, वही नित्य और सनातन है, परन्तु जब वह विश्व-रचना में तत्पर होता है, तब एक के अनेक हो जाता है। जैसे-किसी उपाधि के कारण दीपक एक दो दिखाई देता है, या दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखाई देने से एक का अनेकत्व प्रतीत होता है। वैसे ही ब्रह्म या मुझमें अनेकत्व की प्रतीत होती है। यह भेद सृष्टिकाल में विश्व-सृजन के लिए ही होता है, और इसके भी दृश्य और अदृश्य रूपमें दो भेद हैं। सृष्टि का अन्त होने पर मैं पुरुष, स्त्री या नपुंसक कुछ नहीं रहती यह भेद सृष्टि कार्य के अवसर पर ही उत्पन्न होता है जिसे मैंने ही स्वकल्पना द्वारा रचा है।"

फिर जैसा स्वामी शिवानन्द ने कहा है—देवी के विभिन्न रूपों को वास्तविक मानना ठीक नहीं, वे सब कार्य की प्रकृति और आवश्यकता वश ही प्रतीत होने लगते हैं। देवी ने कहा—

"मैं ही बुद्धि हूँ, श्री, धृति कीर्ति, मति, श्रद्धा, मेधा, दया, लज्जा, क्षुधा, तृष्णा एवं क्षमा भी मैं ही हूँ। कान्ति, शान्ति, पिपासा, निद्रा, तन्द्रा, जरा-अजरा, विद्या-अविद्या, स्पृहा, मेधाशक्ति और आसक्ति भी मैं हूँ। संसार में ऐसा कुछ भी नहीं जिसमें मेरी सत्ता न हो। जो कुछ दिखाई देते हैं वे सब मेरे ही रूप हैं। मैं ही सब देवताओं के रूप में विभिन्न नामों में स्थित हूँ और उनकी शक्ति रूप से पराक्रम करती रहती हूँ। इस प्रकार मैं ही गौरी, ब्राह्मी, रौद्री, वाराही, वैष्णवी, शिवा, वारुणी, कावेरी, नरसिंही और वासवी नाम की शक्ति हूँ। जल में जो शीतलता है वह मैं हूँ। अग्नि में उष्णता, सूर्य में ज्योति और चन्द्रमा में ठण्डक मैं ही हूँ। संसार के सम्पूर्ण जीवों में स्पन्दन क्रिया मेरी ही शक्ति से होती है। यह निश्चय है कि मेरे अभाव में वह नहीं हो सकती। मेरे बिना शिवजी दैत्यों का संहार नहीं कर सकते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पृथ्वी भी जब शक्ति से सम्पन्न होती है, तभी वह स्थिर रह कर भार धारण करती है, यदि शक्ति-शून्य हो तो एक परमाणु का भार भी नहीं उठा सकती शेष, कूर्म तथा दसों दिग्वज मेरी ही शक्ति को प्राप्त करके अपने-अपने कार्य की सिद्धिमें समर्थ होतेहैं। में सम्पूर्ण संसार के जलको पी सकती हूँ अग्निको नष्ट कर सकती हूँ, और वायु की गति की रोक सकती हूँ। विश्व में कभी किसी तत्व का अभाव नहीं होता। जो वस्तु अनादि है वह कभी सर्वथा नष्ट नहीं हो सकती और जिस वस्तु का आदि है वह अनन्त समय तक टिक नहीं सकती। जिस प्रकार घड़े के फूट जाने पर भी उसकी मिट्टी का अस्तित्व बना ही रहता है, उसी प्रकार अगर यह समग्र पृथ्वी ध्वस्त हो जाये तो भी परमाणुओं के रूप में उसका अस्तित्व बघा ही रहेगा।"

'देवी भागवत' में किये गये उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि धर्मग्रन्थों में जिन विभिन्न देवी देवताओं का वर्णन किसा गया है वे सब एक आदि शक्ति के ही पृथक्-पृथक् रूप हैं जो समयानुसार बनते और फिर बिगड़ कर समाप्त हो जाते हैं। वह ब्रह्मा भी। जिसको आयु पुराणों में कितने ही अरब-खरब वर्ष बताई गये हे,अन्त में नष्ट हो जाता है। जो विष्णु जगत् के पालक और रक्षक कहे जाते हैं वे भी अन्त में लुप्त हो जाते हैं। और जो रुद्र सबका संहार करते हैं एक दिन स्वयं वे भी संहार के मुख में समा जाते हैं। आशय यहीहै कि यह संसार एक बहुत बड़े खेल की तरह है जो कुछ समय तक दृष्टि गोचर होता है और अनजान व्यक्तियों को सत्य ही प्रतीत होता है,पर अन्त में जो शून्य के गर्भ में विलीन हो जाता है।

इसलिये देबी के उपदेश का सारांश यही है कि मनुष्य को इस संसार की विविधता तथा चमक-दमक से मोहग्रस्त नहीं हो जाना चाहिए वरन् सदा इसके सत्यस्वरूप को समझकर निस्पृह तथा कर्तव्य-परायण बना रहना चाहिए। जो लोग इस वास्तविकता को भुला कर संसार के पदार्थों को ही शाश्वत समझ लेते हैं और उनकी प्राप्ति के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए असत् कर्म करने को उद्यत हो जाते हैं वे वास्तव में बुद्धिहीन हैं। इस भ्रम में पड़कर ही एक भाई जायदाद के लिये दूसरे भाई से लड़ता है और पुत्र स्वार्थपरता की भावना से वृद्ध पिता को त्याग देता है। संसार की मूल-शक्ति के रहस्य को न समझने वाले, अथवा उसे जानकर भी तदनुसार आचरण न करने वाले व्यक्ति ही भौतिकवादी बन कर जड़ वस्तुओं के लिए भले बुरे सब कर्म करने को उद्यत हो जाते हैं और पतनके गर्तमें गिरते हैं। यह संसार सर्वथा अस्थायी हैं और इसमें जो कुछ सुख या भोग प्रतीत होते हैं वे किसी भी क्षण नष्ट हो सकते हैं। यह देखकर भी मूढ़ मानव इसकी छाया में स्वेच्छा से फँसता है और कुछ समय पश्चात् परिस्थिति के बदल जानेपर उसके लिये शोक और परिताप करने लगता है।

देवी कहती है कि यह जगत तो मेरी एक कीड़ा या खेल है जिसे मैं चाहे जब फैला देती हूँ और फिर समेट कर रख देती हूँ। जो लोग इसकोस्थायी या शाश्वतमानकर अपने वास्तविक आत्म-स्वरूपको भूल जाते हैं और साँसारिक धन वैभव के लिए आध्यात्मिक जीवन के धर्म कर्तव्यों को भुला देते हैं वे सब से बड़े मूर्ख और अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने वाले हैं। इसका आशय यह नहीं कि सासारिक लाभ हानि की उपेक्षा की जाय यह सब को छोड़कर किसी एकान्त स्थान में जाकर निष्क्रिय होकर बैठ जाया जाय। वरन् जैसा देवी कहती है कि मैं खेल की तरह इस जगत का प्रसार करती हूँ वैसे ही इसे खेल ही मानकर अनासक्त भावना से यहाँ की विभिन्न क्रियाओं में संलग्न रहा जाय। जो व्यक्ति इन उपदेश का पालन करेगा वह कभी दुःख और कष्ट नहीं पा सकता और न उसे इस सबको छोड़ते हुए किसी प्रकार का कष्ट ही हो सकता है।

राम-कृष्ण के चरित्र से प्रेरणा—

पर भौतिक पदार्थों और साँसारिक वैभव की अस्थिरता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीनता दिखलाने पर भी 'देवी-भागवत' के लेखक ने यह कहीं नहींकहा है कि मनुष्यको अकर्मण्य होकर केवल भजन-पूजन में ही अपना समस्त समय लगा देना चाहिये। यद्यपि आजकल हमारे देश में ऐसी स्थिति दिखाई पड़ रही है और जो लोग 'धर्म परायण' माने जाते हैं वे अपना अधिकाधिक समय भजन-पूजन में ही लगा देते हैं। जो लोग सांसारिक कामों को बिलकुल छोड़कर एक मात्र भजन में ही लग जाते हैं वे 'साधु' और 'महात्मा' कहलाते हैं। पर फिर भी भोजन तथा वस्त्र की आवश्यकता उनको भी रहती है और वे अन्य लोगों पर भार स्वरूप बन जाते हैं। यह मार्ग गलत है और संसार में रहते हुए कर्तव्य कर्म से विमुख होकर अकर्मण्य बन जाना बहुत अनुचित है, इस बात की शिक्षा ग्रन्थकार ने राम ओर कृष्ण के उदाहरणों से दी है। उससे बतलाया है कि यद्यपि वे अवतारी पुरुष थे और उनको दैवी शक्तियाँ प्राप्त थीं, पर संसार में रहकर उन्होंने अपने चरित्र द्वारा लोगोंहो यही शिक्षा दी की जब तक प्राण रहें तब तक मनुष्यको कभी उद्योग करना नहीं छोड़ना चाहिए।

सीता हरण होने के पश्चात राम अत्यन्त दुःखी हो गये थे और जब कई दिन तक ढूँढने-खोजने परभी कोई खास सफलता प्राप्त न हो सकी तो उन्होंने लक्ष्मण से कहा—"भाई! यदि सीता न मिली तो मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकता। उसके बिना मैं अयोध्या को भी नही लौटूँगा। राज्य गया, वनवास मिला, पिता की मृत्यु हुई और अब सीता का भी हरण हो गया। यह दुष्ट दैव मुझे सन्ताप देता हुआ भविष्य में न जाने क्या करेगा?"

यह सुनकर लक्ष्मण ने उद्योग की प्रधानता प्रतिपादित करते हुए उत्तर दिया कि—'आप कायरता का त्याग कीजिए, धैर्य रखिए, मैं उस राक्षस को मार कर सीता को अवश्य ले आऊँगा। सम्पदा और विपत्ति दोनों दशाओं में समान भाव रहने वाले पुरुष ही धीरजवान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहलाते हैं। संयोग और वियोग दैवाधीन है। जब देह और आत्मा पृथक् पृथग् हैं तो देह के लिये शोक क्यों किया जाय ? आवश्यकता होगी तो मैं भरत शत्रूघ्न को सैन्य सहित सहायतार्थ बुला लूँगा। वैसे तो मैं अकेला ही सब देवताओं को जीतने में समर्थ हूँ, फिर आप सहायक रूप में मेरे साथ ही हैं, तब शत्रु पर विजय प्राप्त करना कौन बड़ी बात है।"

लक्ष्मण के वचनों से उत्साहित होकर राम उद्योग में लग गये और तब उनको चारों तरफ से सहायता प्राप्त होने लगी। नारद जी ने आकर उन्हें 'शक्ति-उपासना' का विचार बतलाया और उनके अनुकार्य करने पर सिंहारूढ़ भगवती ने उनको दर्शन देकर रावण पर सार विजय प्राप्त करने का वर प्रदान किया और तब आस-पास निवास करने वाले वन्दर-भालुओं के सहयोग से ही उन्होंने जगत्-प्रसिद्ध सैनिक शक्ति-सम्पन्न, शत्रु को नष्ट कर डाला।

कृष्ण-चरित्र इससे भी अधिक प्रेरणाप्रद है। बाल्यावस्था से ही उन्होंने समाजमें अशान्ति उत्पन्न करनेवाले दुष्ट तत्वोंतथा आतताइयों का नाश अपने उद्योग तथा शक्ति द्वारा किया था और सोलह वर्ष की आयु में ही उन्होंने कंस जैसे अन्यायी शासक का अन्त करनेमें सफलता प्राप्त की, पर जब उनके पुत्र प्रद्युम्न को जन्म लेते ही शम्बरासुर हर कर ले गया तो वे बहुत व्याकुल हो गए और 'महाशक्ति' की स्तुति करते हुए कहा—'हे माता ! किसी दुष्ट ने सूतिका-गार से मेरे शिशु को चुरा लिया है तब अपने भक्त की लाज तो आपको रखनी ही होगी। हे अम्ब ! आप ही सत्व, रज, तम द्वारा इस त्रिगुणात्मक सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली हैं। विश्व के सम्पूर्ण कार्य कलापों की सम्पन्नता आपके द्वारा ही होती है। मेरा पुत्र जीवित हो तो उसे मुझे शीघ्र दिखाइये क्योंकि आप सभीके कष्ट दूर करती हैं।"

श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ऐसी घटना को सुनकर सामान्य लोगों की यह शंका होनी स्वाभाविक हैं कि जब श्रीकृष्ण भगवान् विष्णु के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवतार है फिर शम्बरासुर के नाश के लिए किसी की प्रार्थना की क्या आवश्यता थी ? इसका समाधान करते हुए कहा गया है कि वास्तव में ग्रन्थकर्ता ने यह प्रेरणा दी है कि मानव-जन्म पाकर प्रत्येक का यही कर्तव्य है कि मानवोचित प्रयत्न और उद्योग को प्रधानता दे और सर्वसाधारण के सम्मुख इसी तरह का उदाहरण उपस्थित करे। देवी शक्तियों के प्रभाव से किसी काम को पूरा कर लेने से सामान्य जनता उससे कोई प्रेरणा ग्रहण नहीं कर सकती। इस सम्बन्ध में 'देवी भागवत' में कहा गया है—"माया बड़ी बलवती होती है, यह बुद्धि को मोहित कर लेती है और ऐसा कोई प्राणी नहीं जो उसके द्वारा भ्रमित न हुआहो, मनुष्य-जन्म पाकर, मानवी-गुणों का रहना स्वाभाविक है। पूर्व जन्म में देवता रहा हो या दैत्य, मनुष्य योनि में आकर तो उसे इसी के गुणों के अधीन रहना पड़ेगा। क्षुधा, निद्रा, भय, तन्द्रा समारोह शोक, संशय, हर्ष, अभिमान, वृद्धावस्था, मृत्यु, अज्ञान, ग्लानि, प्रीति, असूया, मद और श्रम, ये सभी मनुष्य शरीर में विद्यमान रहते हैं। श्रीकृष्ण में भी ये सब विद्यमान थे, इसलिए किसी तरह की शङ्का करना व्यर्थ है।

श्रीकृष्ण मानबीय उद्योग और प्रयत्न को कितना महत्व देते थे, इसका पता तब लगता है जब पुत्र के लिए हम उनकी तपस्या का वर्णन करते हैं। उनकी रानी जाम्बवती ने उनसे एक महाप्रतापी और विशेष शक्ति सम्पन्न पुत्र उत्पन्न करने की प्रार्थना की। पर उन्होंने जब इस कार्य को कठिन समझा तो तपस्या द्वारा शिवजी को सन्तुष्ट करने का निश्चय किया। उसका वर्णन करते हुए लिखा है—

"पर्वत पर जाकर वे शिवमंत्र का जप पूर्वक भगवान शङ्कर का ध्यान करने लगे। दूसरे मास केवल जल पीकर एक पाँव से खड़े रहकर तप किया। तीसरे महीने केवल वायु भक्षण करते हुए पैर के अँगूठे के आधार पर खड़े रहे। उनके ऐसे कठोर तप से छठे मास शिवजी प्राप्त हुये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्त में भगवान श्रीकृष्ण अपने प्रयत्न में सफल हुए और उनकी रानियों को इच्छित सन्तान की प्राप्ति हुई। पर साथ ही पार्वतीजी ने यह भीं वतला दिया कि सौ वर्ष की आयु हो जाने पर आपके समस्त वंश का नाश पारस्परिक गृह कलह से हो जायगा। श्रीकृष्णजी ने होनहार को अनिवार्य समझ कर सव प्रकार की भली वुरी घटनाओं को महामाया की लीला समझकर किसी प्रकारका अन्तोष नहीं किया। संसार की ऐसी गति विधि को ही समझ कर भारतीय शास्त्रकारों ने यह उपदेश दिया है कि मनुष्य को अपने कर्तव्य कर्म का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए पर फल सम्बन्ध में चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इसी को 'भगवदगीता' में अनासक्त अथवा निष्कर्म कर्म के नाम से पुकारा गया हैं। 'देवी भागवत' में श्रीकृष्ण की कथा के रूप में उसका ही उपदेश दिया हैं। शिवजी ने जव उसको सहस्रों पुत्र होने का वर-दान दिया तो उन्होंने विमेष हर्ष नहीं किया और जव पार्वतीजीने वंश नाम की सूचना दी तो वे व्याकुल नहीं हुए।

इस उपाख्यान से मनुष्यों को यह प्रेरणा मिलती है कि सांसारिक जीवन में जो उतार-चढ़ाव होते रहते हैं और अनेक समय आकस्मिक कारणों से घोर विपत्ति में पड़ जाना होता है उनमें धैर्य छोड़ देना या दैव को दोष देने लगना अनुचित है। संसार में सफलता असफलता, हानि, लाभ, सुख-दुःख का युग्म (जोड़ा) सदैव वना रहता है। यह एक प्राकृतिक नियम है।

देवी के स्वरूप का रहस्य—

देवी के स्वरूप का जो वर्णन देवी भागवत' या अन्य पौराणिक अथवा तन्त्र शास्त्र से ग्रन्थों में पाया जाता है, वह बड़ा अदभुत है। उसमें कहीं तो उसका स्वरूप ऐसा बीभत्स जान पड़ता है कि उसे पढ़ कर एक सामान्य व्यक्ति भयभीत हो सकता हैं। एक जगत् वाली देवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का ध्यान करने के लिए उसका वर्णन इस प्रकार किया है।

"जिसका वर्ण मेघ के समान श्यामल है, ललाट में चन्द्रलेखा प्रकाशमान हैं, जिसके तीन नेत्र हैं, शरीर पर रक्त-वस्त्र धारण किये हे, जिसके दोनों हाथोंमें वर और अभय हैं। जो खिले हुए लाल कमल के ऊपर खड़ी हैं। जिसके सम्मुख पुष्पों का मधुर रस (मद्य) पीकर महाकाल नृत्य कर रहा है, और उसकी ऐसी अवस्था पूखकर देवी हँस रही हैं उसी आदि शक्ति काली का मैं भजन करता हूँ।" उनके इस स्वरूप की विशेष व्याख्या करते हुए "काली–ध्यान" में कहा गया है।

"कालिका देवी का मुख भयङ्कर और दर्शनीय हैं। चार भुजाये हैं। शिर के बाल छूटे और बिखरे हुए हैं। मुण्ड-माला धारण करने से अत्यन्त शोभा पा रही है, उसके दोनों बाँये हाथों में तुरन्त के काटे दो मस्तक हैं, वे ही उसके खड्ग रूप हैं। दाँयी-तरफ के दो हाथों में अभय और वरदान हैं। यह देवी प्रचण्ड मेघ के समान श्याम रङ्ग की और दिगम्बर है। कण्ठ में पहनी हुई मुण्ड माला से गिरते हुए रक्तसे उसका समस्त शरीर सना है। उसके मुख और दाढ़ अत्यन्त भयंकर जान पड़ते हैं और बड़े स्तनहैं। दोनों कानोंमें नर कपालोंके आभूषणों धारणा करने से उसकी शोभा बढ़ गई है। उसका मुख कमल कम्पाय मान होता जान पड़ता ही है उसकी ध्वनि घोर मेघ गर्जना के समान महा भयंकर है। वह श्मशान में निवास करने वाली है। उसके तीनों नेत्र सूर्य के समान तेजस्वी, दाँत बड़े-बड़े और केश लम्बे हैं। वह शिव रूपी महादेव के ऊपर पैर रखकर खड़ीहैं। महाकाल के साथ विलक्षण क्रीड़ा करने में वह निमग्नहै। कामदेवके समान प्रफुल्लित और प्रसन्न मुख है। वह मनोरथके सिद्ध करने वालीहैं। इस प्रकार देवी कालिका का ध्यान करना चाहिए।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल शब्दार्थ पर ध्यान देने में तो वह वर्णन बड़ा वीभत्स जान पडता है, पर जब इसके गूढ़ अर्थ पर विचार किया जाता है तो इसमें अनेक ज्ञान के तथ्य समाविष्ट प्रतीत होते हैं। एक 'देवी भक्त' ने इस पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—

जिस तरह श्वेत पीत आदि सब रङ्ग काले रङ्ग में विलीन हो जाते हैं उसी प्रकार समस्त भूतों (पंच तत्वों) का विलनीकरण प्रकृति में हो जाता हैं। इसीलिए योगीजनों की उपास्य, निर्गुण निराकार पराशक्ति-कृष्ण-वर्ण की वर्णन की गई हैं। अविनाशी, काल स्वरूप, अव्यय महाकाली के ललाट में जो चन्द्र-काल का चिह्न वतलाया गया है, उसका आशय यही हे, कि यह चन्द्र, सूर्य और अग्नि रूपी नेत्रों से समस्त जगत् का निरीक्षण कर रही है। इसीलिये उसके तीन नेत्र कहे गये हैं। वह समस्त प्राणियों का ग्रास करती है और अपने कालरूपी दाँतों द्वारा चवा डालती है, इसी में उसके वस्त्र रक्त वर्ग के कहे गये हैं। विपत्ति काल में वह सज्जनों की रक्षा भी करती है, इससे उसके हाथ में वर और अभय वतलाये गयेहैं। वह देवी रजोगुण जनित विश्व में व्याप्त है, इसीलिये लाल कमल पर विराजमान वतलाया है। वह काल स्वरूप और समस्त जीवात्माओं की साक्षी-स्वरूप देवी मोहरूपी मदिरा पीकर नृत्य करने वाले काल को देखकर हँस रही है।"

अल्प वुद्धि के भक्तजनों के कल्याण की भावना से देवी की शक्ति और महिमाको प्रकट करने वाले ऐसे अनेक रूप कल्पित किये गये हैं। इसी तथ्य को सामने रखकर 'महानिर्वाण तन्त्र' में कहा गया है—

गुण कर्म क्रियानुसारेण रूपं देव्याः सुकल्पितम्।

अर्थात्—"देवी उपासकों की सुविधा की दृष्टिसे गुण और क्रिया-नुसार देवी का स्वरूप कल्पित किया गया।"

इन सब प्रकार की देवी-मूर्तियों में से जिसको जिस मूर्ति के प्रति आकर्षण होता है, वह इसी को अपनी इष्ट देवी समझकर उसका पूजन, भजन, अर्चन और उपासना करता है। इससे उसको जो हृदय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की एकाग्रता और ध्यान की प्रबलता प्राप्त होती है,उससे अपने भीतर भक्ति का संचार होता जान पड़ताहै। पर यह विचार करनाकि अमुक रूप वाली देवी बड़ी और अमुक छोटी, बहुत भ्रमपूर्णबात है और इसका फल सदैव अमङ्गलजनक होता है। जैसा कहा जा चुका है कि वास्तव में सब देव और देवियाँ एक ही महाशक्ति के अंश स्वरूप हैं उनमें छोटे बड़ें का भेद-भाव करना अज्ञान का चिह्न है।

अनेक आधुनिक शिक्षा प्राप्त सज्जन मूर्तियों की ऐसी विभिन्नता का रहस्य समझने के बजाय उनकी उल्टी-सीधी आलोचना करके सब प्रकार की मूर्ति-पूजा, मूर्ति-दर्शन आदिको निरर्थक बतलाने लगते हैं। अगर वे प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन और मनन करते तो मूर्ति-पूजा के इस तत्व को समझ सकते कि यह एक आरम्भिक प्रक्रिया है, जो अल्प विकसित लोगों के लिए आवश्यक है और इसी के द्वारा उन्नति करके वे सूक्ष्म दैवी शक्तियों तथा निराकार परमात्मा की उपासना के योग्य बन सकते हैं। हिन्दू-शास्त्रों के मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह आवश्यक नहीं कि वह मन्दिर में देव दर्शन के लिये जाय या शंख, घण्टा, घड़ियाल बजाकर देव-मूर्ति की पूजा करे। संन्यासी, परमहंस, अवधूत आदि ब्रह्म ज्ञानी व्यक्तियोंके लिए मूर्ति-पूजाका जिक्र कहीं नहीं मिलता। वे अपने अन्तरङ्ग ध्यान द्वारा ही परब्रह्म और महाशक्ति की उपासना करते हैं।

देवी चरित्र में रूपक—

उस पुराण में देवी के साथ दैत्यों के युद्ध का वर्णन बड़े विस्तार से किया गया है। सच पूछा जाय तो पौराणिक कथाओं के अनुसार देवी का प्राकट्य दैत्यों का संहार करने के लिए ही हुआ है। 'दुर्गा सप्तशती' में इसका वर्णन करते हुए कहा है—

"दैत्यों के अत्याचार सुनकर शिवजी और विष्णु अत्यन्त कुपित हुए और तदनन्तर उन दोनों तथा ब्रह्माजी के मुख से एक विस्तारयुक्त तेज प्रकट हुआ। इसी प्रकार इन्द्र और दूसरे देवताओं के मुख से भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेज निकला। अन्ततः निकला हुआ समस्त तेज मिलकर एक हो गया फिर वह त्रिभुवन को अपनी आभा से प्रकाशित करने वाला तेज पुंज एक स्त्री के रूप में परिवर्तित होने लगा। शिवजी के तेज से इसका मुख यम के तेज से केश तथा विष्णु के तेज से उसकी दो भुजायें बन गईं। चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तन, इन्द्र के तेज से मध्य भाग, वरुण के तेज से जंघा और उरू, पृथ्वी के तेज से नितम्ब, ब्रह्मा के तेज से चरण, सूर्य के तेज से चरणोंकी अंगुलियाँ, वसुगणों के तेजसे हाथी की अंगुलियाँ, अग्नि से तेज नेत्र, पवन के तेज से कान आदि बन गये और इस प्रकार उस मङ्गलकारी देवी (महा-शक्ति)ने जन्म लिया। तदुपरांत प्रत्येक देव ने अपने शस्त्रों में से वैसा ही शस्त्र निकाल कर देवी को दिया। शिवजी ने अपना त्रिशूल, विष्णु ने चक्र, इन्द्र ने वज्र, यम ने पाश आदि सर्वश्रेष्ठ शस्त्र देकर उसे अजेय बना दिया।"

यदि वर्णन की बुद्धि पूर्वक समीक्षाकी जाय तो स्पष्टत, यह दैत्यों की अत्याचारी शक्ति के विरुद्ध देव पक्षके समस्त प्रमुख अध्यक्षोंका एक सुदृढ़ सङ्गठन बनाया जाना प्रतीत होता है। आज भी जब किसी राष्ट्र या समाज पर विपत्ति आती हैतो सबसे पहले अपनी समस्त बिखरीहुई शक्तियोंका समीकरण करके उनका एक सुदृढ़ सगठन किया जाता है,जो शत्रु पक्षपर एक करारा प्रहार कर सके। सद्मार्गगामी और सदाचारी लोगोंकी जो शक्तियाँ बिखरी हुई दशामें दुष्ट स्वभावके अन्यायी आततायियों का मुकबला करने में असमर्थ होतीहैं और विवश होकर अत्याचार सहन करती रहती हैं, वे ही सङ्गठित हो जानेपर अत्यन्त प्रभावशाली और अजेय हो जाती हैं। यह भी देवी प्राकट्य के उपाख्यान का एक गूढ़ार्थ है।

जब देवी-दैत्य संग्राम पर आध्यात्मिक दृष्टि से विचार करतेहैं तो इसका आशय मनुष्य के मानसिक क्षेत्र में होने वाले सद् और असद् वृत्तियों के संघर्ष से प्रतीत होता है। तामसी अहङ्कारके वशीभूत होकर मनुष्य के बुरे विचार जोर पकड़ने लगते हैं और सद् विचार क्षीण हो जाते हैं। यह अवस्था व्यक्ति और समाज दोनोंके लिए अकल्याणकारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। ऐसे घोर स्वार्थपरता के मनोभाव एक दृष्टिसे 'महिषासुर' ही है। इस दूषित अहंभाव से छुटकारा पाने के लिए अपनी समस्त श्रेष्ठ वृत्तियों को एकत्रित करके एक शक्ति रूप देवी का आविर्भाव करना पड़ता है और तब कहीं जाकर दुष्ट अहङ्कार रूपी महिषासुर का वध किया जा सकता है।

आधिदैविक दृष्टि से विचार करने वालों ने इसका आशय सृष्टि के विकास क्रम में सूर्य के प्राकट्य से लगाया है। जैसा हम जानते हैं कि सूर्य ही समस्त दैवी-शक्तियों का प्रतीक है, जो कि प्रत्यक्ष रूपमें दृष्टि-गोचर होता है। पर इसका यह रूप क्रमशः विकसित हुआहै। आरम्भ में इसके तेज को एक तम का आवरण रोकता रहा। वह आवरण ही 'महिषासुर' है। क्रमशः प्रकाश की शक्तियाँ बलवती हो गई और एक समय आया जब तम के आवरण को भेद कर सूर्य पूरे तेजसे प्रकाशित होकर अन्धकार का नाश करने लग गया। सृष्टि रचना का यही तथ्य महिषासुर-वध के रूपक से प्रकट होता है।

कुछ भी हो, देवी और दैत्यों के संग्राम की कथा दुष्टता तथा पाप कर्मों के ऊपर सात्विकता और सद्विचारों की विजय दिखला कर मनुष्यो को पुण्य पथ पर चलने की प्रेरणा देतीहै। कोई भी व्यक्ति या समुदाय वह कैसा भी बली अथवा रण-कुशल क्यों न हो,अगर पाप—स्वार्थपरता के मार्ग पर चलता है और अन्यायपूर्वक दूसरों के सत्वका अपहरण करता है तो अन्त में उसका अधःपतन अवश्य होगा। पाप अधिक समय तक नहीं टिक सकता और पुण्य की जड़ सदा हरी है, यह सन्देश 'देवासुर संग्राम' से बहुत अच्छी तरह मिलता है और यह मनुष्य समाज-मात्र के लिए परम कल्याणकारी है।

आचार का महत्व

"देवी भागवत में जो आचार का विवेचन किया है वह अधिकांश पुराणों से अधिक स्पष्ट और बुद्धि सङ्गत है। देवी-उपासना के नाम पर बहुत से स्त्री-पुरुषों को 'वाममार्गी अथवा 'भैरवी-चक्र' आदि की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रियायें करते देखकर अधिकांश व्यक्तियों की 'शक्ति' और 'तान्त्रिक' मतों के सम्बन्ध में यह धारणा बन गई है कि ये 'निराकारी' अथवा 'अनाचारी' होते हैं। इस पुराण में आचार को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। नारद के प्रश्न करने पर भगवान नारायण के मुख से कहलाया गया है—

"आचार सर्वप्रथम धर्म है—यह श्रुति, स्मृति का कथन है। इसलिए द्विज का नित्व आचारयुक्त रहना ही श्रेयस्कर है आचार से आयु सन्तान तथा अक्षय अन्न प्राप्त होता है और पाप नष्ट हो जाता है। मनुष्योंको कल्याणकारी और परमधर्म आचार ही है। इसीसे इसलोक में सुखी होकर मनुष्य परलोक में भी सुख प्राप्त करता है। जो व्यक्ति अज्ञान के अन्धकार में पड़कर भटकते हैं, उनके लिए आचार ही धर्म-रूपी दीपक के रूपमें मोक्ष मार्ग दिखाने वाला है। आचार से श्रेष्ठत्व और सत्कर्म की प्राप्ति होती है, उस सत्कर्म को मनु भगवान ने ज्ञान-वर्धक कहा है। सभी धर्मों में श्रेष्ठ होने में आचार ही परम तप है, यही ज्ञान कहा गया है। तभी यही सर्वसिद्धि प्रदान करने वाला है।"

आगे चलकर एक बड़ी महत्व की बात यह वतलाई है कि उत्तम आचार का निर्णय किस प्रकार किया जाय, क्योंकि प्रायः सभी व्यक्ति और सम्प्रदाय अपने ही आधार को सर्वश्रेष्ठ वतलाते रहते हैं।

पुराणकार का कथन है—"शास्त्रीय और लौकिक के भेद से आचार दो प्रकार का है। जो अपना शुभ चाहते हैं, वे इन दोनों मेंसे किसी एक का भी त्याग न करे। सत्पुरुषों का कर्तव्य है कि वे ग्राम धर्म, जाति-धर्म, देश-धर्म और कुल-धर्म—इन सभो का पालन करे क्योंकि इनमें उल्लंघनीय कोई भी नहीं हैं। लोक में दुराचारी सदा निन्दित, दुःख-भागी एवं व्याधियों से सन्तप्त रहता है।"

'श्रुति, स्मृति—दो नेत्र (स्वानुभव) और पुराण—इन तीनों का कथन ही धर्म है। इन तीनों का परस्पर विरोध होने पर श्रुतिको प्रमाण माने। जहाँ श्रुति दो प्रकार के नियमों का समर्थन करे, वहाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों को ही धर्म और यदि स्मृति में दोनों बातों का समर्थन मिले तो स्थिति के अनुसार निर्णय करे। सभी प्राणी को वेद सम्मत न समझे क्योंकि उनमें तन्त्रका भी समावेश पाया जाताहै,इसलिए ऋषियों द्वारा कहे धर्मको ही धर्म माने। वेद सम्मत 'मन्त्र'के प्रमाणको भी स्वीकार करले, परन्तु श्रुति विरुद्ध वाक्य को प्रमाण नहीं मानना चाहिए। वेद धर्म को छोड़कर अन्य प्रमाण के अनुसार लगने वाले को यम-यातना सहन करनी होती है स्मृति, पुराण तन्त्र अथवा अन्यान्य ग्रन्थ वेद-मूलक होने पर ही प्रमाण माने जाते है।

वैदिक उपदेश की श्रेष्ठता इसकारण माननीयहैं क्योंकि वह किसी सम्प्रदाय या मत के आधार पर नहीं हैं, वरन् उसमें मानव मात्र को एक मानकर ही सार्वजनिक कल्याण की बातों का उपदेश किया गया है। यह प्रत्यक्ष है कि निष्पक्ष व्यक्ति ही सत्य उपदेश दे सकता है। किसी खास बल या विशिष्ट स्वार्थ से बँधा मनुष्य अपूर्व विद्वान होने पर भी सच्चा उपदेश नहीं दे सकता।

प्रातःकाल उठकर जिस प्रकार ध्यान करने का 'देवी भागवत' में उपदेश दिया गया है, वह भी यिशेष स्वाभाविक और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक उपयोगी जान पड़ता है।

रात्रि के चोथे प्रहर में उठकर ब्रह्मस्थान में तत्पर ही, वीरासन लगाये। कुछ उत्तान हो मुखको ऊँचा करके नेत्र बन्द करले और दाँत से दाँत स्पर्श न होने दे। जीभ को तालु के पास रक्खे, वह अविचल रहे, मुख खुला, मन शाँत संयमित रहे और आसनको अधिक नीचा न रखे। दो या तीन वार प्राणायाम करे तथा हृदय से दीपक की ज्योति के समान प्रतिष्ठित ब्रह्म का ध्यान करे। सधूम (श्वास-युक्त),विधूम (श्वास रहित), सगर्भ (मंत्र सहित), अगर्भ (मंत्र रहित),सलक्ष्य(ध्यान युक्त) तथा अलक्ष्य (ध्यान रहित) ये प्राणायाम के छः हैं भेद और वापु का निगमन किया जाने से प्राणायाम को योग के समकक्ष माना गया है। रेचक (श्वास बाहर निकालना), पूरक (श्वास को भीतर खींचना, और कुम्भक (श्वास को यथाशक्ति रोके रहना) ते तीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणायाम के अङ्ग हैं। इसका वर्ण त्रयात्मक अर्थात् प्रणवरूप होने से यह ब्रह्मरूप भी कहा जाता है। यह तन्मय प्राणायाम है। इड़ानाड़ीसे वायु को ऊपर खींचकर उदर में पूर्ण रूप से स्थापित करे, फिर धीरे-धीरे पिंगला नाड़ी से सोलह मात्रा में उसे छोड़ दे। इस प्रकार प्राणों का व्यायाम ही सधूम कहा जाता है।

"मूलाधार, लिंग, नाभि, हृदय, तालुमूल और ललाट के मध्य (भौंहों के बीच) इन छः स्थानों में चतुर्दल, षट्दल, दशदल, द्वादशदल और षोडशदल द्विदल कमल स्थित हैं, इनमें सभी वर्ण विद्यमान हैं। इन ब्रह्मस्वरूप को नमस्कार करता हूँ—यह भावना करे। मूलाधार में चार दल वाले अरुण कमल पर प्रतिष्ठित, रजोगुणी, माया बीच से चिह्नित, पद्मतन्तु-स्वरूप, सूर्य-विन्दुरूपी मुख और अग्नि एवं चन्द्रमा रूपी वक्षवाली कुण्डलिनीरूपिणी देवि यदि चित्तमें किंचित् भी निवास करले तो अवश्य ही मुक्ति हो जाय। हे देवी ! मैं आपका ही रूप हूँ—इस प्रकार अपनी आत्मा के प्रति चिन्तित करे। जो प्रथम प्राणायाममें प्रकाशवान और प्रत्येक प्रयाण में अतृप्त तुल्य है तथा अन्तिम प्रयाणमें सुषुम्ना से संचार करती हैं, उन आनन्दरूपा कुण्डलिनी देवी की शरण लेता हूँ। फिर अपने ब्रह्मरन्ध्र में गुरुरूप ईश्वर का ध्यान करे तथा मानसिक रूप से उनका पूजन करे। फिर संगत चित्त से स्तुति करे—गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवता तथा गुरु ही महेश्वर है। उन पर-ब्रह्म रूप गुरुदेव को मेंरा नमस्कार है।

द्विजत्व का चिह्न गायत्री-जप—

'देवी भागवत' में गायत्री की महिमा कथन करते हुए कहा गयाहै कि जो संध्याके विषयमें नही जानता वह द्विजत्व से पतित होकर शूद्र तुल्य हो जाता है। उसका कर्तव्य है सन्ध्योपासना के गियम का पूर्ण मनोयोगसे पालन करे। यदि वह ऐसा नही करता तो अन्य धार्मिक कर्मों का भी अधिकारी नहीं रहता। इसका स्पष्ट आशय है कि मानव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाज में श्रेष्ठ प्राप्त करने के लिए संयम-नियम का पालन करते हूए जीवन त्यतीत करना अनिवार्य हैं। सन्ध्योपासना के सहित गायत्रीजप करते रहना एक प्रकार से इस बातका प्रमाण है कि वह व्यक्ति धर्मके महत्व को अनुभव करता है और उनके लिए प्रयत्न करनेको भी उद्यत है। जब तक किसी व्यक्ति का मानसिक सुझाव इस तरफ न हो तब तक उसर धार्मिक होने की आशा नहीं की जा सकती। यहकोई आवश्यक नही कि गायत्री-जप करतेही वह धार्मिक बन जाय अथवा प्रत्येक सन्ध्योपासना करने वाला निश्चय ही धर्म-प्रेमी सज्जन बन जायेगा। तो भी किसी की भी अन्तरिक रुचि नित्य और नैमित्तिक धर्म-कृत्यों की तरफ बनी रहे तो समय, आने पर उसके धर्मज्ञ होने की आशा अवश्य की जा सकती है। इस दृष्टि से गायत्री की महिमा का वर्णन करते हुए ग्रन्थकार ने कहा है—

"महादेवी गायत्री श्रुति-सम्मत,वेदों की सारभूता तथा पूजनीया है। वेदों द्वारा इनका नित्य जप किये जाने से इन्हें 'वेदोपांस्या कहा जाता है। सभी द्विज, शाक्त, शैव, वैष्णय आदि को इनकी उपासना करनी चाहिए। इन जगन्माता जगदम्बिका महादेवी गायत्री का ध्यान इस प्रकार करे कि परमेश्वरी कुमारी जवाकुसुम जैसी आभा वाली, रक्त-चन्दन लगाये हुए,लाल कमलके आसन पर विराजमान हैं। इनके देह पर लाल वस्त्र और कण्ठ में लाल वर्णकी माला विभूषित है। यह चार मुख और चार भुजा वाली एवं प्रत्येक मुख पर दो दो नेत्रों से सुशोभित हैं। इन्होंने हाथों में स्रुक, स्रुवा माला और कमण्डल धारण किए हुए हैं। यह अपने सम्पूर्ण आभरणों से प्रकाश मान, हंसवाहिनी एवं ऋग्वेद का अध्ययन करने बाली है, ब्रह्माजी इन्हें अपने हृदय में प्रतिष्ठित करके इन्हीं की उपासना करते हैं। चारों वेद इनके चार चरण हैं। आठों दिशायें इनकी आठ कुक्षियाँ हैं, तथा व्याकरण शिक्षा कल्प, निरुक्त, इतिहास, पुराण और उपनिषद यह इनके सात मस्तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं अग्नि इनके मुख में, रुद्र शिखा स्थान में तथा विष्णु चित्त में सदा सुशोभित रहते हैं। ब्रह्म जिनके कवच रूप, सांख्य-शास्त्र जिनका गोत्र और आदित्य मण्डल जिनका निवास है, ऐसी माहेश्वरी गायत्री का ध्यान करें।"

गायत्री देवी का यह ध्यान साधक की श्रद्धा-भक्ति को दृढ़ करने वाला और उसे लक्ष्य के प्रति सदैव सजग रखने में सहायक तो होताही है, पर इनमें जो वर्णन किया गया हैं, उसमें अखिल विश्व ब्रह्माण्ड का समावेश हो जाताहैं। जिसका निवास आदित्य मण्डलमें हो और आठों दिशायें जिनकी आठ कुक्षियाँ, वह विश्व रूप भगबान के सिवाय और कौन हो सकता है ? साथ ही इस वर्णन से गायत्री समस्त ज्ञान—विज्ञान की स्रोत भी सिद्ध होती हैं। जब चारों वेदों की उसके चार चरण और व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त आदि सातों अङ्गोंको सात मस्तक बताया गया,तो इसके अतिरिक्त ज्ञानका माध्यम और कौन हो सकता है ? वास्तव में गायत्री 'वेदमाता अथवा वेदों की प्रतीक स्वरूप है और जो उसके रहस्य को पूर्णतयः समझने का प्रयत्न करेगा वह कुछ समय में वेद-विद्या और उसके पश्चात उसके विविध अङ्गों का ज्ञाता हो ही जायेगा।

सावित्री उपाख्वान और नरकों का वर्णन—

सावित्री सत्यवान का उपाख्यान भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। पतिव्रत को हृदयङ्गम करानेके लिए इसका महिला-समाजमें वहुत प्रचारहै और अनेक पुराणों तथा धर्म-इतिहास ग्रन्थोंमें इसका उल्लेख विविध रूपोंमें मिलता है। 'देवी भागवत' में इसका विस्तार पूर्वक दिया है, क्यों कि राजकन्या सावित्री भी शास्त्रों में वर्णित सावित्री देवी का एक अंश स्वरूप थी। यमराज उनके पति की आत्मा को लेकर जाने लगा तो वह भी उसके पीछे चली। जब यमराज ने उसकी पति भक्तिसे प्रसन्न होकर उसके पति को जीवन दान दे दिया तों सावित्री ने उसय नरकों के विषय में भी प्रश्न किया। पहले तो यमराज ने उसको मुख्य-मुख्य नरकों के नाम वतलाये और फिर कहा कि उनमें केवल वे मनुष्य ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भेजे जाते है जो संसार में स्वार्थ परायण जीवन व्यतीत करते है। सज्जन और धर्म परायण लोगों को उनसे कुछ भय नहीं होता। यमराज ने कहा—

"जो पुरुष प्रभु सेवारत, शुद्ध, योगसिद्धि, व्रती, तपस्वी या ब्रह्मचारी होते हैं, वे निश्चय ही नरक में नही जा सकते। वशके अभिमान में गर्वित पुरुष अपने बन्धनोंके प्रति दुर्व्यवहार करता है वहअग्नि कुण्ड नामक नरक को प्राप्त होता है। उसके देह पर जितने रोम हैं, उतने ही वर्ष तक वह नरकमें रहकर तीन योनियों तक पशु-जन्मग्रहण करता है। जो घर पर आये अतिथि का सत्कार नहीं करता, वह मूर्ख तप्तकुन्ड में गिरता हैं। वह अपनी देह के रोमों के बराबर वर्ष तक नरक वास करके सात योनियों तक पक्षी होता है। रविवार, संक्रान्ति अमावस्या और श्राद्ध के दिन क्षार पदार्थों से वस्त्रों को धोने वाले मनुष्य क्षारकुण्ड में गिरते हैं और वस्त्रों के सूत की संख्या तक नरक में वास करके सात जन्म तक धोबी होते है।"

"जो पुरुष मूल-प्रकृति, वेद, शास्त्र-पुराण, ब्रह्मा विष्णु शिवादि देवता तथा गौरी, सरस्वती आदि देवियों की निन्दा करते हैं, वे सब अत्यन्त भयानक कुण्डोंमें गिरते हैं। इन कुण्डोंके समान दुःखदायी अन्य कुण्ड नहीं होते। वे अनेक कल्पोंतक नरक यातनाभोगकर सर्पकी योनि में जाते हैं। अपने द्वारा या किसी अन्य के द्वारा दी हुई देवताओं या ब्राह्मणों की वृत्ति को छीनने वाले को साठ हजार वर्ष तक विट्कुन्ड में घृणित भोजन करके फिर कृमि के रूप में जन्म लेना पड़ता है।"

"जो अपने माता-पिता गुरू, पत्नी, पुत्र-पुत्री आदि का भरणपोषण नहीं करता, वह नरकुण्डमें जाता है। वहाँ सौ वर्ष तक विष का भोजन करता है और फिर सौ बर्ष तक भूतयोनि की प्राप्त होता है। अतिथि को क्रोध भरे नेत्रों से देखने वाले पापों का जल भी पितर या देवता ग्रहण नहीं करते। ब्रह्महत्या जैसे घोरपाप करने वाले अधमजीव दूषित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुन्डमें गिरते हैं। वे सौ वर्ष तक दूषित पदार्थों का भोजन करके इतने ही समय तक भूतयोनि को प्राप्त होते हैं। जो स्त्री, पर पुरुष से या पुरुष, पर स्त्री से व्यभिचार करते हैं, वे शुक्र कुन्ड में गिरते हैं वहाँ सौ वर्ष तक शुक्र भोजी रहकर सौवर्ष के लिए कीड़ें की योनि भोगकर शुद्ध होते हैं। गुरु, विद्वान, ब्राह्मणको ताड़न करके रक्त निकलाने वाले दुष्ट असृक-कुन्ड में पड़कर सौ वर्ष तक रक्त पीतेहैं। तत्पश्चात् सात योनियों तकव्याध होकर शुद्ध हो सकते हैं। अपने भरण पोषणके लिए लोभवश जो जीव हिंसा करते हैं वे मज्जा-कुन्ड में एक लाख वर्ष तक मज्जा खाते रहते हैं फिर सात बार मछली, तीन बार सूअर और सात बार मुर्गा का जन्म धारण करते हैं फिर कर्मानुसार वे मृगादि योनियों में जन्म लेकर बहुत समय पश्चात शुद्ध होते हैं। जो मनुष्य अपनी पालित पोषित कन्या का विक्रय करता है वह मांस कुन्ड म गिरकर रोम-संख्यक वर्षो तक मांस भोजन करता है।

शक्ति तत्व का सच्चा स्वरूप—

इससे आगे चलकर जब सावित्री ने यमराज से सबका सार-तत्व, नरक से तारने वाली, मुक्ति की बीजरूपा देवी-भक्ति प्रदान करने की याचना की तो उसने कहा—

"वे भगवती धर्मात्मा है। उन्ही को सबका ईश्वर और कारणों का भी कारण समझो। वही सबकी आदि और सबकापरिपालन करने वाली है। वे नित्यरूपी, नित्यानन्द, आकृति रहित, निरंकुश, निर्गुण निरामय तथा आशंका–रहित है। वे ही निर्लिप्त, सर्वसाक्षी, सबकी आधार,परात्पर,मालाविशिष्ट मूलप्रकृति तथा सभी विकारोंकी उत्पत्ति करने वाली हैं। परमात्मा की प्रकृतिसे मिलकर प्रकृति कहलाने लगती हैं। प्रकृति की शक्ति,गहामाया और सच्चिदानन्द नाम धारण करती हैं। वे रूप रहित होकर भी भक्तों पर अनुग्रह करने के हेतु विभिन्न रूपों को धारण करती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"उन्होंने ही पूर्व समय में गोपाल सुन्दरी (श्रीकृष्ण) का अत्यन्त मनोहर रूप रखा था। भक्ति में तन्मय भक्तजन भगवान के इसी रूप का ध्यान करते हैं। सबके स्वामी श्रीकृष्ण के शासन को मानकर ब्रह्मा सृष्टि करते हैं और कर्मों के अनुसार जीवों का उल्लेख करते हैं। उन्हीं के शासन की स्थिति कालाग्नि रुद्र सर्वसंहारकारी होते हैं। उन्हीं के ज्ञान से युक्त होकर मृत्युञ्जय शिव योगेश्वर, प्रभु, परमानन्दयुक्त एवं भक्ति-वैराग्य के युक्त होते हैं। उन्ही के भय से पवन चलता है और सूर्य तपतेहैं। इन्द्र वर्षा करते, मृत्यु प्राणियोंको मारती, अग्निदेव दग्ध करते और वरुण सबको शीतल करते हैं। प्राकृतिक प्रलयकाल में देवताओं युक्त सम्पूर्ण चराचर विश्व धाता और विधाता भी इन्हीं श्री कृष्ण के नाभिकमल में लीन हो जाते हैं। क्षीरशायी एवं वैकुन्ठ में निवास करने वाले विष्णु इनके वाम-पार्श्वमें विलीन होतेहैं, ज्ञानाधीश शिवजी उनके ज्ञान में लीन होते हैं तथा सभी शक्तियाँ विष्णु माया दुर्गा भी बुद्धि की अधिष्ठात्री होने के कारण श्रीकृष्ण की बुद्धि में लीन हो जाती है। इस प्रकार जिन परमात्माके पलक झंपने पर प्रलय और जाग्रत होने पर सृष्टि या पुनराविर्भाव होता है, वे भगवान श्रीकृष्ण प्रलयकाल में अपनी प्रकृति से मिलकर एकाकार हो जाते है। तब एक पराशक्ति ही शेष रहती है, ऐसे विशिष्ट गुणों वाली उन देवी का गुण कीर्तन करने में कौन समर्थ हो सकता है।"

जिन पाठकों ने सृष्टि-तत्व और देव-तत्व पर अच्छी तरह विचार नहीं किया है उनको यह वर्णन शायद कुछ अटपटा-सा जान पड़े, पर इसका आशय यही हैकि भगवान् के स्वरूपको निराकार अथवा साकार मानकर कैसा भी वर्णन क्यों न किया जाय, चाहें उसका राधाकृष्ण के रूप शृङ्गारमय वर्णन किया जाय, पर संसार और सत्य-धर्मका मूल सदा एक ही है और एक ही रहेगा। उसे 'पराशक्ति' या 'महाशक्ति' कहा जाता है, तो ठीक हैं। उसके विष्णु, शिव या कृष्ण आदि नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साम्प्रदायिक दृष्टि से रख लिए गये हैं, पर सबका मूल तात्पर्य एक ही है।

'देवी-भागवत' में सामान्य बुद्धि की भक्त जनता के बोध की दृष्टि से इन्हीं सब तत्वों को बहुसंख्यक कथाओं के रूप में समझाया गया है, पर ज्ञान मार्ग वालों के लिए उन्होंने यह भी बतला दिया हैकि इससब दृश्य जगत् की मूल एक अदृश्य और अव्यक्त सत्ता है और मनुष्य को अपनी नियमित और परम्परागत उपासना को करते हुए इस मूलतत्व को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। जब मनुष्य इस दृष्टिकोण से संसार के वास्तविक स्वरूप तथा विश्व की संचालक शक्तिकी एकताको समझ लेगा, तभी वह परमात्मा, सृष्टि और धर्म के सच्चे तत्व को हृदयङ्गम कर सकेगा। वैसे तो, जैसा यमराज ने कहा कि 'इस आदि शक्ति' के गुणों का कोई पूरा कीर्तन नही कर सकता,यह विषय अधिकांश अगम्य और आज्ञेय है। यदि कोई इसका अनुभव भी कर लेताहै तो फिर भी इसका वर्णन कर सकना सम्भव नही होता और तो क्या, वेदके ऋषियो ने भी बहुत कुछ करने पर अन्तमें यहीं निष्कर्ष निकाला है कि सृष्टि और ईश्वर के रहस्य का पूरा विवेचन कर सकना सम्भव नहीं है।

इस स्थिति में मनुष्य का हित और आत्मकल्याण इसीमें है कि वह मतमतान्तरों तथा सम्प्रदायों के बाह्य क्रिया-काण्डों के पालन से ही सन्तुष्ट न हो जाय और न अपना समय तथाशक्ति धार्मिकवाद विवाद में खर्च करे, वरन् सदैव उस आद्याशक्ति के विश्वव्यापी रूप का ध्यान करता हुआ उसी के अंशस्वरूप समस्त प्राणियों के हितकारी कार्यों और परोपकार में तत्पर रहे।

इस संस्करणमें पुनरावृत्तियों और लम्बी कथाओंको कमकरके देवी भागवत के महत्वपूर्ण अंशों को सम्मिलित किया गया है, जिससे थोड़े में ही सारे पुराण का सार आ गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

भूमिका—	३
१. शुकदेवजी का जन्म	३३
२. हयग्रीव अवतार	४२
३. ब्रह्मा द्वारा देवी स्तुति	५०
४. मधु कैटभ संहार	५७
५. शुकदेव को ज्ञान प्राप्ति	६४
६. विष्णु को ज्ञानोपदेश	७०
७. शांतनु गङ्गा विवाह	७६
८. पाडवों की उत्पत्ति	८४
९. मृत कौरव दर्शन	९२
१०. परीक्षित को शाप	९६
११. जनमेजय का सर्प-यज्ञ	१०३
१२. भुवनेश्वरी निर्णय	११०
१३. लोक-दर्शन	११७
१४. प्रत्यक्ष दर्शन	१२३
१५. देवी स्तोत्र	१३३
१६. शिव ब्रह्मा द्वारा स्तुति	१४२
१७. देवी द्वारा ज्ञानोपदेश	१५०
१८. सत्यव्रत की कथा	१५४
१९. सारस्वत बीज-मन्त्र की महत्ता	१५८
२०. अम्बा यज्ञ की विधि	१७०
२१. देवी यज्ञ का अनुष्ठान	१७७
२२. देवी-महिमा	१८४
२३. वीरसेन की पराजय	१८८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२४. देवी की कृपा	१९२
२५. देवी का काशी-निवास	१९९
२६. नवरात्र व्रत-विधान	२१४
२७. राम चरित्र	२२४
२८. सीता हरण	२३२
२९. राम को नवरात्र-व्रत का परामर्श	२३६
३०. अदिति को शाप	२४१
३१. नारायण द्वारा तपस्या	२५०
३२. प्रह्लाद का नैमिषारण्य-गमन	२६१
३३. प्रह्लाद का नर-नारायण से युद्ध	२६५
३४. शुक्राचार्य की माता का वध	२७३
३५. विष्णु की भृगु-शाप	२७८
३६. दैत्यों की पराजय	२८३
३७. देवता दैत्यों-द्वारा देवी का स्मरण	२८७
३८. अप्सराओं को आश्वासन	२९४
३९. उत्पीड़ित पृथ्वी का देवलोक गमन	२९५
४०. वसुदेव देवकी विवाह	३०३
४१. देवकी के प्रथम पुत्र का वध	३०५
४२. श्री कृष्ण जन्म	३०९
४३. श्री कृष्ण विवाह	३१४
४४. पराशक्ति की सर्वज्ञता	३२१
४५. महिषासुर को वरदान	३२८
४६. दिव्य तेज से देवी का प्राकट्य	३३५
४७. देवताओं द्वारा देवी की स्तुति	३४०
४८. दैत्यमन्त्री और देवी सम्वाद	३४७
४९. युद्ध का निश्चय	३५१
५०. वाष्कल और दुर्मुख का वध	३५६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५१. ताम्र और चिक्षुर का वध	३५९
५२. दैत्यों का वध	३६३
५३. महिषा र वध	३६६
५४. देवताओं द्वारा जगदम्बा की स्तुति	३७६
५५. शत्रुघ्न की राज्य प्राप्ति	३८४
५६. शुम्भ-निशुम्भ द्वारा स्वर्ग विजय	३८८
५७. देवी का प्रादुर्भाव	३९३
५८. कौशिकी देवी का आविर्भाव	३९९
५९. धूम्रलोचन वध	४०६
६०. चण्ड-मुण्ड वध	४१३
६१. रक्तबीज का रणक्षेत्र को प्रस्थान	४१८
६२. मातृगणों द्वारा दैत्यों का संहार	४२१
६३. रक्तबीज का वध	४२५
६४. शुम्भ-निशुम्भ का वध	४३०
६५. राजा सुरथ की पराजय	४३९
६६. देवी माहात्म्य	४४३
६७. देवी आराधना विधि	४४६
६८. भगवती का प्रत्यक्ष दर्शन	४५३
६९. त्रिशिरा की तपस्या	४५८
७०. त्रिशिरा का वध	४६३
७१. वृत्रासुर द्वारा तपस्या	४६९
७२. वृत्रासुर को वर प्राप्ति	४७५
७३. देवी का वरदान	३७९
७४. वृत्रासुर वध	४८४
७५. नहुष को इन्द्र पद प्राप्ति	४८९
७६. नहुष का पतन	४९६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ ॐ ॥

देवी भागवत

प्रथम खण्ड

शुकदेवजी का जन्म

ॐ सर्वं चैतन्यरूपा तामाद्या विद्या च धीमहि ।
बुद्धिं योः नः प्रचोदयात् ।१
सूत सूत महाभाग धन्योऽसि पुरुषर्षभ ।
यदधीतास्त्वया सम्यक्पुराणसंहिताः शुभाः ।२
अष्टादश पुराणानि कृस्णेन मुनिनाऽनघ ।
कथितानि सुदिव्यानि पठितानि त्वयानघ ।३
पंचलक्षणयुक्तानि सरहस्यानि मानद ।
त्वया ज्ञातानि सर्वाणि व्यासात्सत्यवतीसुतात ।४

सभी चैतन्य जीवों की आत्मा और विद्या स्वरूप देवी का मैं ध्यान करता हूँ । ये भगवती हमारी बुद्धि को शुभ कार्यों में प्रेरित करती हैं ।१। शौनकजी बोले—हे सूत ! महाभाग ! हे पुरुषोत्तय ! आप धन्य हैं, आपने पुराण संहिताओं का भले प्रकार अध्ययन किया है ।२। हे निष्पाप ? कृष्ण मुनि रचित दिव्य, लक्षण एवं रहस्य युक्त अट्ठारह पुराणों का अध्ययन करके सत्यवती पुत्र व्यासजी की कृपा से आपने पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है ।३-४।

अस्माकं पुण्ययोगेन प्राप्तस्त्वं क्षेत्रमुत्तमम् ।
दिव्यं विश्वसनं पुण्यं कलिदोषविवर्जितम् ।५
समाजोऽयं मुनीनां हि श्रोतुकामोऽस्ति पुण्यदाम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुराणसंहितां ब्रूहि चित्तेन सुसमाहितः ।६
दीर्घायुर्भव सर्वज्ञ तापत्रयविवर्जितः ।
कथायाद्य महाभाग पुराणे ब्रह्मसम्मितम् ।७
श्रोत्रेन्द्रिययुताः सूत नराः स्वादविचक्षणाः ।
न शृण्वन्ति पुराणानि वंचिता विधिना हि ते ।८
यथा जिह्वेन्द्रियाह्लादः षड्रसैः प्रतिपद्यते ।
तथा श्रोत्रेन्द्रियाह्लादो वचोभिः सुधियां स्मृतः ।९
अश्रोत्रा. फणिनः कामं मुह्यन्ति हि नभोगुणैः ।
सकर्णा ये न शृण्वंति तेऽकर्णाः कथं न च ।१०
अतः सर्वे द्विजा सौम्य श्रोतुकामा समाहितः ।
वर्तन्ते नैमिषारण्ये क्षेत्रे कलिभयार्दिताः ।११

हमारे पुण्य से आप इस श्रेष्ठ, दिव्य कलियुग के दोषों से मुक्त इसनिवास योग्य क्षेत्र में पधारे हैं ।५। हे सूत ! यह मुनि-समाज पुण्य प्रदायिनी पुराण संहित का श्रवण करना चाहता है उसे आप समाहित चित्त से सुनाने की कृपा करिये ।६। हे महाभाग हे सर्वज्ञ ! आप तीनों तापों से विमुक्त और दीर्घायु हो, हमारे प्रति ब्रह्म-सम्मत पुराण कथन करिये ।७। हे सूत, कानों के होते हुए भी जिह्वा के स्वाद में लिप्त हुए जो मनुष्य पुराण नहीं सुनते वे भाग्यहीन हैं । ८। जैसे षड्रसों के स्वाद से जिह्वा आनन्दित होती है, वैसे ही उत्तम वचनों के श्रवण से विद्वानों के कानों को सुख मिलता है । ९। कान रहित सर्प भी बाजों की ध्वनि सुनकर आकर्षित होता है, तो कानों के रहते हुए भी जो मनुष्य कथा-श्रवण नहीं करते उन्हें बहरा ही क्यों न कहें ।१०। अतः हे सौम्य ! कलि के भय से आर्त्त हुए सभी द्विज श्रेष्ठ कथा सुनने की कामना करके इस नैमिषारण्य क्षेत्र में उपस्थित हुए हैं ।११।

धिक्सुधां पिबतां सूत मुक्तिर्नैव कदाचन ।
पिबन्भागवतं सद्यो नरो मुच्येत संकटात् ।१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुधापाननिमित्तं यत्कृता यज्ञाः सहस्रशः ।
न शांतिमधिगच्छाम सूत सर्वात्मना वयम् ।१३
मखानां फलं स्वर्गः स्वर्गात्प्रच्यवनं पुनः ।
एवं संसारचक्रेऽस्मिन्भ्रम एव निरंतरम् ।१४
विना ज्ञानेन सर्वज्ञ नैव मुक्तिः कदाचन् ।
भ्रमता कालचक्रेऽत्र नराणां त्रिगुणात्मके ।१५
अतः सर्वरसोपेतं पुण्यं भागवत वद ।
पावनं मुक्तिदं गुह्यं मुमुक्षूणां तदा प्रियम् ।१६

हे सूत ! सुधा-पान करने वाले व्यक्ति धिक्कार योग्य हैं क्योंकि सुधा-पान मुक्तिदायक नहीं है । परन्तु भागवत रूपी अमृत के पान से मनुष्य तुरन्त ही संकट मुक्त हो जाता है ।१२। हे सूत ! सुधापान के लिये जो सहस्र यज्ञ किये जाते हैं उनसे हमें शान्ति नहीं मिल सकती ।१३। क्योंकि यज्ञ का फल स्वर्ग है तथा स्वर्ग को प्राप्त हुए मनुष्य को पुण्य क्षीण होने पर पुनः मर्त्यलोक में लौटना होता है इस प्रकार प्राणी इस भव-चक्र में निरन्तर घूमता रहता है ।१४। हे सर्वज्ञ ! ज्ञान के विना मुक्ति सम्भव नहीं है और मनुष्य त्रिगुणात्मक कालचक्र में पड़कर चक्कर काटता रहता है ।१५। इसलिए आप सब रसों से युक्त भागवत पुराण सुनाइये ।१६।

सौम्य व्यासस्य भार्यायां कस्यां जातः सुतः शुकः ।
कथं वा कीदृशो येन पठितेयं सुसंहिता ।१७
अयोनिजस्त्वया प्रोक्तस्तथा चारणिजः शुक्रः ।
सदेहोऽस्ति महांस्तत्र कथयाद्य महामते ।१८
पुरा सरस्वतीतीरे व्यासः सत्यवतीसुतः ।
आश्रमे कलविंकौ तु दृष्ट्वा विस्मयमागतः ।१९
जातमात्रं शिशुं नीड़े मुक्तामंडान्मनोहरम् ।
ताम्रास्यं शभसर्वाङ्गं पिच्छांकुरविवर्जितम् ।२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तौ तु भक्ष्यार्थमत्यंतं रतौ श्रमपरायणौ ।
शिशोश्चंचुपुटे भक्ष्यं क्षिपतौ च पुनः पुनः ।२१
वीक्ष्य प्रेमाद्भुतं तत्र बाले चटकयोस्तदा ।
व्यासश्चिंतातुरः कामं मनसा समचिन्तयत् ।२२
तिरश्चामपि यत्प्रेम पुत्रे समभिलक्ष्यते ।
किं चित्रं यन्मनुष्याणां सेवाफलमभीप्सताम् ।२३
किमेतौ चटकौ चास्य बिवाहं सुखसाधनम् ।
विरच्य सुखिनौ स्यातां दृष्ट्वा बधूमुखं शुभम् ।२४

ऋषियों ने कहा—हे सौम्य ! शुकदेव जी व्यास की किस पत्नी से उत्पन्न हुए ? उनका जन्म कैसे हुआ ? उन्होंन्ने अल्पकाल में ही सम्पूर्ण पुराण संहिता किस प्रकार पढ़ ली ? ।१७। आपने उन्हें अयोनिज कहा था। उनकी उत्पत्ति अरणि से किस प्रकार हुई इस विषय में हमें अत्यन्त शंका है आप उसका समाधान करें ।१८। सूतजी बोले—प्राचीन काल की बात है, सत्यवती पुत्र व्यास जी सरस्वती तट पर स्थित अपने आश्रम में गौरैया के जोड़े को देखकर आश्चर्य करने लगे ।१९। उन्होंने देखा कि अण्डे से उत्पन्न हुए लाल मुख और सुन्दर अङ्ग वाले पंख-रहित नव शिशु को वहीं छोड़कर वे दोनों उड़ उड़कर बारम्बार चारा लाते और शिशु के मुख में डाल देते ।२०-२१। उन दोनों को अपने शिशु में ऐसा अनुपम स्नेह देखकर चिन्तातुर हुए व्यास जी सोचने लगे कि जब पक्षियों में भी ऐसा स्नेह है, तो अपनी सेवा के फल की इच्छा करने वाले मनुष्यों में स्नेहहो तो आश्चर्य ही क्या है ? ।२२-२३। क्या यह पक्षी इस शिशु के सुख-साधनार्थ विवाह करके वधू का शुभ मुख देख पायेंगे ? ।२४।

अथवा वाधंके प्राप्ते परिचर्यां करिष्यति ।
पुनः परमधर्मिष्ठः पुण्यार्थं कलविङ्कयोः ।२५
अर्जयित्वाऽथवा द्रव्यं पितरौ तर्पयिष्यति ।
अथवा प्रेतकार्याणि करिष्यति यथाविधि ।२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसारेऽत्र समाख्यातं सुखानामुत्तमं सुखम् ।
पुत्रगात्रपरिष्वंगो लालनं च विशेषतः ।२७
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च ।
पुत्रादन्यतरन्नास्ति परलोकस्य साधनम् ।२८
आतुरे मृत्युकालेऽपि भूमिशय्यागतौ नरः ।
करोति मनसा चिंता दुःखितः पुत्रवर्जितः ।२९
धनं मे विपुलं गेहे पात्राणि विविधानि च ।
मंदिरं सुन्दरं चैतत्कोऽस्य स्वामी भविष्यति ।३०
मृष्युकाले मनस्तस्त दुःखेन भ्रमते यतः ।
अतोऽस्य दुर्गतिर्नूनं भ्रांतचित्तस्त सर्वथा ।३१
एवं बहुविधा चिन्तां कृत्वा सत्यवतीसुतः ।
निःश्वस्य बहुधा चोष्ण विमना सम्बभूव ह ।३२

अथवा वृद्धावस्था प्राप्त होने पर यह धर्मनिष्ठ पुण्य प्राप्ति के उद्देश्य से अपने इन माता पिता की सेवा करेगा ? ।२५। क्या यह द्रव्य अर्जन द्वारा अपने माता-पिता को प्रसन्न कर पायेगा अथवा इनकी मृत्यु होने पर इनका विधिपूर्वक प्रेत कर्म कर सकेगा ? ।२६। पुत्र के शरीर को हृदय से लगाने और उसके लालन-पालन में ही इस संसार में अत्यन्त सुख मिलता है ।२७। पुत्र होने की न तो गति ही है और न वह स्वर्ग ही पा सकता है । परलोक सुधारने एवं भव चक्र से निस्तार के लिए पुत्र के अतिरिक्त कोई अन्य साधन नहीं है ।२८। रोगी और मरणकाल को प्राप्त भूमि-शय्या पर पड़ा हुआ पुत्रहीन मनुष्य दुःखित हृदय से सींचता है कि मेरे पास विपुल धन, विविध प्रकार के पात्र और सुन्दर निकेतन हैं, परन्तु इनका स्वामी कौन होगा ? ।२९-३०। इस प्रकार मरण काल में अत्यन्त दुःखी और भ्रान्त चित्त रहने पर जीव दुर्गति को प्राप्त होता हैं ।३१। ऐसी अनेक बातें सोचते हुए व्यास जी उष्ण निश्वासों को बारम्बार, छोड़ते हुए खिन्न हो उठे ।३२।

विचार्य मनसाऽत्यर्थं कृत्वा मनसि निश्चयम् ।
जगाम च तपस्तप्तुं मेरुपर्वतन्निधौ ।३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनसा चिंतयामास कं देवं समुपास्महे ।
वरप्रदाननिपुणं वांछितार्थप्रदं तथा ।३४
विष्णुं रुद्रं सुरेन्द्रं वा ब्रह्माणं वा दिवाकरम् ।
गणेशं कार्तिकेयं च पावकं वरुणं तथा ।३५
एव चिंतयतस्तस्य नारदो मुनिसत्तमः ।
यदृच्छया समायातो वीणापाणिः समाहितः ।३६
तं दृष्ट्वा परमप्रीतो व्यासः सत्यवतीसुतः ।
कृत्वाऽर्घ्यमासनं दत्त्वा प्रपच्छ कुशलं मुनिम् ।३७
श्रुत्वाऽथ कुशलप्रश्नं पप्रच्छ मुनिसत्तमः ।
चिंतातुरोऽसि कस्माच्च द्वैपायन वदस्व मे ।३८
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति न सुखं मानसे ततः ।
तदर्थदुःखितश्चाहं चिंतयामि पुनः पुनः ।३९
तपसा तोषयाम्यद्य कं देवं वांछितार्थदम् ।
इति चिंतातुरोऽस्म्यद्य त्वामहं शरण गतः ।४०

फिर फले प्रकार विचार करके और कुछ निश्चय करके व्यासजी मेरु पर्वत के समीप तप करने के लिये चले गये ।३३। वहाँ जाकर सोचने लगे कि अब मैं विष्णु, रुद्र ब्रह्मा, सूर्य, गणेश, कार्तिकेय अग्नि या वरुण में से किस देवता की उपासना करूँ जो वरदान द्वारा मेरे इच्छित को पूर्ण कर सके ।३४-३५। वे इस प्रकार सोच ही रहे थे कि तभी वीणापाणि नारदजी वहाँ पर आ पहुँचे ।३६। इन्हें देख कर व्यासजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और अर्घ्य तथा आसन देकर कुशल पूछने लगे ।३७। नारदजी अपना कुशल कहकर बोले कि हे द्वैपायन ! आप चिन्तित क्यों हो रहे हैं, वह मुझे बताइये ।३८। व्यासजी ने कहा कि पुत्रहीन की गति नहीं होती, उसका मन खिन्न ही रहता है, इसी दुःख से पीड़ित हुआ मैं बारम्बार सोचता हूँ कि किस देवता की उपासना करूँजो मेरी कामना शीघ्र पूर्ण कर दे । उसी चिन्ता में पड़ा हुआ मैं अब आपकी ही शरण में हूँ ।३९-४०।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाराशर्यं महाभागः यत्वं पृच्छसि मामिह ।
तमेवार्थं पुरा पृष्टः पित्रा मे मधुसूदनः ।४१
देवदेव जगन्नाथ भूतभव्यभत्प्रभो ।
तपश्चरसि कस्मात्त्वं किं ध्यायसि जनार्दन ।४२
विस्मयोऽयं ममात्यर्थं त्वं सर्वजगता प्रभुः ।
ध्यानयुक्तोऽसि देवेश किं च चित्रमतः परम् ।४३
त्वन्नाभिकमलाज्जातः कर्ताऽहंसखिलस्य हि ।
त्वत्तः कोऽयधिकोऽस्त्यत्र तं देव ब्रूहि मापते ।४४
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य हरि राह प्रजापतिम् ।
शृणष्वैकमना ब्रह्मस्त्वां ब्रवीमि मनोगतम् ।४५
यद्यपि त्वां शिवं मां च स्थितिसृष्ट्यंतकारणम् ।
ते जानन्ति जनाः सर्वे सदेवासुरमानुषाः ।४६
स्रष्टा त्वं पालकश्चाहं हरः संहारकारकः ।
कर्त्ता शक्तयेति सतर्कः क्रियते वेदपारगैः ।४७
जगत्स जनने शक्तिस्त्वयि तिष्ठति राजसी ।
सात्विकी मयि रुद्रे च तामसी परिकीर्तित ।४८

नारादजी बोले—हे पाराशर-सुवन ! हे महाभाग ! आपने जैसा प्रश्न किया है, वैसा ही प्रश्न एक बार मेरे पिता ब्रह्माजी ने भगवान् विष्णु से किया था ।४१। ब्रह्माजी बोले-हे देवदेव ! हे जगदीश्वर ! हे भूत, भविष्यत् वर्तमान के अधीश्वर ! आप किसका ध्यान करते हुए यह घोर तप कर रहे हैं ? ।४२। आपको इस प्रकार तप और ध्यान करते हुए देखकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हो रहा है । इससे बढ़कर अद्भुत बात और क्या होगी ।४३। मैं आपके नाभिकमल से उत्पन्न होकर भी अखिल विश्व का कर्त्ता बना हुआ हूँ । तो क्या आपसे भी बढ़कर कोई देवता अन्य हैं ? यदि हो तो मुझे बताने की कृपा करिये ।४४। ब्रह्माजी की बात सुनकर भगवान् हरि ने कहा—हे ब्रह्मन् ! मेरे तन में जो बात है उसे कहता हूँ आप सावधान चित्त से सुनिये ।४५। यद्यपि सभी सुर, असुर और मनुष्य आपको मुझे और शिवजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को संसार की सृष्टि, पालन और संहार का मूल कारण मानतेहैं।४६। परन्तु विज्ञजन तर्क करते हैं कि किसी अलक्ष्य शक्ति के वल परही आप सृष्टि कर्त्ता, मैं पालक और शिवजी-संहार कर्त्ता बने हुए हैं।४७।संसार का सृजन करने के लिए आप में राजसी शक्ति, मुझमें सात्विकी तथा शिव में तामसी शक्ति अधिष्ठित रहती हैं।४८।

तया विरहितस्त्वं न तत्कर्मकरणे प्रभुः।
नाहं पालयितुं शक्ता वंहतुं नापि शङ्करः।४९
तदंधीना वयं सवं सर्वे वर्ताम सततं विभो।
द्रत्यक्षे च परोक्षे च दृष्टांतं शृणु सुव्रत।५०
प्रत्यक्षं तव धर्मज्ञ तस्मिन्नेकार्नवे परा।
पंचवर्षसहस्राणि बाहुयुद्धं मया कृतम्।५१
तौ कर्णमलजौ दुष्टौ दानवौ मदगर्वितौ।
देव देव्या प्रसादेन निहतौ मधुकैटभौ।५२
तदा त्वया न किं ज्ञातं कारणं तु परात्परम्।
शक्तिरूपं महाभागा किं पृच्छसि पुनः पुनः।५३
यदिच्छः पुरुषो भूत्वा विचरामि महार्णवे।
कच्छपः कोलसिंतश्च वामनश्च युगे युगे।५४
न कस्यापि प्रिया लोके तिर्यग्योनिषु संभवः।
नाभवं स्वेच्छया वामनववाहादिषु योनिषु।५५
विहाय लक्ष्म्या सह सविहारं का याति मत्स्यादिषु हीनयोनिषु।
शय्यां च मुक्त्वा गरुडासनस्थः करोमि युद्धं विपल स्वतन्त्रः।४९

यदि वह शक्ति न हो तो न आप सृजन कर सकते हैं तथा न मैं और शिव पालन एवं संहार करने में समर्थ हो सकते हैं।५०। हे विभो! हे सुव्रत! हम सदैव उसके अधीन हैं। अब परोक्ष और प्रत्यक्ष विषयक वात सुनिये।५१। हे धर्मज्ञ! यह प्रत्यक्ष ही है कि प्राचीन काल में उस महासागर में पाँच सहस्र वर्षोंतक भयंकर बाहु-युद्ध करता रहा।५२। कान के मैल से उत्पन्न हुए मधु कैटभ नामक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्यन्त मदोन्मत दैत्यों को देवी की कृपा से ही मैंने मार डाला था।५२ हे महाभाग ! आप उस समय उस परस्पर कारण रूपा शक्ति को नहीं पहिचान सके थे क्या ? यदि पहिचान सकेतो फिर बार-बार क्यों पूछते हो। मैं उसी की इच्छासे परम पुरुष होकर महा समुद्रमें विचरणकरता और कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन अवतार युग-युग में धारण करता हूँ ।५३-५४। तिर्यग् योनि में स्वेच्छा से कौन उत्पन्न होना चाहेगा ? वामन वराह मैं स्वेच्छा से नहीं बनता, उसी अलक्ष्य शक्ति की प्रेरणा से वैसा करना होता है ।५५। स्वेच्छा पूर्वक लक्ष्मी के संग सुखो को त्याग कर मत्स्यादि नीची योनियों में जन्म नहीं लेता। यदि स्वतन्त्र होता तो कोमल शैय्या छोड़कर गरुड़ की पीठ पर बैठकर युद्ध हेतु न दौड़ता ।५६।

पुरा पुरुस्तेऽज पिरो मदीयं गतं धनुर्ज्यास्खलनात्तव चापि
त्वया तदा वाजिशिरो गृहीत्वा संयोजितंसिल्पिवरेण भूयः।५७
हयाननोऽहं पपिकीर्तितश्च प्रत्यक्षमेतत्तव लोककर्तुं ।
विडंवनेयं किल लोकमध्ये कथं भवेदात्मपरो यदि स्याम् ।५८
तस्मान्नाहं स्वतन्त्रोऽस्मि शक्त्याधानोऽस्मि सर्वथा ।
तामेव शक्ति सततं ध्यायामि च निरन्तरम् ।५९
ततः परतरं किंचिज्जानामि कमलोद्भव ।
इत्युक्तं विष्णुना तेन पद्मयोनेस्तु सन्निधौ ।६०
येन चाप्यहमुक्तोऽस्ति तथैव मुनिपुंगवा ।
तस्मात्त्वमपि कल्याणपुरुषार्थाक्तिहेतवे ।६१
असंशयं हृदंभोजे भज देवीपदाम्बुजम् ।
सर्वं दास्यति सा देवी यद्यदिष्ट भवेत्तव ।६२
नारदेनैवमुक्तस्तु व्यासः सत्जयतीसुतः ।
देवीपादाब्जनिष्णानस्तपसे प्रययौ गिरौ ।६३

प्राचीन काल में धनुष की प्रत्यचा टूटने पर आपके समक्ष ही मेरा शिर धड़ से पृथक हो गया था, तब आपने ही अपने कौशल से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्वष्टा के अश्वका शिर धड़ से संयुक्त किया था तभी से मेरा नाम हय-ग्रीव पड़ गया। यह सब आपके समक्ष हुआ ।५७-५८। इस प्रकार मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ, उस महाशक्ति के अधीन रहकर सदैव उसका ध्यान करता रहता हूँ ।५९। हे कमलोद्भव ! इसके अतिरिक्त मुझे कुछ ज्ञान नहीं हैं (नारद जी ने कहा) हे व्यासजी ! भगवान् विष्णु ने ब्रह्माजीसे इस प्रकार कहा ।६०। हे मुनिश्रेष्ठ ! मेरे पिता ब्रह्माजी ने ही यह सब बातें मुझे सुनाई थीं। इसलिये आप भी कल्याण एवं पुरुषार्थ की प्राप्ति के निमित्त सन्देह-रहित होकर उन्हीं भगवती के चरण कमलों का ध्यान करिये, वह आपकी सभी कामनायें पूर्ण करेंगीं ।६१-६२। सूतजी बोले नारदजी के वचन सुनकर व्यासजी देवी के पाद-पद्मों का ध्यान करते हुए तप-हेतु पर्वत पर चले ।६३।

—❀—

हयग्रीव अवतार

सूतास्माकं मदः कामं मग्नं संशयसागरे ।
यथोक्तं महादाश्चर्यं जगद्विस्मयकारकम् ।१
यन्मूर्द्धा माधवस्यापि गतो देहात्पुनः परम् ।
हयग्रीवस्ततो जातः सर्वकर्ता जनार्दनः ।२
वेदोऽपि स्तौति यं देव देवाः सर्वे यदाश्रयाः ।
आदिदेवो जगन्नाथः सर्वकारणकारणः ।३
तस्यापि वदनं चिन्नं देवयोगात्कथं तदा ।
तत्सर्वं कथयाशु त्वं विस्तरेण महामते ।४
शृण्वंतु मुनयः सर्वे सावधानाः समन्ततः ।
चरितं देवदेवस्य विष्णोः परमतेजसः ।५
कदाचिद्दारुणं युद्धं कृत्वा देवः सनातनः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दशवर्षसहस्राणि परिश्रांतो जनार्दनः ।६
समे देशे स्थाने तु कृत्वा पद्मासनं विभुः ।
अवलम्ब्य धनुः साज्यं कंटदेशेनास्थितम् ।७
दत्वा भारं धनुष्कोट्या निंद्राभावं रमापतिः ।
श्रांतत्वाद्दैवयोगाच्च जातस्तत्रातिनिद्रित ।८

ऋषियों ने कहा—हे सूतजी ! हमारा मन संशय सागर में गोते लगा रहा है। आपने अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना सुनाई कि भगवान् विष्णु का मस्तक ही कट गया, तभीसे उनका नाम हयग्रीवहो गया।१-२ जिन भगवान् विष्णु की वेद भी स्तुति करते हैं और सभी देवता जिनके वश में रहते हैं, जो आदि देव, जगदीश्वर सब कारणों के कारण हैं, उनका शिर कैसे कट गया ? हे महामते ! हमें यह सब सुनाइये।३-४ सूतजी ने कहा—हे मुनियो ! आपने स्थित चित्तसे परम तेज वाले देवताओं के भी अधिपति भगवान् विष्णु को चरित्र श्रवण किया।५। एक वार भगवान् विष्णु ने दश हजार वर्ष तक निरन्तर युद्ध किया, जिससे वे थक गये।६। तब वह पवित्र समस्त स्थान पर पद्मासन लगाकर लेट गये, उनके कण्ठका भार प्रत्यञ्चा चढे हुए धनुष की नोक पर पड़ रहा था। देवयोग से अधिक थकने के कारण उन्हें प्रगाढ़ निद्रा आ गई।७-८।

तदा कालेन कियता देवाः सर्वे सवासवाः ।
ब्रह्मेशाहिताः सर्वे यज्ञं कर्तुंसमुद्यता ।९
गताः सर्वेऽथ वैकुण्ठं द्रष्टुं देवं जनार्दतम् ।
देवकार्यार्थसिद्धयर्थं मखानामधिपं प्रभुम् ।१०
अदृष्ट्वा तु तदा तत्र ज्ञानदृष्ट्या विलोक्य ते ।
यत्रास्ते भगवान्विष्णुर्जग्मुस्तत्र तदा सुराः ।११
ददृशुस्ते तदेशानं योगनिद्रावशं गतम् ।
विचेतनं विभुं विष्णुं तत्रासांचक्रिरे सुराः ।१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थितेष सर्वदेवेषु निद्रासुप्ते जगत्पतौ ।
चिंतामापः सुराः सर्वे ब्रह्मरुद्रपुरोगमाः ।१३
उत्पाविता तदां ब्रम्री ब्रह्माणी परमेष्ठिना ।
तथा भक्षयितुं तत्र धनुषोऽग्रं धरास्थितम् ।१४
भक्षितेऽग्रे तदानिम्न गमिष्यति शरासनम् ।
तदानिद्राविमुक्तोऽसौ देवदेवो भविष्यति ।१५
देवकार्यं तदा सर्वं भविष्यति न संशयः ।
स वम्रीं संदिदेशाथ देवदेवः सनातनः ।१६

इसी अवतार पर ब्रह्माजी के सहित सभी देवता यज्ञ करने में तत्पर हुए ।६। वे सब देवता भगवान् विष्णु से मिलने के लिए वैकुण्ठ पहुँचे क्योंकि विष्णु ही यज्ञ के अधिपति थे और उन्हीं की कृपा से देवताओं का यह यज्ञ सम्पन्न हो सकता था ।१०। विष्णु को वैकुण्ठ में न पाकर उन्होंने ध्यान दृष्टि द्वारा यह जान लिया कि वे अमुक स्थान पर सोए हुए हैं, और तब वे ही वहीं पहुँच गये ।११। वहाँ पहुँचकर देवताओं ने भगवान् विष्णु को निद्रा में अचेत देखा तो ब्रह्मा-रुद्र आदि को अत्यन्त चिंता हुई ।१२-१३। तब ब्रह्मा ने पृथ्वी पर स्थित उस विशाल धनुष को खाने के लिये दीमक रची ।१४। उन्होंने विचार किया कि इन दीमकों द्वारा धनुष का अग्रभाग खा लिया जाने से धनुष नीचा हो जायेगा तो विष्णु स्वयं जाग पड़ेंगे ।१५। ऐसा होने पर देवकार्य सम्पन्न हो जायगा । इसलिए ब्रह्माजी ने दीमकों को उस धनुष को खा लेने का आदेश दे दिया ।१६।

इत्युक्ता ब्रह्मणा वम्री धनुषोऽग्रं त्वरान्विता ।
चखाद सस्थितं भूमौ विमुक्ताज्या तदाऽभवत् ।१७
प्रत्यंचाया विमुक्तायां मुक्ता कोटिस्तथोत्तरा ।
शब्दः समभवद्घोरस्तेत त्रस्ताः सुरास्तदा ।१८
ब्रह्मांडं क्षुभितं सर्वं बसुधा कम्पिता तदा ।
समुद्राश्च सुसद्विग्नास्त्रस्ताश्च जलजंतवः ।१९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ववुर्वातास्तथा चोग्राः पर्वताश्च चकंपिरे ।
उल्कापाता महोत्पाता बभूवुदुःखशंसिनः ।२०
दिशो घोरतराश्चैव सर्योऽप्यस्तंगतोऽभवत् ।
चिंतामापुः सुराः सर्वेकिं भविष्यति दुर्दिने ।२१
एवं चिंतयतां तेषां मूर्धा विष्णोः सकुण्डलः ।
गतः समु कुटः क्वापि देवदेवस्य तापसाः ।२२
अन्धाकारे तदा घोरे शांते ब्रह्महरी तदा ।
शिरोहीनं शरीरं तु ददृशस्ते विलक्षणम् ।२३
दृष्ट्वा कबंधं विष्णोस्ते विस्मताः सुरसत्तमाः ।
चिंतासागरमग्नाश्च रुरुद्धुः शोककर्शिताः ।२४

सूतजी ने कहा—हे ऋषियो ! ब्रह्मा की आज्ञा से दीमकोंने धनुष के अग्रभाग को तत्काल खा लिया, जिससे उसकी प्रत्यंचा विमुक्त हो गई, तब धनुष का एक सिरा जोर से उछला और भयंकर शब्द हुआ उससे देवता भयभीत हो उठे ।१७-१८। उस भयंकर शब्द से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड क्षुब्ध हो गया, पृथिवी कम्पित हो उठी, समुद्र उफन पड़ाऔर उसके जलचर प्राणी त्रस्त हो उठे ।१९। पवन जोर से चलने लगा,पर्वत कांपने लगे और उल्कापात आदि उत्पात विपत्ति की सूचना देने लगे ।२०। दिशाएं भयानक हो गई । सूर्य छिप गये । इस संकटको उपस्थित देखकर देवता किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये ।२१। उसी समय विष्णु का मस्तक कुण्डल सहित कटकर अदृश्य हो गया ।२२। अन्धकार दूर होने पर ब्रह्मा और रुद्र ने विष्णु के मस्तक हीन विलक्षण देह को देखा ।२३ सभी देवता उससे अत्यन्त आश्चर्य चकित, चिन्तित और शोकाकुल होकर रोने लगे ।२४।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कालेनापादितं चं यत् ।
शुभं वाप्यशुभं वापि दैवं कोऽतिक्रमेत्पनः ।२५
देहवान्सुखदुःखानां भोक्ता नैवात्र संशयः ।
यथा कालवशात्कृत्तं शिरो मे शंभुना पुरा ।२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथैव लिंगपातश्च महादेवस्य शापतः ।
तवैवाद्य हरेर्मूर्धा पतितो लवणांभसिः ।२७
चिंतयतु महामाया विद्यादेवी सनातनाम् ।
सा विधास्यसि नः कार्यं निपुणा प्रकृतिः परा ।२८
ब्रह्मविद्या जगद्धात्री सर्वेषां जननी तथा ।
यया सर्वमिद व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।२९

तव ब्रह्माजी ने कहा—काल के अनुसार शुभाशुभ फल की प्राप्ति होती है । भाग्य का अतिक्रमण कोई नहीं कर सकता, प्रत्येक देहधारी समयानुसार सुख—दुःख भोगने में विवश हैं प्राचीन काल में रुद्र ने मेरा ही मस्तक काट लिया था ।२५-२६। उसी प्रकार शाप वश शिव लिंग कट गया था, वैसे ही आज भगवान् विष्णु का मस्तक कट कर लवण सागर में जा गिरा है ।२७। हे देवगण ! अब हमें उन महामाया सनातनी विद्या देवी का ध्यान रखना चाहिये, वह परा प्रकृति ही हमारा सब कार्य पूर्ण करेगी ।२८। क्योंकि वही ब्रह्मा विद्या गजद्धात्री और सब प्राणियों की जननी है, वही सब चराचर जीवों में व्याप्त रहती है ।२९

इत्युक्त्वा वै सुरान्वेधां निगमानादिदेश ह ।
देहयुक्तान्स्थानग्रे सुरकार्यार्थ सिद्धये ।३०
स्तुवंतु परमां देवीं ब्रह्मविद्यां सनातनीम् ।
गूढ़ांगी च महामायां सर्वकार्यार्थसाधनीम् ।३१
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य वेदाः सर्वाङ्गसुन्दरीः ।
तुष्टुवु र्ज्ञानगम्यां तां महामायां जगत्स्थिताम् ।३२
नमो देवि महामाये विश्वोत्पत्तिकरे शिवे ।
निर्गुणे सर्वभूतेशि मातः शङ्करकामदे ।३३
त्वं भूमिः सर्वभूतानां प्राणवतां तथा ।
धीः श्रीः कांतिः क्षमा शांतिः श्रद्धां मेंधाः धृतिः स्मृतिः ।३४

सूतजी बोले—हे ऋषियों ! यह कहकर ब्रह्माजी ने अपने समक्ष सदेह उपस्थित वेदों को आदेश दिया कि आप सनातनी ब्रह्म—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्य प्रच्छन्न रूपिणी, सर्वकार्य सिद्ध करने वाली महामाया की स्तुति करिए ।३०-३१। यह सुनकर वेद देवी की स्तुति करने लगे ।३२। हे देवि ! महामागे । हे संहार को रचने वाली ! हे शिवे ! निर्गुणे हे सर्वभूतों की स्वामिनी ! माता ! हे शिवजी की कामना पूर्ण करने वाली देवी ! आपको नमस्कार है ।३३। आप सब भूतों का प्राण और उनकी बुद्धि, श्री, कांति, क्षमा शान्ति, मेधा, धृति और स्मृति स्वरूपा हैं ।३४।

त्वमुद्गीथेऽर्धमात्राऽसि गायत्री व्याहृतिस्तथा ।
जया च विजया धात्री लज्जा कीर्तिः स्पृहा दया ।३५
न किं जानासि त्वं जननि मधुजिन्मौलिपतव ।
शिवे किं वा ज्ञात्वा विविदिपसि शक्ति मधुजितः ।
हरेः किवा मातर्दुरिततातिरेषा बलवती ।
भवत्याः पादाब्जे भजनानिपुणे स्वस्ति दुरितम् ।३६

सिंधोः पुत्र्या रोषितां किं त्वमाद्य कस्मादेनां प्रेक्षसे नाथहीनाम् क्षंतव्यस्ते स्वांशजातापराधो व्युत्थाप्यैन मोदिता मां कुरुष्व।३७

एते सुरास्त्वां ततत नमंति कार्येषु मुख्याः प्रथितप्रभावाः ।
शोकाणंवाद्यारय देवि देवानुत्थाप्य देवं सकलाधिनाथम्।३८
एवं स्तुता तदा देवी गुणातीता महेश्वरी ।
प्रसन्ना परमा माया वेदैः सांगैश्च सामगैः ।३९
तानुवाच तदा वाणी चाकाशस्थाशरीरिणी ।
देवान्यसुखै शब्दैर्जनानन्दकरी शुभा ।४०

आप उद्गीथ अर्थात् ओंकार में स्थित अर्द्ध बिन्दु हैं । आप ही गायत्री और उसकी व्याहृति जया, विजया, धात्री लज्जा कीर्ति, हैं । भगवान् विष्णु का मस्तक कटकर गिर गया है । यदि यह कहें कि विष्णु को किसी पाप का फल मिला है तो यह कहना उचित नहीं होगा ! ।३५-३६। हे आद्ये ! कहीं आप लक्ष्मीजी से तो रुष्ट नहीं हैं, जो आप उन्हें अनाथ देख रही हैं । हे माता ! आप भगवान् विष्णु को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवित करके अपनी अंशजा रमा का शोक दूर करिये।३७। यह सभी देवता अत्यन्त क्षमतावान् हैं। आप इनके अधिपति हरि को जीवन देकर इन्हें शोकार्णव से तारिये ।३८। सूतजी बोले कि साम गायक की इस प्रकार स्तुति सुनकर भगवती प्रसन्न हो गई और देवताओं को ही सुख देने वाली आकाशवाणी हुई ।३९-४०।

मा कुरुध्वं सुरार्श्चिंतां स्वस्थास्तिष्ठन्तु चामराः।
स्तुताऽहं निगमैः काम संतुष्टास्मि न संशयः ।४१
यः पुमान्मानुषे लोके स्तौयेत्तां मामकी स्तुतिम् ।
पठिष्यति सदा भयत्या सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।४२
श्रृणोति वा स्तोत्रमिदं मदीयं भक्त्या त्रिकालं सतत नरो यः।
विमुक्तदुःखः स भवेत्सुखो च वेदोक्तमेतन्ननुवेदतुल्यम् ।४३
पुरा दैत्यो महाबाहुर्हयग्रीवोऽतिविश्रुतः ।
तपश्चक्रे सरस्वत्यास्तीरे परमदारुणम् ।४४
जपन्नेकाक्षरं मन्त्रं मायावीजात्मकं मम ।
निराहारो जितात्मा च सर्वभोगविवर्जितः ।४५
ध्यायन्मां तामसो शक्ति सर्वभूषिताम्
एवंवर्षसहस्रं च तपश्चक्रऽतिदारुणम् ।४६

हे देवगण ! आप चिन्ता का त्याग करिये, इन वेदों द्वारा की गई स्तुति से मैं परम प्रसन्न हुई हूँ ।४१। संसार में जो कोई भी इस स्तोत्र द्वारा मेरी स्तुति करेगा, उसकी सभी कामनायें पूर्ण होंगी ।४२। प्रातः सायं, मध्याह्न में नित्य इस स्तोत्र से स्तुति करने पर उसके सभी संकट दूर हो जायेंगे ।४३। प्राचीन काल में हयग्रीव नामक एक महाबली दैत्य था, उसने सरस्वती के किनारे घोर तप किया था ।४४। वह निराहार और इन्द्रिय-निग्रह पूर्वक रहकर मेरे माया बीजात्मक एकाक्षरका जप करता था।४५।उसने सर्वभूषणोंसे विभूषित मेरी तामसी शक्ति का ध्यान करते हुए हजार वर्ष तक कठोर तप किया ।४६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंहोपरि स्थिता तत्र तमवोचं दयान्विता ।
वरं ब्रूहि महाभाग ददामि तव सुव्रत ।४८
इति श्रुत्वा वचो देव्या दानवः प्रेमपूरितः ।
प्रदक्षिणां चं चकार त्वरितस्तदा ।४९
हयग्रीवाच्च मे मृत्युर्नान्याज्जगदम्बिके ।
इति मे वांछित कामं पूरयस्व मनोगतम् ।५०
गृहं गच्छ महाभाग कुरु राज्यं यथासुखम् ।
हयग्रीवास्ते मृत्युनं ते नूनं भविष्यति ।५१
इति दत्वा वरं तस्या अन्तर्धानं गता तथा ।
मुदं परमिकां प्राप्तः सोऽपि स्वभवनं गतः ।५२

तब उसने जिस रूप में मेरी आराधना की, उसी रूप में उसके समक्ष प्रकट हो गई ।४७। सिंह पर सवारी किए हुए मैं उससे बोली—हे महाभाग ! सुव्रत ! वर माँग, मैं तेरा अभीष्ट सिद्ध करूँगी ।४८।यह सुनकर दैत्य के नेत्र उल्फुल्लित हो उठे उनमें हर्षाश्रु भर आये, उसने मुझे प्रणाम कर परिक्रमा की ।४९। हयग्रीव ने कहा—हे जगदम्बे ! मेरी यह कामना है कि मैं किसी अपने जैसे हयग्रीव के हाथों से ही मरू इसे ही आप पूर्ण करें ।५०। देवी बोली—हे महाभाग ! अपने घर जाकर सुखपूर्वक राज्य करो । हयग्रीव के अतिरिक्त कोई अन्य तुम्हें नहीं मार सकेगा ।५१। उसे वर प्रदान कर मैं अन्तर्हित हो गई और दैत्य प्रसन्नता पूर्वक अपने घर गया ।५२।

स पीड्यति दुष्टात्मा मुनीन्वेदांश्च सर्वशः ।
न कोऽपि विद्यते तस्य हंताऽद्य भुवनत्रये ।५३
तस्माच्छीर्ष हयस्यास्य सूमुद्धृत्य मनोहरं ।
देहेऽत्र विशिरो विष्णोस्त्वष्टा संयोजयिष्यति ।५४
हयग्रीवोऽथ भगवान्हनिष्यति तमासुरम् ।
पापिष्ठं दानवं क्रूर देवानां हितकाम्यया ।५५
इति श्रुत्वा वचस्तेषां त्वष्टा चातित्वरान्वितः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाजिशीर्षं चकर्ता खगेन सुरसन्निधो ।५६
विष्णोः शरीरे तेनाशु योजितं वाजिमस्तकम् ।
हयग्रीवो हरिर्जातां महामायाप्रसादतः।५७
कियता तेन कालेन दानवो मददर्पितः ।
निहतस्तरसा संख्ये देवनां रिपुराजसा ।५८

अब वह मुनियों और वेदों को पीड़ित करने में लगा है, क्योंकि उसे मारने वाला त्रिलोकी में कोई नहीं है ।५३। इसलिए त्वष्टा के मनोहर अश्व का मस्तक लेकर भगवान् उस पापी क्रूर दानव को मार कर देवताओं का हित-साधन करेंगे ।५४-५५। सूत जी बोले-यह सुनकर त्वष्टा ने शीघ्रता से अपने घोड़े का शिर काट कर विष्णु के धड़ में जोड़ दिया, तब महामाया की कृपा से वे हयग्रीव हो गये ।५६-५७। समय आने पर उन्ही हयग्रीव भगवान् ने उस दैत्य को युद्ध भूमि में पछाड़ दिया ।५८।

ब्रह्मा द्वारा देवी स्तुति

यूयं धन्या महाभाग धन्योऽहं पृथिवीतले ।
येषां श्रवणबुद्धिश्च ममापि कथने किल ।१
पुरा चैकार्णवे जाते विलीने भुवनत्रये ।
शेषपर्यङ्कसुप्ते च देवदेव जनार्दने ।२
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ दानवौ मधुकैटभौ ।
महाबलौ च दैत्यौ विवृद्धौ सागरे जले ।३
निराहारौ जितात्मानौ तन्मनस्कौ समाहितौ ।
बभूवतुर्विचित्यैव जपध्यान परायणौ ।४
एवं वर्षसहस्रं तु ताभ्यां तप्तं महत्तपः ।
प्रसन्ना परमा शक्तिर्जाता परमा तयोः ।५
खिन्नौ दानवौ दृष्ट्वा तपसे कृतनिश्चयौ ।
तयोरनुग्रहार्थाय वागुवाचाशरीरिणी ।६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरं वां वांछितं ब्रूतं परमं मृदय समन्तम् ।
ददामि परिपुष्टाऽस्मि युवयोस्तपसा किल ।७
इति श्रुत्वा तु तां वाणीं दानवावूचतुस्तदा ।
स्वेच्छया मरणं देवि वरं नौ देहि सुव्रते ।८

सूतजी ने कहा—हे महाभाग ऋषियो ! आप सुनने की कामना करते हैं इसलिए धन्य हैं और मैं कथनेच्छुक होने से धन्य हूँ ।१। प्राचीनकाल में प्रलय होने पर संसार और उसकी सम्पूर्ण सृष्टि महार्णव में विलीन हो गई और भगवान् विष्णु शेष शैय्या पर सो गये ।२। जब भगवान् विष्णु के कानों के मैल से मधु-कैटभ नामक दो दैत्य उत्पन्न होकर समुद्र के जल में ही वृद्धि को प्राप्त होने लगे ।३। फिर उन्होंने निराहार और जितेन्द्रिय रहकर जप ध्यान पूर्वक तपस्या की ।४। इस प्रकार एक हजार वर्ष पर्यन्त घोर तप करने पर परमा शक्ति प्रसन्न हो गई ।५। तप में दृढ़ निश्चयी उन दैत्यों पर कृपा करने के लिए आकाशवाणी हुई ।६। हे दैत्यों ! तुम्हारी तपस्या से मैं बहुत प्रसन्न हूँ तुम अपना इच्छित वर मांगो,मैं तुम्हें वही दूंगी ।७। आकाशवाणी सुन कर उन्होंने कहा हे भगवती ! हम जब चाहें तभी हमारी मृत्यु हो, बिना चाहे न हो ।८।

वांछितं मरणं दैत्यौ भवेद्वा मत्पसादतः ।
अजेयौ नेवदैत्यैश्च भ्रातरौ नात्र संशयः ।९
इति दत्तवरौ देव्या दानवौ मददर्पितौ ।
चक्रतुः सागरे क्रीडां यादोगणसमन्वितौ ।१०
कालेन कियता विप्रा दानवाभ्यां यदृच्छया ।
दृष्टः प्रजापतिब्रह्मा पद्मासनगतां प्रभुः ।११
दृष्ट्वा तु मुदितावास्तां युद्धकामौ महाबलौ ।
तमूचतुस्तदा तत्र युद्धं नौ देहि सुव्रता ।१२
नोचेत्पद्मं परित्यज्य यथेष्टं गच्छमाचिरम् ।
यदि त्वं निर्बलश्चापि क्व योग्यं शुभमासनम् ।१३
वीरभोग्यमिदं स्थानं कातरोऽसि त्यजाशु वै ।
तयोरिदं वचः श्रुत्वा चिंतामाप प्रजापतिः ।१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्ट्वा च बलिनौ वीरौ किं करोमीति तापसः ।
चिताविष्टस्तदा तस्थौ चिन्तयन्मनसा तदा ।१५

वाणी ने कहा--तुम्हें देवता और दैत्य कोईभी जीत न सकेगें और तुम्हारी स्वेच्छा मृत्यु होगी ।९। इस प्रकार वर प्राप्त करके दोनों दैत्य मन्दोन्मत्त हो गए और जलचरों के साथ विहार करने लगे ।१०। कुछ कालोपरान्त कमलके आसन पर प्रतिष्ठित ब्रह्माजी पर उनकी दृष्टिगई ।११। तब वे युद्ध की इच्छा वाले दैत्य वहाँ पहुँचकर ब्रह्माजी से बोले हे सुव्रत ! या तो आप हमारे साथ युद्ध करिये अथवा इस कमलासनका त्याग कर कहीं अन्यत्र चले जाइये । यदि आप निर्बल हैं, तो इस श्रेष्ट आसन पर स्थित रहने के योग्य नहीं हैं ।१२-१३। क्योंकि यह स्थान वीरों के ही योग्य है आप कायर हैं तो उसे तुरन्त छोड़ दें यह सुनकर और उन्हें असाधारण वीर देख ब्रह्माजी सोचने लगे कि इनके आगे मुझ तपस्वी का क्या वश चलेगा ।१४-१५।

तौ वीक्ष्य बलिनौ ब्रह्मा तदोपायानचिंतयत् ।
सामदामभिदादीश्च युद्धांतान्सर्वशस्त्रवित् ।१६
न जानेऽहं बलं नूनमेतयोर्वा यथातथम् ।
अज्ञाते तु बले कामं नैव युद्धं प्रसस्यते ।१७
स्तुतिं करोमि चेदद्य दुष्टयोर्मदमत्तयोः ।
प्रकाशितं भवेन्नूनं निर्बलत्वं मया स्वयम् ।१८
वधिष्यति यदैकोऽपि निर्बलत्वे प्रकाशिते ।
दानं नैवाद्य योग्यं वा भेदः कार्यो मया कथम् ।१९
विष्णुं प्रबोधयाम्यद्य शेषे सुप्ते जनार्दनम् ।
चतुर्भुजं महावीर्यं दुःखहा स भविष्यति ।२०
इति संचिन्त्य मनसा पद्मनालगतोऽब्जः ।
जगाम शरणं विष्णुं मनसा दुःखनाशकम् ।२१
तुष्टाव बोधनार्थं तं शुभैः संबोधनैर्हरिम् ।
नारायणं च जगन्नाथं निष्पदं निर्गुणात्मकम् ।२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूतजी बोले-उन दोनों महा पराक्रमियों को देखकर सभी शास्त्रों के ज्ञाता ब्रह्माजी साम-दाम आदि भेद युक्त दृष्टिसे उपाय विचारने लगे ।१६। मुझे इनके यथार्थ बल का ज्ञान नहीं है, और अब तक दूसरे पक्ष का बल न जान लिया जाय, तब तक युद्ध करना उचित नहीं है ।१७। यदि मैं सामनीति का आश्रय लेकर इनकी स्तुति करूँ तो अपनी अशक्तता प्रकट होती है ।१८। तब तो सम्भव है कि इनमें से कोई एक ही मुझे मार डाले। इन्हें कुछ देकर अपने पक्ष में करना या भेद डालना भी सम्भव नहीं दिखता ।१९। इसलिये भगवान् विष्णु को जगाना ही उचित है वे ही मेरा संकट नष्ट कर सकते हैं ।२०। यह सोचकर ब्रह्मा भी भगवान् विष्णु की शरण में गये ।२१। वहाँ भगवान् विष्णु को घोर निद्रा में निमग्न देखकर उनकी स्तुति करने लगे ।२२।

दीनानाथं हरे विष्णो वामनोत्तिष्ठ माधव ।
भक्तार्तिहृत् हृषीकेश सर्वावास जगत्पते ।२३
एव स्तुतोऽपि भगवान्न बुबोध यदा हरिः ।
योनिद्रासमाक्रांतस्तदा ब्रह्मा ह्यचिंतयत् ।२४
नूनं शक्तिसमाक्रांतो विष्णुर्निद्रावशं गतः ।
जजगार न धर्मात्माकि करोम्यद्य दुःखितः ।२५
हन्तुकामावुभौ प्राप्तौ दानवौ मदगर्वितौ ।
किं करोमि क्व गच्छामि नास्ति मे शरणं क्वचित् ।२६
इति संचित्य मनसा निश्चयं प्रतिपद्य च ।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ।२७
यो यस्य वशमापन्नः स तस्य किंकरः किल ।
तस्माच्च योगनिद्रेयं स्वामिनी मापतेर्हरेः ।२८
स्तौम्यद्य योगनिद्रां वै यया मुक्तो जनार्दनः ।
घटयित्ययति युद्धे च वासुदेवः सनातनः ।२९

हे दीनों के नाथ ! हे हरे, हे विष्णो, हे वामन, हे माधव; हे भक्त के दुःखों को दूर करने वाले हृषीकेश, हे सब जीवों में निवास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने वाले जगदीश्वर ! ।२३। इस प्रकार स्तुति द्वारा पुकारने पर भी जब भगवान विष्णु न जगे, तब ब्रह्माजी विचारने लगे कि यह उस अलक्ष्य शक्ति के वश में पड़कर सो रहे हैं, तो अब मैं क्या करूँ ? ।२४-२५। वे दोनों दैत्य मुझे मारने के लिए तत्पर हैं, तो अब मैं क्या उपाय करूँ ? किधर जाऊँ ? कहीं भी आश्रय दिखाई नहीं देता ।२६। उन्हें निश्चय हो गया कि अब योग-निद्रा ही मेरी रक्षा कर सकती हैं, उसी ने विष्णु को अपने वश में किया हुआ है ।२७। जो जिसके वश में पड़ जाता है, वह उसी का दास हो जाता है, इस प्रकार योगनिद्रा ही विष्णु की स्वामिनी हो गई है ।२८। इसलिए अब मैं उस योगनिद्रा को ही प्रसन्न करूँगा, जिसके बन्धन मुक्त होकर भगवान् विष्णु इन दैत्यों से युद्ध कर सकें ।२९

इति कृत्वा मतिं ब्रह्मा पद्मनालस्थितस्तदा।
तुष्टाव योगनिद्रांतां विष्णोरंगेषु संस्थिताम् ।३०

देवित्वमस्यजगतः किलकारणंहि ज्ञातंमयासकलवेदवचोभिरम्ब ।
यद्विष्णुरप्यलखिललोकविवेककर्तानिद्रावशंचगमितःपुरुषोत्तमोऽद्य
कोवेदतेजनविमोहविलासलीलांमूढोऽस्म्यहमपिहरिवशश्चशेते ।३१
ईदृक्तयासकलभूतमनोनिवासेविद्वत्तमोविबुधकोटियुनिर्षुणायाः३२

नाट्यं तनोषि सुगुणा विविधप्रकारं
नो वेत्ति कोऽपि तव कृत्यविधानयोगम् ।
ध्यायति यां मुनिगणा नियतं त्रिकालं ।
संध्येति नाम परिकल्प्य गुणान्भवानि ।३३
बुद्धिर्हि बोधकारणा जगतां सदा त्वं
श्रीश्चासि देवि सततं सुखदा सुराणाम् ।
कीर्तिस्तथा मतिधृती किन्न कांतिरेव
श्रद्धा रतिश्च सकलेषु जनेषु मातः ।३४
नातः परं किल वितर्कं शतैः प्रमाणं
प्राप्तं भया यदहि दुःखगतिर्गतेन ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्वं चत्र सऽजगत जननीति सत्यं ।
निद्रालुतां वितरतां हरिणाऽत्र दृष्टम् ।३५

कमलासन पर स्थित ब्रह्माजी यह निश्चय कर विष्णु के अङ्ग व्याप्त योगनिद्रा की स्तुति करने लगे ।३०। ब्रह्माजी ने कहा—हे भगवती ! संसार की सृष्टिमें मूल कारण स्वरूपा आप हीहैं। जबसंपूर्ण विश्व की ज्ञान प्रदान करने वाले श्रीहरि ही आपके अधीन अचेत हो रहे हैं तव आपकी मोहमयी विलास लीला को कौन जान सकता है, उसमें पड़कर मैं भी विमूढ़ हो रहा हूँ और विष्णु तो अचेत ही पड़े हैं तब देवताओं में भी कौन ऐसाहै जो आपके भेदको समझ सके ।३१-३२ आप ही सगुण रूप से लीलाएँ करती हैं, आपके कार्य विधान का ज्ञाता कोई नहीं है । इसलिए मुनियों ने सन्ध्या नाम देकर प्रातः सायं और मध्याह्न में त्रिकाल सन्ध्या द्वारा आपके ध्यान करने का विधान किया है ।३३। हे देवि ! बुद्धि रूप में आप जीवों को बोध देती और लक्ष्मी रूप से देवताओं को सुख प्रदान करती हैं। कीर्ति, मति, द्यति, कान्ति श्रद्धा और रति रूप में आप ही संसार के सब चराचर जोवोंमें निवास करती हैं ।३४। इस समय मैं घोर कष्ट में पड़ा हूँ और भगवान विष्णु की अचेतावस्था में आपकी महिमा को प्रत्यक्ष देखता हूँ तो प्रत्यक्ष प्रमाण के समझ अनुमानादि की आवश्यता ही नहीं है।३५।

यज्ञेषु देदि नाम न ते वदन्ति
स्वाहेति वेदविदुषो हवने कृतेऽपि ।
न प्राप्नुवति सदतं मखभागधेयं
देवास्त्मेव विबुधेष्वपि वृत्तिदाऽसि ।३६
त्राता वयं भगवति प्रथमं त्वया व ।
देवारिसंभवभयादधुना तथैव ।
भीतोऽस्मि देवि वरदे शरणं गतोऽस्मि
घोरं निरीक्ष्य मधुना सह कैटभं च ।३७
नो वेत्ति बिष्णुरधुना मम दुःखमेंतज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानें त्वयात्मविवशोकृतदेहियष्ट ।
मुंचादिदेवमथवा जहि दानवेन्द्रौ ।
यद्रोचते तव कुरुष्व महानुभावे ।३८
उत्तिष्ठ देवि कुरु रूपमिहाद्भुतं त्वं
मां वा त्विमौ जहि यथेच्चसि वाललाले ।
नो चेत्प्रबोधय हरिं निहनेदिमौ यः
स्वत्साध्यमेदखिलं किल कार्यजातम् ।३९
एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ।
निःसृत्य हरिदेहात्तु संस्थिता पार्श्वतस्तदा ।४०
विष्पंदितशरीरोऽसौ यदा जातो जनार्दनः ।
धाता परमिकां प्राप्तो मुदं दृष्ट्वा हरिं ततः ।४१

हे देवि ! यदि यज्ञकर्ता आपके स्वाहा नाम का उच्चारण न करे तो देवताओं को यज्ञ-भाग नहीं मिल सकता । इस प्रकार देवताओं का वृत्ति देने वाली भी आप ही हैं ।३६। दैत्य का भय उपस्थित होने पर पूर्व काल में भी आपने ही हमारी रक्षा की थी, हे भगवती ! मैं इन मधु कैटभ नामक दैत्यों से अत्यन्त भयभीत होकर आपकी ही शरण में उपस्थित हूं ।३७। क्योंकि भगवान् विष्णु भी इस समय तेरे संकट को जानने में असमर्थ है क्योंकि उनका अङ्ग-प्रत्यङ्ग आपके वश में पड़ाहै। हे महानुभावे ! आप या तो श्री हरि को विमुक्त करे अथवा इन दैत्यों का संहार करें ।३८। देवि ! अब आप अपना अत्यन्त अद्भुत रूप धारण कर उठिये और या तो मुझे ही मार डालिये या इन दैत्यों का संहार करिये अथवा विष्णु को ही जगा दीजिये, जिससे वे इनका वध कर सकें ।३९। सूतजी बोले ब्रह्माजी स्तुति से प्रसन्न हुई तामसी देवी भगवान् विष्णु के देह से निकल कर उनके पार्श्व में खड़ी हो गई ।४०। इससे भगवान् विष्णु चैतन्य होने लगे, यह देखकर ब्रह्माजी अत्यन्त हर्षित हो उठे ।४१।

—×—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मधु–कैटभ संहार

वदा विनिर्गता निद्रा देहात्तस्य जगद्गुरोः ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ।१
निःसृत्य गगने तस्थौ तामसी शक्तिरुत्तमा ।
उदतिष्ठज्जगन्नाथो जुम्भमाणः पुनः पुनः ।२
तदाऽपश्यत्स्थितं तत्र भयत्रस्तं प्रजापतिम् ।
उवाच च महातेजा मेघगंभीरया गिरा ।३
किमागतोऽसि भगवंस्तपस्त्यक्त्वाऽत्र पद्मज् ।४
त्वत्कर्णमलजौ देव दैत्यौ च मधुकैटभौ ।
हन्तु मां समुपायातौ घोररूपौ महाबलौ ।५
भयात्तयोः समायातस्त्वत्समीपं जगत्पते ।
त्राहि मां वासुदेवाद्य भयत्रस्तं विचेतनम् ।६
तिष्ठाद्य निर्भयो जायस्तौ हनिष्याम्यहं किल ।
युद्धायाजग्मतुर्मन्दौ मत्समीपं गतायुषौ ।७
एवं वदति देवेशे दानवौ तौ महाबलौ ।
विचिन्वानावजं चोभौ संप्राप्तौ मदगर्वितौ ।८

सूतजी बोले हे मुनियों ! भगवान् विष्णु की निद्रा दूर होते ही उनके नेत्र, मुख, नासिका, भुजा, हृदया आदि से एक विचित्र तेज निकला । वह तेज-स्वरूपा तामसी शक्ति आकाश में जाकर प्रतिष्ठित हुई । तदनन्तर विष्णु बार बार जम्हाई लेते हुए उठ पड़े ।१-२। नेत्र खुलने पर उन्होंने अपने सम्मुख भय युक्त खड़े हुए ब्रह्मा को देखा तब भगवान् ने उनसे कहा–हे भगवान् ! आप तपस्या को छोड़कर यहाँ क्यों पधारे हैं ? आपको क्या चिन्ता है ? अथवा आप भयभीत क्यों हो रहो ? ।३-४। ब्रह्मा ने कहा–प्रभो ! मधु कैटभ नामक अत्यन्त बली दो दैत्य आपके कानों के मैल से उत्पन्न हुए हैं, वे मेरा वध करने को तत्पर हैं ।५। हे जगदीश्वर ! उन्हीं के भय से भीत हुआ मैं आपकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरण में आया हूँ, आप मेरी रक्षा कीजिये ।६। विष्णु ने कहा— प्रजापते ! भय का त्याग करिये, उनकी मृत्यु निकट है, इसीलिये वे यहाँ आ रहे हैं। मैं उन दोनों को मार डालूंगा ।७। सूतजी ने कहा— भगवान् विष्णु यह आश्वासन दे रहे थे कि वे दोनों दैत्य ब्रह्माजी को ढूढ़ते हुए वहाँ आ गये ।८।

निराधारौ जले तत्र संथितौ विगतवज्वरौ ।
तावूचतुर्मदोन्मत्तौ प्रह्माणं मुतिसत्तमाः ।९
पलायित्वा समायातः संनिधावस्य किं ततः ।
युद्धं कुरु हनिष्यावः पश्यतोऽयैय सन्निधौ ।१०
पश्चादेनं हनिष्यावः सर्वभौगोपरि स्थितम् ।
त्वमद्य कुरु संग्रामं दासोऽस्मीति च वां वद ।११
तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णुस्तावुवाच जनार्दनः ।
कुरुतीं समरं कामं मया दानवपुंगवौ ।१२
हरिष्यामि मदं चाहं युवयोर्मत्तयोः किल ।
आगच्छतं महाभागौ श्रद्धा चेष्टा महाबलौ ।१३
श्रुत्वा तद्वचनं चोभौ क्रोधव्याकुललोचनौ ।
निराधारौं जलस्थौ च युद्धोत्तौ बभूवतुः ।१४
मधुश्च कुपितस्तत्र हरिणा सह संयुगम् ।
कर्तुं प्रचलितस्तूर्णकैटभस्तु तथा स्थितः ।१५
बाहुयुद्धं नयोरासीन्मल्लयोरिव मत्तयोः ।
श्रांते मधौ कैटभस्तु संग्राममकरोत्तदा ।१६

वे दैत्य उस एकार्णव के जल में निर्भय खड़े होकर ब्रह्माजी को ललकारते हुए बोले कि तुम भाग कर यहां चले आये हो अब हम तुम्हें इनके समक्ष ही मार डालेंगे ।९-१०। फिर इस शेषशायी का वध कर देंगे। तुम या तो हमारे साथ युद्ध करो अन्यथा हमारा दासत्व स्वीकार करो ।११। यह सुनकर भगवान् विष्णु बोले हे दानवोत्तम ! तुम दोनों मेरे साथ संग्राम करो ।१२। मैं तुम दोनों का अहंकार नष्ट कर दूंगा। हे महाबली दैत्यो ! यदि चाहो तो युद्ध करो ।१३। सूतजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने कहा—हे मुनियो ! विष्णु के ऐसे वचन सुनते ही उनके नेत्र क्रोध से लाल हो उठे और वे युद्ध के लिये ललकारने लगे ।१४। पहिले मधु आगे बढ़ा और कैटभ वहीं खड़ा रहा ।१५। विष्णु और मधु मल्लों की भांति भिड़ गये । मधु लड़ते-लड़ते हार गया तो कैटभ लड़ने में तत्पर हो गया ।१६।

पुनर्मधुः कैटभश्च युयुधाते पुनः पुनः ।
बाहुयुद्धेन रागांधौ विष्णुना प्रभविष्णुना ।१७
प्रेक्षकस्तु तदा ब्रह्मा देवी चैवांतरिक्षगा ।
न मम्लतुस्तदा तौ नु विष्णुस्तु ग्लानिमाप्तवान् ।१८
पंचवर्षसहस्राणि यदा जातानि युध्यता ।
हरिणा चिंतितं तत्र कारणं मरणे तयोः ।१९
पंचवर्षसहस्राणि मया युद्धं कृतं किल ।
न श्रांतौ दानवौ धीरौ श्रांतोऽहं चैतदद्भुतम् ।२०
क्व गतं मे बलं शौर्यं कस्माच्चेमावनामयौ ।
किमत्रः कारणं चिंत्यं विचार्यं मनसा त्विह ।२१
चिंतनाज्ज्ञानमुत्पन्नं देवीदत्तवरावुभौ ।२२
वृथा मया कृतं युद्धं श्रमोऽयं मे वृथा गतः ।
करोमि च कथं युद्धमेवं ज्ञात्वा विनिश्चयम् ।२३
नन्वद्य शरणं यामि विद्यां शक्तिं सुकामदाम् ।
विना तया न सिध्यन्ति कामाः सम्यक्प्रसन्नया ।२४

इस प्रकार एक थक जाता तो दूसरा युद्ध करने लगता दोनों बारी बारी से लड़ते रहे ।१७। इसलिये उन्होंने साहस नहीं छोड़ा। आकाशमें स्थित भगवती और ब्रह्माजी युद्ध को देख रहे थे। भगवान् थक गये, उनका मुख कुम्हलाने लगा ।१८। इस प्रकार लडते लड़ते पाँच सहस्रवर्ष व्यतीत हो गये थे इसलिये उनके न मरने के कारण पर विष्णु विचार करने लगे ।१९। मुझे इनसे युद्ध करते हुये पांच हजार वर्ष होगये परन्तु यह दैत्य नहीं हारे और मैं थक गया, यह कैसे आश्चर्य का विषयहै।२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा पराक्रम और बल, न जाने, कहाँ गया मेरे साथ युद्ध करते हुए भी इनकी मृत्यु नहीं हुई इसलिए इसके कारण का जानना आवश्यक है ।२१। कुछ देर ध्यान पूर्वक विचार करने पर उन्होंने जान लिया कि इन्हें देवी से इच्छा मृत्यु का वरदान मिला हुआ है, इसलिये यह सकुशल हैं ।२२। भगवान् ने सोचा—मैंने व्यर्थ ही इतना समय युद्ध में नष्ट किया, अब क्या करना उचित है ।२३। अब मैं सुकामदा विद्या शक्ति को शरण में जाकर उन्हें प्रसन्न करूँगा, इनके बिना कार्य पूर्ण नहीं हो सकता ।२४।

एवं सञ्चिन्त्यमानस्तु गां शगनेस्थितां शिवाम् ।
अपश्यद् भगवान्विष्णुर्योगनिद्रां मनोहराम् ।२५
कृतांजलिरमेयात्मा तां च तुष्टाव योगवित् ।
विनाशार्थं तयोस्तत्र वरदां भुवनेश्वरीम् ।२६
नमो देवि महामाये सृष्टिसंहारकारिणी ।
अनादिनिधने चण्डि भक्तिमुक्तिप्रदे शिवे ।२७
अचेतनत्वं संप्राप्तः प्रभावात्तव चांबिके ।
त्वया मुक्तः प्रबुद्धोऽहं युद्धं च बहुधा कृतम् ।२८
श्रांतोऽहं न तौ श्रांतौ त्वयादत्तवरौ वरौ ।
ब्रह्माणं हंतुमायातौ दानवौ मदगर्वितौ ।२९
आहूतौ च मया कामं द्वंद्वयुद्धाय मानदे ।
कृतं युद्धं महाघोरं मया ताभ्यां महार्णवे ।३०

ऐसा निश्चय करके भगवान् विष्णु ने आकाश में स्थित शिवा, योगनिद्रा एवं मनोहरा शक्ति की ओर देखा ।२५। और योग तत्व के जानने वाले भगवान् विष्णु उन दोनों दैत्यों को मारने के लिए वर देने वाली भगवती की स्तुति करने लगे ।२६। भगवान् विष्णु ने कहा—हे महामाये ! हे सृष्टिसंहारिका देवी ! आदि-अन्त से परे चाण्डिके ! हे भुक्ति-मुक्ति प्रदातिके शिवे ! आपको बारम्बार नमस्कार है ।२७। हे अम्बिके ! मैं आपके प्रभाव से ही अचेत था, आपने चैतन्य किया तभी मैं इन दैत्यों से युद्ध में तत्पर हो गया ।२८। मैं तो युद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते करते हार गया, परन्तु दैत्य नहीं हारे, क्योंकि वे आपके द्वारा वर प्राप्त और अहङ्कारी होकर ब्रह्माजी का वध करने के लिये उपस्थित हुए ।२९। मैंने उन्हें मल्ल युद्ध के लिए ललकारा और इसी महासिन्धु में उनके साथ भयङ्कर युद्ध करता रहा ।३०।

मरणं वरदानं ते ततो ज्ञातं महाद्भुतम् ।
ज्ञात्वाऽहं ततः प्राप्तस्त्वामद्य शरणप्रदाम् ।३१
साहाय्यं कुरु मे मातः खिन्नोऽहं युद्धकर्मणा ।
दृप्तौ तौ वरदानेन दुष्टौ तावार्तिनाशने ।३२
हंतु मामुद्यतौ पापौ किं करोमि क्व यामि च ।
इत्युक्ता सा तदा देवी स्मितपूर्वमुवाच ह ।३३
प्रणमंतं जगन्नाथं वासुदेवं सनातनम् ।
देवदेव हरे विष्णो कुरु युद्धं पुनः स्वयम् ।३४
वंचयित्वा त्विमौ शूरौ हंतव्यौ च विमोहितौ ।
मोहयिष्याम्यहं नूनं दानवौ वक्रवा दृशा ।३५
जहि नारायणाशु त्वं मम मायाविमोहितौ ।
तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णुस्तस्याः नीतिसमन्वितम् ।३६
संग्रामस्थलमासाद्य तस्थौ तत्र महार्णवे ।
तदायायौ च तौ धीरौ युद्धकामौ महाबलौ ।३७

जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि आपका दिया हुआ वर प्राप्त है, तब में आपकी शरण में उपस्थित हुआ हूँ ।३१। अब आप ही मेरी सहायता कर सकती हैं । मैं बहुत थक गयाहूँ । हे संकट नाशिनी ! आपके वरदान से अहङ्कार रत हुए ये पापी मेरे वध की इच्छा करते हैं । अब मैं क्या करूँ ? भगवान् विष्णु की स्तुति और प्रणाम से प्रसन्न हुई देवी ने मुसकाते हुए कहा—हे देवाधिदेव ! हे हरे ! हे विष्णो! आप उनसे पुनः युद्ध करिये ।३३-३४। आप इन्हें छल पूर्वक मारिये, इधर मैं भी इन्हें मोहित कर दूँगी । जब यह मोहित हो गये, तब इनका तुरन्त वध कर डालो । यह सुनकर भगवान् विष्णु तत्काल उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु तत्काल उस एकार्णव में युद्ध-तत्पर हुए, तभी वे दोनों दैत्य भी सामने आ गये ।३७।

वीक्ष्य विष्णु स्थितं तत्र हर्षयुक्तौ बभूवतुः ।
तिष्ठ तिष्ठ महाकाम कुरु युद्धं चतुर्भुज ।३८
वीक्ष्य विष्णुर्जघानाशु मुष्टिनाऽद्भुतकर्मणा ।
तावप्यति बलौन्मत्तौ जघ्नतुर्मुष्टिना हरिम् ।३९
एवं परस्परं जातं युद्धं परमदारुणम् ।
युद्धयमनौ महावीर्यौ दृष्ट्वा नारायणस्तदा ।४०
अपश्यत्संमुखं देव्याः कृत्वा दीनां दृशं हरिः ।
तं वीक्ष्य तादृशं विष्णुं विरुणारसंयुतम् ।४१
जहासातीव ताम्राक्षी वीक्षमाणा ददाऽसुरौ ।
तौ जघान कटाक्षैश्च कामबाणैरिवापरैः ।४२
हरिणाऽपि च तं दृष्ट्वं देव्यास्तत्र चिकीर्षितम् ।
मोहितौ तौ मरिज्ञाय भगवान्कार्यवित्तमः ।४३
उवाच तौ हसन् श्लक्ष्यं मेघगंभीरया गिरा ।
वरं वरयतां वीरौ युवयोर्योऽभिवांछितः ।४४

विष्णु को सामने देखकर प्रसन्न होते हुए दैत्यों ने कहा हे चतुर्भुज, आइये, हमसे, युद्ध कीजिये ।३८। अवसर प्राप्त कर विचित्र विष्णु ने शीघ्रता पूर्वक मुष्टिका-प्रहार किया । तभी दैत्यों ने उनको मुक्का मारा इस भीषण युद्ध को करते हुए महाबली दैत्य विष्णु से प्रबल हो उठे, तब श्री हरि ने अत्यन्त कातर दृष्टिसे देवी की ओर देखा तो देवी ने भी उनकी करुणा दशा देखी ।३९-४०। तब वे लाल नेत्रों वाली देवी उन दैत्य की ओर दृष्टिपात कर अट्टहास करने लगी, जिसे सुनकर दैत्योंने देवी की ओर देखा तो देवी ने उन्हें अपने भयङ्कर कटाक्ष बाणों से मोहित कर लिया ।४१-४२। कार्य-निपुण भगवान् विष्णु ने दैत्यों को देवी के प्रति मोहित देखकर और देवी का अभिप्राय समझकर मृदुवाणी में कहा—हे वीरो, ! तुम मुझसे अपना इच्छित वर माँग लो ।४३-४४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ददामि परमप्रीतो युद्धेन युवयोः किल ।
मानवा बहवो दृष्टा युध्यमाना मया पुरा ।४५
युवयोः सदृशः कोऽपि न दृष्टो न च वाश्रुतः ।
तस्मात्तुष्टोऽस्मि काम वै निस्तुलेन बलेन च ।४६
वीक्षमाणौ महामायां जगदानन्दकारिणीम् ।
तमूचतुश्च कामातौ विष्णुं कमलोचनौ ।४७
हरे न याचकावावां त्वं किं दातुमिहेच्छिसि ।
ददावतुल्यं देवेश दातारौ न याचकौ ।४८
प्रार्थय त्वं हृषीकेश मनोऽभिलषितं वरम् ।
तुष्टौ स्तस्तव युद्धेन वासुदेवाद्भुतेन च ।४९
तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रात्युवाच जनार्दनः ।
भवेतातद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ।५०
तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णोर्दानवौ चातिविस्मितौ ।
वंचिताविति मन्वानौ तस्थतुःशोकसंयुतौ ।५१
विचार्य मनसा तौ तु दानवौ विष्णुमूचतुः ।
प्रेक्ष्य सर्वं जलमयं भूमिस्थलविवर्जितम् ।५२

क्योंकि तुम दोनों का युद्ध देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ । पहिले मैंने अनेक दैत्यों को युद्ध करते हुए देखा है, परन्तु तुम्हारे समान बीर नहीं देखा सुना ।४५-४६। तब संसारमें आनन्दके करने वाली महामया की ओर देखते हुए वे दैत्य विष्णु से बोले ।४७। हे हरे, हम मंगता नहीं हैं, आप हमें क्या दोगे ? हम ही आपको दे सकते हैं ।४८। हे हृषीकेश, आपके युद्ध-स्तव से हम भी आप पर प्रसन्न हैं, आप ही हमसे अपना इच्छित वर माँगिये ।४९। दैत्यों के वचन सुनकर विष्णु ने कहाकि यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो तो यह वर प्रदान करो कि मेरे द्वारा तुम्हारी मृत्यु हो जाय ।५०। यह सुनकर दैत्य प्रत्यन्त बिस्मित और शोकातुर हो उठे ।५१। फिर मन को कुछ स्थित कर और सब ओर जल ही जल देखकर विष्णु से कहने लगे ।५२।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरे योऽयं वरो दत्तस्त्वया पूर्वं जनार्दन ।
सत्यवागसि देवे देहि तं वांछितं वरम् ।५३
निर्जले देशे हनस्व मधुसूदन ।
वध्वावावां तु भवतः सत्यवाग्भव माधव ।५४
स्मृत्वा चक्रं तदा बिष्णुस्तावुवाच हसन्हरिः ।
हन्म्यद्य वां महाभागौ निर्जले विपुले स्थले ।५५
इत्युक्त्वा देवदेवेश उरू कृत्वाऽसिविस्तरौ ।
दर्शयामास तौ तत्र निर्जलं च जलोपरि ।५६
रथांगेन तदा छिन्ने विष्णता प्रभविष्णुना ।
जगनोपरि वेगेन प्रकृष्टे शिरसी तयोः ।५७
गतप्राणौ तदा जातौ दानवौ मधुकैटभौ ।
सागरः सकलो व्याप्तस्तदा वै मेदसा तयोः ।५८
मेदिनीति तुतो जातं नाम पृथ्व्याः समन्ततः ।
अभक्ष्या मृत्तिका तेन कारणेन मुनीश्वरा ।५९

हे हरे ! आपने भी हमें वर देने कहा था, इसलिए उस वचन को पूर्ण कीजिए ।५३। हे मधुसूदन, आप ऐसे स्थान पर हमारा वध करें जहाँ जल न हो हम आपके द्वारा मर जायेंगे । आप अपना वचन पूरा करिये ।५४। सब विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र का स्मरण किया और दैत्यों से हँसते हुए बोले—हे महाभागो, मैं जलहीन स्थल पर ही तुम्हारा वध करूँगा ।५५। यह कर विष्णु ने अपनी जँघाएँ विस्तृत की और उन दैत्यों को जल पर ही निर्जल प्रदेश दिखा दिया ।५६। तभी भगवान् विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से उनका मस्तक उड़ा दिया ।५७। इस प्रकार मधु कैटभ मृत्यु को प्राप्त हुए और उनकी चर्बी से सम्पूर्ण सागर भर गया ।५८। तभी से इस पृथ्वी को मेदिनी कहा जाने लगा और मिट्टी अभक्ष्य हो गई ।५९।

शुकदेवजी को ज्ञान प्राप्ति

मेरुश्रृङ्गे महारम्ये व्यासः सत्यवतीसुतः ।
तपश्चचार सोऽत्युग्रं पुत्रार्थं कृतनिश्चयः ।१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जपन्नेकाक्षरं मन्त्रं वाग्बीजं नारदाच्छ्रुतम् ।
ध्यायन्परां महामायां पुत्रकामस्तपोनिधिः ।२
अतिष्ठत्स गताहारः शतसंवत्सरः प्रभुः ।
आराधयन्महादेवं तथैव च सदाशिवम् ।३
ततोऽस्य तेज आलक्ष्य भयमाप शचीपतिः ।
तुरासाहं ततो दृष्ट्वा भयत्रस्तं श्रमातुरम् ।४
उवाच भगवान् रुद्रो मघवंतं तथा स्थितम् ।
कथमिन्द्राद्य भीतोऽसि किं दुःखं ते सुरेश्वर ।५
अमर्षो नैव कर्त्तव्यस्तापरेषु कदाचन ।
तपश्चरन्ति मुनयो ज्ञात्वा मां शक्तिसंयुतम् ।६
न त्वेतेऽहितमिच्छन्ति तापसाः सर्वथैव हि ।
इत्युक्तवचनः शक्रस्तमुवाच वृषध्वजम ।७
कस्मात्तपस्यति ध्यासः कौऽर्थस्तस्य मनोगतः ।
पाराशर्यस्तु पुत्रार्थी तपश्चरति दुश्करम् ।८

सूतजी ने कहा—पुत्र प्राप्ति का निश्चय करके व्यासजी सुमेरु पर्वत की सुरम्य चोटी पर घोर तपस्या करने लगे ।१। नारदजी के कहे एकाक्षर वाग्बीज मन्त्र को जपते हुए महामाया का ध्यान करते थे ।२। इस प्रकार उन्होंने निराहार रहकर शिवजी और सदा शिवा भगवती की आराधना की ।३। उनके तप-तज से इन्द्र भयभीत हो उठा । यह देखकर शिवजी ने उससे कहा हे सुरराज, आप क्यों डर रहे हैं ? ।४-५। ऋषिगण शक्तियुक्त होकर तपस्या करते हैं, इसलिये उनके तप से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिये । शिवजी से यह सुनकर इन्द्र कहने लगा ।६-७। हे भगवान् फिर यह कठोर तपस्या क्यों कर रहे हैं ? शिवजी बोले—पुत्र प्राप्ति की कामना से ।८।

पूर्णवर्षशतं जातं ददाम्यद्य सुतं शुभम् ।
इत्युक्त्या वासवं दयया मुदिताननः ।९
गत्वा ऋषिसमीपं तु तमुवाच जगद्गुरुः ।
उत्तिष्ठ वासवीतुभ्र पुत्रस्ते भविता शुभः।१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शूलपाणिं नमस्कृत्य जगामाश्रममात्मनः ।
स गत्वाऽऽश्रममेवाशु बहुवर्षश्रमातुरः ।११
अरणीसंहितां गुह्यं ममन्थाग्निचिकीर्षया ।
मन्थनं कुर्वतस्तस्य चित्तं चिंताभरस्तदा ।१२
प्रादुर्बभूव महसा सुतोत्पत्तौ महात्मनः ।
मन्थानारणिसंयोगान्मन्थनाच्च समुद्भवः ।१३
पावकस्य यथा तद्वत्कथं मे स्यात्सुतोद्भवः ।
पुत्रारणिस्तु या ख्याता सा न विद्यते मम ।१४

इनको तपस्या करते सौ वर्ष व्यतीत हो गये हैं, अब मैं इन्हें पुत्र-प्राप्ति का शुभ वर प्रदान करूँगा ।९। यह कहकर शिवजी व्यासजी के पास जाकर बोले—हे वासवीपुत्र, उठो, तुम्हें श्रेष्ठ लक्षण सम्पन्न पुत्र की प्राप्ति होगी ।१०। सूतजी बोले कि व्यासजी ने भगवान् शङ्कर को प्रणाम किया और अपने आश्रम को चले गये । वे तपके कारण थके हुए थे ।११। फिर भी वे अग्नि प्रकट करने के लिए अरणि मन्थन करनेलगे उस समय उनका मन अत्यन्त चिंतित था ।१२। अरणि के संयोग से उत्पन्न अग्नि को देखकर यह विचार करने लगे कि जैसे अरणि मंथनसे अग्नि उत्पन्न हुआ, वैसे ही मेरे द्वारा पुत्रोत्पत्ति किस प्रकार से हो, क्योंकि मेरे पास पुत्रोत्पत्ति की साधिका अरणि तो है ही नहीं ।१३-१४

कथं करोक्ष्यहं चात्र दुर्घटं च गृहाश्रमम् ।
एवं चिंतयतस्तस्य घृताची दिव्यरूपिणी ।१५
तापा दृष्टिपथं तत्र समीपे गगने स्थिता ।
तां दृष्ट्वा चञ्चलापांगीं समीपस्थां वराप्सराम् ।१६
पञ्चबाणपरीतांगस्तूर्णमासीद्व्रतः ।
चिंतयामास च तदा किं करोम्यद्य सङ्कटे ।१७
दृष्ट्वा तामसितापांगीं व्यासश्चिंतापरोऽभवत् ।
किं करोमि न मे योग्या न देवकन्येयमप्सरा ।१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं चिंतयमानं तुदृष्ट्वा व्यासं तदाऽप्सराः ।
भयभीता हि सं जाता शापं मा विसृजेदयम् ।१९
स कृस्वाऽथ शुकीरूपं निर्गता भयविह्वला ।
कृष्णस्तु विस्मयं प्राप्तो विहङ्गीं तां विलोकयन् ।२०
मन्थनं कुर्वतस्तस्य मुनेरग्निचिकीर्षया ।
अरण्यामेव सहसा चस्य शुक्रमथापतत् ।२१

अब मुझे क्या करना चाहिए गृहस्थाश्रम का पालन भी अत्यन्त दुष्कर कार्य है । व्यासजी यह सोच ही रहे थे, तभी उन्हें आकाश में घृताची नाम की एक अप्सरा दिखाई दी । तब वे कामबाण से बिद्ध होकर सोचने लगे कि अब मुझे क्या करना चाहिए ? ।१५-१७। सूतजी ने कहा कि उस अप्सरा को देखकर व्यासजी चिंतित हो उठे। वे सोचने लगे कि यह अप्सरा मेरे योग्य नहीं हो सकती, अब मैं क्या करूँ?।१८ वह अप्सरा भी व्यासजी को विचार मग्न देखकर आपभय से भीत हो गई और शुकी का रूप धारण करके उड गई, तब व्यासजी को बड़ा आश्चर्य हुआ ।१९-२०। तथा अग्नि की प्राप्ति के लिये अरणि-मन्थन करते समय कामवशात् उनका शुक्र-पात हो गया ।२१।

सोऽविचिंत्य तथा पातं ममन्थारणिमेव च ।
तस्माच्छुकः समुद्भूतो व्यासाकृतिमनोहरः ।२२
विस्मयं जनयन्बालः सजातस्तदरण्यजः ।
यथाऽध्वरे समिद्धोऽग्निर्भाति हव्येन दीप्तिमान् ।२३
व्यासस्तु सुतमालोक्य विस्मयं परमं गतः ।
किमेतदिति संचिंत्य वरदानाच्छिवस्य वै ।२४
तेजोरूपो शुको जातोऽप्यरणीगर्भसंभवः ।
द्वितीयोऽग्निरिवात्यर्थं दीप्यमानः स्वतेजसा ।२५
उत्पन्नमात्रं तं वेदाः सरहस्याः ससग्रहाः ।
उपतस्थुर्महात्मानं यथाऽस्य पितरं तथा ।२६
बृहस्पतिमुपाध्यायं कृत्वा व्यासमुतस्तदा ।
व्रतानि ब्रह्मचर्यस्य चकार विधिपूर्वकम् ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पर ध्यान दिये बिना ही व्यासजी अरणि मंथन के कार्यमें लगे रहे, जिससे तुरन्त ही व्यासजीके समान आकृति वाले एक शिशु (शुक) की उत्पत्ति हुई।२२। जैसे हव्य प्रदान द्वारा यज्ञ में तेज युक्ति अग्नि उत्पन्न होती है। वैसे ही अरणी से उत्पन्न होने वाले शिशु ने व्यासजी को आश्चर्य चकित कर दिया।२३। उस शिशु को आश्चर्य से देखते हुए व्यासजी सोचने लगे कि संभवतः शिवजी के वरदान से ही यह बालक उत्पन्न हुआ।२४। अरणी से उत्पन्न शुकदेव अत्यन्त तेजस्वी हुए, उनकी दीप्ति अग्नि के समान असाधारण थी।२५। उत्पन्न होते ही उस बालक को रहस्यादि के सहित चारों वेद अपने पिता के समान ही कण्ठस्थ हो गये।२६। फिर शुकदेवजी ने देवताओं के गुरु वृहस्पति को गुरु बनाया और उन्होंने विधिवत् ब्रह्मचर्य का पालन किया।२७।

पठ पुत्र महाभाग मया भागवतं कृतम्।
शुभं न चातिविस्तीर्णं ब्रह्मसम्मितम्।२८
सदंसग्ज्ञानविज्ञानं श्रुतमात्रेण जायते।
येन भागवतेनेह तत्पठ त्वं महामते।२९
वटत्रशयाना विष्णवे बालरूपिणे।
केनास्मि बालभावेन निर्मितोऽहं चिदात्मदा।३०
किमर्थं केन द्रव्येण कथं जानामि चाखिलम्।
इत्येव चित्यमानाय मुकुंदाय महात्मने।३१
श्लोकार्धेन तया प्रोक्तं भगवत्याऽखिलार्थदम्।
सर्वं खल्विदयेवाहं नान्यदस्ति सनातनम्।३२
तद्वचो विष्णुना पूर्वं सुविज्ञातं मनस्यपि।
केनोक्ता वागियं सत्या चिंतयमास चेतसा।३३
कर्थं वेद्मि प्रवक्तारं स्त्रीषु सौ वा नपुंसकम्।
इति चिंताप्रपन्ने धृतं भागवतं हृदि।३४
तदा शांता भगवतो प्रादुरास चतुर्भुजा।
शङ्खचक्रगदापद्मवरायुधधरा शिवा।३५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यासजीने कहा—हे महाभाग पुत्र,मेरे द्वारा रचित कल्याण दायक वेद के समान आदरणीय भागवत नामक ग्रन्थ का अध्ययन कर वह बहुत विस्तृत नहीं है और ब्रह्म सम्मत है ।२८। हे महामते ! उसके सुनने मात्रसे सत् और असत् का ज्ञान हो जाता है। इसलिये तुमउसका अवश्य अध्ययन करो ।२९। महाप्रलय काल की बात है-बाल रूप धारी भयवान् विष्णु वट के पत्ते पर लेटे हुए सोच रहे थे कि मुझे इस बाल-रूप में उत्पन्न करने वाला कौन है ? ।३०। उसने मुझे क्यों उत्पन्न किया ? किस द्रव्य से मेरी रचना हुई ? इस प्रकार सोचते हुए विष्णु की शङ्काओं का देवी ने आधे श्लोक में समाधान कर दिया । उन्होंने कहा मैं ही सब कुछ हूँ, मेरे अतिरिक्त कुछ भी सनातन नहीं है ।३१। ३२। तब विष्णु सोचने लगे कि यह वचन कहने वाला कौन है ? पुरुष हैं या स्त्री ? अथवा नपुंसक है ? इस प्रकार सोचते हुए वे देवी के उस आधे श्लोक का मनन करने लगे ।३३-३४। तभी शंख चक्र, गदा, पद्मादि श्रेष्ठ आयुधों को धारण किये हुए चतुर्भुज देवी शान्त स्वरूप में उनके समक्ष प्रकट हो गई ।३५।

तां तथा संस्थितां दृष्ट्वा हृदये कमलेक्षणः ।
विस्मितः तस्मिन्निराधारां मनोरमाम् ।३६
रतिर्भूतिस्थता बुद्धिर्मतिः कीर्तिः स्मृतिर्धृतिः ।
श्रद्धा मेधा स्वधा स्वाहा क्षुधा निद्रा दया गतिः ।३७
तुष्टि पुष्टिः क्षमा लज्जा तन्द्रा च शक्तयः ।
सं स्थिता सर्वतः पार्श्वे महादेव्याः पृथक्पृथक् ।३८
वरायुधधराः सर्वा नानाभूषिताः ।
मं दारमालाकुलिता मुक्ताहारविराजिताः। ३९
तां दृष्ट्वा तांश्च संम्वीक्ष्य तस्मिन्नेकार्णवे जले ।
विस्मयाविष्टहृदयः संबभूव जनार्दनः ।४०
चिन्तयामास सर्वात्मा दृष्टमायोऽतिविस्मितः ।
कुतो भूताः स्त्रियः सर्वा कुतोऽहं बटतल्पगः ।४१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्मिन्नेकार्णवे घोरे न्यग्रोधः कथमुद्यितः ।
केनाहं स्थापितोस्म्यत्र शिशुं कृत्वा शुभाकृतिम् ।४२

सूतजी बोले-तब भगवान् विष्णु उस सिन्धु-जल में निराधर खड़ी मनोहर रूप वाली देवी को देखकर आश्चर्य चकित हो गये ।३६। उन महादेवी के चारों ओर रति, भूति, बुद्धि मति, धृति, श्रद्धा, मेधा, स्वाधा, स्वाहा, क्षुधा, निद्रानेया, गति,तुष्टि, क्षमा लज्जा, जृम्भा और तन्द्रा यह इक्कीस शक्तियाँ पृथक्-पृथक् खड़ी थीं ।३७-३८।इनसभी शक्तियों के पास श्रेष्ठ आयुध एवं अङ्गों में विभिन्न प्रकार के अलङ्कार सुशोभित थे । कण्ठ में मन्दार मालाएँ और मुक्ताहार अलंकृत हो रहे थे ।३९। उन शक्तियों के साथ उन महामाया को उस एकार्णव के जल में प्रकट देखकर भगवान विष्णु अत्यन्त विस्मित हुए ।४०। सर्वात्मा विष्णु उन अत्यन्त अद्भुत देवी को देखकर सोचने लगे कि यह सब देवियाँ कहां से आगई और मैं वह इस वट पत्र पर कहाँ से आ गया ? ।४१। इस एकर्णव के जल में यह वट पत्र आया ही कहाँ से और मुझे ऐसा सुन्दर बालक बनाकर किसने इस पत्र पर सुलाया ।४२।

—×—

विष्णु को ज्ञानोपदेश

दृष्ट्वा तं विस्मितं देवं शयानं वटपत्रके ।
उवाच सस्मितं वाक्यं विष्णो किं विस्मितो ह्यसि ।१
महाशक्त्याः प्रभावेनेत्वं मां विस्मृतवान्पुनः ।
प्रभवे प्रलये जाते भूत्वा पुनः पुनः ।२
निर्गुणासा परा शक्तिः सगुणस्त्वं तथाप्यहम ।
सात्विका किल या शक्तिस्तां शक्तिं विद्धि मामिकाम् ।३
त्वन्नाभिकमलाद्ब्रह्मा भविष्यति प्रजापतिः ।
स कर्ता सर्वलोकस्य रजोगुणसमन्वितः ।४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स तदा तप आस्थाय प्राप्य शक्तिमनुत्तमाम् ।
रजसा रक्तवर्णंच करिष्यति जगत्त्रयम् ।५
सगुणान्पंचभूतांश्च समुत्पाद्य महामतिः ।
इन्द्रियार्णीद्वियेशांश्च मनः पूर्वं समंततः ।६
करिष्यति ततः सर्गं तेन कर्ता स उच्यते ।
विश्वस्यास्य महाभाग त्वं वै पालयिता तथा ।७

व्यासजी बोले बट पत्र पर आश्चर्य चकित भाव से लेटे हुए विष्णु की शङ्का जानकर मुस्कराती हुए देवी ने कहा-हे विष्णो, तुम विस्मित क्यों हो रहे हो ।१। तुम महाशक्ति के प्रभाव से मुझे भूल रहे हो । तुम्हें पूर्वकाल में भी बारम्बार सृष्टि और प्रलय के अवसर पर जन्म धारण करना पड़ा है ।२। वह पराशक्ति निर्गुण है तथा तुम और मैं सगुण हैं! मैं सात्विकी शक्ति के नाम से प्रसिद्ध हूँ ।३। अब तुम्हारे नाभि कमल से रजोगुणी ब्रह्मा की उत्पत्ति होगी, वह सब लोकों को रचेंगे ।४। वे अपने तप से शक्ति सम्पन्न होकर रजोगुण के प्रभाव से लोकों को लाल वर्ण का कर देंगे ।५। वही गुण से सम्पन्न पृथ्वी जल आदि पंचतत्वों को रचेंगे और इन्द्रिय, आत्मा तथा मन को बनावेंगे । फिर जो सृष्टिउत्पन्न होगी, उसके रचयिता वही कहे जायेंगे और हे महाभाग,तुम उससंसार के पालन करने वाले बनोगे ।६-७।

तद्भ्रुवोर्मध्यदेशाच्च क्रोधाद्रुद्रो भविष्यति ।
तपः कृत्वः महाघोरं प्राप्य शक्तिं तु तामसीम् ।८
कल्पांते सोऽपि संहर्ता भविष्यति महामते ।
तेनाहं त्वामुपायाता सात्विकीं त्वमवेहि माम् ।९
स्थास्ये त्वत्समीपस्था सचाऽहं मधुसूदन ।
हृदये ते कृतावासा भवामि सततं किल ।१०
श्लोकस्यार्धं मया पूर्वं श्रुतं देवि स्फुटाक्षरम् ।
तत्केनोक्तं बरारोहे रहस्यं वचनं शिवम् ।११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तन्मे ब्रूहि वरारोहे संशयोऽयं वरानने ।
निर्धनो हि यथा द्रव्यं तत्स्मरामि पुनः पुनः ।१२
विष्णोस्तद्वचनं श्रुत्वा महालक्ष्मी स्मिताननना ।
उवाच परम प्रीत्या वचनं चारुहासिनी ।१३
शृणु शौरे वचो मह्यं सगुणाऽहं चतुर्भुजाः ।
मां जानासि न जानासि निगुणासगुणालयाम् ।१४

हे महामते, उनके क्रोधित होने पर उनकी ही भौंहों से रुद्र उत्पन्न होंगे। वे कठोरतप द्वारा तामसी शक्ति से सम्पन्न होकर कल्प के अन्त में संसार का संहार कर देंगे। आप मुझे सात्विकी शक्ति जानिये ।८-९। हे मधुसूदन, मैं सदा आपके समीप रहूँगी, मेरा निवास सदा आपके पास रहेगा ।१०। विष्णुने कहा-हे देवी! हे वारारोहे! अभी मैंने जो आधा श्लोक सुना था, वह अत्यन्त कल्याण प्रद वाक्य किसका था ? ।११। हे वरानने, मुझे इस विषय में उत्कृष्ट जिज्ञासा है। निर्धन द्वारा धन का चिन्तन करने के समान ही मैं सदा उस आधे श्लोक का बारम्बार स्मरण करता हूँ ।१२। व्यासजी बोले—विष्णु के यह वचन सुनकर मन्द मुस्कानमय मुख वाली देवी ने प्रीति पूर्वक कहा ।१३। महालक्ष्मी ने कहा—चतुर्भुज, !हे शौरे! आप मुझे जानते हैं?यदि नहीं जानते तो सुनिये—मैं निर्गुण होकर भी सगुण हूँ ।१४।

त्वं जानीहि महाभाग तया तत्प्रकटीकृतम् ।
पुण्यं भागवतं सिद्धि वै सारं शुभावहम् ।१५
कृपां च महतीं मन्ये देव्याः रिपुनिषूदन ।
यया दत्तं परं गुह्यं हिताय तव सुव्रत ।१६
रक्षणीयं सदो चिन्ते न विस्मार्यं कदाचन ।
सारं हि सर्वशास्त्राणां महाविद्याप्रकाशितम् १७
नातः परं वेदितव्यं वर्तते भुवनत्रये ।
प्रियोऽसि खलु देव्यास्त्वं तेन ते व्याहृतं वचः ।१८
इति श्रुत्वा वचो देव्या महालक्ष्म्याश्चतुर्भुजः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दधार हृदये नित्यं मत्वा मन्त्रमनुत्तमम् ।१६
कालेन कियता तत्रा तन्नाभिकमवोद्भलः ।
ब्रह्मा दैत्यभयात्त्रस्तो जगाम शरणं हरे ।२०
ततः कृत्वा महायुद्धं हत्वा तौ मधुकैटभौ ।
जजाप भगवान्विष्णुः श्लोकार्धविंशदाक्षरम् ।२१

वह आधा श्लोक उसी पराशक्ति द्वारा कहा गया है वही उन भगवती का अत्यन्त पवित्र कल्याणमय सर्वश्रेष्ठ मन्त्र हैं ।१५। हे अरिमर्दन ! मैं समझती हूँ कि भगवती की आप पर अत्यन्त कृपा है, तभी तो यह अत्यन्त गोपनीय मन्त्र उन्होंने आपको दिया हैं ।१६। उसे अपने मन में सदैव रखना कभी भूलना मत । क्योंकि वह शास्त्रों का सार रूप मन्त्र महाविद्या ने स्वयं प्रकाशित किया है ।१७। तीनों लोकों में उसे अधिक ज्ञातव्य कुछ नहीं है । आपके भगवतीके लिये प्रिय होने से उन्होंने वह मन्त्र आपको प्रदान किया है ।१८। व्यासजीने कहा- मन्त्र जानकर अपने हृदयस्थ कर लिया ।१९। उसके कुछ कालोपरान्त उनके नाभि कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जो दैत्यों से भयभीत होकर विष्णु की शरण में पहुँचे ।२०। तब भगवान् विष्णु ने भयङ्कर युद्ध करके मधु कैटभ का संहार उस श्लोकार्द्ध का जप करते हुए किया ।२१।

जपंतं वासुदेवं च दृष्ट्वा देवः प्रजापतिः ।
पप्रच्छ परमप्रीतः कजजा कमलापतिम् ।२२
किं त्वं जपसि देवेशे त्वत्तः कोऽयधिकोऽस्ति वै ।
यत्स्मृत्वा पुण्रीकाक्ष प्रीतोऽसि जगदीश्वरः ।२३
मयि त्वयि च या शक्तिः क्रियाकारणलक्षणा ।
विचारय महाभाग या सा भगवती शिवा ।२४
यदाधारे जगत्सर्वं तिष्ठत्यत्र महार्णवे ।
साकार या महाशक्तिरमेया च सनातनी ।२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यया क्षिप्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ।२६
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ।
संसारबंधहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ।२७
अहं त्वमखिलं विश्वं तस्याश्चिच्छक्तिसंभवम् ।
विद्धि ब्रह्मन्न सन्देहः कर्तव्यः सर्वदाऽनघ ।२८
श्लोकार्धेन तया प्रोक्तं तद्वै भागवत किल ।
विस्तरो भविता तस्य द्वापरादौ युगे तथा ।२९

भगवान् विष्णु को जप करते देखकर ब्रह्मा ने उनसे प्रश्न किया कि हे देवेश ! आप क्या जपते हैं ? आप से बढ़कर भी क्या कोई है, जिसका जप करके आपकी प्रसन्नता बढ़ रही है ।२२-२३। भगवान् ने कहा हे महाभाग ! जो कार्य-कारण-लक्षणा शक्ति आप में और मुझ में प्रतिष्ठित हैं, उनका विचार कीजिये, वही देवी कल्याणकारिणी हैं।२४। यह सम्पूर्ण विश्व इसी शक्ति के सहारे स्थित है । वही शक्ति साकार और सनातनी है ।२५। इस चराचर विश्वकी सृष्टि करने वाली देवीही प्रसन्न होकर जीवों को मोक्ष प्रदान करती है ।२६। वे परम विद्या ही मोक्ष हेतु है, वही सनातनी देवी सर्वेश्वरों की ईश्वरी एवं संसारबन्धन की हेतु स्वरूप भी हैं ।२७। मैं और आप तथा यह सम्पूर्ण संसार उन्हीं की चित्शक्ति उत्पन्न हुआ है । हे निष्पाप ! आप इसमें कुछ सन्देह मत कीजिये ।२८। उन्होंने श्लोकार्द्ध में जो कुछ कहा है वही सत्य है, द्वापर आदि युगों में वह विस्तृत हो जायगा ।२९।

ब्रह्मणा संगृहीतं च विष्णोस्तु नाभिपंकजे ।
नारदाय च तेनोक्तं पुत्रायामितबुद्धये ।३०
नारदेन तथा मह्यं दत्तं हि मुनिना पुरा ।
मया कृतमिदं द्वादशस्कन्धविस्तरम् ।३१
तत्पठस्व महाभाग पुराणं ब्रह्मसम्मितम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंचलक्षणसंयुक्तं च देव्याश्चरितमुत्तमम् ।
इत्युक्तं तेन पुत्राय मह्यं च कथितं किल ।
मया गृहीतसत्सर्वं पुराणं चातिविस्तरम् ।३३
शुकोऽधीत्य पुराणं तु स्थितो व्यासाश्रमे शुभे ।
न लेभे शर्म धर्मात्मा ब्रह्मात्मज इवापरः ।३४
पितृणां सुभगा कन्या पीवरी नाम सुन्दरी ।
शुकश्चकार पत्नीं तां योगमार्गं स्थितोऽपि हि ।३५

व्यास जी ने कहा इस प्रकार नाभिकमल पर स्थित हुए ब्रह्माजी ने उस भागवत का श्रवण किया फिर उसी को उन्होंने नारदजी के प्रति कहा ।३०। प्राचीन काल में नारदजी ने उस भागवत को मुझे सुनाया और उसी का आधार लेकर मैंने उसे विस्तृत कर दिया ।३१। इसलिये हे महाभाग ! देवी के चरित्रों से युक्त पंच लक्षण सम्पन्न ब्रह्म समस्त उस भागवत को तुम अवश्य पढ़ो ।३२। सूतजी बोले—व्यासजी ने अपने पुत्र शुकदेवजी तथा मुझसे भी भागवत पढ़ने को कहा । तब मैंने उसे पढ़ा ।३३। शुकदेव जी भागवत पुराण को पढ़कर व्यासाश्रम में ही निवास करने लगे परन्तु उनके मन में शान्ति नहीं थी ।३४। योग मार्ग में स्थित रहते हुए भी शुकदेवजी ने पितरों की पीवरी नामक सुन्दरी कन्या से विवाह किया ।३५।

स तस्यां जनयामास सुत्रीश्चतुर एव हि ।
कृष्णां गौरप्रभं चैव भूरिं देवश्रुतं तथा ।३६
कन्यां कीर्तिं समुत्पाद्य व्यासपुत्रः प्रतापवान् ।
ददौ विभ्राजपत्राय त्वणुहाय महात्मने ।३७
अणुहस्य सुतः श्रीमान्ब्रह्मदत्तः प्रतापवान् ।
ब्रह्मजः पृथिवीपालः शुककन्यासमुद्भवः ।३८
कालेन कियता तत्र नारदस्योपदेशतः ।
ज्ञानं परमेकं प्राप्य योगमार्गं ममुत्तमम् ।३९
पत्रे राज्यं निधायाथ गतो बदरिकाश्रमम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मायाबीजोपदेशेन तस्य ज्ञानं निरर्गलम् ।४०
नारदस्य प्रसादेन जातं सद्यो विसुक्तिदम् ।
कैलासशिखरे रम्ये त्यक्त्वा सङ्गं पितुः शुकः ।४१
ध्यानमास्थाय विपुलं स्थितः सङ्गपराङ् मुखः ।
उत्पपात गिरेः शृंगात्सिद्धिं च परमां गतः ।४२

उसने उनके कृष्णा: गोरप्रभ, भूरि और देवश्रुत नामक चार पुत्र हुए ।३६। उन्होंने कीर्ति नाम की एक कन्या भी उत्पन्न की जिसका विवाह विभ्राज-पुत्र अणुह के साथ किया ।३७। इस कन्यासे अणुह द्वारा अत्यन्त प्रतापी और ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मदत्त उत्पन्नहुए ।३८। कुछ कालोपरांत ब्रह्मदत नारदजी से उपदेश प्राप्त करके अत्युत्तम ज्ञान के सहित योग मार्ग को पा सके ।३९।उन्होंने पुत्र को राज्य देकर बदरिकाश्रम प्रस्थान किया जहाँ माया बीज मन्त्र को प्राप्त कर वे पूर्णज्ञानी हो गये ।४०। नारदजी के द्वारा उन्हें इस मोक्षदायक ज्ञान की प्राप्ति हुई । इधर शुक देवजी भी व्यासजी का सङ्ग छोड़कर कैलाश पर्वत पहुँचे और ध्यान-लीन होकर उन्होंने अणिमा और महिमा सिद्धियों को प्राप्त किया और पर्वत शिखर को भी छोड़कर आकाश में स्थित हो गये ।४१-४२।

—×—

शान्तनु-गंगा—विवाह

प्रणम्य परमां शक्ति चतुर्वर्गप्रदायिनीम् ।
आदिशक्तिं वदिष्यामि कथां पौराणिकीं शुभाम् ।१
यस्योच्चारणमात्रेण सिद्धिर्भवति शाश्वती ।
व्याजेनापि हि वीजस्य वाग्भवस्य विशेषतः ।२
सम्यगात्मना सर्वैः सर्वकामार्थसिद्धये ।
स्मर्तव्या सर्वथा देवी वांछितार्थ प्रदायिनी ।३
राजोपरिचरो नाम धार्मिकः सत्यसङ्गरः ।
चेदिदेशपतिः श्रीमान्बभूव द्विजपूजकः ।४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विख्यातः सर्वलोकेषु धर्मनित्यः स भूपतिः।
तस्य भार्या वरारोहा गिरिका नाम सुन्दरी ।५

सूतजी बोले—हे ऋषियो ! चतुर्वर्ग के देने वाली परम-शक्ति एवं आदि शक्ति को प्रणाम करके मैं पुराण की यह शुभ कथा कहता हूँ ।१। किसी बहाने से भी जिस वाग्भव बीज के उच्चारण करने से शाश्वती सिद्धि की प्राप्ति होती है ।२। इच्छित फलदायिनी उस देवी को अपनी सभी अभिलाषाएँ पूर्ण करने के निमित्त स्मरण करना उचित है ।३। उपरिचर नामक एक धार्मिक सत्यप्रतिज्ञ एवं ब्राह्मणों का आदर करने वाला राजा हुआ था ।४। यह धर्म का पालक होने के कारण सब लोकों में प्रसिद्ध था। उसकी परमसुन्दर भार्या का नाम गिरिका था ।५।

पुत्रश्चास्य महावीर्याः पंचासन्नमितौजसः।
पृथग्देशेषु राजानः स्थापितास्तेन भूभृजा ।६
वने स्थितः स राजर्षिश्चित्ते सस्मार भामिनीम्।
अतीवरूपसंपन्नां साक्षाच्छ्रियमिवापराम् ।७
वटपत्रे तु तद्राजा स्कन्नमात्रं समाक्षिपत् ।८
शुक्रप्रस्थापने काले महिष्यः प्रसमीक्ष्य सः।
अभिमन्त्र्यार्थं तद्वीर्यं वटपर्णपुटे कृतम् ।९
पार्श्वस्थं श्येनमाभाष्य रजोवाच द्विजं प्रति।
गृहाणेदं महाभाग गच्छ शीघ्र गृहं मम ।१०
इत्युक्त्वा प्रददौ पर्णं श्येनाय नृपसत्तमः।
स गृहीत्वोत्पपाताशु गगनं गतिवित्तमः।११

उस राजा के अत्यन्त पराक्रमी पाँच पुत्र थे जो पृथक्-पृथक् भू-खण्डों के राजा हो गये थे ।६। एक बार वन में गये हुये राजा को अपनी सुन्दर पत्नी का स्मरण हो आया ।७। जिससे उसका वीर्य पात हो गया, जिसे उसने एक वट पत्र पर रख दिया ।८। उस वट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्र को अपनी रानी के पास भेजने का विचार कर राजा ने एक श्येन पक्षी से कहा कि तुम इसे मेरे घर पहुंचा दो ।९-१०। सूतजी बोले कि यह कह राजा ने वह दोना उसे दे दिया, जिससे लेकर श्येन शीघ्र ही नभ मार्ग में जा पहुंचा ।११।

गच्छन्तं गगनं श्येनं धृत्वा चंचुपुटे पुटम् ।
तमपश्यदथाथांत खगः श्येनस्तथाऽपरः ।१२
आमिषं स तु विराय शीघ्रमभ्यद्रवत्खगम् ।
तुण्डयुद्धमथाकाशे तावूभौसंप्रचक्रतुः ।१३
युद्धतोरपतद्रे तृस्तच्चापि यमुनांभसि ।
खगौ तौ निर्गतौ कामं पुटके पतिते तदा ।१४
एतस्मिन्समये काचिदद्रिका नाम चाप्सराः ।
ब्राह्मणं समनुप्राप्तं संध्याव दनतत्परम् ।१५
कुर्वता जलकेलिं सा जले मग्ना चचार सा ।
जाग्रह चरणं नारि द्विजस्य वरवर्णिनी ।१६
प्राणायामपरः सोऽथ दृष्ट्वा तां कामचारिणीम् ।
शशाप भव मत्स्यो त्वं ध्यानविघ्नकरी यतः ।१७
सा शप्ता विप्रख्येन बभूव यमुनाचरी ।
शफरी रूपसम्पन्ना ह्यद्रिका च वरप्सराः ।१८

चोंच में कोई वस्तु लेकर उड़ते हुए श्येन को देखकर एक अन्य श्येन ने समझा कि वह मांस का कोई टुकड़ा लिये जाता है तो उसने आक्रमण कर दिया और इस प्रकार दोनों पक्षी लड़ने लगे ।१२-१३। इससे वह दोना यमुना जल में जा गिरा तो वे दोनों शान्त होकर अन्यत्र चले गये ।१४। तभी अद्रिका नामक एक अप्सरा ने यमुना जल में खड़े होकर सन्ध्या करते हुए तप तपोनिष्ठ ब्राह्मण का पाँव पकड़ लिया ।१५-१६। इससे कुपित हुए ब्राह्मण ने उसे शाप दियाकि तूने मेरेध्यान में विघ्न डाला है, इसलिये मछली हो जा ।१७। शाप प्राप्त करते ही अप्सरा मछली होकर जल में तैरने लगी ।१८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्येनपावरिभ्रष्टं तच्छुक्रमथ वासपी ।
जग्राह तरसाऽभ्येत्य साऽद्रिका मत्स्यरूपिणी ।१९
अथ कालेन कियता यत्स्यीं यां मत्स्यजीवनः ।
संप्राप्ते दशमे मासि बबन्ध तां मनोरमाम् ।२०
उदरं विददाराश स तस्या मत्स्यजीवनः ।
युग्मं विनिःक्ष्येतः तस्मादुदान्नामानुषाकृति ।२१
बालः कुमारः सुभगस्तथा कन्या शुभानना ।
दृष्ट्वाऽऽश्चर्यमिदं सोऽथ विस्मयं परमं गतः ।२२
राज्ञे निवेदयामास परौ द्वौ झषोद्भवौ ।
राजाऽपि विस्मयाविष्टः सुतं जग्राह तं शुभम् ।२३
स मत्स्यो नाम राजाऽसौ धार्मिकः सत्यसङ्गरः ।
वसुपुत्रो महातेजाः पित्रा तुल्यपराक्रमः ।२४
कन्यका वसुना दत्ता तपसा जलजीविने ।
नाम्ना कालीति विख्याता तथा मत्स्योदरीति च ।२५

तभी वह दोना उसके पास आ गया जिसे वह निगल गई ।१९। दस महीने होनेपर एक दिन मछुएने उसे अपने जालमें फँसा लिया।२० और जब उसके पेट को चीरा तो उनमें मनुष्याकृति का एक जोड़ा निकला ।२१। उसमें एक बालक और एक कन्या थी, दोनों अत्यन्त सुन्दर थे जिन्हें देखकर धीवर अत्यन्त विस्मित हुआ ।२२। धीवर ने वे दोनों शिशु राजा उपरिचर की सेवा में उपस्थित किये, राजा ने वह शिशु ले लिया ।२३। समय पाकर वह शिशु मत्स्य नामक धार्मिक, सत्य प्रतिज्ञ एवं अत्यन्त तेजस्वी राजा हुआ ।२४। परन्तु मछली के उदर से उत्पन्न वह कन्या राजा ने केवट को ही दे दी । आगे चलकर उसी कन्या की प्रसिद्धि मत्स्योदरी नाम से हुई ।२५।

एकदा तीर्थयात्रायां व्रजन्पाराशरी मुनिः ।
आजगाम महातेजाः कालिंद्यास्तटमुत्तमम् ।२६
निषादमाह धर्मात्मा कुर्वतं भोजनं मुदा ।
प्रापयस्व परं तीरं कालिंद्या उडुपेन माम् ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाशः श्रुत्वा मुनेर्वाक्ययं कुर्वाणा भोजनं तटे ।
उवाच तां सुतां बालां मत्स्यगन्धां मनोरमाम् ।२८
उडुपेन मुनि परं पारं नयस्व हि ।
ततुं कामाऽस्ति धर्मात्मा तापसोऽयं शुचिस्मिते ।२९
इत्युक्ता सा तदा पित्रा मत्स्यगं धाऽथ वासवी ।
उडुपे मुनिमासनं संवाहयति भागिनी ।३०
व्रजन् सूर्यसुतोये भावित्वाद्दैवयोगतः ।
कामातां मुनिर्जातो दृष्ट्वा तां चारुलोचनात ।३१

सूतजी बोले—एक समय की बात है कि पराशर मुनि तीर्थ यात्रा करने को चलते हुए यमुना तट पर पहुँचे ।२६। वहां केवट भोजन कर रहा था, उससे मुनि ने कहा कि अपनी नौका द्वारा यमुना के पार उतार दो ।२७। यह सुनकर केवट ने मत्स्यगंधा अर्थात् मत्स्योदरी से कहा कि यह मुनि पार जाना चाहते हैं, इन्हें नौका द्वारा पार उतार दो ।२८-२९। यह सुनकर मुनि को नाव में बैठाकर मत्स्यगंधा उन्हें पार करने लगी ।३०। दैवयोग से यमुना पार करते हुए पाराशर मुनि उस कन्या को देखकर कामार्त हो उठे ।३१।

सुषवे यमुनाद्वीपे काममिवापरम् ।
जातमात्रस्तु तेजस्वी तामुवाच स्वमातरम् ।३२
तपस्येव मनः कृत्वा त्रिवशे चाति वीर्यवान् ।
गच्छ मातय थाकामं गच्छाम्यहमतः परम् ।३३
तपः कर्तुं महाभागे दर्शयिष्यामि वै स्मृतः ।
मातर्यदा भवेत्कर्यं तव किंचिदनुत्तमम् ।३४
स्मर्तव्योऽहं तदा शीघ्रमागमिष्यामि भामिनि ।
स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि त्यक्त्वा चिन्ता सुख वस ।३५
इत्युक्त्वा निर्ययौ व्यासः साऽपि पित्रंतिक गता ।
द्वीपे न्यस्यस्तया जातस्तस्माद् द्वैपायनोऽभवत ।३६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय आने पर यमुना के उस द्वीप में उस कन्या ने कामदेव के समान पुत्र को जन्म दिया तो उत्पन्न होते ही अपनी माता से बोला ।३२। उसके मन में तप की भावना थी, वह बोला हे माता ! मैं वन में तपस्या के लिये जा रहा हूँ, जब आपका कोई अर्थ हो, तब मैं याद करते ही सेवामें उपस्थित हो जाऊँगा आप किसी बातकी चिन्ता न करें और सुख पूर्वक रहे ।३३-३५। यह कहकर व्यासजी वनको चले गये और सत्यवती अपने पिता के पास चली गई । द्वीप में उत्पन्न होने के कारण व्यास जी का नाम द्वैपायन हुआ ।३६।

प्रातीपे ऽथ दिवं यातु शान्तनुः सत्यविक्रमः ।
बभूव मृगयाशीलो निघ्यन्व्याघ्रान्मृगान्नृपः ।३७
स कदाचद्वने घोरे गंगातीरे चरन्नृपः ।
ददर्श मृगशावाक्षीं सुन्दरीं चानरुभूषणाम् ।३८
पिबन्मुखांबुजं तस्या न तृप्तिमगमन्नृपः ।
हृष्टरोमोऽभवत्तत्र व्याप्तचित्त इवानघः ।३९
वीक्ष्य तामसितापांगीं राजा प्रीतमना भृशम् ।
उवाच मधुरं वाक्यं वाक्यं सांत्वयञ्श्लक्ष्णया गिरा ।४०
देवी वा त्वं च वामोरु मानुषा वा वरानने ।
गंधर्वी वाऽथ यक्षी वा नागकन्याऽप्सरापि ।४१
यासि कासि वरारोहे भार्या मे भव सुन्दरि ।
प्रेमयुक्तस्मितोक्त्वं धर्मपत्नी भवाद्य मे । ४२
जानामि त्वां नृपश्रेष्ठ प्रतापतनयं शुभम् ।
का न वांछति चार्वंगी भावित्वात्सदृशं पतिम् ।४३

सूतजी बोले-अपने पिता राजा प्रतीप की मृत्यु के पश्चात् शान्तनु राजा हुए जो मृगया करने में अत्यन्त दक्ष थे । एक समय वह गङ्गा किनारे के वन में बिचरण कर रहे थे, तभी उन्होंने मृग शावक जैसे नेत्र वाली एक सुन्दरी देखी जो श्रेष्ठ आभूषण धारण किये हुए थी ।३७-८३। उसके मुखाम्बुज का पान करते-करते राजा शान्तनु तृप्त नहीं हो रहे थे उनके रोम हर्षित हो गये और उनका मन नारी में रम गया ।३९। उसे देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए राजा शान्तनु ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत मिष्ट वाणी में उससे कहा ।४०। हे वरानने ! तुम कौन हो, देवी अथवा मानुषी ? गंधर्वी यक्षी अथवा नागकन्या ? या कोई अप्सरा तो नहीं हो ? ।४१। हे वरारोहे ! तुम्हारी इच्छा हो तो मेरी भार्या हो जाओ । मैं तो तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहता हूँ ।४२। इस पर उस स्त्री ने कहा—हे राजन् ! मुझे ज्ञात है कि आप महाराज प्रतीप के पुत्र हैं । इसीलिये अपने अनुरूप पति के, संयोग से प्राप्त हो जाने पर भी, कौन स्त्री उसे अपना पति न बनाना चाहेगी ।४३।

वाग्बंधेन नृपश्रेष्ठ वरिष्यामि पतिं किल ।
शृणु मे समयं राजन्वृणीमित्वंन्तपोत्तम् ।४४
यच्च कुर्यामहं कार्यं शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।
न निषेध्या त्वया राजन्न वक्तव्यं तथाऽप्रियम् ।४५
यदा च त्वं नृपश्रेष्ठ न करिष्यसि मे वचः ।
तदा मुक्त्वा गमिष्यामि यथेष्टं देशमारिष ।४६
तथेत्युक्ताऽथ सा देवी चकार नृपतिं पतिम् ।
एवं वृता नृपेणाथ गंगा मानुषरूपिणी ।४७
नृपस्य मन्दिरं प्राप्ता सुभगा वरवर्णिनी ।
नृपतिस्तां समासाद्य चिक्रीडोपवने शुभे ।४८
गर्भगंगा वसुं पुत्रं सुषुवे चारुलोचना ।
जातमात्रं सुतं चापि चिक्षेपैवं द्वितीयकम् ।४९
तृतीयेऽथ चतुर्थेऽथ पंचमे षष्ठ एव च ।
सप्तमे वा हते पुत्रे राजा चिंतापरोऽभवत् ।५०

हे नृपोत्तम! मैं आपको पति स्वीकार करनेसे पूर्व आपसे कुछवचन लेना चाहती हूँ । मैं कैसा भी उचित अनुचित कार्य करूँआप मुझे न तो रोकेंगे और न कुछ भला-बुरा कह सकेंगे ।४४-४५। और जब आप मेरी इच्छाके अनुसार कार्य न करेंगे, तभीमैं आपको त्याग कर जहां चाहूँगी, चली जाऊँगी ।४६। गंगाजी के वचनों को राजा शान्तनुने स्वीकारकर लिया,तब गंगा ने उन्हें अपने पति रूप में वरण कर लिया । इसप्रकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य रूप धारिणी गंगा, राजा के साथ राजभवन में जा पहुँची और राजा उनके साथ विविध प्रकार के उपवनोंमें क्रीड़ाकरने लगे ।४७-४८। समय पाकर गर्भवती गंगा ने वसु को पुत्र रूप से प्रसव किया और तुरन्त उठाकर जल में बहा दिया, इसी प्रकार दूसरा पुत्र होने पर भी किया!।४९। फिर तीसरा, चौथा, पाँचवा, छठा,सातवा जो भी पुत्रहुआ उसीको जलमेंडाल दिया । यह देखकर राजा अत्यन्त चिन्तित हुए।५०।

किं करोम्यहं वंशो मे कथं स्यात्सुस्थिरो भवि ।
सप्त पुत्रा हता नूनमनया पापरूपया ।५१
निवारयामि यद्येतां त्यत्क्वा यास्यति सर्वथा ।
अष्टयोऽयं सुसंप्राप्तो गर्भो मे मनसेप्सितः ।५२
वंशस्य रक्षणार्थं हि यत्नः कार्यः परो मया ।
ततः काले यदा जातः पुत्रोऽयमष्टमोः वसुः ।५३
दासोऽस्मि तव तन्वंगि प्रार्थयामि शुचिस्मिते ।
पुत्रमेकं पुषाम्यद्य देहि जीवितामद्य मे ।५४
एवं वदति भूपाले सा गृहीत्वा सुतं शिशुम् ।
गच्छती वचनं कोपसंयुतमुवाच ह ।५५
गंगा दत्तमिमं पत्रं गृहाण शांतनो स्वयम् ।
वसुं देवं विदित्वैनं सुखं भुंक्ष्व सुतोदभवम् ।५६
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे गंगा दत्त्वा पुत्रं नृपाय वै ।
नृपतिस्तु मुदा युक्ता बभूवा तसुखान्वितः ।५७

वे सोचने लगे कि अपने वंश की स्थिरता के लिए मुझे क्या करना उचित है ? इस पापरूपिणी ने तो मेरे सात पुत्रों की हत्या कर डाली ।५१। अब यदि इसे रोकूँगा तो यह मुझे छोड़कर चली जायगी । अब आठवें गर्भ का क्या पूर्ण होने को है ।५२। वंश की रक्षा के लिये कुछ तो करना ही होगा । समय आने पर अष्टम वसु ने पुत्र रूप में जन्म लिया ।५३। तब राजा ने कहा—हे तन्वंगि ! मैं तुम्हारा दास हूँ । मैं तुमसे यह निवेदन करना चाहता हूँ कि मेरी इच्छा इस पुत्र को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवित रखने की है। इसे देकर मुझे जीवन प्रदान करो ।५४। राजा के ऐसा कहते ही गंगा ने उस शिशु को उठा लिया और कोप युक्त वचन कहती हुई चल दी ।५५। हे राजन् ? मुझे गंगा द्वारा दिए गये इस पुत्र को अष्टम वसु समझते हुए लेकर सुख प्राप्त कीजिये ।५६। यह कह कर और उस पुत्र को देकर गंगा अन्तर्धान हो गई। राजा शान्तनु पुत्र को पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए ।५७।

पाण्डवों की उत्पत्ति

शान्तनुर्नाम राजर्षिर्मृगयानिरतः सदा।
वनं जगाम निघ्नन्वै मृगांश्च महिषान्रुरून् ।१
एकदा विक्षिपन्बाणान्विघ्नःखगशूकरान्।
स कदाचिद्वनं प्राप्तः कालिन्दीं सरितां वराम् ।२
स ददर्श नदीतीरे संस्थितां चारुदर्शनीम्।
शृंगाररहितां कांचित्कांतां मलिनाम्बराम् ।३
तदद्भूतं रूपमतीवसुन्दरं तथैव गन्धोऽखिल लोकसम्मतः।
वयश्चतादृङ् नवयौवनंशुद्दृष्ट्वैराजाकिलविस्मितोऽभवत् ।४
केयं कुतो वा समुपागताऽधुना देवांगनावा किं मानुषीबा।
गंधर्व पुत्री किलनागकन्या जोने कथं गधवतींनु काभिनीम्।५
सञ्चिन्त्य चैवं मनसानपोऽस न निश्चयंप्रापयदा ततः स्वयम्।
गङ्गां स्मरन्कामवशं गतोऽथ पप्रच्छ कांता तटसंस्थितां च।६
काऽसिप्रिये कस्य सुताऽसिकस्मादिहस्थितात्वं विजेन बरोरु।
एकाकिनी किंवद दारुनेत्रे विवाहितावा न विवाहिताऽसि।७
सजातकामोऽहमरालनेत्रे त्वां वीक्ष्य कांतां च मनोसरं च।
ब्रूहिप्रियेयाऽसिचिकीर्षसित्वं किचेति सर्वं मम विस्तरेण ।८

सूतजी ने कहा—राजर्षि शान्तनु मृगया के प्रेमी थे। नित्य प्रति बन में जाकर मृग, महिष और मृगों को शिकार किया करते थे ।१। एक समय की बात है, जब राजा शान्तनु बन में अपने बाणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से अनेक गेंडो और सूअरों का शिकार करते हुए यमुना किनारे जा पहुँचे ।२। वहाँ उन्होंने एक सुन्दर मुख वाली स्त्री को बैठे हुए देखा । वह शृंगार रहित मैले वस्त्रों में होते हुए भी अत्यन्त आकर्षक लग रही थी ।३। उसका सुन्दर एवंअद्भुत रूप, सबको मनोमुग्ध करनेवाली सुगन्ध एवं नवयौवन आदि को देखकर राजा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ ।४। राजा सोचने लगे-वह कौन है? कहाँ से आई ? सोचते सोचते गंगा का स्मरण हो आया, जिससे कामातुर हुए राजा उस स्त्री के पास जाकर पूछने लगे ।५-६। हे वरोरुट! तुम इस जनरहित वनमें क्या करती हो ? तुम कौन हो ? किसकी पुत्री हो ? तुम विवाहित हो या कुमारी? क्या अकेली ही रहती हो ? ।७।हे तिरछी चितवन वाली ! तुम मनोहर स्त्री को देखकर मैं अत्यन्त आकर्षित हुआ हूँ। तुम अपनी सब बात विस्तार पूर्वक कहो ।८।

इत्येवमुक्तामुदन्ती नृपेण पोवाच तं सस्मितमंबुजेक्षणा।
दाशस्य पुत्री स्वमवेहि राजन्कन्यां पितु शासनसंस्थितांच।९
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याः नृपतिः काममोहितः ।
गतो दाशपतेर्गेहं तस्या याचनहेतवे ।१०
दृष्ट्वा नृपतिमायांचं दाशोऽतिविस्मयं गतः ।
प्रणामं नृपतिः कृत्वा कृतांजलिरभाषत ।११
दासोऽस्मि तव भूपाल कृतार्थोऽहं तागमात् ।
आज्ञा देहि महाराज यदर्थमिह चागमः ।१२
धर्मपत्नी करिष्यामि सुतामहं तवानघ ।
त्वया चेद्दीयते मह्यं सत्यवेतद्ब्रवीमि ते ।१३
कन्यारत्नं मदीयं चेद्यत्त्वं प्रार्थयसे नृप ।
दातव्यं तु प्रदास्यामि न त्वदेयं कदाचन ।
तस्याः पुत्रो महाराजा त्वदंते पृथिवीपतिः ।
सर्वथा चाभिषिक्तव्यो नान्यः पुत्रस्तवेति वै ।१४

राजा के वचन सुनकर उस सुन्दर दांतों वाली ने कहा, कि हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाराज ! मैं केवट की कन्या हूँ और अपने पिताके अनुशासन में रहती हूँ ।९। सत्यवती के वचन सुनकर काम से मोहित हुये राजा शान्तनु उस कन्या की याचना के लिए केवट के घर पहुँचे ।१०। राजा को आयादेख कर निषाद अत्यन्त विस्मित हुआ और उसने कर बद्ध प्रणाम करते हुए कहा ।११। केवट ने कहा—हे राजन् । मैं आपका दासहूँ । आपके पधारने से धन्य हो गया हूँ ! महाराज ! जिस कार्य के लिये आपका आगमन हुआ है, वह मुझे बताइये ।१२। राजा ने कहा हे निष्पाप ? मैं तुम्हारी पुत्री को अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ । मेरे ये वचन सर्वथा सत्य है ।१३। केवट बोला-हे राजन्!आप मेरी कन्या माँगते हैं तो मैं अवश्य ही दूँगा । क्योंकि कन्या क्या अदेया है ? ।१४। परन्तु मेरी इस कन्या का पुत्र ही आपके राज्य पर अभिषिक्त हो और आप किसी अन्य पुत्र को अभिषिक्त न करें, तो मैं इसे स्वीकार कर सकता हूँ ।१५।

श्रुत्वा वाक्यं तु दाशस्य राजा चिन्तातुरोऽभवत् ।
गांमेयं मनसा कृत्वा नोवाच नृपतिस्तदा ।१६
कामातुरो गृहं प्राप्रश्चिताविष्टो महापतिः ।
न सस्नौ बुभु जे नाथ न सुष्वाप गृहं गतः १७
चिंतातुरं तु तं दृष्ट्वा पुत्रो देवव्रतस्तदा ।
गत्वाऽपच्छन्महीपालं तदसं तोषकारणम् ।१८
चिंता में महती पुत्र यस्त्वमेकोऽसि मे सुतः ।
शूरोऽतिबयवान्मानो संग्रामेष्वपराङ् मुखः ।१९
एकापत्यस्य मे तात वथेदं जीवितं किल ।
हते त्वयि युधि क्वापि किं करोमि निराश्रयः ।२०
एषा मे महतो चिंता तयाद्य दुःखितोऽस्म्हम् ।
नान्या चिंताऽस्ति मे पुत्र यां तवाग्रे वदाम्यहम् ।२१
तदाकर्ण्याथ गांगेयो मंत्रिवृद्धानपृच्छत ।
न मां वदति भूपालो लज्जयाऽद्य परिप्लुतः ।२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्तवार्त्तं नृपस्याद्य पृष्ट्वा यूयं विनिश्चयात् ।
सत्यं ब्रुवति मां सर्वं तत्करोमि निराकुलः ।२३

सूतजी बोले—यह सुनकर महाराज चिन्तित हो उठे । उन्हें गंगा—पुत्र भीष्मका स्मरण हो आया तब उन्होंने निषादको कुछउत्तर न दिया ।१६। और काम से व्याकुल एवं चिन्ता में रत राजा अपने घर लौट आये । वहा उन्होंने स्नान,भोजन आदि कुछ न किया और न उन्हें नींद ही आई ।१७। महाराज को चिंतित देखकर उनके पुत्रदेवव्रत (भीष्म)ने उनके पास जाकर उनकी चिन्ता का कारण पूछा ।१८। राजा ने उत्तर दिया कि हे पुत्र, तुम मेरे एकमात्र पुत्र हो । तुम शूर,बलवान औरयुद्ध से पराङ्मुख होने वाले नहीं हो ।१९। परन्तु एक पुत्र वाले पिता का जीवन भी व्यर्थ है । यदि युद्ध में कहीं तुम मारे जाओ तो मैं निराश्रय हो जाऊँगा ।२०। मुझे इसी बातकी चिन्ताहै और कोई ऐसी बातनहींहै, जिसे मैं तुमसे कहूँ ।२१। सूतजी बोले-महाराज की बात सुनकर गांगेय ने वृद्ध मंत्रियों से कहा कि महाराज लज्जावश अपनी बात स्पष्ट नहीं कह रहे हैं ।२२। आप लोग महाराज की इच्छा को किसी प्रकार जानने का यत्न कर मुझेसत्य बात बतादें तो मैं उसकी आज्ञा का पालन करने में किंचित भी नहीं हिचकूँगा ।२३।

तच्छ्रुत्वा ते नृपं गत्वा विज्ञाय च कारणम् ।
शशंसुर्विदितार्थस्तु गांगेयस्तदचिंतयेत् ।२४
सहितस्तर्ज गामाशु दायस्य गृहं तदा
प्रेमपूर्व मुवाचेदं विनम्रो जाह्नवीसुतः ।२५
पित्रे देहि सुतां तेऽद्य प्रार्थयामि स मध्यमाम् ।
माता मेऽस्यु सुतेयं ते दासोऽस्म्यस्याः परं तप ।२६
त्वं गृहाण महाभाग पत्नीं कुरु नृपात्मज ।
पुत्रोऽस्या न भवेद्राजा वर्तमाने त्वयीति वै ।२७
मातेयं मम दाशेयो राज्यं नैव करोम्यहम् ।
पुत्रोऽस्याः सर्वथा राज्यं करिष्यति न संशयः ।२८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्यं वाक्यं मया ज्ञानं पुत्रस्ते बलवान्भवेत् ।
सोऽपि राज्यं बलान्नू नं गृह्णीयाद्रिति निश्चयः ।२९

न दारसंग्रहं नूनं करिष्यामि हि सर्वथा ।
सस्यं मे वचनं तात मया भोष्मं व्रतं कृतम् ।३०

एवं कृतां प्रतिज्ञां तु निशम्य झषजीवकः ।
ददौ सत्यवती तस्मै राज्ञे सर्वां गशोभनाम् ।३१

गांगेय के वचन सुनकर मन्त्रिगण महाराज से एकान्त में मिले और उनसे वास्तविक कारण जानकर भीष्म को बता दिया तब उन्होंने उस पर विचार किया ।२४। और मन्त्रियों के सहित उस केवट के घर गये और उससे विनम्रता पूर्वक बोले ।२५। गांगेय ने कहा—हे परन्तप आप अपनी इस कन्या को मेरे पिता को दे दें । वह मेरी माता और मैं उसका सेवक हूँगा ।२६। निषाद बोला—हे महाभाग, इसे आप अपनी भार्या बना ले । यदि महाराजको दूँगा तो मेरी पुत्रीका पुत्र राजा नहीं बन पायेगा ।२७। इस पर गांगेय बोले-यह तो मेरी माता ही होगी । मैं कभी राज्य नहीं करूँगा । इसमें शंका मत करो, तुम्हारी कन्या का पुत्र ही राज्य करेगा ।२८। निषाद ने कहा आपका वचन सत्य है,परन्तुकहीं आपका कोई पुत्र ही ऐसा बलवान् हो जाय कि राज्य छीनले ?।२९।तब गांगेयने कहा-मैं आजीवन कुँवारा रहूँगा । तुम्हारेसमक्ष मैं भीष्मप्रतिज्ञा करता हूँ ।३०। सूतजी बोले कि गांगेयको ऐसी प्रतिज्ञा सुनकर निषादने अपनी सुन्दरी कन्या सत्यवती राजा शान्तनु को प्रदान करदी ।३१।

एवं सत्यवती तेन वृता शान्तनुना किल ।
द्वा पुत्रौ च जातौ मृतौ कालवशादपि ।३२
व्यासकीयांत्तु संजातो धृतराष्ट्रोऽन्ध एव च ।
सुनिं दृष्टवाऽथ काभिन्या नेत्रसम्मीलने कृते ।३३
श्वेतरूपा यतो जाता दृष्ट्वा व्यासं नृपात्मजा ।
व्यासकोपात्समुत्पन्नः पांडस्तेन न संशयः ।३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुन्ती विवाहिता कन्या पांडुना सा स्वयंवरे ।
माद्री चैवापरा भार्या मद्रराजसुता शुभा ।३५
मृगयां रममाणस्तु वदे पांडुर्महाबलः ।
जघान मृगबुद्धया तु रममांणं मुनिं वने ।३६
शप्तस्तेन तदा पांडुर्मुनिना कुपितेन च ।
स्त्रीसंगं यदि कर्तासि तदा ते मरणं ध्रुवम् ।३७
इति शप्तस्तु मुनिना पाण्डुः शोकसमन्वितः ।
त्यक्त्वा राज्यं वने वासं चकार मृशदुःखितः ।३८
कुन्ती माद्री च भार्ये द्वे जग्मतुः सह संगते ।
सेवनार्थं सतीधर्म संश्रिते मुनिसत्तमाः ।३९

सूतजी ने कहा—इस प्रकार राजा शान्तनु का सत्यवती से विवाह हुआ। उससे दो पुत्र उत्पन्न हुए जो कालवश अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्तहुए ।३२। फिर व्यासजी द्वाराअन्धे धृतराष्ट्र की उत्पत्तिहुई क्योंकि व्यासजी को देखकर कामिनी ने अपने नेत्र मूँद लिये थे ।३३। दूसरी रानी व्यासजी को देखकर लाजसे सफेद हो गई जिससे व्यासजी क्रोधित हो गये और पाण्डुवर्ण का शिशु उत्पन्नहुआ ।३४। उसी पांडु के साथ कुन्ती का विवाह हुआ, उनकी दूसरी भार्या मद्रराज की पुत्री माद्री हुई ।३५। एक समय वन में शिकार खेलतेसमय राजा ने मृग रूप में विहार करते हुए एक मुनि की हत्या कर डाली ।३६। मरण काल में उन मुनि ने राजा को शाप दिया कि समागम-काल में तुम्हारी मृत्यु होगी ।३७। इस शाप से दुःखित हुए राजा अपना राज्य छोड़कर वन में रहने लगे ।३८। उनकी दोनों पत्नियाँ दोनों सतीधर्ममें स्थिर रहकर राजाके साथ वन में गईं ।३९।

गंगातारे स्थितः पांडुर्मुनीनामाश्रमेतु च ।
शृण्वानो धर्मशास्त्राणि चकार दुश्चरं तप ।४०
कथायां वर्तमानायां कदाचिद्धर्मसंश्रितातम् ।
अशृणोद्वचनं राजा सुपुष्ट प्रतिभान्वितम् ।४१
अपुत्रस्य वतिर्नास्ति स्वर्गे गंतुं परं तप ।
येन केनाप्युपायेन पुत्रस्य जननं चरेत् ।४२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंशजः पुत्रिकापुत्रः क्षेत्रजो गोलकस्त ।
कुण्डः सहोढः कानीनः क्रीतः प्राप्तस्तथा वने ।४३
दत्तः केनापि चाशक्तौ धनग्राहिसुताः ।
उत्तरोत्तरतः पुत्रा निकृष्टा इति निश्चयः ।४४
इत्याकर्ण्य तदा प्राह कुन्तीं कमललोचनाम् ।
सुतामृत्यादयाशु त्वं मुनिं गत्वा तपोऽविन्तम् ।४५
तं कुन्ती वचनं प्राह ममं मन्त्रोऽस्ति कामदः ।
दत्तो दुर्वाससा पूर्वं सिद्धिदः सर्वथा प्रभो ।४६
निमंत्रयेऽहं यं देत्रं मन्त्रेणानेन पार्थिव ।
आगच्छेत्सर्वथाऽसौ मम पार्श्वे चेव निमन्त्रितः ।४७

बन में गंगाजी के तट पर मुनियों के आश्रम में निवास करते हुए राजा धर्मशास्त्र श्रवण करते और घोर तप करते थे ।४०। कथा के समय उन्होंने एक मुनि से यह धर्म सम्मत वचन सुना कि हे परतप। पुत्र-विहीन मनुष्य की गति स्वर्गमें नहीं होती इसलिए जिस प्रकार भी हो सके पुत्र की उत्पत्तिका कोई उपाय अवश्य करना चाहिये ।४१-४२। अंशज, पुत्री का पुत्र क्षेत्रज गोलक, कुण्ड, सहोढ, कानीन, क्रीत, वनमें प्राप्त हुआ अनाथ बालक और दत्तक, इतने प्रकार के एक एक दूसरे से निकृष्ट माने जाने पर भी पिता की सम्पत्ति में अधिकार प्राप्त करते हैं ।४३-४४। कथा में यह सुनकर महाराज पांडु ने अपनी भार्या कुन्ती से कहा कि तुम किसी तपोनिष्ठ मुनि के पास जाकर एक सन्तान प्राप्त करो ।४५। यह सुनकर कुन्ती ने कहा कि मैं सर्व कामनाओं को पूर्णकरने वाला एक मन्त्र जानती हूँ। यह सिद्धि प्रदान करने वाला मन्त्र मुझे महर्षि दुर्वासा से प्राप्त हुआ था ।४६। हे महाराज। मैं इस मन्त्र के द्वारा जिस देवता का आह्वान करती हूँ वह तुरन्त आकृष्ट होकर मेरे समीप आ जाता है ।४७।

भतुर्वाक्येन सा तत्र स्मृत्वा धर्मसु रोत्तमम् ।
संगम्य सुषुवे पुत्र प्रथमं च युधिष्ठरम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायोर्वृकोदरं पुत्र विष्णुं चैव शतक्रतोः ।
वर्षे वर्षे त्रयः पुत्राः कुंत्या जाता महाबलाः ।४६
प्रार्थिता पतिना कुन्ती ददौ मत्रं दयान्वितः ।
एकपुत्र प्रबधेन माद्री पतिमते स्थिता ।५०
स्मृत्वा तदाऽश्विनौ देवौ मद्रराजसुता सती ।
नकुलः सहदेवश्च सुषवे वरवर्णिनि ।५१
एवं ते पांडवाः पञ्च क्षेत्रोत्पन्ना सुरात्मजाः ।
वर्षं वर्षान्तरे जाता वने तस्मिन्द्विजोत्तामः ।५२
एकस्मिन्समये पांडुर्माद्रीं दृष्ट्वाऽथ निर्जने ।
आश्रमे चातिकामार्तो जग्राहान्तकचोदितः ।५३
मा मा मेति वहुधा निषिद्धोऽपि तथा भृशम् ।
आलिग्य प्रिया दैवात्पपात धरणीतले ।५४

फिर पतिकी आज्ञा पाकर कुन्तीने धर्मराजका आह्वान् किया जिनके द्वारा प्रथमपुत्र युधिष्ठिर कीं प्राप्ति हुई।४८।दूसरी वर्ष वायुके आह्वान द्वारा भीम और तृतीय वर्ष इन्द्रके आह्वान द्वारा अर्जुनकी प्राप्ति हुई इस प्रकार प्रत्येक वर्ष एक-एक करके तीन पुत्र प्राप्त हो गये ।४६। महा राजा के अनुरोध पर दयार्द्र होकर कुन्ती ने माद्री को भी वह मन्त्रदिया और माद्री नें एक पुत्र उत्पन्न करना स्वीकार किया ।५०। तब माद्री ने अश्विनीकुमारों के आह्वान द्वारा नकुल और सहदेव नामक दो पुत्रोंको जन्म दिया ।५१। इस प्रकार पाँचो पाण्डवों की उत्पत्ति देवताओंके अंश से क्षेत्रज रूप में हुई और एक वर्ष के अन्तर से पाँचों उत्पन्न हुए ।५२। एक दिन मृत्यु के वशवर्ती हुए राजा पाण्डु एकान्त में माद्री को देखकर कामार्त्त हो उठे और माद्री के बहुत निषेध करने पर भी जैसे ही वे आलिंगन में तत्पर हुए वैसे ही शापवश उनकी मृत्यु हो गई और वह पृथ्वी पर गिर पड़े ।५३-५४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृत कौरव दर्शन

पचानां द्रौपदी भार्या सामन्या सा पतिव्रता ।
पंच पत्रास्तु तस्याः स्युभर्तृभ्योऽतीव सुन्दराः ।१
अर्जनस्य तथा भार्यां कृष्णस्य भगिनी शुभा ।
सुभद्रा या हृता पूर्व विष्णुना हरिसम्मतेः ।२
तस्या जातौ महावीरो निहतोऽसौ रणाजिरे ।
वभिमन्युहतस्तत्र द्रौपद्याश्च सुताःकिल ।३
अभिमन्योर्वरा भार्या वैराटी चातिसुन्दरी ।
कुलांते सुषुबे पुत्रं मृतो बाणाग्निना शिशुः ।४
जीवितः स तु कृष्णे न भार्गिनेयसुतः स्वयम् ।
द्रौणिवाणाग्निनिर्दग्धः प्रतापेनाद्मुतेन च ।५
परिक्षौणेषु वंशेषु जाता यस्माद्वरः सुतः ।
तस्मात्परीक्षितो नाम विख्यातः पृथिवीतले ।६
निहतेषु च पुत्रेषु धृतराष्ट्रोऽतिदुःखितः
तस्थौ पाण्डवराज्ये च भीमवाग्बाणपीड़ितः ।७
गांधारी च तथाऽतिष्ठत्पुत्रशोकातुरा भृशम् ।
सेवां तयोर्दिवारात्रं चकारार्तौ युधिष्ठिरः ।८

सूतजी बोले सामान्य रूप से उन पाँचों, पाँण्डवों की भार्यां द्रौपदी हुई । उससे अत्यन्त सुन्दर पाँच पुत्र उत्पन्न हुए ।१। भगवान् श्री कृष्ण की बहिन सुभद्रा अर्जुन की पत्नी हुई । श्रीकृष्ण की सम्मति से ही अर्जुन ने उसका अपहरण किया था।२। सुभद्रासे ही अभिमन्युकीउत्पत्ति हुई जो महाभारत युद्ध में बीर गति को प्राप्त हुए । इसी युद्धमें द्रोपदी के भी पाँचों पुत्र मारे गये ।३। अभिमन्यु की पत्नी राजा विराट् की पुत्र ने एक पुत्र उत्पन्न किया, परन्तु अश्वत्थामा ने उसे भी बाण की अग्निसे भस्मकर दिया ।४। किन्तुअश्वत्थामाकी वाणाग्निसे मृत हुएउसी बालक को भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने प्रताप से पुनर्जीवन प्रदान किया ।५। सम्पूर्ण वंश के परिक्षीण (नष्ट) होनेपर जन्म लेने के कारणही वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमण्डल में परीक्षित नाम से विख्यात हुआ ।६। अपने सौ पुत्रों की मृत्यु से अत्यन्त दुःखित हुए धृतराष्ट्र भीम के वाग्बाणों को सहन करते हुए पाण्डवों के राज्य में रहने लगे ।७। शोकाकुल गान्धारी किसी प्रकार जीवन धारण किये हुए थी और उसके दुःख से दुःखी हुए युधिष्ठिर भी उन दोनों की सेवा में तत्पर थे ।८।

संजयेन परिज्ञातो निर्गतोऽसौ महामतिः ।
पुत्रैर्निवार्यमाणोऽपि शूरसेनसुता गता ।९
विलपन्भीमसेनोऽपिं तथाऽन्ये चापि कौरवाः ।
गंगातीरात्परावृत्य ययुः सर्वे गजाह्वयम् ।१०
ते गत्वा जाह्नवीतीरे शतयूपाश्रमं शुभम् ।
कृत्वा तृणैः कुटीं तत्र तपस्तेपुः समाहिताः ।११
गतान्यब्दानि षट् तेषां यदा याता हि तापसः ।
युधिष्ठिरस्तु विरहादनुजानिदमब्रबीत् ।१२
स्वप्ने दृष्टा मया कुन्ती दुर्बला वनसंस्थिता ।
मनो मे जायते द्रष्टुं मातरं पितरौ यथा ।१३
विदुरं च महात्मानं संजयं च महामतिम् ।
रोचते यदि वः सर्वान्व्रजाम इति मे मतिः ।१४
तास्ते भ्रातरः सर्वे सुभदा द्रौपदी यथा ।
वैराटी च महाभागा तथा नागरिको जनः ।१५
प्राप्ताः सर्वे जनैः सार्धं पण्डवा दर्शनोत्सुकाः ।
शतयूपाश्रमं प्राप्य ददृशुः सर्व एव ते ।१६

फिर संजय के द्वारा गान्धारी को ज्ञात हुआ कि धृतराष्ट्र घरत्याग कर वन को जा रहे हैं, तो वह भी पुत्रों द्वारा रोकी जाने पर भी, उनके साथ वन को चली गई ।९। तब भीम और अनन्य कौरव गण दुःखी होकर रोते हुए उनके साथ-साथ गंगा तट पर गये और फिर लौट आये ।१०। धृतराष्ट्र आदि ने जाह्नवी तट के समीप शतयूप आश्रम पर जाकर पर्ण-कुटी बनाई और वहाँ रह कर तप करने लगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।११। जब उन सब को घर छोड़े छः वर्षव्यतीत होगये तब उनके विरह से दुःखित-चित्त युधिष्ठर अपने भाईयों से बोले।१२। स्वप्न में मुझे मात कुन्ती बन में रहती हुई अत्यन्त दुर्बल दिखलाई पड़ी हैं। इसीलिये मैं चाहता हूँ कि वन में जाकर अपनी माता तथा धृतराष्ट्र आदि के दर्शन करूँ ।१३। वहीं महात्मा विदुर और संजय भी संभवतः मिल जांय, इसलिए यदि तुम्हारा भी मन हो तो हम उनसे मिलने के लिये बन में चलें ।१४। तब वे सभी भाई सुभद्रा, दौपदी, उत्तरा और अन्यान्य नागरिक शतयूप आश्रम को चल दिये और वहाँ पहुँच उन्होंने सबके दर्शन किये ।१५-१६।

स्थिताआश्रमे सर्वे पांडव नागरैः सह ।
तत्र सत्यवतीसूनुर्नारदश्च समागतौ ।१७
मुनयोऽन्ये महात्मानश्चागता धर्मनन्दनम् ।
कुन्ती प्राह तदा व्यासं संस्थितं शुभदर्शनम् ।१८
कृष्ण कर्णस्तु पुत्रो मैं जातमात्रस्तु वीक्षितः ।
मनो मे तप्यते सर्वं दर्शयस्व तपोधन ।१९
समर्थोऽसि महाभाग कुरु मे वांछितं प्रभो ।
दुर्योधनो रणेऽगच्छद्वीक्षितो न मया मुने ।२०
तं दर्शय मुनिश्रेष्ठ पुत्रं मे त्वं सहानुजम् ।
अभिमन्यु महावीरं प्राणेभ्योऽप्यधिक प्रियम् ।२१
द्रष्टुं कामाऽस्मि सर्वज्ञ दर्शयाद्य तपोधन ।
एवं विधानि वाक्यानि श्रुत्वा सत्यवतीसुतः ।२२
प्राणायामं ततः कृत्वा दध्यौ देवी सनातनीम् ।
संध्याकालऽथ सप्राप्ते गगांया मुनिसत्तमः ।२३
सर्वांस्तांश्च समाहूय युधिष्ठिरपुरोगमान् ।
तुष्टाव विश्वजननीं स्नात्वा पुण्यसरिज्जले ।२४

फिर नागरिक आदि के सहित सब पाण्डव वहीं बैठ गये, तभी व्यासजीके साथ नारदजी वहाँ आगये ।१७। अनेकों अन्यान्य ऋषि मुनि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी युधिष्ठिर के पास आये और व्यासजी के आसन पर बैठते ही कुन्ती ने उनसे कहा ।१८। हे व्यासजी ! कर्ण को मैंने उसके जन्म के पश्चात् कभी नहीं देखा, इसीलिये मेरा मन उसे देखने के लिये व्याकुल है अतः आप उसे एक बार दिखादें ।१९। हे महाभाग ! आप सब समर्थ हैं, मेरी कामना पूर्ण कीजिए । तभी गांधारी ने कहा कि युद्ध क्षेत्र में जाते समय मैंने दुर्योधन को नहीं देखा इसीलिये हे मुनिश्रेष्ठ ! मुझे भी अनुज सहित दुर्योधन को दिखाइये । इस पर सुभद्रा बोली कि मुझे भी प्राणों से भी अधिक प्रिय पुत्र अभिमन्यु को देखने की इच्छा है अतः तपोधन ! हे सर्वज्ञ । मेरे पुत्रको मुझे दिखाइये। इन बातों को सुनकर व्यासजी ने प्राणायाम के द्वारा सनातनी देवी का ध्यान किया और सांयकाल के समय व्यासजी ने युधिष्ठिर आदि को गंगा पर बुलाकर पवित्र जलमें स्नान किया और जगज्जननीकी स्तुति करने लगे ।२०-२४

प्रकृति पुरुषारामां सगुणां निर्गुणां तथा ।
देवदेवीं ब्रह्मरूपां मणिद्वीपाधिवासिनीम् ।२५
यदा न वेधा न च विष्णुरीश्वरी न वासवो नैव जलाधिपस्तथा ।
न बिपत्तो नैव यमश्च पावकस्तदाऽसि देवी त्वमहं नमामि ताम्२६
जलं न वायर्न धरा न चांबरं गुणं न तेषां च न चेन्द्रियाण्यहम् ।
मनोनबुद्धिर्नचतिन्मगु शशतदाऽसिदेवित्वमहं नमामिताम् ।२७
इमं जीवलोकं समाधाय चित्ते
गुणैर्लिंगकोशं च नीत्वा समाधौ ।
स्थता कल्पकाले तपस्यात्मशक्त्या ।
न कोऽप्यस्ति वेत्ता विवेकं गतोऽपि ।२८
प्रार्थयत्येव मां लोको मृतानां दर्शनं पुनः ।
नाहं क्षमोऽस्मि मातस्त्वं दर्शयाशु जनान्मृतान् ।२९
एवं स्तुता तदा देवी माया देवी माया श्रीभुवनेश्वरी ।
स्वर्गगतान्वै सवनि दर्शयामास पार्थिवान् ।३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तदा पृष्ट् वा ययुःसर्वं पांडवा मुनयस्तथा ।
राजा नागपुरं प्राप्त कुर्वन्व्यासकाथां पथि ।३१

व्यासजी ने कहा हे देवदेवी । आप प्रकृति और पुरुष को हर्ष प्रदान करने वाली, सगुण, निर्गुण ब्रह्मस्वरूपा एवं मणिद्वीप पर अधिवास करने वालीहैं ।२५। जब ब्रह्मा,विष्णइन्द्र वरुण, यम, अग्नि आदि किसका भी अस्तित्व नहीं था, तब आप ही विद्यमान थीं, मैं ऐसी आप भगवती को नमस्कार करता हूँ ।२६। जब जल, वायु पृथ्वी आकाश और उनके गुण तथा इन्द्रियाँ, अहंकार, मन बुद्धि और रवि—शशि भी स्थित नहीं थे, तब भी आप विद्यमान थीं, ऐसी देवी को मैं नमस्कार करता हूँ ।२७। इन सब प्राणियों को जब अपने चित्त में करके आप सत्व-रज-तमादि गुणों के सहित लिंगकोष को सुषुप्ति में डालकर कल्प पर्यन्त स्वेछापूर्वक विहार करती है तब कोई भी ज्ञानी नहीं जो आपकीगति को जान सके ।२८। हे जननि ! इन सबकी इच्छा अपने मृत जनों को देखने की है, आप उन्हें इनको दिखा दीजिए, क्योंकि वैसा करने की क्षमता मुझ में नहीं है ।२९। सूतजी बोले कि इस प्रकार व्यासजी की स्तुति-सुनकर भुवनेश्वरी माया ने मरे हुए कौरव-पाण्डवों को बुलाकर उन्हे दिखा दिया ।३०। इसके पश्चात् उन तपस्वियों से विदा लेकर मार्ग में व्यासजी की चर्चा करते हुए युधिष्ठिरादि अपनी राजधानी को लौट गये ।३१।

परीक्षित को शाप

ततो दिने तृतीयेच्च धृतराष्ट्रः स भूपतिः ।
दावाग्निना वने दग्धः सभार्यः कुन्तीसखः ।१
षट्त्रिंशेऽथ गते वर्षे कौरवाणां क्षयात्पुनः ।
प्रभासे यादवाः सर्वे विप्रशापात्क्षयं गताः ।२
ते पीत्वा मदिरां मत्ताः कृत्वा युद्धं परस्परम् ।
क्षयं प्राप्ता महात्मानः पश्यतो रामकृष्णयोः ।३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देहं तत्याज रागस्तु कृष्णः कमललोचनः ।
व्याधबाणहतः शापं पालयन्भगवान्हरिः ।४
वसुदेवस्तु तच्छ्रुत्वा देहत्यागं हरेरथ ।
जहौ प्राणाञ्छुचान्कृत्वा चित्ते श्री भुवनेश्वरीम् ।५
अर्जुनस्तु ततो गत्वा प्रभासे चातिदुःखितः ।
संस्कार तत्र सर्वेषां यथायोग्यं चकार ह ।६
इन्द्रप्रस्थे समागत्य वज्रो राजा कृतस्तदा ।
अनिरुद्धसुतो नाम्ना पार्थेनामिततेजसा ।७

सूतजी बोले—पांडवों के वन से चले जाने के तीसरे दिन हीं उस वन में दावानल लगने से कुन्ती ओर गाधारी के सहित धृतराष्ट्र दग्ध होकर मर गये ।१। विप्र शाप के कारण सब यादवों का भी विनाश हो गया ।२। तब बलराम ने योगबल से अपना देह-त्याग कर दिया और भगवान श्रीकृष्ण ने आहत होकर शरीर छोड़ दिया ।३-४। वसुदेवजी जब यह समाचार सुना—तो उन्होंने भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करते हुए अपने प्राण त्याग दिये ।५। इससे अर्जुन बड़े दुःखी हुए। उन्होंने प्रभास क्षेत्र जाकर यादवों का यथा योग्य मृतक कर्म कराया ।६ फिर इन्द्रप्रस्थ पहुँचकर अर्जुन ने अनिरुद्ध के पुत्र वज्रको यदुकुल का राजा घोषित किया ।७।

दुःखितो धर्मराजनं वृत्तान्तं सर्वमब्रवीत् ।
देहत्यागं हरेः श्रुत्वा यादबानां क्षयं तथा ।८
गमनाय मतिं चक्रे राजा हैमाचलं प्रति ।
षट्त्रिंद्वार्षिकं राज्ये स्थापयित्वोत्तरासुतम् ।९
निर्जगाम वनं राजा द्रौपद्या भ्रातृभिः सह ।
षट्त्रिंशच्चैव वर्षाणि कृत्वा राज्य गजाह्वये ।१०
गत्वा हिमाचले षट् ते जहुः प्राणान्पृथासुताः ।
परीक्षिदपि राजर्षिः प्रजाः सर्वाः सुधार्मिकः ।११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपालयच्च राजेन्द्रः षष्टिवर्षाण्यतन्द्रितः ।
बभूव मृगयाशीलो जगाम च वनं महत् ।१२
विद्धं मृगं विचिन्वासो मध्याह्ने भूपतिः स्वयम् ।
तृषितश्च परिश्रान्तः क्षुधितश्चोत्तरासुतः ।१३
राजा धर्मेण संतप्तो ददर्श मुनिमन्तिके ।
ध्याने स्थितं मुनिं राजा जल पप्रच्छ चातुरः ॥१४

यादवों के नाश और श्रीकृष्ण के देह-त्याग का समाचार सुनकर युधिष्ठिर को बड़ा दुःख हुआ ।८। फिर उन्होंने हिमालय में जाने का निश्चय कर उतरा के छत्तीस वर्षीय पुत्र परीक्षित को अपने राज्य पर स्थापित किया ।९। इस प्रकार हस्तिनापुर में छत्तीस वर्ष राज्य करने के उपरान्त युधिष्ठिर अपने सब भाइयों और द्रोपदी सहित वनको चल दिये ।१०। हिमालय में जाकर उन सबने प्राण त्याग दिये। इधर परीक्षित ने भी अत्यन्त धार्मिक रहकर साठ वर्ष तक अपनी प्रजा का भले प्रकार पालन किया और फिर मृगया के लिए वन में गये ।११। ।१२। वहाँ उन्होंने एक मृग देखकर उसे बाण का लक्ष्य किया। परन्तु मृग कहीं भाग गया। उसे खोजते-खोजते मध्याह्न हो गया। राजाको भूख प्यास सताने लगी ।१३। धूप से त्रस्त राजा ने समीप ही एक मुनि को ध्यान मग्न बैठे देखा तो उनके पास जाकर जल की याचना की ।१४।

नोवाच किंचिन्मौनस्थश्चुकोप नृपतिस्तदा ।
मृतं सर्पंतदाऽऽदाय धनुष्कोट्या तृषातुरः ।१५
न चचाल समाधिस्थो राजाऽपि स्वगृहं गतः ।
तस्य पुत्रोऽतितेजस्वी गविजातो महातपाः ।१६
महाशक्तोऽथ शुश्राव क्रीडमानो वनांतिके ।
मित्राण्याहुश्च तत्पुत्रं पितुः कण्ठे तवाधुना ।१७
लंभितोऽस्ति मृतः सर्पः केनापीति मुनीश्वर ।
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा चुकोपातिशयं तदा ।१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शशाप नृपतिं क्रुद्धो गृहीत्वाऽऽशु करे जलम् ।
पितुः कण्ठेऽद्य मे येन विनिक्षिप्तो मृतोरगः ।१९
तक्षकः सप्तरात्रेण तं दशेत्पापपूरुषम् ।
मुने शिष्योऽथ राजानं समुपेत्य गृहे स्थितम् ।२०
शापं निवेदयामास मुनिपुत्रेण चार्षिम् ।
अभिमन्युसुतः श्रुत्वा शापं दत्तं द्विजेन वै ।२१

परन्तु मुनि के द्वारा कोई उत्तर न पाकर राजा अत्यन्त क्रोधित हुए और उन्होंने अपने धनुष की नोक से एक मृत नाग उठाकर मुनिके कण्ठमें डाल दिया ।१५। मुनि फिर भी समाधि में लीन रहे यह देखकर राजा अपने घर लौट गये। उन मुनिका पुत्र गविजात अत्यन्त तेजस्वी एवं महान तपस्वी था ।१६। यह शक्ति का परम उपासक गविजात सनीपस्थ वन में खेल रहा था, तभी उसके मित्रों ने बताया कि किसी ने तुम्हारे पिता के कण्ठ में मृत सर्प डाल दिया हैं यह सुनकर गविजात अत्यन्त क्रोधित हो उठे ।१७-१८। उन्होंने हाथमें जल लेकर शाप दिया कि जिस पापी ने मेरे पिता के कण्ठः में मृत सर्प डाला है उसे सात रात्रि त्यतीत होने पर तक्षक डस लेगा। शाप का समाचार सुनकर राजा को वड़ी चिन्ता हुई ।१९-२१।

अनिवार्यं च विज्ञाय मन्त्रवृद्धानुवाच ह ।
शप्तोदं द्विजरूपेण मम द्वेषादसंशयम् ।२२
किं विधेयं मयाऽमात्या उपायश्चित्यंतामिह ।
मृत्युः किलानिवार्योऽसौ वदन्ति वेदवादिनः ।२३
मणिमन्त्रौषधीभिश्च विधिवत्प्राणरक्षणे ।
इत्युक्त्वा सचिवान् राजा कल्पयित्वा सुरक्षकान् ।२४
कारयित्वाऽथ प्रासादं सप्तभूमिकमुत्तम् ।
आरुरोहोत्तरासूनुः सचिवैः सह तत्क्षणम् ।२५
मणिमन्त्रधराः शूराः स्थापितास्तत्र रक्षणे ।
प्रेषयायामास भूपालो मुनिं गौरमुखं ततः ।२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसीदार्य सेवकस्य क्षमस्वेति पुनः पुनः ।
ब्राह्मणान्सिद्धमन्त्रज्ञान् रक्षाणार्थमितस्ततः ।२७

उस शाप के परिणाम को अनिवार्य समझ कर राजा ने अपने वृद्ध मन्त्रियों से कहा कि हे मन्त्रिगण ! इसमें सन्देह नहीं कि उस द्विज ने मेरे ही अपराध के कारण मुझे शाप दिया है ।२२। अब इस विषय में आप लोग कोई उचित उपाय सोचे, क्योंकि वेदवादी गण कहते हैं कि इस प्रकारसे मृत्यु अनिवार्य होती है।२३। मणि, मन्त्र एवं औषधिआदि किसी भी विधि से प्राण रक्षा होनी चाहिए । यह कहकर राजाने श्रेष्ठ रक्षकों की व्यवस्था की ।२४। इस प्रकार राजा ने सात खण्डों का एक भवन निर्माण कराया और अपने मन्त्रियो महित वे उसके ऊपर चढ़ गये ।२५। उस भवन की रक्षा के लिये तुरन्त ही मणि मन्त्र धारी शूर तैनात कर दिये फिर उन्होने गोरमुख नामक मुनि को गविजातके पास भेजकर निवेदन कराया कि मुझ सेवक से जो अपराध हुआ है उसे क्षमा करदे । इधर मन्त्र-सिद्धि के ज्ञानी विशेषज्ञों को बुला रक्षा कार्य करने को नियुक्त किया ।२६-२७।

तस्मिन्नेव दिने नाम्ना तक्षकस्तं नृपोत्तमम् ।
शप्तं ज्ञात्वा गृहात्तूर्ण निःसृतः पुरुषोत्तमः ।२८
शुश्राव नगरस्यांते प्रासादस्थं परीक्षितम् ।
मणिमन्त्रोषधैः कामं रक्ष्यमाणमतंद्रितम् ।२९
चिन्ताविष्टस्तदा नागो विप्रशापभयाकुलः ।
चिंतयामास योगेन प्रविशेयं गृहं कथम् ।३०
इति संचित्य सर्पोऽसौ स्वान्नागान्निकटे स्थितान् ।
कृत्वा तापसवेशांस्तान्प्राहिणोत्सुभुजङ्गमान् ।३१
फलमूलादिकं गृह्य राज्ञे नागोऽथ तक्षकः ।
स्वयं च कीटरूपेण फलमध्ये संसाह ।३२
निर्गतास्ते तदा नागाः फलान्यादाय सत्वराः ।
ते राजभवनं प्राप्य स्थिताः प्रसाद सन्निधौ ।३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्षकास्तापसान्दृष्ट्वा पप्रच्छुस्तच्चिकीर्षितम् ।
ऊचुस्ते भूपतिं द्रष्टुं प्राप्ताः स्मोऽद्य तपोवनात् ।३४

सूतजी बोले उस दिन तक्षक नाग को परीक्षित को दिये जाने वाले शाप की बात ज्ञात हुई तब वह मनुष्य रूप में अपने घर से चल दिया ।२८। नगर में पहुँचकर उसने सुना कि मणि और औषधि से भले प्रकार सुरक्षित भवन में महाराज का निवास है ।२९। तब सोचने लगा इस सुरक्षित भवनमें मैं किस प्रकार प्रवेश करूँ।३०। सोचते हुए तक्षक ने अपने साथी सर्पों को मुनि-वेश में राजा के पास भेजने का विचार किया ।३१। इसके अनुसार उसके साथी सर्प तपस्वी का वेश रखकर राजा को भेंट देने के लिए फल फूल लेकर चले । उन्हीं फलों के मध्य एक छोटे से कीड़े का रूप धारण कर तक्षक भी गुस गया ।३२। उन फल-फूलों को हाथ से लिए हुए तपस्वी वेशधारी नागराज भवन के सामने जाकर खड़े हुए ।३३। जब रक्षकोंने उनके आने का कारण पूछा तब वे बोले कि हम तपोवन से महाराज के दर्शनार्थ आये है ।३४।

इत्याकर्ण्य वचस्तेषां तापसानां तु रक्षकाः ।
प्रत्युचुस्तान् द्विजान्मत्वा निदेशं भूपतेर्यथा ।३५
नाद्य वो दर्शनं विप्रा राज्ञःस्यादिति नो मतिः ।
श्वः सर्वतापसैरत्र त्वागंतव्यं नृपालये ।३६
अनारोह्यस्तु प्रासादो विप्राणां मुनिसत्तमाः ।
विप्रशापभयाद्राज्ञा विहितोऽस्ति न संशयः ।३७
तदोचुस्तानथ विप्राः फलमूलजलानि च ।
विप्राशिषश्च राज्ञेऽथ ग्राह्यं तु सुरक्षकाः ।३८
ते गत्वा नृपतिं प्रोचुस्तापसानागताञ्जनान् ।
पृच्छध्वं तापसान्कार्यं प्रातरागमनं पुनः ।३९
प्रणामं कथयध्वं मे नाद्यवैदर्शनं मम ।४०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते गत्वाऽथ समादाय फलमूलादिकं च यत् ।
राज्ञे समर्पयामासुर्बहुमानपुरः सरा ।४१

सूतजी बोले-उनकी बात सुनकर उन रक्षकों ने राजाज्ञा सुनातेहुए कहा कि महाराज के दर्शन आज नहीं हो सकते अतः आप कल राज्य सभा में पधारे ।३५-३६। हे मुनिश्रेष्ठ ! विप्र के शाप के भयसे महाराज ने इस भवन से ब्राह्मणों का प्रवेश वर्जित कर रखा है ।३७। तब उन तपस्वियों ने कहा कि यदि हम नहीं जा सकते तो आप ही हमारे इस फल फूल और मन्त्राभिषक्त जल को महाराज को देते हुए उनसे हमारा आशीर्वाद कह दे ।३८। यह सुनकर रक्षको ने राजा के पास जाकर तपस्वियों के आने की बात कहते हुए इनका विचार व्यक्तकिया तब राजा ने फल मूलादि ले लेने का आदेश दिया और कहा कि उनका कार्य पूछते हुए उनसे कल आने का कहना और मेरा प्रणाम कहकर कहना कि उनसे आज भेंट नहीं हो सकेगी ।३९-४०। राजा के आदेशानुसार रक्षकों ने तपस्वियों से फल-मूलादि लेकर राजा को दिये ।४१।

गतेषु तेषु नागेषु विप्रवेशावृतेषु च ।
फलान्यादाया राजाऽसौ सचिवानिदमब्रवीत् ।४२
सुहृदो भक्षयं त्वद्य फलान्येतानि सर्वशः ।
अद्याहं चैकमेतद्वै भलं विप्रार्पितं महत् ।४३
इत्युक्त्वा तत्फलं दत्वा सुहृद्भ्यश्चोत्तर सुतः ।
करे कृत्वा फलं पक्वं ददार नृपतिः स्वयम् ।४४
विदारितं फलं राज्ञा तत्र कृमिरभूदणुः ।
स कृष्णानयस्ताम्रो दृष्टो भूपतिना स्वयम् ।४५
अस्त याते दिवानाथे घृतः कण्ठेऽथ कीटकः ।
तक्षकस्तु तदा जातः कालरूपो भयानकः ।४६
राजा सवेष्टिस्तेन दष्टश्चापि महीपतिः ।
मन्त्रिणो विस्मयं प्राता रुरुदुर्दशदुःखिताः ।४७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृत्वाऽऽशु जीवितं राज्ञस्तक्षको गगनं गतः ।
जगद्दग्धं तु कुर्वाणं ददृशुस्तं जना इह ।४८

उन तपस्वियों के जाने के बाद राजा ने फलोंको लेकर मन्त्रियोंसे कहा कि हे सुहृदगण ! इन फलों को आप खाइये । मैं ब्राह्मणों द्वारा भेंट किये हुए इस बड़े फल को खाऊँगा।४२-४३। यह कर राजाने सब फल बाँट दिये और बड़ें फल को लेकर अपने हाथ से काटा ।४४। फल के चीरते ही उसमें एक बहुत सूक्ष्म कीट राजा को दिखाई दिया ।४५। सूर्य के अस्त होने का समय था यह क्रीड़ा कण्ठ पर स्थित होकर भयकर काल बन गया ।४६। उसने अपना विकराल रूप प्रकट किया और महाराज को सब ओर जकड़ कर काट खाया । यह देखकर मन्त्रिगण घोर विस्मय में पड़कर रोने लगे ।४७। इस प्रकार क्षणभर में ही राजा के प्राण लेकर वह तक्षक सर्व गगन मण्डल में चला गया । उपस्थित व्यक्तियों ने देखा कि वह सर्प सम्पूर्ण संसार को भस्म करने में समर्थ था ।४८।

जनमेजय का सर्पयज्ञ

गतप्राणं तु राजानं बालं पुत्रं समीक्ष्य च ।
चक्रुश्च मन्त्रिणः सर्वे परलोकस्य सत्क्रियाः ।१
सुमुहूर्ते सुतं बाल प्रजानां प्रीतिवर्धनम् ।२
धनुर्वेदं कृपः पूर्ण ददावस्मै सुसंस्कृतम् ।
अर्जुनाय यथा द्रोणः कर्णाय भार्गवो यथा ॥३
समाप्तविद्यो बलवान्बभूव दुरतिक्रमः ।
धनुर्वेदे तथा वेदे पारगः परमार्थ वित् ।४
धर्मशास्त्रार्थ कुशलः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
चकार राज्यं धर्मात्मा पुरो धर्मसुतौ यथा ।५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत सुवर्णवर्मास्यो राजा काशिपतिः किल ।
वपुष्टमां शुभां कन्यां ददौ पारीक्षिताय च ।६
मन्त्रिणः कर्मकुशलाश्चक्रुः कार्याणि सर्वथा ।
एतस्मिन्नेव काले तु मुनिरुत्तं कनामकः ।७
तक्षकेण परिक्लिष्टो हस्तिनापुरमभ्यगात् ।
वैरस्यापचितिं कोऽस्य प्रकुर्यादिति चिन्तयन् ।८

सूतजी बोले—महाराज परीक्षित के प्राणहीन होने पर मन्त्रियोंने उनका परलोक-कर्म किया ।१। फिर शुभ मुहूर्त देखकर प्रजा में प्रीति वृद्धि करने वाले राजपुत्र जनमेजय को मन्त्रियोंने श्रेष्ठ राज्य सिंहासन पर बैठाया ।२। कृपाचार्य ने उनको धनुर्वेद में उसी प्रकार पारंगतकिया जैसे कि द्रोणाचार्य ने अर्जुन को एवं परशुराम ने कर्ण को किया था।३ इस प्रकार धनुर्वेद और वेद में पारंगत होकर राजा जनमेजय महाबली एवं अजेय हो गये ।४। इस प्रकारवे धर्मशास्त्रों के ज्ञाता एवं जितेन्द्रिय रहकर धर्मात्मा युधिष्ठिर के समान राज्य करने लगे ।५। फिर काशी राज सुवर्ण वर्माने अपनी सुन्दर कन्या वपुष्टमा का विवाह उनके साथ कर दिया।६। राजकाजमें चतुर उनके मन्त्रिगण भी सब कार्योंको सुचारु रूप से चला रहे थे । इसी समय उतंक नामक एक मुनि तक्षक सर्प द्वारा क्लेश पाकर हस्तिनापुर पहुँचे । वे मुनि यह सोच रहे थे कि तक्षक से वैर का प्रतिशोध कैसे लिया जाय ।७-८।

परीक्षितसुतं मत्वा तं नृपं समुपागतः ।
कार्याकार्यं न जानासि समये नृपसत्तम ।९
अकर्तव्यं करोष्यद्य कर्त्तव्यं न करोषि वै ।
किं त्वां संप्रार्थयाम्यद्य गतामर्षं निरुद्यमम् ।१०
अवैरज्ञमतंत्रज्ञं बालचेष्टासमन्वितम् ।
किं वैरं न मया ज्ञातं न किंप्रतिकृतं मया ।११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तद्वद त्वं महाभाग करोमि यदनंतरम् ।
पिता ते निहतो भूप तक्षकेन दुरात्मना ।१२
विमन्युर्भरतश्रेष्ठ पितृघातकेषु वै ।
अन्तरिक्षे मृतस्तातः स्नानदानविवर्जितः ।१३
तस्योद्धारं च राजेन्द्र कुरु हत्वाऽथ पन्नगान् ।
पितुर्वैरंन जानाति जीवन्नेव मृतो हि सः ।१४
दुर्गतिस्ते पितुस्तावद्यावत्तान्न हविष्यसि ।
अम्बासखमिषं कृत्वा कुरु यज्ञं नृपोत्तम ।१५
सर्पसत्रं महाराज पितुर्वैरमनुस्मरन् ।
इति तस्य वचः श्रुत्वा राजा जनमेजयस्तदा ।१६
नेत्राभ्यामश्रुपातं च चकारातीवदुःखितः ।
धिङ्मामस्तु दुर्बुद्धेर्वृथा मामकस्य वै ।१७

यह सोचकर राजा से बोले-हे राजन ! आप नही जानते कि क्या कार्य है और क्या अकार्य ।९। कर्तव्य को न करके, न करने योग्य कर्म करते हो; आप में न रोष है ओर न उद्यम ही ।१०। आप बालकों जैसी चेष्टा करते हैं बैरी के प्रति क्या करना चाहिए, यह भी नहीं जानते । इस पर जनमेजय ने पूछा कि मेरे द्वारा किस बैर का प्रतिकार नहीं हुआ, यह मुझे मालूम नही हैं ।११। हे महाभाग ! आप मुझे बताएँ तो मैं उसे करूं । इस पर उत्तङ्क ने उन्हें बताया कि तुम्हारे पिता को तक्षक ने डसा था ।१२। हे भरतश्रेष्ठ ! तुम अपने पितृघाती पर रोष नहीं करते । तुम्हारे पिता विना स्नान एवं दान किये ही अन्तरिक्ष में मृत हुए हैं ।१३। हे राजेन्द्र ! तुम सर्पों को नष्ट करके अपने पिता का उद्धार करो । जो अपने पिताके शत्रु से प्रतिशोध नहीं लेता, वह मनुष्य मृतक के समान है ।१४। जब तक तुम अपने पिता के हत्यारे सर्पों का विनाश नहीं करोगे तब तक तुम्हारा पिता दुर्गति से मुक्त नहीं हो सकते । इसलिए तुम अम्बामुक नामक यज्ञ करो ।१५। इस प्रकार बैरी का स्मरण करते हुए सर्पयज्ञ करो । उत्तंक मुनि के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वचन सुनकर राजा बड़े दुःखी हुए। उनके नेत्रों से आँसू बहने लगे। वे बोले कि मुझ मिथ्याभिमानी बुद्धिहीन को धिक्कार है।१६-१७।

पिता यस्य गतिं घोरां प्राप्तः पन्नगपीडितः।
अद्याहं मखमारभ्य करोम्यपचितिं पितुः।१८
हत्वा सर्पानसंदिग्धं दीप्यमाने विभावसौ।
आहूय मन्त्रिणः सर्वान्राजा वचनमब्रवीत्॥१९
कुर्वन्तु यज्ञसंभारं यथार्हं मन्त्रिसत्तमाः।
गङ्गातीरे शुभां भूमिं मापयित्वा द्विजोत्तमैः।२०
शीघ्रमाहूयतां विप्राः सर्वज्ञा वेदपारगाः।
मन्त्रिणस्तु तदा चक्रुर्भूपवाक्यैर्विचक्षणाः।२१
यज्ञस्य सर्वसंभारं वेदीं यज्ञस्य विस्तृताम्।
हवने वर्तमाने तु सर्पाणां तक्षको गतः॥२२
इन्द्रं प्रति भयार्तोऽहं त्राहि मामिति चाब्रवीत्।
भयभीतं समाश्वास्य स्वासने सन्निवेश्य च।२३
ददावभयमत्यर्थं निर्भयो भव पन्नग।
तमिन्द्रशरणं ज्ञात्वा मुनिर्दत्ताभयं तथा।२४

जिसके पिता की सर्प द्वारा यह दुर्गति हुई, इसलिये सर्प-यज्ञ द्वारा मैं बदला लूँगा।१८। सर्पयज्ञ की अग्नि में सब सर्प भस्म हो जायेंगे, इसमें शंका नहीं है। यह सोचकर राजा ने मन्त्रियों को बुलाकर कहा।१९। हे श्रेष्ठ मन्त्रिगण! गङ्गा किनारे की पवित्र भूमि को नापकर वहाँ यज्ञ की तैयार करो।२०। फिर शीघ्र ही सर्वज्ञ एवं वेद के पारंगत विप्रों को बुला लो। यह सुनकर मन्त्रि गण यज्ञ की तैयारी करने लगे।२१। यज्ञ की तैयारी पूर्ण होने पर विस्तृत वेदी बनाई गयी और यज्ञ का आरम्भ हुआ। यह देखकर तक्षक भागकर इन्द्र की शरण में गया और बोला मेरी रक्षा करिये। तब इन्द्र ने उसे आश्वासन दिया।२२-२३। इन्द्र ने तक्षक को अभय देते हुए कहा कि डरो मत। यह बात उत्तंक को ज्ञात हो गइ।२४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तंकोऽह्वयदुद्विग्नः सैन्द्रं कृत्वा निमंत्रणम् ।
स्मृतस्तदा तक्षकेण यायावरकमलोदभवः ।२५
आस्तीको नाम धर्मात्मा जरत्कारुसुतो मुनिः ।
तत्रागत्य मुनेर्बालिस्तुष्टाव जनमेजयम् ।२६
राजा तु मर्चयामास दृष्ट्वा बालं सुपण्डितम् ।
अर्चयित्वा नृपस्तं तु छेदयामास वांछितैः ।२७
स तु बव्रे महाभागो यज्ञोऽयं विरमत्विति ।
सत्यबद्धो नृपस्तेन प्रार्थितश्च पुनस्तथा ।२८
होमं निवर्तयामास सर्पाणां मुनिवाक्यतः ।
भारतं श्रावयामास वैशम्पायन विस्तरात् ।२९
श्रुत्वाऽपि नृपति काम न शांतिमभिजग्मिवान् ।
व्यासं पप्रच्छ भूपालो मम शांतिः कथं भवेत् ।३०
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य व्यास सत्यवतीसुतः ।
उवाच वचनं तत्र सभायां नृपतिश्चतम् ।३१

इससे उत्तंक उद्विग्न हो गये और उन्होंने इन्द्र के सहित तक्षकका आह्वान किया । यह देखकर तक्षक ने अपने भानजे आस्तकी मुनि का स्मरण किया । वे महर्षि जरत्कारु के पुत्र थे । उन बाल मुनि ने यज्ञ-शालामें पहुँचकर जनमेजय की स्तुति की ।२५-२६। उन बालक रूपी श्रेष्ठ पण्डित को देखकर राजा ने उनका पूजन किया और इच्छित वस्तु माँगने को कहा ।२७। तब उन बाल मुनि ने याचना की कि इस यज्ञ को मत कीजिये । इस प्रकार का अनुरोध उन्होंने सत्य में बँधे हुये राजा से पुनः किया ।२८। तब उनके अनुरोध को मानकर राजा ने सर्प-यज्ञ बन्द कर दिया । फिर वैशम्पायन ने राजा को विस्तार से महाभारत का इतिहास सुनाया ।२९। जब उसे सुनकर भी राजा के मन को शान्ति नही हुई, तब उन्होंने व्यासजी से पूछा कि मेरा मन किस प्रकार शान्त हो ? ।३०। सूतजी बोले-जनमेजय की बात सुनकर व्यासजी ने उस राज्य-सभा में स्थित राजा से इस प्रकार कहा ।३१।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि पुराणं गुह्यमद्भुतम् ।
पुण्यं भागवतं नाम नानाख्यानयुतं शिवम् ।३२
अध्यापितं मया पूर्वं शुकायात्मसुताय वै ।
श्रावयामि नृप त्वां हि रहस्य परम मम ।३३
धर्मार्थकाममोक्षाणां करणं श्रवणात्किल ।
शुभद सुखदं नित्थं सर्वागमसमुद्धतम् ।३४
भव्यं कृतं महाराज मानितोऽयं त्वया मुनिः ।
यायावरकुलोत्पन्नो वासुकेर्भगिनीसुतः ।३५
स्वस्ति तेऽस्तु महाबाहो भारतं सकलं श्रुतम् ।
दानानि बहु दत्तानि पूजिता मुनयस्तथा ।३६
कृतेन सुकृतेनापि न पिता स्वर्गतिं गतः ।
पावितं न कुल कृत्स्नं त्वया नृपतिसत्तम ।३७
देव्याश्चायतनं भूप विस्तीर्ण कुरु भक्तितः ।
येन वै सकला सिद्धिस्तव स्याज्जनमेजय ।३८
पूजिता परमा भक्त्या शिवा सकलदा सदा ।
कुलवृद्धि करोत्येव राज्यं च सुस्थिरं सदा ।३९

व्यासजी बोले कि हे राजन् ! मैं तुम्हे एक गुप्त एवं अद्भुत पुराण सुनाऊँगा । वह अनेक कल्याणकारी आख्यानों से परिपूर्ण है । उसका नाम भागवत है ।३२। पहिले मैं उसे अपने पुत्र शुकदेवको पढ़ा चुका हूँ, वही परम रहस्य मैं तुम्हें सुनाता हूँ ।३३। इसके श्रवण से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है । यह सभी आगमों का सार एवं सुख देने वाला है ।३४। हे महाराज ! आपने यायावर कुलोत्पन्न उस मुनि की बात मानकर बड़ा उत्तम कार्य किया है ।३५। आपने सम्पूर्ण महाभारत सुना,बहुत से दान दिये और मुनियोंका पूजन किया, इससे आपका कल्याण होगा ।३६। किन्तु आपका वंश पवित्र न हो सका, तो आप भक्ति भाव पूर्वक देवी का मन्दिर बनाइये । हे जनमेजय ! ऐसा करने पर आपको सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जायेंगी ।३७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३८। परम भक्ति के साथ यदि पूजन करे तो इच्छाओं को पूर्ण करने वाली भगवती कुल-बृद्धि करेंगी ।३९।

देवीमखं विधानेन कृत्वा पार्थिवसत्तम ।
श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं परमं शृणु ।४०
त्वामहं श्रावयिष्यामि कथां परमपावनीम् ।
संसारतारिणी दिव्यां नानारससमाहृताम् ।४१
न श्रौतव्यं परं चास्मात्पुराणाद्विद्यते भुवि ।
नाराध्यं विद्यते राजन्देवीपादाम्बुजादृते ।४२
ते सभाग्याः कृतप्रज्ञा धन्यास्तु नृपसत्तम ।
येषां चित्ते सदा देवी वसति प्रेमसंकुले ।४३
सुदुःखितास्तु दृश्यन्ते भुवि भारत भारते ।
नाराधिता महामाया यैर्जनैश्च सदाऽम्बिका ।४४
ब्रह्मादयः सुराः सर्वे यदाराधनतत्पराः ।
वर्तन्ते सर्वदा राजस्तां न सेवेत को जनः ।४५
य इदं शृणुयान्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
भगवत्या समाख्यातं विष्णवे यदनुत्तमम् ।४६
तेन श्रुतेन ते राजंश्चित्ते शांतिर्भविष्यति ।
पितृणां चाक्षयः स्वर्ग पुराणश्रवणाद्भवेत् ।४७

हे नृपोत्तम ! अब विधि पूर्वक देवी का यज्ञ करो और देवी भागवत नामक पुराण का श्रवण करो ।४०। इस परम पावनी, संसार से उद्धार करने वाली, दिव्य और विधि रसो से युक्त कथा को स्वयं ही सुनाऊँगा ।४१। हे राजन् ! देवी के चरण कमलों के समान आराधनीय भी अन्य कुछ नहीं है ।४२। हे राजन् ! जिनके प्रेमयुक्त हृदय में भगवती का निवास है वे मनुष्य ही भाग्यवान्-ज्ञानी एवं धन्य हैं, ।४३। इस भारत भूमि में जिन प्राणियों ने महामाया अम्बिका का आराधन नहीं किया, वे सदा दुःख उठाते हैं ।४४। हे राजन्! ब्रह्मादि सभी देवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिनके आराधना में तत्पर रहते हैं, उन देवी को भला कौन न मनायेगा ? ।४५। स्वयं देवो ने जो महापुराण भगवान् विष्णु को सुनाया, उसे नित्य प्रति पढ़ने-सुनने से सभी अभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं ।४६। हे राजन् इस पुराण के श्रवण करने से आपके चित्तको शान्ति प्राप्त होगी और आपके पिता भीं अक्षय स्वर्ग का लाभ प्राप्त करेंगे ।४७।

भुवनेश्वरी-निर्णय

भगवन्नादितः प्रोक्तं यज्ञपूजादिकं महत् ।
सा का कथं समुत्पन्ना कुत्र कस्माच्च किंगुणा ।१
कीदृशश्च मखस्तस्याः स्वरूपं कीदृशं तथा ।
विधानं विधिवद्ब्रूहि सर्वज्ञोऽसि दयानिधे ।२
ब्रह्माण्डस्य तथोत्पत्तिवद विस्तरतस्तथा ।
यथोक्तां यादृशं ब्रह्मन्नखिलं वेत्सि भूसुरे ।३
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च त्रयो देवा मया श्रुताः ।
सृष्टिपालनसंहारकाराः सगुणास्त्वमी ।४
स्वतंत्रास्ते महात्मानः पराशर्य वदस्व मे ।
आहोस्वित्परतंत्रास्ते श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ।५
मृत्युधर्माश्च ते नो वा सच्चिदानन्दरूपिणः ।
कालस्य वशगा नो वा ते सुरेन्द्र महाबलाः ।
कथं ते समुत्पन्नाः कस्मादिति च संशयः ।६
हर्षशोकयुतास्ते वै निद्रालस्यसमन्विताः ।७

जनमेजय ने कहा—हे भगवन् ! आपने देवी के पूजन और यज्ञादिके विषय में कहा है, वे देवेश्वरी कौन हैं? उनकी उत्पत्ति कहाँ और किस प्रकार हुई, उनमें कौन सा गुण है? ।१। उनका यज्ञ करने की विधि क्या है ? उस यज्ञ का क्या स्वरूप है ? आप सर्वज्ञ हैं, इसलिए उनका पूर्ण विधान कहने की कृपा करें ।२। हे भूसुर ! उनके साथ ही ब्रह्माण्ड की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊत्पत्ति के विषय में भी कहिये, क्योंकि आप इन विषयों से भी अवगत हैं ।३। ब्रह्मा विष्णु महेश यह तीनों सगुण हैं तथा क्रमश संसार की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं ।४। परन्तु हे पाराशर्य ! वे तीनों स्वतन्त्र हैं अथवा परतन्त्र, इसे जानने की मेरी अत्यन्त जिज्ञासा है ।५। यह तीनों मरणधर्मा हैं अथवा इन दुःखों से परे है ? यह अधिदेव और अध्यात्म से युक्त हैं अथवा इन दुःखों से परे है ? ।६। यह कालके वशीभूत हैं या नहीं ? इनकी उत्पत्ति किस प्रकार और क्यों हुई ? यह भी जिज्ञासा है । यह हर्ष, शोक, निद्रा और आलस्य से प्रभावित हैं या नहीं ? ।७।

सप्तधातुमयास्तेषां देहाः किं वान्यथा मुने ।८
कैर्द्रव्यैर्निर्मितास्ते वै गुणैरिंद्रियैस्तथा ।
भोगश्च कींदृशस्तेषां प्रमाणमायुषस्तथा ।९
निवासस्थानमप्येषां ब्रह्मन्विस्तरेण वद ।१०
दुर्गमः प्रश्नभारोऽयं कृतो राजंस्त्वयाऽधुना ।
ब्रह्मादीनां समुत्पत्तिः कस्मादिति महामते ।११
एतदेव मया पुत्र पृष्टोऽसौ नारदो मुनिः ।
विस्मितः प्रत्युवाचेदमुत्थितः शृणु भूपते ।१२
कस्मिंश्चत्समये चाह गङ्गातीरे स्थितं मुनिम् ।
अपश्यं नारदं शांतं सर्वज्ञ वेदवित्तमम् ।१३
दृष्ट्वाहं मुदितो भूत्वा पादयोरपतं मुनेः ।
तेनाज्ञप्तः सामीप्ये संविष्टश्च वरानने ।१४

इनके देह सप्तधातु से बनेहैं या नहीं ? यह किन द्रव्यों से बने हैं ?८ इनमें सत्व, रज, तम, में से किस-किस गुण की प्रधानता है ? ।९।उनके निवास स्थान और विभूतियों के विषय में भी कहिये । इस कथा को विस्तार पूर्वक सुनने की मेरी इच्छा है ।१०। व्यासजी बोले—हे राजन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके प्रश्न दुर्गम है। ब्रह्मादि देवताओं की उत्पत्ति आदि बताना बड़ा कठिन कार्य है।११। प्राचीन काल की बात है, मैंने भी नारद जी से ऐसा प्रश्न किया था। उससे विस्मित हुए नारदजी ने उत्तर दिया, वही कह रहा हूँ।१२। एक समय मैंने गङ्गाजी के तट पर उन वेदज्ञों में श्रेष्ठ नारद जी को बैठे हुए देखा।१३। तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और मैं उनके चरणो में गिर गया तथा उनके आदेशपर एक समीपस्थ आसन पर जा बैठा।१४।

श्रुत्वा कुशलवार्तां वै तमपृच्छं विधेः सुतम्।
निविष्टं जाह्नवीतीरे निर्जने सूक्ष्मवालुके।१५
मुनेऽतिविततस्यास्य ब्रह्मांडस्य महामते।
कः कर्ता परमः प्रोक्तस्तन्मे ब्रूहि विधानतः।१६
कस्मादेतत्समुत्पन्नं ब्रह्मांडं मुनिसत्तम।
अनित्यं वा तथा नित्यं तदाचक्ष्व द्विजोत्तम।१७
अकर्तृकमेतद्वा बहुकर्तृकमन्यथा।
अकर्तृकं न कार्यं स्याद्विरोधोऽयं विभाति मे।१८
इति सन्देह संदोहे मग्नं मां तारयाधुना।
विकल्पकोटीः कुर्वाणः संसारेऽस्मिन् प्रविस्तरे।१९
ब्रुवन्ति शंकरं केचिन्मत्वा कारणकारणम्।
सदाशिवं महादेवं प्रलयोत्पत्तिवर्जितम्।२०
आत्मारामं सुरेशं च त्रिगुणं निर्मलं हरम्।
संसारतारनिष्पंकं सृष्टिस्थित्यन्तकारणम्।२१

कुशल वार्ता होने के उपरान्त सूक्ष्म वालू युक्त उस गङ्गातट पर बैठे हुए नारदजी से मैंने प्रश्न किया कि हे ब्रह्मन्! इस ब्रह्माण्ड के प्रमुख रचयिता है, यह आप मेरे प्रति कहने की कृपा करें।१५-१६। हे मुनिश्रेष्ठ! ब्रह्माण्ड को किसने रचा यह बताने के साथ, यह नित्य है अथवा अनित्य, यह भी कहिये।१७। इसे किसी एक ने रचा है या अनेक ने? क्योंकि कर्त्ता के बिना कार्य सम्भव नहीं है।१८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं इस प्रकारकी शंकाओं के सागरमें डूबा हुआ हूँ। आप मेरा विस्तार करे, क्योंकि मैं इस विषय में करोड़ों विकल्प करते-करते भ्रम में पड़ गया हूँ।१९। कुछ लोग भगवान शंकरको लोक स्रष्टा मानते हुए कहते हैं कि वे कारणों के भी कारण, सदाशिव, महादेव एवं प्रलय और उत्पत्ति से परे हैं।२०। वही आत्माराम, देवताओं के भी ईश्वर, त्रिगुणात्मक मल-रहित संसार से तारने वाले हैं।२१।

अन्ये विष्णुं स्तुन्वंत्येनं प्रभुमीश्वरम्।
परमात्मानमव्यक्तं सर्वशक्तिसमन्वितम्।२२
भुक्तिदं मुक्तिदं शान्तं सर्वादि सर्वतोमुखम्।
व्यापकं विश्वशरणमनादिनिधनं हरिम्।२३
धातारं च तथा चान्ये ब्रुवंति सृष्टिकारणम्।
तमेव सर्ववेत्तारं सर्वभूतप्रवर्तकम्।२४
चतुर्मुखं सुरेशानं नाभिपद्मभवं विभुम्।
स्रष्टारं सर्वलोकानां सत्यलोकनिवासिनम्।२५
दिनेशं प्रवदन्त्यन्ये सर्वेशं वेदवादिनः।
स्तुवन्ति चैव गायन्ति सायंप्रातरतंद्रिताः।२६
यजंति च तथा यज्ञं वासवं च शतक्रतुम्।
सहस्राक्षं देवदेवं सर्वेषां प्रभुमुल्वणम्।२७
यज्ञाधीशं सुराधीशं लोकनाथं शचीपतिम्।
यज्ञानांचैव भोक्तारं सोमपं सोमपप्रियम्।२८

अन्य विद्वान् भगवान् विष्णु को सब का प्रभु और ईश्वर कहकर उनकी स्तुति करते हैं।२२। उनके अनुसार वे ही भुक्ति मुक्ति प्रद, शान्त, सबके आदि, सर्वतोमुख, व्यापक, सम्पूर्ण संसार को शरण देने वाले, अनादि तथा मरण-रहित हैं।२३। कुछ ज्ञानीजन ब्रह्माजी को सृष्टि का कारण कहते हैं। इसके अनुसार वे ही सर्ववेत्ता और सबके जन्मदाता है।२४। वे चतुर्भुज, सुरेशान विष्णु के नाभिपद्मसे उत्पन्न सब लोकों के स्रष्टा और सत्यलोक के निवासी है।२५। कुछ वेद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वादियों के अनुसार सूर्य ही सर्वेश्वर हैं, वे सायंकाल एवं प्रातःकाल उन्हीं की स्तुति करते हैं।२६। याज्ञिकगण यज्ञ में धन देने वाले, शत कर्मा, सहस्राक्ष, देवताओं के अधीश्वर इन्द्र को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हुए उनका यज्ञ करते हैं।२७। उन्हीको लोकों का स्वामी और सोमपान करने वालों का प्रिय कहकर स्तुति करते हैं।२८।

वरुण च तथा सोमं पावकं पवनं तथा।
यमं कुबेरं धनदं गणाधीशं तथापरे।२९
हेरंब गजवक्त्रं च सर्व कार्यप्रसाधकम्।
स्मरणात्सिद्धिदं कामं कामदं कामगं परम्।३०
भवानीं केचनाचार्याः प्रवदन्त्यखिलार्थदाम्।
आदिमायां महाशक्ति प्रकृति पुरुषानुगाम्।३१
ब्रह्मैकतासमापन्नां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम्।
मातरं सर्वभूतानां देवतानां तथैव च।३२
अनादिनिधनां पूर्णा व्यापिकां सर्व जन्तुषु।
ईश्वरी सर्वलोकानां निर्गुणां सगुणां शिवाम्।३३
वैष्णवीं शांकरीं ब्राह्मीं वासवीं वारुणीं तथा।
बाराहीं नारसिहीं च महालक्ष्मीं तथाऽद्भुताम्।३४
वेदमातरमेकां च विद्याम्भवतरोः स्थिराम्।
सर्वदुःखनिहंत्रीं च स्मरणात्सर्व कामदाम्।३५

कुछ लोग वरुण को, कुछ सोम की, कुछ पावक को, कुछ पवन को, यम को, कुवेर को और कुछ गणपति को सबका स्वामी कहते हैं।२९। वे उन्हें हेरंब, गजवदन, सब कार्यों के साधक स्मरण मात्र से सिद्धि के देने वाले, काम स्वरूप, कामदाता आदि कहते हैं।३०। कुछ आचार्य भवानी को सर्व प्रदात्री आदि माया महाशक्ति, पुरुष की अनुगामिनी प्रकृति बताते हैं।३१। ब्रह्म में एकत्व भाव को प्राप्त, सृष्टि, स्थिति और प्रलय की करने वाली, सब भूतों और देवताओं की माता मानते हैं।३२। उनके अनुसार वही आदि अन्त से परे, पूर्णा, सर्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यापिका सबलोकों की स्वामिनी तथा निर्गुण और सगुणरूप शिवा हैं ।३३। वही वष्णवी, शांकरी ब्राह्मी, वासवी, वारुणी, वाराही, नारसिंही और अदभुत रूप वाली महालक्ष्मी हैं ।३४। वही एक मात्र दुःख नाशक और स्मरण मात्र से ही सब कामनाओं के देने वाली हैं ।३५।

मोक्षदां च कामदां चैव सर्वेषां फलार्थिनाम् ।
त्रिगुणातीतरूपां च गुणविस्तारकारिणीम् ।३६
निर्गुणां सगुणां तस्मात्तां ध्यायति फलार्थिनः ।
निरञ्जनं निराकारं निर्लेपं निर्गुणं किल ।३७
अरूपं व्यापकं ब्रह्म प्रवदन्ति मुनीश्वराः ।
वेदोपनिषदि प्रोक्तस्तेजोमय इति क्वचित् ।३८
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्रनयनस्तथा ।
सहस्रकरकर्णश्च सहस्रास्यः सहस्रपात् ।३९
विष्णोः पादमथाकाशं परमं समुदाहृतम् ।
विराजं विरजः शान्तं प्रवदन्ति मनीषिणः ।४०
पुरुषोत्तमं तथा चान्ये प्रवदन्ति पुराविदः ।
नैकोऽपीति वदन्त्यन्ये प्रभुरीशः कदाचन ।४१
अनीश्वरमिदं सर्वं ब्रह्माण्डमिति केचन ।
न कदापीशजन्यं यज्जगदेतदचिंतितम् ।४२

वे ही तीनों गुणों से परे और गुणों का विस्तार करने वाली हैं ।३६। फल की कामना वाले मनुष्य उन्हीं निर्गुण स्वरूप की सगुणरूप से उपासना करते है । परन्तु ज्ञानीजन, उन्ही का निरञ्जन, निराकार निर्लेप, निर्गुण-स्वरूप एवं व्यापक ब्रह्म कहते हैं । वेदों और उपनिषदों में उन्हीं को परम तेजोमय कहा गया है ।३७-३८। कुछ विद्वान उन्हें हजार मस्तक युक्तपुरुष, सहस्राक्ष, सहस्र हाथ, सहस्र कान सहस्र मुख, और सहस्रवरण वाला मानते हैं ।३९। वे आकाश को विष्णु का परम पद मानते हुए उसे शान्त एवं विराट् कहते हैं ।४०। कुछ पुराविद उन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषोत्तम मानते है । परन्तु कुछ लोग कहते हैं कितने विशाल संसार का स्वामी एक नहीं हो सकता ।४१। यदि विश्व किसी ईश्वर ने रचा होता तो वह अचिन्त्य नहीं कहा जा सकता था ।४२।

सदवेदमनीशं च स्वभावोत्थं सदेदृशम् ।
अकर्त्ताऽसौ पुमान्प्रोक्तः प्रकृतिस्तु तथा च सा ।४३
एव वदन्ति सांख्याश्च मुनयः कपिलादयः ।
एते संदेहदोहाः प्रभवंति तथाऽपरे ।४४
विकल्पोपहतं चेतः किं करोमि मुनीश्वर ।
धर्माधर्मविवक्षायां न मनो मे स्थिरं भवेत् ॥४५
को धर्मः कीदृशोऽधर्मश्चिह्नं नैवोपलभ्यते ।
देवाः सत्वगुणोत्पनाः सत्यधर्मव्यवस्थिताः ।४६
पीड्यन्ते दानवैः पापैः कुत्र धर्मस्य का स्थितिः ।
धर्मस्थिताः सदाचाराः पांडवा मम वंशजाः ॥४७
दुखं बहुविधं प्राप्तास्तत्र धर्मस्य का स्थितिः ।
अतो मे हृदयं तात वेपतेऽतीव तु संशये ।४८
कुरु मेऽसंशयं चेतः समर्थोऽसि महामुने ।
त्राहि संसारवक्रस्त्वं ज्ञानपातेन मां मुने ।४९

कपिल जैसे सांख्यवादी कहते हैं कि यह संसार ईश्वर से रहित एवं स्वभाव से उत्पन्न है । पुरुष अकर्त्ता और प्रकृति सब कार्यों के सम्पन्न करने वाली है । इनके अतिरिक्त अन्ये शंकाएँ भी उठाए जाती हैं ।४३-४४। हे मुनीश्वर ! मेरे मन में भी अनेक प्रकार की संकायें हैं, जब भी धर्म के विवेचन में बुद्धि लगाता हूँ तभी मेरी बुद्धि भ्रम में पड़ जाती है ।४५। धर्म या अधर्म के विषय में कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता । कुछ लोग देवताओं को सत्वगुण से उत्पन्न मानते हुए उन्हें सत्य धर्म का पालन कर्त्ता कहते हैं ।४६। परन्तु उन देवताओं के भी दानवों द्वारा सन्तप्त किये जाने पर धर्म कहाँ व्यवस्थित रहता है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म परायण और सदाचारी मेरे वंशज पाण्डवों को जब अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़े तब धर्मकी मर्यादा कहाँ रही, इसलिए इन शंकाओं में भ्रमित मेरा हृदय चञ्चल हो रहा है।४७-४८। हे महामुने ! कृपा-कर मेरे इन संशयों को दूर कर अपने ज्ञान रूपी जहाज के द्वारा मुझे इस संसार सागर से पार करिए।४९।

लोक दर्शन

यत्त्वया च महाबाहो पृष्टोऽहं कुरुसत्तम्।
तान्प्रश्नान्नारदः प्राह मया पृष्टो मुनीश्वरा।१
व्यास किं ते ब्रवीम्यद्य पुराऽयं संशयो मम।
उत्पन्नो हृदयेऽत्यर्थं संदेहात्प्रपीडितः।२
गत्वाऽहं पितरं स्थाने ब्रह्माणममितौजसम्।
अपृच्छं यत्त्वया पृष्टं व्यासाद्य प्रश्नमुत्तमम्।३
पितः कुतः समुत्पन्नं ब्रह्मांडमखिलं विभो।
भवत्कृतेन वा सम्यक्किं वा विष्णुकृतं त्विदम्।४
रुद्रकृतं वा विश्वात्मन्ब्रूहि सत्ये जगत्पतेः।
आराधनीयः कः कामः सर्वोत्कृष्टश्च कः प्रभुः।५
तत्सर्वं वद मे ब्रह्मन्सदेहांश्छिन्धि चानघ।
निमग्नो ह्यस्मि संसारे दुःखरूपेऽनृतोपमे।६
संदेहांदोलितं चेतो न प्रशाम्यति कुत्रचित्।
न तीर्थेषु न देवेषु साधनेष्वितरेषु च।७

व्यास जी ने कहा है कुरुश्रेष्ठ ! आपने जो प्रश्न मुझसे किये हैं, वही प्रश्न मैंने नारदजीसे किये थे उन्होंने जो उत्तर दिए, वही मैं कहता हूँ।१। नारदजी ने कहा हे व्यासजी ! पहिले मेरे मन में भी ऐसी ही शंका थी और वह इतनी बढ़ती गई कि मैं उससे अत्यन्त व्याकुल हो उठा।२। तब मैं ब्रह्मलोक के निवासी अपने ब्रह्माजी के पास गया और आपने जो पूछा है, वही मैंने उनसे पूछा।३। हे पिताजी यह ब्रह्मांड यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मांड कैसे उत्पन्न हुआ ? इसे भगवान विष्णु ने उत्पन्न किया अथवा आपने ? ।४। हे जगत्यपे ! आप मुझे यह सब बताइए। कौन ईश्वर सर्वोत्कृष्ट है, किसकी आराधना की जानी चाहिए ।५। हे ब्रह्मन् ! यह बताकर मेरी शंकाओं का समाधान करिये क्योंकि मैं इस समय असत्य रूपी दुःख सागर में डूबा हुआ हूँ ।६। मैं शंकाओं से इतना विचलित हो रहा हूँ, कि कहीं शान्ति नहीं देखता ।७।

अविज्ञाय परं तत्त्वं कतः शान्तिः परंतप ।
विवर्ण बहुधा चित्तं नैकत्र स्थिरतां व्रजेत् ।८
कं स्मरामि युगे कं वा कं व्रजाम्यर्चयामि कम् ।
स्तौमि कं नाभिजानामि देवं तं सर्वेश्वरम् ।९
ततो मां प्रत्युवाचेथं ब्रह्मलोकपितामहः ।
मया सत्यवतीसूनो कृते प्रश्ने सुदुस्तरे ।१०
किं ब्रवीमि सुताद्याहं दुर्बोधं प्रश्नमुत्तमम् ।
त्वयाऽशक्यं महाभाग विष्णोरपि सुनिश्चयात् ।११
रोगी कोऽपि नरो जानाति संसारेऽस्मिन्महामते ।
विरक्तश्च विजानाति निरीहो यो विमत्सरः ।१२
एकार्णवे पुरा जाते नष्टे स्थावरजङ्गमे ।
भूतमात्रे समुत्पन्ने सञ्जातोः कमलादहम् ।१३
नापश्यं तरणिं सोमं न वृक्षान्न च पर्वतान् ।
कर्णिकायां समाविष्टश्चिंतामकरवं तदा ।१४

हे परंतप ! जब तक परम तत्व का ज्ञान नहीं हो जाता तब तक शान्ति कहाँ ! क्योंकि भ्रमित हुआ चित्त एकाग्र नहीं हो सकता ।८। मुझे किसका स्मरण किसका पूजन, किसका स्तोत्र करना चाहिए ? क्योंकि मैं उस सर्वेश्वर को नहीं जानता ।९। हे व्यासजी ! मेरे इन दुस्तर प्रश्नों को सुनकर ब्रह्माजी बोले हे पुत्र, तुमने जो दुस्तर और श्रेष्ठ प्रश्न किए हैं, उनका मैं क्या उत्तर दूं जब कि भगवान विष्णु भी कोई निश्चित उत्तर देने में असमर्थ हैं ।१०-११। हे महामते संसार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कोई भी प्राणी इस तत्व को नहीं जानता इसका ज्ञान तो विरक्त निरीह और विमत्सर ज्ञानी ही जानते हैं ।१२। जब पुरकाल में संम्पूर्ण चराचर जीव नष्ट होकर यह विश्व एकार्णव के रूपमें हो गया था,तब पंच महाभूतों की पुनरुत्पत्ति होने पर मैं कमल से उत्पन्न हुआ ।१३। उस समय सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, पर्वत कुछ भी नहीं दिखाता था तब उस कमल पर लेटे-२ मैं सोचने लगा ।१४।

कस्मादहं समुद्भूतः सलिलेऽस्मिन्महार्णवे ।
को मे त्राता प्रभुः कर्त्त संहर्ता वा युगात्यये ।१५
न च भूर्विद्यते स्पृष्टा यदाधारं जलं त्विदम् ।
पंकज कथमुत्पन्नं प्रसिद्धं रूढियोगयोः ।१६
पश्याम्यद्यास्य पंकं मूलं वै पंकजस्य च ।
भविष्यति धरा तत्र मूलं नास्त्यत्र संशयः ।१७
उत्तरन्सलिले तत्र यावद्वर्षसहस्रकम् ।
अन्वेषमाणा धरणी नावाप ता यदा ।१८
तपस्तेपेऽपि चाकाशे वाग्भूदशरीरिणी ।
ततो मया तपस्तप्तं पत्मे वर्षसहस्रकम् ।१९
सृजेति पुनरुद्भूता वाणी तत्र श्रुता मया ।
विमूडोऽहं तदाकर्ण्य कं सृजामि करोमिकिम् ।२०
तदा दैत्यावतिप्राप्तौ दारुणौ मधुकैटभौ ।
ताभ्यां विभीषितश्चाहं युद्धाय मकरालये ।२१

मैं सोचता था किस इस एकार्णव के जल में मेरी उत्पत्ति किससे हुई, मेरा बनाने वाला एवं रक्षक कौन है ? कौन युग के अन्त में प्रलय करता है ? ।१५। जल की आधार स्वरूपा पृथ्वी दिखाई नहीं देती तो कमल कैसे हुआ ? ।१६। यही देखना है कि कमल का मूलाधार कीचड़ और उसका आधार भूमि कहाँ है, क्योंकि यह अवश्य होंगे ।१७। यह निश्चय करके मैं जल में उतर कर एक हजार वर्ष तक खोज में लगा रहा परन्तु कुछ पता न चला,तभी सहसा आकाशवाणी हुई कि तपस्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करो। फिर में उसी कमल पर बैठकर एक हजार वर्ष तक तपेस्या करता रहा।१८-१९। फिर आकाशवाणी हुईकि सृजन करो।' यह सुनकर मैं विस्मय में पड़ गया किस का सृजन करूँ ? किस प्रकार करूँ ?·।२०। तभी मधु-कैटभ नामक दो भयङ्कर दानव युद्ध के लिए तत्पर होकर मेरे सामने आकर खड़े हो गये, जिन्हें देखकर में अत्यन्त भयभीत हो उठा।२१।

ततोऽहं नाललम्ब्य वारिमध्यमवातरम्।
तदा तत्र मया दृष्टः पुरुषः परमाद्भुतः।२२
मेघश्यामशरीरस्तु पीतवासाश्चतुर्भुजः।
शेषशायी जगन्नाथो वनमालाविभूषितः।२३
शंखचक्रगदापद्माद्यायुधैः सुविराजितः।
तमद्राक्षं महाविष्णुं शेषपर्यङ्कशायिनम्।२४
योगानिद्रासमाक्रांतमविष्पदिनमच्युतम्।
शयानं तं समालोक्य भोगिभोगोपरि स्थितम्।२५
चिंता ममाद्भुता जाता किं करोमीति नारद।
मया स्मृता तदा देवी स्तुता निद्रास्वरूपिणी।२६
देहान्निर्गत्य सा देवी गगने संस्थिता शिवा।
अवितर्क्यशरीरा सा दिव्याभरणमंडिता।२७
विष्णोर्देहं विहायाशु विरराज नभस्थिता।
उदतिष्ठदमेयात्मा तया मुक्तो जनार्दनः।२८

फिर मैं उसी कमल की डण्डी के सहारे से जल में उतरा तो वहाँ मुझे एक अत्यन्त अद्भुत पुरुष दिखाई पड़ा।२२। मेघ-वर्ण वन के मालाओं से अलंकृत वह जगन्नाथ शेष-शैया पर शयन कर रहा था।२३। हाथों में शंख, चक्र गदा, पद्म आदि आयुध थे। उस समय योगनिद्रा के वशीभूत होकर वे निस्पन्द सो रहे थे। मैं उन्हें इस प्रकार सर्प-शय्या पर सोते देखकर एक विकट चिन्ता में पड़ गया और सोचने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगा कि अब क्या करना चाहिये ? हे नारद! फिर मैंने उस निद्रा स्वरूपिणी देवी का स्मरण किया और उनकी स्तुति की ।२४-२६। तभी वह देवी भगवान विष्णु के शरीरमें से निकल आकाश में स्थिर हो गई ।२७। वह जैसे ही भगवान विष्णु के शरीर से निकल कर आकाश में गई वैसे भी उसके प्रभाव से युक्त हुए अमेयात्मा प्रभु उठ बैठे ।२८।

पञ्चवर्षसहस्राणि कृतवान्युद्धमुत्तमम् ।
तदा विलोकितौ दैत्यौ हरिणा विनिपातितौ ।२९
उत्सङ्गं विमलं कृत्वा तत्रैव निहतौ च तौ ।
रुद्रस्तत्रैव संप्राप्तो यत्रवै संस्थितावुभौ ।३०
त्रिभिः संवीक्षितास्माभि स्वःस्था देवी मनोहरा ।
संस्तुता परमा शक्तिरुवाचास्मानवस्थितान् ।३१
कृपावलोकनैः कृत्वा पावनैर्मुदितानघ ।
कार्येशाः स्वानि कार्याणि कुरुध्वं समतंद्रिताः ।३२
सृष्टिस्थितिविशिष्टानि हतावेतौ महासुरौ ।
कृत्वा स्वानि निकेतानि वसध्वं विगतज्वराः ।३३
प्राजाश्चतुर्विधाः सर्वा सृजध्वं स्वविभूतिभिः ।
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्याः पेशलं सुखदं मृदु ।३४
अब्रूम तामशक्ताः स्मः कथं कुर्मस्त्विमाः प्रजाः ।
न मही विताता माताः सर्वत्र विततं जलम् ।३५

तब उन विष्णु भगवान् ने उन दैत्यों के साथ पाँच हजार वर्ष तक घोर बाहु युद्ध किया। फिर उन दैत्यों की ओर देखकर देवी ने उन्हें मोहित किया तभी विष्णु उन्हें मार सके ।२९। विष्णु ने अपनी जंघाओं को अत्यन्त विस्तृत करके उन दैत्यों को उन पर रखकर मार डाला। तभी भगवान् विष्णु के पास शिवजी भी आ गये ।३०। फिर हम तीनों ने आकाश में स्थित उन भगवती के दर्शन किये और उनकी स्तुति करने लगे। तब उन्होंने अपनी पवित्र कृपा-दृष्टि पूर्वक देखा और हमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर्षित करती हुई बोली कि हे ब्रह्मा ! विष्णु ! महेश्वर ! तुम तीनों अपने-२ कार्य को तत्परता से करो ।३१-३२। तुम्हारा कार्य क्रमशः सृष्टि स्थितिऔर प्रलय करनाहै । तुम अपने-२ भवन बनाकर उनमें निश्चित होकर निवास करो ।३३। तुम अपनी विभूतियों के द्वारा चारों प्रकार के जीव उत्पन्न करो । ब्रह्माजी ने कहा देवी के सुखदायी मधुर, श्रेष्ठ वचनों को सुनकर हमने कहा कि हम तो अशक्त है, सब-ओर जलमयी है, पृथिवी दिखाई नहीं देती, तब सृष्टि कैसे करें ।३४-३५।

न भूतानि गुणाश्चापि तन्मात्राणीन्द्रियाणि च ।
तदाकर्ण्य वचोऽस्माकं शिवा जाता स्मिताननाः ।३६
झटित्येवागतं तत्र विमानं गगनाच्छुभम् ।
सोवाचास्मिन्सुराः कामं विशध्वं गतसाध्वसाः ।३७
विमाने ब्रह्मविष्ण्वीशा दर्शयाम्यद्य चाद्भुतम् ।
तान्निशम्य वचस्तस्या ओमित्युक्त्वा पुनर्वयम् ।३८
ममारुह्योपविष्टाः स्मो विमाने रत्नमंडिते ।
मुक्तारामसुसंवीते किंकिणीचलशब्दिते ।३९
सुरसद्मनिभे रम्ये त्रयस्तत्र विशंकिताः ।
सोपविष्टांस्ततो दृष्ट्वा देव्यस्मान्विजितेन्द्रियान् ।४०
स्वशक्तया तद्विमानं वै नोदयामाश चांबरे ।४१

अभी पंच महाभूत, गुण, तन्मात्राएं तथा इन्द्रियाँ भी नहीं है । यह सुनकर भगवती शिवा मुसकराने लगी ।३६। तभी आकाश से एक सुन्दर विमान वहाँ आ गया और देवी ने आदेश भरे स्वर में कहा कि हे देवताओ ! तुम इस विमान पर चढ़ जाओ ।३७। हे ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर ! तुम्हें इस विमान के द्वारा मैं अद्भुत दृश्य दिखाऊँगी । वे उस विमान पर जा बैठे तब देवी ने अपनी शक्ति से उसे आकाश में प्रेरित किया ।४०-४१।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्यक्ष दर्शन

विमानं तन्मनोवेगं यत्र स्थानांतरे गताम् ।
न जलं तत्र पश्यामः विस्मिता स्मो वयं तदा ।१
वृक्षाः सर्व फला रम्याः कोकिलारावमण्डिताः ।
मही महीधराः कामं वनान्युनानि च ।२
नार्यश्च पुरुषाश्चैव पशवश्च सरिद्वराः ।
वाप्यः कूपास्तडागश्च पल्वलानि च निर्झराः ।३
पुरतो नगरं रम्यं दिव्यप्राकारमण्डिताम् ।
यज्ञशालासमायुक्त नानाहर्म्यविराजिताम् ।४
प्रत्यभिज्ञा तदा जाताऽप्यस्माकं प्रेक्ष्य तत्पुरम् ।
स्वर्गोऽयमिति केनासौ निर्मितोऽस्ति तदद्भुताम् ।५
राजानं देवसंकाश व्रजंतं मृगयां वने ।
अस्माभिः संस्थिता दृष्टा विमानोपरि चांबिका ।६
क्षणाच्चाल गगने विमानं पवनेरिताम् ।
मुहूर्तार्द्धात्ततः प्राप्तां देशे वान्ते मनोहरे ।७

ब्रह्माजी ने कहा—मनोवेग से उड़ने वाला वह विमान उड़ता हुआ जहाँ पहुँचा वह स्थान जल-हीन था। यह हम अत्यन्त विस्मित हुए।१। वहाँ के वृक्ष फलों में परिपूर्ण थे, उन पर कोयले कूक रही। वहाँ के भूमि, वन, उपवन आदि सभी अत्यन्त सुन्दर थे।२। वहाँ स्त्री, पुरुष, पशु सरितायें वापी, कूप सरोवर और झरने आदि सभी कुछ थे।३। वही दिव्य चारदिवारी से युक्त तक सुरम्य नगर था, उसमें यज्ञशालायें घर तथा भव्य भवन बने थे।४। उस नगर को देखकर हमें अनुभव हुआ कि यही स्वर्ग है। फिर यह जिज्ञासा हुई कि इस परम अद्भुत नगर का निर्माता कौन है ?।५। तभी वहा देवता के समान एक राजा आखेट के लिए जाता हुआ दिखाई दिया और तभी हमने अम्बिका को अपने विमान पर विराजमान देखा।६। क्षणभर में ही हमारा विमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायु से प्रेरित होकर आकाश में उड़ता हुआ एक अन्य मनोहर प्रदेश में जा पहुँचा ।७।

नंदन च वनं तत्र दृष्टमस्माभिरुत्तमम् ।
पारिजाततारुच्छायासंश्रिता सुरभिः स्थिता ।८
चतुर्दन्तो गजस्तस्याः समीपे समवस्थितः ।
अप्सरां तत्र वन्दानि मेनका प्रभृतीनि च ।९
क्रीडन्ति विवधैर्भावैर्गाननृत्यसमन्वितैः ।
गंधर्वाः शताशस्तत्रा यक्षोविद्याधरास्तथा ।१०
मंदारवाटिकामध्ये गायन्ति च रमन्ति च ।
दृष्टः शताक्रतुस्तत्र पौलोम्या सहितः प्रभुः ।११
वयं तु विस्मिताश्चास्मा दृष्ट्वा त्रैविष्टपंतदा ।
यादः पतिं कुबेरं च यमं सूर्यं विभावसुम् ।१२
विलोक्य विस्मिताश्चास्म वयं तत्र सुरान्स्थितान् ।
तदा विनिर्गतो राजा पुरात्तस्मात्सुमण्डितात् ।१३
देवराज इवाक्षोभ्यो नरवाह्यावनौ स्थितः ।
विमानस्था वयं तच्च चचाल तारसागताम् ।१४

वहाँ हमें नन्दन वन दिखाई दिया, जिसमें पारिजांति वृक्षकी छाया में सुरभि धेनु भी खड़ी हुई थी ।८। उसी गौ के निकट चार दाँत वाला एक हाथी स्थित था वही मेनका आदि अप्सरायें भी विचरण कर रही थीं ।९। वे अप्सरायें विभिन्न भावोंके प्रदर्शन युक्त नृत्य-गान में तल्लीन थीं । वही सैकड़ों गन्धर्व, यक्ष और विद्याधरों के समूह मंदार वृक्षों से सम्पन्न वाटिकाओं में गाते हुए घूम रहे थे । वहीं इन्द्राणी सहित इन्द्र भी दृष्टिगोचर हुए ।१०-११। उस स्वर्गको देखकर हम आश्चर्य चकित हो गये । वही वरुण, कुबेर, यम, सूर्य, अग्नि आदि देवताओं को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ तभी उस सर्व प्रकार सुसज्जित नगर से एक राजा निकलता हुआ दिखाई दिया ।१२-१३। इन्द्र के समान वह राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक ऐसे वाहन पर सवार थे जिसमें मनुष्य जुटे हुए थे। तभी हम जिस विमान पर बैठे थे, वह शीघ्रता से आगे बढ़ा।१४।

ब्रह्मलोकं तदा दिव्यं सर्वदेवनमस्कृताम्।
तं ब्रह्माणमालोक्य विस्मितौ हरकेशवौ।१५
सभायां तत्र वेदाश्च सर्वे साङ्गाः स्वरूपिणः।
साराः सरितश्च व पर्वताः पन्नगोरगाः।१६
मामूचतुश्चर्वक्त्र कोऽयं ब्रह्मा सनातनः।
तावोचमहं नैव जाने सृष्टिपतिं पतिम्।१७
कोऽहं कोऽयं किमर्थं वा भ्रमोऽयं मम चेश्वरी।
क्षणादथ विमानं तच्चचालाशु मनोजवम्।१८
कैलाशशिखरे प्राप्ते रम्ये यक्षगणान्विते।
मंदारवाटिकारम्ये कीरकोकिलकूजिते।१९
वीणामुरजवाद्यैश्च नादिते सुखिते शिवे।
यदा प्राप्तं विमानं तत्तदैव सदनाच्छृभात्।२०
निर्गतो भगवाञ्छम्भुर्वृषारूढस्त्रिलोचनः।
पचाननो दशभुजः कृतसोमार्धशेखरः।२१

तभी हम सब देवताओं द्वारा नमस्कार किये जाने वाले दिव्य ब्रह्म लोक में पहुँचे। वहाँ ब्रह्माजी विराजमान थे, जिन्हें देखकर विष्णु और महेश्वर आश्चर्य चकित हो गये।१५। वहाँ ब्रह्माजी की सभा में संयोग युक्त चारों वेद मूल रूप में थे उस लोक में सागर, सरिता, पर्वत, पन्नग और नाग आदि सभी थे।१६। यह देखकर विष्णु और महेश्वरने मुझसे पूछा कि हे चतुर्भुज! यह कौनसे सनातन ब्रह्मा है? तब मैंने कहा कि इन सृष्टि कर्त्ता ईश्वर को नही जानता।१७। हे ईश्वर! मैं कौन हूँ? यह कौन है? हमारा उनका क्या प्रयोजन है? यह विचार कर मैं भ्रम में पड़ गया हूँ। क्षणभर में हमारा विमान मनोवेग से चल पड़ा।१८। शीघ्र ही वह कैलाश शिखर पर जा पहुँचा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहाँ यक्षगण थे और मंदार वाटिकाओं में तोते और कोयलें कूज रहे थे ।१६। वीणा मृदङ्ग, आदि वज रहे थे, जैसे ही हमारा विमान पहुँचा भगवान शंकर बैल पर आरूढ़ होकर निकले ।२०-२१।

व्याघ्रचर्मपरीधानो गजचर्मोत्तरीयकः ।
पार्ष्णिरक्षौ महावीरौ गजाननषडाननौ ।२२
शिवेन सह पुत्रौ द्वौ वञ्चमानौ विरेजतुः ।
नन्दिप्रभृतयः सर्वे गणपाश्च वराश्च ते ।२३
जयशब्दं प्रयुंजाना व्रजन्ति शिवपृष्ठगाः ।
तं वीक्ष्यं शङ्करं चान्यं विस्मितास्तत्र नारद ।२४
मातृभिः संशयाविष्टस्तत्राह न्यवसन्मुने ।
क्षणात्तस्मादूरिरे शृङ्गाद्विमानँ वातरंहसा ।२५
वैकुण्ठसदनं प्राप्तं रमारमणमन्दिरम् ।
असभाव्याविभूतिश्च [तत्र दृष्टा मया सुत ।२६
विसिष्मिये तदा विष्णुं दृष्ट्वा तत्पुरमुत्तमम् ।
सदनादाययौ तावद्धरिः कमललोचनः ।२७
अतसीकुसुमाभासा पीतवासाश्चतुर्भुजः ।
द्विजराजाधिरूढच दिव्याभरणभूषितः ।२८

उनका परिधान व्याघ्र चर्म का और उत्तरीय गजचर्म का था। उनके अङ्ग-रक्षक के रूप में गजानन और षडान दोनों महावीर चल रहे थे ।२२। भगवान शंकर के साथ चलते हुए उनके दोनों पुत्र अत्यन्त शोभायमान लग रहे थे । हे नन्दीगण भी पीछे जयनाद करते हुए चले रहे थे । नारद ! उन भगवान शंकर को मुझे अत्यन्त विस्मयहुआ ।२३-२५। शीघ्र ही भगवान विष्णु के निवास वैकुण्ठ में जां पहुँचा।२६ भगवान जैसेही भवनके समक्ष पहुँचे, जैसेही उसमेंसे कमल जैसे नेत्रवाले भगवान विष्णु निकलते हुए दिखाई दिए।२७। उनकावर्ण अलसीके पुष्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के समान श्यामथा। चार भुजाए थीं, पीताम्बर धारण किए हुए,दिव्य भूषणों से सुशोभित तथा गरुड़ की पीठ पर आरूढ़ थे।२८।

वीज्यमानस्तदा लक्ष्म्या कामिन्या चामरैः शुभैः।
तं वीक्ष्य विस्मिताः सर्वे वयं विष्णु सनातनम्।२९
परस्परं निरीक्षैतः स्थितास्तस्मिन् वरानने।
ततश्चचाल तरसा विमानं वातरंहसा।३०
सुधासमुद्रः संप्राप्तो मिष्टवारिमहोर्मिमान्।
यादोगणसमाकीर्णश्चलद्वीचिविरांजितः।३१
मन्दारपारिजाताद्यैः पादपैरतिशोभितः।
नानास्तरणसंयुक्तो नानाचित्रविचित्रतः।३२
मुक्तादामपरिक्लिष्टो नानादामविराजितः।
अशोकवकुलाख्यैश्च वृक्षः कुरुबकादिभिः।३३
संवतः सर्वतः सोम्यैः केतकापञ्चकैर्वृतः।
कोकिलारावसंपुष्टो दिव्यगन्धसमन्वितः।३४
द्विरेफातिरणत्कारैरञ्जितः परमाद्भुतः।
तस्मिन्द्वीपे शिवाकारः पर्यङ्कः सुमनोहरः।३५

लक्ष्मीजी चमर डुला रही थीं अपने-अपने आसन पर बैठे हुए हम तीनों परस्पर एक दूसरे का मुख देखते हुए मौन बैठे थे। तभी वह विमान वायु वेग से वहाँ से चल पड़ा।२९-३०। शीघ्र ही अमृत-सिंधुके तट पर जा पहूँचा। मधुर जल वाले उस समुद्र से ऊँची लहरें उठ रही थी। वह विशालकाय जल जन्तुओं से परिपूर्ण था।३१। विविध चित्र-कारियों से चित्रित वहाँ के भवनों में श्रेष्ठ बिछौने बिछे हुए थे।३२। मोती कीं मालायें झूल रही थीं और विविध प्रकार की मालायें सजाई थीं। अशोक मौलश्री और कुरबक आदि के वृक्ष सुशोभित थे। उनके चारों ओर केतकी और चम्पा के फूलों के उपवन थे। उनमें मन को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोहित करने वाली सुगन्ध प्रवाहित थी तथा कोयलें कूज रही थी। भौंरे गुञ्जार रहे थें ।३५।

रत्नालिखचितोऽत्यर्थं नानारत्नविराजितः ।
दृष्टोऽस्माभिर्विमानस्थदूरतः परिमण्डितः ।३६
नानास्तरणसंछन्नं इन्द्रचापसमन्वितम् ।
पर्यङ्कप्रवरे तस्मिन्नुपविष्टा वरांगना ।३७
रक्तमाल्यांबरधरा रक्तगंधानुलेपना ।
सुरक्तनयना कांता विद्युत्कोटिसमप्रभा ॥३८
सुचारुवदना रक्तदन्तच्छदविराजिता ।
रमाकोट्यधिका कांत्या सूर्यबिंबनिभाखिला ।३९
वरपाशांकुशाभीष्टधरा श्रीभुवनेश्वरी ।
अदृष्टपूर्वा दृष्टा सा सुन्दरी स्मितभूषणा ।४०
ह्रींकारजपत्तिष्ठैस्तु पक्षिवृन्दैर्निषेविता ।
अरुणा करुणामूर्तिः कुमारी नवयौवना ।४१
नानामणिगणाकीर्णा भूषणैरुपशोभिता ।
कनकांगदकेयूरकिरीटपरिशोभिता ।४२

उस पतंग में रत्नों से बने हुए भौंरे जड़े थे, यह विविध प्रकार के रत्नों से सुशोभित था। उस भले प्रकार सजे हुए पलंग को हमने दूर से ही देखा ।३६। उस पर विभिन्न रङ्गों के वस्त्र बिछे थे उन रङ्गों में इन्द्र धनुष की सी छटा थी। उस श्रेष्ठ पलंग पर एक सुन्दरी विराजमान थी ।३७। वह लाल वस्त्र, लाल मालाओं और लाल गन्धानु लेपनों से सुशोभित थी ।३६। सुन्दर मुख और लाल होठ वालीं उस नारी का सौंदर्य करोंड़ों लक्ष्मियों से भी अधिक था। उसकी अलौकिक दीप्ति के सामने सूर्य का तेज भी फीका लग रहा था ।३९। मुस्कराती हुई वह भुवनेश्वरी वर, पाश, अंकुश और अभय मुद्रा को धारण किये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए थी । हमने ऐसी सुन्दरी पहिले कभी भी नहीं देखी थी ।४०। वहाँ पक्षी वृन्द ह्रींकार बीज मन्त्र का जप कर रहे थे । वह अरुणावर्णा करुणामूर्ति नवयौवना कुमारी रूपिणी भवानी थीं ।४१। उनके देह पर विविध प्रकार के आभूषण स्वर्ण निर्मित कंकण किरीट आदि सुशोभित थे ।४२।

कनकच्छीचक्रताटंकविटककवनांबुजा ।
ह्रल्लेखा भुवनेशीति नामजपपरायणैः ।।४३
सखिवन्दैः स्तुता नित्यं भुवनेशा महेश्वरी ।
ह्रल्लेखाद्याभिरमरकन्याभिः परिवेष्टिता ।४४
अनंगकुसुमाद्याभिर्देवीभिः परिवेष्टिता ।
देवी षटकोणमध्यस्था यन्त्रराजोपरि स्थिता ।४५
दृष्ट्वा तां विस्मिताः सर्वे वयं तत्र स्थिताऽभवाम ।
केयं कांता च किं नाम न जानामोऽत्र संस्थिताः ।४६
सहस्रनयनारामा सहस्रकरसंयुता ।
सहस्रावदना रम्या भाति दूरादसंशयम् ।४७
नाप्सरा नापि गन्धर्वी नेयं देवाङ्गना किल ।
इति संशयमापन्नस्तत्र नारद संस्थितः ।४८
तदाऽसौ भगवान्विष्णुर्दृष्ट्वा नां चारुहासिनीम् ।
उवाचांवां स्वविज्ञानात्कृवा मनसि निश्चयम् ।४९

स्वर्ण से बने चक्रकार कर्णफूल उनके मुख कमल पर सुशोभित थे । ह्रल्लेखा और भुवनेश्वरी नामों का जप चल रहा था ।४३। सखिया उन भुवनेश्वरी देवीकी स्तुति में तल्लीनथी । ह्रल्लेखाआदि देव-कन्याऐं उनके चारों ओर बैठी थी ।४४। अनङ्गकुसुमा आदि देवियाँ भी उन्हें घेरे हुए थी और भगवती षट्कोण यन्त्र के मध्य स्थित यन्त्रराज पर प्रतिष्ठित थीं ।४५। उनको देखकर हम सब अत्यन्त चकित हुए वहीं रुके रह गये परन्तु सुन्दरी का नाम क्या था यह हम नहीं जान सके ।४६। उनके सहस्र नेत्र सहस्र मुख और सहस्र ही हाथ थे । निःसन्देह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह दूर से भी बहुत प्रतीत सुन्दर हो रही थी ।४७। हम इस शङ्का में पड़े थे कि यह न तो अप्सरा हैं न गन्धर्वी हैं और न देवांगना ही हैं हम इस प्रकार सोचते हुए खड़े रहे ।४८। तब उस सुन्दर हास वालीको देखकर भगवान् विष्णु ने अपने अनुभव से निश्चय किया कि यह अम्बा हैं। तब उन्होंने हमसे कहा ।४९।

एषा भगवती देवी सर्वेषां कारण हि नः ।
महाविद्या महामाया पूर्णा प्रकृतिरव्यया ।५०
दुर्ज्ञेयाऽल्पधियां देवी गम्या योग दूराशया ।
इच्छा परात्मना कामं नित्यानित्यस्यरूपिणी ।५१
दुराराध्याल्पभाग्यैश्च देवी विश्वेश्वरी शिवा ।
वेदगर्भा विशालाक्षी सर्वेषामादिरीश्वरी ।५२
एषा संहृत्य सकलं विश्वं क्रीडति संक्षये ।
लिङ्गानि सर्वजीवानां स्वशरीरे निवेश्य च ।५३
सर्वबीजाह्येषा राजते साम्प्रतं सुरौ ।
विभूतयः स्थिताः पार्श्वे पश्यतां कोटिशः क्रमात् ।५४
दिव्याभरणभूषाढ्या दिव्यगन्धानुलेपना ।
परिचर्यापराः सर्वा पश्यतां ब्रह्मशङ्करौ ॥५५
धन्या वयं महाभागाः कृतष्याः स्म सांप्रतम् ।
यदत्र दर्शनं प्राप्तं भगवत्याः स्वयं त्विदम् ।५६

यह भगवती हम सभी की कारण रूपा है। यही देवी महाविद्या महामाया पूर्ण प्रकृति तथा अव्यया हैं ।५०। अल्पबुद्धि वाले जीवों के लिये इनका जानना कठिन है। इन्हें तो योगमार्ग द्वारा ही जाना जा सकता है, परमात्मा की इच्छा यही है। यही नित्य एवं नित्यस्वरूपिणी कही जाती है ।५१। अल्प भाग्य वालों के द्वारा इनकी आराधना दुस्तर है क्योंकि वही देवगर्भा, विशालाक्षी आदि सब देवियों की भी आदि रूपा ईश्वरी है ।५२। प्रलयकाल में संसार का संहार कर सब प्राणियों के लिङ्ग देहको आत्मसात् करके यही भगवती अकेली ही क्रीड़ा करती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ।५३। वह इस समय सर्व बीजमयी स्वरूप में सुशोभित हैं । देखो, इनके पार्श्व में करोड़ों विभूतियाँ स्थित हैं ।५४। हे ब्रह्माजी! हे शङ्कर देखो दिव्याभूषणों मे आभूषित और दिव्यगन्धों का लेप किये हुए हैं । वे सब विभूतियाँ इनकी परिचर्याँ में लगी हुई हैं ।५५। हम बड़भागी और धन्य हैं जो हमें साक्षात् भगवती के दर्शन प्राप्त हो गये ।५६।

तपस्तप्तं पुरा यत्नात्तस्येव फलमुत्तमम् ।
अन्यथा दर्शनं कुत्र भवेदस्माकमादरात् ।५७
पश्यन्ति पुण्यपुञ्जा ये ये वदान्यास्तपस्विनः ।
रागिणो नैव पश्यन्ति देवीं भगवतीं शिवाम् ।५८
मूलप्रकृतिरेवैषा सदा पुरुषसङ्गतः ।
ब्रह्माण्डं दर्शयत्येषा कृत्वा वै परमात्मने ।५९
द्रष्टाऽसौ दृश्यमखिलं ब्रह्मांडे देवताः सुरौ ।
तस्यैषा कारणं सर्वा माया सर्वेश्वरी शिवा ।६०
क्वाहं वा क्व सुराः सर्वे रम्भाद्याः सुरयोषितः ।
लक्षांशेन तुलामस्या न भवामः कदंचन ।६१
सैषा वरांगना नाम्या वै दृष्टा महार्णवे ।
बालभावे महादेवी दोलयतीव मां मुदा ।६२
शयानं वटपत्रे च पर्यंके सुस्थिरे दृढ़े ।
पादागुष्ठं कृत्वा निवेश्य मुखपङ्कजे ।६३

हमने पहिले कभी यत्न पूर्वक तप किया होगा, जिसके श्रेष्ठ फल के रूप में इनके दर्शन हो गये, अन्यथा इनके दर्शन किस प्रकार मिल पाते ।५७। उदारचेता, पुण्यात्मा और तपस्विनी को ही इनका दर्शन मिल सकता है । संसार के भोगों में आसक्त हुए जीव इनके दर्शन नहीं कर सकते ।५८। यही देवी मूल प्रकृति के रूप में पुरुष के सहयोग से ब्रह्माण्ड की रचना करती है ।५९। उस अखिल ब्रह्माण्ड रूपी दृश्य को देखने वाला जीव है और इन दोनों को ही यह सर्वेश्वरी, महामाया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिवा ही उत्पन्न करती है ।६०। हम देवता और रम्भा आदि देवांङ्गनायें कोई भी इन अम्बिका की तुलना इनका लक्षांश भी समानता नहीं कर सकता ।६१। इन्हीं सुन्दरी को मैंने उस महासागर में उस समय देखा था, जब महादेवी मुझ बालक को झूला झुला रही थीं ।६२। उस समय बड़ के पत्ते पर जो मेरे लिये पलङ्ग रूप था लेटा हुआ मैं अपने पाँव के अँगूठे को अपने मुख कमल में लेकर चूस रहा था ।६३।

केलिवंतं च क्रीडंतममेक्रे ववलिचेष्टि तः ।
रममाणं कोमलांगं वटपत्रपुटे स्थितम् ।६४
गायन्ती दोलयंतं च बालभावन्मांथ स्थिते ।
सेयं सुनिश्चित ज्ञानं जातं मे दर्शनादिव ।६५
कामं वो जननी सैषा शृणु तं प्रवदाम्यहम् ।
अनुभूतं मया पूर्व प्रत्यभिज्ञा समुत्थिता ।६६

मैं उस वट पत्र पर लेटा हुआ ही चेष्टाओं द्वारा क्रीडा करता था। उस समय मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्ग कोमल थे ।६४। उस समय यह जननी मुझे झुलाती हुई लोरियाँ गाती थी इनके दर्शन करके अब मुझे वे सब बातें याद आ रही है ।६५। यथार्थ में यही मेरी जननी हैं। इनके दर्शन करके अब मुझे पूर्वकाल में अनुभव किये जिन तत्वों का ज्ञान हुआ है उसके विषय में आपको बताता हूँ उसे सुनो ।६६।

देवी स्तोत्र

इत्युक्त्वा भगवान्विष्णु पुनराह जनार्दनः ।
वयं गच्छेम पार्श्वेऽस्या प्रणमन्तः पुनः पुनः ।१
सेयं वरा महामाया दाम्पत्येषा वरान्हि नः ।
स्तुवामः सन्निधिं प्राप्य निर्भयाश्चरणांतिके ।२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि नो वारयिष्यन्ति द्वारस्थाः परिचारकाः ।
पठिष्यामश्च तत्रास्य स्तुतिः देव्याः समाहिता ।३
इत्युक्ते हरिणा वाक्ये सुहृष्टौ समुपस्थितौ ।
जातौ प्रसुदितो कामं निकटे गमनाय च ।४

ओमित्युक्त्वा हरिं सर्वे विमानात्त्वरितास्त्रयः ।
उत्तीर्य निगंता द्वारि शंकमाना मनस्थलम् ।५

द्वारस्थान्वीक्ष्य तान्सर्वान्देवी भगवती तदा ।
स्मितं कृत्वा चकाराशु तांस्त्रीन्स्त्रीरूपधारिणः ।६
वयं युवतयो जाताः सुरूपाश्चारुभूषणाः ।
विस्मयं परमं प्राप्ता गतास्तत्संनिधिं पुनः ।७

ब्रह्माजी ने कहा—यह कहकर जनार्दन भगवान विष्णु ने कहा कि चलो इनको बारम्बार प्रणाम करते हुए हम इनके समीप चलें ।१। हमें निर्भय भाव से इनके चरणों के निकट पहुँच कर स्तुति करनी चाहिए । यह वरदायिनी देवी हमको वर प्रदान करेगी।२। यदि इनकी द्वार-रक्षिकाएं हमें उनके समीप न जाने देंगी तो वहीं बैठ कर एकाग्र चित्त से इनकी स्तुति करेंगे ।३। ब्रह्माजी बोले—भगवान श्री हरि के वचन सुनकर मैं और शिवजी दोनों ही प्रसन्न होकर भगवती के समीप जाने को उत्कण्ठित हुए ।४। 'अति उत्तत' कहते हुए हम तीनोंही विमानसे उतर कर विभिन्न प्रकार की शंकायें करते हुए उनके द्वार पर पहुँचे ।५। हमको द्वार पर आया देखकर देवी मुसकाने लगीं और उन्होंने तुरन्त ही हम तीनों को स्त्री बना दिया ।६। इस प्रकार हम अत्यन्त रूपवती युवती होकर विविध प्रकार के आभूषणों से विभूषत हो गई इस कौतुक से हमें अत्यन्त विस्मय हुआ और हम उन देवी के निकट जा पहुँचे ।७।

संदृष्ट्वा नः स्थितांस्तत्र स्त्रीरूपांश्चरणांतिके ।
व्यलोकयत चार्वङ्गी प्रेमसम्पूर्णया दृशा ।८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रणम्य तां महादेवी पुरतः संस्थिता वयम् ।
परस्पर लोकयन्तः स्त्रीरूपाश्चारुभूषणाः ।८
यादपीठं प्रेक्षमाणा नानामणिविभूषितम् ।
सूर्य कोटिप्रतीकाशं स्थितास्तत्र वयं त्रयः ।१०
काश्चिद्रक्तांवरास्तत्र सहचर्यः सहस्रशः ।
काश्चियन्नीलाम्बरा नार्यस्तथा पीतांवराः शुभाः ।११
देव्यः सर्वा शुभाकारा विचित्राम्बरभूषणाः ।
विरेजूः पार्श्वतस्तस्या परिचर्यापराः किल ।१२
जगुश्च ननतुश्चान्याः पर्यपासन्त ताः स्त्रियः ।
वीणामारुतवाद्यानि वादयन्त्यो मुदान्विताः ॥१३
शृणु नारद प्रवक्ष्यामि यद्दृष्टं तत्र चाद्भुतम् ।
नखदर्पणमध्ये वै देव्याश्चरणपंकजे ।१४

हमको स्त्री रूप में अपने चरणोंके समीप आया देखकर उन सुन्दर अङ्गों वाली देवी ने प्रेम पूर्वक हमारी ओर देखा ।८। तब हम भी उन महादेवी को प्रणाम करके परस्पर एक दूसरे को दिव्याभूषणधारिणी स्त्री देखते हुए वहीं खड़े हो गये ।९। हम अनेक प्रकार की मणियों से जड़ें हुए और कोटि सूर्य की आभा के समान-दहकते हुए वहीं खड़े हो गये ।१०। वहाँ उनकी सहस्रों सेविकाएँ सेवा-रत थीं उनमें से किसी के वस्त्र लाल किसी के नीले और किसी के पीले थे ।११। वहाँ पर स्थित सभीदेवियाँ शुभ आकार वाली तथा विचित्र वस्त्राभूषण विभूषित थीं वे सभी उनकी विभिन्न सेवाओं में लगी हुई थी ।१२। उनमें से कुछ नृत्य में, कुछ गान में और कुछ उपासना में तल्लीन थी। कुछ अत्यन्त प्रसन्न होती हुई वीणा, मुरली आदि वाद्यों को बजा रही थी ।१३। हे नारद सुनो वहाँ देवी के चरण कमलों में स्थित नख रूपी दर्पण में जो अद् भुत दृश्य मैंने देखा, वह में तुम्हारे प्रति कहता हूँ ।१४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्माण्डमखिल सर्वं तत्र स्थावरजङ्गमम् ।
अहं विष्णुश्च रुद्रश्च वायुरग्निर्यमो रविः ।१५
वरुणः शीत स्त्वष्ट कुवेरः पाकशासनः ।
पर्वताः सागरा नद्यो गन्धर्वाप्सरसस्तथा ।१६
विश्वावसुश्चित्रशूकेतुः श्वेतश्चित्रांगदस्तथा ।
नारदस्तुम्बुरुश्चैव हाहाहूहूस्तथैव च ।१७
अश्विनौ वसवः साध्याः सिद्धाश्च पितरस्तथा ।
नागाशेषतयः सर्वे किन्नरोरगरक्षसाः ।१८
वैकुण्ठो ब्रह्मलोकश्च कैलासः पर्वतोत्तमः ।
सर्वं तदखिल दृष्टं नखमध्यस्थितं च वै ।१९
मज्जन्मपङ्कजं तत्र स्थितोऽहं चतुराननः ।
शेषशायी जगन्नाथस्तथा च मधुकैटभौ ।२०
एवं दृष्टं मया तत्र पादपद्मनखे स्थितम् ।
विस्मितोऽहं ततो वीक्ष्य किमेतदिति शङ्कितः ।२१

उसमें सम्पूर्ण स्थावर जङ्गम युक्त ब्रह्माण्ड, मैं विष्णु शंकर, वायु अग्नि, यम, सूर्य, वरुण त्वष्टा कुवेर, इन्द्र, पर्वत समुद्र, नदियाँ, गन्धर्व और अप्सराएं स्थित थी ।१५-१६। वहीं विश्वासु, चित्रकेतु, श्वेत चित्रांगद, नारद, तुम्बुरु, हाहा हूहू, अश्विद्वय, अष्टवसु, साध्यगण, सिद्धगण पितरगण शेष आदि सम्पूर्ण नाग, किन्नर, उरग और राक्षस विद्यमान थे ।१७-१८। उसी नखरूपी दर्पण में वैकुण्ठ, ब्रह्मलोक और पर्वतों में श्रेष्ठ कैलाश, यह सभी मैंने विद्यमान देखे ।१९। उसी नख में वह कमल भी था, जिसने मुझें उत्पन्न किया था । उसी में शेषशायी भगवान विष्णु और मधु-कैटभ नामक दैत्य भी थे ।२०। भगवान बोले कि पांव के अंगूठे के नख में यह अद्भुत दृश्य देखकर मै अत्यन्त विस्मित और शंकित हुआ सोचने लगा कि यह क्या हैं ! ।२१।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णुश्च विस्मयाविष्टः शङ्करश्च तथा स्थितः ।
तां तदा मेनिरे देवी वयं विश्वस्य मातरम् ।२२
ततो वर्षशतं पूर्णं व्यतिक्रांतं प्रपश्यतः ।
सुधामये शिवे द्वीपे विहारं विविधं तदा ।२३
सख्य इव तदा तत्र मेनिरेऽस्मानवस्थितान् ।
देव्यः प्रमुदिताकारा नानाभरणमण्डिताः ।२४
वयमप्यतिरम्यत्वादवभूविम विमोहिता ।
प्रहृष्टमनसः सर्वे पश्यन्भावान्मनोरमान् ।२५
एकदा तां महादेवीं देवीं श्रीभुवनेश्वरीम् ।
तुष्टाव भगवान्विष्णु र्युवतीभावसंस्थितः ।२६
नमो देव्यै प्रकृत्यै च विधात्र्यै सतत नमः ।
कल्याण्यै कामदायै च वृद्ध्यै सिद्धयै नमोनमः ।२७
सच्चिदानन्दरूपिण्यै संसारयोनये नमः ।
पञ्चकृत्यविधात्र्यै ते भुवनेश्वर्यै नमोनमः ।२८

हम तीनों ने ही यह समझ लिया कि यही भगवती सम्पूर्ण विश्व की माता है ।२२। इस प्रकार की अनेक क्रीडाएँ और विभिन्न कौतुको को उस कल्याणकारी सुधामय द्वीप में देखते-देखते हमें सौ वर्ष व्यतीत हो गये ।२३। वहाँ विविध प्रकार के आभूषणों से विभूषित प्रसन्नवदना सभी देवियाँ हम तीनों को सखियों के समान मानने लगी ।२४। हमभी अपने प्रति उनके प्रीतिपूर्ण व्यवहार और मनोहर भावों को प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्न रहते थे ।२५। एक दिन की बात है कि युवती नारी के भावको प्राप्त हुए भगवान् विष्णु उन भुवनेश्वरी महादेवीं को प्रसन्न करने के लिये स्तुति करने लगे ।२६। भगवान विष्णु ने कहा—प्रकृति देवी एवं विधात्री देवी को मेरा सदा नमस्कार है । कल्याणी, कामदा, वृद्धि तथा सिद्धि स्वरूपिणी भगवती कों नमस्कार है ।२७।सच्चिदानन्द स्वरूपिणी तथा विश्व योनि रूपा देवी को नमस्कार है ।२८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वाधिष्ठानरूपायै कूटस्थायै नमोनमः ।
अर्धमात्रार्थभूतायै ह्लेखायै नमोनमः ।२९
ज्ञातं मयाऽखिलमिदं त्वयि सन्निविष्टं ।
त्वत्तोऽस्य संभवलयावपि मातरद्य ।
शक्तिश्च तेऽस्य करणे विततप्रभावा ।
ज्ञाताऽधुना सकललोकमयेति नूनम् ।३०
विस्तार्य सर्वं मखिलं सदसद्विकारं ।
संदर्शयस्यविकलं पुरुषाय काले ।
तत्वैश्च षोडशभिरेव च सप्तभिश्च ।
भासींद्रजालमिव नः किल रंजनाय ।३१

न त्वामृते किमपि वस्तुगतं विभाति ।
व्याप्यैव सर्वमखिलं त्वमास्थिताऽसि ।
शक्तिं विना व्यवहृतुं पुरुषोऽप्यशक्तो ।
सम्भण्यते जननि बुद्धिमता जनेन ।३२
प्रीणासि विश्वमखिलंस तव प्रभावैः ।
स्वैस्तेजसा च सकलं प्रकटीकरोषि ।
अस्त्येव देवि तरसा किल कल्पकाले ।
को वेद देवि चरितं तव वैभवस्य ।३३
त्राता वयं जननि ते मधुकैटभाभ्यां ।
लोकाश्च ते सुविततः खलु दर्शिता वै ।
नीताः सुखस्य भुवने परमां च कोटिं ।
यद्दर्शनं तव भवानि महाप्रभावम् ।३४
नाहं भवो न च विरंचि हि वेद मातः ।
कोऽन्यो हि वेत्ति चरितं तव दुर्विभाव्यम् ।
कानीहं संति भुवनानि महाप्रभावे ।
ह्यस्मिन्भवानि रचिते रचनाकलापे ।३५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्व-अधिष्ठान रूपा, कूटस्थ, देवी को नमस्कार है। अर्धमात्रा की अर्धभूत हल्लेखा को नमस्कार है।२९। हे माता मुझे यह ज्ञात हो गया कि आप ही सम्पूर्ण संसार में प्रतिष्ठित हैं, उसकी उत्पत्ति और संहारिणी आप ही हैं। आपकी-ही सकल लोकमयी शक्ति अत्यन्त प्रभाव शालिनी हैं। वही सब कुछ करती है।३०। सत्-असत् रूप विश्व का विस्तार करके उस चेतन पुरुष के उपयोगार्थ आप ही द्रष्टा होता हैं। आपको सोलह तत्वों और मदादि सात तत्वोंके रूप में परिवर्तित देखकर आपकी सम्पूर्ण क्रीड़ा इन्द्रजाल के समान प्रतीत होती हैं।३१। संसार के सभी पदों में आपके अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। सम्पूर्ण विश्व में आप ही व्याप्त हैं। हे माता बुद्धिमान जनों का कहना है कि आपके द्वारा दी गई शक्ति के अभाव में वह परम पुरुष भी कोई कार्य करने में असमर्थ है।३२। हे भगवती ! आप अपने ही प्रभाव से सम्पूर्ण विश्वका पालन पोषण करती और अपने ही तेज से सब को प्रकट करती है। कल्पात में आपही अपने में विलीन कर लेती है,तब आपके चरित्र और वैभव का यथार्थ ज्ञान किसे हो सकता है ?।३३। हे जगनी ! आपने मधु कैटभ से हमारी रक्षा की फिर हमें सुविस्तृत लोकों का दिग्दर्शन कराया। फिर हमें सुख-सदन रूप मणिद्वीपमें पहुँचाया।३४।मैं, विष्णु अथवा ब्रह्माही जब आपके चरित्र को नही जानते,तब कोई अन्य किस प्रकार जान सकता है। आपके नख-दर्पण में हमने जितने लोक देखे, इनसे अधिक तो आपके रचना-कलाप में ही पड़े होंगे।३५।

अस्माभिरत्र भुवने हरिरन्य एव।
दृष्टः शिवः कमलजः पृथितप्रभावः।
अन्येषु देवि भुवनेषु नसंति किं ते।
कि विद्म देवि विततं तव सुपुभावम् ।३६
याचेऽम्ब तेऽङ घ्रिकमलं प्रणिपत्य कामम्।
चित्ते सदा वसतु रूपमिदं तवैत।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामापि वक्त्रकुहरेसतरे सततं तवैव ।
संदर्शनं तव पदाम्बुजयोः सदैव ।३७
भृत्योऽयमस्ति सततं मयि भावनीय ।
त्वां स्वामिनीति मनसा ननु चिन्तयामि ।
एषाऽऽवयोरविरता किल देवि भूयाद् ।
व्याप्तिः सवैंव जननी सुतयोरिवार्ये ।३८
त्वं वेत्सि सर्वमखिलं भुवनप्रपञ्चं ।
सर्वज्ञया परिसमाप्तिनितांतभूमिः ।
किं पामरेण जगदम्ब निवेदनाय ।
यद्युक्तामाचर भवानि तवेङ्गितं स्यात् ।३९
ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरुमापतिश्च ।
संहारकारक इयं तु जने प्रसिद्धिः ।
किं सत्यमेतदपि देवि तवेच्छया वै ।
कर्तुं क्षमा वयमजे तव शक्तियुक्ता ।४०
धात्रीव देवि वरदे नु जगद्विभर्ति ।
आधारशक्तिरखिला तव वै विभाति ।
सूर्योऽपि भाति वरदे प्रभया युतस्ते ।
त्वं सर्वमेतदखिलं विरजा विभासि ।४१
ब्रह्माहमीश्वरश्च किल ते प्रभावात् ।
सर्वे वयं जनियुता न यदा तु नित्याः ।
केऽन्ये सुराः शतमखप्रमुखाश्च नित्या
नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा ।४२

आपके इस लोक में हमने अपने से अन्य विष्णु, शिव और ब्रह्मा देखे हैं तो वे अन्याय लोकों में भी क्यों न होंगे ? हम आपके सुप्रभाव को कैसे जान सकते हैं ।३६। हे अम्बे ! हम आपके चरणाम्बुजों पर शिर रखकर यही वर चाहते हैं कि आपका यह भव्य रूप हमारे हृदयों में सदा निवास करे आपके दर्शन सदा मिलते रहें ।३७। हे माता !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप हममें सदा सेवक भाव रखें और मैं आपको सदा अपनी स्वामिनी मानता रहूँ। हमारा आपका सम्बन्ध सदा ही माता-पुत्र का बना रहे ।३८। हे जगदम्बे ! आप सम्पूर्ण लोक प्रपंच की ज्ञाता हैं। हे भवानी ! सर्वज्ञता समाप्त होती है आप उसकी परिसीम स्वरूपा हैं। हे भवानी! सब कुछ आपके संकेत से ही सम्भव है, तो हम पामर उसमें कह भी क्या सकते हैं ।३९। यह प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा स्रष्टा, विष्णु पालक और उमा पति शिव संहारकर्ता हैं, परन्तु क्या यह यथार्थ है ? सत्य तो यह है कि आपकी इच्छा से सशक्त होकर ही हम अपने कार्य में समर्थ होते हैं ।४०। हे वरदे ! आप जगद्धात्री रूप से विश्व का पालन करती हैं आपकी शक्ति से ही विश्व स्थिर है, आपके प्रभाव से सूर्य प्रकाशित हैं इस प्रकार आप ही अपनी निगुर्ण शक्ति से विश्व को विभासित करती हैं ।४१। ब्रह्मा और महेश आपके प्रभाव से ही उत्पन्न होतेहैं। जब हम ही नित्य नहीं है तो इन्द्रादि देवगण का नित्य होना कैसा सम्भव है ? यथार्थ में तो आप ही सबकी माता नित्या और पुराण प्रकृति है ।४२।

त्वं चेद्भवानि दयसे पुरुषं पुराणं ।
जानेऽहमद्य तव सन्निधिगः सदैव ।
नोचेदहं विभुरनादिरनीह ईशो ।
विश्वात्मधीरिततमः सुकृतिः सदैव ।४३
विद्यात्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां ।
शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव ।
त्वं कीर्तिकांतिकमलामलतुष्टिरूपा ।
मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्यलोके ।४४
गायत्र्यसि प्रथमवेदकला त्वमेव ।
स्वाहा स्वधा भगवती सगुणाऽर्धमात्रा ।
आम्नाय एव विहितो निगमो भवत्यौ ।
संजीवनाय सततं सुरपूर्वजानाम् ।४५
मोक्षार्थमेव रचयस्यखिलं प्रपञ्चं ।
तेषां गताः खलु यतो ननु जीवभावम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंशा अनादिनिधनस्य किलानघस्य ।
पूर्णार्णवस्य विततता हि यथा तरङ्गाः ।४६
जीवो यदा तु परिवेति तथैव कृत्यं ।
त्वं संहरस्यखिलमेतदिति प्रसिद्धम् ।
नाट्यं नटेन रचितं वितथेऽन्तरंगे ।
कार्ये कृते विरमसे प्रथितप्रभावा ।४७
त्रात्री त्वमेव मम मोहमयाद्भवाब्धेः ।
त्वामम्बिके सततमेमि महातिदे च ।
रागादिभिर्विरचिते वितथे किलांते ।
मामेव पाहि बहुदुःखकरे च काले ।४८
नमो देवि महाविद्ये नमामि चरणौ तव ।
सदा ज्ञानप्रकाश मे देहि सर्वार्थदे शिवे ।४९

आप पुराण पुरुष पर भी सदा दया रखती हैं,यह बात मैं आपका सामीप्य करते ही जान सका हूँ । अन्यथा अपने को वह पुराण पुरुष सर्व व्यापका आदि अनीह और सर्वेश्वर समझ कर अहंकार में सदा के लिए डूब जाता ।४३। आप ही बुद्धिमानों की बुद्धि और बलवानों की शक्ति हैं आप ही कीर्ति, कमला निर्मला, तुष्टिरूपा और मनुष्य लोक में मुक्तिप्रदा हैं ।४४। वेदों की प्रथम गायत्री आप ही हैं, स्वधा, सगुणा और अर्द्धमात्रा भी आप हैं । देवादि प्राणियों की रक्षा और मीक्ष के लिये आपके ही आगम और निगम को रचा है ।४५। उनकी मुक्ति के लिये ही यह सम्पूर्ण प्रपंच आपने रचा है जैसे समुद्र की तरङ्गे उसी का अंश हैं वैसे ही आदि अन्त रहित ब्रह्म के अंश रूपी जीवों की मुक्ति के लिए आपने शास्त्र विधान किया है । जब जीव आपको विधावी और संहार शक्ति जान लेता है, तभी आप अपने कार्यों से संतुष्ट होता है। जैसे सूत्रधार रहस्य और चमत्कार के खतों को करके सन्तुष्ट होती हैं । जैसे सूत्रधार रहस्य और चमत्कार के खेलों को करके सन्तुष्ट होता है ।४६।४७। इस महामोह स्वरूप संसार सागर से आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही हमारी रक्षा कर सकती है। हे अम्बिके! नागद्वेषादि द्वन्द्वों से उपस्थित होने वाले घोर कष्टप्रद अन्तकाल में आप सदा मेरी रक्षा करती रहें।४८। हे देवि! महाविदे! सर्वार्थ के देने वाली शिवे! आपके चरणों में वारम्वार नमस्कार करता हूँ, आप मुझे सदा ही ज्ञान का प्रकाश प्रदान करती रहें।४९।

शिव ब्रह्मा द्वारा स्तुति

इत्युक्त्वा विरते विष्णौ देवदेशे जनार्दने।
उवाच शङ्करः सर्वं: प्रणतः पुरतः स्मितः।१
यदि हरिस्तव देवि विभावजस्दनु पद्मज एव तवोद्भवः।
किमहमत्र तवापि न सद्गुण सकललोकविधे चतुरा शिवे।२
त्वमभि भूः सलिलं पवनस्तथा स्वमपि वह्निगुणश्च तथा पुनः।
जननि तानि पुनः करणानि च त्वमसि बुद्धमनोऽप्यथ हंकृति॥३
न च विदन्ति वदन्ति च येऽन्तथा हरिहराजकृतं निखिलंजगत्।
तव कृतास्त्रय एव सदैव ते विरचयन्ति जगत्सचराचरम्॥४
अवनिवातुखवह्निजलादिभिः सविषयैः सगुणैश्च जगद्भवत्।
यदि तदा कथमद्य च तस्फुटं प्रभवतीति तवैव कलामृते॥५
भवसि सर्वमिदंसचराचरं त्वमविष्णुशिवाकृतिकंल्पितम्।
विविधवेषविलासकुतूहलैर्विरमसे रमसेऽम्ब यथारुचि॥६
सकललोकसिसृक्षुरहं हरिः कमलभूश्च भवाम तदऽम्बिके।
तव पदाम्बुजपांसुपरिग्रह समधिगम्य तदा ननु चक्रिम॥७

ब्रह्माजी ने कहा—हे नारद! जब भगवान विष्णु इस प्रकार स्तुति कर चुके तब भगवान शंकर प्रणत से भाव से भगवती के समक्ष खड़े होकर कहने लगे।१। शिवजी बोले—हे शिवे! यदि विष्णु आपके पद कमल से उत्पन्न हुए और फिर ब्रह्मा उत्पन्न हुए तो क्या मैं सद्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुण सम्पन्न आपके द्वारा ही नहीं जन्मा हूँ ? क्योंकि आप सम्पूर्ण विश्व के सृजन में चतुर हैं ।२। आपही भूमि, जल, पवन, आकाश और अग्नि रूपा हैं तथा आप ही मन, बुद्धि और अहकार स्वरूपिणी हैं ।३। जो मनुष्य ब्रह्मा, विष्णु और शिव को संसार का रचयिता कहते हैं वे कुछ भी नहीं जानते । क्यों वास्तव में आपके द्वारा ही उत्पन्न किये गए यह तीनों देवता आपके ही आदेश से सृजन पालन और प्रलय करते हैं ।४। यदि पृथिवी, वायु आकाश, अग्नि और जल आदि पंच महाभूतों गुणों और विषयों से सृष्टि के उत्पन्न होने वाले जड़वादी सिद्धान्त को मान लें तो भी हे अम्बे ! आपकी कला के विना वह व्यक्त किस प्रकार हो सकता है ? ।५। हे अम्बे ! आप ब्रह्मा द्वारा सृजित विश्व में व्याप्त रह रहकर स्वेच्छा से विविध रूप रखकर विभिन्न क्रीड़ायें करती है और प्रलय काल उपस्थित होने पर ही विश्राम करती हैं।६। जब हम त्रिदेव ब्रह्माण्ड की रचना करना चाहते हैं तब आपके पदाम्बुजों की धूल को प्राप्त करके ही हम अपने कार्य में सम्भव होते हैं ।७।

यदि दयार्द्रमना न सदाम्बिके कथमहं विहितश्च तमोगुणः ।
कमलजश्च वेजोगुणसम्भवः सुविहितः किमु सत्वगुणो हरिः ॥८
यदि न ते विषमा मतिरम्बिके कथमिदं बहुधा विहितं जगत् ।
सचिवभूपतिभृत्यजनावृत बहुधनैश्च समाकुलम् ॥९
तव गुणास्त्रय लव सदा क्षमाः प्रकटनावनसंहरणेषु वै ।
हरिहरद्रुहिणाश्चक्रमात्वयाविरचितांस्त्रिजगतांकिलकारणम्॥१०
परिचितानि मया हरिणा तथा कमलजेन विमानगतेन वै ।
पथिगतम वनानि कृतानि वा कथय केनत्वहते भवानि च ॥११
सृजसिपासिजगजगदाम्बिके स्वकलया कियदिच्छसि नाशितुम्।
रमयसे स्वषत पुरुषं सदा तव गतिं न विद्म वयं शिवे ॥१२
जननि देहि पदाम्बुजसेवनं युवयिभागवतानपि नः सदा ।
पुरुषतामधिगस्य पदांम्बुजाद्विरहिताः क्व लभेम सुखं स्फुटम्॥१३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न रुचिरस्ति ममांब पदांबुजं तव विहाय शिवे भुवनेष्वलम् ।
निवसितुं नरदेहमवाप्य च त्रिभुवनस्य पतित्वमवाप्य वै ॥१४

हे अम्बिके ! यदि आप सदा ही दयार्द्र मन वाली रही तो मुझ में तमोगुण का समावेश क्यों करती तथा ब्रह्मा को रजोगुण से और विष्णु को सत्वगुण युक्त न करती ।८। यदि आपकी गति में विषमता न होती तो संसार के प्राणियों को विभिन्न रूप का क्यों बनाती ! तथा सचिव, राजा, सेवक, धनिक और निर्धन का भेद क्यों होता ? ।९। आपके तीन गुण क्षमा, प्राकट्य और संहारण में ही विश्व उत्पन्न हो सकता था तों भी अपने सुचारु रूपमें कार्य सम्पादन हेतु ब्रह्मा, विष्णु और शिव को उत्पन्न किया । यह सब आपकी कृपा ही तो है ।१०- मैं हरि और ब्रह्मा हम तीनो इस विमान में स्थित रहकर ही आपके प्रभाव में परिचित हो गये । मार्ग में जो अनेकानेक भवन हमें दृष्टिगोचर हुए हैं उनकी रचना आपके अतिरिक्त और कौन कर सकता है ? ।११। हे जगदम्बे ! आप अपनी हीं कला और इच्छा से संसार का सृजन पालन और संहार करती हुई अपने पति परम पुरुष को प्रसन्न करती हैं हम आपकी लीलाओं को जांनने में समर्थ नहीं हैं ।१२। हे जननी ! हम युवती भाव में स्थिर त्रिदेवों को अपने पवित्र चरण कमलों की सेवा के लिए समर्थ करिए, क्योकि भविष्य में, यदि पुरुष भाव को प्राप्त हो गये तो हमें यह सुख कहाँ प्राप्त होगा ? ।१३। हे शिवे ! आपके पदाम्बुजों के बिना किसी भी भुवन में रहने की मेरी इच्छा नहीं ।१४।

सुदति नास्ति मनागपि मे रतिर्युवति भावमवाप्य तवान्तिके ।
पुरुषता क्व सुखाय भवत्यलं तव पदं न यदीक्षणगौरवम् ॥१५
त्रिभुवनेषु भविष्यत्यंबिके मम सदैव हि कीर्तिरनाविला ।
युवतिभावमवाप्य पदांदुजं परिचितं तव संसृतिनाशनम् ॥१६
भुवि विहाय तवान्तिकसेवनं क इह वांछति राज्यमकटकम् ।
तिटरुसौ किल यातियुगात्मतांननिकटैयदितेऽङ्घ्रिसरोरुहम्॥१७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपसि ये निरता मुनयोऽमलास्तव विहाय पदाम्बुजपूजनम् ।
जननि तेविधिनाकिलवंचिताः परिभवो विभवो परिकल्पितः।१८
न तपसानदमेन समाधिना न च तथा विहतैः क्रतुभिर्यथा ।
तव पदाब्जपरागनिषेवणावभवति मुक्तिरजे भवसागरात् ।१९
कुरु दयां दयमे यदि देवि मां कथय मंत्रमनाविलमद्भुतम् ।
समभवं प्रजपन्सुखितो ह्यहं सुविशदं च नवार्णमनुत्तमत् ।२०
प्रथमजन्मनि चाधिगतो मया तदधुना न विभाति नवाक्षरः ।
कथय मां मनुमद्य भवार्णवाज्जनि तारय तारय तारके ।२१

युवती भाव प्राप्त करके हम आपके चरणों के दर्शन कर सकें। परन्तु पुरुष भाव पानेपर इनके दर्शन दुर्लभ हो जायेंगे। इसीलिए ऐसे पुरुषत्व में सुख ही क्या होगा।१५। हे अम्बे! इस युवती रूप में ही हम आपके बन्धन-मुक्त करने वाले चरणों को जान सके। इससे तीनो भुवनों में हमारी कीर्ति भी बनी रहेगी।१६। विश्व में ऐसा कौन-सा जीव होगा जो आपके सामीप्य की कामना न करके निष्कंकक राज्य चाहेगा। आपके चरणों से दूर रहने पर युग-युग में जन्म-मरण के चक्र में पड़ना होता है।१७। जो राग-रहित मुनिजन आपके चरणाम्बुजों को छोड़, तप करते हैं, वे महान सिद्धि को पाकर मुक्त नहीं होते। उन्हें भगयहीन ही कहा जा सकता है।१८। तप, इन्द्रिय-दमन, समाधि तथा सविधि यज्ञों के द्वारा भी वह शाश्वत मोक्ष प्राप्त नहीं होती, जो आपके पदाम्बुजों की रज प्राप्त करने वालों को मिलता है।१९। हे देवी! यदि मुझ पर दया करना चाहें तो मुझे अपना निर्मल अद्भुत, सुविशद और उत्तम नवार्ण मन्त्र प्रदान कीजिए, जिसका तप करता हुआ मैं सदा सुखी रहूँ।२०। मुझे पूर्व जन्म में उस नवार्ण मन्त्र की दीक्षा दी गई थी परन्तु अब वह नवाक्षर मन्त्र विस्मृत हो गया है, उसे आज पुनः प्रदान करके मुझे भवसिंधु से पार करिए।२१।

इत्युक्ता सा तदा देवी शिवेनाद्भुततेजसा ।
उचचारांविका मन्त्र प्रस्फुटं च नवाक्षरम् ।२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तं गृहीत्वा महादेवाः परां मुदमवाप ह ।
प्रणम्यं चरणौ देव्यास्तत्रैवावस्थितः शिवः ।२३
जपन्नेवाक्षरं मन्त्रं कामदं मोक्षदं तथा ।
बीजयुक्तं शुभोच्चारं शङ्करस्तस्थिवास्तदा ।२४
तं तथाऽवस्थितं दृष्ट्वा शंकरं लोकशङ्करम् ।
अवोवं तां महामायां संस्थितोऽहं पदांतिके ।२५
नं वेदास्त्वामेवं कलयितुमिहासन्नपटवो ।
यतस्ते नोचस्त्वां सकलजनधात्रीमविकलाम् ।
स्वधाभूता देवी सकलमखहोमेषु विहिता ।
तदा त्वं सर्वज्ञा जननि खलु जाता त्रिभुवने ।२६
कर्त्ताऽहं प्रकरोमि सर्वमखिलं ब्रह्माण्डमत्यद्भुतं
कोऽन्योस्तीह चराचरे त्रिभुवने मत्तः समर्थः पुमान् ।
धन्योऽस्म्यत्र न संशयः किल यदा ब्रह्माऽस्मि लोकातिगो ।
मग्नोऽहं भवसागरे प्रवितंते गर्वाभिवेशादिति ।२७

ब्रह्माजी ने कहा—हे नारद ! अत्यन्त तेज वाले शिवजी के ऐसा निवेदन करने पर भगवती ने नवाक्षर मन्त्र का स्पष्ट उच्चारण किया ।२२। उस मन्त्रको प्राप्त करके शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होतेहुए भगवती के चरणों में प्रणाम करके खड़े रहे ।२३। और सभी कामनाओं के देने वाले मोक्षप्रद वीजयुक्त उस शुभोच्चारण वाले नवाक्षर मन्त्र का जप करने लगे ।२४। लोक कल्याणकारी भगवान शिवजी को जप करते हुए देखकर मैं भी भगवती के समीप जाकर बोला ।२५। हे अम्बे ! वेद आपको भले प्रकार नहीं जान सकते । क्योंकि उन्होंने आप सम्पूर्णजीवों की धात्री का कहीं भी वर्णन नहीं किया । फिर भी सब यज्ञों में स्वधा रूप में आहूवान होने से त्रिभुवन में आपका सर्वज्ञा रूपमें स्मरणकिया जाता है ।२६। हे माता ! मैं स्रष्टा हूँ । तभी ब्राह्माण्डों का रचयिता हूँ तीनों लोकों में मुझसे अधिक समर्थ कौन होगा ? मैं लोकातीत ब्रह्मा होने से धन्य हूँ ।२७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अद्याहं तव पादपंकजपरागादानागर्वेण वै
धन्योऽस्मीति यथार्थवादनिपुणो जातः प्रसादाच्च ते ।
याच त्वा भवभीतिनाशचतुरां मुक्तिप्रदां चेश्वरीं ।
छित्वा मोहकृतं महातिनिगडंत्वद्भक्तियुक्तं कुरु ।२८
अतोऽहं च जातोविमुक्तः कथं स्यां
सरोजादमायात्त्वदाविष्कृद्वै ।
तवाज्ञाकरः किंकरोस्मीति नूनं
शिवे पाहि मां मोहमग्नं भवाब्धौ ।२९
न जानन्ति ये मानवास्ते ददन्ति
प्रभुं मां तवाद्वै चरित्रं पवित्रम् ।
षजंतीह ये याजकाः स्वर्गकामा
न ते ते प्रभावं विदत्येव कामम् ।३०
त्वया निर्मितोहं विधित्वे विहारे
विकर्तुं चतुर्धा विधायादिसर्गम् ।
अहं वेद्मि कीऽन्यो विवेदादिमाये
क्षमस्वापराधं त्वह कारज मे ।३१
श्रमं येऽष्टधा योगमार्गे प्रवृत्ताः
प्रकुर्वंत्ति मूढाः समाधौ स्थिता वै ।
न जानन्ति ते नाम मोक्षप्रदंवा
समुच्चारितं जातु मार्तमिषेण ।३२
विचारे परे तत्त्वसंख्याविधाने
पदे मोहिता नाम ये संविपाय ।
न कि ते विमूढाभावाब्धौ भवानि ।
त्वमेवासि संसारेमुक्तिप्रदा वै ।३३

आपकी कृपा से ही मुझे यथार्थभाव में निपुणता प्राप्त हुईहैं । भव भय हारिणी, मोक्षप्रदायिनी, सर्वेश्वरीसे मैं यही वर मांगता हूँ कि मुझे मोहात्मक चोर दुःखदायी वन्धन से छुड़ा कर अपनी भक्ति से सम्पन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करिए ।२८। मैं अपनी मुक्ति की चिन्ता में व्याकुल मोह रूपी भवसिंधु में निमग्न हूँ, आप मुझ सेवक की रक्षा करिए ।२९। आपके पुरातन चरित्र की महिमा न जानने वाले मुझे ही प्रभु कहते हैं। जो यज्ञत्ता इन्द्रादिका आह्वान करने वाले सभी आपके प्रभावसे सर्वथा अपरिचित ही हैं ।३०। हे आदिमाये ! आदि सृष्टि को चार प्रकार की करने के लिए आपने मुझे विधाता बनायाहै । परन्तु अहंकारमें पड़कर मैं सम्पूर्ण विश्व को स्वरचित ही समझ बैठा हूँ । मुझमें जो यह मिथ्या अहंकार उत्पन्न हो गया है कि मुझसे बढ़कर इसका ज्ञाता कौन है, मेरे इस अपराध को क्षमा करिये ।३१। हे माता ! मोक्ष-लाभ के लिए योग-साधन अथवा समाधि के कष्ट उठाने वाले मूर्ख हैं, क्योंकि आपके नामोच्चार मात्र से मोक्ष मिल सकता है, यह ज्ञान उन्हें नहीं है ।३२। जो आपके नाम का अपना छोड़कर तत्वों की संख्या के विधान में लगे हैं, वे क्या मूर्ख नहीं हैं ।३३।

परं तत्वविज्ञानमाद्यैर्जनैर्यं ।
दजे चानुभूतं त्यजन्त्येव ते किम् ।
निमेषार्धमात्रं पवित्रं चरित्रं ।
शिवा चांबिकाशक्तिरीशेति नाम ।३४
न किं त्वं समर्थाऽसि विश्वं विधातुं
दृशैवाशु सर्वं चतुर्धा विभक्तम् ।
विनोदार्थमेवंविधं माविधाया
विसर्गे किलेदं करोषीति कामम् ।३५
हरिः पालकः किं त्वयाऽसौ मधोर्वा
तथा कैटभाद्रक्षितः सिंधुमध्ये ।
हरः संहृतः किं त्वयाऽसौ न काले ।
कथं मे भ्रुवोर्मध्यदेशात्स जातः ।३६
न ते जन्म कुत्रापि दृष्टं श्रुतं वा
कुतः संभवस्ते न कोऽपीह वेद ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किलाद्यासि शक्तिस्त्वमेका भवानि।
स्वतंत्रैः समस्तैरतो बोधिताऽसि ।३७
त्वया संयुतोऽहं विक्तुं समर्थो हरिस्त्रातुमंब त्वया संयुतश्च।
हरः संप्रहर्तुं त्वयैवेह युक्ताः क्षमा नाद्य सर्वे त्वया विप्रयुक्ताः३८
तथाऽहं हरिः शङ्करः किंतथाऽन्येनजाता नसतीह नो वा भविष्यन्
नमुह्यन्तिकेऽरिंमस्तवायंचिरित्रेविनोदेविवादास्पदेऽल्पधीमान्।३९
अकर्ता गुणस्पष्ट एवाद्य देवो निरीहोऽनुपाधिः सदैवाकलश्च ।
तथापीश्वरस्ते वितीर्ण विनोदं सुसंपश्यतीत्याहुरेवं निधिज्ञाः।४०

जिन ज्ञानियों को परमतत्व को ज्ञान हो जाता है, वे क्या आधे निर्मेष के लिए भी आपके पवित्र चरित्र युक्त, शिवा अम्बिका, शक्ति, ईश्वरी आदि नामों का त्याग करते हैं ।३४। हे आदि सर्गे ! क्या आप स्वयं ही सृष्टि रचना में समर्थ नहीं हैं ? मुझ ब्रह्मा द्वारा स्वेच्छा से सृजन कराना तो आपका मनोविनोद मात्र है ।३५। महासागर से मधु कैटभ का संहार करके आपने ही विष्णु की रक्षा की, तभी वे पालन-कर्त्ता बने । यदि आप उनकी रक्षान करती तो उन्हें यह वर किसप्रकार मिलता ? वैसे ही यदि आप सर्वसंहारक रुद्र का सहार न करती तो वे मेरी भौंहों के बीच से किस प्रकार उत्पन्न होते ।३६। आपका उत्पन्न होना न कभी किसी ने सुना, न देखा, किससे आपका जन्म हुआ, यह भी कोई नहीं जानता । आप ही एकमात्र आद्या शक्ति हैं, वेद भी यही कहते हैं ।३७। आपकी शक्ति से सृजन, विष्णु पालन और शिव संहार करते हैं । आपके योगविना हम कुछ भी तो नहीं कर सकते ।३८। जैसे हम तीनों उत्पन्न हुए हैं वैसे ही क्या अन्य जीव उत्पन्न नहीं हुए, या भविष्य में न होगे ! फिर भी अल्प बुद्धि वालों के विचित्र विनोद पूर्ण विवादों में पकड़कर किसे भ्रम नहीं होगा ? ।३९। आपके चमत्कारों के देखने वाले वही अकर्त्ता, गुणों से व्यक्त, निरीह, निरुपाधि, निरवयव आदि पुरुष ईश्वर ही हैं, ऐसा साँख्य के विद्वान् कहते हैं ।४०।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टादृष्टविभेदेऽस्मिन्प्रावतवत्तो वै पुमान्नरः ।
नान्यः कोऽपि तृतीयोऽस्ति प्रमेये सुविचारिते ।४१
न मिथ्या वेदवाक्यं वा कल्पनीयं कदाचन ।
विरोधोऽयं मयाऽत्यन्तं हृदये तु विशंकितः ।४२
एवमेवाद्वितीयं यद्ब्रह्म वेदा वदन्ति वै ।
सा किं त्वं वाप्यसौ वा किं संदेहं विनिवर्तय ।४३
नः संशयं न मे चेतः प्रभवत्यविशंकितम् ।
द्वित्वैकत्वविचारेऽस्मिन्निमग्नं क्षुल्लकं मनः ।४४
स्वमुखेनापि संदेहद्दे त्तुमर्हसि मामकम् ।
पुण्यभोगाच्च मे प्राप्ता सङ्गतिस्तव पादयोः ।४५
पुमानसि त्वं स्त्री वाऽसि वद विस्तरतो मम ।
ज्ञात्वाऽहं परमां शक्तिं मुक्तः स्यां भवसागरात् ।४६

उनके अनुसार व्यक्त और अव्यक्त के भेद वाले विश्व में आप से अधिक श्रेष्ठ कोई नहीं हैं ।४१। यद्यपि वेद वाक्य मिथ्या नहीं हैं, तो भी मैं अनुभव द्वारा एक के स्थान पर दो पदार्थ समझता हूँ । अतः वेद से मत न मिलने के कारण मैं सन्देह में पड़ गया हूँ, अथवा पुरुष आप मेरी इस शंकाका समापान करिये ।४२-४३।क्योंकि मेरा मन इस समय द्वैत-अद्वैत के तर्क में पड़ कर किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँच रहा है ।४४। मुझें अपने पुण्य से ही आपके चरण कमलों का ससर्ग प्राप्त हुआ हैं, हे माता ! आप नारी हैं अथवा पुरुष ! यह मुझे विस्तार पूर्वक बताने की कृपा करिये ।४५-४६।

देवी द्वारा ज्ञानोपदेश

इति पृष्टा मया देवी बिनयावनतेन च ।
उवाच वचः श्लक्ष्णमाद्या भगवती हि सा ।१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदैकत्वभेदोऽस्ति सर्वदैव ममास्य च ।
योऽसौ साहमहं योऽसौ भेदोऽस्ति मतिविभ्रमात् ।२
आवयोरंतरं सूक्ष्मं यो वेद मतिमान्हिंसः ।
विमुक्तः स तु संसारान्मुच्यते नात्र संशयः ।३
एकमेवाद्वितीयं वै ब्रह्मा नित्यं सनातनम् ।
द्वैतभावं पुनर्याति काल उत्पत्तिसंज्ञके ।४
यथा दीपस्तथोपाधेर्योगात्संजायते द्विधा ।
छायेवादर्शमध्ये वा प्रतिबिम्बं तथाऽऽवयोः ।५
भेद उत्पत्तिकाले वै सर्वार्थं प्रभवत्यज ।
दृश्यादृश्यविभेदोऽयं द्वे विधेसति सर्वथा ।६
नाहं स्त्री न पुमांश्चाहं न क्लीवं सर्गसंक्षये ।
सर्गे सति विभेदः स्यात्कल्पितोऽयं धिया जनैः ।७

ब्रह्माजी ने कहा—मेरे इस प्रकार के विनीत प्रश्न को सुनकर उन आद्यशक्ति ने मधुर वाणी में कहा ।१। देवी बोली एक मात्र सद् ही ब्रह्म है, उनमें और मुझमें भेद नहीं है, जो वह है वही मैं हूँ,किन्तु लोग मति के भ्रम से ही मुझमें और उसमें भेद समझते हैं ।२। हम दोनों में स्थित सूक्ष्म अवान्तर भेद को जो जान लेता है, वह निःसन्देह इस संसार-जाल से सदैव के लिए विमुक्त हो जाता है ।३। एकमात्र ब्रह्म ही अद्वितीय है,वही नित्य और सनातन है,परन्तु जब वह विश्व की रचना में तत्पर होता है, तब वह अनेक रूप हो जाता है ।४। जैसे किसी उपाधि के कारण दीपक एक से अनेक रूप हो जाता है या दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखाने पर एक का अनेकत्व प्रतीत होताहै वैसे ही हम दोनों की प्रतीति होती है ।५। हे ब्रह्मा ! सृष्टिकाल में सृजन के लिए ही यह भेद होता है, सृष्टि का अन्त होने पर मैं स्त्री, पुरुष या नपुंसक कुछ नहीं रहती ।६-७।

अहं बुद्धिरहं श्रीश्च धृतिः कीर्तिः स्मृतिस्तथा ।
श्रद्धा मेधा दया लज्जा क्षुधा तृष्णा तथा क्षमा ।८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कांतिः शान्तिः पिपासा च निद्रा तन्द्रा जराऽजरा ।
विद्याऽविद्या स्पृहा वांछा शक्तिश्चाशक्तिरेव च ।९
वसा मज्जा च त्वक्चाहं दृष्टिर्वाग्मांऽनृता ।
परा मध्या व पश्यन्ती नाड्योऽहंग्र विविधाश्च याः ।१०
किं नाहं पश्य संसारे सद्वियुक्तं किमस्ति हि ।
सर्वमेवाहमित्येवं निश्चयं विद्धि पद्मजा ।११
एतैर्मे निश्चितै रूपैर्विहीनं किं वदस्व मे ।
तस्मादहं विधे चास्मिन्सर्गे वै विततोऽभवम् ।१२
नूनं सर्वेषु देवेषु नानानामधरा ह्यहम् ।
भवामि शक्तिरूपेण करोमि च पराक्रमम् ।१३
गौरी ब्राह्मी तथा रौद्री वाराहि वैष्णवी शिवा ।
वारुणी चाथ कौबेरी नारसिंही च वासवी ।१४

मैं ही बुद्धि हूँ, श्री, धृति, कीर्ति, स्मृति, श्रद्धा, मेधा, दया, लज्जा क्षुधा, तृष्णा एवं क्षमा भी मैं ही हूँ, ।८। कान्ति शान्ति,पिपासा, निद्रा, तन्द्रा, जरा, अजरा, विद्या, अविद्या, स्पृहा, वाँछा, शक्ति और अशक्ति भी मैं ही हूँ ।९। वसा, मज्जा, त्वचा, दृष्टि, वाणी, सत्य, असत्य, परा मध्या, पश्यन्ती तथा विविध प्रकार की नाड़ियाँ भी मैं ही हूँ, ।१०। देखौं संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसमें मेरी सत्ता न हो। कमलोद्भव ! सब में मैं ही स्थित हूँ, इसमें सन्देह नहीं है ।११। यह सब मेरे ही स्वरूप हैं, मेरे रूप से अतिरिक्त यदि कुछ हो तो मुझे बताओ। मैं इन सब कारणों से सम्पूर्ण सृष्टि में ही व्याप्त हूँ ।१२। मैं ही सम्पूर्ण देवताओं के रूप में विभिन्न नामों से स्थित हूँ तथा शक्ति के रूप में पराक्रम करती हूँ ।१३। मैं ही गोरी, ब्राह्मी, रौद्री, वाराही, वैष्णवी और शिवा हूँ। वारुणी, कौबेरी, नारसिंही और वासवी नाम की शक्ति भी मैं ही हूँ ।१४।

उत्पन्नेषु समस्तेषु कार्येषु प्रविशामि ताम् ।
करोमि सर्वकार्याणि निमित्तं तं विधाय वै ।१५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जलं शीतं तथा वह्नावौष्ण्यं ज्योतिर्दिवाकरे ।
निशानाथे हिमो कामं प्रभवामि यथा तथा ।१६
मया त्यक्तं विधे नूनं स्पंदितुं न क्षमं भवेत् ।
जीवजातं च संसारे निश्चयोऽयं ब्रूवे त्वयि ।१७
अशक्तः शङ्करो हन्तुं दैत्यान्किल मयोज्झितः ।
शक्तिहीनं नरं ब्रूते लोकश्चैवातिदुर्बलम् ।१८
रुद्रहीन यथा सर्वं न वदन्ति नराधमम् ।१९
पतितः स्खलितो भीतः शान्तः शत्रुवशं गतः ।
अशक्तः प्रोच्यते लोके न रुद्रः कोऽपि कथ्यते ।२०
तद्विद्धि कारणं शक्तिर्यथा त्वं च सिसृक्षसि ।
भविता च यदा युक्तः शक्त्या कर्ता तदाऽखिलम् ।२१

सब कार्यों के उत्पन्न होने पर मैं ही उनमें प्रवेश करती हूँ और पुरुष को निमित्त बना कर मैं ही सब कार्यों को करती हूँ ।१५। जल में जो शीतलता है वह मैं हूँ, अग्नि में उष्णता, सूर्य में ज्योति और निशानाथ चन्द्रमा में ठण्डक भी मैं ही हूँ ।१६। संसार के सम्पूर्ण जीवों की स्पन्दन क्रियामें मैं हूँ,मेरे अभाव में वह नहीं रह सकती यह निश्चय समझो ।१७। मेरे विना शिवजी दैत्यों का संहार करने में असमर्थ हैं। संसार मैं भी (मुझ) शक्ति से हीन पुरुष दुर्बल ही तो कहे जाते हैं।१८। उन दुर्बलों को रुद्रहीन या विष्णुहीन नहीं कहा जाता, अपितु उस नराधम को शक्ति हीन कहा जाता है ।१९। गिरे हुए, लड़खड़ावे, डरे हुए, शान्त तथा शत्रु के वंश में पड़े व्यक्ति को सब शक्ति हीन कहते हैं, रुद्रहीन कोई नहीं कहता ।२०।हे ब्रह्मा! तुम भी जो सृजन करते हो,उसका कारण भी शक्ति ही है । भविष्य में शक्ति सम्पन्न होने पर ही विश्व रचयिता बन सकोगे ।२१।

तथा हरिस्तथा शम्भुस्तथेन्द्रोऽथ विभावसुः ।
शशी सूर्यो यमस्त्वष्टा वरुणः पवनस्तथा ।२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरा स्थिरा तदा धर्तुं शक्तियुक्ता यदा भवेत् ।
अन्यथा चेदशक्ता स्यात्परमाश्च धारणे ।२३
यथा शेषस्तथा कर्मो ग्रेऽन्ये सर्वे च दिग्गजाः ।
मद्युक्ता वै समार्थाश्च स्वानि कार्याणि साधितुम् ।२४
जलं पिबामि सकलं च संहरामि विभावसुम् ।
पवनं स्तं भयाम्ह्यु यदिच्छामि तथा चरम् ।२५
तत्वानां चैव सर्वेषां कदापि कमलोद्भव ।
असतो भावसन्देहः कर्तव्यो न कदाचन ॥२६
कदाचित्प्रागमावः स्यात्प्रध्वंसाभाव एव वा ।
मृत्पपिण्डेषु कपालेषु घटाभावो यथा तथा ।२७
अद्यात्र पृथिवो नास्ति क्व गतेति विचारणे ।
संजातो इति विज्ञेया अस्यास्तु परमाणवः ।२८

इसी प्रकार भगवान विष्णु, शम्भु, इन्द्र, अग्नि, चन्द्र सूर्य, त्वष्टा, वरुण और पवन शक्तियुक्त होकर ही अपना कार्य कर सकते हैं ।२२। पृथ्वी भी जब शक्ति से सम्पन्न होती है, तभी वह स्थिर रह कर भार धारण करती है ।२३। शेष, कूर्म तथा दसों दिग्गज मेरी ही शक्ति को प्राप्त करके अपने-अपने कार्य की सिद्धि में समर्थ होते हैं ।२४। मैं सम्पूर्ण संसार के जल का पान कर सकती हूँ, अग्नि के अस्तित्व को नष्ट कर सकती हूँ ।२५। हे कमलोद्भव! तुम कभी भी तत्वोंके न होने की शङ्का मत करना क्योंकि कभी किसी वस्तु का प्रागभाव अर्थात् अनादि का अन्त और कभी ध्वंसाभाव अर्थात् आदि वाली वस्तु का अनन्त होना देखा जाता है, जैसे कि मिट्टी में पिण्ड में घटाभाव होता है ।२६-२७। वह घट स्वरूपा पृथिवी इस समय नहीं हैं, परन्तु वह कहाँ गई ! यदि विचार करें तो कहेंगे कि वह घट पृथिवीके परमाणु शक्तियों अर्थात् परमाणुओं के रूप में घट का अस्तित्व है ।२८।

शाश्वतं क्षणिकं शून्यं नित्यानित्यं सकर्तृकम् ।
अहंकारमिमं चैव सप्तभेदैर्विवक्षितम् ।२९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गृहाणाज महत्तत्वमहंकारस्तदुद्भवः ।
ततः सर्वाणि भूतानि रचयस्व यथा पुरा ।३०
ब्रजंतु स्वानि धिष्ण्यानि विरच्य निवसंतु वः ।
स्वानि स्वानि च कार्याणि कुर्वंतु दैवभाविता ।३१
गृहाणेमां विधे शक्ति सुरूपां चारुहासिनीम् ।
महासरस्वतीं नाम्नीं रजोगुणयुतां वराम् ।३२
श्वेतांबरधरां दिव्यां दिव्यभूषणभूषिताम् ।
वरासनसमारूढां क्रीडार्थं सहचारिणीम् ।३३
एषा सहचरी नित्यं भविष्यति वराङ्गना ।
माऽवमंस्था विभूतिमे मत्वा पूज्जतमां प्रियाम् ।३४
गच्छ त्वमनया सार्धं सत्यलोकं वताशु वै ।
बीजाच्चतुर्विधं सर्वं समुत्पाटय सांप्रतम् ।३५

शाश्वत, क्षणिक, शून्य, नित्य अनित्य, सकर्तृक और अहङ्कार इन सात भेदों में विभाजित करके प्रकृति का वर्णन हुआ है ।२९। हे ब्रह्मा! जिस महत्तत्व से अहङ्कार-उत्पन्न होता है, उसे मुझसे लेकर पूर्व के समान जीवों की तथा लोकों की रचना कर निवास करो तथा प्रारब्ध के भरोसे अपने-अपने कार्य में लग जाओ ।३०-३१। तुम इस सुन्दर रूप वाली, हँसमुख, महा सरस्वती नाम की रजोगुण से युक्त शक्तिको ग्रहण करो ।३२। वह दिव्य स्वरूप वाली महासरस्वती नित्यप्रति श्वेत वस्त्र और दिव्यालंकार धारण करती और उच्चासन पर विरांजमान रहती हैं। यह क्रीडार्थं सदैव तुम्हारे साथ रहेंगी ।३३। यह तुम्हारी नित्य सहचरी रहेंगी तुम इन्हें अपनी पूज्यमया प्रिया और मेरी विभूति समझना ।३४। अब तुम इन्हे साथ लेकर तुरन्त ही सत्यलोकको गमन करो और मेरे महत्तत्व बीज के माध्यम से चारों प्रकार के प्राणियों को उत्पन्न करो ।३५।

इत्युक्त्वा मां जगन्माता हरिं प्राह शुचिस्मिता ।
विष्णो व्रज गृहाणेमां महालक्ष्मीं मनोहराम् ।३६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदा वक्षःस्थले स्थानं भविता नात्र संशयः ।
क्रीडार्थं ते मया दत्ता शक्तिः सर्वार्थदा शिवा ।३७
त्वयेयं नावमन्तव्या माननीया च सर्वदा ।
लक्ष्मीनारायणाख्योऽयं योगो वै विहितो मया ।३८
जीवनार्थं कृता यज्ञा देवानां सर्वथा मया ।
अविरोधेन संगेन वर्तितव्यं त्रिभिः सदा ।३९
लक्ष्म्या सह विकारेषु नानाभेदेषु सर्वथा ।
रजोगुणयुतो भूत्वा विहरस्वानया सह ।४०
वाग्बाजं कामराजं च मायाबीजं तृतीयकम् ।
मन्त्रोऽयं त्वं रमाकान्तं मद्दत्तः परमार्थदः ।४१
गृहीत्वा जप तं नित्यं विहरस्व यथासुखम् ।
नते मृत्युभयं विष्णो न कालप्रभवं भयम् ।४२

मुझसे यह कर देवी ने भगवान् विष्णो से कहा कि हे विष्णो तुम इस मनोहर रूप वाली लक्ष्मी को अपने साथ ले जाओ ।३६। इसका निवास सदा तुम्हारे हृदयमें रहेगा ।३७। तुम इनका अपमान मत करना ।३८। देवताओं को जीविका स्वरूप यज्ञों की रचना भी मैंने की है । इसलिये तुम तीनों देवता परस्पर सहयोग के साथ रहना ।३९। विविध प्रकार के भेद युक्त विकारों में तुम रजोगुणी होकर लक्ष्मी के साथ सदा विहार करना ।४०। मैं तुम्हें परमार्थ के देने वाला वाग्बीज कामराज और मायाबीज युक्त तीन अक्षर वाला भुवनेशी मन्त्र प्रदान करती हूँ ।४१। इस मन्त्रको हृदयगम कर देने और इसका नित्य जप करते रहने से तुम पर न तो काल का प्रभाव पड़ेगा और न मृत्यु का प्रभाव पड़ेगा और न मृत्यु का ही भय रहेगा ।४२।

यावदेष विहारो मे भविष्यति सुनिश्चयः ।
संहरिष्याम्यहं सर्वं यदा विश्वं चराचरम् ।४३
भवंतोऽपि तदा नून मयि लीना भविष्यथ ।
स्मर्तव्योऽयं तदा मन्त्रः कामदो मोक्षदस्तथा ।४४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उद्गीथेन च संयुक्तं कर्तव्यः शुभमिच्छता ।
कारयित्वाऽशु वैकुण्ठं वस्तव्यं पुरुषोत्तम ।४५
विहरस्व यथाकामं चिन्तयन्मां सनातनीम् ।
इत्युक्त्वा वासुदेवं सा त्रिगुणा प्रकृतिर्वरा ।४६
निर्गुणा शङ्करं देवमवोचदमृतं वचः ।
गृहाण हर गौरीं त्वं महाकालीं मनोहराम् ।४७
कैलाशं कारयित्वा च विहरस्यवथासुखम् ।
मुख्यस्तमोगुणस्तेऽस्तु गौणौ सत्वरजोगुणौ ।४८
विहयासुरनाशार्थं रजोगुणतमोगुणौ ।
तपस्तुं तथा कर्तुं स्मरणं परमात्मनः ।४९

जब तक मेरा विहार होगा, तभी तक यह विश्व स्थिर रहेगा, और मैं इसका संहार करूँगी तब तुम सभी मुझ में लीन हो जाओगे । तुम इस कामप्रद, मोक्षप्रद मन्त्र का जप करते रहना ।४३-४४। हे पुरुषोत्तम ! शुभ की आकांक्षा वाले साधक को इस त्र्यक्षर मन्त्र के साथ ओंकार-संयुक्त करके जप करना चाहिये । अब तुम वैकुण्ठ की रचना करके उसी में सदा रहना ।४५। ब्रह्माजी बोले हे नारद, उस त्रिगुणात्मिकापरा प्रकृति देवी ने विष्णु से ऐसा कहकर शिवजी से कहा—हे शङ्कर ! तुम उस मनोहर महाकाली गौरी को ग्रहण करो ।४६-४७। फिर कैलास पर्वत की रचना करके इनके साथ सुख पूर्वक रहना । तुम्हारा मुख्य गुण तमस् होगा तथा सत्त्वगुण और रजोगुण भी गौण रूप से रहेंगे ।४८। तुम रजोगुण और तमोगुण से सम्पन्न राक्षसोंका विनाश करते हुए सदैव परमात्मा का स्मरण एवं तप करते रहना ।४९।

स्मरणाद्दर्शनं तुभ्यं दास्येऽहं विषमे स्थिते ।
स्मर्तव्याऽहं सदा देवाः परमात्मा च सनातनः ।५०
उभयोःस्मरणादेव कार्यसिद्धिरसंशयम् ।
इत्युक्त्वा विससर्जास्मान्दत्वा शक्तीः सुसंस्कृतान् ।५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थलन्तरं समासाद्य ते जाताः पुरुषा वयम् ।
चिंतयन्तः स्वरूपं यत्प्रभावं परमाद्भुतम् ।५२
विमानं सत्समासाद्य संरूढास्तत्र वै त्रयः ।
न द्वीपोऽसो न सा देवी सुधासिंधुस्तथैव च ।५३
आसाद्य तस्मिन्वियते विनानं प्राप्ता वयं पंकजसन्निथो च ।
महार्णवे यत्रहतौ दूरत्ययौ मुरारिणा तौ मधुकैटभाख्यौ ॥५४

किसी प्रकार का सङ्कट उपस्थित होने पर मेरा स्मरण करना, मैं तुम्हें तुरन्त दर्शन दूँगी । तुम मेरा तथा सनातन परमात्मदेव का सदा स्मरण करते रहना ।५०। हम दोनों का स्मरण करते रहने से तुम्हारे कार्य सिद्ध होंगे । ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! देवी ने यह कहकर और अपनी सुसंस्कृत सिद्धियाँ प्रदान करके हमें वहाँ से विदा किया ।५१। वहाँ से चलते है । हम तीनों पुरुष रूप हो गये और उस भगवती के परम अद्भुत प्रभाव का स्मरण करने लगे ।५२। फिर हम तीनोंही उस विमान पर जा बैठे,तभी वह द्वीप, देवी और अमृत-समुद्र सब अदृश्य हो गये ।५३। उस विमान के द्वारा हम पुनः उसी महासागर स्थित कमल के समीप जा पहुँचे, जहां भगवान् विष्णु ने मधु-कैटभ का संहार किया था ।५४।

सत्यव्रत की कथा

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कथां पौराणिकीं शुभाम् ।
श्रुत्वा मुनिसमाजेषु भया पूर्वं कुरूद्वह ।१
एकदाऽहं कुरुश्रेष्ठ कुर्वंस्तीर्थाटनं शुचि ।
संप्राप्तो नैमिषाण्यं पावनं मुनिसेवितम् ।२
प्रणम्याहं मुनीन्सर्वान् स्थितस्यत्र वराश्रमे ।
विधिपुत्रास्तु यत्रासञ्जीवन्मुक्ता महाव्रता ।३
कथाप्रसङ्ग एवासीत्तत्र विप्रसमागमे ।
जमदग्निस्तु पप्रच्छ मुनीमेवं सभास्थितः ॥४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संदेहोऽस्ति महाभागा मम चतसि तापसाः ।
समाजेषु मुनीनां वो निःसन्देहो भवाम्यहम् ।५
ब्रह्मा विष्णुस्तथा रुद्रो मघवा वरुणोऽनलः ।
कुबेरः पवनस्त्वष्टा सेनानिश्च गणाधिपः ।६
सूर्योऽश्विनौ भगः पूषा मिशानाथो ग्रहास्तथा ।
आराधनीयतमः कोऽत्र वांचितार्थफलप्रदः ।७
सुखसेव्यश्च सततं चाशुतोषश्च मानदाः ।
ब्रुवंतु मुनयो शीघ्रं सर्वज्ञाः संशितव्रताः ॥८

व्यासजी बोले हे राजा जनमेजय ! अब तुम एक प्राचीन कथा सुनो, वह मैंने मुनि-समाज में पहिले कभी सुनी थी, सो तुम्हें सुनाता हूँ ।१। हे कुरुश्रेष्ठ ! एक समयकी बात है—मैं तीर्थ-यात्रा करता हुआ बहुत से मुनियों से सेवित नैमिषारण्य में जा पहुँचा ।२। तब मुनिजनों को प्रणाम करके वहाँ उस श्रेष्ठ आश्रम में ठहरा, जिसमें ब्रह्माजीके पुत्र और जीवन्मुक्त महाव्रती मुनिगणों का निवास था ।३। उस विप्र समाज में एक कथा-प्रसङ्ग चल रहा था, तभी महर्षि जमदग्नि ने मुनियों से पूछा ।४। जमदग्नि बोले हे महाभागो ! हे तापसो ! मेरे चित्त में एक सन्देह है, वह इस मुनि-समाज में अवश्य दूर हो सकता है ।५। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र वरुण अग्नि, कुबेर, पवन, त्वष्टा, कार्तिकेय गणपति, सूर्य, अश्विद्वय, भग, पूषा, चन्द्रमा अथवा नवग्रह इन सब में कौन-सा देवता आराधना करने के योग्य है, जो अभीष्ट फल प्रदान करने के समर्थ हो ? ।६-७। हे मुनियों ! जो सुगमता से प्रसन्न हो जाय ऐसा देवता कौन सा है ? ।८।

एवं प्रश्ने कृत तत्र लोमशो वाक्यमब्रवीत् ।
जमदग्ने श्रणुष्वैतद्यत्पृष्टं वै त्वयाऽधुना ।९
सेवनीयतमा शक्तिः सर्वेषां शुभमिच्छताम् ।
परा प्रकृतिराद्या च सर्वदासर्वथा शिवा ॥१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवानां जननी सैव ब्रह्मादीनां महात्मनाम् ।
आदिप्रकृतिमूलं स्वसंसारपादस्य वै ।११
स्मृता चोच्चारिता देवी ददाति किल वांछितम् ।
सर्वदैवार्द्रचित्ता सा वरदानाय सेविता ।१२
इतिहासं प्रवक्ष्यामि शृण्वन्तु मुनयः शुभम् ।
अक्षरोच्चारणादेव यथा प्राप्त द्विजेन वै ।१३
कोसलेषु द्विजः कश्चिद्देवदत्तोऽति विश्रुतः ।
अनपत्यश्चकारेष्टिं पुत्राय विधिपूर्वकम् ।१४
उद्गाता सामगः श्रेष्ठः सप्तस्वरसमन्वितम् ।
रुथन्तरमकायत्तुस्वरितेन समन्वितम् ।१५
तदाऽस्य स्वरभङ्गोऽभूत्कृतेश्वासे मुहुर्मुहुः ।
देवदत्तश्चकोपाशु गोभिलं प्रत्युवाच ह ।१६

यह प्रश्न सुनकर महर्षि लोमश बोले हे जगदम्बे ! आप अपने प्रश्न का समाधान सुनिये, उपासकों को सभीकी इच्छा पूर्ण करने वाली शक्ति की सेवा करनी चाहिए । सर्व गामिनी, परा प्रकृति, आदि शक्ति कामनाओं, और कल्याण के देने वाली हैं ।१०। वे ही ब्रह्मादिक महान देवताओ को उत्पन्न करने वांली तथा संसार रूपी वृक्ष की मूल एवं आदि प्रकृति है ।११। वे स्मरण एवं नामोच्चारण मात्र से ही वांछित फल प्रदान करती हैं । वे सदा दयार्द्र चित्त वाली और सेवकों को वर देने वाली हैं ।१२। हे मुनिगण ! इस विषय में मैं एक पुरातन इतिहास कहता हूँ वह सुनो । एक ब्राह्मण को केवल 'ऐं" अक्षर के उच्चारण मात्र से सिद्धि प्राप्त हो गई थी ।१३। कौशल देश में एक ब्राह्मण था, उसका नाम देवदत्त था । सन्तान हीन होने के कारण उसने पुत्रेष्टियज्ञ विधि पूर्वक किया ।१४। उस यज्ञ में श्रेष्ठ साम मायक महर्षि गोभिल सप्त स्तर से सम्पन्न रथन्तर सोम को गाने लगे ।१५। किन्तु वारम्बार श्वास लेनेसे उनका स्वर भङ्गहो गया । तब क्रोधित देवदत्त ने गोभिल मुनि से कहा ।१६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूर्खोऽसि मुनिमुख्याद्य स्वरभङ्गस्त्वयाः ।
कोम्यकर्मणि संजाते पुत्रार्थं यजतश्च मे ।१७
गोभिलस्तु तदोवाच देवदत्तं सुकोपितः ।
मूर्खस्ते पुत्र शठः शब्दविवर्जितः ।१८
सर्वप्राणिशरीरे तु श्वाशोच्छवासः सुदुर्ग्रहः ।
न मेऽत्र दूषणं किञ्चित्स्वरभङ्गे महामते ।१९
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य गोभिलस्य महात्मनः ।
शापाद्भीतो देवदत्तस्तमुवाचातिदुःखितः ।२०
कथं क्रुद्धोऽसि विप्रेन्द्र वृथा मयि निरागसि ।
अक्रोधना हि मुनयो भवति सुखदाः सदाः ।२१
मूर्ख पुत्रादपुत्रस्तु वरं वेदविदा विदुः ।
तथापि ब्राह्मणो मूर्खं सर्वेषानिंद्य एव हि ।२२
कृपां कुरु महाभाग शापस्यानुग्रहं प्रति ।
दीनोद्धारणशक्तोऽसि पताभिः तव पादयोः ।२३

हे मुनियों में प्रमुख गोभिल ! तुम मूर्ख हो, मैं पुत्र—प्राप्ति के लिये कामना रूपी यह यज्ञ किया था, इसी में तुमने स्वर—भङ्ग कर डाला ।१७। यह सुन कर गोभिल भी अत्यन्त क्रोधित हो गये और उन्होंने शाप दे डाला कि तुम्हें जो पुत्र प्राप्त होगा, वह मूर्ख, शठ और गूँगा उत्पन्न होगा ।१८। सभी प्राणी श्वास लेते और छोड़ते देखे जाते हैं, श्वास को रोकना अत्यन्त दुरूह कार्य है । तब श्वास न रोकने से स्वर भङ्ग होने में मेरा कुछ अपराध नहीं है ।१९। गोभिल का शाप सुनकर देवदत्त अत्यन्त भयभीत और दुःखी हो गया । उसने दीनता पूर्वक कहा ।२०। हे विद्रेन्द्र ! मुझ निरपराध पर आप व्यर्थ ही कुपित हो गये । मुनिजन तो सदा क्रोध-रहित और सुख के देने वाले होते हैं ।२१। वेदज्ञ विज्ञों का कहना है कि मूर्ख पूत्र से तो पुत्रहीन रहे, वही ठीक है । उस पर भी ब्राह्मण का मूर्ख होना तो अत्यन्त निन्दाके योग्य हैं ।२२। हे महाभाग मुझ पर कृपा कीजिये मुझे इस शाप से मुक्त कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीजिये, आप में दोनों को उद्धार करने की शक्ति हैं, मैं आपके चरणों में गिरता हूँ ।२३।

इत्युक्त्वा देवदत्तस्तु पतितस्तस्य पादयोः ।
स्तुवन्दीनहृदत्वर्थं साश्रुलोचनः ।२४
गोभिलस्तु तदा तत्र दृष्ट्वा तं दीनचेतसम् ।
क्षणकोपो गोभिलस्त्वाह देवदत्तं कलकोपना ।२५
दयावान्गोभिलस्त्वाह देवदत्तं सुदुःखितम् ।
मूर्खी भूत्वा सुतस्ते वै विद्वानपि भविष्यति ।२६
इति दत्तवरःसोऽथ नुदितोऽभूद्द्विजर्षभः ।
इष्टि समाप्य विप्रान्वै विससर्ज यथाविधि ।२७
कालेन कियता तस्य भार्या रूपवती सती ।
गर्भं दधार कालेन रोहिणोममा ।२८
शुभेऽहि सुषुवे पुत्रं रोहिणी रोहिणीयुते ।
दिने लग्ने शुभेत्नर्थं जातकर्मं चकार सः ।२९
पुत्रदर्शनं कृत्वा नामकर्म चकार च ।
उतथ्य इति पुत्रस्य कृतमान पुराविदा ।३०

लोमश मुनि ने कहा— हे मुनियो ! यह कह कर दे दत्त गोभिल मनि के चरणों में गिर गया और अत्यन्त दीन होकर अश्रुयुक्त आँखों से उनकी स्तुति करने लगा ।२४। उसे इस प्रकार व्याकुल चित्त हुआ देखकर गोभिल मुनि शान्त हो गये । क्योंकि महान् व्यक्तियों को क्रोध क्षणिक होता हैं और पापियों का क्रोध कल्प पर्यन्त भी नहीं मिटता ।२५। दयावान गोभिल मुनिने अत्यन्त दुःखित हुए देवदत्त को सान्त्वना देते हुए कहा—कि अच्छा तुम्हारा पुत्र मूर्ख उत्पन्न होने परभी विद्वान हो जायगा ।२६। यह वर प्राप्त कर देवदत्त प्रसन्न हुआ और विधि पूर्वक यज्ञ के सम्पन्न होने पर उसने विप्रों को विदा किया ।२७। फिर समय पाकर देवदत्त की भार्या रोहिणी ने रोहिणी के समान ही गर्भ धारण किया ।२८। फिर शुभ दिन में रोहिणी नक्षत्र आने पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोहिणी ने पुत्र को जन्म दिया। शुभ लग्न में उसका जात कर्म संस्कार किया गया।२९। फिर पुत्र दर्शन और नामकरण संस्कार हुआ तब बालक का नाम उस वेदजन उतथ्य रखा।३०।

स चाष्टमे तथा वर्षे शुभ वै शुभावासरे।
तस्योपनयनं कर्म चकार विधिवत्पिता।३१
वेदमध्यापयामास गुरुस्तं वै व्रते स्थितम्।
नोच्चचार तथोतथ्यः संस्थितो मुग्धवत्तदा।३२
बहुधा पाठितः पित्रा न दधार मतिं शठः।
मूढवत्तिष्ठतेऽत्यर्थं तं शुशोच पिता तदा।३३
एवं कुर्बन्सदाऽभ्यासं जातो द्वादशवार्षिकः।
न वेद विधिवत्कर्तुं सध्यावन्दनविधिम्।३४
जहासलोकस्तं विप्रं यत्र यत्र गतं वने।
पिता माता निनिंदाथ मूर्खं तमतिभर्त्सयन्।३५
निंदितोऽथ जनः कामं पितृभ्यामथ बांधवैः।
वैराग्यमगमद्विप्रो जगाम वनमप्यसौ।३६
गङ्गातीरे शुभे स्थाने कृत्योटजमनुत्तमम्।
वन्यां वृत्तिं च संकल्प्य स्थितस्तत्र समाहितः।३७

आठवें वर्ष शुभदिन देखकर उसका उपनयन संस्कार किया गया।३१। फिर उतथ्य ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित होकर गुरु से वेदाध्ययन करने लगा परन्तु मुख से कुछ भी न बोल कर गूँगे के समान बैठा रहता।३२। देवदत्त ने उसे शिक्षित करने का बड़ा प्रयत्न किया परन्तु वह मूर्ख और गूँगा हीं बना रहा, इससे पिता को बड़ी चिन्ता हुई।३३। वेदाभ्यास करते-करते बारह वर्ष की आयु हो गयी तो भी वह विधि-सम्मत कर्म एवं सध्या करना भी न सीख सका।३४। वह जहाँ भी जाता, वहीं उसका उपहास होता और उसके माता-पिता भी उस मूर्ख की सदा निन्दा और भर्त्सना किया करते थे।३५।इस प्रकार सब बन्धु-बाधवों और माता-पिता द्वारा तिरस्कार मिलता देख कर उतथ्यके मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह गृह त्याग कर वन से चला गया ।३६। वहाँ गङ्गा के किनारे एक सुन्दर स्थल देखकर उसने एक कुटिया बना ली और वन्य वृत्ति से वहाँ रहने लगा ।३७।

सारस्वत बीज मन्त्र की महत्ता

न वेदाध्यनं किंचिज्जानामि न जपं तथा ।
ध्यानं न देवतानां न चैवाराधनं तथा ॥१
नासनं वेद विप्रोऽसौ प्राणायामं तथा च न ।
प्रत्याहारं तुनो वेद भूत शुद्धिं च कारणम् ।२
न मन्त्रकीलकं जाप्य गायत्री च न वेद सः
शोचस्कानविधिं चैव तथाचमनकं पुनः ।३
सत्य ब्रूते स्थितस्तत्र नानृतं वदते पुनः ।
जनै सत्यतपा नामकृतमस्य वै तदा ।४
विरक्तः स तु संजातः स्थितस्तत्राश्रमे द्विजः
कालातिवाहनं शांतश्चकार विजये वने ।५
एवं स्थितस्य तु वने विमलोदके बै ।
वर्षाणि तक्ष नवपंच गतानि कामम् ।
नाराधनं न च जपं न विवेद मन्त्र
कालातिबाहनमसौ कृतवान्वनेवै ॥६
तत्रैकदा तु मृगयां रममाणं एव
प्राप्तो निषादंनिशठी घृतचापवाणः ।
क्रीडन्वनेऽतिविपुले यमतुल्यदेहः
क्रूराकृतिर्हननकर्मणि चातिदक्षः ।७

लोमश मुनि ने कहा—हे जमदग्ने ! उतथ्य को वेदाध्ययन, जप, ध्यान, देवताओं की आराधना आदि का ज्ञान नहीं था ।१। वह आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार भूतशुद्धि और जगत् के कारण रूप ईश्वर को भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं जानता था ।२। मन्त्र, कीलक, जप, गायत्री आदि कुछ भी उसे न आता था, यहां तक कि वह शौच, स्नान विधि और आचमन तक से अनभिज्ञ था, ।३। परन्तु वह सदा सत्य बोलता था, मिथ्या बात कभी उसके मुख से नहीं निकलती थीं, वह देख कर लोग उसे सत्यतपा कहने लगे थे ।४। वह विरक्त भाव से उस निर्जन वन में स्थित अपने आश्रम में रहता हुआ शान्त चित्त से समय व्यतीत करने लगा ।५। इस प्रकार उस वन में रहते हुए उसे चौदह वर्ष व्यतीत होगये, अब भी वह आराधना, जप, तप मन्त्र आदि कुछ नहीं जानता था,वहाँ रहता हुआ केवल समय व्यतीत करता था ।६। एक दिन मृगया करता हुआ एक निषाद वहाँ आ गया । वह यम के समान आकार वाला, क्रूर एवं हत्या-कर्म में अत्यन्त चतुर था ।७।

तेनातिकृष्टेन शरेण विद्ध कोलः किरातेन धनुर्धरेण ।
षलायमानो भयविह्वलश्च मुने समीपं विप्रुतो जगाम ॥८
विकपमानो रुधिरार्द्र वेहो यदा जगामाश्रममण्डलं वै ।
कोलस्तदातीव दयार्द्र भावं प्राप्तो मुनिस्तत्र समीक्ष्य दीनम् ।९
अग्रं व्रजतं रुधिरार्द्र देहं दृष्ट्वा मुनि सूकरमाशु विद्धम् ।
दयाविवेशादतिकंपमानः सारस्वतं बीजमन्त्रोच्चार ।१०
अज्ञातपूर्व च तथाऽश्रुतं च दैवान्मुखे वै समुपागतं च ।
न ज्ञातवान्बीजमसौ विमूढो ममज्ज शोके स मुनिर्महात्मा ।११
कोलः प्रविश्याश्रममण्डलं तद्वतौ निकुञ्जे प्रविलोक्य गूढम् ।
अप्राप्तमार्गो निविषण्णेचेताः प्रवेशमानः शरपीडित्वान् ।१२
ततः क्षणादामरणांतकृष्टं चापं दधानोऽतिकरालदेहः ।
प्राप्तस्तदन्ते स मृग्यमाणो निषादराजः किल काल एव ।१३
दृष्ट्वा मुनि तत्र कुशासने स्थितं नाम्ना तु सत्यव्रतमद्वितोयम् ।
व्याधः प्रणम्प प्रमुखे स्थितोऽसौ पप्रच्छ कोलःक्व गतो द्विजेश।१४

उस निषाद ने एक शूकर पर शर-संधान किया तब वह आहत शूकर भयभीत होकर भागता हुआ इस मुनि के निकट आ पहुँचा ।८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह भय से काँप रहा था। उसकी यह दशा देखकर मुनि का हृदय दयार्द्र हो उठा।९। आहत शूकर को अपने से आगे की ओर जाते देखकर मुनि की देह दया से कापने लगी और तब विन्दु हीन सारस्वत बीज मन्त्र 'ऐं' उसके मुख से निकल पड़ा।१०। यह मन्त्र वह पहिले कभी नहीं जानता था न सुना ही था, सहसा मुख से निकल पड़ा, अब भी उसे ज्ञात न था कि यह सारस्वत बीजमन्त्र है क्योंकि वह तो शूकर के शोक में निमग्न था।११।तभी वह शूकर अन्य मार्ग न पाकर आश्रम में घुस कर निकटस्थ एक झाड़ी में छिप गया, तभी धनुष पर वाण चढ़ाये निषाद उस शूकर को खोजता मुनि के पास आया। उसने मुनि से पूछा कि वह शूकर किधर गया ?।१४।

जानामि तेऽहं सुव्रतं प्रसिद्धं तेनाद्य पृच्छे गम वाणविद्धम।
क्षुधार्दितं मे सकलं कुटुम्व विभर्तुकामः किल आगतोऽस्मि।१५
तनेति पृष्टः स मुनिर्महात्मा वितर्कमणः प्रवभूव कामम्।
सत्यव्रतं मेऽद्य भवेन्ननष्टं न दृष्टं इत्युच्चरितेन किं वै ॥१६
गतोऽत्र कोलः शरविद्धदेहः कथं प्रवीम्यद्य मृषाऽमृषा वै।
हितं कथं स्वादुभयोर्विरुद्धयोस्तदुत्तरं किं न यथा मृषा वचः।
विचारयान्वाडव धर्मसङ्कटे न प्राप वक्तु वचनं यथोचितम् ॥१८
वाणाहत वीक्ष्य दयान्वितं च कोलं तदंते समुदाहृतं वचः।
तेन प्रसन्ना निजबीजतः शिवा विद्यां दुरापां प्रददौ च तस्मे॥१९
बीजोच्चारणतो देव्या विद्या प्रस्फुरिताऽखिला।
वाल्मीकिश्च यथा पूर्वं तथा स ह्यभवत्कविः ॥२०
तमुवाच द्विजो व्याधं सम्मुखस्थं धनुर्धरम्।
सत्यकामस्तु धर्मात्मा श्लोकमेक दयापरः ॥२१

हे मुने ! मैं जानता हूँ कि आप श्रेष्ठ व्रती हैं, इसलिए आप से पूछता हूँ कि मेरे वाण से विंधा हुआ शूकर किधर गया ? मेरा सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुटुम्ब भूखसे व्याकुल है, मैं उसकी जीविका के लिए ही आया हूँ ।१५। उसके इस प्रकार वारम्वार पूछने पर मुनि असमंजस में पड़कर विचार करने लगे कि मैं इसे ऐसा क्या उत्तर दूँ, जिससे मेरा सत्य बोलने का व्रत नष्ट न हो और यह भी न कहना पड़े कि शूकरको मैंने नहीं देखा ।१६। यह मिथ्या वात कैसे कहूँ कि तुम्हारे वाण से विधा हुआ शूकर भाग गया और यदि सत्य वात कहता हूँ तो यह पूछने वाला क्षुधातुर उसे अवश्य मार डालेगा ।१७। इस प्रकार का परस्पर विरोधी प्रसङ्ग उपस्थित हैं, अव क्या कहूँ, किस में मेरा हित है ? मुझे मिथ्या न वोलना पड़े ।१८। वाण से आहत शूकर को देखकर दयावश मुनि के मुख से 'ऐं-ऐं' शब्द निकल पड़ा था उस बीज मन्त्र के उच्चारण से प्रसन्न हुई भगवती ने सत्व-व्रत को दुर्लभ, ब्रह्मविद्या प्रदान करदी ।१९। देवी के बीजमन्त्र के उच्चारण मात्र से उसके हृदय में सभी विद्याएँ आविर्भूत हो गईं और यह पूर्वकालीन वाल्मीकिके समान कवि होगये ।२०। अपने सामने खड़े उस धनुर्धारी व्याध को सत्यव्रत ने एक श्लोक में ही उत्तर दे दिया ।२१।

या पाश्यति न सा ब्रूते सा न पश्यति ।
अहो व्याध स्वकार्यार्थिन्कि पृच्छसि पुनः पुनः ॥२२
इत्युक्तस्तु तदा तेन गतोऽसौ पशुहा पुनः ।
निराशः सूकरे तस्मिन्पावृतो निजालये ॥२३
ब्राह्मस्तु कविर्जातः प्राचेतस इवापरः ।
प्रसिद्धः सर्वलोकेषु नाम्ना सत्यव्रतो द्विजः ॥२४
सारस्वतं ततो बीजं जजाप विधिपूर्वकम् ।
पंडितश्चातिविख्यातो द्विजाऽसौ धरणीतले ॥२५
तच्छ्रुत्वा सदनं यस्य समागत्य तदाश्रमे ।
येन त्यक्तः पुरा तेन गृहं नीतोऽतिमानिनः ॥२६
तस्माद्राजन्सदा सेव्या पूजनीया च भक्तितः ।
आदिशक्तिः परा देवीं जगतां कारणं हि सा ॥२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखने वाला (नेत्र) बोल नहीं सकता, बोलने वाली (वाणी) देख नहीं सकती। हे स्वार्थ युक्त प्रश्न करने वाले व्याध ? तुम एक ही बात का मुझसे बारम्बार क्यो पूछते हो ? ।२२। मुनि की बात सुनकर व्याध निराश हो गया और वह तुरन्त अपने घर लौट गया ।२३। इस प्रकार सत्यव्रत नामक ब्राह्मण वाल्मीकि के समान कवि हो गये उनकी प्रसिद्धि संसार में फैल गई ।२४।फिर उन्होंने सारस्वत बीज मन्त्रका विधिपूर्वक जप किया, जिससे वे इस भूतल में अत्यन्त विख्यात पंडित हो गये।२५। उनकी प्रसिद्धि को सुनकर उनके माता-पिता आदि उनके आश्रम पर पहुँचे और सम्मान पूर्वक अपने घर पर लिवा लाये ।२६। व्यासजी बोले कि राजन ! उस आदि शक्ति, परादेवी, भगवती की भक्ति पूर्वक सदा पूजा सेवा करनी चाहिये ।२७।

तस्या यज्ञं महाराज कुरे वेदविधानतः ।
सर्वकामप्रदं नित्यं निश्चयं कथितं पुरा ॥२८
स्मृता संपूजिता भक्त्या ध्याता चोच्चारिता स्तुता ।
ददाति वांछितानर्थान्कामदा तेन कीर्त्यते ॥२९
अनुमानमिदं राजन्कर्तव्यं सर्वथा बुधैः ।
दृट्वा रोगयुतान्दीनान्क्षुधितान्निर्धनाञ्छठान् ॥३०
ज़नानार्तास्तिथा मूर्खान्पीडितान्वैरिभिः सदा ।
दासानाज्ञाकरान्क्षुद्रान्विकलान्विह्वलानथ ॥३१
अतृप्तान्भोजने भोगे सदार्तानजितेन्द्रियान् ।
तृष्णाधिकानशक्तांश्च सदाधिपरिपीडितान् ॥३२

हे महाराज ! मैंने आपको पहिले ही जो बताया हैं, उस सर्व कामना के देने वाले नित्य एवं निश्चित अम्बा यज्ञ को वेद विधान से अवश्य करिये ।२८। भगवती स्मरण, पूजन भक्ति-भाव युक्त ध्यान नामोच्चारण एवं स्तुति मात्र से सभी इच्छित प्रदान करती है, इसी लिये उसे कामदा कहा जाता है ।२९। हे राजन् ! जो मनुष्य रोगी, दीन, क्षुधार्त, निर्धन, शठ, आर्त, मूर्ख,शत्रुओं द्वारा पीड़ित, आज्ञाकारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दास, क्षुद्र, विकल, विह्वल, भोजन और भोग से अतृप्त अजितेन्द्रिय अधिक तृष्णासुर अशक्त एवं मानसिक व्याधि से पीड़ित दिखाई दे। उसके विषय में यह समझ लेना चाहिए कि उसने देवी को भले प्रकार सेवा नही की ।३०-३२।

तथा विभवसम्पन्नापुत्रपौत्रविवर्धनान् ।
पुष्टदेहांश्च संभोगैः संयुतान्वेदवादिनः ।३३
राजलक्ष्म्या युतांछूरान्वशीकृतजनानथ ।
स्वजनैरवयुक्तांश्च सर्वलक्षलक्षितान् ।३४
व्यतिरेकान्वयाभ्यां च विचेतव्यं विचक्षणैः ।
एभिर्न पूजिता देवी सर्वार्थफलदा शिवा ।३५
समाराधिता च तथा नृभिरेभिः सदाऽम्बिका ।
यतोऽमी सुखिनः सर्वे संसारेऽस्मिन्न संशयः ।३६
इति राजञ्छु तं तत्र मया मुनिसमागमे ।
लोमशस्य मुखात्काम्यं देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।३७
इति संचित्य राजेन्द्र कर्तव्यं च सदाऽर्चनम् ।
भक्त्या परमया देव्याः प्रीत्या च पुरुषर्षभ ।३८

इसी प्रकार वैभववान, पुत्र-पौत्रादि से वृद्धि को प्राप्त हुए, पुष्ट देह वाले भोग-सम्पन्न, वेदवादी राजलक्ष्मी युक्त, बहुतों को वश में रखने वाले शूर तथा अपने परिवार के साथ निवास करने वाले सर्व लक्षण-सम्पन्न व्यक्तियों को देखकर समझना चाहिए कि इन्होंने सवार्थ एवं फल देने वाली भगवती शिवा का भले प्रकार पूजन किया है। इसी प्रकार अन्वय-व्यतिरेक के क्रम से तात्पर्य जान लें कि उसने देवी की आराधना की अथवा नहीं ।३३-३५। जो मनुष्य इस संसार में सर्व सुखी, दिखाई दें तो समझ लेना चाहिए कि यह अम्बिका की उपासना करने के कारण ही इतनें सुखी हैं ।३६। व्यासजी बोले—हे राजसू इस पर विचार करके भक्ति पूर्वक परमाशक्ति भगवती का सदा पूजन करना ही कर्तव्य हैं ।३७-३८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अम्बा यज्ञ की विधि

वद यज्ञविधि सम्यग्देव्यास्तस्याः समन्ततः ।
श्रुत्वा करोम्यहं स्वामिन्यथाशक्ति ह्यतंद्रितः ।१
पूजाविधि च मन्त्रांश्च होमद्रव्यमसंशयम् ।
ब्राह्मणाः कतिसंख्याश्च दक्षिणाश्च तथा पुनः ।२
शृणु राजेन्वक्ष्यामि देव्या यज्ञं विधानतः ।
त्रिविधं तु सदा ज्ञेयं विधिदृष्टेन कर्मणा ।३
सात्विकं राजसं चैव तामसं च तथा परम् ।
मुनीनां सात्विक प्रोक्तं नृपाणां राजसं स्मृतम् ।४.
तामसं राक्षसानां वै ज्ञानिनां तु गुणोज्झितम् ।
विमुक्तानां ज्ञानमयं विस्तरात्प्रब्रवीमि ते ।५
देशः कालस्तथा द्रव्यं मन्त्राश्चब्राह्मणास्तथा ।
श्रद्धा च सात्विकी यत्र तत्र तत् सात्त्विकं विदुः ।६
द्रव्यशुद्धिः क्रियाशुद्धिः भूमिशुद्धिश्च सर्वतः ।
भवेद्यदि तथा पूर्णं फलं भवति नान्यथा ।७

राजा जनमेजय बोले—हे ब्रह्मन ! अब आप मेरे प्रति देवी के यज्ञ की विधि वर्णन करिए जिसे सुनकर मैं देवीका यज्ञ करूँगा ।१। उसकी पूजन-विधि, मन्त्र, होमके द्रव्य ब्राह्मणों की संख्या और उसकी दक्षिणा आदि पर भी प्रकाश डालें ।२। व्यासजी बोले—हे राजन् ! अब मैं देवी यज्ञ का विधान तुम्हें बताता हूँ, उसे सुनो ! यह यज्ञ अनुष्ठान के भेद से तीन प्रकार का है ।३। एक सात्विक दूसरा राजस तीसरा तामस । मुनियो के लिए सात्विक और राजाओं के लिए राजसी यज्ञ करने का विधान है ।४। राक्षसो के लिए तामस यज्ञ कहा गया हैं । ज्ञानियों को निर्गुण यज्ञ करना उचित हैं तथा वैरागियों के लिए ज्ञान यज्ञ बताया गया है ।५। जिस यज्ञ में देश काल, द्रव्य मन्त्र ब्राह्मण यह सभी श्रेष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हों, यज्ञमान भी सात्विकी श्रद्धा परिपूर्ण हो, वह सात्विक यज्ञ में द्रव्य शुद्धि, क्रिया शुद्धि और भूमि शुद्धि से ही पूर्ण फल की प्राप्ति होती है ।७।

अन्यायोपार्जितेनैव द्रव्येण सुकृतं कृतम् ।
न कीर्तिरिह लोके च परलोके न तत्फलम् ।८
तस्मात् न्यायार्जितेनेव कर्तव्यं सुकृतं सदा ।
यशसे परलोकाय भवत्येव सुखाय च ।९
प्रत्यक्षं तव राजेन्द्र पांडवैस्तु मखः कृतः ।
राजसूयः क्रतुवरः समाप्तभूरिदक्षिणः ।१०
यत्र साक्षाद्धरिः कृष्णो यादवेन्द्रो महामनाः ।
ब्राह्मणाः पूर्णविद्याश्च भारद्वाजादयस्तथा ।११
कृत्वा यज्ञं सुसंपूर्णं मासमात्रेण पांडवैः ।
प्राप्तं महत्तरं कष्टं वनवासश्च दारुणः ।१२
पीडनं चैव पाचाल्यास्तथा द्यूते पराजयः ।
वनवासो महत्कृष्टं क्व गत मखजं फलम् ।१३
दासत्वं च विराटस्य कृतं सर्वैर्महात्मभिः ।
कीचकेन परिक्लिष्टा द्रौपदी च प्रमद्वरा ।१४

परन्तु अन्याय से उपार्जित धन से जो यज्ञ किया जाता है वह इन्द्रलोक और परलोक दोनों में यशहीन और फलहीन होता है ।८। इसलिए न्याय से कमाये हुए धन द्वारा ही पुण्य कर्म करे तो इहलोक और परलोक दोनो में ही सुख की प्राप्ति होती है ।९। हे राजन् ! इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि पांडवों ने जो सर्वश्रेष्ठ राजसूर्य यज्ञ किया और प्रचुर दक्षिणा देकर उसे समाप्त किया ।१०। उसमें महाराज यादवेन्द्र श्रीकृष्ण विद्यमान थे और भारद्वाज आदि पूर्ण विद्यासम्पन्न ब्राह्मणों ने यज्ञ-कार्य सम्पादन किया था ।११। परन्तु उस के भले प्रकार सम्पन्न होने पर भी एक मास में ही पाण्डव दारुण दुःख में फँस गये, उन्हें बनवास के कष्ट भोगने पडे ।१२। उसी के परिणाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वरूप द्रौपदी अपमानित हुई, जुए में हार हुई, वनवास के घोर दुःख उठाये, तब उस का फल कहां चला गया ? ।१३। उन पांडवों को राजा विराट् की सेवा करनी पड़ी और द्रौपदी को कीचक के द्वारा क्लेश भोगना पड़ा ।१४।

आशीर्वादा द्विजातीनां क्व गताः शुद्धचेतसाम् ।
भक्तिर्वा वासुदेवस्य क्वगता तत्र सङ्कटे ।१५
भवितव्यमति सक्तं निष्फलः स्यात्तदागमः ।
वेदमन्त्रास्तथाऽन्ये च वितथाः स्युरसंशयम् ।१६
आगमोऽप्यर्थवादः स्यात्क्रियाः सर्वा निरर्थकाः ।
स्वर्गार्थं तपो व्यर्थं वर्णधर्मश्च वै तथा ।१७
पुरा दशरथेनापि पुत्रेष्टिस्तु कृता यदा ।
अपुत्रस्य सुतास्तस्य चत्वारः संप्रजज्ञिरे ।१८
अतः क्रिया कृता युक्त्या सिद्धिदा सर्वथा भवेत् ।
अयुक्त्या विपरीता स्यात्सर्वथा नृपसत्तम ।१९
पांडवात्रां यथा यज्ञे कित्तिद्वैगुण्यमुदगतम् ।
विपरीत फलं प्राप्त निर्जितास्ते दुरोदरे ।२०
सात्विकस्त महाराज दुर्लभो वै मखः स्मृतः ।
वैखानसमुनीनां हि विहितोऽसौ महामखः ।२१

उन पांडवो को मिला हुआ ब्राह्मणों का आशीर्वाद कहाँ चला गया ? उस संकट काल में भगवान् वासुदेव की भक्ति का फल भी कहाँ अदृश्य हो गया ? ।१५। यदि भवितव्य ही ऐसा था वह कहें तो सब शास्त्र निष्फल और वेद-मन्त्र भी निरर्थक हो जाते हैं ।१६। भक्तिव्य के सिद्धान्त को मानने पर सभी शास्त्र अर्थवाद् के रूप में बदल कर सभी क्रियायें व्यर्थ हो जायेगी ।१७। प्राचीन काल में अयोध्या के राजा दशरथ द्वारा पुत्रेटि यज्ञ करने पर उन्हें चार पुत्रों की प्राप्ति हुई थी ।१८। अतः हे नृपश्रेष्ठ ! प्रयत्न पूर्वक कर्म करने पर वह सदा सिद्धि दायक होता है, परन्तु मुक्ति-रहित कर्म का फल विपरीत मिलता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।१९। पाडवों के राजसूय यज्ञ में अवश्य ही कोई व्यक्तिक्रम हुआ होगा इसलिये उनको उसका विपरीत फल प्राप्त हुआ ।२०। हे राजन ! सात्विक यज्ञ दुर्लभ है, क्योंकि वह महायज्ञ वानप्रस्थी के लिये ही विहित समझा गया है ।२१।

सात्विकं भोजनं ये वै नित्यं कुर्वति तापसाः ।
न्यायार्जितं तथा ऋष्यंफलफूलं सुसंस्कृतम् ॥२२
पुरोडाशपराःनितं वियूपा मन्त्रपूर्वकाः ।
श्रद्धाधिका मखा राजन्सत्विका परमा स्मृता ।२३
राजसा द्रव्यबहुलाः सयूपाश्च सुसंस्कृता ।
क्षत्रियाणां विशां चैव साभिमानाश्च वै मखाः ।२४
तामसा दानवानां वै सक्रोधा मदवर्धकाः ।
सामर्षाः संस्कृताः क्रूरा मखाः प्रोक्ता महात्मभिः ।२५
मुनीनां मोक्षकामानां विरक्तानां महात्मभिः ।
मानसस्तु स्मृतौ यागः सर्वसाधनसंयुतः ।२६
अन्येषु सर्वयज्ञेषु किंचिन्न्यूनं भवेदपि ।
द्रव्येण श्रद्धया वाऽपि क्रियया ब्राह्मणैस्तथा ।२७
देशकालसुकृद्धव्यसाधनैः सकलैस्तथा ।
नान्यो भवति पूर्णो व यथा भवति तामसः ।२८

हे राजन् ! जो तपस्वी न्याय से प्राप्त धन द्वारा वन्य फल मूल और ऋषियों द्वारा बनाये गये पुरोडाश का सात्विक भोजन करते हैं और अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक मन्त्र युक्त यज्ञ करते हैं, उनके उस यज्ञ को सात्विक कहा जाता हैं ।२२-२३। जिस यज्ञमें अत्यधिक धन व्यय किया जाता है और मण्डल के लिये सुन्दर खम्भे गाड़े जाते हैं, एसे अभिमान पूर्वक किये जाने वाले यज्ञ राजस कहे गये हैं।२४। महात्माओं ने दानवों के लिये तामस यज्ञ का विधान कियाहै । वह क्रूरता पूर्वक किया जाता है ।२५। मोक्ष की कामना वाले मुनियों और विरक्तोंके लिये सर्व साधन युक्त मानस यज्ञ का विधान है ।२६। अन्य यज्ञों में जो कुछ न्यूनता हो,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह द्रव्य, कर्म श्रद्धा, ब्राह्मणों के यत्न, देश-काल एव हव्यात्मक साधनों से ऐसी पूर्ति नहीं होती, जेसे तामस यज्ञ के द्वारा होती हैं ।२७-२८।

प्रथमं तु मनः शौध्यं कर्तव्यं गुणवार्जतम् ।
शुद्धे मनसि देही वै शुद्ध एव न संशयः ।२९
इन्द्रियार्थं परित्यक्तं यदा जातं मनः शुचि ।
तदा तस्य मखस्यासौ प्रभवेदधिकारवान् ।३०
तदाऽसौ मण्डपं कृत्वा वहुयोजनविस्तृतम् ।
स्तम्भैश्च विपुलैः श्लक्ष्णैर्यज्ञियैर्द्रुमसंभवैः ।३१
वेदीं च विशदां तत्र मनसा परिकल्पयेत् ।
अग्नयोऽपि तथा स्थाप्या विधिवन्मनसा किल ॥३२
ब्राह्मणानां च वरणं तथैव प्रतिपाद्य च ।
ब्रह्माऽध्वर्युस्तथा होता प्रस्तोता विधिपूर्वकम् ।३३
उद्गाता प्रतिहर्ता च सभ्याश्चान्ये यथाविधि ।
पूजनीयाः प्रयत्नेन मनसैव द्विजोत्तमाः ।३४
प्राणोऽपानस्तथा व्यानः समानोदान एव च ।
पावका पञ्च एवं ते स्थाप्या वेद्यां विधानतः ।३५

इस यज्ञ के लिये प्रथम मन की शुद्धि कर, क्योंकि मन के शुद्ध होने पर शरीर स्वतः ही शुद्ध हो जाता है, इसमें संशय, नहीं ।२९। जब मन पूर्णतः शुद्ध होकर इन्द्रियों के विषयों का भले प्रकार त्याग कर देता है तभी मनुष्य इस मानसयज्ञ के करने का अधिकारी होता हैं ।३०। मन की शुद्धि होने के उपरान्त अनेक योजन विस्तार वाले वहुत से यज्ञीय वृक्षों के खम्भों से सुसज्जित यज्ञ मण्डप का मन ही मन निर्माण करना चाहिये ।३१। फिर मन से ही विशद वेदी की कल्पना करे और मन से ही उस पर विधि पूर्वक अग्नि को स्थापित करे ।३२। मन से ही ब्राह्मणों का वरण करे मानसिक कल्पना करके, मन से ही उनका यथा बिधि पूजन करे ।३३-३४। फिर प्राण, अपान, व्यान समान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उदान वायुओं की मासिक कल्पना करके उन्हें मनसे कल्पित वेदी पर विधिवत् प्रतिष्ठित करे ।३५।

गार्हपत्यस्तदा प्राणोऽपानश्चाहवनीयकः ।
दक्षिणाग्निस्तथा व्यानः समानश्चावसथ्यकः ।३६
सभ्यादानं स्मृता ह्येते पावकाः परमोत्कटाः ।
द्रव्यं च मनसा भाव्यं निर्गुणं परमं शुचि ।३७
मन एव तदा होता यजमानस्तथैव तत् ।
यज्ञाधिदेवता ब्रह्म निर्गुण च सनातनम् ।३८
फलदा निर्गुणा शक्तिः सदा निर्वेददा शिवा ।
ब्रह्मविद्याऽखिलाधारा व्याप्य सर्वत्र संस्थिता ।३९
तदुद्देशेन तद्द्रव्यं मुनेत्प्राणाग्निषु द्विजः ।
पश्चाच्चित्तं निरालम्बं कृत्वा प्राणानपि प्रभो ।४०
कुण्डलीमुखमार्गेण हुनेद् ब्रह्मणि शाश्वते ।
स्वामुभूत्या स्वयं साक्षात्स्वात्मभूतां महेश्वरीम् ।४१
समाधिनैव योगेन ध्यायेच्चेतस्यनाकुलः ।
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।४२

उन पंच वायुओं से प्राण वायु को गार्हपत्य अग्नि के रूप में कल्पित करे । अपान का आहवनीय अग्नि, व्यान को दक्षिणाग्नि,समान को आवसथ्यक अग्नि और उदान को सभ्य अग्नि के रूप में कल्पित करना चाहिए । यह पंचाग्नि परमोत्कृष्ट है । पवित्र यज्ञ-सामग्रियों की भी इस यज्ञ में मनसे कल्पना की जाती है ।३६-३७। इसमें मन ही होत्रा और यजमान भी मन ही बनता है । सनातन एवं निर्गुण ब्रह्म इसका अधिदेवता है ।३८। फल देने वाली, गुण-रहित, वैराग्य उत्पन्न करने वाली, कल्याणमयी जो ब्रह्म-विद्या सम्पूर्ण संसार की आधारभूत है और सभी में व्याप्त है ।३९। उसी प्रसन्न करने के लिये मन से कल्पित की गई हवन सामग्रियों की आहुति अपने प्राण रूपी अग्नि में देनी चाहिये । इस प्रकार मानसिक हवन के पश्चात् मन को विषयों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथक् रखते हुए ही कुण्डलिनी के मुख मार्ग द्वारा सुषुम्ना रन्ध्र से उस प्राणाग्नि का भी शाश्वत अग्नि में होम करे। इस प्रकार प्राण के लीन होने पर जब समाधि की स्थिति आ जाय तब साक्षात् महेश्वरी को अपने से अभिन्न मान कर शान्त चित्तसे उनका ध्यान करे। ऐसा करने वाला वह साधक सब भूतों में स्वयं का और स्वयं में सब का स्थित होना अनुभव करता हैं।४०-४२।

यदा पश्यति भूतात्मा तदा पश्यति तां शिवाम्।
दृष्ट्वा तां ब्रह्मविद्भूयात्सर्वदानन्दरूपिणीम् ॥४३
तदा मायादिकं सर्वं दग्धं भवति भूमिप।
प्रारब्धकर्मणा त्वत्र यावद्देहश्च तिष्ठति ।४४
जीवन्मुक्तस्तदा जातो मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।
कृतकृत्यो भवेत्तात यो भजेज्जगदम्बिकाम् ।४५
तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन ध्येया श्रीभुवनेश्वरी।
श्रोताव्या चैव मन्तव्या गुरुवाक्यानुसारतः ॥४६
राजन्नेषकृतो यज्ञो मोक्षदो नात्र संशयः।
अन्ये यज्ञाः सकामास्तु प्रभवन्ति क्षयोन्मुखः ॥४७
देवीयज्ञ कुरुष्वाद्य विततं विधिपूर्वकम्।
विष्णुना यः कृतपूर्वं सृष्टयादौ नृपसत्तम ।४८
कृत्वा यज्ञं विधानेन दत्वा पुण्यं मखार्जितम्।
समुद्धर महाराज पितरं दुर्गतिङ्गतम् ॥४९

ऐसा होने पर वह भूतात्मा यज्ञकर्त्ता भगवती शिवा का दर्शन प्राप्त करता है और उस सच्चिदानन्द रूपिणी जगदम्बा का दर्शन पाते ही वह ब्रह्मज्ञानी हो जाता है।४३। हे राजन्! तब उस ब्रह्मज्ञानी के मायाविक विषय एवं कर्म दग्ध हो जाते हैं और जब तक वह जीवित रहता है, तब तक केवल प्रारम्भ ही शेष रह जाता है।४४। फिर वह शीघ्र ही जीवन्मुक्त हो जाता है जगदम्बा का भजन करने वाला मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है।४५। इसलिये गुरु के अनुसार भगवती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुवनेश्वरी का यत्न पूर्वक ध्यान श्रवण और मनन करना श्रेयस्कर है ।४६। हे राजन् ! इस प्रकार किया जाने वाला मानस यज्ञ मोक्ष का देने वाला है। इसमें सन्देह नही । अन्य यज्ञ कामना युक्त होने के कारण नष्ट हो जाने वाले हैं ।४७। हे नृपश्रेष्ठ ! अब आप विधिपूर्वक उसी देवी-तज्ञ को करिये, जिसे पहिले सृष्टि के आदि से भगवान् विष्णु ने किया था ।४८। आप उस देवी-यज्ञ को करिये उस अर्जित फल से अपने पिता का ब्रह्मशाप की दुर्गति से उद्धार करिये ।४९।

देवी यज्ञ का अनुष्ठान

हरिणा तु कथं यज्ञः कृतः पूर्वं पितामह ।
जगत्कारणरूपेण विष्णुना प्रभुविष्णुना ।१
के सहायास्तु तत्रासन्ब्राह्मणाः महामते ।
ऋत्विजो वेदतत्वज्ञास्तन्मे ब्रूहि परन्तपः ।२
पश्चात्करोम्यहं यज्ञं विधिदृष्टेन कर्मणा ।
श्रुत्वा विष्णुकृतं यागमंबिकायाः समाहितः ।३
राजञ्छृणु महाभाग विस्तरं परमाद्भुतम् ।
यथा भयवता यज्ञः कृतश्च विधिपूर्वकः ।४
विसर्जिता वदा देव्या दत्वा शक्तीश्च तास्त्रयः ।
काजेशाः पुरुषा जाता विमानवतासास्थिताः ।५
प्राप्ताः महार्णवं घोरं त्रयरते विविधोत्तमाः ।
चक्रुः स्थानानि वास्तर्थ समुत्पाद्य धरां स्थिताः ।६
आधारशक्तिरचला मुक्ता देव्या स्वयंततः ।
तथा धारा स्थिता जाता धरामेदः समन्विता ।७

राजा जनमेजय बोले—हे पितामह ! जगत् के कारण रूप भगवान् विष्णु ने पूर्व काल में यज्ञ किस प्रकार किया था, यह मेरे प्रति कहिये ।१। उस यज्ञ में कौन सहायक थे, कौन ब्राह्मण थे और वेदों के तत्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के ज्ञाता कौन-कौन ऋत्विज् थे ? ।२। भगवान् विष्णु द्वारा किये गये अम्बिका यज्ञका विवरण सुनकर मैं भी उस यज्ञको विधिपूर्वक करूंगा । ।३। व्यासजी बोले-हे राजन् ! हे महाभाग ! मैं आपसे विस्तार पूर्वक विष्णु द्वारा किये गये अम्बायज्ञ का वृतांत कहता हूँ, ध्यान से सुनो ।४। जब देवी ने ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र को विभिन्न शक्तियाँ प्रदान करके विदा किया तब वे पुनः विमान में जाकर बैठ गये और स्त्री भाव को छोड़कर पुरुष हो गये ।५। फिर वे तीनों देवता उसी महा सागर में जा पहुँचे वहाँ उन्होंने पृथिवी की रचना कर उस पर अपना निवास स्थान निर्मित किया ।६। तभी देवी ने पृथिवी को अचल आधार शक्ति प्रदान की पृथिवी उसी आधार पर टिकी है ।७।

मधुकैटभयोर्मेदः संयोगाद् मेदिनो स्मृता ।
धारणाच्च धरा प्रोक्ता पृथ्वी विस्तार योगता ।८
मही चापि महीयत्वाद्धृता सा शेषमस्तके ।
गिरयश्च कृताः सर्वे धारणार्थं प्रविस्तराः ।९
लोहकीलं यथा काष्ठे तथा ते गिरयः कृतः ।
महीधरा महाराज प्रौच्यंत विबुधैर्जनैः ।१०
जातरूपमग्रो मेरुर्वहुयोजनविस्तरः ।
कृतो मणिमयै शृङ्गैः शोभिता परमाद्भुतः ।११
मरीचिर्नारदोऽत्रिश्चपुलस्त्यः पुलहःकृतुः ।
दक्षो वसिष्ठ इत्येते ब्रह्मणः प्रथिता सुताः ।१२
मरीचेः कश्यपो जातो दक्षकन्यास्त्रयोदश ।
ताभ्यो देवाश्च दैत्याश्च समुत्पन्ना ह्यनेकशः ।१३
ततस्तु काश्यपी सृष्टिः प्रवृत्ता चातिविस्तरा ।
मनुष्यपशुसपांदिजातिभेदैरनेकधा ।१४

मधु-कैटभ के भेद के संयोग होने के कारण यह पृथिवी भेदिनी कही गई, धारण शक्ति होने से धरा हुई और विस्तारके कारण पृथिवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहलाई ।८। महत्ता के कारण 'मही' हुई, यह शेषनाग के मस्तक पर स्थित है। धारण और विस्तार के निमित्त इस पर पर्वतों की रचनाकी गई ।९। विज्ञजनों का कहना है कि जैसे, काष्ठ को यथा स्थान स्थिर करने के लिये लोहे की कील ठोंकी जाती है वैसे ही पृथिवी को स्थिर रखने के उद्देश्य से इस पर पर्वत स्थित किए हैं ।१०। अनेक योजन विस्तार वाला सोने का सुमेरु बड़ा अद्भुत रचा गया। उसके शिखर मणिमय हैं ।११। मरीचि, नारद, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष और वशिष्ठ ब्रह्माजी के प्रसिद्ध पुत्र हुए ।१२। मरीचि के पुत्र कश्यप हुए और दक्ष के तेरह कन्याएँ हुई, उन कन्याओं से अनेको देवता और दैत्य उत्पन्न हुए ।१३। फिर कश्यप की विस्तृत सृष्टि हुई, उसमें मनुष्य पशु, सर्प आदि अनेक जातियाँ हुई ।१४।

ब्रह्मणश्चार्धदेहात्तु मनुः स्वायंभुवोऽभवत् ।
शतरूपा तथा नारी संजाता वामभागतः ॥१५
प्रियव्रतोत्तानपादौ सुतौ तस्त वभुवतुः ।
तिलः कन्या वरारोहा ह्यभवन्नतिसुन्दरा ।१६
एवं सृष्टि समुत्पाद्य भगवान्कमलोद्भवः ।
चकार ब्रह्मलोकं च मेरुशृङ्गे मनोहरम् ।१७
बैकुण्ठं भगवान्विष्णु रमारमणमुत्तम् ।
क्रीड़ास्थानं सुरम्यं च सर्वलोकोपरिस्थितम् ।१८
शिवोऽपि परमं स्थान कैलासाख्य चकार ह ।
समासाद्य भूतगण विजहार यथारुचि ।१९
स्वर्गस्त्रिविष्टयो मेरुशिखरोपरि कल्पितः ।
तच्च स्थान सुरेन्द्रस्य नानारत्नविराजितम् ।२०
समुद्रमंथनात्प्राप्तः पारिजातस्तरुत्तमः ।
चतुर्दशस्तथा नागः कामधेनुश्च कामदा ।२१
उच्चैः श्रवास्तथाऽश्वो वै रभाद्यप्सपसस्तथा ।
इन्द्रेणोपात्तमखिलं जातं व भूस्वर्णषणम् ॥२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्माजी के देह के आधे दक्षिण भाग से स्वायंभुव मनु और वाम भाग से शतरूपा नामक स्त्री उत्पन्न हुई।१५। उस शतरूपा के गर्भ से प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र तथा अत्यन्त सुन्दरी तीन कन्याएँ उत्पन्न हुई।१६। इस प्रकार कमलोंद्भव ब्रह्माजी ने सृष्टि उत्पन्न करके सुमेरु पर्वत के शिखर पर मनोहर ब्रह्मलोक की रचना की।१७। भगवान् विष्णु ने भी लक्ष्मी के विहार निमित्त सब लोकों के ऊपर सुरम्य और श्रेष्ठ बैकुण्ठ स्थित किया।१८। शिवजी ने कैलाश को ही अपना निवास स्थान बनाया और वहाँ भूतगणों के साथ रहने लगे।१९। विविध प्रकार के रत्नोसे सुशोभित एक मेरु शिखर पर इन्द्र के निवास स्थान स्वर्ग की रचना हुई।२०। फिर जब एक बार समुद्र मथा गया तब उसमें सर्व श्रेष्ठ पारिजात वृक्ष, ऐरावत हाथी, सर्व-कामदा कामधेनु, उच्चैःश्रवा अश्व और रम्भा आदि अनेक अत्यन्त सुन्दरी अप्सराएं निकलीं।२१-२२।

धन्वंतरिश्चन्द्रमाश्च समराश्च सागराच्च समुद्भयौ।
स्वर्गस्थितौविजेते देवौ बहुगणैर्वृतौ।२३
एवं सृष्टिः ससुत्पन्ना विविधा नृपसत्तम।
देवतिर्वगमनुष्यादिभेदैर्विविधकल्पिता।२४
अण्डजाः स्वेदजाश्चैव चोद्भिज्जाश्च जरायुजाः।
चतुर्भेदः समुत्पन्ना जीवाः कर्मसुताः किलः।२५
एव सृष्टि समासाद्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः।
विहारं स्वेषु स्वामेषु चक्रः सर्वे यथेप्सितम्।२६
एव प्रवर्तिते सर्गे भगवानसुरच्युतः।
महालक्ष्म्य समं तत्र चिक्रीड भुवने स्वके।२७
एकस्मिन्समये विष्णु वैकुण्ठे संस्थितः पुरा।
सुधासिंधुस्थितं द्वाप सरमारमणि मण्डितम्।२८
तक्ष दृष्ट्वा महामायां यत्रश्चासादितः शुभः।
स्मृत्वाता परमा शक्तिस्त्रीभाव गमितो ययौ।२९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन्वन्तरि और चन्द्रमा भी उसी समुद्र से उत्पन्न हुए उन्होने भी बहुत से देवताओं के मध्य में स्वर्ग में ही निवास किया ।२३। हे नृपोत्तम ! इस प्रकार देवता, मनुष्य और पशु के भेद से तीन प्रकार की सृष्टि उत्पन्न हुई ।२४। फिर अंडज, स्वेदन उद्भिज्ज और जरायुज के भेद से अनेक प्रकार के देहधारी उत्पन्न हुए,यह सभी जीव कर्म के बन्धन में बँधे हैं ।२५। इस प्रकार सृष्टि रचना होने पर ब्रह्मा विष्णु और शिव अपने-अपने लोक में स्वेच्छा पूर्वक बिहार करने लगे ।२६। जब इस प्रकार सृष्टि की वृद्धि होने पर अपने लोक में विराजमान भगवान विष्णु को सहसा उस द्वीप का स्मरण हुआ जो अमृत सागरमें मणियों से सुशोभित था ।२७-२८। जहाँ उन्हे महामाया का दर्शन प्राप्त हुआ था और उस शुभ मन्त्र की प्राप्ति हुई थी ।२९।

यज्ञ कर्तुं मनश्चक्रे अस्थिकाया रमापतिः ।
उत्तीर्य भुवनाश्स्मात्समाहूड महेश्वरम् ।३०
ब्रह्माणं वरुणं शक्रं कुवेरं पावकं यमम् ।
बसिष्ठं कश्यपं दक्षं वामदेवं बृहस्पतिम् ।३१
सम्भारं कल्पयामास यज्ञार्थं चातिविस्तरम् ।
महाविभवसंयुक्तं सात्विकं च मनोहरम् ।३२
मण्डप विततं तत्रकारयामास शिल्पिभिः ।
ऋत्विजो वरयाम सप्तविंशतिः सुव्रतान् ।३३
चिति च कारयामास वेदीश्चैव विस्तराः ।
प्रजेपुर्ब्राह्मणा मन्त्रान्देवया बीजसमन्वितान् ।३४
जुहुवुस्ते हविः काम विधिवत्परिकल्पिते ।
कृते तु विततेहोमे वागुयाचशरीरिणी ।३५
विष्णु सदा समाभाष्य सुस्वरा मधुराक्षरा ।
विष्णो त्वं भव देवानां हरे श्रेष्ठतमः सदा ।३६

तब उन रमापति विष्णु ने अम्बिका यज्ञ करने का विचार किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अपने लोक से चलकर उन्होंने शिवजी, ब्रह्माजी, वरुण, इन्द्र, कुबेर पावक, यम, वशिष्ठ कश्यप, दक्ष वामदेव और गुरु वृहस्पति को यज्ञ का निमन्त्रण किया ।३०-३१। यज्ञ के निर्मित्त बहुत सी सामग्री एकत्र की गई, वह महा वैभव से युक्त मनोहर एवं सात्विक थी ।३२। शिल्पियों के द्वारा विशाल मण्डप बनाया और श्रेष्ठ व्रती सत्ताईस ऋत्विजों का वरण किया ।३३। फिर चैत्य और विशद वेदी रची गई तथा विप्रगण बीजमय देवी मन्त्र जने लपगे।३४। जब यज्ञ कार्य सम्पन्न हो गया तब आकाशवाणी हुई कि हे विष्णो ! हे हरे! तुम सब देवताओं से सदा हीं श्रेष्ठ रहोगे ।३५-३६।

मान्यश्च पूज्यनीयश्च समर्थश्च सुरेष्वपि ।
सर्वे त्वायर्चयिष्यन्ति ब्रह्मादश्च सवासवा ।३७
प्रभविष्यन्ति भो भक्त्या मानवा भुवि सर्वतः ।
वरदस्त्वं च सर्वेषां भविता मानवेषु वै ।३८
कामदः सर्वदेवानां परमः परमेश्वरः ।
सर्वयज्ञेषु मुख्यस्त्वं पूज्यः सर्वेश्च याज्ञिकैः ।३९
त्वां जनाः पूजयिष्यन्ति वरदस्त्वं भविष्यसि ।
सर्वयज्ञेषु मुख्यस्त्वं पूज्यः सर्वश्च याज्ञिकैः ।४०
त्वं वै षूज्यतमः कामं कीर्तिस्तव भविष्यसि ।
श्रुयिष्यन्ति च देवास्त्वां दानवैरतिपीड़िताः ।४१
तदाशेनवतीर्याशु कर्तव्यं धर्मरक्षम् ।
अवताराः स विख्याताः पृथिव्यां तव भागशः ।४२

तुम सदैव ही देवताओं के मान्य, पूज्य एवं समर्थ रहोगे । ब्रह्मा और इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवता तुम्हारी अर्चना करेंगे ।३७। पृथिवी पर उत्पन्न होने वाले सब मनुष्य तुम्हारी भक्ति करेंगे ।३८। पृथिवी वर प्रदान करने में समर्थ होंगे ।३९। तुम सभी देवताओं को वर देने वाले परम प्रभु होंगे । सब यज्ञों में हम प्रमुख समझे जाओगे तथा सभी याज्ञिक सर्व प्रथम तुम्हारा ही पूजन करेंगे ।४०। हे वरद ! सभी लोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारी आराधना करेंगे और दानवों से पीड़ित होने पर देवता भी तुम्हारी शरण लेंगे ।४०। तुम्हारा अन्यन्त यश फैलेगा और जब-जब धर्म का ह्रास होगा, तब-तब धर्म की रक्षा के लिए तुम अपने अंश से अवतार लोगे ।४१-४२।

इतिदत्वा वरात्वाणी विरराम स्वसम्भवा ।
समाप्य विधिवद्यज्ञं ह्यभवच्छ् वणादिव ।४३
समाप्य विधिवद्यसं भगवान्हरिरीश्वरः ।
विसर्जयित्वा तान्देवान्ब्रह्मपुत्रान्मुनीनथ ।४४
जगामामानुत्तरै सार्धं वैकुण्ठ गरुड़ध्वजः ।
स्वानि स्वानि च धिष्ण्यानि पुनः सर्वेसुरास्तुतः ।४५
मुनयी विस्मिता वार्ता कुर्वतस्ते परस्परम् ।
ययुः प्रमुदिता कामं स्वाश्रमान्पावनानथ ।४६
श्रुत्वा वाणो परमविशदां व्योमजां श्रोत्ररम्यां ।
सर्वेषां वै प्रकृतिविषये भक्तिभावश्च जात ।
चक्रूः सर्वेद्विसमुनिगणाः पूजनैः भक्तियुक्ता ।
तस्याः कामं निखिलफलदां चागमोक्तं मुनीद्रा ।४७

व्यास जी बोले—हे राजन् ! भगवान विष्णुको इस प्रकार वरदेकर आकाशवाणी रुकगई । उसे सुनकर विष्णु अत्यन्त प्रसन्नहुए और विधि पूर्वक यज्ञ समाप्त करके उन्होंने देवता, ब्रह्मपुत्र और मुनिजनोंको विदा किया । फिर अपने अनुचरों को साथ लेकर गरुड़ध्वज श्रीहरि अपने वैकुण्ठ को गये । फिर सब देवता भी अपने अपने लोक को चले गए ।४३-४५। तथा मुनिगण भी विस्मय पूर्वक परस्पर यज्ञ कर्त्ताको करते हुए अपने-अपने आश्रमको गए ।४६। सुनने में मधुर एवं अत्यन्त विशद उस आकाशवाणी को सुनकर सबके हृदयों में देवी के प्रति भक्ति-भाव उत्पन्न हुआ, इसलिए उन सब द्विजों और मुनियों ने प्रीतिपूर्वक देवी का पूजन किया । उन भगवती की आराधना, सब कामनाएं पूर्ण करने वाली है ।४७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवी महिमा

श्रुतो वै हरिणा क्लृप्तो यज्ञो विस्तरतो द्विज ।
महिमानं तथाऽम्बाया वै विस्तरतो मन ।१
श्रत्वा देव्याश्चरित्रं वै कुर्वे मखमनुत्तम् ।
प्रसादात्तव विपेन्द्र भविष्यामि च पावनः ।२
श्रुणु राजन्प्रवक्ष्यामि देव्याश्चरितमुत्तमम् ।
इतिहासं पुराणं च कथयामि सुविस्तरम् ।३
कोशलेषु नृपश्रेष्ठः सूर्य वंशसमुद्भवः ।
पुष्पपुत्रो महातेजा ध्रुवसधिरिति स्मृतः ।४
धर्मात्मा सत्यवन्धश्च वर्णाश्रमहिते रतः ।
अयोध्यायां समृद्धायां राज्यं चक्रं शुचिव्रतः ।५
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शुद्राश्चान्ये तथा द्विजाः ।
स्वां स्वां वृत्ति समास्थाय तद्राज्ये धर्मतोऽभवन् ।६
न चौराः पिशुना धूर्ततिस्य राज्ये च कुत्रचित् ।
दम्भाः कृतना मूर्खश्च वसन्ति कि मानवाः ।७

जनमेजय ने कहा—हे ब्रह्मन् ! अब आप भगवती की महिमा विस्तार पूर्वक कहिये।१।हे द्विजेन्द्र ! भगवती के चरित्र को श्रवण करके मैं भी यज्ञ करूँगा और पवित्र हो जाऊँगा ।२। व्यासजी बोले-हे राजन् अब मैं देवी का श्रेष्ठ चरित्र इतिहास और पुराण की सुविस्तीर्ण कथा के साथ कहता हूँ, उसे सुनो ।३। कौशल देश के सूर्यवंशी राजा पुष्पपुत्र थे, उनके पुत्र ध्रुवसन्धि अत्यन्त तेजस्वी हुए ।४। यह समृद्धि सम्पन्न अयोध्या पुरी में राज्य करते थे ।५। अपने शासन में रहते हुए ब्राह्मण क्षत्रिय,-वैश्यशूद्र आदि जातियाँ अपने-अपने धर्ममें स्थित रहकर अपनी अपनी वृत्ति से जीवन निर्वाह करती थीं ।६। राज्य में कही भी चोर चुगलखोर, धूर्त दम्भी, कृतघ्न और मूर्ख दिखाई नहीं देते थे ।७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं वै वर्तमानस्य नृपस्य कुरुसत्तम ।
द्वे पत्न्यौ रूपसम्पन्ने ह्यासतुः कामभोगदे ।८
मनोरमा धर्मपत्नी सुरूपाऽतिविचक्षणा ।
लीलावतीं द्वितीया च साऽपि रूपगुणान्विता ।९
मनोरमा शुभे काले सुषुवे पुत्रमुत्तमम् ।
सुदर्शनमपि पुत्रं राजलक्षणसंयुतम् ।१०
लीलावत्यपि तत्पत्नी मासेनैकेन भामिनी ।
सुषुवे सुन्दरं पुत्रं शुभे पक्षे दिने तथा ॥११
चकार नृपतिस्तत्र जातकर्मादिकं द्वयोः ।
ददौ दानानि विप्रेभ्यः पुत्रजन्मप्रमोदितः ।१२
चूड़ाकर्म तयोश्चक्रे विधिना नृपसत्तम ।
यथाविभवमसौ प्रीतियुक्तः परन्तपः ।१३
तयोः सुदर्शनो ज्येष्ठो लीलावत्याः सुतः शुभः ।
शत्रुजित्संज्ञकः कार्म चाटुवाक्यो बभूवह ।१४

हे कुरुश्रेष्ठ ! इस प्रकार धर्मपूर्वक राज्य करने वाले राजा ध्रुवसन्धि की दो रानियाँ अत्यन्त सुन्दरी तथा कामोपभोग के देने वाली थीं ।८। उनकी मनोरमा नाम की प्रथम पत्नी स्वरूपवती और विदुषी थी तथा द्वितीय पत्नी लीलावती भी सर्वगुण सम्पन्न थीं ।९। एक शुभ समय में रानी मनोरमा के गर्भसे एक राजलक्षण सम्पन्न सुदर्शन नामक पुत्र हुआ ।१०। उसके एक मास पश्चात् रानी लीलावती ने भी पक्ष तथा शुभ दिवस में एक प्रसव किया ।११-१२। कुछ समय बाद उन्होंने उन दोनों पुत्रों का चूढ़ाकर्म संस्कार अपने वैभव के अनुकूल अत्यन्त धूमधाम से किया ।१३। उनमें मनोरमा का पुत्र सुददर्शन बड़ा था और लीलावती का पुत्र शत्रुजित् छोटा, किन्तु विनय भाषी था ।१४

एवं गच्छति काले तु ध्रुवसंधिर्नृपोत्तमः ।
जगाम वनमध्येऽसौ मृगायाभिरतः सदा ॥१५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रीडमाने नृपे तत्र वने घोरेऽतिदारुणम् ।
उदतिष्ठन्निकुञ्जात्तु सिंहः परमकोपनः ।१६
तं पतंतं समालोक्य खड्गं नाभ्यनन्ननृपः ।
सोऽपि करैर्नखाग्रैश्च तत्रागत्य व्यदारयत् ।१७
स नखैराहतो राजा पपात च ममार वै ।
चुक्रुशुः सैनिकास्ते तु निर्जघ्नुर्विशिखैस्तदा ।१८
मृतः सिंहोऽपि तत्रैव भूपतिश्च तथा मृतः ।
सैनिकैर्मन्त्रिमुख्याश्च तथाऽऽगत्य निवेदिताः ।१९
परलोकगतं भूपं श्रुत्वा ते मन्त्रिसत्तमाः ।
संस्कारं कारयामासुर्गत्वा तत्र वनांतिके ।२०
प्रजाः प्रकृतयश्चैव वसिष्ठश्च महामुनिः ।
सुदर्शनं नृपं कर्तुं मन्त्रं चक्रुः परस्परम् ।२१

एक समय मृगया प्रेमी राजा ध्रुवसन्धि पशुओं के शिकार में लगे थे, तभी एक झाड़ी से एक सिंह अत्यन्त क्रोध करता हुआ निकल पड़ा ।१६। उस सिंह को अपने ऊपर झपटते देख राजाने शीघ्रता पूर्वक अपने क्रूर नखो से राजा की देह को चीर दिया ।१७। नखो से आहत हुए राजा पृथ्वी पर गिर कर मर गये । यह देखकर क्रुद्ध सैनिकों ने सिंह पर वाणों की वर्षा की ।१८। इससे सिंह भी मर गया और राजाकी भी मृत्यु हो गई । तब उन सैनिकोंने यह सूचना मुख्य मन्त्रियों को दी।१९। राजा के परलोकगत होनेकी बात सुनकर उन मन्त्रियों ने वनमें जाकर मृतक संस्कार कराया ।२०। इसके पश्चात् प्रजाननों मन्त्रियों और महामुनि वसिष्ठ ने परस्पर मन्त्रणा की कि राजा के बड़े पुत्र सुदर्शन को राजा बनाया जाय ।२१।

कृते मृत्रे मन्त्रिवृद्धैर्युधाजिन्नाम पार्थिवः ।
तत्राजगाम तरसा श्रुत्वा तूज्जयिनीपतिः ।२२
मृतं जामातरं श्रुत्वा लीलावत्याः पिता तदा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्राजगाम त्वरितो दोहित्रप्रियकाम्या ।२३
वीरसेनस्तथाऽऽयातः सुदर्शनहितेच्छया ।
कलिङ्गाधिपतिश्चैव मनोरमापिता नृपः ।२४
विवादोऽत्र सुसम्पन्नो नृपयोस्तत्र लुब्धयोः ।
कः सन्देहमापार्कर्तुं क्षमः स्यादतिसङ्कटे ।२५
एव विवदमानौ तां संस्थितौ नृपती तदा ।
प्रजाश्च ऋषयश्चैदे वभूवुर्व्यग्रमानसाः ।२६
समाजग्मुश्च समान्ताः ससैन्याः क्लेशतत्पराः ।
बिग्रहं चाभिकांक्षंतः परस्परमतन्द्रिताः ।२७
निषादा ह्याययुस्तत्र शृङ्गवेरपुराश्रयाः ।
राजनुज्यमुपाहर्तुं मतं श्रुत्वा महीपतिम् ।२८
पुत्रौ च बालकौ श्रुत्वा विग्रहं च परस्परम् ।
चौरास्तत्र समाजग्मुदेशांतरादपि ।२९
संमर्दस्तत्र संजातः कलेह समुपस्थिते ।
युधाजिद्वीरसेनश्च युद्धकामौ बभूवतुः ।३०

इस प्रकार मन्त्रियों ने जब सुदर्शन को राजा बनाने का निर्णय कर लिया तभी उज्जयिनी के राजा युधाजित् वहाँ आ गये ।२२। वह लीलावती के पिता अपने जामाता की मृत्यु का समाचार सुनकर अपने दौहित्र का शुभ करने की इच्छा से आये थे ।२३। तभी मनोरमा के पिता कलिङ्गाधिपति राजा वीरसेन अपने दौहित्र सुदर्शन का चिंतन करते हुए वहाँ आगये ।२४। इस अपने-अपने दौहित्र की हितेच्छा में उन दोनों राजाओं में विवाद खड़ा हो गया। अब इस सङ्कट की स्थिति में इन दोनों के सन्देह निवारण की क्षमता किसमें थी ? ।२५। इस प्रकार उन दोनों राजाओं को झगड़ते हुए देखकर सभी प्रजाजन और ऋषिगण व्याकुल हो उठे।२६। तभीदोनों पक्षोंके सामन्तगण अपनी अपनी सेनाओं को लेकर युद्ध की इच्छा से मैदान में जा खड़े हुए।२७। साथ ही राजा ध्रुवसान्धिकी मृत्यु का समाचार सुनकर शृङ्गवेर का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नषाद राजा राजकोष को लूटने के विचार से वहाँ आगया ।२८। दोनों राजपुत्रों के राज्य के लिए परस्पर झगड़ने की बात सुनकर देशदेशांतर के चोर डाकू भी वहाँ पहुँच गये ।२९। इस प्रकार वहाँ भीषण कलह की स्थिति उत्पन्न हो गई और युधाजित् तथा वीरसेन, दोनों राजाओं ने परस्पर युद्ध करने का निर्णय किया ।३०।

वीरसेन की पराजय

संयुगे सति भूपयोराहवाय समुपात्तशस्त्रयोः ।
क्रोधलोभवशयोः समंततः संबभूव तुमुलस्तु विमर्दः ।१
संस्थितः स समरे धृतचापः पार्थिवः पृथुलबाहू युधाजित् ।
संयतः स्वबलवाहनादिकैराहवाय कृतनिश्चयो नृपः ।२
वीरसेन इह सैन्यसंयुतः क्षात्रधर्ममनुसृत्य संगरे ।
पुत्रिकात्मजहिताय पार्थिवः संस्थितः सुरपतेः समतेजाः ।३
संग्रामे संवृते तत्र युधाजित्पृथिवीपतिः ।
जघान वीरसेनं तं बाणैस्तीव्रैः सुदारुणैः ।४
निहतः सः पपातोर्व्यां छिन्नमूर्धा मही तिः ।
प्रभग्नं तद्बलं सर्वं निर्गतं च चतुर्दिशम् ।५
मनोरमा हतं श्रुत्वा पितरं रणमूर्धनि ।
भयत्रस्ताऽथ सजाता पितुर्वैरमनुस्मरन् ।६
हनिष्यति युधाजिद्वै पुत्रं मम दुराशयः ।
राज्यलोभेन पापात्मा सेति चिन्तापराऽभवत् ।७

व्यासजी ने कहा हे राजन् ? युद्ध का निश्चय करके उन दोनों राजाओं ने शस्त्र ग्रहण किये और क्रोध तथा लोभ के वश में उन्होंने संघर्ष प्रारम्भ कर दिया ।१। बड़ी भुजाओं वाले राजा युधाजित् ने युद्ध के लिए धनुष बाण लिया और अपनी सेना तथा वाहनादि सहित रणक्षेत्र में उपस्थित हुए ।२। क्षत्रिय धर्म में स्थित इन्द्र के समान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेजस्वी राजा वीरसेन भी अपनी सेना के सहित अपने दौहित्र की हित कामना से युद्ध क्षेत्र में जा डटे ।३। उस भयंकर संग्राम में राजा युधाजित ने अपने तीव्र और अत्यन्त दारुण बाणों के द्वारा राजा वीरसेन का वध कर दिया ।४। राजा वीरसेन का मस्तक धड़ से कट गया और वे धराशायी हो गए तथा उनकी सेना भय के कारण चारों ओर भाग गई ।५। जब मनोरमा को अपने पिता की मृत्यु की सूचना मिली तो वह वैरियों के भय से त्रस्त हो उठी ।६। उसने सोचा राज्य के लाभ में पापात्मा यथाचित् मेरे पुत्र की भी हत्या कर डालेगा ।७।

किं करोमि क्व गच्छामि पिता मे निहतो रणे ।
भर्ता चापि मृतोऽद्यैव पुत्रोऽयं मम बालकः ॥८
न मे भ्राता तथा शूरो यो मे बन्धात्प्रमोक्षयेत् ।
महत्कष्टं च संप्राप्तं मया वै देवयोगतः ॥९
उद्यमः सर्वथा कार्यः सिद्धिर्दैवाद्भिजायते ।
उपायं पुत्ररक्षार्थं करोम्यद्य त्वरान्विता ।१०
इति संचिन्त्य सा बाला विदल्लं चातिमानिनम् ।
निपुणं सर्वकार्येषु चिन्त्यं मन्त्रिवरोत्तम् ॥११
सामाहूय तमेक्रांते प्रोवाच बहुदुःखिता ।
गृहीत्वा बालकं हस्ते रुदन्ती दीनमानसा ॥१२
पिता मे निहतः संख्ये पुत्रोऽयं बालकस्तथा ।
युधाजिद्बलवान्राजा किं विधेयं वदस्व मे ॥१३
तामुवाच विदल्लोऽसौ नात्र स्थातव्यमेव च ।
गमिष्यामो वने कामं वाराणस्याः पुनः किल: ॥१४

अब मैं क्या करूं ? किधर जाऊं ? मेरे पिता की तो संग्राम में मृत्यु हो गई, पति अभी मर चुके हैं और मेरा पुत्र बालक है ।८। मेरा कोई भाई भी ऐसा नहीं है जो शूर हो और मुझे इस बन्धन से छुड़ा सके । दैवयोग से कैसा घोर संकट मुझ पर आ पड़ा है ।९। परन्तु दैवाधीन होने पर भी उद्यम से कार्य सिद्धि सदा सम्भव है । अतः मैं भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने पुत्र की रक्षा के लिए कोई उपाय अवश्य करूँगी ।१०। ऐसा निश्चय करके रानी मनोरमा ने सर्व कार्योंमें चतुर अपने एक विश्वस्त एवं श्रेष्ठ मन्त्री विदल्ल का स्मरण किया ।११। उसे एकान्त में बुलाकर अत्यन्त दुःखी हुई रानी अपने हाथ में बालक को लिए हुए रोती हुई उससे बोली ।१२। मेरे पिता संग्राम में मृत्यु को प्राप्त हो गये और मेरा यह पुत्र अभी बालक है। युधाजित् अत्यन्त बली है, तो मुझे अब क्या करना चाहिए, यह बताओ ।१३। विदल्ल ने कहा हम यहाँ से भागकर किसी वन में चलें फिर वहाँ से काशी पहुँच जायें ।१४।

इत्युक्त्वा तेन सा राज्ञी गत्वा लीलावती प्रति ।
उवाच पितरं द्रष्टुं गच्छाम्यद्य सुलोचने ॥१५
इत्युक्त्वा रथमारुह्य सैरध्रीसंयुतातदा ।
विदल्लेन च संयुक्ता निःसृता नगरादवहिः ॥१६
भारद्वाजाक्षमं प्राप्ता त्वरया च भयाकुला ।
संवीक्ष्य तापसांस्तत्र संजाता निर्भया तदा ॥१७
मुनिना सा ततः पृष्टा काऽसि कस्य परिग्रहः ।
कष्टेनात्र कथं प्राप्ता सत्यं ब्रूहि शुचिस्मिते ॥१८
देवी वा मानुषी वाऽसि बालपुत्रा वदे कथम् ।
राज्यभ्रष्टेव वामोरु भासि त्वं कमलेक्षणे ॥१९
एवं सा मुनिना पृष्टा नोवाच वरवर्णिनी ।
रुदती दुःखसंतप्ता विदल्लं च समादिशतत् ॥२०
विदल्लस्तमुवाचेदं ध्रुवसंधिर्नृपोमत्तमः ।
तया भार्या धर्मपत्नी नाम्ना चेयं मनोरमा ॥२१

विदल्ल के परामर्श से रानी मनोरमा लीलावती के पास जाकर बोली-हे सुलोचने ! मैं अपने पिता के दर्शनार्थ जा रही हूँ ।१५। यह कह अपनी एक दासी तथा विदल्ल को साथ लेकर रानी मनोरमा अपने बालक पुत्र के सहित रथारूढ होकर नगर से निकल गई ।१६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयाकुल हुई वह रानी भारद्वाजाश्रम पहुँची और वहाँ तपस्वियो को विद्यमान देखकर उसका भय दूर हुआ ।१७। उसे देखकर मुनि ने पूछा कि हे शुचिस्मिते ! तुम कौन हो ? किसकी भार्या हो ? ऐसा कष्ट उठाकर तुम यहाँ क्यों आई हो ? यह सब सत्य कहो ।१८। तुम कोई देवी हो अथवा मानुषी ? अपने बालक पुत्र को लेकर इस घोर वन में क्यो आई हो ? ।१९। परन्तु रानी उनके प्रश्नों का उत्तर न देकर रोती ही रही, उस दुःख-संतप्ता ने विदल्ल को उत्तर देने का संकेत किया ।२०। तब विदल्ल ने उन्हें बताया कि ध्रुवसन्धि नामक एक राजा थे, यह उनकी भार्या मनोरमा हैं ।२१।

सिंहेन निहतो राजा सूर्यवंशी महाबला।
पुत्रोऽयं नृपतेस्तस्य नाम्ना चैव सुदर्शनः ॥२२
अस्य पिताऽतिधर्मात्मा दौहित्रार्थे मृतो रणे।
युधाजिद्भयत्रस्ता संप्राप्ता विजने वने ॥२३
त्वामेव शरणं प्राप्ता बालपुत्रा नृपात्मजा।
त्राता भव महाभाग त्वमस्या मुनिसत्तम ॥२४
आर्तस्य रक्षणे पुण्यं यज्ञाधिकमुदाहृदम्।
भयत्रस्तस्य दीनस्य विशेषफलदं स्मृतम् ॥२५
निर्भया वस कल्याणि पुत्रं पालय सुव्रते।
न ते भयं विशालाक्षि कर्तव्यं शत्रुसंभवम् ।२६
पालयस्व सुतं कान्तं राजा तेऽयं भविष्यति।
नाश दुःखं तथा शोकः कदाचित्सं भविष्यति ।२७
इत्युक्त्वा मुनिना राज्ञी स्वस्था सा संबभूव ह।
उटजे मुनिना दत्ते वीतशोका तदाऽवसत् ।२८

उन सूर्यवंशी महाबली महाराजा को सिंह ने मार डाला था, वह सुदर्शन नामक बालक उन्ही का पुत्र है ।२२। बस रानी मनोरमा के धर्मात्मा पिता अपने इस बेवते के हितार्थ युद्ध करते हुए मारे गये, तब राजा युधाजित् के भय से भागकर यहे यहाँ आई हैं ।२३। हे मुनिश्रेष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे महाभाग ! यह अवोध पुत्र वाली रानी आपकी शरण में उपस्थित हुई है, आप इसकी रक्षा कीजिए ।२४। आर्ते की रक्षा करने में यज्ञ से भी अधिक फल की प्राप्ति होती है और भय त्रस्त तथा दीन की रक्षा करने में तो उससे भी अधिक फल मिलता हैं ।२५। इसपर ऋषि बोले हे कल्याणी ! तू यहाँ भय-रहित होकर निवास करती हुई अपने पुत्रका पालन कर । हे विशालाक्षि ! यहाँ तुझे शत्रु का भय नहीं हो सकता ।२६। तू अपने इस सुन्दर पुत्र का पालन कर, यह आवश्य ही राजा होगा । तुझे यहाँ कभी किसी दुःख या शोक की प्राप्ति नही होगी ।२७ व्यासजी बोले कि मुनि के इस प्रकार कहने पर रानी का मन स्वस्थ हो गया और मुनि द्वारा दी हुई कुटी में शोक त्याग कर रहने लगी । ।२८।

देवी की कृपा

युधाजिदथ संग्रामाद् गत्वाऽयोध्यां महाबलः ।
मनोरमां च पप्रच्छ सुदर्शनजिघांसया ।१
सेवकान् प्रेषयामास क्व गतेति मुहूर्वदन् ।
शुभे दिनेऽथ दौहित्रं स्थापयामास चासने ।२
युधाजिदपि दौहित्रं स्थापयित्वा विधानतः ।
राज्यं च मन्त्रिसात्कृत्वा चलितः स्वां पुरीं प्रति ।३
श्रुत्वा सुदर्शनं तत्र मुनिनामाश्रमस्थितम् ।
हंतुकामो जनामाशु चित्रकूटं पर्वतम् ।४
निषादाधिपतिं शूरं पुरस्कृत्य बलान्वितम् ।
दुर्दशाख्यमगादाशु शृङ्गवेरपुराधिपम् ।५
श्रुत्वा मनोरमा तत्र बभूवातिसुदुःखिता ।
आगच्छन्तं बालपुत्रं भर्याता सैन्यसंयुतम् ६
तमुवाचातिशोकार्ता मुनिं साश्रु विलोचना ।
किं करोमि क्व गच्छामि युधाजित्समुपस्थितः ।७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यासजी बोले—राजन् ! युद्ध क्षेत्र से अयोध्या लौटने पर राजा युधाजित् ने सुदर्शन का वध करने की इच्छा से मनोरमा के विषय में पूछा ।१। फिर उनकी खोज के लिए सेवकों को भेजा और एक शुभ दिवस देखकर अपने दौहित्र को राज सिंहासन पर बैठा कर राजा युधाजित् अपनी नगरी को गये ।२-३। वहां जाकर उन्होंने सुना कि सुदर्शन भारद्वाजाश्रम में हैं । इसलिए वे उसे मारने के विचारसे तुरन्त ही चित्रकूट पर्वत की ओर चल दिये ।४। मार्ग में उन्होंने शृंगवेरपुर के निषाद राजा दुर्दश को भी अपने साथले लिया, वह बड़ा वली और विशाल सेना से सम्पन्न था ।५। जब मनोरमा ने विशाल सेना सहित युधाजित् के वहाँ आने का समाचार सुना तो वह भयसे अत्यन्त संतप्त हो उठी ।६। उसने शोक से व्याकुल एवं सजल नयन होकर मुनिराजसे कहा कि युधाजित् यहाँ आ रहा है, अब मैं क्या करूँ ? किधर जाऊं । ।७।

पिता मे निहतोऽनेन दौहित्रो भूपतिः कृतः ।
सुतं मे हंतुकामोऽत्रसमायाति बलान्वितः ।८
तस्मादेनं महाभाग विसर्जय गृहं प्रति ।
सपुत्राऽहं वसिष्यामि जानकीवद्द्विजोत्तम ।९
इत्युक्तोऽसौ मुनिस्तावद् गत्वा युधाजिन्नृपम् ।
उवाच वचनं राज भारद्वाजः प्रतापवान् ।१०
गच्छ राजन्यथाकामं स्वपुरं नृपसत्तम् ।
नेयं मनोरमाऽभ्येति बालपुत्रा सुदुःखिता ।११
मुने मुंच हठं सौम्य विसर्जय मनोरमाम् ।
नाथ यस्याम्यहं मुक्त्वा नेष्याम्यद्य बलात्पुनः ।१२
नयस्व यदि शक्तिस्ते वलेनाद्य ममाश्रमात् ।
विश्वामित्रो यथा धेनुं वसिष्ठस्य मुनेः पराः ।१३
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य मुनेस्तत्रावनीपतिः ।
मन्त्रिवृद्धं समाहूय प्रपच्छ तमतंद्रितः ।१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसने मेरे पिता का वध किया और अपने दौहित्रको राजा बनाया अब यह मेरे पुत्र की हत्या करने के लिए ही विशाल सेना लेकर यहाँ आ रहा है ।८। इसलिए हे महाभाग ! आप किसी भी प्रकार इस राजा को यहाँ से विदा कीजिए । हे द्विजोत्तम ! मैं जानकी के समान अपने पुत्र के सहित अकेले ही यहाँ रहूँगी ।९। रानी मनोरमा के इस प्रकार कहने पर महर्षि राजा युधाजित् के पास गये और इन प्रतापी भारद्वाज मुनि ने उससे कहा ।१०। हे राजन् ! हे नृपोत्तम ! आप अपने नगर को चले जाइये । अत्यन्त दुःखित और अबोध बालक वाली रानी मनोरमा आपके सामने नहीं आ सकती ।११। तब युधाजित् ने कहा हे मुने! हठ छोड़कर मनोरमा को दे दीजिए । मैं उसे छोड़ें नहीं जा सकता।१२ ऋषि ने कहा—यदि आप में शक्ति हैं तो आप उसे उसी प्रकार बल पूर्वक ले जाइये, जिस प्रकार राजा विश्वामित्र वसिष्ठ की धेनु को बल पूर्वक ले गये थे ।१३। व्यासजी बोले कि मुनि के वचन सुनकर राजा युधाजित् ने अपने वृद्ध मन्त्री को बुला कर कहा ।१४।

किं कर्तव्यं सुबुद्धेऽत्र मयाऽद्य वद सुव्रत ।
बलान्नयामि तां कामं सुपुत्रां च सुभाषिणीम् ।१५
साहसंरहि कर्तव्यं श्रुतं राजन्मुनेर्वचः ।
विश्वामित्रस्य दृष्टान्तः कथितस्तेन मारिष ।१६
पुरा गाधिसुतः श्रीमान्विश्वामित्रोऽतिविश्रुतः ।
विचरन्स नृपश्रेष्ठो वसिष्ठाश्रममभ्यगात् ।१७
नमस्कृत्य च तं राजा विश्वामित्र प्रतापवान् ।
उपविष्टो नृपश्रेष्ठो मुनिना दत्तविष्टरः ।१८
निमंत्रितो वसिष्ठेन भोजनाय महात्मना ।
ससैन्यश्च स्थितो राजा गाधिपुत्रो महायशाः ।१९
नंदिन्याऽऽसादितं सर्वं भक्ष्यभोज्यादिकं च यत् ।
भुक्त्वा राजा ससैन्यश्च वांछितं तत्र भोजनम् ।२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतापं तं च नंदिन्याः परिज्ञाय स पार्थिवः ।
ययाचे नन्दिनीं राजा वसिष्ठं मुनिसत्तमम् ।२१

हे सुबुद्धे ! अब मेरा क्या कर्तव्य हैं ? क्या मुझे पुत्र सहित मनोरमा को बल पूर्वक पकड़ कर ले चलना चाहिए ? ।१५। मन्त्री ने कहा कि महाराज ऐसा साहस न करेंगे । आप मुनि का वचन सुन चुके हैं, उन्होंने इस समय राजा विश्वामित्र का दृष्टान्त प्रस्तुत किया है ।१६। प्राचीन समय में राजा गाधि के पुत्र विश्वामित्र प्रसिद्ध राजा हुए थे । ऐक दिन वह महर्षि वसिष्ठ के आश्रम पर गये ।१७। उन्होंने महर्षिको प्रणाम किया और मुनि द्वारा आसन देने पर उस पर बैठ गये ।१८। उस समय महर्षि ने उन्हें भोजन के लिए निमन्त्रण दिया तो निश्चित दिन राजा विश्वामित्र अपनी सेना के सहित उनके आश्रम में जा पहुँचे ।१९। उस समय सभी भक्ष्य एव भोज्य सामग्री नन्दिनी धेनुने उपस्थित कर दी और सेना के सहित राजा ने अपने रुचिकर पदार्थों का भोजन किया ।२०। जब राजा ने नन्दिनी गौ का ऐसा प्रभाव देखा तो उन्होंने महर्षि से उस गौ की याचना की ।२१।

अयुतं वाऽथ लक्षंवा ददामि तनसेप्सितम् ।
देहि मे नन्दिनीं साधो ग्रहीष्यामि बलादथ ।२२
कामं गृहाणां नृपते बलादद्य यथारुचि ।
नाहं ददामि हे राजन्स्वेच्छया नन्दिनीं गृहाद् ।२३
तच्छ्रुत्वा नृपतिर्भृत्यानादिदेश महाबलान् ।
नतध्वं नन्दिनी-धेनुं बलदर्प सुसंस्थिताः ॥२४
ते भृत्या जगृहुस्तां ते हठादाक्रम्य यन्त्रिताम् ।
वेपमाना मुनि प्राह सुरभिः साश्रुलोचना ।२५
मुने त्यजसि मां कस्मात्कर्षयन्ति सुयंत्रिताम् ।
मुनिस्तां प्रत्युवाचेदं त्यजेनाहं सुदुग्धदे ।२६
बलान्नयति राजाऽसौ पूजितोऽद्य मया शुभे ।
किं करोमि न चेच्छामि त्यक्तुं त्वां मनसा किल ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्युक्ता मुनिना धेनुः क्रोधयुक्ता बभूव ह ।
हम्भारवं चकाराशु क्रूरशब्दा सुदारुणम् ।२८

राजा ने कहा—हे महामुने आप मुझमें दस सहस्र से एक लाख तक उत्तम गौयें ले लें और यह नन्दिनी मुझें दे दें अन्यथा मैं इसे बल पूर्वक ले जाऊंगा ।२२। इस पर वसिष्ठ ने कहा—हे राजन् ! आप इसे स्वेच्छा से बलपूर्वक ले जाइये, मैं अपनी इच्छा से तो इसे नहीं दे सकता ।२३। यह सुनकर राजा ने सैनिकों को आदेश दिया कि इस धेनु को बलपूर्वक ले चलो।२४। सैनिकों ने उस धेनु को बलपूर्वक पकड़ा तो नन्दिनी भय से कम्पित हो उठी और सजल नयनों से बोली कि हे मुने ! आप किस कारण मेरा त्याग करते हैं, वह लोग मुझे बलपूर्वक क्यो खींच रहे हैं ? इस पर मुनि ने कहा-हे सुदुग्धे ! मैं तुझे नहीं त्याग रहा ।२५-२६। मैंने राजा का जो सत्कार किया था, उसी के फलस्वरूप यह तुम्हें ले जा रहे हैं, मैं तुम्हें स्वेच्छापूर्वक नहीं दे रहा हूँ ।२७। यह सुनकर नन्दिनी अत्यन्त कुपित हो गई और उसने अत्यन्त दारुण और क्रूर 'हम्भा' शब्द की ध्वनि की ।२८।

उद्गतास्तत्र देहात्तु दैत्या घोरतरास्तदा ।
सायुधास्तिष्ठ तिष्ठेति ब्रुवतः कवचावृताः ।२९
सैन्यं सर्वं हतं तैस्तु नन्दिनी प्रतिमोचिता ।
एकाकी निर्गतो राजा विश्वामित्रोऽतिदुःखितः ।३०
हंत पापोऽतिदीनात्मा निन्दन्क्षत्रबलं महत् ।
ब्राह्मं बल दुराराध्यं मत्वा तपसि संस्थितः ।३१
तस्मात्त्वमपि राजेन्द्र मा कृत्वा वैरमद्भुतम् ।
कुलनाशकरं नुनं तापसः सह संयुगम् ।३२
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य युधाजिन्नृपसत्तमः ।
प्रणम्य तं मुनिं मूर्ध्ना जगाम स्वपुरं ततः ।३३
मनोरमाऽपि स्वस्थाऽभूदाश्रमे तत्र संस्थिता ।
पालयामास पुत्रं तं सुदर्शनमृतव्रता ।३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिने दिने कुमारोऽसौ जगामोपचितिं ततः।
मुनिबालगता क्रीडन्निर्भय सर्वतः शुभः।३५

इस ध्वनि के होते ही उस वेनु की देह से असंख्य घोर शस्त्रो को धारण किए हुए दैत्य 'ठहरो ठहरो' कहते हुए निकल पड़े।२९। राजा की सेना को मार कर नन्दिनी को उनसे छीन लिया। दुःखित विश्वामित्र के अकेले ही घर लौटाना पड़ा।३०। वे सोचने लगे कि मैं कैसा पापी और दीनात्मा हूँ, मेरे क्षत्रियधर्म को धिक्कार है। तब उन्होंने ब्रह्म वल को सर्वश्रेष्ठ मानकर तपस्या का सहारा लिया।३१। इसलिए हे राजेन्द्र! आप तपस्वियों से शत्रुता मत कीजिए।३२। व्यासजी बोले कि अपने मन्त्रीके वचनसुनकर राजा युधाजित् ने मुनिको प्रणाम किया और अपने नगर को लौट गये।३३। उनके लौट जानें पर रानी का चित्त स्वस्थ हुआ और वह उसीं आश्रम में निवास करती हुए अपने पुत्र का पालन करने लगी। वह बालक भी दिनो-दिन वृद्धि को प्राप्त होता हुआ मुनिकुमारों के साथ भय रहित होकर क्रीड़ा करता था।३५

एकस्मिन्समये तत्र विदल्लं समुपागतम्।
क्लींवेति मुनिपुत्रस्तमामंत्रयत्तदन्तिके।३६
सुदर्शनस्तु तच्छ्रुत्वा दधाराक्षरं स्फुटम्।
अनुस्वारयुतं तच्च प्रोवाचापि पुनः पुनः।३७
बीजंवै कामराजाख्य गृहीतं मनसा तदा।
जजाप बालकोऽत्यर्थं धृत्वा चेतसि सादरम्।३८
भावियोगान्महाराज कामराजाख्यमद्भुतम्।
स्वभावेनैव तेनेदं गृहीतं बालकेन वै।३९
तथाऽसौ पञ्चमं वर्षे प्राप्य मन्त्रमनुत्तमम्।
ऋषिच्छदोविहीनं च ध्यानन्यासविवर्जितम्।४०
प्रजपन्मनसा नित्यं क्रीडत्यपि स्वपित्यपि।
विसस्मार न तं मन्त्रं ज्ञात्वा सारमिति स्वयम्।४१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्षे चैव दश प्राप्ते कुमारोऽसौ नृपात्मजः ।
मुनिना चोपनीतोऽथ वेदमध्यापितस्तथा ।४२

मन्त्री विदल्ल आश्रम में गये तब उनके हाव भाव देखकर एक मुनिपुत्र ने उन्हें 'क्लीव' कहा ।३६। राजपुत्र सुदर्शन इस नये शब्द की अक्षरावली का बारम्बार उच्चारण करने लगा ।३७। इस कामराज बीजमन्त्र के हृदयङ्गम होनेपर उसमें आदर भाव जागृत हुआ और वह उसे जपने लगा ।३८। हे राजन् ! कामराज नामक अद्भुत महामन्त्र बालक को सहसा ही प्राप्त हो गया और उसने उसे बाल स्वभाव वश ही हृदयगम किया था ।३९। जब उस बालक ने ऋषि-छन्द विहीन एवं न्यास ध्वनि से वियुक्त उस सर्वश्रेष्ठ मन्त्र को प्राप्त किया, उस समय उसकी आयु केवल पाँच वर्ष की थी ।४०। वह सदा खेलते या सोते समय भी उसी मन्त्र को जपता रहता था ।४१। जब उसकी ग्यारह वर्ष की अवस्था हुई तब मुनि भारद्वाज ने उपनयन संस्कार किया और वेदाध्ययन कराया ।४२।

कदाचित्सोऽपि प्रत्यक्षं देवीरूपं ददर्श ह ।
रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्तसर्वांगभूषणम् ।४३
गरुड़े वाहने संस्थां वैष्णवीं शक्तिमद्भुताम् ।
दृष्ट्वा प्रसन्नवदनः स बभूव नृपात्मजः ।४४
शरासनं च संप्राप्तं विशिखाश्च शिलाजितः ।
तूणीरकवचं तस्मै दत्तं चाम्बिकया वने ।४५
एतस्मिन्समये पुत्री काशिराजस्य सुप्रिया ।
नाम्नाशशिकला दिव्या सर्वलक्षणसंयुता ।४६
शुश्राव नृपपुत्रं तं वनस्थं च सुदर्शनम् ।
सर्वलक्षणसम्पन्नं शूरं काममिवापरम् ।४७
वंदीजनमुराच्छ्रुत्वा राजपुत्रं सुसम्मतम् ।
चक्रमे मनसा तं वै वरं वरयितुं शिवा ।४८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्ने तस्याः समागम्य जगदम्बा निशांतरे।
उवाच वचनं चेदं समाश्वास्य सुसंस्थिता ।४९
वरं वरय सुश्रोणि मम भक्तः सुदर्शनः।
सर्वकामप्रदस्तेऽस्तु वचनान्मम भामिनि ।५०
एवं शशिकला दृष्ट्वा स्वप्ने रूपं मनोहरम् ।
अम्बायाश्च स्मृत्वा जहर्ष भृशमानिनी ।५१

एक दिन सहसा उसे देवी का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त हुआ। उस समय वे लाल रङ्ग वाली भगवती लाल वस्त्राभूषण धारण किये हुए थी।४३। यह अदभुत वैष्णवी शक्ति गरुड़ पर आरूढ़ थी। उनके दर्शन करते ही राज पुत्र के मुखपर प्रसन्नता छा गई ।४४। भगवती ने स्वयं उसे धनुष तीक्ष्ण वाण, तरकस और कवच उसी वन में प्रदान किये ।४५। ऐसे ही समय में काशीराज की सर्वलक्षण सम्पन्ना कुमार, शशिकला को ज्ञात हुआ कि कामदेवके समान सुन्दर, वीर और सर्वलक्षण सम्पन्न सुदर्शन नामक राजकुमार वन में निवास करता है ।४६-४७। तभी उसने उसे पतिरूप में वरण करने का निश्चय कर दिया ।४८। उस रात्रि में उस राजकुमारी को भगवती जगदम्बा ने दर्शन देकर आश्वासन भरे शब्दों में कहा कि हे राजपुत्री सुदर्शन मेरा भक्त है, तुम उसी को पति रूप में वरण करना, वह मेरे आशीर्वाद से तुम्हारी सभी कामनायें पूरी करेगा।४९-५०। अति मानवती शशिकला स्वप्नमें अम्बिका का मनोहर दर्शन प्राप्त करके और उनके आशीर्वाद का स्मरण करके अत्यन्त हर्षित हुई ।५१।

देवी का काशी निवास

एकाकी निर्धनश्चैव वलहीनः सुदर्शनः।
वनवासी फलाहारस्तस्याश्चित्ते सुसंस्थितः ।१
वाग्बीजस्य जपसिद्धिस्यस्य एषा उपस्थिता ।
सोऽपि ध्यानपरोऽत्यंतं जजाप मन्त्रमुत्तमम् ।२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्नेऽपश्यत्यसौ देवीं विष्णुमायामखंडिताम् ।
विश्वमातरमव्यक्तां सर्वसंपत्करांविकाम् ।३
साऽपि चन्द्रकलाऽत्यर्थकामवाणप्रपीडिता ।
नानोपचारै रनिशं दधार दुःखितं वपुः ।४
तावत्तस्याः पिता ज्ञात्वा कन्यां पुत्रवरार्थिनीम् ।
सुबाहुः कारयामास स्वयंवरमतंद्रितः ।५
द्विजं शशिकला तत्र प्रेषयामास सत्वरम् ।
यथा न वेद मे तातस्तथा गच्छ सुदर्शनम् ।६
भारद्वाजाश्रमे ब्रूहि मद्भावयात्तरसा विभो ।
पित्रा मे संभृतः कामं मदर्थेन स्वयंवरः ।७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! उस राजपुत्री के हृदय में यह निर्धन बलहीन, वनवासी एवं फलाहारी सुदर्शन ही बस गया था ।१। वाग्बीज का जप करने से ही उसे यह सिद्धि मिली थी, इसलिए वह इस श्रेष्ठ मन्त्र का ध्यानमग्न होकर जप करता था ।२। उसे स्वप्न में अखंडिता विष्णु माया, विश्वमाता अव्यक्ता तथा सर्वसम्पत्ति की देनेवालीअम्बिका के नित्य दर्शन हुआ करते थे ।३। उधर राजकुमारी शशिकला भी कामवाण से पीड़ित हुई अनेक प्रकार के उपचारों द्वारा अपना जीवन व्यतीत करती थी ।४। तब तक इसके पिता काशिराज सुबाहु यह जान गये कि कन्या वर की कामना करती है इसलिए उन्होंने स्वयंवर किया ।५। तब शशिकला ने एक ब्राह्मण को गुप्त रूप से सुदर्शन के पास यह समाचार लेकर भेजा ।६। आप भारद्वाज आश्रम पर जाकर राजपुत्र सुदर्शनसे कहना कि मेरे विवाह के लिए पिताजी ने स्वयंवर रचा है।७।

आगमिष्यन्ति राजानो बलयुक्ता ह्यनेकशः ।
मया त्वं वै वृतश्चिते सर्वथा प्रीतिपूर्वकम् ।८
भगवत्या प्रसादेय शर्मावाभ्यां भविष्यति ।
आगतव्यं त्वयाऽत्रैव दैवं कृत्वा परं बलम् ।९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत्वा सर्वं निवेद्याशु तत्र प्रत्यागतो द्विजः ।
सुदर्शनस्तु तज्ज्ञात्वा निश्चयो गमने तदा ।१०
चकार मुनिना तेना प्रेरितः परमादरात् ।
गमनायोद्यतं पुत्रं तमुवाच मनोरमा ।११
सर्वदा सर्वदेशेषु पातु त्वां भुवनेश्वरी ।
महामायाजगद्धात्री सच्चिदानन्दरूपिणी ।१२
इत्युक्त्वा तं तदा माता वेपमाना भयाकुला ।
उवाचाहं त्वया सार्धमागमिष्यामि सर्वथा ।१३
निमिषार्धं विना त्वां वै नाहं स्थातुमिहोत्सहे ।
सदैव नय मां वत्स यत्र ते गमने मतिः ।१४

उसमें अनेक राजागण अपनी अपनी सेना लेकर आयेंगे, मेरा आपको ही पति बनाने का दृढ़ निश्चय है ।८।- भगवती के आशीर्वाद से हम दोनों का ही कल्याण होगा, अतः आप अवश्य आवें ।९। तब वह ब्राह्मण भारद्वाज आश्रम में गया और राजकुमारी का सन्देश देकर लौट आया । उधर सुदर्शन द्वारा सब समाचार जानकर महर्षि ने उसे स्वयंवर में भाग लेने की अनुमति दे दी । व्यासजी बोले कि जब मनोरमा ने अपने पुत्र को स्वयं में जाते देखा तो कहने लगी ।१०-११। हे पुत्र सदा सभी देशों में माता भुवनेश्वरी, महामाया, जगद्धात्री सच्चिदानन्द-स्वरूपिणी तुम्हारी रक्षा करें ।१२। यह कहकर मनोरमा भयसे काँप गई और विकल होती हुई बोली कि हे पुत्र ! मैं भी साथ चलूँगी ।१३। तुम्हारे बिना अर्द्ध निमिष भी नहीं रह सकती, इसलिए जहाँ तुम जाते हो, वहीं मुझे ले चलो ।१४।

इत्युक्त्वा निःसृता माता धात्रेयीसंयुता तदा ।
विप्रदत्ताशिषः सर्वे निर्ययुर्हर्षसंयुताः ।१५
वाराणास्यां ततः प्राप्तो रथेनैकेन राघवः ।
ज्ञातः सुवाहुना तत्र पूजितश्चार्हणादिभिः ।१६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निवेशाय गृहं दत्तं सर्वमन्नादिकं तथा ।
सेवकं समनुज्ञाप्य परिचर्यामिव च ।१७
मिलितास्त्वथ राजानो नानादेशाधिपाः किल ।
युधाजिदपि संप्राप्तो दौहित्रेण समन्वितः ।१८
अथ काशीपतिः प्राह सुता स्नातां स्थलंकृताम् ।
उत्तिष्ठ पुत्रि सुनसे करे धृत्वा शुभां स्रजम् ।१९
व्रज मण्डपमध्येऽद्य समाजं पश्य भूभुजाम् ।२०
गुणवान्रूपसम्पन्नः कुलीनश्च नृपोत्तमः ।
तव चित्ते वसेद्यस्तु वृणुष्व सुमध्यमे ।२१
देशदेशाधिपाः सर्वे मंचेषु सज्जितेषु च ।
संविष्टाः पश्य तन्वङ्गि वरस्व यथारुचि ।२२

यह कहकर मनोरमा भी दासी सहित चल दी। इस प्रकार यह तीनों वहाँ से चले, तब मुनियों ने उन्हें आशीर्वाद दिया।१५। रघुवंशी सुदर्शन रथ पर चढ़कर काशी में जा पहुँचे। राजा सुबाहु ने उनका समुचित सत्कार कर ठहरने और भोजन की व्यवस्था कर दी।१६-१७। तदन्तर वहाँ अनेक देशों के राजा आ-आकर एकत्र होने लगे। युधाजित् भी अपने दौहित्र शत्रुजित् के साथ आ गये ।१८। तब स्नान करके आभूषणों से भले प्रकार सजी हुई रेशमी वसन-धारिणी मधूक पुष्पों की माला हाथ में लिए कन्या शशिकला से सुबाहु बोले हे सुते! उठ, हाथमें श्रेष्ठ माला लेकर मण्डपमें जा और वहाँ विद्यमान राजाओं के उस समुदाय को देख।१९-२०। हे सुमध्यमे! इन राजाओं में तुझे जो भी श्रेष्ठ, गुणवान् रूपवान् एवं कुलीन प्रतीत हो और जो तेरे हृदय में वास कर सके, उसी के कण्ठ में माला डाल द।२१। हे तन्वङ्गि! उन सुसज्जित मंचों पर देश-देशों के राजा विराजमान हैं,तू उन्हें देखकर जिसे पसन्द करे उसी को पति रूप में वरण करले।२२।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तं तथा भाषमाणं तु पितरं मितभाषिणी।
उवाच वचनं बाला ललितं धर्मसंयुतम् ।२३
नाहं दृष्टिपथे राज्ञां गमिष्यामिपितः किल।
कामुकानां नरेशानां गच्छन्त्यन्याश्च योषितः ।२४
धर्मशास्त्रे श्रुतं तात मयेदं वचनं किल।
एक एव नरो नार्या निरीक्ष्यः स्यान्न चापरः ।२५
सतीत्वं निर्गतं तस्या या प्रयाति बहूथन।
संकल्पयन्ति ते सर्वे दृष्ट्वा मे भवत्त्विति ।२६
सुदर्शनो मया पूर्वं वृतः सर्वात्मना पितः।
तमृते नान्यथ कर्तुं मिच्छामि नृपसत्तम ।२७
विवाहविधिना देहि त्वं कन्यादानं शुभे दिने।
सुदर्शनाय नृपते यदीच्छसि शुभं हि मे ।२८

व्यासजी बोले अपने पिता का ऐसा वचन सुनकर उस मितभाषिणी शशिकला ने उनसे धर्म युक्त वचन कहा ।२३। शशिकला बोली—हे पिताजी, मैं उन राजाओं के सामने नहीं जा सकती ।२४। शास्त्रों का कथन हैं, कि स्त्री को केवल पतिका ही मुख-दर्शन करना चाहिए ।२५ अनेक पुरुषों के सामने जाने वाली नारी का सतीत्व नष्ट हो जाता है क्योंकि उसे देखने वाला पुरुष किसी प्रकार अपनी बना लेने की इच्छा रखता है ।२६। हे पिताजी ! मैंने तो सुदर्शन को पहिले ही अपने पति रूप में वरण कर लिया है, इसलिए उनके अतिरिक्त मैं किसी की कामना नही करती ।२७। है राजन् ! यदि आप मेरा शुभ चाहते हैं तो विवाह विधि से किसी शुभ दिन सुदर्शन के लिए ही कन्यादान कर दीजिए ।२८।

श्रुत्वा सुतावाक्यमनिंदितात्मा नृपांश्च गत्वा नृपतिर्जगाद।
व्रजतु कामं शिविराणि भूपाः श्वो ऽह विवाहं किलसंविधास्ये२९
भक्ष्याणि यानि मयार्पितानि गृह्णन्तु सर्वे मयि सुप्रसन्नाः।
श्वो भावि कार्यं हि मण्डपेऽत्र समेत्य सर्वैरिह संविधेयम्३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नायाति पुत्री किल मण्डपेऽत्र समेत्य किं भूपतयोऽत्र कार्यम् ।
प्रातः समाश्वास्य च तां नयिष्ये गच्छंतुतस्माच्छिबिराणिभूपा ३१
श्रुत्वा नृपास्तेऽवितथं विदित्वा वाचो ययुः स्वानि निकेतनानि।
विधाय पार्श्वे नगरस्य रक्षां चक्रुः क्रिया मध्यदिनो दिताश्च।३२
सुबाहुरप्याप्तजनैः समेतश्चकार कार्याणि विवाहकाल ।
पुत्री समाहूय गृहे सुगुप्ते पुरोहितैर्वेदविदां वरिष्ठैः ।३३
स्नानादिकं कर्म वरस्य कृत्वा विवाहभूषाभरणं तथैव ।
आनाप्य वेदीरचिते गृहे वं नस्वार्हणां भूमिपतिश्चकार ।३४
सविष्टरं चाचमनीयमध्यं वस्त्रद्वयं गामथ कुण्डले द्वे ।
समर्प्य तस्मै त्रिधिवन्नरेन्द्र ऐच्छत्सुतादानमहोनसत्त्वः ।३५

कन्या के वचन सुकर महाराज सुवाहु आगत नरेशों से बोले आप अपने-अपने शिविरों से पधारे । मैं अपनी कन्या का विवाह कल करूँगा ।२९। मेरे द्वारा अर्पित भक्ष्य और तेज पदार्थों को स्वीकार करते हुए आप प्रसन्नता से रहें और कल इस मण्डप में पधारें तभी विवाह कार्य होगा ।३०। हे भूपगणों ! आज मेरी पुत्री मण्डप में नहीं आ रही हैं। मैं उसे समझा-बुझाकर कल यहाँ लाऊँगा।३१। यह सुनकर सब राजा अपने-अपने शिविरों में गये और नगर के पार्श्वों में सुरक्षा-व्यवस्था करके मध्याह्न कर्म में लग गये ।३२। उधर महाराज सुवाहु अपने परिजनों सहित वैवाहिक कार्य सम्पन्न कराने में तत्पर हुए, पण्डितों को बुलाकर पुत्री को भी गुप्त स्थान में ले गये ।३३। वहाँ वर को स्नान कराकर वस्त्राभूषण धारण कराये और वेदी युक्त गृह में वर का पूजन किया ।३४। विष्टर आचमनीय, जल, अर्घ्य, वस्त्र का जोड़ा कुण्डल की जोड़ी और गौ प्रदान करके राजा ने विधि पूर्वक कन्या दान किया ।३५।

तस्मै गौरव- भोज्यानि विधाय विधिवत्तदा ।
वासराणि च षडाजा भोजयामास भक्तितः ।३६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं विवाहकार्याणि कृत्वा सर्वाणि पार्थिवः।
परिवाह्य प्रदत्त्वाऽथ मन्त्रयन्सचिवैः सह ।३७
दूतैस्तु कथितं श्रुत्वामार्गसंशोधन कृतम्।
बभूव विमना राजा सुबाहुरमितद्युतिः।३८
सुदर्शनस्तदोवाच श्वशुरं संशितव्रतः।
अस्मान्विसर्जयाशु त्वं गमिष्यामो ह्यशंकिताः।३९
भारद्वाजश्रमं पुण्यं गत्वा तत्र समाहिताः।
निवासाय विचारो वै कर्त्तव्यः सर्वथा नृप ।४०
नृपेभ्यश्च न कर्त्तव्यं भयं किंचित्त्वयाऽनघ।
जगन्माता भवानी मे साहाय्य वै करिष्यति ।४१
तस्येति मतमाज्ञाय जामातुर्नृपसत्तमः।
विससर्ज धनं दत्वा प्रतस्थे सोऽपि सत्वरः ।४२

राजा सुबाहु ने सुदर्शन को छः दिन तक अपने यहाँ रखा और मृदु तथा रुचिकर भोजन कराये ।३६। विवाह कार्य सम्पन्न कर बहुत सा दहेज दिया। तभी उन्हें समाचार मिला कि अनेक राजा मार्ग अव रुद्ध किये खड़े हैं। इनसे राजा सूबाहु चिन्तित हो गए ।३७-३८। उन्हें चिंति देखकर सुदर्शन ने कहा कि आप हमको निश्चिन्त होकर विदा कीजिए हमें मार्ग में कोई भय नहीं है ।३९। हमने अव पुनीत भारद्वाज आश्रम में ही जाकर निवास करने का विचार किया है ।४०। आप उन राजाओं से भयभीत न हों, क्योंकि जगन्माता भवानी मेरी सहायता करेगी ।४१। अपने जामाता का यह विचार जानकर सुबाहु ने उन्हें बहुत सा धनादि देकर विदा कर दिया ।४२।

बलेन महताऽऽविष्टो ययावनु नृपोत्तमः।
सुदर्शनो वृतस्तत्र चचाल पथि निर्भयः।४३
रथैः परिवृतः शूरः सदारो रथसंस्थितः।
गच्छन्ददर्शसैन्यानि नृपणां रघुनन्दनः ।४४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुबाहुरपि तान्वीक्ष्य चिन्ताविष्टो बभूव ह ।
विधिवत्स शिवां चित्ते जगाम शरणं मुदा ।४५
जजापैकाक्षरं मन्त्रं कामराजमनुत्तमम् ।
निर्भयो गीतशोकश्च पत्न्या सह नगोढया ।४६
ततः सर्वे महीपालाः कृत्वा कोलाहलं तदा ।
उत्थिताः सैन्यसंयुक्ता हर्तुं कामास्तु कन्यकाम् ।४७
प्रादुर्बभूव सहसा देवी सिंहोपरि स्थिता ।
नानायुधधरा दिव्या नरभूषणभूषिता ।।४८
दिव्याम्बरपरीधाना मन्दारस्रक्संयुता ।
तां दृष्ट्वा तेऽथ भूपाला विस्मयं परमं गताः ।४९
केयं सिंहासनारूढा कुतो वेति समुस्थिता ।
सुदर्शनस्तु तां वीक्ष्य सुबाहुमिति चाब्रवीत् ।५०

परन्तु राजा सुबाहु भी अपनी विशाल सेना के साथ उनके पीछे-पीछे चले ।४३। असंख्य रथों के मध्य में चलते हुए एक रथ पर अपनी भार्या के सहित आरूढ़ सुदर्शन को मार्ग में राजाओं की विशाल सेना दिखाई दी ।४४। उस सेना को देखकर सुबाहु भी बड़े चिन्तित हुए और उन्होंने भगवती शिवा का ध्यान करते हुए उनकी शरण ली ।४५ उस समय सुदर्शन अपनी पत्नी के सहित एकाक्षरात्मक काम राज-मन्त्र का जप करने लगे ।४६। उधर सभी राजा एक साथ शोर करते हुए अपनी सेना के सहित राजकुमारी का अपहरण करने में तत्पर हुए ।४७। उसी समय सिंह पर सवार भगवती सहसा प्रकट हो गईं। वे विभिन्न प्रकारके शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित तथा श्रेष्ठ आभूषणों से युक्त थीं ।४८। दिव्य वस्त्र धारिणी वे भगवती कण्ठ में मन्दार की माला पहिने थीं, उन्हें इस प्रकार प्रकट हुई देखकर शत्रु राजा विस्मत होगये ।४९। और कहने लगे कि सिंह पर सवार यह कौन नारी है ? कहां से आई है ? तभी भगवती को देखकर सुदर्शन ने सुबाहु से कहा ।५०।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पश्य राजन्महादेवीमागतां दिव्यदर्शनम् ।
अनुग्रहाय मे नूनं प्रादुर्भूता दयान्विता ।५१
निर्भयोऽहं महाराज जातोऽस्मि निर्भयादपि ।
सुदर्शनः सुबाहुश्च तामालोक्य वराननाम् ।५२
प्रणामं चक्रतुस्तांतु मुदितौ दर्शनेन च ।
ननाद च तथा सिंहो गजास्त्रस्ताश्चकंपिरे ।५३
ववुर्वाता महाघोरा दिशश्चासन्सुदारुणाः ।
सुदर्शनस्तदा प्राह निजं सेनापतिं प्रति ।५४
मार्गे व्रजध्वं तरसाः भूपाला यत्र संस्थिताः ।
किं करिष्यन्ति राजानः कुपिताः दुष्टचेतसः ।५५
शरणार्थं च संप्राप्ता देवी भगवती हि नः ।
निरातंकश्च गन्तव्यं मार्गेऽस्मिन्भूपसंकुलः ।५६

देखिए महाराज ! दिव्य दर्शन वाली भवानी हम पर दया करके हमारी सहायतार्थ यहाँ आ गई है ।५१। वैसे तो मैं पहिले भी निर्भय था परन्तु अब नितान्त निर्भय हो गया हूँ । देवी के सिंह ने घोर गर्जन किया जिससे वहाँ विद्यमान हाथी काँप उठे ।५२-५३। उसी समय बड़ी भयंकर आँधी चलने लगी दिशाएँ घोर होगयी, तभी सुदर्शन ने अपने सेनापति से कहा कि जहाँ हमारा मार्ग रोककर वे राजागण विद्यमान हैं ।५४-५५। अब हमारी रक्षा के लिए भगवती आयी है, इसलिए भय त्याग कर एकत्रित राजाओं के मार्ग पर ही बढ़ो ।५६

एव वृद्धे प्रवृत्तेऽथ चुकोप चण्डिका भृशम् ।
दुर्गा देवी मुमोचाथ बाणान्यु धाजित् प्रति ।५७
नानारूपा तदा जाता नानाशस्त्रधरा शिवा ।
संप्राप्ता तुमुलं नादं चकार जगदम्बिका ।५८
शत्रुजिन्निहतस्तत्र युधाजिदपि पार्थिव ।
पतितौ तौ रथाभ्यां तु जयशब्दस्तदाभवत् ।५९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्राहुरपि तं दृष्ट्वा निधनं संयुगे तयोः ।
तुष्टाव परमप्रीतोदुर्गा दुर्गतिनाशिनीम् ।६०
नमो देव्यै जगद्धात्र्यै शिवायै सततं नमः ।
दुर्गायै भगवत्यै ते कामदायै नमोनमः ।६१
नमः शिवायै शान्त्यै ते विद्यायै मोक्षदे नमः ।
विश्वव्याप्त्यै जगन्मातर्जगद्धात्र्यै नमः शिवे ।६२
नाहं गति तव धिया परिचिन्तयन्वै ।
जानामि देवि सगुणो किल निर्गुणायाः ।
किं स्तौमि विश्वजननीं प्रकटप्रभावां
भक्तार्तिनाशनपरां परतां च शक्तिम् ।६३

इस प्रकार भयंकर संग्राम उपस्थित होने पर वह भगवती चंडिका क्रोधित हो गईं और युधाजित पर बाण वर्षा करने लगी ।३७। उस समय वे शिवा विभिन्न रूप रखकर अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर घोर युद्ध में प्रवृत्त हो गईं ।५८। तब कुछ क्षणों में ही शत्रुजित व युधाजित दोनों मृत्यु को प्राप्त हुए ।५९। उनका संहार हुआ देखकर महाराज सुबाहु अत्यन्त प्रसन्न होकर दुर्गति नाशिनी दुर्गा की स्तुति करने लगे ।६०। सुबाहु ने कहा देवी जगद्धात्री ! शिवे! आपको नमस्कार है, दुर्गे भगवतीं ! कामनाओं के देने वाली माता को नमस्कार है ।६१। भगवती शिवा को नमस्कार है, शान्त, विद्या, मोक्ष देने वाली ! आपको नमस्कार है । हे शिवे ! जगन्माता हे जगद्धात्री ! आप संसार में व्याप्त है, आपको नमस्कार है ।६२। हे माता मैं सगुण जीव आप निर्गुण देवी को जानने में समर्थ नहीं हो सकता । हे विश्व जननी ! आप प्रकट प्रभाव वाली, भक्तों के सङ्कट दूर करने वाली हैं । परमात्मा-शक्ति की स्तुति मैं किस प्रकार से करूँ ? ।६३।

प्राग्देवता त्वमसि सर्वगतेव बुद्धि—
विद्या मतिर्गतिरपि त्वं सर्वजन्तोः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्वां स्तौमि किं त्वमसि सर्वमनोनियंत्री ।
किं स्तूयाहि सततं खलु चात्मरूपम् ।६४
ब्रह्मा हरश्चहरिरप्यनिशं स्तुवन्तो ।
नांतं गताः सुरवराः किल ते गुणानाम् ।
क्वाहं विभेदमतिरंब गुणैर्वृतो वै ।
वक्तुं क्षमस्तव चरित्रमहाप्रसिद्धम् ।६५
ब्रह्माऽपि वांछति सदैव हरो हरिश्च ।
सेन्द्राः सुराश्च मुनयो विदितार्थतत्वाः ।
यद्दर्शनं जननि तेऽद्य मया दुरापं
प्राप्तं विना दमशमादिसमाधिभिश्च ।६६
शक्ताऽसि जन्ममरणादिभयान्विहर्तुं
किं चित्रमत्र किल भक्तजनस्य कामम् ।
त्वं गीयसे जननि भक्तजनैरपारा
त्वं पापपुण्यरहिता सगुणाऽगुणा च ।६७
त्वद्दर्शनादहमहो सुकृती कृतार्थो
जातोऽस्मि देवि भुवनेश्वरि धन्यजन्मा ।
बीजं न ते न भजनं किल वेद्मि मातः ।
ज्ञातस्तवाद्य महिमा प्रकटप्रभावः ।६८
एवं स्तुता तदा देवि प्रसन्नवदना शिवा ।
उवाच तं नृपंदेवी वरं वरयसुव्रत ।६९

आप ही सबकी वाणी, सब में गति वाली, बुद्धि, विद्या, गति और गति हैं, सब के मन की नियत्रिका भी आप ही हैं, अतः मैं आपकी स्तुति कैसे करूं ? ।६४। ब्रह्मा, विष्णु आप शंकर आपकी निरन्तर स्तुति करके भी पार नही पाते, तो मैं भेदमति वाला गुणों से आवृत्त जीव आपके महान चरित्र को कैसे कह सकता हूँ ।६५। ब्रह्मा, हर,हरि इन्द्र आदि देवगण तथा तत्वज्ञानी मुनि जिनके दर्शनों को तरसते हैं,वह दुर्लभ दर्शन मुझें दम, शम, समाधि आदि के बिनाही मिल गया है।६६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे देवी ! जब आप अपने भक्तों के जन्म-मरणादि भयों को दूर करने में समर्थ है, तब किसी भक्त की कामना पूर्ण करना क्या बड़ी बात है ? हे माता ! आप अपार वाली पाप पुण्य से रहित एवं सगुण-निर्गुण है, इसीलिए भक्तजन आपका गुणानुवाद करते हैं ।६७। हे भुवनेश्वरि ! मैं आपका भजन एवं बीजमन्त्र न जानते हुए भी आपकी महान् महिमा को अवश्य जान गया हूँ ।६८। व्यासजी ने कहा कि महाराज सुबाहु की स्तुति सुनकर प्रसन्न मुख वाली शिवाने कहा हे सुव्रत ! अपना इच्छित वर माग लो ।६९।

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा भवान्याः स नृपोत्तमः ।
प्रोवाच वचनं तत्र सुवाहुर्भक्तिसंयुतः ।७०
एकतो देवलोकस्य राज्यं भूमण्डलस्य च ।
एकतो दर्शनं ते वै न च तुल्यं कदाचन ।७१
दर्शनात्सदृशं किंचित्त्रिषु लोकेषु नास्ति मे ।
कवरं देवि याचेऽहं कृतार्थोऽस्मि धरातले ।७२
एतदिच्छाम्यहं मातर्याचितुं वांछित वरम् ।
तव भक्तिः सदा मेऽस्तु निश्चला ह्यनपायिनी ।७३
नगरेऽत्र त्वया मातः स्थातव्यं मम सर्वदा ।
दुर्गादेवीति नाम्ना वै त्वं शक्तिरिह संस्थिता ।७४
रक्षा त्वया च कर्तव्या सर्वदा नगरस्यहि ।
यथा सुदर्शनस्त्रातो रिपुसंघादनामयः ।७५
तथाऽत्ररक्षा कर्तव्या वाराणस्यास्त्वयाम्बिके ।
यावत्पुरा भवेद्भूमौ सुप्रतिष्ठा सुसंस्थिता ।७६

व्यासजी ने कहा—हे राजा जनमेजय ! भगवती के वचन सुनकर काशिराज भक्तिरस में डूब गये और उनसे यह निवेदन किया ।७०। हे माता ! एक ओर तो देवलोक का और सम्पूर्ण विश्व का राज्य दूसरी ओर आपके दर्शन, इन दोनों की तुलना में आपके दर्शन ही अधिक रहेंगे ।७१। सम्पूर्ण त्रिलोकी में कोई भी वस्तु आपके दर्शन से अधिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है, मैं भी आपके दर्शनों से धन्य हो गयां हूँ तो अब हे अगदम्बिके! आपसे क्या माँगू ? ।७२। फिर भी आपकी इच्छा देने की ही हैं तो मेरे हृदय में आपकी निश्चला और अनपायिनी भक्ति सदा बनी रह, यही वर दीजिए ।७३। हे माता, आप मेरी इस काशीपुरी में स्वामी रूप से निवास करें और दुर्गा देवी नाम से तथा शक्ति सपित विद्यमान रहें। ।७४। जैसे इस समय आपने शत्रुओं से सुदर्शन की रक्षा की है वैसे ही आप मेरे नगरको सदैव रक्षा करती रहेंहे माता ! हे देवि! हे अम्बिके! जब तक इस काशी नगरी का अस्तित्व रहे तब तक आप यहीं विद्यमान रहें ।७५-७६।

इति संप्रार्थिता देवी दुर्गा दुर्गविनाशिनी।
तमुवाच नृपं तत्र स्तुत्वा वै संस्थितं तदा ।७७
राजन्सदा निवासी मे मुक्तिपर्या भविष्यति।
रक्षार्थं सर्वलोकानां यावत्तिष्ठति मेदिनी ।७८
अथ सुदर्शनस्तत्र समागत्य मुदान्वितः।
प्रणम्य परया भक्त्या तुष्टाव जगदम्बिकाम् ।७९
अहो कृपां ते कथयाम्यहं किं त्रातस्त्वया यत्किल भक्तिहीनं
भक्तानुकम्पो सकलो जनोऽस्ति बिमुक्तभवतेरवनं व्रतस्ते।८०
त्वं देवि सर्वं सृजसि प्रपचं श्रुतं मया पालयति स्वसृष्टम्।
त्वमसि संहारपरे च काले न तेऽत्र चित्रं मम रक्षणं वै ।।८१
करोमि किं ते वद देवि कार्यं क्व वा व्रजामीत्यनुमोदयाशु
कार्ये विमूढोऽस्मि तवाज्ञयाऽहङ्गच्छामितिष्ठेविहरामि मातः।।८२

व्यासजी बोले—हे राजन ! इस प्रकार सुबाहु द्वारा प्रार्थित होकर दुर्गति का नाश करने वाली दुर्गा ने राजा की सराहना की और बोलीं ।७७। हे राजन् ! जब तक यह पृथ्वी विशमान रहेगी, तबे तक रक्षा करने के लिए मैं सदा काशी में रहूँगी ।७८। तदन्तर अत्यन्त हर्षित हुए सुदर्शन ने भगवती के समीप जाकर भक्ति पूर्वक उन्हें प्रणाम किया और रति करने लगा ।७९। अहो, मैं आपकी कृपाको किस प्रकार कहूँ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपने एक भक्तिहीन की रक्षा की। भक्तों पर तो सभी कृपा करते हैं, परन्तु अभक्तों की रक्षा का व्रत आपने ही लिया है।८०। हे देवि ! मैंने सुना है कि विश्व प्रपंचकी स्रष्टा आपही है आपही पालन और संहार करती हैं, तब आपने मेरी रक्षा की तो आश्चर्य ही कैसा ? ।८१। हे देवी ! अब आप आज्ञा दीजिए कि आपका कौनसा कार्य करूँ ? इस समय क्या करना चाहिए, यह मैं नहीं समझता। अब तो सब कुछ आपकी आज्ञा पर निर्भर हैं।८२।

तं भाषमन्तं तु देवी प्राह दयान्विता।
गच्छायोध्यां महाभाग कुरु राज्यं कुलोचितम् ।८३
स्मरणीया सदाऽहं ते पूजनीया प्रयत्नतः।
शं विधास्याम्यहं नित्य राज्ये ते नृपसत्तम् ।८४
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां च विशेषतः।
मम पूजा प्रकर्तव्या बलिदानविधानतः ।८५
अर्चा मदीया नगरे स्थापनीया त्वयाऽनघः।
पूजनीया प्रयत्नेन त्रिकालं भक्तिपूर्वकम् ।८६
शरत्काले महापूजा कर्तव्याममं सर्वदा।
नवरात्रविधानेन भक्तिभावयुतेन च ।८७
चैत्राऽश्विने तथाऽषाढे माघे कार्यं महोत्सवः।
नवरात्रे महाराज पूजा कार्या विशेषतः ।८८
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां मम भक्तिसमन्वितैः।
कर्तव्यां नृपशार्दूल तथाऽष्टम्यां सदा बुधैः ।८९

व्यासजी बोले—हे राजन ! यह सुनकर भगवती ने सुदर्शन के प्रति दया पूर्वक कहा—हे महाभाग ! अब तुम अयोध्या जाकर अपना कुलोचित राज्य करो।८३। हे नृपश्रेष्ठ ! वहाँ तुम सदा मेरा स्मरण पूजन करते रहना और मैं तुम्हारे राज्य की रक्षा करती रहूँगी।८४। अष्टमी चतुर्दशी और विशेष रूप से नवमी के दिन विधि पूर्वक मेरा पूजन करना उचित है।८५। हे निष्पाप ऽ अपने नगरमें मेरी प्रतिमा स्थापित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके भक्ति भाव सहित तीनों समय मेरी पूजा करते रहना ।८६।शरत् काल में नवरात्र विधान में मेरी महापूजा भक्तिभाव पूर्वक करनी चाहिए ।८७। हे राजन् ? चैत, आश्विन, आषाढ़ और माघ के महीनों में विशेष रूप से नवरात्र से महोत्सव मनाते हुए मेरा पूजन करें ।८८। हे शार्दूल ! विद्वजन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तथा अष्टमी को भक्ति से युक्त होकर मेरा पूजन करना उचित समझते हैं ।८९।

इत्युक्त्वा प्रहिता देवी दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।
नता सुदर्शनेनाथा स्तुता च बहुविस्तरम् ।९०
अन्तर्हिता तु तां दृष्ट्वा राजानः सर्व एव ते ।
प्रणेमुस्तं समागम्य यथा शक्रं सुरास्तदा ।९१
सुबाहुरगमत्काश्यां तंमापृच्छ्य सुदर्शनम् ।
सुदर्शनोऽपि धर्मात्मा निर्जगाम सुकोसलान् ॥९२
मन्त्रिणस्तु नृपं श्रुत्वा हत्वा शत्रुजित् मृधे ।
जितं सुदर्शनं चैव बभूवुः प्रेमसंयुताः ।९३
आगच्छंतं नृपै श्रुत्वा ते साकेतनिवासिनः ।
उपायनान्युपादाय प्रययुः संमुखे जनाः ।९४
तथा प्रकृतय सर्वे नानोपायनपाणयः ।
ध्रुवसन्धिसुतं मत्वा मुदिताः प्रययुः प्रजाः ।९५

नत मस्तक सुदर्शन द्वारा स्तुति हुई दुर्गतिनाशी दुर्गा यह कहकर अन्तर्ध्यान हो गईं ।९०। उन्हें अन्तर्हित हुई देखकर सभी उपस्थित राजाओं ने इन्द्र के समान सुदर्शन को प्रणाम किया ।९१। तदुपरान्त सुदर्शन से अनुमति लेकर काशिराज सुबाहु अपने नगर को गये ।९२। शत्रुजित् के मरण और सुदर्शनकी विजयका समाचार सुनकर अयोध्या के मन्त्रिगण अत्यन्त प्रसन्न हुए ।९३। राजा सुदर्शन के आगमन का समाचार पाकर हर्षित हुए अयोध्यावासी अनेक प्रकारके उपहार लेकर स्वागतार्थ उपस्थित हुए ।९४। सब राज्य-कर्मचारी विभिन्न उपहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकर आये। इस प्रकार महाराज ध्रुवसन्धि के पुत्र सुदर्शन को राजा के रूप में प्राप्त कर अवध की प्रजा अत्यन्त सूखी हुई।९५।

नवरात्र व्रत विधान

नवरात्रे तु संप्राप्ते किं कर्तव्यं द्विजोत्तमः।
विधानं विधिवदूब्रूहि शरत्काले विशेषतः।१
किं फलं खलु कस्तत्र विधिः कार्यो महामते।
एतद्विस्तरतो ब्रूहि कृपया द्विजसत्तम।२
शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि नवरात्रव्रतं शुभम्।
शरत्काले विशेषेण कर्तव्यं विधिपूर्वकम्।३
वासन्ते च प्रकर्तव्यं तथैव प्रेमपूर्वकम्।
द्वावृतौ यमदंष्ट्राख्यौ नूनं सर्वजनेषु वै।४
शरद्वसन्तनामानौ दुर्गमौ प्राणिनामिह।
तस्माद्यत्नादिदं कार्यं सर्वत्र शुभमिच्छता।५
द्वावेव सुमहाचोरावृत् रोगकरौ नृणाम्।
वसन्तशरदावेव सर्वनाशकरावुभौ।६
तस्मात्तत्र प्रकर्तव्यं चण्डिकापूजनं बुधैः।
चैत्राश्विने शुभे मासे भक्तिपूर्वं नराधिप।७

जनमेजय ने कहा—हे द्विजोत्तम! नवरात्र आने पर क्या करना चाहिए! विशेष कर शरद्कालीन नवरात्र में जो पूजन विधान है, वह मुझसे कहिए।१। क्या विधान है? क्या फल है? क्या कर्तव्य है? यह सब विस्तार पूर्वक मुझे बताइए।२। व्यासजी ने कहा-अच्छा, राजन्! अब मैं श्रेष्ठ नवरात्र का विधान कहता हूँ, विशेष कर, शरत्कालीन नवरात्र में विधि पूर्वक कैसे पूजन करें, यह सुनो।३। वसन्त कालीन नवरात्र में भी इसी प्रकार प्रीति सहित पूजन करे। यह दोनों ही ऋतुएँ सब प्राणियों के लिए यमदंष्ट्रा बताई गई है।४। प्राणियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए शरद् और वसन्त दोनो ऋतुयें दुर्गम हैं इसलिए कल्याण चाहने वालों को यत्न पूर्वक नवरात्र पूजन करना चाहिए ।५। इसलिए बुद्धि मानों का कर्तव्य है कि चैत और आश्विन इन दोनों शुभ महीनों में भक्ति पूर्वक चण्डिका-पूजन करें ।६-७।

अमावस्यां च सम्प्राप्य संभारं कल्पयेच्छुभम् ।
हविष्यं च शनं कार्यमेकभुक्तं तु तद्दिने ।८
मण्डपस्तु प्रकर्तव्यं समे देशे शुभे स्थले ।
हस्तषोडशमानेन स्तम्भध्वजसमन्वित :।९
गौरमृद्गोमयाभ्यां च लेपनं कारयेत्ततः ।
तन्मध्ये वेदिका शुभ्रा कर्तव्या च समा स्थिरा ।१०
चतुर्हस्ता च हस्तोच्छा पीडार्थं स्थानमुत्तमम् ।
तोरणानि विचित्राणि वितानं च प्रकल्पयेत् ।११
रात्रौद्विजानथामन्त्रय देवीत्तत्वविशारदान् ।
आचारनिरतान्दांतान्वेदवेदाङ्ग पारगान् ।१२
प्रतिपदि सति कार्यं प्रातः स्नानं विधानतः ।
नद्यां नदे तडागे वा वाप्या कूपे गृहेऽथवा ।१३
प्रातर्नित्यं पुरः कृत्वा द्विजानां वरणं ततः ।
अर्घ्यपाद्यादिकं सर्वं कर्तव्यं मधुपूर्वकम् ।१४

अमावस्या के दिन सब पूजन सामग्री एकत्र करले और केवल एक बार ही हविष्य भोजन करे ।८। किसी श्रेष्ठ समतल स्थान में सोलह हाथ प्रमाण लम्बा-चौड़ा, स्तम्भों युक्त मण्डप बनाकर ध्वजाओं से सजावे ।९। फिर उसे श्वेत मिट्टी और गोबर से लीप कर मण्डप के मध्य में एक चौकोर और स्थिर सुन्दर वेदी का निर्माण करे ।१०। उस वेदी का परिमाण चार हाथ लम्बा चौड़ा और एक हाथ ऊँचा होना चाहिए । फिर पीठ के लिए श्रेष्ठ स्थान बनावे । चँदोवा टाँग दे तथा तोरण और वन्दनवारों से सुसज्जित करे ।११। फिर रात्रि-काल उपस्थित होने पर देवी का तत्व जानने वाले, आचारवान्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता मंत्रज्ञ ब्राह्मणों को बुलावे।१२। फिर प्रतिपदा होने पर प्रातःकाल नदी, नद, तालाब बावड़ी,कुँआ अथवा घर पर ही विधिपूर्वक स्नान करे।१३। फिर नित्य प्रति-कर्मों से निवृत्त होकर ब्राह्मणों का वरण करे और उन्हें अर्घ्यपाद्यादि निवेदन करे।१४।

वस्त्रालङ्करणादीनि देयानि च स्वशक्तितः।
वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं विभवे सति कर्हिचित्।१५
विप्रैः सन्तोषितैः कार्यं सम्पूर्णं सर्वथा भवेत्।
नव च त्रयश्चैको दैव्यपाठे द्विजाः स्मृताः।१६
वरयेत् ब्राह्मणं शांतं पारायणे कृते तदा।
स्वस्तिवाचनकं कार्यं वेदमन्त्रविधानतः।१७
वेद्यां सिंहासनं स्थाप्य क्षौमवस्त्रसमन्वितम्।
तत्र स्थाप्याम्बिका देवी चतुर्हस्तायुधान्विता।१८
रत्नभूषणसंयुक्ता मुक्ताहारविराजिता।
दिव्यांवरधरा सौम्या सर्वलक्षणसंयुता।१९
शंखचक्रगदापद्मधरा सिंहे स्थिता शिवा।
अष्टादशभुजा वापि प्रतिष्ठाप्या सनातनी।२०
अर्चाभावे तथा यन्त्रं नवार्णमंत्रसंयुतम्।
स्थापयेत्पीठपूजार्थं कलशं तत्र पार्श्वतः।२१
पञ्चपल्लवसंयुक्तं वेदतन्त्रैः सुसंस्कृतम्।
सुतीर्थजलसम्पूर्णं हेमरत्नैः समन्वितम्।२२

अपनी सामर्थ्य के अनुसार वस्त्रभूषण प्रदान करे। धन रहते हुए देवी के कार्य में कृपणता न करे।१५। सन्तुष्ट हुए ब्राह्मणों द्वारा किये जाने वाले कार्य सदा सफल होते है। देवी का पाठ करने के लिये नियुक्त ब्राह्मणों की संख्या नौ, पाँच, तीन अथवा एक होनी चाहिए।१६। पारायण कार्य के हेतु किसी शान्त स्वभाव के ब्राह्मण का वरण करे और प्रथम वेदविधान से स्वस्तिवाचन करावे।१७। वेदी पर सिंहासन रखकर उस पर कोमल वस्त्र बिछावे फिर उस पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवी की सम्पूर्ण आयुधोंसे सुसज्जित चतुर्भुजी प्रतिमा की स्थापना करे ।१८। वह प्रतिमा सौम्याकार, रत्नाभूषणों और मुक्ताहारोंसे सुसज्जित तथा दिव्य वस्त्रोसे विभूषित सर्व शुभ लक्षणो से सम्पन्न होनी चाहिए ।१९। अथवा सिंह पर सवार शंखचक्र, गदा, पद्म-धारिणी चतुर्भुजी या पठारह भुजाओं वाली सनातनी देवी की प्रतिष्ठा करे ।२०। प्रतिमा के अभाव में वेदी पर नवार्ण मन्त्र से युक्त दुर्गायन्त्र को प्रतिष्ठित करे और पीठ पूजा के लिये वेदी के दक्षिण और कलश स्थापित करे ।२१। वह कलश पंचपल्लवों से सम्पन्न और वेदमन्त्रों द्वारा सुसंस्कृत हो, उसमें श्रेष्ठ तीर्थों का जल भरा हो तथा स्वर्ण और रत्न भी डाल दे । ।२२।

पार्श्वे पूजार्थसंभारान्परिकल्प्य समन्ततः ।
गीतावादित्रनिर्घोषान्कारयेन्मंगलाय वै ॥२३
तिथौ हस्तान्वितायां च नन्दायां पूजन वरम् ।
प्रथमे दिवसे राजन्विधिवत्कामदं नृणाम् ।२४
नियम प्रथमं कृत्वा पश्चात्पूजां समाचरेत् ।
उपवासेन नक्तेन चैकभुक्तेन वा पुनः ।२५
करिष्यामि व्रतं मात्तर्नवरात्रमनुत्तमम् ।
साहाय्यं कुरु मे देवि जगदम्बममाखिलम् ।२६
यथाशक्ति प्रकर्तव्यो नियमो व्रतहेतवे ।
पश्चात्पूजा प्रकर्तव्या विधिवत् मन्त्रपूर्वकम् ।२७
चन्दनांगुरुकर्पूरैः कुसुमैश्च सुगन्धिभिः ।
मंदारकरजाशोकचंपकैः करवीरकैः ।२८
मालतीब्रह्मिकापुष्पैस्तथा बिल्वदलैः शुभैः ।
पूजयेज्जगतः धात्रीं धूपैर्दीपैर्विधानत ।२९

वेदी के साथ और पूजन-सामग्री एकत्र करके रखकर मंगला चरण के लिए गायन-वादन की व्यवस्था करें ।२३। हस्त नक्षत्र से युक्त प्रतिपदा में किया हुआ पूजन श्रेष्ठ माना गया है, यह सभी कामनाओं का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देने वालाहै। प्रथम संकल्प और फिर पूजन करे, हो सके तो उस दिन उपवास भी रखे या एक समय रात्रिमें ही भोजन करे।२५। पूजन करने से पूर्व यह निवेदन करे कि मैं श्रेष्ठ नवरात्र व्रत कर रहा हूँ, अतः हे जगम्बे! इस कार्य में आप मेरी सहायक हो।२६। व्रतकाल में तथा चेष्टा नियम पालन करे, फिर विधिवत् मन्त्रों का उच्चारण करता हुआ देवी का पूजन करे।२७। चन्दन, अगर, पूर्वक सुगन्धित पुष्प, मंदार, करज, अशोक, चम्पा करवीर, मालती, ब्राह्मी इन सबके पुष्प और बेल पत्र तथा धूप-दीप विधान पूर्वक अर्पित करते हुए जगद्धात्री भगवती का पूजन करे।२८-२९।

फलैर्नानाविधैरर्घ्यं प्रदातव्यं च तत्र वै।
नारिकेलैर्मातुलुंगैर्दाडिमी कदलीफलैः।३०
नारङ्गैः पनसैश्चैव तथा पूर्णफलैः शुभैः।
सन्तोष्या चान्नदानैश्च भक्तिपूर्वं नराधिप।३१
नित्यं भूमौ च शयनं कुमारीणां च पूजनम्।
वस्त्रालंकरणैर्दिव्यैर्भोजनैश्च सुधामयैः।३२
एकैकां पूजयेन्नित्यमेकवृद्धया तथा पुनः।
द्विगुणं त्रिगुणं वाऽपि प्रत्येकं नवकं च वा।३३
विभवस्यानुसारेण कर्तव्यं पूजनं किल।
वितशाठ्यं न कर्तव्यं राजञ्छक्तिमखे सदा।३४
एकवर्षा न कर्तव्या कन्या पूजाविधौ नृप।
परमज्ञा तु भोगानां गन्धादीनां च बालिका।३५
कुमारिका तु सा प्रोक्ता द्विवर्षा या भवेदिह।
त्रिमूर्तिश्च त्रिवर्षा च कल्याणं चतुरब्दिका।३६
रोहिणी पञ्चवर्षा च षड्वर्षा कालिका स्मृता।
चण्डिका सप्तवर्षा स्यादष्टवर्षा च शांभवी।३७
नववर्षा भवेद्दुर्गा सुभद्रा दशवार्षिकी।
अत ऊर्ध्वं न कर्तव्या सर्वकार्यविगर्हिता।३८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाना प्रकार के फल नारियल, केला, अनार नारंगी कटहल, विल्व फल आदि भेंट करके फिर भक्ति भाव पूर्वक अन्न दान करे ।३०-३१। नित्यप्रति पृथ्वी पर शयन करे ओंर कुमारी कन्याओं का पूजन करे। उन्हें वस्त्रांलकार प्रदान करते हुए अमृतमय भोजन करावे ।३२। नित्य प्रति एक कन्या का पूजन करे या नित्य एक कन्या को वढ़ाया जाव अथवा नौ कन्याओं का नित्यप्रति पूजन करे ।३३। अपने वित्त अनुसार श्रद्धा पूर्वक भगवती को पूजे। धन होते हुए भी कृपणता नहीं करनी चाहिए ।३४। हे राजन् ! एक वर्ष कीं अथवा दो वर्ष की कन्या कुमारिका, तीन वर्ष को कालिका, सात वर्ष की चण्डिका, आठ वर्ष की शांभवी, नौं वर्य की दुर्गा और दस वर्ष की सुभद्रा कही जाती है। दस वर्ष से अधिक आयु की कन्या का पूजन इसमें वर्जित माना गया है। ।३५-३८।

एभिश्च नामभिः पूजा कर्तव्या विधिसंयुता ।
तासां फलानि वक्ष्यामि नवानां पूजने सदा ।३९
कुमारी पूजिता कुर्याद्दुः खदारिद्र्यनाशम् ।
शत्रुक्षयं धनायुष्यबलवृद्धिं करोति वै ।४०
त्रिमूर्तिपूजनादायुस्त्रिवर्गस्य फलं भवेत् ।
धनधान्यागमश्चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धयः ।४१
विद्यार्थी विजयार्थी च राज्यार्थी यश्च पार्थिवः ।
सुखार्थी पूजयेन्नित्यं कल्याणीं सर्वकामदाम् ।४२
कालिकां शत्रुनाशार्थं पूजयेद्भक्तिपूर्वकम् ।
ऐश्वर्यधनकामश्च चण्डिकां परिपूजयेत् ।४३
पूजयेच्छांभवीं नित्यं नृपसंमोहनाय च ।
दुःखदारिद्रयनाशाय संग्रामे विजयाय च ।४४
क्रूरशत्रुविनाशार्थं तथोग्रकर्मसाधने ।
दर्गा च पूजयेद्भक्त्या परलोकसुखाय च ।४५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कन्याओं के जो नाम-भेद ऊपर कहेहैं, उन्हीं से कुमारी पूजा करे। अब इनको पूजन का फल कहता हूँ।३९। कुमारी के पूजन से दुःख दरिद्रता और शत्रुओं का नाश होता है तता धन, आयु और बल की वृद्धि होती है।४०। विभूति के पूजन से धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति होकर धन-धान्य मिलता तथा पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि होती हैं।४१। विद्या राज्य तथा सुख की कामना वाले मनुष्य को नित्य प्रति कल्याणी का पूजन करना चाहिए क्योंकि वह सभी कामनाओं के देने वाली है।४२। शत्रु नाश की इच्छा वाले मनुष्य का भक्ति सहित कालिका का पूजन करना चाहिए और धनेश्वर्य की अभिजाषा वाले को चण्डिका संज्ञक कन्या का पूजन करना चाहिए।४३। हे नृप ! सम्मौहनार्थ दुःख दरिद्रता के नाशार्थ, युद्ध में विजयार्थ शाम्भवी संज्ञक कन्या को पूजे।४४। किसी उग्र कर्म की साधना के विचार से अथवा स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा से दुर्गा का भक्ति पूर्वक पूजन करे।४५।

वांछितार्थस्य सिद्ध्यर्थं सुभद्रां पूजयेत्सदा।
रोगिणीं रोगनाशय पूजयेद्विधिवन्नरः ।४६
श्रीरस्त्विति च मन्त्रेण पूजयेद्भक्तितत्परः।
श्रीयुक्तमंत्रैरथवा बीजामत्रैस्तथापि वा।४७
कुमारस्य च तत्वानि या सृजत्यपि लीलया।
कादानपि च देवांस्तां कुमारीं पूजयाम्यहम् ।४८
सत्तयादिभिस्तिमूर्तियां तैर्हि नानास्वरूपिणीं।
त्रिकालव्यापिनीं शक्तिस्त्रिभूति पूजयाम्यहम् ।४९
कल्याणकारिणीं नित्यं भक्तानां सर्वकामदाम।
पूजयामि च तां भक्त्या कल्याणीं सर्वकामदाम् ।५०
रोहयति च बीजानि प्राग्जन्मसंचितानि वै।
या देवी सर्वभूतानां रोहिणीं पूजयाम्यहम् ।५१

अपनी कामनाओं की पूर्ति चाहने वालोंको सुभद्रा की पूजा करनी चाहिए। रोग-नाश की अभिलाषा से रोहिणी का पूजन करे।४६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'श्रीरस्तु' इस मन्त्र के द्वारा अथवा अन्य किसी भी देवी मन्त्र के द्वारा पूजन करते समय 'श्री' का संयोग करे और ऐं, बीजमन्त्र से भक्ति में तत्पर होकर भगवती का पूजन करे ।४७। 'जो देवी कुमार कार्तिकेय के गूढ तत्वों को लीला पूर्वक रचती है और ब्रह्मादि देवताओं को उत्पन्न करती है, मैं उन 'कुमारी' देवी का पूजन करता हूँ, इस मन्त्र से कुमारियों का पूजन करना चाहिए ।४८। जो देवी तत्वादि गुणों की त्रिमूर्ति द्वारा नानारूपिणी जान पड़ती है, और जो तीनों कालों में व्याप्त रहने वाली शक्ति हैं, उन त्रिमूर्ति का पूजन करता हूँ ।४९। जो अपने पूजक भक्तों का सदा कल्याण करने वाली है, जो देवी सब प्राणियों के पूर्व जन्म के संचित कर्मों का बीजारोपण करती हैं, मैं उन रोहिणी का पूजन करता हूँ ।५०-५१।

काली कालयते सर्वं ब्रह्माण्डं सचराचरम् ।
कल्पांतसमये तां कालिकां पूजयाम्यहम् ।५२
चण्डिकां चण्डरूपां च चण्डमुण्डविनाशिनीम् ।
तां चण्डपापहरणी चण्डिकां पूजयाम्यहम् ।५३
अकारणात्समुत्पत्तिर्यन्मयैः परिकीर्तिता ।
यस्यास्तां सुखदां देवीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ।५४
दुर्गात्त्रायति भक्तं यां सदा दुर्गतिनाशिनीं ।
दुर्ज्ञेया सर्वदेवानां तां दुर्गा पूजयाम्यहम् ।५५
सुभद्राणि च भक्तानां कुरुते पूजिता सदा ।
अभद्रनाशिनीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ।५६
एभिर्मंत्रै पूज्यनीयाः कन्याः सर्वदा बुधैः ।
वस्त्रालङ्कारनिर्माल्यैर्गंधैरुच्चावचैरपि ।५७
हीनांगीं वर्जयेत्कन्यां कुष्ठयुक्तां व्रणैर्युताम् ।
गन्धस्फुरितहीनांगीं विशीलकुलसंभवाम् ।।५८

जो देवी चराचर-मय ब्रह्माण्ड को अन्त काल में काल-कवलित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके संसार लीला करती हैं, चण्डरूपा जिस चण्डिका ने चण्ड-मुण्ड का विनाश किया, उसका मैं पूजन करता हूँ ।५२-५३। जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण नहीं, उस सुख देने वाली शांभवी का, दुर्गम दुःखो से तारने वाली दुर्गतियों का नाश करने वाली दुर्गा का मैं पूजन करता हूँ ।५४-५५। जो पूजिता भगवती भक्तों का कल्याण करने वाली और अमंगल को नष्ट करने वालीं हैं, उस सुभद्रा का मैं पूजन करता हूँ ।५६ ज्ञानीजनो को सदा इन्हीं मन्त्रो से, वस्त्रालंकार, गन्ध, माल्यादि अर्पण करते हुए, कुमारी लन्याओं का पूजन करना चाहिए ।५७। परन्तु जो कन्या किसी अङ्ग से हीन कुष्ठ, व्रण, दुर्गन्ध युक्त तथा कुलशील रहित के यहाँ उत्पन्न हुई हो, उसका पूजन नहीं करना चाहिए ।५८।

जात्यंधां केकरां काणीं कुरूपां ।बहुरोमशाम् ।
सत्यजेद्रोगिणीं कन्यां रक्तपुष्पादिनांकिताम् ।५९
क्षामां गर्भसमुद्भूतां गोलकां कन्यकोद्भवाम् ।
वर्जनीयाः सदा चैताः सर्वपूजादिकर्मसु ।६०
अरोगिणीं सुरूपांगीं सुन्दरीं व्रणवर्जिताम् ।
एकवंशसमुत्भूतां कन्यां सम्यक्प्रपूज्ययेत् ।६१
अशक्तो नियतं पूजा कर्तुंचेन्नवरात्रके ।
अष्टम्यां च यिशेषेण कर्तव्यं पूजनं तदा ।६२
पुराऽष्टम्यां भद्रकाली दक्षयज्ञविनाशिनी ।
प्रादुर्भूता महावीरयोगिनी कोटिभिः सह ।६३
अतोऽष्टम्यां विशेषेण कर्तव्यं पूजनं सदा ।
नानाविधोपहारैश्च गन्धमाल्यानुलेपनै ।६४
उपवासे ह्यशक्तानां नवरात्रव्रते पुनः ।
उपोषणत्रय प्रोक्तं यथोक्तफलदं नृप ।६५
सप्तम्यां च तथाऽष्टम्या नवम्यां भक्ति-भावतः ।
त्रिरात्रकरणात्सर्वं फलं भवति पूजनात् ।६६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्मांध, टेढ़ा देखने वाली, कानी कुरुप, अधिक रोम वाली रोगिणी या रजस्वला होने के चिह्न वाली अत्यन्त दुर्लभ समय से पूर्व गर्भ से उत्पन्न, पर पुरुष की संतति कन्या पूजन में वर्जित है ? ।५९-६०। स्वस्थ्य सुडोल सून्दर व्रणादि से रहित और एक ही वंश में उत्पन्न हुई कन्या सदा पूजने योग्य है ।६१। यदि कोई व्यक्ति नवरात्र के नौ दिन तक पूजन करने में असमर्थ हों, उसे विशेषकर अष्टमी के दिनही देवी पूजन करना चाहिए ।६२। क्योंकि प्राचीन काल में दक्ष-यज्ञ विध्वंस करने वाली भद्रकाली अष्टमी को ही प्रकट हुई थी ।६३। इसलिए अष्टमी के दिन विशेष रूप से पूजन करे ।६४। पूरे नवरात्र भर उप वास करने में असमर्थ मनुष्य तीन दिन उपवास करके भी वैसा ही फल प्राप्त कर सकते हैं ।६५। भक्ति-भाव पूर्वक सप्तमी,अष्टमी और नवमी की रात्रियोंमें भी भगवतीके पूजन से सब अभीष्ट फल प्राप्त होता६६।

पूजाभिश्चैव होमैश्च कुमारीपूजनैस्तथा ।
सम्पूर्णं तद्व्रतं प्रोक्तं विप्राणां चैव भोजनैः ।६७
व्रतानि यानि चान्यानि दानानि विविधानि च ।
नवरात्रव्रतस्यास्य नैव तुल्यानि भूतले ।६८
धनधान्यप्रदं नित्यं सुखसंतानवृद्धिदम् ।
आयुरारोग्यद चैव स्वर्गदं मोक्षदं तथा ।६९
विद्यार्थी वा धनार्थी वा पुत्रार्थी व भववेन्नरः ।
तेनेदं विधिवत्कार्यं व्रतं सौभाग्यदं शिवम् ।७०
विद्यार्थी सर्वविद्यां वै प्राप्नोति व्रतसाधनात् ।
राज्यभ्रष्टो नृपो राज्यं समवाप्नोति सर्वदा ।७१
राज्यभ्रष्टेन रामेण सीताविरहितेन च ।
किंकिष्काधायां व्रत चैतत्कृतं दुःखातुरेण वै ।।७२
तेन प्राप्ताऽथ वैदेहीं कृत्वा सेतुं महार्णवे ।
तेन मन्दोदरीनाथं कुम्भकर्णं महाबलम् ।७३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेघनादं सुतं हत्वा कृत्वा भूपं विभीषणम् ।
पश्चादयोध्यामागत्व प्राप्त राज्यमकंटकम् ।७४

पूजन, हवन, कुमारियों का पूजन और ब्राह्मणों को भोजन से तृप्त करने पर नवरात्र व्रत सम्पन्न हो जाता है ।६७। इन पृथिवी पर जितने भी व्रत दानादि किये जाते है,वे सभी इस नवरात्र व्रतकी तुलना नही कर सकते ।६८। यह व्रत धन धान्य को देने वाला तथा नित्य सुख और सन्तानादि की वृद्धि करने वाला है । यह आयु, आरोग्य स्वर्ग और मोक्ष, सभी कुछ प्रदान करता है ।६९। धन की अभिलाषा हो, विद्या-प्राप्ति का पुत्र-प्राप्ति की कामना हौतो इस सौभाग्य के देनेनाले व्रत को विधि-विधान-पूर्वक करे ।७०। इसी व्रत का साधन करने से विद्यार्थी को सभी विद्याएँ प्राप्त हो जाती हैं, तथा राजा राज्य से भ्रष्ट हो गया हो उसे राज्य को पुनः प्राप्ति होती है ।७१। राज्य से भ्रष्ट हुए श्रीराम की पत्नी सीता का हरण हो गया था । तब उन्होने भी किष्किन्धा पर्वत पर रहकर इसी नवरात्रि व्रत का अनुष्ठान किया था ।७२। तब इसी व्रत के प्रभाव से उन्हें वैमेंही की पुनः प्राप्ति हुई । महासागर पर उन्होंने सेतु बंधवाया और पार उतरकर रावण-कुम्भ करण का संहार किया ।७३। रावण के पुत्र मेघनाद को भी मार डाला और विभीषणको लँकाका राज्य देदिया । इसके पश्चात् अयोध्या उन्होंने निष्कंटक राज्य प्राप्त किया ।७४।

।। राम चरित ।।

कथं रामेण तच्चीर्ण व्रतं देव्याः सुखप्रदम् ।
राज्यभ्रष्टः कथं सोऽथ कथ सीता हृता पुनः ।१
राजा दशरथः श्रीमानयोध्याधिपतिः पुरा ।
सूर्यवंशवरश्चासीद्देवब्राह्मणपूजकः ।२
चत्वारो जज्ञिरे तस्य पुत्रा लोकेषु विश्रुताः ।
रामलक्ष्मणशत्रुघ्नभरतश्चेतिनामतः ।३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राज्ञः प्रियकराः सर्वे सदृशा गुणरूपतः।
कौसल्यायाः सुतो रामः कैकेय्या भरतः स्मृतः ।४
सुमित्रातनयौ जातौ यमलौ द्वौ मनोहरौ।
ते जाता वै किशोराश्च धनुर्बाणधराः किल ।५
सूसवः कृतसंस्काराः भूपतेः सुखवर्धकाः।
कौशिकेन तदाऽऽगत्य प्रार्थितो रघुनन्दनः ।६
राघवं मखरक्षार्थं सूनुं षोडशवार्षिकम्।
तस्मै सोऽगं ददौ रामं कौशिकाय सलक्ष्मणम् ।७

राजा जनमेजय ने कहा—राजन् इस सुख व्रत को श्रीराम ने किस प्रकार किया ? वे राज्य भ्रष्ट कैसे हुए ? सीता का हरण क्यों हुआ ? यह सब मुझे बताइए ।१। व्यासजी ने कहा—हें राजन् ! प्राचीन बात है राँजा दशरथ अयोध्या पर राज्य करते थे ।२। उनके परम प्रसिद्ध चार पुत्र हुए उनके नाम—राम, लक्ष्मण, भरत और शशुघ्न थे ।३। महाराज को वे चारों समान रूप गुण वाले पुत्र, समान रूप से ही प्रिय थे उनमें राम कौशल्या से और भरत केकैयी से उत्पन्न हुए थे। किशोरावस्था प्राप्त होते वे चारों ही धनुधारी होगए थे ।४। लक्ष्मण और शत्रुघ्न नामक सुमित्रा के दो पुत्र एक साथ हुए ।५। महाराज ने चारों के उपनयनादि संस्कार कर दिए। तभी महर्षि विश्वामित्र ने वहाँ आकर कुछ प्रार्थना की ।६। जिसके अनुसार उन्होंने सोलह वर्ष की अवस्था वाले राम-लक्ष्मण को उनके यज्ञ की रक्षा के निमित्त उनके साथ भेज दिया ।७।

तौ समेत्य मुनिं मार्गे जग्मतुश्चारुदर्शनौ।
ताडका निहता मार्गे राक्षसी घोरदर्शना ।८
रामणैकेन बाणेन मुनीनां दुःखदा सदा।
यज्ञरक्षा कृता तत्र सुबाहुर्निहतः शठः ।९
मारीचोऽथ मृतप्रायो निक्षिप्तो बाणवेगतः।
एवं कृत्वा महत्कर्म यज्ञस्य परिरक्षणम् ।१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गतास्ते मिथिलां सर्वे रामलक्ष्मणकौशिकाः ।
अहल्या मोचिता शापान्निष्पापा सा कृताऽबला ।११
विदेहनगरे तौ जन्मतुर्मुनिना सह ।
वभंज शिवचापं च जनकेन पणोकृतम् ।१२
उपयेमे ततः सीतां जानकीं च रमांशजाम् ।
लक्ष्मणाय ददौऽराजा पुत्रीमेकां तथोर्मिलाम् ।१३
कुशध्वजसुते कन्ये प्रापतु भ्रातरावुभौ ।
तथा भरतशत्रुघ्नौ सुशीलौ शुभलक्षणौ ।१४

उन्होंने अपने एक ही वाण से भयंकर रूप वाली ताड़का और सुवाहु को मार मुनि के यज्ञ की रक्षा की ।८-९। अपने वाण के पग से मारीच को वहुत दूर फेंककर मरे के समान कर दिया। इस प्रकार उन्होंने यज्ञ की रक्षा का कार्य सम्पन्न किया ।१०। फिर राम लक्ष्मण के सहित मुनि विश्वामिव मिथिला नगर को चले, तव मार्गमें अहिल्या को शाप से मुक्त किया ।११। फिर महर्षि के साथ दोनों भाई जनक पुर पहुँचे, वहाँ उन्होंने प्रण स्वरूप रखे हुए शिव धनुष को तोड़ा ।१२ तब साक्षात् लक्ष्मी की अंश रूपा जनक पुत्री सीता से राम का और उर्मिला के साथ लक्ष्मण का विवाह हुआ ।१३। फिर रांजा जनक ने अपने भाई कुशध्वजकी दो कन्यायें श्रुति माण्डवी और कीर्ति का भरत और शत्रुघ्न के साथ विवाह किया ।१४।

एवं दारक्रियास्तेषां भ्रातृणां चाभ वन्नृप ।
चतुर्णा मिथिलायां तु यथाविधिविधानतः ।१५
राज्ययोग्यं सुतं दृष्ट्वा राजा दशरथस्तदा ।
राघवाय धुरं दातुं मनश्चक्रे निजाय वै ।१६
संभारं विहितं दृष्ट्वा कैकेयी पूर्वकल्पितौ ।
वरौसंप्रार्थयामास भर्तारं वंशवर्तिनम् ।१७
राज्यं सुताय चैकेन भरताय महात्मने ।
रामाय वनवासं च चतुर्दश समास्तथा ।१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामस्तु वचनात्तस्थाः सीतालक्ष्मणसंयुतः ।
जगाम दण्डकारण्यं राक्षसैरुपसेवितम् ।१९
राजा दशरथः पुत्रविरहेण प्रपीडितः ।
जहौ प्राणानमेयात्मा पूर्वशापमनुस्मरन् ।२०
भरतः पितरं दृष्ट्वा मृतं मातृकृतेन वै ।
राजमृद्धं न जग्राह भ्रातुः प्रियचिकीर्षया ।२१

इस प्रकार उसी मिथिलापुरी में इन चारों भाइयों का विवाह कार्य विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न हुआ ।१५। फिर महाराज दशरथ ने अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को सब प्रकार योग्य देखकर उन्हें अयोध्या का राजा बनाने का विचार किया ।१६। राम-राज्य की तैयारियाँ होती देखकर रानी कैकेयी ने पहिले कभी जो दो वर माँग रखेथे, उन्हें माँगा ।१७। जिसके अनुसार प्रथम वरमें भरत को राज्य और दूसरे में राम के लिए वनवास की माँग की थी ।१८। तब मांता कैकेयी के वचन पालन के हेतु श्रीराम सीता और लक्ष्मण को साथ लेकर राक्षसों से प्रभावित दण्डक वन में चले गये ।१९। उनके जाने पर राजा को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने पूर्व शाप का स्मरण करते हुए अपने प्राणों का त्याग कर दिया ।२०। अपनी माता के कृत्य से पिता का मरण हुआ देखकर अपने ज्येष्ठ भ्राता राम के हितार्थ भरतने राज्य लेना स्वीकार नहीं किया ।२१।

पञ्चवट्यां वसन् रामो रावणावरजां वने ।
शूर्पणखां विरूपां वै चकारातिस्मरातुराम् ।२२
खरादयस्तु तां दृष्ट्वा छिन्ननासां निशाचराः ।
चक्रुः संग्राममतुल रामेणामिततेजसा ।२३
स जघान खरादींश्च दैत्यानतिबलान्वितान् ।
मुनीनां हितमन्विच्छन् रामः सत्यपराक्रमः ।२४
गत्वा शूर्पणखा लंकां खरदूषणघातनम् ।
दूषिता कथयामास रावणाय च राघवम् ।२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोऽपि श्रुत्वा विनाशं तं जातः क्रोधवशः खलः ।
जगाम रथमारुह्य मारीचस्याश्रम तदा ।२६
कृत्वा हेममृगं नेतुं प्रेषयामास रावणः ।
सीताप्रलोभनार्थाय मायाविनमसंभवम् ।२७
सोऽथ हेममृगो भूत्वा सीताहृष्टिपथं गतः ।
मायावी चातिविचित्राङ्गश्चरन्प्रवलमंतिके ।२८

उधर पंचवटी में विद्यमान राम ने रावण की बहन सूर्पणखा के नाक-कान काट उसे कुरूप बना दिया ।२२। उसकी नाक कटी देख कर खर आदि राक्षसों ने अमित तेज वाले राम के साथ घोर युद्ध किया ।२३। पराक्रमी राम ने उन महाबली राक्षसों का वध कर दिया ।२४। शूर्पणखा लंका पहुँची और रावण को अपने कुरूप होने एवं खर-दूषण के मारे जाने का पूर्ण वृत्तान्त सुनाया ।२५। जिसे सुनकर रावण को अत्यन्त क्रोधहुआ और वह तुरन्त रथारूढ़ होकर मारीचके आश्रम पर पहूँचा ।२६। उसने मायावी मारीच को स्वर्ण का मृग बनाकर सीताको लुभानेके लिए भेजा ।२७। तब वह सोनेका मृग होकर सीता की आँखों के सासने चरने लगा, उस मायावी का मृग-देह अद्भुत था ।२८।

तं दृष्ट्वा जानकी प्राह राघवं देविनोदिता ।
चर्मानियस्व कान्तेति स्वाधीनपतिका तथा ।२९
अविचार्यथि रामोऽपि तत्र संस्थाप्य लक्ष्मणम् ।
सशरं धनुरादाय ययौ मृगपदानुगः ।३०
सारङ्गोऽपि हरिं दृष्ट्वा मायाकोटिविशारदः ।
दृश्यादृश्यो बभूवाथ जगाम च वनान्तरम् ।३१
मत्वा हस्तगतं रामः क्रोधाकृष्टधनुः पुनः ।
जघान चातितीक्ष्णेन शरेण कृत्रिमं मृगम् ।३२
स हतोऽतिबलात्तेन चाक्रोश भ्रंशदुःखितः ।
हा लक्ष्मण हतोऽस्मीति मायावी नश्वरः खलः ।३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स शब्दस्तुमुलस्तावज्जानक्या संश्रुतस्तदा ।
राघवस्येति सा मत्वा दीना देवरमब्रवीत ।३४
गच्छ लक्ष्मण तूर्णं त्वं हतोऽसौ रघुनन्दनः ।
त्वामाह्वयति सौमित्रे साहाय्यं कुरु सत्वरम् ।३५

उसे देख सीता ने राम से उसे मार कर चर्म लाने का आग्रह किया ।२९। राम भी धनुष-बाण लेकर मृग के पीछे चले और लक्ष्मण को सीता की रक्षा के लिए छोड़ गये ।३०। मायावी मारीच उनको देख कर भागने-लगा । कभी दिखाई देता कभी छिप जाता । इस प्रकार वह अन्य वन में बड़ी दूर चला गया ।३१। तब उसका पीछा न छोड़ने वाले राम के क्रोध-पूर्वक छोड़े तीक्ष्ण बाण से आहूत मायावी मृग पुकार ने लगा—हा लक्ष्मण ! मुझें मार डाला ।३२-३३। जब सीताने वह चीत्कार सुना तो उसे रामकी पुकार समझ कर उन्होंने अपने देवर से कहा ।३४ हे लक्ष्मण ! हे सौमित्र ! तुम शीघ्र जाकर उनकी सहायता करो, प्रतीत होता है कि वे तुम्हें पुकार रहे हैं ।३५।

तत्राह लक्ष्मणः सीतामंब रामवधादपि ।
नाहं गच्छेऽद्य मुक्त्वा त्वामसहायामिहाश्रमे ।३६
आज्ञा मे राघवस्यात्र तिष्ठेति जनकात्मजे ।
तवतिक्रमभीतोऽहं न त्यजामि तवांतिकम् ।३७
रुदती सुदती प्राह तं तदा विधिनोदिता ।
अक्रूरां वचन क्रूरं लक्ष्मणं शुभलक्षणम् ।३८
अहं जानामि सौमित्रे सानुरागं च मां प्रति ।
प्रेरितं भरतेनैव मदर्थमिह संगतम् ।३९
नाहं तथाविधा नारी स्वैरिणी कुहकाधमा ।
मृते रामे पति त्वां न कर्तुमिच्छामि कामतः ।४०
नागमिष्यति चेद्रामो जीवितं सत्यजाम्यहम् ।
विना तेन न जीवामि विधुरां दुःखिता भृशम् ।४१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्या लक्ष्मणो दीनमानसः ।
प्रोवाच रुद्धकण्ठस्तु तां तदा जनकात्मजाम् ।४२

इस पर लक्ष्मण बोले कि हे माता ! यदि राम मारे भी गये तो मैं आपको अकेली छोड़कर कहीं नहीं जा सकता ।३६। क्योंकि भगवान् राम ने मुझे यहीं रहने की आज्ञा दी हैं, उसका उल्लंघन करते हुए मैं डरता हूँ, इसलिए आपको छोड़कर नहीं जा सकता ।३७। अब देवी प्रेरणा से सीता ने रोते हुए ऐसे कठोर वचन लक्ष्मण के प्रति कहे ।३८ हे लक्ष्मण ! मैं जान गई कि तुम मुझे चाहते हो और भरत की प्रेरणा से मुझे प्राप्त करने के लिये ही साथ आ गये हो ।३९। हे कुलाङ्गार ! मैं कुलटा नहीं हूँ जो अपने पति की मृत्यु होने पर तुम्हें अपना पति स्वीकार कर लूँगी ।४०। यदि राम नहीं लौटे तो मैं अपने देहको त्याग दूँगी, उनके विना मैं वैधव्य का दुःख नहीं झेल सकती ।४१। सीता के ऐसे वचन सुनकर लक्ष्मण अत्यन्त दुःखित हुए । उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे बोले ।४२।

किमर्थं क्षितिजे वाक्यं मयि क्रूरतरं किल ।
किं वदस्यत्यनिष्टं ते भावि जाने धिया ह्यहम् ।४३
इत्युक्त्वा निर्ययौ वीरस्तां त्यक्त्वा प्ररुदन्मृशम् ।
अग्रजस्य ययौ पश्यञ्शोकार्तः पृथिवीपतेः ।४४
गतेऽथ लक्ष्मणे तत्र रावणः कपटाकृतिः ।
भिक्षुवेषं ततः कृत्वा प्रविवेश तदाश्रमे ।४५
जानकी तं यतिं मत्वा दत्वार्घ्यं वन्यमादरात् ।
भैक्ष्यं समर्पयामास रावणाय दुरात्मने ।४६
तां पप्रच्छ दुष्टात्मा नम्रपूर्वं मृदुस्वरम् ।
काऽसि पद्मपलाशाक्षि वने चैकाकिनी प्रिये ।४७
निर्जने विपिने किं त्वं सौधार्हा त्वमसि प्रिये ।
उटजे मुनिपत्नीवद्देवकन्यासमप्रभा ।४८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति तद्ववचनं श्रुत्वा प्रत्युवाच विदेहजा ।
दिव्यं दिष्ट्या यति ज्ञात्वा मन्दोदर्याः पति तदा ।४२

हे क्षितिजे ! आप ऐसे कठोर वाक्य क्यों कहती हैं ? मुझे प्रतीत होता है कि आपका कोई अहित होने को है ।४३। हे राजन् ! यह कह कर दुःख से रोते हुए लक्ष्मण रामका मार्ग देखते हुए चले और अवसर देखकर कपट पूर्ण भिक्षु वेश में रावण ने उस आश्रम में प्रवेश किया ।४४-४५। सीता ने उसे साधु समझकर अर्घ्य दिया ।४६। तब उस दुष्टात्मा ने मृदु शब्दों में कहा कि हे पद्म-पालाश जैसे नेत्रवाली! तुम कौन हो ? इस वन में एकाकिनी क्यों हो ? हे प्रिये! तुम राज-भवनोंमें रहने के योग्य और देव कन्याके समान तेज वाली होकरभी मुनि-पत्नी के रूप में इस निर्जन वन में क्यों रह रही हो ।४७-४८। यह सुनकर रावण को दिव्य सन्यासी समझ सीता ने उससे कहा ।४९।

राजा दशरथः श्रीमांश्चत्वारस्तस्य वै सुता ।
तेषां ज्येष्ठः पतिमऽस्ति रामनामेति विश्रुतः ।५०
विवासितोऽव कैकेय्याः कृते भूपतिना वरैः ।
चतुर्दश समा रामो बसतेऽत्र सलक्ष्मणः ।५१
लंकेशोऽहं मरालाक्षि श्रीमन्दोदरीपतिः ।
त्वत्कृते तु कृतं रूपं मयेत्थं शोभनाकृते ।५२
आगतोऽहं वरारोहे भगिन्या प्रेरितोऽत्र वै ।
जनस्थाने हतौ श्रुत्वा भ्रातरौ खरदूषणौ ।५३
अङ्गीकुरुनृपं मां त्वं त्यक्त्वा तं मानुषं पतिम् ।
हृतराज्यं गतश्रीकं निर्बलं वनवासिनम् ।५४
पट्टराज्ञी भव त्वै मे मन्दौदर्युपरि स्फुटम् ।
दासोऽस्मि तव तन्वङ्गि स्वामिनी भव भामिनि ।५५
जेताऽहं लोकपालानां पतामि तव पादयोः ।
करं गृहाण मेऽद्य त्वं सनाथं कुरु जानकि ।५६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अयोध्यापति महाराज दशरथ के चार पुत्रों में सब से बड़े भगवान श्रीराम मेरे पति हैं ।५०। महाराज से वर प्राप्त केकेयी ने मेरे पतिको चौदह वर्षों का वनवास दे दिया, इसलिए वे अपने छोटे भाई लक्ष्मणके साथ यहीं निवास करते हैं ।५१। इस पर रावण ने कहा कि हे मरालाक्षि ! मन्दोदरी का पति लंकाधीश रावण हूँ और तुम्हें प्राप्त करने के लिए ही मैंने यह रूप धारण किया है ।५२। हे वरारोहे ! अपने भाई खर-दूषण की हत्या हुई सुनकर अपनी बहिन शूर्पणखा की प्रेरणा से ही मैं तुम्हारे पास उपस्थित हुआ हूँ ।५३। अब तुम उस राज्य भ्रष्ट श्रीविहीन, बलहीन, वनवासी मनुष्य पति को छोड़कर मुझ नृपति को अपना पति बनाओ ।५४। हे भामिनी ! तुम मेरे साथ चलकर मन्दोदरी से भी ऊपर पटरानी बनोगी । मैं तुम्हारा दास हूँ, अतः तुम मेरी स्वामिनी हो जाओ ।५५। मैं सम्पूर्ण लोक-पालों को जीतने वाला होकर पाँवों में गिर रहा हूँ । हे जानकी मेरे हाथ को पकड़ कर अब मुझे सनाथ करो ।५६।

सीता-हरण

तदाकर्ण्य वचो दुष्टं जानकी भयविह्वला ।
वेपमाना स्थिरं कृत्वा मनो वाचमुवाच ह ।१
पौलस्त्य किमसद्वाक्यं त्वमात्थ स्मरमोहितः ।
नाहं वै स्वैरिणी किन्तु जनकस्य कुलोद्भवा ।२
गच्छ लंकां दशास्य त्वं रामस्त्वां वै हनिष्यति ।
मत्कृते मरणं तेऽत्र भविष्यति न संशयः ।३
इत्युक्त्वा पर्णशालायां गता सा वहिनसन्निधौ ।
गच्छ गच्छेति वदती रावणं लोकरावणम् ।४
सोऽथ कृत्वा निजं रूपमजगामोटजमंतिकम् ।
बलाज्जग्राह तां बालां रुदतीं भय विह्वलाम् ।५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामरामेति क्रन्दन्ती लक्ष्मणेति मुहुर्मुहुः ।
गृहीत्वा निर्गतः पापो रथमारोप्य सत्वरः ।६
गच्छन्नरुणपुत्रेण मार्गे रुद्धो जटायुषा ।
संग्रामोऽभून्महारौद्रस्तयोस्तत्र वनान्तरे ।७

व्यासजी बोले—हे राजा जनमेजय ! रावण के वचन सुनकर सीता भय से व्याकुल हो गई, फिर मन को स्थिर कर कहने लगी ।१। पौलस्त्य ! आप काम से मोहित होकर ऐसे दुर्वाक्य क्यों कहते हैं ? मैं राजा जनक के वंश के उत्पन्न हुई हूँ, कोई कुलटा नहीं ।२। हे रावण ! आप तुरन्त ही लंका को चले जाइये नहीं तो राम आपका वध कर देंगे । तब निःसन्देह आप मृत्युको प्राप्त करेंगे।३। यह कहकर वे अपनी पर्णकुटी में घुसकर अग्नि के समीप खड़ी हुई और रावण से कहने लगी कि जाओ जाओ ।४। तब रावण अपना यथार्थ रूप प्रकट करता हुआ कुटी में प्रकट हुआ और उसने भयविह्वला रोती हुई सीता को पकड़ लिया ।५। तब वे 'हे राम ! हे लक्ष्मण' !' बारम्बार पुकार ने लगी । तभी रावण उन्हें बलात रथ पर चढ़ाकर ले भागा ।६। जब उसका रथ द्रुतगति से जा रहा था, तब मार्गसे जटायु ने उसे रोक भयंकर संग्राम किया ।७।

हत्वा तं तां गृहीत्वा च गतोऽसौ राक्षसाधिपः ।
लंकाया क्रन्दती तात कुररीव दुरात्मना ।८
रामोऽपि तं मृगं हत्वा जगामादाय निर्वृतः ।
आयान्तं लक्ष्मणं वीक्ष्य किं कृतं तेऽनुजासमम् ।९
एकाकिनीं प्रियां हित्वा किमर्थं त्वमिहागतः ।
श्रुत्वा स्वप्नं तु रामस्य राघवस्त्वब्रवीदिदम् ।१०
सौमित्रिस्त्वब्रवीद्वाक्यं सीतावाग्बाथपीडितः ।
प्रभोऽत्राहं समायातः कालयोगान्न संशयः ।।११
तदा तौ पर्णशालायां गत्वा वीक्ष्यातिदुःखितौ ।
जानक्यन्वेषणे यत्नमुभौ कर्तुं समुद्यतौ ।१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्गमाणौ तु संप्राप्तो यत्रास्ते पतितः खगः ।
जटायुः प्राणशेषस्तु पतितः पृथिवी तले ।१३
तेनोक्तं रावणेनाद्य हृताऽसौ जनकात्मजा ।
मया निरुद्धः पापात्मा पतितोऽहं मृधे पुनः ।१४

उस युद्ध में जटायु का वध करके रावण सीता को लंका में ले गया। उस समय वे कुररी के समान क्रन्दन कर रही थीं।८। उधर राम भी मृग को मारकर उसे साथ लिये हुए लौटे तो मार्ग में वे लक्ष्मण कों अपनी ओर आता देखकर बोले कि तुमने वह क्या किया ? तुग मारीच को चीत्कार सुनकर ही सीता की अकेली छोड़कर यहाँ चले आये ।९-१०। सीता के वाग्वाणी से पीड़ित हुए लक्ष्मण ने कहा कि हे प्रभो ! कालयोग के बशीभूत होकर ही चला आया हूँ ।११। तव दोनों भाई पर्णकुटी में गये तथा सीता को वहाँ न देख, अत्यन्त दुःखित हुए और सीता की खोजमें तत्पर हुए ।१२। मार्गमें उन्हें आहत पड़ा हुआ जटायु मिला, उसने बताया कि सीता को रावण ले गया है, मेरे द्वारा रोके जाने पर उसने मुझे मार गिराया हैं ।१३-१४।

इत्युक्त्वाऽसौ गतप्राणः संस्कृतो राघवेण वै ।
कृत्वौर्ध्वदैहिकं रामलक्ष्मणौ निर्गतौ ततः ।१५
कबंधं घातयित्वाऽसौ शापाच्चामोचयत्प्रभुः ।
वचनात्तस्य हरिणा सख्यं चक्रेऽथ राघवः ।१६
हत्वा च बालिनं वीरं किष्किंधाराज्यमुत्तमम् ।
सुग्रीवाय ददौ राम कृतसंख्याय कार्यतः ।१७
तत्रैव वार्षिकान्मासांस्तस्थौ लक्ष्मणसंयुतः ।
चिंतयञ्जानकीं चित्ते दशाननहृतां प्रियाम् ॥१८
लक्ष्मणं प्राह रामस्तु सीताविरहपीडितः ।
सौमित्रं कैकेयसुता जाता पूर्णमनोरथा ।१९
न प्राप्ता जानकी नूनं नाहं जीवामि तां विना ।
नागमिष्याम्ययोध्यायामृते जनकनन्दिनीम् ।२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गतंराज्यं वने वासो मृतास्तातो हृता प्रिया ।
पीडयन्मा न दुष्टात्मा दैवोऽग्रे किं करिष्यति ।२१

इतना कहकर प्राण-बिहीन हो गया, तव राम ने उसका संस्कार किया, इसके, पश्चात् दोनों भाई वहाँसे आगे चले ।१५। मार्ग में कवंध मिला उसे मारकर राम ने उसे शापायुक्त किया और उसी के कहने से उन्होंने सुग्रीव से मित्रता की ।१६। फिर सुग्रीव का प्रिय करने के लिए उन्होंने वालिका वध किया और सुग्रीवको किष्किन्धा का राजा उनाया ।१७। रावण द्वारा हरण की गयी सीता का स्मरण करते हुए राम ने लक्ष्मण सहित वर्षाऋतु के महीने वहीं व्यतीत किए ।१८। सीता-विरह से पीड़ित राम ने लक्ष्मण से कहा कि देखा कैकेयी का मनोरथ पूर्ण हो गया ।१९। हे भाई ! यदि सीता प्राप्त न हुई तो उसके विना जीवित नहीं रह सकता, इसके विना अयोध्याको भी नहीं लौटूँगा ।२०। राज्य गया, वनवास मिला पिता की मत्यु हुई और अब सीता का भी हरण हो गया देव मुझे सन्ताप देता हुआ भविष्य में न जाने क्या करेगा ।२१

एवं विलपमानं तं रामः कमललोचनम् ।
लक्ष्मणः प्राह धर्मात्मा सांत्वन्नृतया गिरा ।२२
धैर्यं कुरु महाबाहो त्यक्त्वा कातरतामिह ।
आनयिष्यामि वैदेहीं हत्वा तं राक्षसाधमम् ।२३
आपदि-संपदि तुल्या धैर्याद्भवन्ति ते धीराः ।
अल्पधियस्तु निमग्नाः कष्टे भवन्ति विभवेऽपि ।२४
संयोगो विप्रयोगश्च दैवाधीनादुभावपि ।
शोकस्तु कीदृशस्तत्र देहेऽनात्मनि च क्वचित् ।२५
ससैन्यं भरतं वाऽपि समाहूय सहानुजम् ।
हनिष्यामो वय शत्रुं किं शोचसि वृथाऽग्रज ।२६
एकोऽहं सकलाञ्जेतुं समर्थोस्मि सुरासुरान् ।
किं पुनः संसहायो वै रावणं कुलपांसनम् ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनकं वा समानीय साहाय्ये रघुनन्दन।
हनिष्यामो दुराचारं रावणं सुरकण्टकम् ।२८
इति लक्ष्मणवाक्येन बोधितो रघुनन्दनः।
त्यक्त्वा शोकं तथाऽत्यर्थं बभूव विगतज्वरः ।२९

इस प्रकार विलाप करते हुए रामसे सान्त्वना पूर्ण वाणीमें लक्ष्मण ने कहा ।२२। हे महाबाहो ! कायरता का त्याग कीजिए, धैर्य रखिए, मैं उस राक्षस को मारकर गीता को ले जाऊँगा ।२३। संपदा और आपदा दोनों दशाओं में समान भाव रखने वाले पुरुष ही धीरजवान कहे जातेहैं, तुच्छ गति वाले मनुष्य ही कष्ट मानते हैं।२४। संयोग और वियोग तो देवाधीन हैं जब देह और आत्मा दोनों पृथक्-पृथक् हैं तब देह के लिए शोक क्यों किया जाय ।२५। हे अग्रज ! यदि आवश्यक हूआ तो भरत शत्रुघ्न को सैन्य सहित बुला लूँगा, जिससे शत्रु नष्टहो जायगा तब वृथा चिन्ता क्यों करते है ? ।२६। वैसे तो मैं अकेला ही सब दैत्य-देवताओं को जीतने की सामर्थ्य रखता हूँ, फिर आपके सहायक होने पर रावण को मारना क्या बड़ी बात है ? ।२७। फिर भी आवश्यकता हुई तो अपनी सहायता के लिए महाराज जनक को बुला लेंगे और तब उस देवताओं के लिए कंटक स्वरूप रावण को मार डालेंगे ।२८। लक्ष्मण के इन वाक्यों से राम विरह-ज्वर के शोक को छोड़कर स्वस्थ हो गये ।२९।

राम को नवरात्र व्रत का परामर्श

एवं तौ संविदं कृत्वा यावत्तूष्णीं बभूवतुः।
आजगाम तदाऽऽकाशान्नारदो भगवानृषिः ।१
दृष्ट्वा तं राम उत्थाय ददावथ वृषं शुभम्।
आसन चाध्यपाद्यं च कृतवानमितद्युति ।२
उपविष्टं तदा रामं सानुज दुःख मानसम्।
पप्रच्छ नारदः प्रीत्या कुशलं मुनिसत्तम ।३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथं राघव शोकार्तो यथा वै प्राकृतो नरः ।
हृतां सीतां च जानामि रावणेन दुरात्मना ।४
तव जन्म च काकुत्स्थ पौलस्त्यनिधनाय वै ।
मैथिलीहरणं जातमेदर्थं चराधिप ।५
कुरु धैर्यं महाबाहो तत्र सा वर्ततेऽवशा ।
सतीधर्मरता सीता त्वां ध्यायन्ती दिवानिशम् ।६
कामधेनुपयः पात्रे कृत्वा मघवता स्वयम् ।
पानार्थं प्रेषितं तस्याः पीतं चैवामृतं तथा ।७
सुरभीदुग्धपानात्सा क्षुत्तृण्दुःखविवर्जिता ।
जाता कमलपत्राक्षी वर्तते वीक्षिता मया ।८

व्यासजी बोले—हे राजन् ! दोनों भाई इस प्रकार विचार करते हुए मौन हो गये, तभी देवर्षि नारद आकाश मार्ग से अवतरित हुए ।१ उन्हें आते हुए देखकर राम उठ खड़े हुए और आसन, अर्घ्य, पाद्य अर्पित किया ।२। फिर दुःखित चित्त वाले राम अपने अनुज सहित बैठ गये तब नारदजी ने उनसे कुशल प्रश्न किया ।३। फिर कहा कि हे राघव! आप ऐसे लोकार्त्त बना रहे हैं ? यद्यपि मुझे ज्ञातहै कि रावण ने सीता का अपहरण कर लियाहै ।४। हे राम ! आपकी उत्पत्ति रावण को मारने के लिए हुई है और इस निर्मित सीता का हरण हुआ है ।५। हे महाबाहो ! आप धैर्य धारण कीजिए । सती धर्म में स्थित सीता अथवा चिन्तन करती हुई विवश होकर ही लंका में रह रही है।६। इन्द्र ने एक पात्र में रखकर कामधेनु का दूध सीता के पासमें भेजा था, उस अमृत के समान दूध को सीता ने पी लिया है ।७। हे राम ! कामधेनु के उस दूध का पान करके वे भूख-प्यास के दुःखों से मुक्त हो गयी है । मैं स्वयं उसे देखकर आ रहा हूँ, अब वह पूर्ण स्वस्थ है ।८।

उपायं कथयाम्यद्य तस्य नाशाय राघव ।
व्रतं कुरुष्व श्रद्धावानाश्विने मासि सांप्रतम् ।९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवरात्रोपवासं च भगवत्याः प्रपूजनम् ।
सर्वसिद्धकरं राम जपहोमविधानतः ।१०
विष्णुनाऽऽचारितं पूर्वं महादेवेन ब्रह्मणा ।
तथा भगवता चीर्णं स्वर्गमध्यस्थितेन वै ।११
सुखिना राम कर्तव्य नवरात्रव्रतं शुभम् ।
विशेषेण च कर्तव्यं पुंसा कण्ठगतेन वै ।१२
विश्वामित्रेण काकुत्स्थ कृतमेतन्न संशयः ।
भृगुणाऽथ वसिष्ठेन कश्यपेन तथैव च ।१३
हरिणा मधुनाशाय कृत मेरौ महामते ।
विधिवत्कुरु काकुत्स्थ व्रतमेतदतंद्रितः ।१४
विधि मे ब्रूहि विप्रर्षे व्रतस्यास्या समासतः ।
करोम्यद्यैव श्रद्धावाञ्छ्रीदेव्याः पूजनं तथा ।१५
पीठं कृत्वा समे स्थाने संस्थाप्य जगदम्बिकाम् ।
उपवासान्नवे व त्वं कुरु राम विधानतः ।१६

हे राघव ! मैं अब रावण के विनाश का उपाय कहता हूँ, इस आश्विन मासमें आप श्रद्धा-भाव सहित नवरात्र व्रत करिए।९। हे राम! नवरात्र की उपासना देवी-पूजना और विधान पूर्वक जप होम करना सर्व सिद्धियों का देने वाला है ।१०। भगवान विष्णु ने इस व्रत को सब से पहले किया था। फिर शिवजी और ब्रह्माजी ने किया और तदन्तर स्वर्ग में देवराज इन्द्र ने किया ११। हे राम ! सब सुखी हों, वे भी इस व्रत को करे और जो किसी कष्ट में हो, उसे तो विशेष रूप से इस व्रत को करना चाहिए ।१२। हे काकुत्स्थ ! विश्वामित्र, भृगु वसिष्ठ और कश्यप ने भी इसको मधु दैत्य के संहारार्थ सुमेरु के शिखर पर किया था, उसी व्रत को हे महामते ! आप भी प्रयत्न पूर्वक करिये ।१३-१४ राम ने कहा—हे ब्रह्मर्षे ! आप मुझे इस व्रतकी विधि बताइए जिसे सुन कर मैं श्रद्धा पूर्वक उन देवों का पूजन करूँगा ।१५। नारदजी बोले— हे राम ! किसी समतल स्थान पर सिंहासन स्थापित कर उस पर जग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दम्बा को प्रतिष्ठित करके विधान पूर्वक उपवास करिये ।१६।

आचार्योऽहं भविष्यामि कर्मण्यस्मिन्महीपते ।
देवकार्यं विधानार्थमुत्साहं प्रकरोम्यहम् ।१७
तच्छ्रुत्वा वचनं सत्यं मत्वा रामः प्रतापवान् ।
कारयित्वा शुभं पीठं स्थापयित्वाऽविकां शिवाम् ।१८
विधिवत्पूजनं तस्याश्चकार व्रतवान् हरिः ।
सम्प्राप्ते चाश्विने मासि तस्मिन्गिरिवरे तदा ।१९
भ्रातरौ चक्रतुः प्रेरणाः व्रतं नारदसंमतम् ।
अष्टभ्यां मध्यरात्रे तु देवी भगवती हि सा ।२०
सिंहारूढं ददौ तत्र दर्शनं प्रतिपूजिता ।
गिरिशृङ्गे स्थितोवाच राघवं सानुजे गिरा ।२१
मेघगम्भीरया चेदं भक्तिभावेन तोषिता ।
राम राम महाबाहो तुष्टाऽस्म्यद्य व्रतेन ते ।२२
प्रार्थयस्व वरं काम यत्ते मनसि वर्तते ।
नारायणांशसंभूतस्त्व वशे मानवेऽनघे ।२३
प्रार्थितस्तु सुरैः सर्वे रावणेनातिपीडितैः ।
कपयस्ते सहाया वै देवांशा बलवत्तराः ।२४

उस कार्यमें आचार्य मैं रहूँगा क्योंकि देवकार्य करने में, मैं अधिक उत्साही रहता हूँ ।१७। नारदजी के वचनों को सुनकर और उन्हें सत्य मानते हुए, राम ने एक सुन्दर सिंहासन रखकर उस पर अम्बिका को प्रतिष्ठित किया ।१८। आश्विन मास के आने पर उसी प्रवर्षक पर्वत के शिखर पर राम ने विधि पूर्वक व्रत सहित देवी का पूजन किया ।१९ तब अष्टमी की मध्य रात्रि में सिंह पर आरूढ़ हुई भगवती ने उन्हें दर्शन दिया और एक पर्वत शिखर पर विद्यमान होकर लक्ष्मण सहित राम ने कहा ।२०-२१। भक्ति भाव से प्रसन्न हुई भगवती ने मेघ गर्जन जैसी गम्भीर वाणी में कहा, हे राम ! हे महाबाहो ! मैं आपके वृत से सन्तुष्ट हुइ हूँ ।२२। आपकी जो अभिलाषा हो, वही मुझसे माँग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीजिए। आप पवित्र मानव-वंश में साक्षात् नारायण के अंश से अद्भुत हुए हैं।२३। रावण द्वारा अत्यधिक सताये जाने पर उसका संहार करने की प्रार्थना देवताओं ने आप से की थी। उन देवताओं के अंश से उत्पन्न हुए बली वानर आपके सहायक होंगे।२४।

भविष्यन्ति नरव्याघ्र मच्छक्तियुता ह्यमी।
शेषांशोऽप्यनुजस्तेऽय रावणात्मजनाशकः।२५
भविष्यति न सन्देहः कर्तव्योऽत्र त्वयानघ।
बसन्ते सेवनं कार्यं त्वया तत्रादिश्रद्धया।२६
हत्वाऽथ रावणं पापं कुरु राज्यं यथासुखम्।
एकादश सहस्राणि वर्षाणि पृथिवीतले।२७
कृत्वा राज्यं रघुश्रेष्ठ गतासि त्रिदिवि पुनः।
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवी रामस्तु प्रीतमानसः।२८
समाप्य तद्व्रतं चक्रे प्रयाणं दशमी दिने।
विजयापूजनं कृत्वा दत्वा दानान्यनेकशः।२९
कपिपतिबलयुक्तः सानुजः श्रीपतिश्च।
प्रकटपरमशक्त्या प्रेरितः पूर्णकामः।
उदधितटगतोऽसौ सेतुबन्धं विधाया-
त्यहनदमरशत्रुं रावणं गीतकीर्तिः।३०
यः शृणोति नरो भक्त्या देव्याश्चरितमुत्तमम्।
स भुक्त्वा विपुलान्भोगान्प्राप्नोति परम पदम्॥३१

आपके सहायक वे वन्दर मेरी शक्तिसे युक्त होंगे और शेष के अंश से लक्ष्मण रावण के पुत्र मेघनाद को मारेंगे।२५। वसन्तु ऋतु के नवरात्र में भी श्रद्धा-भक्ति से मेरा पूजन करना।२६। इससे आप रावण का संहार करने में समर्थ होंगे और फिर ग्यारह हजार वर्षों तक भूतल पर सुख पूर्वक राज्य करेंगे।२७। हे रघुश्रेष्ठ! आप इस प्रकार राज्य करने के उपरान्त दिव्य लोक को पुनः चले जायेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कहकर भगवती अन्तर्धान हो गई और राम अत्यन्त हर्षित हुए।२८ नवरात्र के सम्पूर्ण होने पर उन्होंने दशमी के दिनव्रत समाप्त किया और भगवती विजया का पूजन कर तथा अनेक प्रदान दान देकर लंका की ओर प्रयाण किया।२९। कपिराज सुग्रीव की सेना और अनुज लक्ष्मण के सहित पूर्वकाल राम उस परमा शक्ति की प्रेरणा पाकर समुद्र के तट पर पहुँचे और सेतु बांधकर देवताओं के शत्रु रावण को मारा। इससे उनकी कीर्ति सर्वत्र गाई जाने लगी ।३०। देवी के इस चरित्रको जो मनुष्य भक्ति पूर्वक श्रवण करता है, वह विपुल सुखदायक भोगों को भोगता हुआ अन्त में परम पद को प्राप्त होता है ।३१।

अदिति को शाप

वासवेय मुनिश्रेष्ठ सर्वज्ञाननिधेऽनघ ।
प्रष्टुमिच्छाम्यहं स्वामिन्नस्माकं कुलवर्धन ।१
शूरसेनसुतः श्रीमान्वसुदेवः प्रतापवान् ।
श्रुतं मया हरिर्यस्य पुत्रभावमवाप्तवान् ।२
देवानामपि पूज्योऽभून्नाम्ना ऽऽनकदुन्दुभिः ।
कारागारे कथं बद्धः कंसस्य धर्मतत्परः ।३
पुनः पुनर्हरेरेव नानायोनिषु पार्थिव ।
अवतारा भवंत्यन्ते रथचक्रवहयुताः ।४
दैत्यानां हननं कर्म कर्त्तव्यं हरिणा स्वयम् ।
अंशांशेन पृथिव्यां वै कृत्वा जन्म महात्मना ।५
तदहं सप्रवक्ष्यामि कृष्णजन्मकथां शुभम् ।
स एव भगवान्विष्णुरवतीर्णो यदोः कुले ।६
कश्यपस्य मुनेरंशो बसुदेवः प्रतापवान् ।
गोवृत्तिरभब्रद्राजन्पूर्वशापानुभावतः ।।७

जनमेजय ने कहा—हे मुनिश्रेष्ठ ! आप निष्पाप एवं सभी ज्ञानों के भण्डार हैं। आप ही के द्वारा मेरे कुल की वृद्धि हुई हैं। मैंने सुनाहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि राजा शूरसेन के पुत्र वसुदेवजी के पुत्र रूप में साक्षात् विष्णु ही उत्पन्न हुए थे ।१-२। वसुदेवजी देवताओं के पूज्य और महान धर्मात्मा होकर भी कंस के कारागार में बन्दी होकर क्यों रहे ।३। व्यासजी बोले —हे जनमेजय ! भगवान विष्णु तो रथ के पहिये के समान घूमते हुए बारम्बार विभिन्न योनियों में उत्पन्न होते रहते हैं ।४। वे महान आत्मा भगवान विष्णु अपने अंशसे पृथिवी पर उत्पन्न होकर दैत्योंका संहार किया करते हैं ।५। वे भगवान् विष्णु हीं यदुकुल में अवतरित हुए थे, उन श्रीकृष्ण के अवतरण की गाथा मैं तुम्हें सुनाता हूँ ।६। वसुदेवजी महर्षि कश्यप के अंश से पृथिवी पर उत्पन्न हुए थे, उन्हें पूर्व जन्म में प्राप्त शाप वश गौ-पालन वृत्ति करनी पड़ी थी ।७।

कश्यपस्य च द्वे पत्न्यौ शापादत्र महीपते ।
अदितिः सुरसा चैवमासतुः पृथिवीपतेः ।८
देवकी रोहिणी चोभे भगिन्यौ भरतर्षभ ।
वरुणेन महाञ्छापो दत्तः कोपादिति श्रुतम् ।९
किं कृतं नश्यपेनागो येन शप्तो महानृषिः ।
सभार्य स कथं जातस्त तद्वदस्व महामते ।१०
कथं च भगवान्विष्णुस्तत्र जातोऽस्ति गोकुले ।
वासी वैकुण्ठनिलये रमापतिरखंडितः ।११
निदेशात्कस्य भगवान्वर्तते प्रभुरव्ययः ।
नारायणः सुरश्रेष्ठो युगादिः सर्वधारकः ।१२
स कथं सदन त्यक्त्वा कर्मवानिव मानुषे ।
करोति जननं कस्मादत्र मे संशयो महान् ।१३
प्राप्य मानुषदेहं तु करोति च विडंबनम् ।
भावान्नानाविधास्तत्र मानुषे दुष्टजन्मनि ॥१४

हे राजन् ! महर्षि कश्यप की अदिति और सुरसा (दिति) नाम की दो पत्नियाँ थीं, उन्हें भी शापवश पृथिवी पर उत्पन्न होना पड़ा था।८ वे दोनों ही यहाँ रोहिणी और देवकी नामक दो बहिनें हुई सुना गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि वरुण ने क्रोध पूर्वक उन्हें शाप दिया था ।९। इस पर जनमेजय ने पूछा महर्षि कश्यपसे ऐसा क्या अपराध हुआ था, जिससे उन्हें पत्नी के सहित शापित होना पड़ा है यह मेरे प्रति कहिये ।१०। रमापति, वैकुण्ठ-निवासी भगवान विष्णु को गोकुल में क्यों उत्पन्न होना पड़ा ? ।११। सबके धारक, भगवान विष्णु को किसके आदेश से वैकुण्ठ छोड़ कर मर्त्यलोक में आकर मनुष्यों जैसा आचरण करना पड़ा ।१२-१३। मनुष्य देहधारण पूर्वक मनुष्यों जैसी चेष्टा करने की विडम्बना में उन्हें उलझना पड़ा ।१४।

कामक्रोधोऽमर्षशोकौ वैरं प्रीतिश्च कर्हिचित् ।
सुखं दुःखं भयं नृणां दैन्यमार्जनमेव च ।१५
दुष्कृतं सुकृतं चैव वचनं हननं तथा ।
पोषणं चलनं तापो विमर्शश्च विकत्थनम् ।१६
लोभो दंभस्तथा मोहः कपटः शोचनं तथा ।
एते चान्ये तथा भावा मानुष्ये संभवन्ति हि ।१७
स कथं भगवान्विष्णुस्त्यक्त्वा सुखमनश्वरम् ।
करोति मानुषं जन्म भावैरेतैरभिद्रुतम् ।१८
किं सुखं मानुषं प्राप्य भुवि जन्म मुनीश्वर ।
किं निमित्तं हरिः साक्षाद्गर्भवासं करोति वै ।१९
गर्भदुःखं जन्मदुःखं बालभावे तथा पुनः ।
यौवने कामजं दुःखं गार्हस्थ्येऽतिमहत्तरम् ।२०
दुःखान्येतान्यावाप्नोति मानुषे द्विजसत्तम् ।
कथं स भगवान्विष्णुरवतारात्पुनः पुनः ॥२१

काम, क्रोध, अमर्ष, शोक, वैर, प्रीति, सुख, दुःख, भय, दैत्य, कोमलता, दुष्कृत, सुकृ, वचन, हनन, पोषण, चलन, ताप, विमर्श, चिकत्थन, लोभ, दम्भ, मोह, कपट, चिन्ता आदि ऐसे ही बहुत से भाव मनुष्य में विद्यमान रहते हैं ।१५-१७। तब वे भगवान विष्णु अविनाशी सुख को त्याग कर मनुष्यों में वर्तमान उक्त भावो में क्यों पड़ते रहते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ।१८। हे मुनीश्वर ! पृथिवी पर मनुष्यदेह धारण करने में क्या सुख है ? साक्षात् भगवान गर्भवास के कष्टों को क्यो उठाते हैं ।१९। मानव शरीर में तो गर्भवास के कष्ट, जन्मकाल के कष्ट, वाल्यावस्था के कष्ट युवास्था के काम-जनित कष्ट और गृहस्थाश्रम के विविध प्रकार के झञ्झट, यह सभी संकट झेलने पड़ते हैं, तव भगवान विष्णू क्यों वार-म्वार मनुष्य-जन्म के झंझट को झेलते है ।२०-२१।

कारणानि बहून्यत्राप्यवतारे हरेः किल ।
सर्वेषां चैव देवानामंशावतरणेष्वपि ।२२
वसुदेवावतारस्य कारणं शृणु तत्वतः ।
देवक्याश्च वारोहिण्या अवतारस्य कारणम् ।२३
एकदा कश्यपः श्रीमान्यज्ञार्थं धेनु माहरत् ।
याचितोऽयं बहुविधं न ददौ धेनुमुत्तमाम् ।२४
वरुणस्तु ततो गत्वा ब्रह्माणं जगतः प्रभुम् ।
प्रणम्योवाच दीनात्मा स्वदुःखं विनयान्वितः ।२५
किं करोमि महाभाग मत्तोऽसौ न ददाति गाम् ।
शापो मया विसृष्टोऽस्मै गोपालो भव मानुषे ।२६
भार्ये द्वे अपि तत्रैव भवेतां चाति दुःखिते ।
यतो वत्सा सुदत्यत्र मातृहीनाः सुदुःखिताः ।२७
मृतवत्साऽदितिस्तस्माद्भविष्यति धरातले ।
कारागारनिवासा च तेनापि बहुदुःखिता ॥२८

व्यासजी बोले—हे जनमेजय ! भगवान विष्णु एवं देवताओं के अंशावतार धारण करने में अनेक कारण हैं ।२२। अब वसुदेवजी तथा देवकी रोहिणीं के अवतार धारण करने का जो कारण है उसे तत्व पूर्वक सुनिए ।२३। एक समय की बात हैं कि महर्षि कश्यप यज्ञकार्य के लिए वरुणदेवसे उनकी कामधेनु माँग लाये । यज्ञ सम्पन्न होने पर वरुण ने गौ को लौटाने का अनेक वार निवेदन किया, किन्तु कश्यप ने उसे नहीं लौटाया ।२४। तब वरुणजीने ब्रह्माजी के पास आकर उनसे प्रणाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वक कश्यप द्वारा कामधेनु न लौटाने का सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा ।२५। वे बोले कि हे महाभाग ! कश्यपजी इतने मदोन्मत हो गये हैं कि मेरी गौ नहीं देते इसलिए मैंने उन्हें शाप दिया है कि मनुष्य रूप में जन्म लेकर गोपालक बन जाओ ।२६। वहाँ तुम्हारी दोनों पत्नियाँ भी नाना प्रकार के दुःखों को उसी प्रकार भोगेगी ।२७। पृथिवी पर जाकर अदिति के बालकों की मृत्यु होती रहेगी और वह कारागार में रहकर घोर दुःख प्राप्त करेगी ।२८।

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य यादोनाथस्य पद्मभूः ।
समाहूय मुनिं तत्र तमुवाच प्रजापतिः ।२९
कस्मात्त्वया महाभाग लोकपालस्य धेनवः ।
हृताः पननं दत्ताश्च किमन्यायं करोषि च ।३०
ब्रह्माऽपि तं शशापाथ कश्यप मुनिसत्तमम् ।
मर्यादारक्षणार्थं हि पौत्रं परमवल्लभम् ।३१
अंशेन त्वं पृथिव्यां वै द्राप्य जन्म यदोः कुले ।
भार्याभ्यां संयुतस्तत्र गोपालत्वं करिष्यसि ।३२
एवं शप्तः कश्यपोऽसौ वरुणेन च ब्रह्मणा ।
अंशावतरणार्थाय भूभारहरणरणाय च ।३३
तथा दित्याऽदितिः शप्ता शोकसंप्तता भृशम् ।
जाता जाता विनश्येरंस्तव पुत्रास्तु सप्त वै ।३४
कस्मादददिया च भगिनी शप्तेन्द्रजननी मुने ।
कारणं वद शापे च शोकस्तु मुनिसत्तम् ।३५

व्यासजी बोले—हे राजन् ! वरुण के वचनों को सुनकर ब्रह्माजी ने महर्षि कश्वप को अपने पास बुलाकर कहा ।२९। हे महाभाग ! तुमने लोकपाल वरुण को गौ लेकर उसे लौठाई क्यों नहीं ! तुम ऐसा अन्याय क्यों करते हो ? ।३०। अन्त में ब्रह्माजी ने अत्यन्त प्रिय पौत्र कश्यप को मर्यादा रखने की दृष्टि से यह शाप दिया कि तुम अपनी पत्नीसहित धरातल पर उत्पन्न होकर गोपालन वृत्तिसे अपनी जीविका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपार्जित करोगे ।३१-३२। इस प्रकार भूमि का भार हरने के उद्देश्य से महर्षि कश्यप को पृथिवी पर उत्पन्न होने का शाप वरुण और ब्रह्मा जी दोनों ने दे दिया ।३३। तभी कश्यप की पत्नी दिति ने अपनी सौत अदिति को अत्यन्त व्याकुल होकर यह शाप दिया था कि तेरे सात पुत्र उत्पन्न होकर मरते जावेंगे ।३४। तब राजा जनमेजय ने पूछा कि हे ब्रह्मन् ! दिति ने अपनी ही बहन तथा इन्द्र की जननी अदिति को शाप क्यों दिया ? उसके शोक का कारण मुझसे कहिए ।३५।

राजन्दक्षसुते द्वे तु दितिश्चादितिरुत्तमे ।
कश्यपस्य प्रिये भार्ये बभूवतुरुरुक्रमे ।३६
आदित्या मघवा पुत्री यदाऽभूदतिवीर्य वान् ।
यदा तु तादृग पुत्रं चकमे दितिरोजसा ।३७
पतिमाहासितापांगी पुत्र मे देहि मानद ।
इन्द्रतुल्य बलं वीरं धर्मिष्ठं वीर्यवत्तमम् ।३८
तमुवाच मुनिः कान्ते स्वस्थां भव मयोदिते ।
व्रतांते भविता तुभ्यं शतक्रतुसमः सुतः ।३९
सा तथेति प्रतिश्रुत्य चकार व्रतमुत्तमम् ।४०
एवं जातः सुसंपूर्णो यदा गर्भोऽतिवीर्यवान् ।
शुभ्रांशुमतिदीप्तांगी दिति दृष्ट्वा तु दुःखिता ।४१
मघवत्सदृशः पुत्रो भविष्यति महाबलः ।
दित्यस्तदा मम सुतस्तेजोहीनो भवेत्किल ।४२

व्यासजी बोले—हे राजन् ! महर्षि कश्यप यह दोनों प्रिय पत्नियाँ दक्ष प्रजापति की कन्या दिति-अदिति थीं ।३६। तब अदिति के गर्भ से अत्यन्त पराक्रमी इन्द्र की उत्पत्ति हुई, तब दिति को अभिलाषा हुई कि उसके भी वैसा ही पुत्र उत्पन्न हो ।३७। वह अपने पतिसे जाकर बोली हे मान देने वाले स्वामिन् ! मुझे भी इन्द्र के समान पराक्रमी और धर्मवन्त पुत्र प्रदान कीजिये ।३८। इस पर कश्यप बोले हे कान्ते ! स्वस्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो मैं तुम्हें एक व्रत बताता हूँ, उसके करने पर इन्द्र के समान ही पुत्र उत्पन्न होगा ।३९। पति के आदेशानुसार दिति ने उस व्रत को किया, जिससे उसने सुन्दर गर्भ धारण किया ।४०। इस प्रकार जब उसका गर्भ पुष्ट और पूर्ण हो गया, तब उसका दीप्ति युक्त रूप देखकर अदिति अत्यन्त दुःखित हुई ।४१। उसने सोचा कि यदि इसका पुत्र भी मेरे इन्द्र के समान महापराक्रम हुआ तो मेरे पुत्र का तेज (प्रभाव) घट जायगा ।४२।

इति चिंतापरा पुत्रमिदं चोवाच मानिनी ।
शत्रुस्तेऽद्य समुत्पन्नो दितिगर्भे तिवीर्यवान् ।४३
उपायं कुरु नाशाय शत्रोरद्य विचिन्त्य च ।
उत्पत्तिरेव हंतव्या दित्या गर्भस्य शोभन ।४४
श्रुत्वा मातृवचः शक्रो विचिन्त्य मनसा ततः ।
जगामापरमातुः स सर्कोपरमाधिपः ।४५
मातस्त्वं व्रतयुक्ताऽसि क्षीणदेहाऽतिदुर्बला ।
सेवार्थमिह संप्रायः किं कर्तव्यं वदस्व मे ।४६
पादसवाहन तेऽहं करिष्यामि पतिव्रते ।
गुरुशूषणात्पुण्यं लभते गमिमक्षयाम् ।४७
न मे किमपि भेदोऽस्ति तथाऽदित्या शपे किल ।
इत्युक्त्वा चरणौ स्पष्ट्वा संवाहनपरोऽभवत् ।४८
संवागुनसुखं प्राप्य निद्रामाप सुलोचना ।
श्रांता व्रतकृशा सुप्ता विश्वस्ता परमा सती ।४९

इस प्रकार चिन्ता करती हुई अदिति ने अपने पुत्र इन्द्र से कहा कि दिति के उदर में तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी स्थित है, वह अत्यन्त पराक्रमी है ।४३। अतः हे पुत्र ! तुम अपने शत्रु के मारने के अभी से कुछ उपाय करो जिससे वह उत्पन्न होते ही नष्ट हो सके ।४४। माता की बात सुनकर इन्द्र ने कुछ विचार किया और फिर तुरन्त ही अपनी विमाता दिति के पास जा पहुँचे ।४५। वहाँ इन्द्र ने कहा—हे माता !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्रत के कारण आपका शरीर बहुत क्षीण हो गया है, मैं आपकी सेवा करने के निमित्त यहाँ आया हूँ, आप मुझे सेवा-कार्य बताइये ।४६। हे माता ! हे पतिव्रते ! बड़ो की सेवा से पुण्यकी प्राप्ति होती और अक्षय गति मिलती है अतः मैं आपके पाँव दबाद्ँ ।४७। मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं अपनी माता से और आपसे कोई भेद भाव नहीं रखता ।४८। दिति ने इन्द्र के वचनों पर विश्वास कर लिया और पाँवों के दबाये जाने से जो आराम मिला उससे उसे नींद आ गई ।४९।

तां निद्रावशमापन्नां विलोक्य प्राविशत्तनुम् ।
रूप कृत्वाऽतिसूक्ष्मं च शस्त्रपाणिः समाहितः ।५०
उदरं द्रविवेशाशु तस्या योगबलेन वै ।
गर्भ चकर्त वज्रेण सप्तधा पविनायकः ।५१
रुरोद च तदा बालो वज्रेणाभिहतस्तथा ।
मारुति शनैवक्यिमुव च मधवनमुम् ।५२
शकलानि पुनः सप्त सप्तधा कतितानि च ।
तदा चैकोनपंचाशन्मरुतश्चाभवन्नृप ५३
तदा प्रबुद्धा सुदती ज्ञात्वा गर्भ तथाकृतम् ।
इन्द्रेण छलरूपेण चुकोप भृशदुःखिता ।५४
भगिनींकृतं तु सा बुद्ध्वा शशाप कुपिता तदा ।
अदितिं मघवंतं च सत्यव्रतपरायणा ।५५
यथा ते कथितो गर्भस्तव पुत्रेण छद्मना ।
तथा तन्नाशमायातु राज्यं त्रिभुवनस्य तु ।५६
यथा गुप्तेन पापेनन मम गर्भो निपातितः ।
अदित्या पापचारिण्या यथा मे घातितः सुतः ।५७
यस्या पुत्र स्तु नश्यन्तु जाता जाताः पुनः पुनः ।
कारागारे वसत्वेषा पुत्रशोकातुरा भृशम् ।५८

जब इन्द्र ने उसे निद्रा के वश में देखा तभी शस्त्र लेकर सूक्ष्म रूप में दिति के उदर में प्रविष्ट हो गये और गर्भस्थ शिशु के सात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खण्ड कर दिये ।५०-५१। वज्र की चोट से आहत शिशु गर्भ में रोने लगा, तब धीरे से इन्द्र ने कहा 'मा रुद' अर्थात् रुदन मत करो ।५२। फिर उन सात टुकड़ों के भी सात-सात टुक कर दिये, वे ही सात टुकड़े उनचास मरुद्गण हुए ।५३। तभी दिति की निद्रा-भङ्ग हो गई और उसे ज्ञात हो गया कि इन्द्र ने मेरा गर्भस्थ शिशु नष्ट कर दिया, ।५४। उसे यह ज्ञात हुआ कि इस कर्म उमेंसकी वहिन अदिति का हाथ है तब उसने शाप देते हुए कहा कि तेरे पुत्र ने जिस प्रकार छल पूर्वक मेरे गर्भ के टुकड़े कियेहैं उसी प्रकार त्रिभुवन का राज्य छिन जायगा और जैसे पापिन अदिति ने मेरे शिशु को मरवाया है, वैसे ही उसके पुत्र भी हो-होकर मरेंगे, वह कारागार में रहकर पुत्र-शोक में व्याकुल होगी । ।५५-५८।

अन्यजन्मनि चाप्येव मृतापत्या भविष्यति ।
इत्युत्सृष्टं तदा श्रुत्वा शाप मरीचिनन्दनः ।५९
उवाच प्रणयोपेतो वचनं शमयन्निव ।
मा कोपं कुरु कल्याणि पुत्रास्ते बलवत्तराः ।६०
भविष्यति सुराः सर्वे मरुतो मघवत्सखाः ।
शापोऽयं तव वयोरु त्वष्टविंशुऽथ द्वापरे ।६१
अंशेन मानुषं जन्म द्राप्य भौव्यति भामिनी ।
वरुणेनापि दत्तोऽस्ति शापः सन्तापितेन च ।६२
उभयोः शापयोगेनं मानुषीयं भविष्यति ।
पतिनाऽश्वासिता देवी सन्तुष्टा साभवत्तदा ।६३
इति ते कथितं राजनूपूर्वशापस्य कारणम् ।
अदितिर्देवकी जाता ।स्वांशेन नृपसत्तम् ।।६४

अन्य जन्म में भी वह मृत सन्तान वाली होगी । जब इस प्रकार शाप देने की बात महर्षि कश्यप ने सुनी तो उन्होंने दिति को प्रेम पूर्वक सान्त्वना देते हुए कहा कल्याणि ! तुम क्रोध मत करो । तुम्हारे पुत्र महाबली होंगे ।५९-६०। तुम्हारे खण्डित गर्भ से उनचास मरुद्गण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होंगे, वे सभी देवता एवं इन्द्र के मित्र होंगे और तुम्हारा शाप भी अट्ठाइसवें मन्वन्तर के द्वापर में फलित होगा ।६१। उस समय मनुष्य जन्म लेकर अदिति को अपने कर्मका फल भोगना पड़ेगा, क्योंकि वरुण देव ने भी उसे शाप दे दिया है ।६२। इन दोनों शापों के कारण उसे मानुषी होना पड़ेगा । पति के इस आश्वासन से दिति सन्तुष्ट हो गई ।६३। हे राजन् ! इस प्रकार मैंने उस पूर्व शाप का कारण तुम्हें सुनाया है, जिससे अदिति अपने अंश से अवतरित होंकर देवकी बनीं ।६४।

नर-नारायण द्वारा तपस्या

विस्मितोऽस्मि महाभाग श्रुत्वाऽऽख्यानं महामते ।
संसारोऽयं पापरूपः कथं मुच्येत् बन्धनात् ।१
कश्यपस्यापि दायादस्त्रिलोकीविभवे सति ।
कृतवानीदृशं कर्म को न कुर्याज्जुगुप्सितम् ।२
गर्भे प्रविश्य बालस्य हनन दारुणं किल ।
सेवामिषेण मातुश्च कृत्वा शपथमद्भुतम् ।३
शास्ता धर्मस्य गोप्ता च त्रिलोक्याः पतिरप्युत ।
कृतवानीदृशं कर्म को न कुर्यादसाम्प्रतम् ।४
अथ किं बहुनोक्तेन संसरेऽस्मिन्नृपोत्तम ।
धर्मात्माऽद्रोहबुद्धिस्तु कश्चिद्भवति कर्हिचित् ।५
रागद्वेषान्वितं विश्वं सर्वं स्थावरजङ्गमम् ।
आद्ये युगेऽपि राजेन्द्र किमद्य कलिदूषिते ।६
वासना कारणं राजन्सर्वत्र धर्मसंस्थितौ ।
तस्यां वै मलिनायां तु धर्मोऽपि मलिनीभवेत् ।।७

राजा जनमेजय बोले—हे महाभाग ! इस आख्यान को सुनकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हो रहा है । उससे तो यह सिद्ध होता है कि यह संसार पाप की प्रतिमूर्ति है, तब इसके बन्धनोंसे किस प्रकार मुक्त हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाय ।१। जब सम्पूर्ण ऐश्वर्य से सम्पन्न कश्यप-पुत्र इन्द्र ने ही ऐसा निन्दित कर्म कर डाला, तब साधारण जीव कौन-सा पाप करने से वञ्चित रहेंगे ।२। ऐसी अद्भुत शपथ लेकर माता की सेवा विश्वास दिलाकर उसके गर्भ में प्रविष्ट होकर शिशु-हत्या करना कैसा भयंकर पाप है ।३। धर्म रक्षक इन्द्र ने जब ऐसा जघन्य कार्य किया, तब अन्य जीव क्यों न करेंगे ।४। व्यासजी बोले—हे राजन् ! अधिक क्या, यही कहना चाहिए इस विश्व से धर्मात्मा और दोष रहित बुद्धि वाला कोई कोई ही हो सकता है ।५। हे राजेन्द्र ! यह स्थावर जंगमात्मक सम्पूर्ण विश्व राग-द्वेष से आवृत है । जब यह सतयुग में भी ऐसा ही था, तब कलि से दूषित हुए इस काल के विषय में कहना ही क्या है ।६। हे राजन् ! धर्म में स्थित रहने में भी वासना ही मुख्य कारण है परन्तु जब वासना में मलिनता का समावेश होता है तब धर्म भी मलिन होने लगता है ।७।

मलिना वासना सत्यं विनाशायेति सर्वथा ।
ब्रह्मणो हृदयाज्जातः पुत्री धर्म इति स्मृतः ।८
ब्राह्मणः सत्यसम्पन्नो वेदधर्मरतः सदा ।
दक्षस्य दुहितारो हि वृता दश महात्मना ।९
विवाहविधिना सम्यक् मुनिना गृहधर्मिणा ।
तास्वजीजनयत्पुत्रान्धर्मः सत्यवतां वरः ।१०
हरिं कृष्णं नरं चैव तथा नारायणं नृप ।
योगाभ्यासरतो नित्यं हरिः कृष्णो बभूव ह ।११
नरानारायणो चैव चेरतुस्तप ऊत्तमम् ।
प्रालेयादिं समागत्य तीर्थं बदरिकाश्रमे ।१२
तापितं च जगत्सर्वं तपसा सचराचरम् ।
नरनारायणाभ्यां च शक्रः क्षोभं तदा ययौ ।१३
चिन्ताविष्टः सहस्राक्षो मनसा समकल्पयत् ।
किं कर्तव्यं धर्मसुतौ तापसौ ध्यानसंयतौ ।१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मलिन हुई वासना निश्चय ही विनाश करने वाली होती है। ब्रह्मा जी के हृदय से धर्म नामक एक पुत्र की उत्पत्ति हुई ।८। ब्रह्माजी का वह पुत्र सत्यवादी और वैदिक धर्म का जानने वाला था उसने दक्ष प्रजापति की दस कन्याओं का पाणिग्रह किया था ।९। इस प्रकार विधि पूर्वक विवाह करके धर्म गार्हस्थ जीवन विताने लगे। तदनन्तर उनके चार पुत्र उत्पन्न हुए ।१०। हे राजन् ! उनके नाम हरि,कृष्ण, नर और नारायण थे। उनमें हरि और कृष्ण योगाभ्यास में लगे रहते थे ।११। तथा नर और नारायण-हिमालय पर्वत में स्थित बदरिकाश्रम में तप करने चले गये ।१२। उनके उस कठिन तप से इन्द्र अत्यन्त दुःखित हुए ।१३। तव इन्द्र ने विचार किया कि मुझे इन तपस्वी धर्म-पुत्रोके विषय में क्या करना चाहिए ।१४।

सिद्धार्थौ सुभशंश्रेष्ठं मासन मे ग्रहीष्यतः ।
विघ्नः कथं प्रकर्तव्यस्तपो येन भवेन हि ।१५
उत्पाद्य कामं क्रोधं च लोभं वाप्यतिदारुणम् ।
इत्याविश्य सहस्राक्षः समारुह्य गजोत्तमम् ।१६
विघ्नकामस्तु तरसा जगाम गन्धमार्दनम् ।
गत्वा तत्राश्रमे पुण्ये तन्नापश्यच्छतक्रतुः ।१७
तपसा दीप्तदेहौ तु भास्करावि चोदितौ ।
ब्रह्माविष्णु किमेतौ बै प्रकटी बा विभावसू ।१८
धर्मपुत्रावृषी एतौ तपसा किं करिष्यतः ।
इति संचित्य तौ दृष्ट्वा तदोवाच शचीपतिः ।१९
किं वा कार्यं महाभागौ व्रत धर्मसुतौ किल ।
ददामि वरं श्रेष्ठं दातुं यातोऽस्म्यहं ऋषी ।२०
अदेयमपि दास्यामि तुष्टोऽस्मि तपसा किल ।
एवं पुनः पुनः शक्रस्तावुवाच पुरः स्थितः ।२१

यदि उनका तप निर्विघ्न पूर्ण हो जायगा तो यह मेरे इन्द्रासन को ही ले लेंगे इसलिए मुझे इनका तप भङ्ग करने का उपाय करना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहिए ।१५। यह सोचते हुए उन्होंने निश्चय किया कि उनके मन में काम, क्रोध और लोभ की उत्पत्ति करके तपस्या भंङ्ग कर दी जाय। ऐसा विचार कर अपने ऐरावत पर आरूढ़ होकर इन्द्र तपस्यामें विघ्न उपस्थित करने के हेतु गन्धमादन पर्वतपर पहुँचे और फिर उस आश्रम में जाकर नर-नारायल दोंनों को तपमें स्थित देखा।१६-१७। उन दोनों महामुनियों के देह तपस्याके प्रभावसे सूर्य के समान दीप्तियुक्तथे जिसमें इन्द्र विचार करने लगे कि यह ब्रह्मा,विष्णु सूर्य या चन्द्रमा से ही कोई प्रकट हो गये हैं क्या ? ।१८। धर्म के वह दोनों पुत्र किस अभिलाषा से ऐसा घोर तप कर रहे हैं यह सोचते हुए इन्द्र ने कहा-हे महाभागो ! हे धर्मपुत्रों ! आपकी क्या कामना है ? सो मुझे वताइये। आपके तप से अत्यन्त प्रसन्न हूँ, इसलिए जो माँगोगे वह दूँगा ।१९-२१।

नोचतुस्स्तावृषो ध्यानसंस्थितौदृणचेसौ ।
ततो वै मोहिनी मायां चकार भयदां वृषः ।२२
व्याघ्रसिंहादिभिःक्रांतौ चलितौ नाश्रमत्स्वकात् ।
न तयोर्ध्यानभङ्गं वै कर्तुं कोऽपि क्षमोऽभवत् ।२३
इन्द्रोऽपि सदनं गत्वा चिन्तयामास दुःखिताः ।
चलितौ भयलोभाभ्यां नेमौ मुनिवरोत्तमौ ।२४
चितयन्तौ महाविद्यामाशक्ति सवातनीम् ।
ईश्वरीं सर्वलोकानां परां प्रकृतिमद्भुताम् ।२५
ध्यायतां कः क्षमो लोके वहुमायाविदिप्युत ।
यन्मूलाः सकला माया देवासुर कृताः किल ।।२६

परन्तु दृढ़ चित्त वाले ध्यानावस्थित धर्म पुत्रों ने कोई उत्तर नहीं दिया। यह देखकर इन्द्र ने भय के देने वाली मोहिन माया को उत्पन्न किया ।२२। उस माया से उत्पन्न व्याघ्र सिंह आदि के आक्रमण से भी वे विचलित नहीं हुए। इन्द्र-प्रेरित कोई भी उत्पात उनका ध्यान भङ्ग करने में समर्थ न हुआ ।२३। इन्द्र दुःखित होकर अपने धाम को गये और वहाँ विचार करने लगे कि यह दोनों मुनिश्रेष्ठ किसी प्रकार के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भय या प्रलोभन से विचलित नहीं हुए।२४। परन्तु वे दोनों आदि शक्ति, महाविद्या, सनातनी, भगवती सब लोकों की स्वामिनी अत्यन्त परा प्रकृति के ध्यान में अवस्थित थे।२५। देव दैत्यों की माया उसी पराशक्तिसे प्रकट होतीहै इसलिए उस भगवतीका ध्यान करने वाले को बड़े से बड़ा मायावी भी आकर्षित करने में समर्थ नही होता।२६।

ते कथं बाधितुं शक्ता ध्यायन्ति गतकल्मषा।
वाग्बीजं कामबीजं मायाबीजं तथैव च।२७
चित्ते यस्य भवेत्तं बाधितुं कोऽपि न क्षमः।
मायामोहितः शक्रो भूतस्तस्व प्रतिक्रिया।२८
कर्तुं कामवसन्तौ तु समाहूयाब्रवीद्वचः।
मनोभववसंतेन रत्या युक्तो व्रजाधुना।२९
अप्सरोभिः समायुक्तस्तरसा गन्धमादनम्।
नरनारायणौ तत्र पुरणावसिसत्तमौ।३०
कुरुतस्तप एकान्ते स्थितौ बदरिकाऽऽश्रमे।
गत्वा तत्र समीपे तु तयोर्मन्मथ मार्गणैः।३१
चित्तं कामातुर कार्यं कुरु क्रार्यं ममाधुना।
मोहयित्वोच्चाटयित्वा विशिखैस्ताड्याशु च।३२
प्रथम तव सम्प्राप्तो वसतः पर्वतोत्तमे।
पुष्पिताः पादपाः सर्वे द्विरेफ़ालिविराजिता।३३
आम्राश्चवकुला रम्यास्तिलकाः किंशुका शुभाः।
सालास्तास्तमालाश्च मधूकाः पुष्पिता वभुः।३४

भगवती का ध्यान करते-करते जिनके पापो का क्षय हो गया है तथा जिनके मन में वाग्बीज, कामबीज या मायाबीज बस गये हैं, उन्हें कौन बाधा पहुँचा सकताहै और कौन मार्ग-भ्रष्ट कर सकता है। परन्तु इन्द्र तो स्वयं ही माया से मोहित हो गये और प्रतिक्रिया स्वरूप काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देव और वसन्तको बुलाकर बोले कि हे कामदेव ! तुम बसन्त और रति के सहित बहुत सी अप्सराओं को साथ लेकर गन्धमादन पर्वतपर जाओ वहाँ बदरिकाश्रम के एकान्त वन में नर नारायण तपस्या कर रहे हैं। तुम अपने बाणों के प्रहार से उनके चित्त को काम से व्याकुल करो। मोहन और उच्चाटन प्रयोग करके उन्हें तप से भ्रष्ट कर डालो ।२७। ३२। व्यासजी बोले—हे राजन् ! गन्धमादन पर्वत पर बसन्त ने सबसे पहिले पहुँचकर वहाँ के सभी वृक्षों को पुष्पों से परिपूर्ण कर लिया। उस समय आम, मौलश्री, तिलक, पलास, साल, ताल, आदि के वृक्षों पर पुष्प खिल उठे ।३३-३४।

रतियुक्तास्ततः कामः पूरयन्पंचमार्गणान् ।
चकार त्वरितस्तत्र वासं बदरिकाश्रमे ।३५
रम्भा तिलोत्तमाद्याश्च गत्वा तत्र वराश्रमे ।
गान चक्रुः सुगीतज्ञाः स्वरतानसमन्वितम् ।३६
तासां द्वयष्टसहस्राणि पञ्चाशदधिकानि च ।
वीक्ष्य तौ विस्मितौ जातौ कामसैन्यं सुविस्तरम् ।३७
प्रणम्याग्रे स्थितः सर्वा देववारांगनास्तदा ।
दिव्याभरणभूषाढ्यां दिव्यमाल्योपशोभिताः ।३८
जगुश्छलेन ताः सर्वाः पृथिव्यामतिदुर्लभम् ।
तत्तथाऽवस्थित दिव्यं मन्यथादिविवर्धनम् ॥३९

तब रति के सहित कामदेव भी अपने पंचशर लेकर बदिरिकाश्रम में पहुँच गया।३५।फिर रम्भा-तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ भी उस श्रेष्ठ आश्रम में पहुँचकर श्रेष्ठ ताल-युक्त सुन्दर गीत गाने लगी ।३६। तब उन सोलह हजार अप्सराओं ने युक्त कामदेव की उस विशाल सेना को देखकर नर-नारायण को अत्यन्त आश्चर्य हुआ।३७।वे सभी देवाङ्गनाएं उन ऋषियों को प्रणाम करके उनके समक्ष खड़ी हो गईं ।३८। फिर वे विभिन्न प्रकार के छल युक्त कामोत्तेजक हाव भावों से युक्त गीत गाने लगे ।३९।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुश्राव भगवान्विष्णुर्नरो नारायणस्तदा ।
श्रुत्वा प्रोवाच तास्तत्र प्रीत्या नारायणो मुनिः । ४०
आस्यतां सुखमत्रैव कषोम्यातिथ्यमद्भुतम् ।
भवन्त्योऽतिथिधर्मेण प्राप्ताः स्वर्गात्सुमध्यमाः ।४१
साभिमानस्तु संजातस्तदा नारायणो मुनिः ।
इन्द्रेण प्रेषिता नूनं तथा विघ्नचिकीर्षया ।४२
वराक्यः का इताः सर्वाः सृजाम्यद्य नवाः किल ।
एताभ्यो दिव्यरूपाश्च दर्शयामि तपोबलम् ।४३
इति संचित्य मनसा करेणोरुद्रताड्य वै ।
तरसोत्पादयामास नारीं सवडिव्यसुन्दरीम् ।४४
नारायणोरुसंभूता ह्युर्वशीति ततः शुभा ।
दृष्टशुस्ताः स्थितास्तत्र विस्मयं ययुः ।४५
तासां च परिचर्यार्थं तावतीश्चातिसुन्दरीः ।
प्रादुश्चकार तरसा तदा मुनिरसभ्रमः ।४६

नर-नारायण ने गीत श्रवण कर उनसे कहा-तुम बैठो ! मैं तुम्हारा आतिथ्य-सत्कार करूँगा, क्योंकि तुम स्वर्गलोक से यहाँ आई हो ।४०। ।४१। व्यासजी ने कहा—हे राजन् ! महर्षि नारायण यह विचार करके अहङ्कार में भर गए कि इन अप्सराओं को इन्द्र ने हमारी तपस्या भङ्ग करने के लिए भेजा हैं ।४२। इनमें क्या विशेषता है,मैं अपने तपोबलके प्रभाव से इनसे भी सुन्दर नवीन अप्सराये उत्पन्न करूँगा ।४३। यह सोचकर उन्होंने अपनी जाँघ ठोकी और उससे एक अत्यन्य रूपवती नारी उत्पन्न कर दी ।४४। वह महर्षि नारायण के उरु प्रदेश से आविर्भूत हुई थी, इसलिए उनका नाम उर्वशी हुआ। उसे देखकर अप्सरायें अत्यन्त विस्मित हुईं।४५। उन अप्सराओं की परिचर्या के लिए मुनिने उतनी ही अत्यन्त रूपवती परिचारिकायें प्रकट करदीं ।४६।

गायन्त्यश्च हसंत्यश्च नानोपायनपाणयः ।
प्रणेमुस्ता मुनी सर्वाः स्थिताः कृत्वांजलिपुटः ।।४७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तां वीक्ष्या विभ्रमकरीं तपतो विभूतिं
देवांगना हि मुमुहुः प्रविमोहयंत्यः ।
ऊसुश्च तौ प्रमुदितान पद्मशोभा
रोमोद्गमोल्लसितचारुनिजांगवल्यः ।४८
कुर्युः कथं स्तुतिमहो तपसो महत्वं
धैर्यं तथैव भवतामभिवीक्ष्य बाला ।
अस्मत्कटाक्षविषदिग्धशरेण दग्धः
को वा न तत्र भवतां मनसो व्यथा च ।४९
प्रीतौ प्रसन्न वदनौ जितकामलोभौ
धर्मात्मजौ निजपतोरुचिशोभिताङ्गौ ।
ब्रूतं तु वांछितान्काकात्ददावस्तुष्टमानसौ ।५०
यांतु स्वर्गं गृहीत्वेमामुर्वशीं चारुलोचनाम् ।
उपायनमियं बाला गच्छत्वद्य मनोहरा ।५१
क्व गच्छामो महाभाग प्राप्तास्ते पादपंकजम् ।
नारायण सुरश्रेष्ठ भक्तया परमया मुदा ।५२
वांछितं चेद्वरं नाथ ददासि मधुसूदन ।
तुष्टः कमलपत्राक्ष ब्रवीमो मनसेप्सितम् ।५३

वे तभी विभिन्न प्रकार के उपहार लिए हुई मुस्कराती हुई गा रही थीं। फिर उन सब ने मुनि को प्रणाम किया और हाथ जोड़ कर उनके समक्ष खड़ी हो गई ।४७। इन्द्र की जो अप्सराएं प्राणियों को मोह में भ्रमाती थीं उस तप-मूर्ति उर्वशी को देख कर स्वयं भ्रमित हो गई। उनके मुखाम्बुज प्रसन्नता से खिल उठे और देह-बल्लिरियों पर रोम-हर्ष रूपी अंकुर प्रस्फुटित हो गये ।४८। तब वे अप्सराएं बोली—हे मुने ! हम आपकी स्तुति कैसे करें ? आपका धैर्य तथा तपस्या का महत्व देखकर हम विमूढ़ हो गयी हैं । विश्व में ऐसा कौन है जो हमारे कटाक्ष रूपी विदग्ध बाणों से आहत न हो गया हो, परन्तु आपके मन पर इनका कोई प्रभाव या व्यथा नहीं ।४९।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय वे दोनों ऋषि हर्ष से प्रफुल्लित मुख थे। उस काम और लोभ के विजेता धर्म पुत्र ने उन अप्सराओं से कहा कि हम तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हैं इच्छित वर माँग लो।५०। तुम इस उर्वशी को भी अपने साथ स्वर्ग ले जाओ यह मनोहारिणी तुम्हारे लिए उपहार स्वरूप होगी।५१। यह सुनकर देवियों ने कहा—हे महाभाग ! हे नारायण ! अब हम कहाँ जाँय ? यदि आप हम पर प्रसन्न हैं और वर देने की इच्छा करतेहैं, तो हम अपनी कामना निवेदन करतीहैं।५२-५३

पतिस्त्वं भव देवेश वरमेनं परंतप।
भवाम प्रीतियुक्तास्त्वां सेवितुं गदीश्वर।५४
त्वयाचोत्पादिता नार्यः सत्यन्याश्चारुलोचना।
उर्वश्याद्यास्तथा यांतु स्वर्गं वै भयदाज्ञया।५५
स्त्रीणां षोडषसहस्रं तिष्ठत्वत्र शताधिकम्।
सेवां तेऽत्र करिष्यामो युवयोस्तापसोत्तमौ।५६
वांछितं देहि देवेश सत्यवाग्भाव माधव।
आशाभङ्गो हि नारीणां हिंसनं परिकीर्तितम्।५७
इत्याकर्ण्य ववस्तासां धर्मपुत्रः प्रतापवान्।
विमर्शमकरोच्चित्ते किं कर्तव्यं मयाऽधुना।५८
अहंकारादिदं प्राप्तं दुःखं नात्र विचारणा।
मूलं धर्मविनाशस्य प्रथमं यदहंकृतिः।५९
मूलं संसार वृक्षस्य यतः प्रोक्तो महात्मभिः।
दृष्ट्वा मौनं समाधाय न स्थितीऽहं समाप्तम्।६०
वाराङ्गनागणं जुष्टं तेनासंदुःखभाजनम्।
उत्पादितास्तथा नार्यो मया धर्मव्ययेन वै।६१
तास्तु मां बाधितुं वृत्ताः कामार्ताः प्रमदोत्तमाः।
ऊर्णनाभिरिवाद्याहं जालेन स्वकृतेन वै।६२

हे देवेश ! हे परंतप आप हमारे पति हो जाइए। आपकी सेवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में हमें बड़ा सुख मिलेगा। इसलिए आप यही वर दीजिए।४५। आपके द्वारा उत्पन्न की गयी उर्वशी आदि सुन्दरियों को आप स्वर्ग जाने की आज्ञा दीजिए।५५। हे तापसश्रेष्ठ ! हम स्वर्ग से आई सोलह हजार पचास अप्सरायें आपके पास रहकर सेवा करेंगी।५६। हे देवेश ! हे माधवे ! हमारा इच्छित देकर सत्यवक्ता बनिये।५७। व्यासजी बोले- हे राजन् ! यह सुनकर धर्मपुत्र नारायण विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिए।५८। इसमें विचार करने की कोई बात नहीं कि अहंकार से दुःख की प्राप्ति होती है, क्योंकि यह धर्म की जड़ काटने वाला है।५९। महात्माओं का कहना है कि अहंकार इस जगत् रूपी वृक्ष की जड़ है जिससे मैं इन नारियों का आगमन देखकर मौन नहीं रहा।६०। इनसे मैंने वार्तालाप किया, इसी से यह संकट उपस्थित हुआ है। मैंने अपने धर्म का व्यर्थ ही अपव्यय करके उर्वशी आदि को उत्पन्न कर डाला।६१। अब यह कामातुरा मेरे तपस्या में विघ्न स्वरूप हो गई है और मैं स्वयं ही अपने जाल में मकड़ी के समान फँस गया हूँ।६२।

बद्धोऽस्मि सुदृढेनात्र कर्तव्यमतः परम्।
यदि चिंतां समुत्सृज्य सत्यजाम्यबला इमाः।६३
शप्त्वा भ्रष्टा व्रजिष्यन्ति इमा भग्नमनोरथा।
मुक्तोऽहं संचरिष्यामि विजने परमं तपः।६४
तस्मात्क्रोधं समुत्पाद्य त्यक्ष्यामि सुन्दरीगणम्।
इति संचित्य मनसा मुनिर्नारायणस्तदा।६५

विमर्शमकमोच्चित्ते सुखोत्पादनासाधने।
द्वितीयोऽयं महाशत्रुः क्रोधः सन्तापकारकः।६६
कामादप्याधको लोके लोभादपि च दारुणः :
क्रोधादिभूतः कुरुते हिंसां प्राणविघितिनीम्।६७
दुःखदां सर्वभूतानां नरकारामदीर्घकाम्।
यथाऽग्निर्घर्षणाज्जातः पादपप्रदहेत्तथा।६८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देहोत्पन्नस्तथा क्रोधो देहं देहति दारुणः ।
इति संचित्यमान तं भ्रातरं दीनमानसम् ।६९
उवाच वचनं तथ्यं नरो धर्मसुतोऽनुजः ।
नारायण महाभाग कोपं यच्छ महामते ।७०

अब मैं सुदृढ़ बन्धन में बुरी तरह जकड़ गया हूँ, अब मेरा क्या कर्तव्य है ! यदि इन्हें छोड़ता हूँ, तो अपनी कामना नष्ट होने के कारण यह मुझे शाप देकर स्वर्ग चली जाँयगी ।६३-६४। इसलिये इनके मन में क्रोध उत्पन्न करके ही इन्हें त्याग सकूंगा । इस प्रकार विचार करके नारायण अपने चित्त को सुखी करने वाले किसी साधन की खोज करने लगे । फिर उन्होंने सोचा कि क्रोध तो सन्ताप उत्पन्न करने वाला घोर शत्रु है ।६५-६६। यह काम और लोभ से भी भयंकर है, क्योंकि क्रोध के वशीभूत हुआ देहधारी प्राणनाशिनी हिंसा कर देता है ।६७। नरक रूपी उद्यान की बावली के समान यह सब प्राणियों को दुःख देने वाला है । जैसे वृक्षों के परस्पर घर्षण से वन में उत्पन्न हुई अग्नि उन वृक्षों को भस्म कर देती है, वैसे ही क्रोध भी जिस देह में उत्पन्न होता है उसीको भस्म कर देता है । व्यासजी बोले कि हे राजन् अपने भाई को इस प्रकार चिंता-व्यस्त देखकर नारायण के छोटे भाई नर ने उनसे कहा कि हे नारायण ! हे महामते ! क्रोध को शान्त कीजिये ।६८-७०।

शांत भावं समाश्रित्य नाशयाहंकृतिं पराम् ।
पुराऽहं कारदोषेण तपो नष्ट किलावयोः ।७१
संग्रामश्चभवत्ताभ्यां भवाभ्यामसुरेण ह ।
दिव्यवर्षशतं चैव प्रह्लादेन महाद्भुतम् ।७२
दुःखं बहुतरं प्राप्तं तत्रावाभ्यां सुरोत्तम ।
तस्मात्क्रोधं परित्यज्य शांतो भव मुनीश्वर ।७३
इति तस्य वचः श्रुत्वा शांतोऽभूद्धर्मनन्दनः ।
संशयोऽयं मुनश्रेष्ठ प्रह्लादेन महात्मना ।७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णुभक्तेन शांतेन कथं युद्धं कृतं पुरा ।
कृततन्तौ कथं युद्धं नरनारायणावृषी ।७५
तापसौ धर्मपुत्रौ द्वौ सुशांतमानसावुभौ ।
समागमः कथं जातस्तयोर्दैत्यसुतस्य च ।७६

शान्तभाव का आश्रय लेकर अहंकार शमन कीजिये । क्योंकि पूर्वकाल में अहंकार के वशीभूत होने से हमारा तप नष्ट हो गया था ।७१। दैत्यराज प्रह्लाद के साथ हमें सौ दिव्य वर्षों तक घोर संग्राम में तत्पर रहना पड़ा था ।७२। उस युद्ध में हमने घोर कष्ट उठाये थे । इसलिये हे मुनीश्वर ! आप क्रोध का परित्याग कर शान्त भाव को प्राप्त हो इये ।७३। नर के ऐसे वचन सुन कर नारायण शान्त हो गये । इस पर जनमेजय बोले कि हे ब्रह्मन् ! शान्त स्वभाव वाले, विष्णु भक्त प्रह्लाद ने उन महर्षि नर-नारायण से युद्ध क्यों किया क्योंकि वे दोनों पुत्र भी अत्यन्त शान्त स्वभाव वाले थे ? ।७४-७६।

प्रह्लाद का नैमिषारण्य गमन

स यदा निहतो रौद्रो हिरण्यकशिपुर्नृप ।
अभिषिक्तस्तदा राज्ये प्रह्लादो नाम तत्सुतः ।१
तस्मिञ्छासति दैत्येन्द्रे देवब्राह्मणपूजके ।
मखैर्भूमौ नपतयो यजतः श्रद्धयाऽन्विताः ।२
ब्राह्मणाश्च तपोधर्मतीर्थ यात्राश्च कुर्वते ।
वैश्याश्च स्वस्ववृत्तिस्थाः शूद्राः शुश्रूषणे रताः ।३
नृसिंहेन च पाताले स्थापितः सोऽथ दैत्यराट् ।
राज्यं चकार तत्रैव प्रजापालनतत्परः ।४
कदाचिद्भागुत्रोऽथ च्यवनाख्यो महातपः ।
जगाम नर्मदां स्नातुं तीर्थं वै व्याहृतीश्वरम् ।५
रेवां महानदीं दृष्ट्वा नतस्तस्यामवातरम् ।
उत्तरं तं प्रजग्राह नागौ विष-भयंकरः ।६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गृहीतो भयभीतस्तु पाताले मुनिसत्तमः ।
सस्मार मनसा विष्णुं देवदेवं जनार्दनम् ।७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! जब दैत्यराज हिरण्यकशिपु मारे गये तब प्रह्लाद का राज्यभिषेक हुआ ।१। देव ब्राह्मणों के पूजक दैत्यराज प्रह्लाद के साम्राज्य में ब्राह्मण तपस्या तथा तीर्थाटन में लगे, वैश्यों ने व्यवसाय में चित्त लगाया और शूद्र सेवा परायण हो गये ।२-३।भगवान नृसिंह ने प्रह्लाद को पाताल लोकका शासक नियुक्त किया था इसलिए वे वहीं प्रजा के पालन पूर्वक राज्य करने लगे ।४। तभी महर्षि भृगु के पुत्र च्यवन नर्मदा में स्नान करने के उद्देश्य से व्याहृतीश्वर तीर्थ में पहुँचे ।५। उस महानदी को देखकर च्यवन ऋषि जलमें उतरे, तभीएक भयानक सर्प ने उन्हें पकड़ लिया ।६। वह सर्प उन्हें पकड़ कर पाताल लोक ले गया । तब महर्षि ने भगवान विष्णु का चिन्तन किया ।७

संस्मृते तुण्डरीकाक्षे निर्विषोऽभून्महोरगः ।
न प्राप च्यवनो दुःखं नीयमानो रसातलम् ।८
तत्र नागकन्याभिः पूजितो मुनिसत्तमः ।
विवेशाप्यथ नागानां दानवानां महत्पुरम् ।९
कदाचिद्भृगुपुत्रं तं विचरंतं पुरोत्तमे ।
ददर्श दैत्यराजोऽसौ प्रह्लादोघ मंवत्सलः ।१०
दृष्ट्वा तं पूजयामास मुनि दैन्यपतिस्तदा ।
पप्रच्छ कारणं किं ते पातालगमने वद ।११
स्नानार्थं नर्मदां प्राप्तः पुण्यतीर्थं नृपोत्तम ।
नद्यामेवावतीर्णोऽहं गृहीतश्च महाऽहिना ।१२
जातोऽसौ निर्विषः सर्पो विष्णोः संस्मरणादिव ।
मुक्तोऽहं तेन नागेन प्रभावात्स्मरणस्य वै ।१३
अत्रागतेन राजेन्द्र मयाऽऽप्तं तव दर्शनम् ।
विष्णुभक्तोऽसि दैत्येन्द्र तद्भक्तं मां विचिन्तय ।१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुण्डरीकाक्ष भगवान विष्णुका स्मरण करते ही वे सर्प के बन्धन मुक्त हो गये, रसातल में पहुँचकर भी उन्हें कोई भय नहीं हुआ ।८। फिर वे नागकन्याओं द्वारा पूजित होते हुए वहीं विचरण करने लगे ।९। एक बार दैत्यराज प्रह्लाद ने उन्हें अपने नगर में विचरण करते हुए देखा ।१०। ऋषि को देखते ही उन्होंने पूजन करके पाताल लोक में आगमन का कारण पूछा कि आप यहाँ क्यों आये हैं सो कहिए ।११। मुनि ने उत्तर दिया कि मैं नर्मदानदी में स्नानार्थ उतर रहा था, तभी एक भयंकर सर्प ने मुझे पकड़ लिया ।१२। फिर भगवान् विष्णु का स्मरण करने से निर्विष हुए उस सर्प ने मुझे छोड़ दिया ।१३। इसी कारण यहां आने पर मुझे आपका दर्शन प्राप्त हो गया ।१४।

तन्निशम्य वचः श्लक्ष्णं हिरण्यकशिपो सुतः ।
पप्रच्छ परया प्रीत्या तीर्था न विविधानि च ।१५
पृथिव्यां कानि तीर्थानि पुण्यानि मुनिसत्तम ।
पाताले च तथाऽऽकाशे तानि नो वद विस्तरात् ।१६
मनोवाक्कायशुद्धानां राजंस्तीर्थं पदे पदे ।
तथा मलिनचित्तानां गङ्गाऽपि कीकटाधिका ।१७
प्रथमं चेन्मनः शुद्धं जातं पापविवर्जितम् ।
तदा तीर्थानि सर्वाणि पावनानि भवति वै ।१८
प्रथम नैमिषं पुण्यं चक्रतीर्थं च पुष्करम् ।
अन्येषां चैव तीर्थानां संख्या नास्ति महीतले ।१९
तच्छ्रुत्वा वचनं राजा नैमिषं गंतुमुद्यतः ।
नोदयामास दैत्यान्वै हर्षनिर्भरमानसः ।२०
उत्तिष्ठ तु महाभागा गमिष्यामोऽद्य नैमिषम् ।
द्रक्ष्यामः पुण्डरीकाक्षं पीतवाससमच्युतम् २१

व्यासजी बोले च्यवन ऋषि के वचन सुनकर प्रह्लाद प्रसन्न हुए और उन्होंने विविध तीर्थों के विषय में ऋषि से प्रश्न किया ।१५।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे मुनिश्रेष्ठ ! पृथिवी, पाताल और आकाश में पुण्य तीर्थ कौन-कौनसे हैं ? ।१६। इस प्रकार च्यवन ने कहा—जिनके मन, वाणी, कर्म शुद्ध हैं उनके पद-पद पर तीर्थ विद्यमान हैं और मलिन मन वालों के लिये तो गंगा जी भी साधारण नदी से तुच्छ हैं ।१७। इसलिये सर्व प्रथम मनका शुद्ध और निष्पाप होना आवश्यक है, इससे सभी तीर्थ पुनीत बनजाते हैं ।१८। तीर्थों में प्रमुख नैमिषारण्य है, फिर चक्रतीर्थ और उनके पश्चात् तीसरा स्थान पुष्कर का है पृथिवी पर इनके अतिरिक्त भी असंख्य अगणित तीर्थ विद्यमान हैं ।१९। ऋषि के यह वचन सुनकर प्रह्लाद ने हर्षित होकर कहा हे महाभागो ! उठो हम नैमिषारण्य चलकर पीताम्बरधारी पुण्डरीकाक्ष अच्युत भगवान का दर्शन करेंगे ।२०-२१।

इत्युक्ता विष्णुभक्तेन सर्वे ते दानवास्तदा ।
तेनेव सह पातालान्निर्ययुः परमा मुदा ।२२
ते समेत्य च दैतेया दानवाश्च महाबलाः ।
नैमिषारण्यमासाद्य स्नानं चक्रुर्मुदान्विताः ।२३
प्रह्लादस्तत्र तीर्थेषु चरन्दैत्यैः समन्वितः ।
सरस्वतीं महापुण्यां ददर्श विमलोदकाम् ।२४
तीर्थे तत्र नृपश्रेष्ठ प्रह्लादस्य महात्मनः ।
मनः प्रसन्नं संजातं स्नात्वा सारस्वते जले ।२५
विधिवत्तत्र दैत्येन्द्रः स्नानदानादिके शुभे ।
चकारातिप्रसन्नात्मा तीर्थे परमपावने ।२६

प्रहलाद के ऐसा कहते ही वे सभी दैत्य प्रसन्न होकर उनके साथ पाताल लोक से निकले ।२२। उन सबके सहित दैत्यराज प्रह्लाद ने नैमिषारण्य पहुँच कर स्नान किया ।२३। उस तीर्थ में विचरते हुए उन्होंने महापुण्या और निर्मल जल वाली सरस्वती के दर्शन किये ।२४। उस सरस्वती के पवित्र जल में स्नान करके दैत्यराज प्रह्लाद का मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसन्न हो गया ।२५। इस प्रकार उस परम पावन तीर्थमें दैत्येन्द्र प्रह्लाद ने स्नान-दानादि शुभ कार्य विधि पूर्वक किये ।२६।

—❀—

प्रहलाद का नर-नारायण से युद्ध

कुवर्वंस्तीर्थ विधिं तत्र हिरण्यकशिपोः सुतः ।
न्यग्रोधं सुमहच्छायमपश्यत्पुरतस्तदा ।१
ददर्श वाणानपरान्नाजातीयकांस्तदा ।
गृध्रपक्षयतांस्तीव्रञ्छिलाधौतान्महोज्ज्वलान् ।२
चिंतयामास मनसा कस्येमे विशिखास्त्विह ।
ऋषीणामाश्रमे पुण्ये तीर्थे परमापावने ।३
एवं चिंतयाऽनेन कृष्णाजिनधरौ मुनी ।
समुन्नतजटाभारौ दृष्टौ धर्मसुतौ तदा ।४
तयोरग्रे धृते शुभ्रे धनुषी लक्षणान्विते ।
शार्ंगमाजगवं चैव तथाऽक्षय्यो महोषधी ।५
ध्यानस्थौ तौ महाभागौ नरनाराणावृषी ।
दृष्ट्वा धर्मसुतौ तत्र दैत्यानामधिपस्तदा ।६
क्रोधरक्तेक्षणस्तो तु प्रोवाचासुरपालकः ।
कि भवद्भयां सामरब्धो दम्भो धर्म विनाशनः ।७

व्यासजी बोला—हे जनमेजय ! इस प्रकार तीर्थाटन करते हुए प्रह्लाद ने सहसा एक छाया युक्त विशाल वट वृक्ष देखा ।१। उस वृक्ष पर उन्हें गृध्र के पंखों से युक्त तीक्ष्ण नुकीले एवं चमकते हुए अनेक प्रकार के वाण दिखाई दिये ।२। अब प्रह्लाद सोचने लगे कि ऋषियों के इस पवित्र आश्रय में यह वाण किसके हो सकते हैं ? ।३। इस प्रकार विचार करते हुए दैत्यराज को काले मृग का चर्म धारण किये हुए, जटाभार से सम्पन्न धर्म पुत्र नर-नारायण दिखाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अक्षय्य तूणीर यह सभी उन ऋषियों के समक्ष रखे दृष्टिगत हुए ।५। उससमय वे दोनों महाभाग नर-नारायण ध्यानावस्थितथे। प्रह्लाद-उन्हें इस रूप में देखकर अत्यन्त क्षुभित हुए। उनके क्रोध से लाल हो गये थे। वे बोले तुम दोनों इस प्रकार के धर्म नाशक दम्भ को क्यों अपनाये हुए हो ।६-७।

न श्रुतं नैव दृष्टं हि संसारेऽस्मिन्कदापि हि ।
तपसश्चरणं तीव्रं तथा चापस्य धारणम् ।८
विरोधोऽयं युगे चाद्य कथं युक्तं कलिप्रियम् ।
ब्राह्मणस्य तपो युक्तं तत्र किं चापधारणम् ।९
क्व जटाधारणं देह क्वेषधी च विडम्बना ।
धर्मस्याचरणं युक्तं युवयोर्दिव्यभावयोः ।१०
इति तस्य वचः श्रुत्वा नरः प्रोवाच भारत ।
का ते चिन्ताऽत्र दैत्येन्द्र वृथा तपसि चावयोः ।११
सामर्थ्ये सति यत्कुर्यात्तत्सपद्येत तस्य हि ।
आवां कार्यद्वये मन्दसमर्थौ लोक विश्रुतौ ।१२
युद्धे तपसि सामर्थ्यं त्वं पुनः किं करिष्यसि ।
गच्छ मार्गे यथाकामं कस्मादत्र विकत्थसे ।१३
ब्रह्मतेजो दुराराध्यं न त्वं वेद विमोहितः ।
विप्रचर्चा न कर्तव्या प्राणिभिः सुखमीप्सुभिः ।१४

मैंने इस विश्व में कहीं भी यह नहीं देखा और न सुना। कहाँ तो कठिन तप और कहाँ धनुष का धारण ।८। इन दोनों कर्मों में परस्पर विरोध है। विशेषकर सत्युग में तो इस कलियुग के प्रिय कर्म का किया जाना और भी अनुचित है ।९। वहाँ तो जटा धारण और कहाँ तरकस से सुसज्जित होना। यह कैसी विडंबना है ? तुम्हें इस पाखण्ड को छोड़कर दिव्यभाव पूर्वक धर्माचरण ही करना चाहिए ।१०। व्यासजी बोले हे जनमेजय ! प्रह्लाद के वचनों को सुनकर नर बोले—हे दैत्येन्द्र ! हमारी तपस्या के विषय में आपको व्यर्थ चिन्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों है ।११। सामर्थ्यवान सब कुछ करने के योग्य हैं, और संसार जानता है कि हम यह कार्य करने में समर्थ हैं ।१२। हम युद्ध और तप दोनों कार्य करने की क्षमता रखते हैं फिर आप यह सब पूछ कर क्या लेंगे ? आप अपना मार्ग पकड़िये, व्यर्थ ही क्यों भटक रहे हैं ।१३। ब्रह्म तेज अत्यन्त कठोर होता है तुम मोहित हुए जीव उसे क्या जानो ? ।१४।

तापसौ मन्दबुद्धीस्थौ मृषा वां गर्वमोहितौ ।
मयि तिष्ठति दैत्येन्द्रे धर्मसेतुप्रवर्तके ।१५
न युक्तमेतत्तीर्थेस्मिन्नधर्माचरणं पुनः ।
का शक्तिस्तव युद्धेऽस्ति दर्शयाद्य तपोधन ।१६
तदाकर्ण्य वचस्तस्य नरस्त प्रत्युवाच ह ।
युध्यस्यस्वाद्य मया सार्धं यदि ते मतिरीदृशी ।१७
अद्य ते स्फोटयिष्यामि मूर्धानमसुराधम ।
तन्निशम्य वचस्तस्य दैत्येन्द्रः कुपितस्तदा ।१८
प्रह लादो बलवानत्र प्रतिज्ञामरुरोह सः ।
येन केनाप्युपायेन जेष्यामि ताबुभावपि ।१९
नरनारायणौ मांन्तौवृषी तपसमन्वितौ ।
इत्युक्त्वा वचनं दैत्यः प्रतिगृह्यशरासनम ।२०
आकृष्य तरसा चापं ज्याशब्दं च चकार ह ।
नराऽपि धनुरादाय शरांस्तीव्रांछिलाशितान् ।२१
मुमोच बहुशः क्रोधात्प्रह्लादोपरि पार्थिव ।२२

प्रह्लाद बोले—हे तपस्वियों ! तुम दोनों अल्प बुद्धि वाले मिथ्या अहंकार से मोहित हो गये हो, मेरे जैसे धर्म-सेतु-प्रवर्तक दैत्यराज के रहते हुए तुम्हारे यह धर्म के विरुद्ध कार्य उचित नहीं हो सकता । तुम में युद्ध के लिए कितनी सामर्थ्य है, वह मुझे अभी दिखालो ।१५-१६। व्यासजी बोले कि ऐसे वचन सुनकर नर ने कहा कि यदि तुम्हारा युद्ध करने का विचार है तो आओ मेरे साथ युद्ध करो ।१७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे असुराधन ! मैं तुम्हारा शिर तोड़ दूंगा । यह सुनकर दैत्येन्द्र क्रोधित हो उठे ।८१। उन्होंने मन ही मन निश्चय किया कि जिस किसी भी उपाय से संभव होगा मैं इन दोनों तपस्वियों को जीत लूंगा ।१९। मैं इन दोंनो जितेन्द्रयों को युद्ध में पराजित करूंगा । इस प्रकार कहतेहुए प्रह्लाद ने हाथ में धनुष ग्रहण किया ।२०। उन्होंने धनुष की प्रत्यंचा खींच कर टंकार की । महर्षि नर ने भी धनुष ग्रहण करने क्रोध-पूर्वक प्रह्लाद पर अनेक तीक्ष्ण वाणों की वर्षा की ।२१-२२।

तान्दैत्यराजस्तपनीयपुंखैश्च बाणैस्तरसा समेत्य ।
समीक्ष्य छिन्नांश्च नरः स्वसृष्टानन्यान्मुमोचाशु रुषान्वितोवै ।२३
दैत्याधिपस्तानपि तीव्रवेगैश्छित्वा जघानोरसि तं मुनींद्रम् ।
नरोऽपि तं पंचभिराशुगैश्च क्रुद्धोऽहनत्तूदैत्यपतिं बाहुवेशे ।२४
सेन्द्राः सुरास्तत्र तयोर्हि युद्धं द्रष्टुं विमानैर्गगनस्थिताश्च ।
नरस्य वीर्यं युधि संस्थितस्य ते तुष्टुवुर्दैत्यपतेश्च भूयः ।२५
ततो नारायणं बाणैः प्रह्लादश्चातितर्षितैः ।
बवर्ष सुस्थितं वीरं धर्मपुत्रं सनातनम् ।
नारायणोऽपि तं वेगान्मुक्तैर्बाणैः शिलाशितैः ।२६
नारदः पर्वतं प्राह नेदृशं चाभवत्पुरा ।
तारकासुरयोर्द्धं च तथा वृत्रासुरस्य च ।२७
मधुकैटभयोर्युद्धं हरिणा चेदृशं कृतम् ।
प्रह्लादः प्रबलः शूरः यस्मान्नारायणेन च ।२८
करोति सदृशं युद्धं सिद्धैर्नादृभुतकर्मणा ।
दिने दिने तथा रात्रौ कृत्वा पुनः पुनः ।२९

दैत्यराज ने भी अपने बाणों से नर के बांण काट डाले । अपने बाणों को व्यर्थ होते हुए देखकर नर क्षुब्ध हो गये और उन्होंने पुनः बाण-वर्षा की ।२३। प्रह्लाद ने अपने बाणों से उन्हें फिर काट डाला और नर के हृदय में बाण से प्रहार किया । नर ने अपने आशुगति वाले पाँच बाणों से प्रह्लाद के बाण काट डाले और फिर उनके बाहु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रदेश पर प्रहार किया ।२४। इस युद्ध को देखने के लिए इन्द्र सहित सभी देवता अपने विमानों पर बैठ-२ कर आकाश में स्थित हो गये ! वे कभी नर के और कभी प्रह्लाद के पराक्रम और रण-कौशल की प्रशंसा करने लगे ।२५। फिर प्रह्लाद ने सनातन पुरुष नारायण पर अति तीक्ष्ण बाण-वर्षा की और नारायण ने भीषण बाणों के द्वारा प्रह्लाद को बुरी तरह आहत कर दिया ।२६। उस समय महर्षि नारद ने महर्षि पवत में कहा कि ऐसा घोर संग्राम तो तारकासुर या वृत्रासुर का भी नहीं हुआ था ।२७। भगवान विष्णु और मधुकैटभ का युद्ध भी इसकी तुलना नहीं कर सकता । प्रह्लाद महाबली और वीर है जो नारायण का सामना कर रहे हैं । हे राजन् इस प्रकार वे तपस्वी और दैत्य घोरतम संग्राम में निमग्न रहे ।२८-२९

नारायणस्तु चिच्छेद विशिशिखैराशु कोपितः ।
छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रः परिघं तु समाददे ।३०
जघान धर्मजं तूणे वाह्वोर्मध्येऽतिकोपनः ।
तमायांतं स बलवान्मार्गणनवभिर्मुनिः ।३१
चिच्छेद परिघं घोरं दशधिस्तमताडयत् ।
गदामानीय दैत्येन्द्रः सर्वायसमयीं दृढाम् ।३२
जानुदेशे जघानाशु देवं नारायणं रुषा ।
गदया चापि गिरिवत्संस्थितः स्थिर मानसः ।३३
धर्मपुत्रोऽतिबलवान्मुमोचाशु शिलीमुखान् ।
गदां चिच्छेद भगवांस्तदा दैत्यपतेर्दृढाम् ।३४
विस्मयं परमं जग्मु प्रेक्षका गगने स्थिताः ।
स तु शक्तिं समादाय प्रह्लादः परवीरहा ।३५
चिक्षेप तरसा क्रुद्धो बलान्नारायणोरसि ।
तामापतंतीं संवीक्ष्य बाणनकेन लीलया ।३६
सप्तधा कुतवानाशु सप्तभिस्तं जघान ह ।
दिव्यवर्षसहस्रं तु ददृशुः परमं तयोः ।३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्यन्त क्रोधित हुए नारायण ने शीघ्रता से दैत्यराज के धनुष को अपने बाण से काट डाला, यह देखकर उन्होंने अपना परिध ग्रहण किया और अत्यन्त क्रोध करके .ारायण की भुजा पर मारा। नारायण ने उसे ज्योंही अपनी ओर आते देखा त्योंही मार्ग में काट दिया और फिर दश बाण प्रह्लाद पर और छोड़े । तदन्तर दैत्यराज ने परिध उठाकर नारायण की जंघा पर प्रहार किया, तो भी नारायण पर्वत के समान अविचल भाव से खड़े रहे ।३०-३३। फिर उन महा— बली धर्म पुत्र ने अनेक बाणों के प्रहार से प्रह्लाद की गदा भी नष्ट कर दी ।३४। तभी दैत्यराज ने अपनी शक्ति ग्रहण की उस शक्ति को उन्होंने अत्यन्त वेग से नारायण पर चलाया नारायण ने एक ही बाण से सात टुकड़े कर दिये और फिर बाणों से प्रह्लाद पर प्रहार किया ।३५-३७।

जातं विस्मयदं राजन्सर्वेषां तत्र चाश्रमे ।
तदाऽऽजगाम तरसा पीतवासाश्चतुर्भुजः ।३८
प्रहलादस्याश्रमं तत्र जगाद च गदाधरः ।
चतुर्भुजो रमांकातो रथाङ्गदरपद्मभृत् ।३९
दृष्ट्वा तमागतं तत्र हिरण्यकशिपोः सुतः ।
प्रणम्य परया भक्तया प्रांजलिः प्रत्युवाच ह ।४०
देवदेव जगन्नाथ भक्तवत्सल माधवः ।
कथं न जितवानाजावहर्मतौ तपस्विनौ ।
संग्रामस्तु मया देव कृतः पूर्ण शत समः ।४१
सिद्धाविमौ मदंशौ च विस्मयः कोऽत्र मारिष
तापसौ न जितात्मनौ नरनारायणौ ।४२
गच्छ त्वं वितलं राजन्कुरु भक्तिं समाचलाम् ।
नाम्यां कुरु विरोधं त्वं तापसाभ्यां महामते ।४३
इत्याज्ञप्तो दैत्यराजो निर्ययावसुयैः सह ।
नरनारायणौ भूयस्तपोयुक्तौ बभूवतुः ।४४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन् ! उस आश्रम में चलने वाले संग्राम ने सबको विस्मय में डाल दिया। तभी पीत वसन धारी, चतुर्भुजी गदाधर भगवान् विष्णु उस उस आश्रम में प्रह्लाद के समीप प्रकट हुए। उन लक्ष्मीकान्त की चारों भुजाओं में शंख, चक्र, गदा पद्म सुसज्जित थे ।३८-३९। जैसे ही प्रह्लाद ने उन्हें देखा वैसे ही उन्होंने भगवान् को श्रद्धा सहित प्रणाम किया और हाथ जोडकर कहने लगे हे देव देव ! हे भक्तवत्सल! हे माधव ! मैंने इन दोनों तपस्वियों के साथ सौ दिव्य वर्षों तक घोर संग्राम किया, फिर भी इन पर विजय नहीं पा सका ।४०-४१। इस पर भगवान बोले—हे भक्तवर ! यह दोनों सिद्ध पुरुष मेरे ही अंश से अवतरित हुए हैं, तब इनके पराजित न होने में आश्चर्य ही क्या है। यह तपस्वी नर-नारायण जितेन्द्रिय होने से नहीं जीते जा सके ।४२। हे राजन् ! अब तुम अपने वितल लोक को प्रस्थान करो और वहाँ मेरी अविचल भक्ति करो। हे महामते ! इन तपस्वियों से विरोध मत करो ।४३। भगवान् विष्णु का उस प्रकार आदेश मिलने पर दैत्यराज प्रह्लाद असुरों के सहित वहाँ से चल दिये और-नारायण अपनी तपस्या में पुनः लीन हो गये ।४४।

शुक्राचार्य की माता का वध

सन्देहोऽयं महानत्र पाराशर्य कथानके।
नर नारायणौशांतौ वैष्णवांशौ तपोधनौ ।१
तीर्थाश्रियौ सत्ययुक्तौ वन्याशनपरौ सदा।
धर्मपुत्रौ महात्मानौ तापसौ सत्यसंस्थितौ ।२
कथं रागसमायुक्तौ जातौ युद्धे परस्परम्।
संग्राम चक्रतु कस्मात्यक्त्वा तपिमनुत्तमाम् ।३
कि फलं तस्य युद्धस्य मुनेः पुण्यविनाशनम्।
राजन्संसारमूलं हि विविधं परिकीर्तितम्।४
अहंकारस्तुसर्वज्ञैर्मुनिभिश्चये ।
स कथं मुनिना त्यक्तुं योग्यो देहभृतां किल ।५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येनेदं रचितं विश्वं कथं तद्रहितं भवेत् ।
ब्रह्मा रुद्रस्तथा विष्णुरहंकारयुतास्त्वमी ।६
विततेऽस्मिंस्तु संसारे उत्तमाधमयोनिषु ।
नारायण हरिः साक्षान्मात्स्यं वपुराश्रितम् ।७

जनमेजय बोले हे ब्रह्मन ! इस कथा को सुनकर मैं अत्यन्त विस्मित हुं । नर नारायण भगवान विष्णु के अंश से अवतीर्ण पूर्ण तपस्वी थे ।१। वे सत्वगुणी तीर्थ में रहकर वन के कन्दमूल का आहार करते थे ।२। फिर वे ऐसे हो गये कि सर्व श्रेष्ठ तप को छोड़कर युद्ध में तत्पर हो गये ? ।३। उन युद्धमें उन्हें कौन सो उपलब्धि हुई । तपसे संचित हुआ समस्त पुण्य नष्ट कर बैठे । इस पर व्यासजी ने कहा हे राजन् ! इस अहंकार के तीन भेद कहे गये हैं ।४। सर्वज्ञ मुनिजन सात्विक, राजसी और तामसी अहंकारको सृष्टिका प्रमुख कारण मानते हैं तब वे देहों में अवस्थित हुए मुनि ही अहंकार को कैसे छोड़ पाते । अब अहंकार से ही जगत् उत्पन्न होता है, तब अहंकार रहित कैसे रहेगा । इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी अहंकार से युक्त रहते हैं ।५-६। इस विशाल विश्वमें विद्यमान श्रेष्ठ और अधम सभी योनियोंमें भगवान विष्णु को असंख्य अवतार धारण करने पड़े यहाँ तक कि उन्हें मछली की योनि में भी अवतरित होना पड़े ।७।

कामठं सौकरं चैव नारसिंहं च वामनम् ।
युगे युगे जगन्नाथो बासुदेवो जनार्दनः ।८
अवतारानसख्यातान्करोति विधियन्त्रितः ।
वैवस्वते महाराज सप्तमे भगवान्हरिः ।९
मन्वन्तरेऽवतारान्ते चक्रे तांछृणु तत्वतः ।
भृगुशापान्महाराज विष्णुदेववर प्रभुः ।१०
अवतारानने कांस्तु कृतवानखिलेश्वरः ।
शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि भृगोः शापस्य कारणम् ।११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरा कश्यपदायदो हिरण्यकशिपुर्नृपः ।
यदा तदा सुरैः सार्धं कृतं संख्यं परस्परम् ।१२
कृते संख्ये जगत्सर्वं व्याकुलं समजायत ।
हते तस्मिन्नृपे राजा प्रह्लादः समजायत ।१३
देवान्स पीडयामास प्रह्लादः शत्रुकर्षणः ।
संग्रामो ह्यभवद्घोरः शक्रप्रह्लादयोस्तदा ।१४

कच्छुआ शूकर, नृसिंह, वामन आदि रूपों में उन्होंने बहुतेरे अवतार धारण किये। इस प्रकार उन जगन्नाथ, वासुदेव, जनार्दन भगवान् को युग-युग में अवतार लेने पड़ते हैं। उन्होंने सातवें वैवस्वत मन्वन्तर में असंख्य अवतार धारण किये थे। उस समय महर्षि भृगु के शाप से भी उन्हें बहुत से अवतार लेने पड़े। अब हे राजन् भृगु के शाप का कारण बताता हूँ, उसे सुनो।८-११। पूर्वकाल की बात है कि हिरण्यकशिपु ने देवताओं के साथ घोर संग्राम किया था।१२। उस संग्राम से सम्पूर्ण विश्व व्याकुल हो गया, फिर जब हिरण्यकशिपु का वध हो गया, तब प्रह्लाद राजा हुए।१३। फिर प्रह्लाद भी देवताओं का उत्पीडन करने लगे। इसलिए देवराज इन्द्र और इनके मध्य भयंकर युद्ध हुआ।१४।

पूर्णं वर्षशतं रजंल्लोकविस्मयकारकम् ।
देवैर्युद्धं कृतं चोग्रं प्रह्लादस्तु पराजितः ।१५
निर्वेदं प्राप्तो ज्ञानो ज्ञात्वा धर्मं सनातनम् ।
विरोचनसुतं राज्यं प्रतिष्ठाप्य बलिं नृप ।१६
जगाम स तपस्तप्तुं पर्वते गंधमादने ।
प्राप्य राज्य बलिः श्रीमान्सुरैर्वैर चकार ह ।१७
ततः परस्पर युद्धं जातं परमदारुणम् ।
ततः सुरैर्जिता दैत्या इन्द्रेणामिततेजसा ।१८
विष्णुना च सहाय्येन राज्यंभ्रष्टाः कृता नृप ।
ततः पराजिता दैत्याः काव्यस्य शरणं गताः ।१९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यावदहं मन्त्रविद्यामानयिष्यामि शंकरात् ।
तावद्भवद्भिः स्थातव्यं तपोयुक्तैः शमान्वितैः ।२०
प्राप्य मंत्रान्महादेवादागमिष्यमि दानवाः ।
युध्यामहे पुनर्देवान्मन्त्रमास्थाय वै बलम् ।२१

तब देवताओं ने पूरे सौ वर्ष तक जगत् को विस्मयमें डालने वाला घोर युद्ध किया, जिसके द्वारा प्रह्लाद पराजित हो गये ।१५। उस युद्ध से संसार काँप गया और पराजय से दुःखित प्रह्लाद ने बलि को राज्य देकर गन्धमादन पर्वत का मार्ग लिया । राजा होकर बलि भी देवताओं से बैर करने लगे ।१६-१७। इस कारण देवताओं और दैत्यों में पुनः भीषण युद्ध हुआ, जिससे महा तेजस्वी इन्द्र की विजय हुई ।१८। इस प्रकार भगवान् विष्णु की सहायता से देवताओं द्वारा राजभ्रष्ट हुए दैत्य शुक्राचार्य की शरण में गये ।१९। इस पर शुक्राचार्य बोले कि जब तक मैं भगवान् शंकर से मन्त्र विद्या लेकर यहाँ न आऊँ तब तक तुम शान्त तपस्वियों के समान आचरण करो, फिर उसी मन्त्र की शक्ति से समर्थ होकर तुम पुनः देवताओं से युद्ध करना ।२०-२१।

इत्युक्तवाऽथ भृगुस्तेभ्यो जगाम कृतनिश्चयः ।
महादेव महाराज मंत्रार्थं मुनिशत्तमः ।२२
दानवाः प्रेषयामासुः प्रह्लाद सुरसन्निधौ ।
सत्यवादिनमव्ययग्रं सुराणां प्रत्ययप्रदम् ।२३
प्रह्लादस्तु सुरान्प्राह प्रश्रयावनतो नृपः ।
असुरैः सहितस्तत्र वचनं नम्रतायुतम् ।२४
न्यस्तशस्त्रा वयं सर्वे निःसन्नाहास्तथैव च ।
देवास्तपश्चरिष्यामः संवृता वल्कलैर्युताः ।२५
प्रह्लादस्य वचः श्रुत्वा सत्याभिव्याहृतं तु तत् ।
ततो देवा न्यवर्तन्त विज्वरा मुदिताश्च ते ।२६
काव्यो गत्वाऽथ कैलासं महादेवं प्रणम्य च ।
उवाच विभुना पृष्टः किं ते कार्यमिति प्रभुः ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्त्रामिच्छाम्यहं देव ये न संति बृहस्पतौ ।
पराजयाय देवानामसुराणां विजयाय च ।२८

हे राजन् ! ऐसा कहकर मुनीश्वर शुक्राचार्य भगवान् शंकर से मन्त्र प्राप्ति का निश्चय कर कैलाश पर्वत पर गये ।२२। तब दैत्यों ने सत्यवादी प्रह्लाद को देवताओं से सन्धि करने के लिए इन्द्र के पास भेजा ।२३। कुछ दैत्यों सहित प्रह्लाद ने वहाँ जाकर विनीत भाव से कहा कि हमने शस्त्रों का त्याग कर दिया है अब हम युद्ध सामग्री से हीन हैं इसलिए वल्कल वस्त्र धारण कर वन में तपस्या करेंगे ।२४-२५ प्रह्लाद के वचन सुनकर देवताओं ने उस पर विश्वास कर लिया और उन्होंने युद्ध बन्द कर दिया ।२६। उधर कैलाश पर पहुँच कर शुक्राचार्यजी ने भगवान् शिव को प्रणाम किया, तब उन्होंने उनके वहाँ आने का कारण पूछा ।२७। इस पर शुक्राचार्य बोले—हे देव ! मेरी इच्छा उन मन्त्रों को जानने की है जिन्हें बृहस्पति भी न जानते हों । क्योंकि मैं देवताओं की हार और दैत्यों की जीत का अभिलाषी हूँ ।२८।

पूर्णं वर्षसहस्रं तु कर्णधूममवाक्छिराः ।
यदि पास्यसि भद्रं ते ततो मंत्रानवाप्स्यसि ।२९
इत्यक्तोऽसौ प्रणम्येश बाढमित्यब्रवीद्वचः ।
व्रतं चराम्यहं देव त्वयाऽऽज्ञप्तः सुरेश्वरः ।३०
इत्युक्त्वा शंकरं काव्यश्चकार व्रतमुत्तमम् ।
धूमपानरतः शांतो मन्त्रार्थं कृतनिश्चयः ।३१
ततो देवाः परिज्ञात्य काव्यं व्रतरतं तदा ।
दैत्यान्दम्भरतांश्चैव बभूवुर्मंत्रतत्परः ।३२
विचार्य मनसा सर्वं संग्रामायोद्यता नृप ।
ययुर्धृतायुधास्तत्र यत्र ते दानवोत्तमाः ।३३
तानागतान्समीक्ष्याथ सायंधान्दं शितांस्तथा ।
आसस्ते भयसंविग्ना दैत्या देवान्समंततः ।३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरणं दानवा जग्मुर्भीतास्ते काव्यमातरम् ।
दृष्ट्वा तानतिसंतप्तानभयं च ददावथ ।३५

भगवान् शंकर बोले—यदि आप एक हजार वर्ष तक शीर्षासन सहित कण-धूम्रका सेवन करें तो आपको उस मन्त्रकी प्राप्ति हो सकती है ।२९। शुक्राचार्य ने कहा कि हे देव ! आपके आदेशानुसार ही व्रत करूँगा और वे मन्त्र की सिद्धि के लिये शान्त भाव से शिर नीचे और पांव ऊपर करके कण का धुँआ पीने लगे ।३०-३१। उधर देवताओं को शुक्राचार्य के व्रत से दैत्यों के बनावटी तपस्वी होने का ज्ञान हो गया और वे विचार करके शस्त्रास्त्र धारण पूर्वक युद्ध के लिए तत्पर हुए और दैत्यों पर चढ़ाई करदी ।३२-३३। तब देवताओं की शस्त्रास्त्र से सुसज्जित हुए आगे देखकर दैत्यगण भय से संतृप्त हो उठे ।३४। फिर वे भयभीत दैत्य वहाँ मे भागकर शुक्राचार्य की माता की शरण में गये और उनको संतप्त देखकर उसने अभय प्रदान किया ।३५।

देवास्तान्विद्रुतान्वीक्ष्य दानवास्ते पदानुगाः ।
अभिजग्मुः प्रसह्यैतानविचार्य बलाबलम् ।३६
तत्रागताः सुराः सर्वे हन्तुं दैत्याः समुद्यताः ।
वारिताः काव्यमात्राऽपि जघ्नुस्तानाश्रमस्थितान् ।३७
हन्यमानान्सुरैर्दृष्ट्वा काव्यमाताऽतिवेपिता ।
उवाच सर्वान्निद्रांस्तपसा वै करोम्यहम् ।३८
इत्युक्त्वा प्रेरिता निद्रा तानागत्य पपात च ।
सेन्द्रा निद्रावशं याता देवा भूकवदास्थितः ।३९
इन्द्रं निद्रा जितं दृष्ट्वा दीन विष्णुरभाषत ।
मा त्वं प्रविश भद्रं ते नये त्वां च सुरोत्तम ।४०

इधर देवताओं ने दैत्यों को भागता हुआ देखकर उनका पीछा किया । उन्होंने शत्रु के बलाबल का अनुमान भी नहीं किया ।३६। वहां जाकर देवगण दैत्यों को मारने के लिये तत्पर हुए, तो शुक्राचार्य की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माता द्वारा रोके जाने पर भी वे नहीं माने ।३७। दैत्यों का संहार होता हुआ देखकर क्रोध से काँपती हुई शुक्र-जननी ने कहा कि मैं तुम्हें तपोबल से निद्रित किये देती हूँ और उसने देवताओं को सुला दिया, तब वे सभी मूक के समान हो गये ।३८-३९। उन्हें देखकर विष्णु ने उनसे कहा कि हे सुरश्रेष्ठ ! तुम मेरे शरीर में प्रविष्ट हो जाओ ।४०।

एवमुक्तस्ततो विष्णुं प्रविवेश पुरन्दरः ।
निर्भयो गतनिद्राश्च बभूव हरिरक्षितः ।४१
रक्षितं हरिणा दृष्ट्वा शक्रं तत्र गतव्यथम् ।
काव्यमाता ततः क्रुद्धा वचनं चेदमब्रवीत् ।४२
मघवंस्त्वां भक्षयामि सविष्णुं वै ततोबलात् ।
पश्यतां सर्वदेवानामीदृशं मे तपोबलम् ।४३
स्मृतमात्रं तु संप्राप्तं चक्रं विष्णुवंशानुगम् ।
दधार च करे क्रुद्धो वधार्थं शक्रोतोदितः ।४४
गृहीत्वा तत्परे चक्रं शिरश्चिच्छेद रंहसा ।
हतां दृष्ट्वा तु तां शक्रो मुनितश्चाभवत्तदा ।४५
देवाश्चातींव सन्तुष्टा हरिं जय जयेति च ।
तुष्टुबुर्मुमिताः सर्वे संजाता विगतज्वराः ।४६

यह सुनकर इन्द्र विष्णु भगवान् के देह में प्रविष्ट होकर रक्षितहोने पर निन्द्रा-रहित एवं भय रहित हो गये ।४१। इन्द्र को भगवानके द्वारा रक्षित हुआ देखकर शुक्र-माता ने क्रोध पूर्वक कहा कि हे इन्द्र ! अब मैं सब देवताओं के देखते-देखते तुम्हें विष्णु सहित भक्षणकर लूँगी, मेरे तपोबल में ऐसा सामर्थ्य है ।४२-४३। तब भगवान् विष्णु के स्मरण करते ही उनके वश में रहने वाला सुदर्शन चक्र आ गया ।४४। फिर उन्होंने तत्काल ही उसका शिर काट डाला और उसे मृत देखकर इन्द्र को प्रसन्नता हुई ।४५। सभी देवता सन्तुष्ट होकर भगवान् विष्णु की जय बोलने और स्तुति करने लगे, क्योंकि इस समय उनका सम्पूर्ण भय दूर हो गया ।४६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णु का भृगु शाप

तं दृष्ट्वा तु वधं घोरं चुकोप भगवान्भृगुः ।
वेपमानोऽतिदुःखार्तः प्रोवाच मधुसूदनम् ।१
अकृत्यं ते कृत विष्णो जानन्पापं महामते ।
वधोऽयं विप्रजायाया मनसा कर्तुमक्षमः ।२

आख्यातस्त्वं सत्वगुणः स्मृतो ब्रह्मा च राजसः ।
तथाऽसौ तामसः शंभुविपरीतं कथं स्मृतम् ।३
शपामि त्वां दुराचरं किमन्यत्प्रकरोमि ते ।
विधुरोऽहं कृतः पाप त्वयाऽहंशक्रकारणात् ।४

अवतारा मृत्युलोके संतु मच्छापसंभवाः ।
प्रायो गर्भं भवं दुःखं भुक्ष्व पापाज्जनार्दन ।५
इति शप्त्वा हरिं रोषात्तदादाय शिरस्त्वरन् ।
काये संयोज्य तरसा भृगुः प्रोवाच कार्यवित् ।६
अद्य त्वां विष्णुना देवि हतां संजीवयाम्यहम् ।
यदि कृत्स्नो मया धर्मो ज्ञायते चरितोऽपि वा ।७
तेन सत्येन जीवेत यदि सत्यं ब्रवोक्ष्यहम् ।
पश्यंतु देवताः सर्वाः मम तेजोबलं महत् ।८

व्यासजी बोले—हे राजन् ! उस भयंकर स्त्री-हत्या को देखकर महर्षि भृगु अत्यन्त कुपित हुए, उन्होंने दुःख से काँपते हुए भगवान् विष्णु से कहा—।१। हे महामते ! तुमने जान बूझकर ही यह अकर्म किया है ।२। आप सत्वगुणी, ब्रह्मा रजोगुणी और शंकर तमोगुणी हैं, फिर अपने गुण के विपरीत यह जघन्य कार्य कैसे कर डाला ।३। आप जैसे दुराचारी को शाप देना उचित है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय इसके प्रतिकार का नहीं है, तुमने इन्द्र के कारण ही मुझे विधुर बना डाला ।४। मेरे शाप से तुम्हें मर्त्यलोक में अनेक जन्म धारण करने होंगे । इस महापाप के कारण तुम्हें गर्भवास की यन्त्रणायें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारम्बार भोगनी होगीं ।५। इस प्रकार शाप देकर महर्षि भृगु तुरन्त अपनी पत्नी के शिर को धड़ को मिलाते हुए बोले ।६। हे देवि ! विष्णु द्वारा हिंसत हुई तुम्हें मैं पुनर्जीवित किए देता हूँ । यदि मैं भले प्रकार से धर्मतत्व को जानता हूँ और उसका आचरण करता रहा हूँ और यदि मैं सत्यभाषी रहा हूँ तो तुम मेरे उसी सत्य के बल से जीवित हो जाओ, जिससे यह सभी देवता मेरे तेज के महान बल को देख सकें ।७-८।

अद्भिः संप्रोक्षिता देवी सद्यः संजीविता तदा ।
उत्थिता परमप्रीता भृगोर्भार्या शुचिस्मिता ।९
एवं संजीविता तेन भृगुणा वरवर्णिनी ।
विस्मयं परमं जग्मुर्देवाः सूद्रा त्रिलोक्य तत् ।१०
इन्द्रः सुरानथोवाच मुनिना जीविता सती ।
काव्यस्तप्त्वा तपो घोरं किं करिष्यति तन्त्रवित् ।११
विमृश्य मनसा शक्रो जयती स्वसुतां तदा ।
उवाच कन्यां चार्वंगीं स्मितपूर्वमिद वचः ।१२
गच्छ पुत्रि मया दत्ता काव्याय त्वं तपस्विने ।
समाराधय तन्वंगि मत्कृते तं वशं कुरु ।१३
सा पितुर्वचनं श्रुत्वा तत्रायच्छन्मनोरमा ।
तमपश्यद्विशालाक्षी पिवत धूममाश्रमे ।१४

यह कहकर महर्षि भृगु ने जैसे अपनी पत्नी पर जल के छींटे दिये, वैसे ही वह जीवित होकर मृदु मुसकान पूर्वक उठ खड़ी हुई ।९। इस प्रकार उस मरी हुई नारी को महर्षि भृगु के द्वारा जीवित की गई देखकर इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवता अत्यन्त विस्मित हुई ।१०। तब इन्द्र ने देवताओं से कहा कि मुनि ने अपनी पत्नी को जीवित कर लिया । जब शुक्राचार्य शिव मन्त्र को सिद्ध करके लौटेंगे तब माता का बध हुआ जानकर हमारी क्या गति करने को तत्पर होंगे ।११। इस प्रकार मन में बिचार करके इन्द्र ने अपनी पुत्री जयन्ती को बुला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर उसने कहा ।१२। हे पुत्री ! तू तपस्वी शुक्राचार्य जी के पास जा और उन्हें मेरे कार्य के लिये अपनी सेवा के द्वारा वशीभूत कर ले ।१३. पिता का वचन सुनकर इन्द्रसुता शुकाचार्य के पास गई । वहाँ उसने उन्हें शीर्षासन लगाये और कण-धूम्र पीते हुए देखा ।१४।

तस्य देहं समालोक्य स्मृत्या वाक्यं पितुस्तदा ।
कदलीदलमादाय वीजयामास तं मुनिम् ।१५
निर्मल शीतलंवारि समानीय सुवासितम् ।
पानाय कल्पयामास भक्त्या परमया लघु ।१६
छायां वस्त्रात्मपत्रेथ भास्करे मध्यगे सति ।
रचयामास तन्वङ्गी स्वयं धर्मे स्थिता सती ।१७
एवं बहूनि वर्षाणि परिचर्यापराऽभवत् ।
निर्विकारा जितक्रोधा ब्रह्मचर्यपरा सती ।१८
पूर्णे वर्षसहस्रे तु परितुष्टो महेश्वरः ।
वरेण छदयामासा काव्य प्रीतमना हरः ।१९
यच्च किं चिदपि ब्रह्मन्वित्तते भृगुनन्दन ।
प्रतिपश्यसि यत्सर्वं यच्च वाच्यं न कस्यचित् ।२०
सर्वाभिवाकत्वेन भविष्यसि न संशयः ।
अवध्याः सर्वभूतानां प्रजेशश्च द्विजोत्तमः ।२१

वह एक कदली पत्र लेकर उन पर हवा करने लगी ।१५। वह उनके पीने के लिए सुगन्धित शीतल जल अत्यन्त भक्ति पूर्वक लाकर रखती ।१६। जब सूर्य आकाश में चढ़कर न सुहाने वाली धूपका ताप छोड़ते तब वह सती उनके ऊपर वस्त्र की छतरी बनाकर छाया करती थी ।१७। इस प्रकार जयन्ती ने बहुत वर्षों तक शुक्राचार्य की सेवा की उस समय उसने क्रोधादि सम्पूर्ण विकारों को जीत लिया और ब्रह्मचर्य का पालन किया ।१८। हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर भगवान् शंकर प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रकट होकर शुक्राचार्य से कहा ।१९। भगवान् शंकर बोले—हे ब्रह्मन् ! हे भृगुपुत्र !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसार में आप जितनी वस्तुएँ विद्यमान देखते हैं और जिन सभी का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।२०। उन सभी के निःसन्देह आप अभिभावक होंगे तथा आप सब प्राणियों द्वारा अवश्य प्रजापति और मन्त्र भक्ति के दाता होंगे ।२१।

एव दत्वा वरांछंभुस्तत्रैवांतरधीयत् ।
काव्यस्तामथ सम्वीक्ष्य जयन्तीं वाक्यमब्रवीत् ।२२
कोऽसि कस्यासि सुश्रोणि ब्रूहि किं ते चिकीर्षितम् ।
किमर्थमिह संप्राप्ता कार्यं वद वरोरु मे ।२३
किं वांछसि करोम्यद्य दुष्करं चेत्सुलोचने ।
प्रीतोऽस्मि स्वकृतेनाद्य वरं वरय सुव्रते ।२४
शक्रस्याहं सुता ब्रह्मन्पित्रा तुभ्यं समर्पिता ।
जयन्ती नामतश्चाहं जयन्तविरजा मुने ।२५
सकामाऽस्मि त्वयि विभो वांछितं कुरु मेऽधुना ।
रंस्ये त्वाया महाभाग धर्मतः प्रीतिपूर्वकम् ।२६
मया सह त्वं सुश्रोणि दश वर्षाणि भामिनि ।
सर्वेभ्यो दुर्दृश्या च रमरवेह यदृछया ।२७
एवमुद्वत्वा गृहं गत्वा जयत्याः पाणिमुद्वहन् ।
वा प्रहावसद्व्या दश वर्षाणि भार्गवः ।२८

इस प्रकार वर देकर भगवान् शंकर अन्तर्धान हो गये। तदनन्तर शुक्राचार्य ने जयन्ती को देखकर उससे कहा ।२२। हे सुश्रोणि ! हे सुजघने ? तुम कौन हो ? किसकी पुत्री हो ? क्या चाहती हो ? ।२३। तुम्हारी क्या कामना है ? यदि वह दुष्कर भी हुई तो मैं उसे अवश्य पूर्ण करूँगा, इसलिए जो चाहो वह वरदान माँग लो ।२४। जयन्ती ने कहा हे भगवान, मैं इन्द्र की पुत्री हूँ। पिता ने मुझे आपकी सेवा में समर्पित कर दिया है, मैं जयन्त की अनुजा जयन्ती कहलाती हूँ ।२५। हे विभो मैं आपकी इच्छा करती हूँ, आप धर्म पूर्वक मुझ से प्रीति करके मेरी इच्छा पूर्ण कर दीजिये ।२६। इस पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुक्राचार्य ने कहा कि तुम सब प्राणियों से अदृश्य रहकर दश वर्ष तक मेरे साथ रहो। उसका पाणि-ग्रहण कर दश वर्ष तक उसके साथ विहार-रत रहे।२७-२८।

दशवर्षात्मके काले संपूर्णसमये तदा।
भयन्त्या सह क्रीडित्वा काव्यो याज्यानचिन्तयत् ।२९
आशया मम मार्गं ते पश्यतः संथिताः किल।
गत्वा तान्वै प्रपश्येऽहं जाज्यामतिभयातुरान् ।३०
मा देवेभ्यो भय तेषां मद्भक्तानां भवेदिति।
संचित्य वृद्धिमास्थाय जयन्तीं प्रत्युवांच ह ।३१
देवानेवोपसंयाति पुत्रा मे चारुलोचने।
समयस्तेऽद्य संपूर्णो जातोऽयं दशवार्षिकः ।३२
तस्माद्गच्छाम्यहं देवि द्रुष्टं याज्यान्सुमध्यमे।
पुनरेवागमिष्यामि तवांतिकमनुद्रुतः ।३३
तथेति तमुवाचाथ जयन्ती धर्मवित्तसा।
यथेष्टं गच्छ धर्मज्ञ न ते धर्म विलोपये ।३४

इस प्रकार शुक्राचार्य को दश वर्ष हो गये, तब उन्हें दैत्यों का स्मरण हुआ।२८। उन्होंने सोचा कि भयभीत दैत्य मेरी प्रतीक्षा करते होंगे। मुझे वहाँ जाकर उन्हें देखना चाहिए।३०। कहीं मेरे भक्त दैत्यों के लिए देवताओं द्वारा कोई संकट तो उत्पन्न नहीं कर दिया गया। यह सोचकर उन्होंने निश्चय पूर्वक जयन्ती से कहा।३१। हे सुन्दर नेत्रों वाली प्रिये! मेरे पुत्र के समान प्रिय दैत्यगण देवताओं के अधीन होते जा रहे हैं और साथ ही अब हमारे वचनानुसार दश वर्ष भी पूर्ण हो गये हैं।३२। इसलिए हे देवि, मैं अपने यजमानों को देखने के लिए जा रहा हूँ, उनसे भेंट करके मैं शीघ्र ही यहाँ लौट जाऊँगा।३३। तब पति-व्रत धर्म को जानने वाली जयन्ती ने कहा—हे धर्मज्ञ, यदि ऐसी इच्छा है तो जाइए, आपका धर्म नष्ट हो, यह मेरा अभीष्ट नहीं है।३४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तछ्रुत्वा वचनं काव्यो जगामत्वरितस्ततः ।
अपश्यद्दानवानां स पार्श्वे वाचस्पतिं तदा ।३५
छद्मरूपधर शौम्यं बोधयन्तं छलेन तान् ।
जैनं धर्मं कृत स्वेन यज्ञनिन्दापरं तथा ।३६
भो देवपरिपबः सत्यं ब्रवीमि भवतां हितम् ।
अहिंसा परमो धर्मोऽहंतव्या ह्याततायिनः ।३७
एवं विधानि वाक्यानि वेदशास्त्रपराणि च ।
ब्रुवाण गुरुमाकर्ण्य विस्मितोऽसौ भृगोः सुतः ।३८
चिन्तयामास मनसा मम द्वेष्यो गुरुः किलः ।
वंचिताः किल धूर्तेन याज्या मे नात्र संशयः ।३९

जयन्ती के वचन सुनकर शुक्राचार्य वहाँ से चल दिए और दैत्यों के पास पहुंचकर देखते हैं कि उनके पास बृहस्पति बैठें हैं ।३५। वहाँ वे शुक्राचार्य का छद्म वेश धारण किए दैत्यों को स्वरचित जैनधर्म की शिक्षा दे रहे हैं । उस समय यज्ञ की निन्दा करते हुए उससे कह रहे थे ।३६। हे देवताओं के शत्रुओं, मैं तुम्हारे हित की सत्य बात कहता हूँ अहिंसा परम धर्म है इसलिए आततताइयों को भी न मारे ।३७। इस तरह वेद शास्त्र सम्मत वचन कहकर समझाते हुए बृहस्पति को देखकर शुक्राचार्य को अत्यन्त विस्मय हुआ ।३८। और यह विचार करने लगे कि मेरे बैरी धूर्त देवगुरु ने मेरे यजमानों को अवश्य ही भुलावे में डाल दिया है ।३९।

दैत्यों की पराजय

इति संचिन्त्य मनसा तानुवाच हसन्निव ।
वंचिता मत्स्वरूपेण दैत्याः किं गुरुणा किल ।१
अहं काव्यो गुरुश्चायं देवकार्यप्रसाधकः ।
अनेन वंचिता यूयं मद्याज्या नात्र संशयः ।२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काव्येन बहुधा तत्र बोधिताः किल दानवः ।
बुबुधुर्न गुरोर्मायामोहिताः कालपर्ययात् ।३
एवं ते निश्चयं कृत्वा ततो भार्गवमब्रुन् ।
अयं गुरुर्नो धर्मात्मा बुद्धिदश्च हिते रतः ।४
दश वर्षाणि सततमयं नः शास्ति भार्गवः ।
गच्छ त्वं कुहको भासि नास्माकं गुरुरप्युत ।५
काव्यस्तु तन्मयान्दृष्ट्वा चुकोपाथ शशाप च ।
दैत्यान्विबोधितान्मत्वा गुरुणा चातिवञ्चितान् ।६
यस्मान्मया बोधिता वै गृह्णीयुर्न च मे वचः ।
तस्मान्प्रनष्टसंज्ञा वै पराभवमवाप्स्यथ ।७

व्यास जी बोले कि शुक्राचार्य ने यह सोचकर दैत्यों से हंसते हुए कहा कि हे दैत्य ! मेरा रूप बनाकर आये हुए देवगुरु वृहस्पति की बातों में आ गये क्या ? यह मेरा छद्मरूप धारण किये वृहस्पति है, इसने तुमको ठग लिया है ।१-२। इसलिए उनको शुक्राचार्यने बहुत समझाया किन्तु दैत्यगण काल के वशीभूत होकर वृहस्पति की माया में ऐसे मोहित हो गये थे कि उनकी बात सत्य नहीं मानी ।३। सब दैत्यों ने इस प्रकार निश्चय पूर्वक कहा हमारे गुरु तो यही हैं, यह धर्मात्मा सदैव हमारा हित-चिन्तन करते रहते हैं ।४। यह भृगु पुत्र हमे दस वर्षों से शिक्षित कर रहे हैं । तुम हमारे गुरू नहीं हो, अतः यहाँ से चले जाओ ।५। दैत्यों को इस प्रकार देवगुरु के प्रति तन्मय देखकर और यह समझकर कि दैत्यगण इसके अनुयायी हो गये हैं, उन्होंने कुपित होकर शाप दे दिया ।६। अरे मूर्खों अनेक बार समझाने पर भी तुमने मेरा वचन सत्य नहीं माना इसलिए तुम संज्ञाशून्य और पराधीन हो जाओगे ।७।

ततः शप्तान् गुर्ज्ञात्वा दैत्यांस्तान्भार्गवेण हि ।
जगाम तरमा त्यक्त्वा स्वरूपं स्वं विधाय च ।८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत्वोवाच तदा शक्रं कृतं कार्यमया ध्रुवम् ।
शप्ताः शुक्रेण ते दैत्या त्यक्ता पुनः खिल ।९
इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं मघवा मुदमाप्तवान् ।
जहृषुश्च सुराः सर्वे प्रतिपुज्य बृहस्पतिम् ।१०
संग्रामाय मतिं चक्रुः सुविचार्य मिथः तुनः ।
निर्ययुर्मिलिताः सर्वे दानवाभिमुखाः सुराः ।११
सुरान्समुद्यमांज्ञात्वा कृतोद्योगान्महाबलान् ।
अन्तर्सितं गुरुं चैव बभूवुश्चिन्तयान्विताः ।१२
परस्परमथोचुस्ते मोहितास्तस्य मायया ।
संप्रासाद्यो महात्मा च यामोऽसौ रुष्टमानसः ।१३
इति सञ्चिन्त्य ते सर्वे मिलिता भयङ्कर्षिता ।
प्रह्लादं पुरतः कृत्वा जग्मुस्ते मार्गगं पुनः ।१४

देवगुरु बृहस्पति को जैसे ही यह विदित हुआ कि दैत्यों को शुक्राचार्य ने शाप दिया है वैसे ही यह अपना यथार्थ रूप धारण कर वहाँ से चलते बने ।८। और देवराज इन्द्र के पास जाकर बोले कि मैंने आपका कार्य सिद्ध कर दिया । उन्हें शुकाचार्य ने शाप दे दिया तब मैं भी उन्हें छोड़कर यहाँ आ गया ।९। गुरु के यह वचन सुनकर सभी उपस्थित देवताओं सहित इन्द्र अत्यन्त हर्षित हुए और बृहस्पति जी का पूजन किया ।१०। फिर सब ने मिलकर युद्ध-विषयक मन्त्रणा की ।११। उधर दैत्यों ने देखा कि बल से सम्पन्न देवगणों ने आक्रमण कर किया है, ब्रह्मवेशी बृहस्पति भी लोप हो गया है तब उन्हें बड़ी चिन्ता हुई ।१२। बृहस्पति की माया में ठगे दैत्य परस्पर विचार करने लगे कि हम अवश्य ही देवगुरु के धोके में पड़ गये और इसलिए शुक्राचार्य ने हमें त्याग दिया और जिस प्रकार हो सके, उन्हें मनाया जाय । ।१३। इस प्रकार निश्चय करके दैत्यों ने प्रह्लाद को अग्रगण्य बनाया और भय काँपते हुए शुक्राचार्य के पास पहुँचे ।१४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भार्गवाद्य समायातान्याज्यानस्मांस्तथाऽऽत्तुरान् ।
त्यक्तु नार्हसि सर्वज्ञ त्वद्धितांस्तनयान्हि नः ।१५

गते त्वयि तु मन्त्रार्थं शैलूषेण दुरात्मना ।
त्वद्वेषमधुरालापैर्वयं तेन प्रवंचिताः ।१६
अज्ञानकृतदोषेण न व कुप्यति शांतिमान् ।
सर्वज्ञस्त्वं विजानासि चित्तं नः प्रवणं त्वयि ।१७

क्रोधश्चांडालरूपा वै त्यक्तव्यः सर्वथा बुधैः ।
तस्माद्दोषं परित्यज्य प्रसादं कुरु सुव्रत ।१८

यदि न त्यजसि क्रोधं त्यजस्यस्मान्सुदुःखितान् ।
त्वया त्यक्ता महाभाग गमिष्यामो रसातलम् ।१९

प्रह्लादस्य वचः श्रुत्वा भार्गवो ज्ञानचक्षुषा ।
विलोक्य सुमना भूत्वा तानुवाच हसन्निव ।२०

न भेतव्य न गंतव्यं दानवा वा रसातलम् ।
रक्षयिष्यामि वो यास्यान्मत्रैरवितथैः किल ।२१

अवश्यं भाविनो भावाः प्रभवन्ति शुभाशुभाः ।
दैवं न चान्यथाकर्तुं क्षमः कोऽपि धरातले ।२२

अद्य मंदबला यूयं कालयोगादसंशयम् ।
देवैर्जिताः सकृच्चापि पातालं प्रतिपत्स्यथ ।२३

प्रह्लाद ने कहा—हे भार्गव हम आपके यजमान आपकी सेवा में आए हैं। हे सर्वज्ञ ! आप हमारा त्याग मत करिए ।१५। आपके यहाँ से चले जाने पर छद्मवेशी बृहस्पति ने आपका रूप बनाकर मीठी बातों द्वारा हमको ठग लिया था ।१६। शान्ति-प्रेमी अनजान में किए हुए अपराध पर क्रोध नहीं करते हैं ।१७। हे सुव्रत आप जैसे ज्ञानियों को क्रोध त्याग देना चाहिए। इसलिए आप क्रोध को छोड़कर हम पर प्रसन्न हो जाएँ ।१८। यदि हमारा त्यागकर देंगे तो हम रसातलमें चले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायेंगे ।१९। प्रह्लाद के वचन सुनकर शुक्राचार्य ने उनका भविष्य ज्ञान-चक्षुओं में देखकर मुस्कराते हुए कहा ।२०। हे दैत्यों ! तुम भय त्याग दो, रसातल को मत जाओ, तुम हमारे यजमान हो, इसलिए मैं तुम्हारी रक्षा अवश्य करूँगा ।२१। शुभ या अशुभ भवितव्य होकर ही रहता है । इस धरातल पर ऐसा सामर्थ्यवान् कौन हैं जो अन्यथा कर सके ? इसमें सन्देह नहीं कि तुम काल के अधीन होकर बलहीन हो गए हो इसी कारण तुम्हें एक वार देवताओं के द्वारा पराजित होकर पाताल लोक में जाना होगा ।२२-२३।

देवता, दैत्यों द्वारा देवी का स्मरण

इति तस्य वचः श्रुत्वा भार्गवस्य महात्मनः ।
प्रह्लादस्तु सुसंहृष्टो वभूव नृपनन्दन ।१
ज्ञात्वा दैवं वलिष्ठं च प्रह्लादस्तानुवाच ह ।
कृतेऽपि युद्धे न जयो भविष्यति कदाचन ।२
तदा ते जयिनः प्रोचुर्दानवा मद गर्विताः ।
संग्रामस्तु प्रकर्तव्यो दैवं कि न विदामहे ।३

निरुद्यमानां दैवं हि प्रधानमसुराधिप ।
केन दृष्टं क्व वा दृष्टं कीदृशां केन निर्गितम् ।४
तस्माद्युद्धं करिष्यामो वलमास्थाय सांम्प्रतम् ।
भवाग्रे दत्यवर्यै त्वं सर्वज्ञोऽसि महामते ।५
इत्युक्तस्तैस्तदा राजन्प्रह्लादः प्रवलारिहा ।
सेनानीश्च तदा भूत्यां देवान्युद्धे समाह्वायत् ।६
तेऽपि तत्रासु रान्दृष्ट्वा संग्रामे समुपस्थान् ।
सर्वे संभूतसंभारा देवास्तान्समयोधयन् ।७

व्यासजी बोले–हे नृपनन्दन ! महात्मा शुकाचार्य के वचन सुनकर प्रह्लाद सन्तुष्ट हो गये ।१। भाग्य को बलवान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानकर वे दैत्यों से बोले कि इस समय युद्ध करने पर हम विजय प्राप्त नहीं कर सकते ।२। परन्तु उन दानवों में जो विजय गर्व से गर्वित एवं मदमत्त थे उन्होंने कहा कि भाग्य को हम नहीं जानते हमारा कर्तव्यतो युद्ध ही है ।३। हे दैत्यराज ! भाग्य की प्रमुखता तो आलसीही स्वीकार करते हैं । परन्तु भाग्य को किसने, कहां देखा है ? उसका रूप क्या है? और किसके द्वारा निर्मित हुआ है ।४। इसलिए हे दैत्यबर ! आप हमारे अग्रगण्य हो ।५। हे राजन् ! दैत्यों के ऐसा कहने पप महाबली प्रह्लाद ने सेनानी होकर देवताओं का युद्ध के लिए आह्वान किया ।६। तब दैत्यों को युद्ध के लिए तत्पर देखकर देवता भी शस्त्रास्त्र धारणपूर्वक युद्ध के लिए निकल आये ।७

संग्रामस्तु तदा घोरः शुक्रप्रह्लादयोऽभवत् ।
पूर्णं वर्षशतं तत्र मुनीनां विस्मयावहः ।८
वर्तमाने महायुद्धे शक्रेण प्रतिपालिताः ।
जयमापुस्तदा दैत्याः प्रह्लादप्रमुखा नृप ।९
तदैवेन्द्रो गुरुर्वाक्यात्सर्वदुःखविनाशिनीम् ।
सस्मामनसा देवीं मुक्तिदां परमां शिवाम् ।१०
जय देवि महामाये शूलधारिणि चांविके ।
शङ्खचक्रगदापद्मखड्गहस्तेऽभयप्रदे ।११
नमस्ते भुवनेशानि शक्तिदर्शननायिके ।
दशतत्वात्मिके मातर्महाविन्दुरूपिणि ।१२
महाकुण्डलिनीरूपे सच्चिदानन्दरूपिणि ।
प्राणाग्निहोत्रविद्ये ते नमो दीपशिखात्मिके ।१३
पञ्चकोषान्तरगते पुच्छब्रह्मस्वरूपिणि ।
आनन्दकलिके मातः सर्वोपनिषदर्चिते ।१४

इन्द्र और प्रह्लाद के बीच होने वाला यह युद्ध पूरे सौ बर्ष तक चला । उस घोर संग्राम को देखकर मुनियों को भी बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्चर्य हुआ। शुक्राचार्य ने उस महायुद्ध का संचालन किया। उसमें प्रह्लाद ने सेनापतित्व में विजयी दैत्यों को प्राप्त हुई ।।८। तब पराजित हुए इन्द्र ने गुरु वृहस्पति को प्रेरणा से मन हीं देवी का स्मरण किया।१०। इन्द्र बोले—हे देवि ! महामये, अम्बिके ! आपकी जय हो। हे शङ्ख, चक्रगदा, पद्म एवं खड्ग धारण करने वाली अभयदात्री ! आपकी जय हो ।११। हे भुवनेशानि ! हे शक्तिदर्शन नाविययि। हे दशतत्वात्मिके, हे महाबिन्दु स्वरूपिणी माता ! आपको नमस्कार है।१२। हे महाकुन्डलि निरूपिणी ! हे सच्चिदानन्द रूपिणी, हे प्राणाग्नि होत्र विद्ये हे दीपशिखात्मिके! आपको नमस्कार है ।१३। हे पंचकोशान्तरगते ! हे तुच्छ ब्रह्मस्वरूपिणी, हे आनन्दकलिके! हे सर्व उपनिषदों द्वारा पूजित होने वाली माता ! आपको नमस्कार है ।१४।

ताः प्रसीद सुमुखी भव हीनसत्वां
त्रायस्व नो जननि दैत्यपराजितान वै ।
त्वं देवि नः शरणदा भुवने प्रणामा
शक्ताऽसि दुःखशमनेऽखिलवीर्ययुक्ते ।१५
ध्यायन्ति येऽपि सुखिनो निरता भवन्ति
दुःखांविता विगतशोकभयास्तथाऽन्ये ।
मोक्षार्थिनो विगतमानविमुक्तसङ्गाः
संसारवारिधिजलं प्रतरन्ति सन्तः ।१६
त्वं देवि विश्वजननि प्रथितप्रभावा
संरक्षणार्थमुदिताऽऽर्तिहरप्रतापा ।
सन्हर्तुमेतदखिलं किल कालरूपा
को वेत्ति तेऽम्ब चरितं ननु मन्दबुद्धिः ।१७
ब्रह्मा हरश्च हरिदश्वरथो हरिश्च
इन्द्रो यमोऽय वरुणोऽग्निसमीरणौ च ।
ज्ञातुं क्षमा न मनुयोऽपि महानुभावा
यस्याः प्रभावमतुल निगमागमाश्च ।१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यास्त एव तव भक्तिपरा महान्तः
संसारदुःखरहिता सुखसिन्धुमग्नाः ।
ये भक्तिभावरहिता न कदापि दुःखा—
भोधिं जमिक्षयतरङ्गमुमे तरंति ।१६
ये वीज्यमानाः सितचामरैश्च क्रीडति धन्या शिविकाधिरूढा।
तौ पूजिता त्वं किल पूर्व देहे नानोपहारैरिति चिन्तयामि।२०
ये पूज्यमानां वरवारणस्था विलासिनीवृन्दविलासः युक्ता ।
सामन्तकैश्चोपनतैर्व्रजन्ति मन्ये हि तैस्त्वं किल पूजिताऽसि।२१

हे माता ! प्रसन्न होइये । दैत्यों से पराभव को प्राप्त हुए हम देवताओं की आप रक्षा कीजिये, आप ही दुःख शमन करने में शशक्त हैं ।१५। हे देवि, आपका ध्यान करने वाले सदा सुखी रहते हैं । आपको त्याग देने वाले जीव अपार कष्ट पाते हैं । आपका भजन करने वाले मुमुक्षु जन विषयों को ध्यान कर संसार समुद्र से पार हो जाते हैं ।१६। हे विश्वजननि, आप अपने आप प्रभाव से संसार का संरक्षण करने के लिए प्रसन्न रहती हैं, आपके प्रभाव से प्राणियों की पीड़ा नष्ट होती है और जब आप विश्व के संहार में तत्पर होती हैं, तब स्वयं की काल रूप हो जाती हैं ।१७। हे भगवती, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र सहित मैं इन्द्र तथा यम, वरुण, अग्नि, पवन, महानुभाव संत महात्मा और वेद-शास्त्र भी आपके प्रभाव से अनजान हैं ।१८। आपकी शक्ति में लीन रहने वाली प्राणी ही महान्, धन्य दुःख-रहित और सुख-सिन्धु में मग्न रहते हैं । हे उमे, आपकी शक्ति से हीन प्राणी जन्म मरण से तरंगित दुःख सागर को कभी भी पार नहीं कर सकते ।१९। पालकी पर सवार जिन मनुष्यों पर श्वेत चमर ढोरा जाता है,तथा जो विभिन्न प्रकार के सुखों को उपभोग करते हैं, उन धन्य पुरुषों को देख-कर मैं यही मानता हूँ कि उन्होंने पूर्व जन्म में विभिन्न उपहारों सहित आपका पूजन अवश्य किया होगा ।२०। हाथियों पर सवारी करने वाले, विलासिनियों के विलास से सम्पन्न, हाथ जोड़ कर चलते हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामन्तों से मुक्त जो लोक पूज्य मनुष्य दिखाई देते हैं, उन्होंने भी पूर्व जन्म में आपका पूजन अवश्य किया होगा ।२१।

एव स्तुता मघवता देवी विश्वेश्वरी तदा ।
प्रादुर्दभव तरसा सिंहारूढा चतुर्भुजा ।२२
शङ्खचक्रगेदापद्मांविभ्रती चारुलोचना ।
रक्तांवरधरां देवी दिव्यमाल्यविभूषणा ।२३
तानुवाच सुरान्देवी प्रसन्नवदना गिरा ।
भयं त्यजन्तु भो देवाः शंविधास्ये किलाधुना ।२४
इत्युक्त्वा सा तदा देवीं सिंहारूढ़ाऽतिसुन्दरी ।
जगाम तरसा तत्र यत्र दैत्याः मदान्विता ।२५
प्रह्लादप्रमुखः सर्वे दृष्ट्वा पुरस्थिताम् ।
ऊतुः परस्पर भीताः किं कर्तव्यमिस्तदा ।२६
देवं नारायण चात्र संप्राप्ता चण्डिका किल ।
महिषांतकरी नूनं चंडमुण्डविनाशिनी ।२७
निहनिष्यति न सर्वानम्बिका नात्र संशय ।
वक्रदृष्ट्या यया पूर्व निहतौ मधुकैटभौ ।२८

इस प्रकार इन्द्र द्वारा की गई स्तुति से प्रसन्न हुई विश्वेश्वरी देवी ने सिंह पर आरूढ़ होकर अपने चतुर्भुज स्वरूप के उन्हें दर्शन दिये ।२२। शंख-चक्र गदा-पद्म धारिणी सुलोचना भगवती लाल-वस्त्र और दिव्य माल्यादि से विभूषित थीं ।२३। उन प्रसन्न मुख वाली देवी ने देवताओं से कहा—हे देवगण ! भय का त्याग करो, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी ।२४। यह कहकर वह सिंहारूढ़ा अत्यन्त सुन्दरी भगवती मदमाते दैत्यों के पास तत्काल जा पहुँची ।२५। देवी को अपने सामने चंडी होकर प्रहलाद सहित सब प्रमुख दैत्य भयभीत होते हुए परस्पर कहने लगे कि अब क्या करें ? ।२६। भगवान विष्णु की सहायता को चण्डिका देवी स्वयं आगई हैं, उन्हीं ने महिषासुर तथा चण्डमुन्ड का संहार किया था ।२७। इन्होंने ही मधु-कैटभ का वध किया था, वह हमारा भी संहार कर डालेगी ।२८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमूचिस्तानुवाचाथ पलायनपरानिह ।
हनिष्यति जगन्माता रुषिता किले हेतभिः ।२६
तथा कुरु महाभागा तथा दुःख न जायते ।
व्रजामोऽद्यैव पाताल तां स्तुत्वा तदनुज्ञया ।३०
स्तौभि देवी महाभागां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम् ।
सर्वेषां जननी शक्ति भक्तानामभयङ्करीम् ।३१
इत्युक्त्वा विष्णुभक्तस्तु प्रह्लादः परमार्थवित् ।
तुष्टाव जगतां धात्री कृतांजलिपुटस्तवा ।३२
माला सर्पवदाभाति यस्यां सर्व चराचरम् ।
माला सर्पवदाभाति यस्यां सर्व चराचरम् ।
सर्वाधिष्ठानरूपायै यस्यै ह्रींमूर्तये नमः ।३३
त्वत्तः सर्वमिदं विश्वं स्थावर जङ्गमं तथा ।
अन्येनिमित्तमात्रास्ते कर्तारस्तव निर्मिताः ।३४
नमो देवि महामाये सर्वेषां जननी स्मृताः ।
को भेदस्तव देवेषु दैत्येषु स्वकृनेषु च ।३५

तब भागने के लिए तत्पर हुए दैत्यों ने नमुचि नामक दैत्य बोला यदि इस प्रकार भागेंगे तो जगन्माता रुष्ट होकर हमें मार देगी ।२६। इसलिए हे महाभाग ! ऐसा करो, जिससे दुःख न भोगना पड़े । तब प्रहलादने कहाकि मैं सृष्टि, स्थिति और प्रलय करने बालीशक्ति स्वरूपा भक्तों को अभय देने वाली जगन्माता देवी की स्तुति करूँगा और वह भगवती की स्तुति करने लगे ।३०। जिनके शरीर में सर्प माला, की भ्रान्ति के समान दिखाई देने वाला यह विश्व स्थिरहै उन सर्वाधिष्ठान स्वरूपिणी ह्रीं मूर्ति को नमस्कार है ।३३। आप ही इस स्थावरजम–ङ्गात्मक संसार की सृष्टि कर वाली है ब्रह्मा, विष्णु रुद्र तो इसमें निमित्त मात्र ही है, आपने ही उन्हें भी उत्पन्न किया है ।३४। हे देवी, हे महामाये ! आप सभी की जननी कही जाती हैं, तब आप अपने ही द्वारा बनाये देवताओं और दैत्यों में भेद क्यों करती हैं ।३५।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मातुः पत्रेषु भेदोऽप्यशुभेषु शुभेषु च ।
तथैव देवेष्वस्मासु न कर्तव्यस्त्वयाऽधुना ।३६
शरणा दानवाः सर्वे जहि वा रक्ष वा पुनः ।
सर्वे गच्छत पातालं तत्र वासं यथेप्सितम् ।३७
कुरुध्वं दानवाः सर्वे निर्भया गतमन्यवः ।
कालः प्रतीक्ष्यो युष्माभि कारणं स शुभेऽशुभे ।३८
मुनिर्नोदपराणां हि सुख सर्वत्र सर्वदा ।
त्रैलोक्यस्य च राजेऽपि न सुखं लोभचेतसाम् ।३९
ममाज्ञां पुरतः कृत्वा सर्वे विगतकल्मषाः ।
तच्छ्रुत्वा वचनं देव्यास्तथेत्युक्त्वा रसातलम् ।४०
प्रणम्य दानवाः सर्वेगताः शक्त्याऽभिरक्षिताः ।
अन्तर्दधे ततो देवी देवाः स्वभुवनं गताः ।४१

हे भगवती ! अच्छे या बुरे पुत्र में माता कभी भेद नहीं करती, इसलिये आपको देवताओं और दैत्यों में कोई भेद-भाव नहीं रखना चाहिये, क्योंकि आप तो दोनों को जानती हैं ।३६। हे देवि हम सभी दैत्य आपकी शरण में हैं । आप चाहे मारिये अथवा रक्षा कीजिये इस पर देवि ने कहा—हे दैत्यों, तुम पाताल लोक में जाकर अपनी इच्छानुसार रहो ।३७। हे दानव गण ! तुम वहाँ क्रोध को छोड़कर निर्भय रहो और शुभ तथा अशुभ के कारण रूप काल की प्रतीक्षा करो ।३८। संतोषी प्राणियों के लिए सर्वत्र और सर्वदा सुख विद्यमान रहता है । परन्तु लोभी जीव तीनों लोक का राज्य पाकर भी सुखी नहीं हो सकता ।३९। मेरा आदेश-पालन करने पर तुम सब पापों से मुक्त हो जाओगे । देवीके ऐसे वचनोंको सुनकर 'जो आज्ञा' कहते हुए दानव भगवती को प्रणाम करके रसातल को गये और भगवती की रक्षा में रहने लगे । इधर भगवती के अन्तर्धान होने पर देवता अपने-अपने लोक को चले गये ।४०-४१।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप्सराओं को आश्वासन

वारांगनास्तया ऽऽख्याता नरनारायणाश्रमे ।
एक नारायणं शांतं कामयानाः स्मरातुराः ।१
किं कृतं मुनिना तेच व्यसने समुपस्थिते ।
ताभिः सङ्कल्पिते नाथकामार्ताभिर्भृशं मुने ।२
शृणु राजप्रवक्ष्यामि यथा तस्य महात्मनः ।
धर्मपुत्रस्य धर्मत्र विस्तरेण वदामि ते ।३
शप्तुकामस्तु संदृष्टो नरेणाथ यदा हरि ।
वारितोऽसौ समाश्वास्य मुनिर्नारायणस्तदा ।४
शातकोहस्तरोवाच तास्तपस्वीं महामुनिः ।
स्मितपूर्वमिद वाक्यं मधुरं धर्मनन्दनः ।५
अस्मिन्जन्मनि चार्वग्यः कृत्तसं कल्पवानहम् ।
अवाभ्यां च न कर्तव्यः सर्वथा दारसंग्रहः ।६
तस्माद्गच्छतु त्रिदिवं कृपा कृत्वा ममोपरि ।
धर्मज्ञा न प्रकुर्वन्ति व्रतभङ्ग परस्य वै ।७

जनमेजय ने कहा—हे ब्रह्मन ! आपने कहा था कि नर नारायण के आश्रम पर इन्द्र द्वारा भेजी हुई अप्सरायें नारायण मुनि पर मोहित हो गयीं ।१। उन्होंने नारायण को मन ही मन अपना पति मान लिया, तब इस धर्म संकट के उपस्थित होने पर महर्षि नारायणने क्या किया? ।२। व्यास जी बोले—हे राजन् ! अब मैं धर्म-पुत्र नर नारायण के विषय में विस्तार से कहता हूँ,उसे सुनो ।३। जब मुनिवर नर ने नारायण को शाप देने के लिए उद्यत देखा, तब उनका रोष शान्त हो गया, तब उन्होंने मन्द मुस्कराहट सहित उन अप्सराओंसे कहा ।४। इस जन्म में तो हमने यह संकल्प किया हुआ है कि हम कभी भी किसी नारीको स्वीकार नहीं करेंगे ।५। इसलिए अब तो आप सब मुझ पर कृपा पूर्वक चली जाइये, क्योंकि धर्म के जानने वाले कभी किसी का व्रत भङ्ग नहीं करते ।७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अष्टाविंशे विशालाक्ष्यो द्वाररेस्मिन्धरातले ।
देवानां कार्य सिद्ध्यर्थं प्रभविष्यामि सर्वथा ।८
तदा भवत्यो मद्द्वाराः प्राप्य जन्म पृथक्पृथक् ।
भूपतीनां सुता भूत्वा पत्नीभावं गमिष्यथ ।९
इत्याक्वास्य हरिस्तास्तु प्रतिश्रुत्य परिग्रहम् ।
व्यसर्जयत्स भगवाञ्जग्मुश्च विगतज्वराः ।१०
एवं विसर्जितास्तेन गताः स्वर्गं पदांगनाः ।
शक्राय कथयामासुः कारणं सकल पुनः ।११
आश्रुत्य मघवांस्तेभ्यो वृत्तांतं तस्य विस्तरात् ।
तुष्टाव त महात्मनं नारोकष्टवा यथोर्वशीः ।१२
इत्येतत्सर्वमाख्यातं मुनेर्वृत्तान्तमद्भुतम् ।
नारावणस्य सकलं नरस्य च महामुने ।१३
तौ हि कृष्णार्जुनौ वीरौ भूभारहराय च ।
जातौ तौ भरतश्रेष्ठ भृगोः शाववशादिह ।१४

हे विशाल नेत्र वाली रमणियो ! मुझे देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए अट्ठाइसवें द्वापर में धरातल पर अवतीर्ण होना है ।८। उस काल में तुम सब भी पृथिवी पर उत्पन्न हो-होकर राज कन्याओं के रूप में प्रकट होगी, तब तुम मेरी पत्नी बनोगी ।९। नारायण से इस प्रकार का आश्वासन पाकर देवाङ्गनाएं शांत हो गई और स्वर्ग में पहुँच कर उन्होंने इन्द्र को सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया ।१०-११। उनके मुख से वह समाचार सुनकर और परम सुन्दरी उर्वशी आदि को देख कर इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न हुए ।१२। हे राजन् ! नर-नारायण मुनि का यह परम अद्भुत व्याख्यान मैंने आपको सुना दिया ।१३। हे भरतश्रेष्ठ महर्षि भृगु के शाप के कारण तथा पृथिवी का भार उतारने के लिए भी, उन्हीं नर-नारायण ने अर्जुन और कृष्ण के रूप में अवतार धारण किया था ।१४।

—+—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पीड़ित पृथिवी का देवलोक गमन

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कृष्णस्य चरितं महत् ।
अवतारकारणं चैव देव्याश्चरितमद्भुतम् ।१
धरैकदा भरक्रांता रुद्रन्ती चातिकर्षिता ।
गोरूपधारिणी दीना भीताऽगच्छन्त्रिविष्टपम् ।२
पृष्टा शक्रेण किं तेऽद्य वर्तते भयमित्यथ ।
केन वै पीडिताऽसि त्व किं ते दुःखं वसुन्धरे ।३
तच्छ्रुत्वेला तदोवाच शृणु देवेश देऽखिलम् ।
दुःख पृच्छिसि यत्वं मे भाराक्रांतास्मि मानद ।४
तस्मात्त्वं देवदेव दुःखरूपार्णवस्य च ।
पारदो भव भारं मे हर पादौ नमामि ते ।५
इले किं ते करोम्यद्य ब्राह्मणं शरण व्रज ।
अहं तत्रागमिष्यामि स ते दुःखं हरिष्यति ।६
तच्छ्रुत्वा त्वरिता पृथिवी ब्रह्मलोकं गता तदा ।
शक्रोऽपि पृष्ठतः प्राप्तः सर्व देवपुरः सरः ।७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! अब भगवान् श्री कृष्ण ने अवतार का कारण और उनके चरित्र तथा देवी के चरित्र तुम्हारे प्रति कहता हूँ, उन्हें सुनो ।१। एक समय पाप के बोझ से दबी हुई पृथिवी, अत्यन्त दुर्बल दीन और भय के कारण रोती हुई गौ के रूप में देवलोक पहुँची ।२। तब उससे इन्द्र ने पूछा—हे वसुन्धरे ! तुम भय से पीड़ित क्यों हो रही हो ? तुझे किसने कष्ट पहुँचाया है ।३। यह सुनकर पृथिवी ने कहा—हे देवेश ! सुनो, आपने मेरा दुःख पूछा है तो बताती हूँ कि इस समय मैं पाप के बोझ से अत्यन्त दबी हूँ ।४। इसलिए हे देवेन्द्र ! मुझे इस दुःख-सागर से उबारिये, इन्द्र बोले—हे धरे ! मैं इसमें क्या कर सकता हूँ ? तुम ब्रह्मा जी की शरण में चलो वे ही तुम्हारा दुःख हरण करेंगे मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ ।५। यह सुन कर पृथिवी तुरन्त ही चल दी और शीघ्र ही ब्रह्मलोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुँची, इन्द्र भी अनेक देवताओं को लिए उनके पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँचे ।७।

सुरभीमागतां तत्र दृष्टवोवाच प्रजापतिः ।
महीं ज्ञात्वा महाराज ध्यानेन समुपस्थिताम् ।८
कस्माद्रुदसि कल्याणि किं ते दुःख वदाधुना ।
पीडिताऽसि च केन त्वं पापचारेणं भूर्वद ।९
कलिरायाति दुष्टोऽयं विभेमि तद्भयादहम् ।
पापाचाराः प्रजास्तत्र भविष्यन्ति जगत्पते ।१०
तान्हृत्वा नृपतोन्भार हर मेऽद्य पितामह ।
पीडिताऽस्मि महाराज सैन्यभारेण भूभृताम् ।११
नाहं शक्तस्य न देवि भारावतरणं तव ।
गच्छावः सदनं विष्णोर्वदेवस्य चक्रिणः ।१२
स ते भारापनोद वं करिष्य जनार्दन ।
इत्युक्त्वा देदकर्तासौ पुरस्कृत्य सुरांश्च गाम् ।१३
जगाम विष्णुसदनं हंसारूढश्चतुर्मुखः ।
तुष्टाव वेदवाक्येच भक्तिप्रवणमानसः ।१४

हे महाराज ! उस समय ब्रह्माजी ध्यान में निमग्न थे और जब उनकी आँखे खुली तो उन्होंने गौरूप धारिणी धरा को अपने सामने देखा और बोले ।८। हे कल्याणि ! क्यों रोती हो ? तुम्हें क्या दुःख है ? तुम्हें किस पापचारी ने पीड़ित किया है ? ।९। पृथिवी बोली— हे जगस्पते ! कलियुग आ रहा है, उससे मैं भयभीत हूँ, क्योंकि सम्पूर्ण प्रजा पाप का आचरण करने लगेगी ।१०। पितामह ! जो दुष्ट राजा इस समय हैं उन्हें मार मेरा बोझ हल्का कीजिये ।११। ब्रह्माजी बोले— हे देवि । तेरा भार उतारने में मैं समर्थ नहीं हूँ इसलिए देव-देव भगवान् विष्णु के पास चलना चाहिये ।१२। वे जनार्दन भगवान् ही तुम्हारा भार उतारेंगे । यह कहकर ब्रह्माजी हंस पर आरूढ़ होकर सब देवताओं के सहित गौरूप पृथिवी को साथ लेकर भगवान् विष्णु के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धाम में गये और वहाँ भक्तिभाव पूर्वक भगवान की स्तुति में तत्पर हुए ।१२-१४।

सहस्रशीर्षास्त्वमसि सहस्राक्षः सहस्त्रपात् ।
त्वं वेदपुरुषः पूर्व देवदेवः सनातनः ।१५
भूतपूर्वं भविष्य वर्तमान च यद्विभो ।
अमरत्वं त्वया दत्तमस्माकं च रमापते ।१६
एतावान्महिमा तेऽस्ति को न वेत्ति जगत्त्रये ।
त्वं कर्ताऽयविता हर्ता त्वं सर्वगतिरीश्वरः ।१७
इतीडितः प्रभुर्विष्णु प्रसन्नो गरुडध्वजः ।
दर्शन च ददौ तेभ्यो ब्रह्मादिभ्योऽमलाशयः ।१८

पप्रच्छ स्वागतः देवांप्रसन्नवदनोहरिः ।
ततस्तष्वागमने तेषां कारण च सविस्तरम् ।१६
मुतवाचाब्जजो नत्वा धरादुःख च संस्मरन् ।
भारावतरणं विष्णो कर्तव्य ते जनार्दन ।२०
भुवि घ्रत्वांऽवतारं त्वं द्वापरान्ते समागते ।
हत्वा दुष्टान्नृपानुर्व्या हर भारं दयानिधे ।२१

ब्रह्माजी बोले--हे प्रभो आपके सहस्र मस्तक, सहस्र नेत्र और सहस्र ही चरण हैं ।१५। आप ही भूत, भविष्यत् और वर्तमान हैं । आपने ही हमें अमरत्व प्रदान किया है ।१६।हे भगवान् हम तीनों लोकों में ऐसा कौन है जो आपकी महिमा से परिचित नहीं है ? आपही सृष्टा पालक एवं संहार कर्त्ता हैं ।१७। इस प्रकार स्तुति किए जाने पर गरुडध्वज भगवान् हरि प्रसन्न हो गये और उन्होंने ब्रह्मादि को दर्शन दिये ।१८। और सबका स्वागत करते हुए उनके वहाँ आने का विस्तार सहित कारण पूछा ।१६। तब ब्रह्माजी ने पृथिवी के दुःख को ध्यान में रखते हुए कहा कि हे विष्णो ! जनार्दन ! इस पृथिवी का भार उतारना आपका कर्तव्य है ।२०। इसलिए हे दयानिधे ! द्वापर के अन्तिम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल में आप भूमि पर अवतार धारण करके दुष्ट राजाओं का संहार करते हुए पृथिवी का बोझ हल्का करें ।२१

नाहं स्वतन्त्रोन एवात्र ब्रह्मा न शिवस्तथा ।
नेन्द्रोऽग्निनर्न यमस्त्वष्टा न सूर्यो वरुणस्तथा ।२२
योगमायावशे सर्व मिदं स्थावरजङ्गम् ।
ब्रह्मादिस्तंवपर्यन्तं ग्रंथतं गुणपुत्रतः ।२३
यथा सा स्वेच्छया पूर्वे कर्तुमिच्छति सुव्रता ।
तथा कराति संहिता वयं सर्वेऽपि तद्वशा ।२४
तस्मात्तां परमां शक्ति स्मरत्वद्य सुराः शिवाम् ।
सर्वकामप्रदां मायामाद्यां शक्ति परात्मनः ।२५
इत्युक्ता हरिणा देवा ब्रह्माद्या भुवनेश्वरीम् ।
हंसस्मरुर्मनभा देवीं योगमायां सनातनीम् ।२६
स्मृतमात्रा तदा देवी प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ ।
दृष्ट्वा प्रमुदिता देवास्तुष्टुवुस्तां सुदर्शनाम् ।२७
दर्शनाभाद्यथा तन्तुर्विस्फुलिङ्गा विभावसोः ।
तथा जगद्यदेतस्या निर्गत तां नता वयम् ।२८

भगवान विष्णु बोले—इस विषय में ब्रह्मा शिव, इन्द्र, अग्नि, यम त्वष्टा, सूर्य, वरुण अथवा मैं कोई भी स्वतन्त्र नहीं हैं ।२२। यह स्थावर जंगमात्मक विश्व योगमाया के ही वश में रहता है । हे सुव्रत ! वही योगमाया अपनी इच्छा के अनुसार सब करती है, हम सब उसीके वशवर्ती रहते हैं ।२३-२४। इसलिए हे देवताओ ! आप उसी परमा शक्ति, कल्याण के देने वाली सर्वकामना पूर्ण करने वाली, आद्याशक्ति भगवती माया का स्मरण करिये ।२५।श्री हरि द्वारा ऐसा कहने पर ब्रह्मादिसब देवता मन ही मन सनातनी योगमाया भुवनेश्वरी देवी का स्मरण करने लगे ।२६। स्मरण करने मात्र से भगवती प्रकट हो गई और उनके सुन्दर दर्शनों को प्राप्त करके देवगण अत्यन्त प्रसन्न हो उठे ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यन्मायाशक्तिसंकल्पं यगत्सर्वं चराचरम् ।
तां चित भुवनाधीशं स्मरामः करुणार्णवाम् ।२९
यदज्ञानाद्भोत्पत्तियज्ज्ञानाद्भवनाशनम् ।
सविद्रूपां च तां देवी स्मगमः सा प्रचोदयात् ।३०
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।३१

मा तर्नता स्म भुवनार्तिहरे प्रसीद ।
शन्नो विधेहि कुरु कार्यमिदं दयाद्रे ।
भारं हरस्व विनिहत्य सुरारिवग ।
मह्या महेश्वरि सदां कुरुशं भवानि ।३२
एवं स्तुता तदा देवी तानाह विवधेश्वरान् ।
किं तत्कार्यं वदत्वत्र करोमि विगतज्वराः ।३३
असाव्यमपि लोकेऽस्मिस्तकरोति सुरेप्सितम् ।
शंसतु भवतां दुःखं धरायाश्च सुरोत्तमाः ।३४

देवताओं ने कहा—जैसे मकड़ीके मुख से तन्तु तथा अग्नि के द्वारा चिनगारियाँ निकलती हैं, वैसे ही जिनसे यह संसार प्रकट हुआ है उन देवी को हम प्रणाम करते हैं ।२९। जिन भुवनेश्वरी की माया और शक्ति से सम्पूर्ण चराचर विश्व प्रकट हुआ है, जिनके यथार्थ रूप को जानने पर जीव भव-बन्ध से मुक्त हो जाता है, उन ज्ञान रूपिणी देवी का हम स्मरण करते हैं, वे हमें शुभ प्रेरणा दें ।३०। उन महालक्ष्मी के स्वरूप को जानने के लिए हम उनका ध्यान करते हैं, वे देवी हमें प्रेरणा प्रदान करें ।३१। हे माता ! आप सब लोकों के दुःख दूर करने वाली हैं, आप हम पर प्रसन्न होईये । हे दयार्द्र हृदये ! इस कार्य को पूर्ण करके हमारा कल्याण करिये । दैत्यों का संहार कर भूभार हरण कीजिये ।३२। इस प्रकार स्तुति सुनकर देवी ने कहा—तुम्हारा वह कौन सा कार्य है, जिसके करने से तुम्हारा संङ्कट दूर हो सकता है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मुझसे कहो ।३३। तुम्हारी कामना पूर्ण करने के लिए मैं असाध्य को भी सिद्ध कर दूंगी हे देवगण ! पृथिवी को जो दुःख हो उसे कहो ।३४।

वसुधेयं भवाक्रांता संप्राप्ता विबुधान्प्रति ।
रुदती वेपमाना च पीडया दुष्टभुजैः ।३५
भारापहरणं चास्याः कर्तव्यं भुवनेश्वरि ।
देवानातीप्सितं कार्यमेतदेवाधुना शिवे ।३६
धारितस्तु पुरा तातस्तया महिषरूपभृत् ।
दानवोऽतिबलाक्रांतस्त्सहायाश्च कोटिशः ।३७
तथा शुम्भो निशुम्भश्च रक्तबीजस्वथापरः ।
चण्डमुण्डो महावीर्यो तथैव धूम्रलोचनाः ।३८
दुर्मुखो दुःसहश्चेव करालश्चातिवीर्यवान् ।
अन्ये च बहवः क्रूरास्त्वयैव न निपातिताः ।३९
तथैव च सुरारींश्च जहि सर्वान्हीश्वरान् ।
उत्युक्ता सा तदा देवी देवानाहाम्बिका शिवा ।४०

देवताओं ने कहा हे माता ! दुष्ट राजाओं के अत्याचारों से आक्रान्त और उसके भार से पीड़ित होकर रोती हुई पृथिवी हमारे पास आई है ।३५। हे भुवनेश्वरी ! आप इसके भार का हरण कीजिए पूर्वकाल में आपने महाबली महिषासुर तथा शुम्भ, निशुम्भ, रक्तबीज, चन्ड–मुन्ड, धूम्रलोचन, दुर्मुख दुःसह आदि असंख्य महा पराक्रमी राक्षसों को आपने मार दिया ।३६।-३९। इसी प्रकार हे माता ! हमारे इन शत्रु रूप दुष्ट राजाओं का संहार कीजिये। ऐसा निवेदन करने पर अम्बिका शिवा ने देवताओं से कहा ।४०

संप्रहस्यासितापाङ्गी मेघगंभीरयागिरा ।
मयेदं चिंतितं पूर्वमशावतरणं पुराः ।४१
भारावतरणं चैव यथा स्याद्दुष्टमभुजाम् ।
मया सर्वे निहंतव्या दैत्येशा ये महाबल ।४२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मागधाद्या महाभागः स्वशक्त्या मंदतेजसः ।
भवद्भिरपि स्वैरंशरवतीर्य धरातले ।४३
मच्छक्तियुक्तैः कर्तव्य भारावतरणं सुराः ।
कश्यपो भार्यया सार्धं दिविजानां प्रजापतिः ।४४
यादवानां कुले पूर्वं सविताऽर्द्धुभिः ।
तथैव भृगुशापीद्वे भगवान्विष्णूरव्ययः ।४५
अंशेन भविता तत्र वसुदेवसुतो हरिः ।
तदाऽहं प्रभविष्यामि यशोदायां च गोकुले ।४६
कार्यं सर्वं करिष्यामि सुराणा सुरसत्तमः ।
कारागारे गतं विष्णु प्रापयिष्यामि गोकुले ।४७

भगवती हँसती हुई, बोली--मैं भी अंशावतार लूँगी और हे देवगण ? पृथिवी से जिस प्रकार भार उतर सके, उसी प्रकार के उपाय से मैं उन दुष्ट राजाओं का विनाश कर दूँगी ।४१-४२। मगधपति जरासंध आदि में तेज का अपनी शक्ति से ह्रास करके उन्हें नष्ट कर डालूँगी। हे देवगण ! तुम भी अपने अपने अंश से पृथिवी पर उत्पन्न होकर मेरी शक्ति से भार उतारने का कार्य करो । कश्यप वसुदेव के रूप में अवतरित हो चुके हैं । भगवान् विष्णु भी भृगु-शाप के कारण उन वसुदेवके पुत्र होंगे, तभी मैं भी गोकुल में यशोदा के उदर से उत्पन्न हूँगी ।४३।-४६। हे देवगण ! मैं आपके सम्पूर्ण कार्य पूर्ण करूँगी जब भगवान् विष्णु कारा-गृह में उत्पन्न होंगे, तभी मैं उन्हें गोकुल में पहुँचाऊगी ।४७।

शेष च देवकीगर्भात्प्रापयिष्यामि सुरोत्तमाः ।
मच्छक्त्यौपचितौ तौ च कर्तारौ दुष्टसंक्षयम् ।४८
भारावतरणं नूनं करिष्यामि सुरोत्तमा ।
कृत्वा निमित्त मात्रांस्तान्स्वशक्त्याऽहं न संशयः ।४९
कुरुक्षेत्रे करिष्यामि क्षत्रियाणां च संक्षयम् ।
असूर्या मतिस्तृष्णा ममतानिमता स्पृहा ।५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिगीषा मदनो मोहो दोर्षनैक्ष्यंति यादवाः ।
ब्राह्मणस्य च शापेन वंशनाशो भविष्यति ।५१
भगवानपि शापेन त्यक्ष्यन्येतकलेवरम् ।
भवन्तोऽपि विजांगेश्च सहन्या शार्ङ्गधन्वनः ।५२

प्रभवन्तु सनारीचा मथुरायां च गोकुले ।
प्रत्युक्त्वांतर्दधे देवा योगमाया परात्परः ।५३

मधरा वै सुराः सर्वे जन्मुः स्वान्यालयानि च ।
धराऽपि सुस्थिरां जाता तस्या वाक्येन तोषिता ।५४

देवकी के गर्भ में स्थित शेष को रोहिणीके गर्भ में पहुंचकर उनकी रक्षा करूँगी और अंशावतार धारियों को निमित्त बनाकर मैं अपनी ही शक्ति से भू-भार हरण करूँगी ।४५-४६। कुरुक्षेत्रमें उन दुष्ट क्षत्रियों का फिर विनाश करूँगी । और असूया, ईर्ष्या, तृष्णा, अहंकार, स्पृहा, जिगीषा, विषय—वासना और अज्ञान आदि दोष की बुद्धि होने पर यादवों को भी नष्ट कर दूँगी ।५०-५१। शाप के कारण कृष्णभी अपना शरीर त्याग देंगे । अतः तुम सभी अपने अंशों और नारियों के सहित मथुरा और गोकुल में उत्पन्न होकर भगवान् विष्णु की सहायमा करो । यह कह कर भगवती योगमाया अदृश्य हो गई ।५२-५३। तब पृथिवी के सहित सब देवता अपने-अपने स्थान को गये ।५४

—❀—

बसुदेव–देवकी विवाह

तवाहं कथयिष्यामि कृष्णस्या पिविचेष्टितम् ।
प्रभवां मानुषे लोके देवकार्यार्थसिद्धये ।१

कालिन्दीपुलिने रम्ये ह्यासीन्मधुवनं पुरा ।
पुत्रलोवर्ण मधुवस्तत्रासाहानवो बली ।२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्विजाना दुःखदः पापी वरदानेन गर्वितः।
निहतोऽसौ महाभाग लक्ष्मणस्यानुजने व ।३
शत्रुघ्नेनाथ संग्रामे तं निहत्य मदोत्कटम्।
वासिता मथुरा नाम पुरी परमशोभना ।४
सूर्यवंशक्षये तां यादवाः प्रतिपेदिरे ।
मथुरां मुक्तिदां राजन् ययातितनयः पुराः ।५
शूरसेनाभिधः शूरस्तत्राभून्मेदिनीपतिः ।
मथुराच्छूरसेनाश्चे वुभुजे विषयन्नृपः ।६
तत्रोत्पन्नः कश्यपांणः शापात् वरुणस्य वै।
वसुदेवोऽतिविख्यातः शूरसेनसुतस्तदाः ।७

व्यासजी बोले—अब मैं कृष्ण के अवतार और कर्म का वृत्तान्त कहता हूँ ।१। पहिले कभी यमुना के किनारे पर स्थित सुरम्य मधुवन में महाबली दानव लवण का राज्य था ।२। उसे लक्ष्मण के अनुज शत्रुघ्न ने नष्ट कर दिया और उस स्थान पर मथुरा नाम की अत्यन्त शोभामयी नगरी पर यादवों ने अधिकार कर लिया। ययाति के पुत्र वीर शूरसेन जब राजा हुए तब वे मथुरा और शूरसेन प्रदेश पर राज्य करने लगे ।२। वरुण के शाप से महर्षि कश्यप ने राजा शूरसेन के विख्यात पुत्र वसुदेव के रूप में अवतार लिया ।६-७।

वैश्यवृत्तिरतः सोऽभून्मृते पितरे माधवः।
उग्रसेनो वभूवार्थं कसस्तस्यात्मजो महान् ।८
अदितिर्देवकी जाता देवकस्य सुता तदा।
शापाद्वै वरुणस्याथ कश्यपानुगता किल ।९
दत्ता सा बसुदेवाय देवकेन महात्मना ।
विवाहे रचिते तत्र वागभूद्गगने तदा ।१०
कंस कंस महाभाग देवकीगर्भसंभवः।
अष्टमस्तु सुतः श्रीमांस्तव हंता भविष्यति ।११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तच्छ्रुत्वा वचनं कंसो विस्मितोऽभून्महाबलः ।
देववाचं तु ताँ मत्या सत्यां चिन्तामवाप सः ।१२
विचिन्त्य मनसा कंसः खड्गमादाय सत्वरः ।
जग्राह तां वाराोहां केशेष्वाकृष्य पापकृत् ।१३

हन्ययानां च तां दृष्ट्वा हाहाकारो महानभूत ।
कंसं निवारयामासुर्वृद्धा ये यदुसत्तमाः ।१४

पिता की मृत्यु के पश्चात् वसुदेव सूरसेन प्रदेश और उग्रसेन मथुरा के अधिपति हुए । उन्हीं उग्रसेन का पुत्र कंस हुआ ।८। वरुण के शाप से महर्षि कश्यप की भार्या अदिति ही उग्रसेन के अनुज देवक की कन्या देवकी हुई ।९। महात्मा देवक ने उसका विवाह वसुदेव के साथ कर दिया । जब विवाह कार्य सम्पन्न हो गया तभी आकाशवाणी हुई कि हे कंस ! हे महाभाग ! देवकी के गर्भसे जन्म लेने वाला आठवाँ पुत्र तुम्हें मारेगा ।१०-११। कंस अत्यन्त चिन्ता में पड़ गया उसने तुरन्त तलवार निकाली और देवकी के केश पकड कर बध करने को तत्पर हुआ ।१२। ।१३। तब कुछ श्रेष्ठ यादवों ने उसे समझाकर वैसा करनेसे रोका ।१४

पितृष्वसेयं ते वीर पूजनीया च बालिशा ।
न हंतव्या त्वया वीर विवाहोत्सवसंगने ।१५
पितृष्वसा न हंतव्या विवाहसमते पुनः ।
भवितव्यं महाराज भवेच्च कथमन्यथा ।१६
एवं तैर्बोध्यमानोऽसौ निवृत्तो नाभवद्यदा ।
तदा तं बसुदेवोऽपि नीतिज्ञः प्रत्यभाषतः ।१७

कंस सत्य ब्रवीम्यद्य सत्याधारं जगन्त्रयम् ।
दास्यामि देवकीपुत्रानुत्पन्नांस्तव सर्वशः ।१८
ऊचुस्ते त्वरिताः कंस साधु साधु पुनः पुनः ।
न मिथ्या भाषते क्वापि बसुदेवो महामनाः ।१९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केशं मुंच महाभाग स्त्रीहत्यापतकं तथा ।२०
एवं प्रबाधितः कंसो यदुवृद्धैर्महात्मभिः ।
क्रोधं त्यक्त्वा स्थितस्तत्र सत्यवाक्यानुमोदितः ।२१

वे यादव बोले हे वीर ! यह तो तुम्हारी पूजनीया बहिन है और अभी तो अबोध बालिका है । फिर विवाहोत्सव जैसा मांगलकिअवसर! इस समय इसे नहीं मारना चाहिये ।१५। हे महाराज ! बहिन की हत्या तो वैसे ही निन्दनीय है, पर उस पर भी विवाह के समय ऐसा करना तो और भी अनुचितहै, हम यह सत्य कहतेहैं । फिर भविष्यको अन्यथा कौन कर सकताहै ? ।१६। इस प्रकार बहुत बार निवारण करने परभी कंस नहीं माना तो नीतिज्ञ वसुदेव जी ने कहा ।१७। हे कंस ! सत्य के आधार पर ही तीनों लोक स्थित हैं उसी सत्य को साक्षी करके मैं वचन देता हूँ कि देवकी के जितने भी पुत्र उत्पन्न होंगे, उन सभी को आपको सौंप दूँगा ।१८। वसुदेव जी की बात सुनकर उपस्थित नगर निवासी यादवगण तुरन्त 'साधु' 'साधु' कह उठे और कंस से कहने लगे ।१९। हे महाभाग कंस ! महामना वसुदेव कभी मिथ्या भाषण नहीं करते । अब आप भी देवकी के केश छोड़कर स्त्री हत्या के घोर पातक से बचिये ।२०। इस प्रकार समझाने पर कंसने वसुदेवजी की बात मानी और क्रोध को त्याग कर देवकी को छोड़ दिया ।२१

—×—

देवकी के प्रथम पुत्र का वध

अथ काले तु संप्राप्ते देवकी देवरूपिणी ।
गर्भं दधार विधिवद्वसुदेवेन सङ्गता ।१
पूर्णेऽथ दशमे मासे सुषुवे सुतसुत्तमम् ।
रूपावयवसंपन्न देवकी प्रथमं यदा ।२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तदाऽऽहं वसुदेवस्तां सत्यवाक्यानुमोदितः ।
भावित्वाच्च महाभागो देवकीं देवमातरम् ।३
वरोरु समयं मे त्व जानासि स्वसुतार्पणे ।
मोचिता त्वं महाभागे शपथेन मया तदा ।४
सत्यसंस्तणाद्देवि शुभमग्रे भविष्यति ।
कर्तव्यं सुकृतं पुंभिः सुखे दुःखे सति प्रिये ।५
इत्युक्तवति कांते सा देवकी शोकसंयुना ।
ददौ पुत्रं प्रसूतं च वेपमाना मनस्विनी ।६
वसुदेवाऽपि धर्मात्मा आदाय स्वसुतं शिशूम् ।
जगाम कंससदनं मार्गे लोकैरभिष्टुतः ।७

व्यासजी बोले--हे जनमेजय ! समय आने पर देवकी ने गर्भ धारण किया और दसवांमास पूर्ण होने पर उसने अत्यन्त रूपवान पुत्र को उत्पन्न किया ।१-२। तब सत्य निष्ठ वसुदेवजी ने देवकी से कहा हे वरोरु ! मैंने सभी पुत्र कंस को देने की प्रतिज्ञा करके तुम्हें उससे छुड़ाया था ।३-४। हे प्रिये ! सत्य मार्ग ही सदा कल्याणकारी होता है । सुखहो अथवा दुःख, सत्य-प्रिय व्यक्ति को सदा सुकृत ही करने चाहिए ।५। यह सुनकर शोक-संतप्ता और मनस्विनी देवकी ने कंपित हाथों से वह शिशु वसुदेवजी को दे दिया ।६। धर्मात्मा वसुदेवजी उस शिशु को लेकर कंस सदनकी ओर चल दिये । मार्ग में जिसने उन्हें इस प्रकार शिशु ले जाते देखा,वही उनके प्रतिज्ञा-पालन की सराहना करने लगा ।७।

ददावस्मै कुमारं तं जातमात्रमानुषम् ।
कंसोऽपि विस्मयं प्राप्तो दृष्ट्वा धैर्यं महात्मनः ।८
गृहीत्वा बालकं प्राह स्मितपूर्वमिदं वचः ।
धन्यस्त्वं शूरतुत्राद्याज्ञाः पुत्रमर्पणात् ।९
मम मृत्युर्न चायं वै गिरा प्रोक्तस्तु चाष्टमः ।
न हंतव्यो मया कामं त्वत्तोऽयं बालु ते गृहान् ।१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अष्टमस्तु प्रदानन्तान्यसययां पुत्रो महामते ।
इत्युक्त्वा बसुदेवाय ददावाशु खयः शिशुम् ।११
गतेषु तेषु संप्राप्तो नारदो मुनिसत्तमः ।
पप्रच्छ कुशल राजा तत्रागमनकारणम् ।१२
नारदस्त तदोवाच स्मितपूर्वमिदः वचः ।१३
कंस कंस महाभाग गतोऽहं हेमपर्वतम् ।
तत्र ब्रह्मादयो देवा मन्त्रं चक्रुः समाहिताः ।१४

वहाँ जाकर वसुदेवजी ने वह शिशु कंस को दे दिया । महात्मा बसुदेवजी के ऐसे धैर्य को देखकर कंसको भी अत्यन्त विस्मय हुआ ।८। शिशु को हाथ में लेकर कंस बोला—हे वसुदेवजी ! आप धन्य हैं इस बालक को समर्पित करते हुए देखकर आज मैं आपके महत्व को समझ सका हूँ ।९। परन्तु मेरी मृत्यु इसके द्वारा नहीं आकावाणी के अनुसार तुम्हारे आठवें पुत्र के द्वारा होनी है । इसलिए मैं इसे नहीं मारूँगा । आप इसे अपने घर ले जाइये ।१०। हे महामते ! अपने आठवें पुत्र को मेरे पास लाना । यह कहकर कंस ने वह वसुदेव को लौटा दिया ।११। उनके जाते ही मुनि नारद वहाँ आये और कंस से 'मुस्कराते हुए कहा ।१२-१३। हे कंस ! मैं सुमेरु पर्वत पर गया था, वहाँ ब्रह्मादिक सभी देकता एकत्रित होकर मन्त्रणा कर रहे थे ।१४।

देवक्या बसुदेवस्य भार्यायां सुरसत्तमः ।
वधार्थं तव विष्णुश्च जन्म चात्र करिष्यति ।१५
तत्कथं न हतः पुत्रस्त्वता नोति विजानता ।
अष्टमं च हनिष्येऽहं मृत्युं मे देवभाषितम् ।१६
न जानासि नृपश्रेष्ठ राजनीति शुभाशुभम् ।
मायाबलं च देवानां त्वं वत्स वदामि किम् ।१७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिपुरल्पोऽपि शूरेण नोपेक्ष्यः शुभमिच्छता ।
संगेलनक्रियायां तु सर्वं ते ह्यष्टमाः स्मृताः ।१८
मूर्खस्त्वमरिसत्यागः कृतोऽयं जानता त्वया ।
इत्युक्त्वाऽऽशु गतः श्रीमान्नारदो देवदर्शनः ।१९
गतेऽथ नारदे कंस समाहूयाथ बालकम् ।
पाषाणे पोथयामास सुख प्राप च मन्दधीः ।२०

उसका आशय था कि तुम्हें मारने के लिये देवकी के गर्भसे भगवान् विष्णु उत्पन्न होंगे ।१५। तब तुमने ऐसे नीतिमान् होकर भी देवकी के पुत्र का वध क्यों नहीं किया ! इस पर कंस बोला कि आकाशवाणी ने उसके आठवें पुत्र से मेरी मृत्यु की बात कही थी इसलिए मैं उसे अवश्य मार डालूँगा ।१६। नारदजीने कहा-हे नृपोत्तम,तुम न तो राजनीति के द्वारा होने वाले शुभ-अशुभ परिणाम से अपरिचित हो और शुभ चाहने वालों को तुच्छ से तुम्छ शत्रुकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए यदि गणित शास्त्र को सम्मिलित करके देखें तो सभी शिशु आठवें हो सकते हैं ।१८। यह सब जानकर भी तुमने शत्रु को छोड़कर मूर्खता पूर्ण कार्य किया है । यह कहकर देव-दर्शन नारदजी वहाँ से चलते बने ।१९ उनके जाते ही कंस ने बालक को पुनः मंगवाया और पत्थर पर पछाड़ कर सुख की साँस ली ।२०।

—×—

श्रीकृष्ण जन्म

हतेषु षड्षु पुत्रेषु देवक्या औग्रसेनिना ।
सप्तमे पतिते गर्भे वचनान्नारदस्य च ।१
अष्टमस्य च गर्भस्य रक्षणार्थमतन्द्रितः ।
प्रयत्ननकरोद्राजा मरणं स्वं विचिंतयन् ।२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समये देवकीगर्भे प्रवेशमकरोद्धरिः ।
अंशेन बसुदेवे तु समागत्य यथाक्रमम् ।३
तदेयं योगमायात च यशोदायां यथेच्छया ।
प्रवेशमकरोद्देवी देवकार्यार्थसिद्धये ।४
रोहिण्यास्तनयो रामो गोकुल समजायत ।
यतः कंसभयोद्विग्ना संस्थिता च चामिनी ।५
कारागारे तत कंसो देवकीं देवसंस्तुताम् ।
स्थापयामास रक्षार्थं सेवकांसमकल्पयत् ।६
वसुदेवस्तु कामिन्य प्रेमसन्तुनियन्त्रितः ।
पुत्रोत्पत्तिं संचिन्त्य प्रविष्टः सह भार्यया .७

व्यासजी बोले-हे राजन् देवकी के छः पुत्रों के मारे जाने और सातवें गर्भ के नष्ट हो जाने के पश्चाच कंस आठवें गर्भ के प्रति सावधानी से दृष्टि रखने लगा ।१-२। समय आने पर भगवान् विष्णु देवकी के गर्भ रूप में तथा भगवती योगमाया यशोदा के गर्भ में स्थित हुई ।३-४। गोकुल में वसुदेवजी ने कंसे भय से रोहिणी को पहले ही गोकुल भेज दिया था ।५। इधर देवताओं की पूजनीय देवकी को कंस ने कारागृह में डालकर उनकी निगरानी के लिए सेवक नियुक्त कर दिये ।६। वसुदेवजी भी पुत्रोत्पत्ति का विचार करके तथा देवकी के प्रेम में आकर्षित होकर उन्हीं के साथ कारागृह में रहने लगे ।७।

देवकी गर्भगो विष्णुर्देवकार्यार्थसिद्धये ।
सस्तुतोऽमरसंघैश्च व्यवर्धत यथाक्रमम् ।८
संजाते दशमे तत्र मासेऽथ श्रावणे शभे ।
प्राजापत्यर्क्षसंयुक्ते कृष्णपक्षेऽष्टमीदिने ।९
बालकं सुषुवे तत्र निशीथे परमाद्भुतम् ।
तं दृष्ट्वा विस्तयं प्राप देवकी बालकं शुभम् ।१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पतिं प्राह महाभागा हर्षोत्फुल्लकलेवरा ।
पश्य पुत्रमुखं कांत दुर्लभं हि तव प्रभो ।११
जद्यैनं कालरूपोऽसौ घातयिष्यति भ्रातृजः ।
वसूदेवस्तथेत्युक्त्वा तमादाय करे सुतम् ।१२
अपश्यच्चाननं तस्य सुतस्याद्भुतकर्मणः ।
वीक्ष्य पुत्रमुखं शौरिश्चिंताविष्टो बभूव ह ।१३
किं करोमि कथंन स्याद्दुःखमस्य कृते मम ।
एवं चिन्तातुरे तस्मिन्वाचाशरोरिणी ।१४

देवकी के गर्भ में विद्यमान् भगवान विष्णु की देवता स्तुति करने लगे और जब दसवाँ मास पूर्ण हुआ और श्रावण मास (दीक्षणात्योंकी गणनानुसार श्रावण मास को ही उत्तर भारतीय गणनानुसार भाद्रपद माना जाता है)के कृष्ण पक्षकी अष्टमी आ गयी ।८-९। उसी अर्ध रात्रि को देवकी ने परम अद्भुत पुत्र को उत्पन्न किया, जिसे देखकर स्वयं देवकी विस्मित हो गई ।१०। हर्ष से उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रफुल्लित हो गये, उन्होंने वसुदेव से कहा—हे स्वामिन्, इस सुन्दर बालक का मुख देख लीजिये, फिर तो इसका दर्शन भी दुर्लभ हो जायगा ।११। तब वसुदेव ने 'अच्छा' कहकर उस शिशु को अपने हाथों में ले लिया ।१२। उस अद्भुत पुत्रका मुख देखते-देखते वसुदेव घोर चिन्ता से व्याकुल हो उठे ।१३। उन्होंने सोचा कि इसके वियोगका दुःख न उठाना पड़े, इसके लिये मुझे क्या करना चाहिए ? तभी सहसा आकाशवाणी हुई ।१४।

वसुदेवं समाभाष्य गगने विशदाक्षरा ।
बसुदेव गृ हीत्वैन गोकुलं नय सत्वरः ।१५
मुक्त्वैनं नन्दगेहे त्वं योगमायां समानयः ।
श्रुत्वैवं बसुदेवस्तु तस्मिन्कारागृहे गतः ।१६
विवृतं द्वाररमालोक्य बभूव तरसा नृप ।
तमादाय ययावाशु द्वारपालैरक्षितः ।१७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगमायाप्रभावेण तताराणकदुन्दुभिः ।
गत्वा तु गोकुलं शौरिनिशीथे निर्जन पथि ।१८
नन्दद्वारे स्थितः पश्यन्विभूतिं पशुसंज्ञिताम् ।
तदेव तत्र संजाता यशोदा गर्भसंभवा ।१९
योगमायाशजा देवी त्रिगुणा दिव्यरूपिणी ।
जाता तां बालिकां दिव्यां गृहीत्वा करपङ्कजे ।२०
तत्रागत्या ददौ देवी सैरन्धीरूपधारिणी ।
बसुदेवः सुतं दत्वा सैरंध्रीकरपङ्कजे ।२१

उसने वसुदेवजी को सम्बोधित करते हुए स्पष्ट कहा—हे वसुदेव तुम इस शिशु को गोकुल में पहुँचा दो ।१५। इसे नन्द के घर में छोड़ कर वहाँ उत्पन्न हुई योगमाया को ले आओ । यह सुनकर वसुदेव जी उठे और उन्होंने देखा कि कारागार के फाटक खुले हैं, तब शीघ्रता से शिशु को उठाकर द्वारपालों की दृष्टिसे निकल गये ।१६-१७। योगमाया के प्रभाव से उन्होंने सकुशल यमुना पारकी और गोकुल जा पहुँचे ।१८ उसी समय यशोदा के गर्भ से बालिका उत्पन्न हुई । जिसे सैरन्ध्री (नाइन का रूप धरे हुए भगवती) ने स्वयं ही आकर वसुदेवजी को दे दिया और उन्होंने भी अपना पुत्र उसके हाथों में थमा दिया ।१९-२१

तामादाय ययौ शीघ्रं बालिकां सुदिताशयः ।
कारागारे ततो गत्वा देवक्याः शयने सुताम् ।२२
निक्षिप्य संस्थितः पार्श्वे चिन्ताविष्टो भयातुरः ।
रुरोद सुस्वरं कन्या तदैवागतसंज्ञकाः ।२३
उत्तस्थुःसेवका राज्ञः श्रुत्वा तद्रुदितं निशि ।
तमूचुर्भुपतिं गत्वा त्वरितास्तेऽतविह्वलाः ।२४
देवक्याश्च सुतो जातः शीघ्रमेहि महामते ।
आकर्ण्य वचस्तेषां शीघ्रं भोजपतिर्ययौ ।२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रावृतं द्वारमालोक्य बसुदेवमथाब्रवयत् ।
सुतमानय देवक्या बसुदेव महामते ।२६
तामादाय सुतां पाणौ ददौ चाशु रुदन्निव ।
दृष्ट्वाऽथ दारिकां राजा विस्मयं परम गतः ।२७

देववाणी वृथा जाता नारदस्य च भाषितम् ।
बसुदेवः कथं कुर्यादनृतं सङ्कटे स्थितः ।२८

वे प्रसन्न हृदय होते हुए उस कन्या को लेकर तुरन्त लौट पड़े और कारागार में पहुँच कर उसे देवकीकी शैय्या पर लिटा दिया। वह उच्च स्वर में रोने लगी, जिसे सुनकर द्वारपाल जाग गये और शीघ्रता पूर्वक कंस के पास जाकर बोले ।२२-२४। हे महाराज ! देवकी ने पुत्र को जन्म दिया है, आप शीघ्र चलिये । यह सुनकर कंस तुरन्त ही कारा-गृह में जा पहुंचा ।२५। कंस ने वसुदेव को बुलाकर कहा हे महामते ! आप देवकी के नवजात शिशु को ले आइये ।२६। उन्होंने वह कन्या लाकर कंसके हाथोंमें देदी और वह रोने लगी । परन्तु कन्याको देखकर कंस ने सोचाकि नभवाणी और नारद का कथन दोनों मिथ्या हुए। ऐसे घोर संकटकी स्थिति में वसुदेव तो कोई छल कर नहीं सकते ।२७-२८।

सन्देहोऽत्र न कर्तव्यः कालस्य विषमा गतिः ।
इति संचित्य तां बालां गृहीत्वा पादयोः खलः ।२९
पोथयामास पाषाणे निर्घृणः कुलपांसनः ।
सा कराग्निः सृता बाला ययावाकाशमण्डलम् ।३०
दिव्यरूपा तदा भूत्वा तमुवाच मृदुस्वरा ।
किं माया हतया पाप जातस्ते बलवान्रिपुः ।३१
हनिष्यति दुराराध्यः सर्वथा त्वां नराधमम् ।
इत्युक्त्वा सा गता कन्या गगनं कामगा शिवा ।३२
कंसस्तु विस्मयाविष्टो गतो निजगृहं तदा ।
चिंताविष्टोऽतिदीनात्मा चिंतयित्वैव तं पुनः ।३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल की गति विचित्र है, अब सन्देह व्यर्थ है ऐसा विचार कर दुष्ट ने उस बालिका के पाँव पकड़े और निर्दयता पूर्वक जोर से घुमा कर उसे पत्थर पर पछाड़ने लगा, तभी वह कन्या उसके हाथ से छूटकर आकाश में चली गई।२८-३०। वहाँ जाकर दिव्य रूपिणी वह कन्या मधुर स्वर में बोली अरे पापी ! मेरे मारने से तुझे क्या लाभ होगा ? तेरा महाबली रिपु तो उत्पन्न हो चुका है।३१। वह दुराराध्य पुरुष तुझ नराधम का अवश्य ही वध करेंगे। यह कह कर कन्या रूपिणी वहशिवा आकाश में जाकर स्थित हो गई।३२। यह सुनकर अत्यन्त विस्मय में भरा हुआ कंस अपने भवन को लौट गया। वहां वह अत्यन्त चिंतित होकर उस शत्रु के विषय में बारम्बार विचार करने लगा।३३।

—❀—

श्रीकृष्ण विवाह

प्रातर्नन्दगृहे ततः पुत्रजन्ममहोत्सवः।
किवदंत्यथ कंसेन श्रुत्वा चारमुखादपि।१
जानाति बसुदेवस्य दारास्तत्र वसन्ति हि।
पशवो दासवगश्च सर्वे ते नन्दगोकुले।२
तेन शङ्कासमाविष्टो गोकुलं प्रति भारत।
नारदेनानि तत्सर्वं कथितं कारण पुरा।३
पूतना निहता तत्र कृष्णेनामितेजसा।
बको वत्सासुरश्चापि धेनुकश्च महाबलः।४
प्रलंबो निहतस्तेन तथां गोवर्धनो धृतः।
श्रुत्वंतत्कर्म कंसस्तु मेवे मरणमात्मनः।५
तथा विनिहतं केशीं ज्ञात्वा कंसोऽतिदुर्मनाः।
धनुर्यागमिषेणाशु तावनेतुं प्रचक्रमे।६
अक्रूरं प्रेषयामास क्रूरः पापमतिस्तदा।
आनेतुं रामकृष्णौ च तथामितविक्रमौ।७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यासजी बोले—हे राजन ! प्रातःकाल होने पर नन्दजी के यहाँ पुत्र जन्म महोत्सव मनाया गया और यह समाचार कंस पर भी पहुँच गया ।१। कंस इसे पहिले से ही जानता था कि वसुदेव की स्त्री और सेवक आदि नन्द के गोकुल में रह रहे हैं ।२। इसीलिये यह गोकुल के प्रति बहुत सशंक हो गया था ।३। फिर जब इसे मालूम हुआ कि कृष्ण ने पूतना आदि को मार डाला तब तो उसने अपना मरण निश्चय रूप से समझ लिया ।४-५। उसने धनुष यज्ञ महोत्सव के बहाने से कृष्ण को मथुरा बुलाने का षड्यन्त्र रचा ।६। उसने कृष्ण बलराम का वध करने के उद्देश्य से उन्हें लिवा लाने के लिये अक्रूर को उनके पास भेजा।७।

रथमारोप्य गोपालौ गोकुलाद्गौदिनीसुतः ।
आगता मथुरायां तु कंसादेशे स्थितः किल ।८

तावागत्य तदा तत्र धनुर्भङ्गं च चक्रतुः ।
हत्वाऽथ रजकं कानं गजं चाणूरमुष्टिकम् ।९

शलं च तौशलं चैव विजघान हरिस्तदा ।
जघान कंस देवेशः केशेष्वाकृष्य लीलया ।१०

पितरौ मोचयित्वाऽथ गतदुःखौ चकार ह ।
उग्रसेनाय राज्यं तद्ददावरिनिषूदनः ।११

मागधस्तु जरासन्धो जामातृवधदुःखितः ।
कृत्वा सैन्यमाजं स मथुरामागतः पुरीम् ।१२

स सप्तदशवारं तु कृष्णेन कृतबुद्धिना ।
चितः संग्राममासाद्य मधुपुर्या निवासिना ।१३

पश्चाच्च प्रेरितस्तेन स कालयवनाभिधः ।
सर्वस्मेच्छाधिपः शूरो यादवानां भयंकरः ।१४

अक्रूर ने गोकुल जाकर कृष्ण-बलराम को अपने रथ में बिठाया और मथुरा ले आये ।८। वहाँ जाकर उन्होंने यज्ञशाला में स्थित धनुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तोड़ दिया, कंस के धोबी, कुवलयापीड हाथी, प्रसिद्ध मल्ल चानूर, मुष्टिक, शल और तोशल का बध कर दिया और लीला-पूर्वक कंस के केश पकड़कर मञ्च से नीचे घसीट कर मार डाला ।९-१०। फिर माता पिता को कारागृह से मुक्त किया और अपने नाना उग्रसेनको राज्यपर स्थापित किया ।११। तभी मगधाधिपति जरासंध विशाल सेना लेकर मथुरा पर चढ़ आया ।१२। परन्तु श्रीकृष्ण ने अपने बुद्धि बल से उसे सत्तरह बार बुरी तरह हराया ।१३। उसने कालयवन को प्रेरित किया जो म्लेच्छों का राजा तथा यादवों के लिये भयंकर था ।१४।

श्रुत्वा यवनमायातं कृष्णः सर्वान् यदूत्तमान् ।
आनय्य च तथा राममुवाच मधुसूदनः ।१५
भयं नोऽत्र समुत्पन्नं जरासंधान्महाबलात् ।
किं कर्तव्यं महाभाग यवनः समुपैति वै ।१६
प्राणत्राणं प्रकर्तव्यं त्यक्त्वा गेहं बलं धनम् ।
सुखेन स्थीयते यत्र स देशः खलु पैतृकः ।१७
द्वारवत्यां गमिष्यामः सहिता सर्व एव वै ।
कथिता गरुडेनाद्य रम्या द्वारावती पुरी ।१८
रैवताचलसान्निध्ये सिन्धुकूले मनोहरा ।
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य सर्वे यादवपुङ्गवाः ।१९
गमनाय मतिं चक्रुः सकुटुम्बाः सवासनाः ।
शंकटानि तथोष्ट्राश्च बाभ्यश्च महिषास्तथा ।२०
धनपूर्णानि कृत्वा ते निर्ययुर्नगराद्बहिः ।
रामकृष्णौ पुरस्कृत्य सर्वे ते सपरिच्छदाः ।२१

श्रीकृष्ण ने यादवों सहित बलरामजी से कहा हम जरासंध और कालयवन, दोनों के खतरे में पड़े हैं । अब आप बताइये कि हमारा क्या कर्त्तव्य है ? ।१५-१६। अब तो हमें अपनी प्राण रक्षा का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपाय करना चाहिये। घर सेना, और धन को छोड़कर, जहाँ भी सुख पूर्वक रह सकें वहीं हमारा पैतृक देश हो जायगा।१७। अब हम पुरी द्वारावती चलेंगे। गरुड़ ने मुझे बताया है कि वह अत्यन्त रमणीक स्थान है।१८। वह रैवताचल के समीप और समुद्र तट पर बसी हुईहै। यह सुनकर सभी यादवों ने उसे मान लिया।१९। वे सभी अपने कुटुम्ब और वाहनादि के सहित बलराम कृष्ण के नेतत्व में मथुरा छोड़कर चल दिये।२०-२१।

अग्रे कृत्वा प्रजाः सर्वाश्चेलुः सर्वे यदूत्तमाः।
कतिचिद्दिवसैः प्रापुः पुरीं द्वारावतीं किल।२२
शिल्पिभिः कारयामास जीर्णोद्धारं हि माधवः।
संस्थाप्य यादवांस्तत्र तावेतौ बलकेशवौ।२३
तरसा मथुरामेत्य संस्थितौ निर्जनां पुरीम्।
तदा तत्रैव सम्प्राप्तो बलवान् यवनाधिपः।२४
ज्ञात्वैनमागतं कृष्णो निर्ययौ नगराद्बहिः।
पदातिरग्रे तस्यामूद्यवनस्य जनार्दनः।२५
पीताम्बरधरः श्रीमान्प्राहसन्मधुसूदनः।
तंदृष्ट्वा पुरतो यातं कृष्णं कमललोचनम्।२६
यवनोऽपि पदातिः सन्पृष्ठतोऽनुगतः खलः।
प्रसुप्तो यत्र राजर्षि मुचकुन्दो महाबलः।२७
प्रययौ भगवांस्तत्र सकालयवनो हरिः।
तत्रैतांतर्दधे विष्णुमुचुकुन्दं समीक्ष्य च।२८

तब प्रजाजनों को आगे करके यादव वीर पीछे-२ चले। कुछ ही दिनों में द्वारका नगरी में जा पहुँचे।२२। वहाँ जाकर उस नगरी का कुशल शिल्पियों द्वारा जीर्णोद्धार कराया और उसमें सब यादवों को बसाकर बलराम कृष्ण दोनों भाई मथुरा पहुँच गये। उनके वहाँ पहुँचते ही काल यवन भी आ पहुँचा।२२-२४। जब श्री कृष्णने उसका आगमन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुना, वैसे ही यह मथुरा नगरी से बाहर निकल कर कालयवन के आगे चल दिये ।२५। उस समय मधुसदन श्रीकृष्ण सुन्दर पीताम्बर धारण किये हुए उठ कर हँस रहे थे । उन्हें आगे भागते देखकर कालयवन भी उनके पीछे भागा । इस प्रकार भगवान् उसे वहाँले गये महाबलवान राजर्षि मुचुकन्द सो रहेथे उन्हें देखकर कृष्ण अन्तर्धानहो गये ।२६-२८

तत्रैव यवनः प्राप्तः सुप्तमुपमपश्यत् ।
मत्वा तं वासुदेवं सा पादेनाताडयन्नृपम् ।२९
प्रबुद्धः क्रोधरक्ताक्षस्तं ददाह महाबलः ।
तं दग्ध्वा मुचुकन्दोऽथ ददर्श कमलेक्षणम् ।३०
वासुदेवं सुदेवेशं प्रणम्य प्रस्थितो वनम् ।
जगाम द्वारकां कृष्णो बलदेवसमन्वितः ।३१
उग्रसेनं नृपं कृत्वा विजहार यथारुचि ।
अहरद्रु क्मिणीं काम शिशुपालस्वयंवरात् ।३२
राक्षसेन विवाहेन चक्रे दारविधिं हरिः ।
ततो जांबवतीं सत्यां मित्रविन्दां च भामिनीम् ।३३
कालिन्दीं लक्ष्मणां भद्रां तथा नाग्नजितीं शुभाम् ।
पृथक्पृथक्समानीयाप्युपयेमे जनार्दनः ।३४
अष्टावेव महीपाल पत्न्यः परमशोभनाः ।
प्रासूत रुक्मिणी पुत्रं प्रद्युम्नं चारुदर्शनम् ।३५

तभी कालयवन ने कहाँ आकर सोते हुए राजा मुचुकुन्द को कृष्ण समझकर लात मारी ।२९। जागकर मुचुकुन्द ने जैसे ही क्रोध से उसे देखा, वैसे ही कालयवन वहीं भस्म हो गया ।३०। तब देवदेवेश कृष्ण को प्रणाम करके मुचुकुन्द ने तपस्या करने के लिए वन को प्रस्थान किया और बलराम के सहित कृष्ण द्वारका चले गये ।३१। वहाँ उग्रसेन को राजा बनाकर स्वेच्छा पूर्वक विचरने लगे । फिर राजा भीष्म की पुत्री रुक्मिणी को शिशुपाल के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ होने वाले स्वयंवर से कृष्ण ने हरण कर लिया ।३२। फिर उन्हें अपने यहाँ लाकर राक्षस विधि से वैवाहिक कार्य सम्पन्न किया। फिर उन्होंने जाम्बवती, सत्यभामा, मित्रविदा, कालिंदी, लक्ष्मणा, भद्रा, नाग्नजिति आदि शुभ नारियों से पृथक्-२ विवाह किया ।३३-३४।उनमें से रुक्मिणी के गर्भ से प्रद्युम्न उत्पन्न हुए ।३५।

जातकर्मादिकं तस्य चकार मधुसूदनः ।
हृतोऽसौ सूतिकागेहाच्छंवरेण बलीयसा ।३६
नीतिश्च स्वपुरीं बालो मायावत्यै समर्पितः ।
वासुदेवो हृतं दृष्ट्वा पुत्रं शोकसमन्वितः ।३७
जगाम शरणं देवी भक्तियुक्तेन चेतसा ।
वृत्रासुरादयौ दैत्या लीलायैव यया हताः ।३८
ततोऽसौ योगमायायाश्चकार परमां स्तुतिम् ।
वचोभिः परमोदारै पक्षरैः स्तवनै शुभैः ।३९
मातर्मयाऽवितपसा परितोषिता त्वं
प्राग्जन्मनि सुमनादिभिरर्चिताऽसि ।
धर्मात्मजेन बदरीवनखण्डमध्ये
किं बिस्मृतो जननि ते त्वयि भक्तिभावः ।४०
सूतीगृहादपहृतः किमु बालको मे
केनापि दुष्टमनसा ऽत्यथ कौतुकाद्वा ।
मानापहारकारणाय ममाद्य नूनं
लज्जा तवाम्ब खलु भक्तजनस्य युक्ता ।४१
सृष्टिं करोषि जगताजनुपालनं च
नाशं तथैव पुनरप्यनिशं गुणैस्त्वमम् ।
को वेद तेऽम्ब चरितं दुरितांतकारि
प्रायेण सर्वमखिलं विहितं त्वयैसत ।४२

श्रीकृष्ण ने इस शिशुका जातकर्म आदि संस्कार कराया ही था, तभी सूतिका गृह से उसे शंबरासुर चुराकर ले गया ।३६। उसने प्रद्युम्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को आपने यहाँ ले जाकर अपनी पुत्री मायावती को दिया। उधर पुत्र का हरण हुआ सुनकर कृष्ण अत्यन्त दुःखित हुए।३७। फिर वे भक्ति पूर्वक उन्हीं भगवती की शरण में गये, जिन्होंने वृत्रासुर आदि असत्य दैत्यों को लीला पूर्वकही नष्ट कर दिया था।३८। फिर वे परम मङ्गल प्रद स्मृति वाक्यों के द्वारा उन परमशक्ति, योगमाया का मधुर वाणी से स्तवन करने लगे।३९। श्रीकृष्ण बोले—हे माता! मैंने पूर्वजन्म में नारायण ऋषि के रूप में घोर तप किया भक्ति-भाव पूर्वक आपका पूजन किया था। हे जननि! क्या आपको उसका विस्मरण हो गया? ।४०। किसी दुष्ट ने अपने कौतुक के लिए अथवा मुझे अपमानित करने को सूतिकागृह से मेरे शिशु को चुरा लिया है। अब हे माता! अपने भक्त की लाज तो आपको रखनी होगी।४१। हे अम्बे! आप सत्व रज और तम के द्वारा इस त्रिगुणात्मक सृष्टि की उत्पति, स्थिति और संहार करने वाली हैं।४२।

यज्ञं करोमि तव तुष्टिकरं व्रतं वा
दव च पूजनमथाखिलदुःखहा त्वम्।
मातः सुतोऽत्र यदि जीवति दर्शयाशु
त्वं वै क्षमा सकलशोकविनाशनाय।४३
एवं स्तुवा तदा देवी कृष्णेनाक्लिष्टकर्मणा।
प्रत्यक्षदर्शना भूत्वा तमुवाच जगद्गुरुम्।४४
शोकं मा कुरु देवेश शापोऽयं ते पुरातनः।
तस्य योगेन पुत्रास्ते शम्बरेण हृतो बलात्।४५
अतस्ते षोडशे वर्षे हत्वा तं शम्बरं बलात्।
आगमिष्यति पुत्रस्ते मत्प्रसादान्न संशय।४६
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवी चाण्डिका चण्डविक्रमा।
भयवानपि पुत्रस्य शोक त्यक्त्वात्मवत्सुखी।४७

हे माता! आपकी संतुष्टिके लिएमैं यज्ञ,नवरात्र व्रत और आपका पूजन करूँगा। क्योंकि आप सम्पूर्ण सङ्कटों को दूर, करने में समर्थहैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि मेरा पुत्र जीवित हो तो उसे मुझे शीघ्र दिखलाइये, क्योंकि आप सभी का शोक नष्ट करती हैं ।४३। इस प्रकार स्तुत होकर भगवती ने उस जगद्गुरु कृष्ण को दर्शन दिया और बोली ।४४। हे देवेश ! शोक मत करो । पूर्वकालीन शाप के कारण ही तुम्हारे पुत्र को शम्बरासुर ने बलात् अपहरण किया है ।४५। जब प्रद्युम्न सोलह वर्ष की आयु को प्राप्त होगा, तब मेरी कृपासे स्वयंही शम्बरासुर का वध करके तुम्हारे पास आ जायगा इसमें संशय नहीं है ।४६। यह कह प्रचण्ड विक्रम वाली चंडिका तुरन्त अन्तर्धान हो गई और कृष्ण भी उनका आदेश सुनकर शोक छोड़कर सुखी हुए ।४७।

—×—

पराशक्ति की सर्वज्ञता

सन्देहो मे मुनिश्रेष्ठ जायते वचनात्तव ।
वैष्णवांशे भगवति दुःखोत्पति विलोक्य च ।१
नारायणांशसम्भूती बासुदेवः प्रतापवान् ।
कथं स सूतिकागाराद्धृतो बालो सरेररपि ।२
न ज्ञातो बासुदेवेन चित्रमेतन्ममाद्भुतम् ।
जायते महदाश्चर्य चित्ते सत्यवतीसुत ।३
माया बलवती राजन्नराणां बुद्धिमोहिनी ।४
मानुषं जन्म सम्प्राप्य गुणाः सर्वेऽपि मानुषाः ।
भवन्ति देहजा कामं न देवा नासुरास्तदा ।५
क्षुत्तृन्निद्राभयं तन्द्रा व्यामोहः शोकसंशयः ।
हर्षश्चैवाभिमानश्च जरामरणमेव च ।६
जज्ञानं ग्लानिरप्रीतिरीर्ष्याऽसूया मदः श्रमः ।
एते देहभवाः प्रभवन्ति नराधिप ।७

जनमेजय बोले—हे मुनिश्रेष्ठ ! विष्णु के अंशावतार श्री कृष्ण को दुःख पाते हुए देखकर मेरे मन में बड़ा सन्देह है । ।१। नारायण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के अंश से सम्भूत और महा प्रतापी कृष्ण के शिशु की भी सूतिका गृह से शम्बरासुर ने किस प्रकार चुरा लिया ? ।२। यह कैसी अद्भुत बात है कि भगवान् वासुदेव भी इसका पता नहीं पा सके । हे सत्यवती-सुत! हे ब्रह्मन् ! इस विषय में मुझे घोर विस्मय हो रहा है ।३। व्यास जी बोले हे राजन् ! माया बलवती है, वह बुद्धि को मोहित कर लेती है ।४ मनुष्य जन्म पाकर मानवी गुणों का रहना स्वाभाविक है। पूर्व जन्म में देवता रहा हो या दैत्य मनुष्ययोनि में आकर तो उसे उन्हीं के अधीन रहना पड़ेगा।५। क्षुधा पिपासा, निद्रा, भय, तन्द्रा, व्यामोह, शोक,संशय, हर्ष, अभिमान, वृद्धावस्था, मृत्यु, अज्ञान ग्लानि, प्रीति, ईर्ष्या असूया, मद और श्रम यह सभी मनुष्य शरीर में विद्यमान रहते ही हैं ।६-७।

तथैवं मानुषान्भावान्नात्र कार्या विचारणा ।
पूर्वं संसभयात्प्राप्तो गोकुले यदुनन्दनः ।८
जरासन्धभयात्पश्चाद्द्वारावत्यां गतो हरिः ।
अधर्मं कृतवान्कृष्णो रुक्मिण्या हरण च यत् ।९
शिशुपालहृतायाश्च जानन्धर्मं सनातनम् ।
शुशोच बालक कृष्णः शम्बरेण हृतं बलात् ।१०
मुमोद जानन्पुत्रं त हर्षशोकयुतस्ततः ।
सत्यभामाज्ञया यत्तु युयुधे स्वर्गतः किल ।११
इन्द्रेण पादपार्थं तु स्त्रीजितत्वं प्रकाशयत् ।
जहार कल्पवृक्ष यः पराभूय शतक्रतुम् ।१२
मानिनीमानरक्षार्थं हरिश्चित्रधरः प्रभुः ।
बद्ध्वा वृक्षे हरिं सत्या नारदाय ददौ पतिम् ।१३
दत्त्वाऽथ कामकं कृष्णं मोचयामास भामिनी ।
दृष्ट्वा पुत्रान्पुरुगुणान्प्रद्युम्नप्रखानथ ।१४
कृष्णं जांववती दीना ययाचे सन्ततिं शुभाम् ।
स ययौ पर्वतं कृष्णस्तपस्याकृतनिश्चयः ।१५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण में भी यह सभी भाव विद्यमान थे, इसमें विचार करना व्यर्थ है। प्रथम तो उन्हें कंस के भय से गोकुल ही जाना पड़ा ।८। फिर उन्हें जरासन्ध से डरकर मथुरा छोड़ना पड़ा और द्वारका को भागना पड़ा। वहाँ उन्हें रुक्मिणी-हरण जैसा अधर्म भी करना पड़ा ।९। क्योंकि वे सनातन धर्म के ज्ञाता थे और यह भी जानते थे कि रुक्मिणी शिशुपाल की वाग्दत्ता है तो भी उसका हरण किया। फिर जब उनके शिशु को शम्बर ले गया तब वे उसका शोक करने लगे ।१०। और देवी के द्वारा पुत्र के जीवित रहने की बात जानकर प्रसन्न हो गये। उन स्त्री-परायण ने सत्यभामा की आज्ञा से पारिजात वृक्ष की प्राप्ति के लिए स्वर्ग में जाकर इन्द्र से युद्ध किया और वृक्ष को ले आये ।११-१२। मानिनी सत्यभामा के मान-रक्षार्थ वे चित्र बने और सत्यभामा ने उन्हें वृक्ष से बाँधकर नारदजी को दानकर दिया ।१३। फिर प्रद्युम्न आदि विशिष्ट गुण सम्पन्न पुत्रों को देखकर जाम्बवती को भी वैसी ही सन्तान की अभिलाषा हुई तो उसने कृष्ण से याचना की, तब तपस्या का निश्चय करके वे पर्वत पर गये ।१४-१५।

जजाप शिवमन्त्रं तु शिवध्यानपरो हरिः ।
द्वितीये तु जलाहारःनिष्ठन्नेकपदा हरिः ।१६
तृतीये वायुभक्षस्तु पदांगुष्ठाग्रसंस्थितः ।
पष्ठे तु भगवान्रुद्रः प्रसन्नो भक्तिभावतः ।१७
दर्शनं च ददौ तत्र सोमः सोमकलाधरः ।
आजगाम वृषारूढः सुरैन्द्रादिभिर्वृतः ।१८
ब्रह्मविष्णुयुतः साक्षाद्यक्षगन्धर्वसेवित ।
सम्बोधयन्वासुदेवं शङ्करस्तु तमुवाच ह ।१९
तुष्टोऽस्मि कृष्ण तपसा तवोग्रेण महामते ।
ददामि वांछितान्कामांब्रूहि यादवनन्दनः ।२०
स्थितस्तु पुरतः शम्भोर्वासुदेवः सनातन ।
देव देव जगन्नाथ सर्वभूतार्तिनाशन ।२१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वयोने सुरारिघ्न नमस्त्रैलोक्यकारक।
नीलकण्ठ नमस्तुभ्यं शूलिने ते नमोनमः ।२२

वहाँ शिवमंत्र से जपपूर्वक भगवान् शंकर का ध्यान करने लगे।दूसरे मास केवल जल का सेवन करते हुए, एक पाँव से खड़े होकर उन्होंने तप किया ।१६। तीसरे महीने केवल वायु भक्षण करते हुए पैर के अँगूठे के आधार से ही खड़े रहे। उनके कठोर तप से छठे मास शिवजी प्रसन्न हुए ।१७। तब नन्दी बैलपर आरूढ़ चन्द्रकला धारण करने वाले शिवजी ने इन्द्रादि देवताओं के सहित वहां आकर कृष्ण को दर्शन दिये ।१८। ब्रह्मा-विष्णु भी उनके साथ थे, यक्ष और गधर्व उनकी सेवा में तत्पर थे, तब शिवजी ने भगवान वासुदेव को सम्बोधित करते हुए कहा ।१९। हे कृष्ण ! हे महामते ! मैं आपके तप से अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ, जो आपकी कामना हो, वही मुझसे माँगिये।२०। तब वे सनातन पुरुष कृष्ण शिवजी से जाकर बोले-देवदेव! हे जगन्नाथ ! हे सब प्राणियों के दुःख दूर करने वाले प्रभो ! हे विश्वयोने ! हे देव-शत्रु के हन्ता ! तीनों लोकों के रचने वाले हे नीलकंठ ! हे त्रिशूल धारण करने वाले शङ्कर ! आपको बारम्बार नमस्कार है ।२१-२२।

पारतन्त्र्य सदा बन्धो मोक्षवार्ताऽत्र दुर्लभा।
रुक्मिण्यास्तनयान्दृष्ट्वा भार्या जाम्बवती मम ।२३
प्रेरयामास पुत्रार्थं तपसे मदनान्तक।
सकामेन मया तप्त तपः पुत्रार्थमद्यवै ।२४
इत्युक्तवन्तं गोविन्दं प्रत्युवाच महेश्वरः।
बहवस्ते भविष्यान्ति पुत्राःशत्रुनिषूदन ।२५
स्त्रीणां षोडशसासहस्रं भविष्यन्ति शतार्धकम्।
तासु पुत्रा दश दश भविष्यन्ति महाबलाः ।२६
इत्युक्तोपररामाशु शंकरः प्रियदर्शनः।
उवाच गिरिजा देवी प्रणतं मधुसूदनम् ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण कृष्ण महाबाहो संसारेऽस्मिन्नराधिप ।
गृहस्थप्रवरो लोके भविष्यति भवानिह ।२८
ततो वर्षशतांते तु विप्रशापाज्जनार्दन ।
गांधार्याश्च तथा शापाद्भविता ते कुलक्षयः ।२९

गृहस्थाश्रम में सदा परतन्त्रता रहती है, स्त्री-पुत्रादि के बन्धनों में जकड़े रहने से मोक्ष की चर्चा ही दुर्लभ है । रुक्मिणी के पुत्रों को देख-कर वैसे ही पुत्र की अभिलाषा से जाम्बवती ने तपस्या के लिए मुझे प्रेरित किया था, इसीलिए मैंने यह तप किया है । ।२३-२४। भगवान् गोविन्द के ऐसा कहने पर शिवजी ने उत्तर दिया कि हे शत्रु-निसूदन ! आपके बहुतेरे पुत्र होंगे ।२५। सोलह हजार पचास पत्नियाँ होंगी उनमें से प्रत्येकके दश-दस पुत्र होंगे ।२६। यह कहकर शिवजी तो मौन हो गये और भगवती गिरिजा ने उन विनीत मधुसूदन कृष्ण से कहा ।२७। हे महाबाहो ! तुम इस विश्व के गृहस्थों में श्रेष्ट होंगे । परन्तु सौ वर्ष बीतने पर ब्राह्मण के और गाँधारीके शाप के कारण तुम्हारा कुल नष्ट हो जायगा ।२८-२९।

परस्परं निहत्याजौ पुत्रास्ते शापमोहिताः ।
सानुजास्त्वं तथा देहं त्यक्त्वा यास्यसि वै दिवम् ।३०
शोकस्तत्र न कर्तव्यो भवितव्यं प्रति प्रभो ।
अवश्यंभाविभावानां प्रतीकारो न विद्यते ।३१
तत्र शोको न कर्तव्यो नूनं मत मतं सदा ।
अष्टावक्रस्य शापेन भार्यास्ते मधुसूदनः ।३२
चौरेभ्यो ग्रहणं कृष्णं गमिष्यन्ति मृते त्वयि ।
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे शम्भुः सोमः असुरमण्डलः ।३३
उपमन्युं प्रणम्याथ कृष्णोऽपि द्वारकां ययौ ।
यस्माद्ब्रह्मादयो राजन्सति यद्यप्यधीश्वराः ।३४
तथापि मायाकल्लोलयोगमंक्षु भितांतराः ।
तदधीनाः स्थिताः सर्वे काष्ठपुत्तलिकोपमाः ।३५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शापवश तुम्हारे पुत्र भी एक दूसरे पर प्रहार करते हुए नष्ट होंगे और तुम दोनों भाई भी देह त्याग कर देवलोक को प्राप्त होगे ।३०। हे प्रभो ! भवितव्य तो अवश्य होकर रहेगा, उसका कोई प्रतिकार नहींहै, इसलिए शोक मत करो ।३१। मेरे मत में तो भवितव्य के सामने शोक करना उचित नहीं है । यह कहने के पश्चात् शिवजी सभी देवतादि के साथ अन्तर्धान हो गये ।३२-३३। तब श्रीकृष्ण अपने गुरु उपमन्यु को प्रणाम करके द्वारका चले गये । इस प्रकार हे राजन् ! ब्रह्मादि देवता अधीश्वर तो कहे जाते हैं, परन्तु माया रूपिणी नदी की लहरोंमें उनका अन्तःकारण उसी प्रकार क्षुभित रहताहै जैसे कटपुतली बाजीगरके वश में नाचती है ।३४-३५।

यथा यथा पूर्वभव कर्म तेषां तथा तथा ।
प्रेरयत्यनिश माया परब्रह्मस्वरूपिणी ।३६।
न वैषम्यं न नैर्घृण्यं भगवत्यां कदाचन ।
केवलं जीवमोक्षार्थं यतते भुवनेश्वरी ।३७
यदि सा नैव सृज्येत जगदेतच्चराचम् ।
तदा मया विना भूतं जडं स्यादेव नित्यशः ।३८
तस्मात्कारुण्यमाश्रित्य जगज्जीवादिक च यत् ।
करोति सततं देवी प्रेरयत्यनिशं च तत् ।३९
तस्माद्ब्रह्मादिनोहेऽस्मिन्कर्तव्यः संशयो न हि ।
मायांतःहातिनः सर्वे मायाधीनाः सुरासुराः ।४०
स्वतन्त्रा सर्व देवेशा स्वेच्छाचारविहारिणी ।
तस्मात्सर्वात्मना राजन्सेवनीया महेश्वरी ।४१
नातः परतरं किंचिदधिकं भुवनत्रये ।
एतद्धि जन्मसाफल्यं पराशक्तेः पदस्मृतिः ।४२

परब्रह्म स्वरूपिणी माया उनके पूर्व संचित कर्मों के अनुसार ही उनका प्रेरण करती रहती है ।३६। वे महामया विषय भाव और निर्दयता से परे करुणामयी रह कर सब जीवों को सदा भाव-बन्धन से मुक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने में सचेष्ट रहती हैं।३७। यदि वे देवी इस चराचर मय संसार को उत्पन्न न करती तो वह चेतना न रहने के कारण सदा जड़ ही बना रहता।३८। इसलिए वे जिन जीवों को उत्पन्न करती हैं, उनके प्रति सदैव दया भाव रखतीं और शुभ प्रेरणा देती रहती हैं।३९। इसलिए ब्रह्मादि देवताओंको मोह में पड़े देखकर किसी प्रकार का संशय न करे क्योंकि सभी देवता दैत्य आदि माया में पड़कर उन्हीं भगवतीके अधीन रहते हैं।४०। स्वतन्त्र और स्वेच्छाचार-पूर्वक रहने वाली तो ये महेश्वरी ही हैं, इसलिए हे राजन्, सर्वात्मना उन्हीं की सेवा करनी चाहिए।४१। त्रिभुवन में उनसे बढ़कर कोई भी देवता नहीं है ।४२।

माभूत्तत्र कुले जन्म यत्र देवी न दैवतम् ।
अहं देवी न चान्याऽस्ति ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् ।४३
इत्यभेदेन तां नित्यां चिन्तयेज्जगदम्बिकाम् ।
ज्ञात्वा गुरुमुखादेनां वेदांतश्रवणादिभिः ।४४
नित्यमेकाग्रमनसा भावयेदात्मरूपिणीम् ।
मुक्तो भवति तेनाशु नान्यथा कर्मकोटिभिः ।४५
श्वेताश्वरादयः सर्वे ऋषयो निर्मलाशयाः ।
आत्मरूपां हृदा ज्ञात्वा विमुक्ता भवबन्धनात् ।४६
ब्रह्माविष्ण्वादयस्तद्वद्गौरीलक्ष्म्यादयस्तथा ।
तामेव समुपायन्ते सच्चिदानन्दरूपिणीम् ।४७
इति तु कथितं राजन्यत्पृष्टं त्वयाऽनघ ।
प्रपंचतापत्रस्तेन किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।४८
एतत्ते कथितं राजन्मयाऽऽख्यानमनुत्तमम् ।
सर्वपापहरं पुण्य पुराणां परमाद्भुतम् ।४९
य इदं शृणयान्नित्यं पुराणं वेदसम्मितम् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो देवलोके महीयते ।५०

जिस कुल में भगवती की कुलदेवी के रूप में पूजा न होती हो, मैं उस कुल में कभी जन्म न लूँ। मैं देवी, देवता कुछ नहीं हूँ, केवल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोक-रहित ब्रह्म हूँ ।४३। ऐसा विचार रखते हुए किसीके साथ भेद-भाव न करे और जगदम्बा का चिन्तन करे। गुरु के मुख से वेदान्त श्रवण आदि उपायों के द्वारा उस भगवती को जाने ।४४। नित्य एकाग्र मन से उन आत्म रूपिणी अम्बिका का चिंतन करने से मुक्ति होती है। अन्यथा करोड़ों यत्न करने से भी मुक्ति नहीं मिलती ।४५। श्वेताश्वर आदि सभी निर्मल चितवाले ऋषिगण उन्हीं आत्म रूप देवीको जानकर भव-बन्धन से मुक्त हो चुके हैं ।४६। ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता और गौरी, लक्ष्मी आदि देवियाँ उन्हीं सच्चिदानन्दरूपा भगवती की सदा उपासना करती हैं ।४७। हे राजन्, तुमने विविध प्रपंच युक्त तापों से सम्बन्धित जो प्रश्न किये, उन सब का उत्तर दे चुका हूँ। अब तुम्हें और क्या सुनने की इच्छा है ? ।४८। हे जनमेजय, यह सम्पूर्ण पापोको हरने वाला पुण्यप्रद पुरातन और परम अद्भुत आख्यान मैंने सुनाया है।४९। जो वेद द्वारा अनुमोदित इस पुराण को सुनता है, वह सभी पापोंसे मुक्त होकर अन्त में भगवती के लोक को जाता है।५०।

—❀—

महिषासुर को वरदान

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि विस्तरेण महामते।
श्रद्दधानाय शांताया न ब्रू यात्स तु मंदधीः ।१
पुरा युद्धमभूद्घोरं देवदानवसेनयोः।
पृथिव्यां पृथिवीपाल महिषाख्ये महापतौ ।२
महिषो नाम राजेन्द्र चकार तप उत्तमम।
गत्वा हेमगिरौ चोग्रं देवविस्मकारकरम् ।३
वर्षाणामयुतं पूर्णं चिंतयन्हृदि देवताम्।
तस्य तुष्टो महाराज ब्रह्मा लोकपितामहः ।४
तत्रगत्याब्रवीद्वाक्यं हंसारूढश्चतुर्मुखः।
वरं वरय धर्मात्मन्ददामि तव वांछितम् ।५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरत्वं देवदेव वांछामि द्रुहिणं प्रभो।
यथा मृत्युभयं न स्यात्तथा कुरु पितामह।६
उत्पन्नस्य ध्रुवं मृत्युर्ध्रुवंजन्म मृतस्य च।
सर्वथा मरणोत्पत्ती सर्वेषां प्राणिनां किल।७

व्यास जी वोले—श्रद्धा पूर्वक भगवती की कथा सुनाने के अभिलाषी को नहीं सुनाता, उसे मन्द वुद्धि वाला ही कहना चाहिए।१। हे राजन् जव महिषासुर इस पृथिवी का राजा था, तव देवताओं और दानवों में घोर संग्राम हुआ था।२। उस महिष नामक दैत्य ने एक समय सुमेरु पर्वत पर जाकर घोर तप किया था।३। हे राजन् उस दैत्य ने अपने चित्त में दस हजार वर्ष तक अपने इष्ट देव का ध्यान हुए तपस्या की थी, यह देखकर ब्रह्माजी उस पर प्रसन्न हो गये। ४। चतुर्भुज ब्रह्माजी हंस पर चढ़ कर उसके पास पहुँचे और कहने लगे—हे धर्मात्मन्, तुम वर माँगो, मैं तुम्हें अभिलषित वस्तु प्रदान करूँगा।५। इस पर महिषासुर ने कहा हे देव-देव, हे पितामह, मेरी इच्छा अमर होने कीहै,अतः आप मुझे अमरत्व प्रदान वाला वर दीजिये।६। ब्रह्माजी ने कहा—जो जन्मा है, उसकी मृत्यु अवश्य होगी और जो मरता है उसे पुनजन्म अवश्य धारण करना होगा। क्योंकि सांसारिक जीवों में जन्म और मृत्यु का क्रम अवश्यम्भावी है।७।

एकं स्थानं परित्यज्य मरणस्य महीपते।
ब्रूहि तं वरं साधो यस्ते मनसि वर्तते।८
न देवान्मानुषाद्दैत्यान्मरणं मे पितामह।
पुरुषान्न च मे मृत्युर्योषा मां का हनिष्यति।९
तस्मान्मे मरणं नूनं कामिन्याः कुरु पद्मज।
अबला हंत मां हंतु कथं शक्ता भविष्यति।१०
यदा कदाऽपि दैत्येन्द्र नार्यान्ते मरणं ध्रुवम्।
न नरेभ्यो महाभाग मृतिस्ते महिषासुर।११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं दत्वा वरं तस्मै ययौ ब्रह्मा निजालयम् ।
सोऽपि दैत्यवरं प्राप निजं स्थानं मुदान्वितः ।१२
एवं स महिषो गाम दानवो वरदर्पितः ।
प्राप्य राज्यं जगत्सर्वं वशे चक्रे महाबलः ।१३
पृथिवी पालयामास सागरातां भुजाजिताम् ।
एकच्छत्रा निरातकां वैरिवर्ग विवर्जिताम् ।१४

इसलिए हे पृथ्वीपते ! तुम अमरत्व की अपेक्षा अन्य जो चाहो वही मुझ से माँग लो ।८। महर्षि बोला—हे पितामह यदि वैसा सम्भव नहीं है तो यह वर दीजिये कि मृत्यु देवता, दानव या मनुष्यमें से किसी पुरुष के द्वारा न हो, इस प्रकार जब मैं पुरुष हाथ से हीं न मरूँगा तो स्त्री बेचारी करेगी ही क्या ! ।९। अतः हे पद्मज ! मरना अनिवार्य ही है तो मृत्यु किसी स्त्री के हाथ से हो क्योंकि उसमें मुझे मारने की शक्ति नहीं होगी ।१०। ब्रह्माजी बोले हे दैत्येन्द्र ! जब मरोगे तो स्त्री के हाथ से ही मरोगे, ।११। वर देकर ब्रह्माजी अपने लोक को गये और दैत्य महषासुर भी प्रसन्न होकर अपने स्थान को चला गया ।१२। व्यास जी बोले हे राजन् ! वर प्राप्त करके महिषासुर को अत्यन्त अभिमान हो गया ।१३। वह अपने बाहुबल से समुद्र पर्यन्त पृथिवी पर साम्राज्य करने लगा । उसे शत्रुओं से भी भय नहीं रहा ।१४।

सेनानीश्चिक्षुरस्तस्य महावीर्यो मदोत्कटः ।
धनाध्यक्षस्तथा ताम्रः सेनाऽयुतसमंऽवृतः ।१५
करदाश्च कृताः सर्वे भूमिपालाः पुरातनाः ।
निहिता ये बलोदग्रां क्षात्रधर्मव्यवस्थिताः ।१६
ब्राह्मणा वशगा जाता यज्ञभागसमापकाः ।
महिषस्य महाराजनिखिले क्षितिमण्डले ।१७
एकातपत्रं तद्राज्यं कृत्वा स महिषासुरः ।

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गं जेतु मनश्चक्रे वरदानेन गर्वितः ।१८
तन्निशम्य ससस्त्राक्ष कैलास निर्जगाम ह ।
ब्रह्माणं पुरतः कृत्वा लोकपालसमन्वितः ।१९
तुष्टाव शङ्करं गत्वा वेदमन्त्रै महेश्वरम् ।
प्रसन्नं पुरतः कृत्वा ययौ विष्णुपुरं प्रति ।२०
स्तुत्वा तं देवदेवेशं कामं प्रोवाच चात्मनः ।
महिषात्तद्भयं चोग्र वरदानमदोद्धतात् ।२१

उसका सेनापति महा पराक्रमी चिक्षुर और कोषाध्यक्ष ताम्र था, उसके अधीन दस हजार दानवी सेनाथी ।१५। सभी पूर्व कालीन राजाओं से वे कर लेने लगे । जिन स्वाभिमानी राजाओंने उनका सामना किया, उनका वध कर दियां गया ।१६। भूमण्डल पर उसके साम्राज्य में विद्यमान ब्राह्मण भी उसके वश में होकर यज्ञ-भाग देने लगे ।१७। इस प्रकार अपना एकछत्र राज्य स्थापित करके उसने स्वर्ग को जीतने का निश्चय किया ।१८। व्यासजी बोले हे राजन् ! इस बात को सुनकर इन्द्र ने सब लोकपालों को सङ्ग लिया और ब्रह्माजी को आगे करके कैलाश की और चल पड़े ।१९। वहाँ पहुँचकर भगवान् रुद्र की वेद मंत्रों से स्तुति की और प्रसन्न होकर सब लोक वैकुण्ठ के लिये चले । २० । वहाँ देवदेवेश विष्णु की स्तुति की और अपने आगमनका उद्देश्य बताया कि ब्रह्माजी से वरदान से मत्त महिषासुर से हमें अत्यन्त भय प्राप्त हुआ है ।२१।

तदाकर्ण्य भयं तस्य विष्णुर्देवानुवाच ह ।
करिष्यामो वयं युद्धं हनिष्यामस्तु दुर्जयम् ।२२
इति ते निश्चयं कृत्वा ब्रह्मविष्णुहरीश्वरः: ।
स्वानि स्वानि समारुह्य वाहनानि ययुः सुराः ।२३
ब्रह्मा हंससमारूढो विष्णुर्गरुड़वाहनः ।
शंकरो वृषभारूढो वृत्रहा गजसंस्थितः ।२४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मयूरवाहनः स्कन्दो यमो महिषवाहनः ।
कृत्वा सैन्यसमायोगं यावत्ते निर्ययुः सुराः ।२५
तावद्दैत्यबलं प्राप्तं महिषपालितम् ।
तत्राभूत्तु मुलं युद्धं देवदानवसैन्ययोः ।२६
एवं वर्षशतं पूर्णं कृत्वा युद्धं सुदारुणम् ।
अवापैन्द्रं पद कामं दानवो मदगर्वितः ।२७
निर्जरा निर्गता नाकात्ते न सर्वेऽतिपीडिताः ।
एवं बहूनि वर्षाणि वभ्रमुर्गिरिगह्वरे ।२८

उसके भय की बात सुनकर भगवान विष्णु बोले कि महिषासुर से युद्ध करके उसे मार डालना ही उचित है ।२२। इस प्रकार निश्चय करके ब्रह्मा हंस पर, विष्णु गरुड़ पर, रुद्र वृषभ पर और वृत्रारि इन्द्र अपने ऐरावत पर स्थित हुए ।२३-२४। स्कन्द मोर पर और यम अपने भैंसा पर चढ़कर चले तथा सम्पूर्ण सेना को सजाकर अन्य सब देवगण युद्ध में उत्तर पड़े ।२५। उधर महिषासुर द्वारा रक्षित गर्वीली दैत्य-सेना बढ़ती चली आई और घोर युद्ध छिड़ गया ।२६। इस प्रकार पूरे सौ वर्षों तक देवताओं-दैत्यों में युद्ध होता रहा और मदोन्मत्त दानव महिषासुर ने बिजय प्राप्त करके इन्द्रासन पर अधिकार प्राप्तकर लिया ।२७ स्वर्गलोक में जो थोड़े से देवता शेष रह गये थे वे भी उस दैत्य के द्वारा पीड़ित होकर भाग गये और पर्वत की गुफाओं में वर्षों छिपे रहे ।२८।

श्रांताः सर्वे तदा राजन्ब्रह्माणं शरणं ययुः ।
प्रजापतिं जगन्नाथ रजोरूपं चतुर्मुखम् ।२९
धातः किमेतदखिलार्तिहरांबुजन्म
जन्माभिवीक्ष्य न दयां कुरुषे सुरान् यत् ।
संपीडितान्नृणजितानसुराधिपेन
स्थानच्युतांगिरिगुहाकृतसन्निवासान् ।३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किं करोमि सुराः कामं दानवो वरदर्पितः ।
स्त्रीवध्योऽसौ न पुंवध्यौ विधेयं तत्र किं पुनः ।३१
वज्रामोऽद्य सुराः सर्वे कैलास पर्वतोत्तमम् ।
शंकरं पुरतः सर्वकार्यविशारदम् ।३२
ततो व्रजाम वैकुण्ठं यत्रा देवो जनार्दनः ।
मिलित्वा देवकार्यं च विमृशामो विशेषतः ।३३
इत्युक्त्वा हंसमारुह्य ब्रह्मा कार्यसमुच्चये ।
देवाश्च पृष्ठतः कृत्वा कैलाशभिमुखो ययौ ।३४
महिषेणा सुरेशानपीडिताः स्वर्निवासिनः ।
भ्रमंति गिरिदुर्गेषु भयत्रस्ताः सवासवाः ।३५

हे राजन् ! इस प्रकार श्रम और हारसे आक्रान्त हुए देवता लोकनाथ ब्रह्माजी की शरण में गये ।२९। देवताओं ने कहा हे धाता ? हे पद्मज ! महिषासुर हमारा उत्पीडन कर रहा है । हम स्थान-भ्रष्ट होकर कन्दराओं में छिपते फिर रहे हैं फिर भी आप दया नहीं करते? ।३०। ब्रह्माजी बोले—मैं क्या करूँ ? वह दैत्य वर पाकर गर्व में भर गया है उसका संहार पुरुष नहीं, कोई स्त्री ही कर सकती है, तब क्या किया जाय ? ।३१। अब यही उचित प्रतीत होता है कि हम सभी कैलाश पर्वत पर चलकर शिवजी को साथ लें और विष्णु लोक में जाकर, वहीं इस पर विचार करें ।३२-३३। यह कह कर ब्रह्माजी हंस पर आरूढ़ हुए और देवताओं को पीछे करके कैलाश के लिए चल पड़े ।३४। वहाँ पहुँच कर ब्रह्माजी ने कहा—हे सुरेशान ! हे शंकर ! महिषासुर के भय से त्रस्त होकर यह सम्पूर्ण देवता कन्दराओं में छिपते फिरते हैं ।३५।

यज्ञभुङ्महितो जातस्थान्ये सुरशत्रवः ।
पीडिता लोकपालाश्च त्वामद्या शरणं गता ।३६
इति तद्वचनं श्रुत्वा शंकरः प्रहसन्निव ।
वचनं श्लक्ष्णं वाचा प्रोवाच पद्मजं प्रति ।३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भवतैव कृतं कार्यं वरदानात्पुरा विभो ।
अनर्थदं च देवानां किं कर्त्तव्यमतः परम् ।३८
स्तुत्वा त देवकार्याय प्रेरयामः सुसत्वरम् ।
सोऽतिबुद्धिमतां श्रेष्ठो विष्णुः सर्वार्थ साधने ।३९
मिलित्वा वासुदेवं वै कर्तव्यं कार्यचिंतनम् ।
प्रपञ्चेन च बुद्ध्या स संविधास्यन्ति साधनम् ।४०
इति रुद्रवचः श्रुत्वा ब्रह्माद्या सुरसत्तमा ।
उत्थितास्ते तथेत्युक्त्वा शिवेन सह सत्वराः ।४१
स्वीयैर्वाहनै सर्वे ययुर्विष्णुपुरं प्रति ।
मुदिताः शकुनान्दृष्ट्वा कार्यसिद्धिकराञ्छुभान् ।४२

महिषासुर और उसके साथी अन्यान्य दानव सम्पूर्ण यज्ञ भाग का उपभोग करते हुए लोकपालों को सताते हैं इसलिए यह सभी आपकी शरण में उपस्थित हैं ।३६। ब्रह्माजी के वचन सुनकर शिवजी को हँसी आ गई और वे मधुर वाणी में मुस्कराते हुए ब्रह्माजी से कहने लगे । ।३७। हे विभो ! आपके वरदान से ही वह ऐसे घोर कर्म कर रहा है । उसी के दर्प में देवताओं पर अनर्थ करता है, अब आप पूछतेहैं कि क्या करना चाहिए ।३८। अब यही उचित है कि उन्हीं सर्वार्थ को सिद्ध करने वाले भगवान विष्णु की स्तुति करके उनके द्वारा देवताओं का कार्य सम्पन्न करावें ।३९। उन्हीं वासुदेव से मिलने पर निर्णय हो सकेगा कि किस प्रकार कार्य सिद्ध किया जाय, क्योंकि वह किसी न किसी प्रपंच को अवश्य सोच लेंगे ।४०। शिवजी के यह वचन सुन कर सबने सहमति प्रकट की और शिवजी के साथ तुरन्त ही चलने को उठ खड़े हुए ।४१। सभी अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर कार्य-सिद्धि के लिए शुभ शकुन देखकर प्रसन्न होते हुए उन देवगणों ने विष्णु लोक के लिए प्रस्थान किया ।४२।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिव्य तेज से देवी का प्राकट्य

तरसा तेऽथ सम्प्राप्य वैकुण्ठं विष्णुवल्लभम् ।
ददृशुः सर्वशोभाढ्यं दिव्यसद्मविराजितम् ।१
प्रणेमुस्ते सुराः सर्वे देवदेवं जनार्दनम् ।
तुष्टुवुश्च सुरारिघ्नं वाग्भिर्वेदवितिश्चितम् ।२
श्रुत्वा तद्वचनं विष्णुस्मानुवाच हसन्निव ।
युद्धं कृतं पुराऽस्माभिस्तथापि न मृतो ह्यसौ ।३
अद्य सर्वसुराणां वै तेजोभी रूपसम्पदा ।
उत्पन्ना चेद्वरारोहा सा हन्यात्तं रणे बलात् ।४
प्रार्थयतु तेजोशान्स्त्रऽस्माकं तथा पुनः ।
उत्पन्नैतश्च तेजोशतेजोराशिर्भवेद्यथा ।५
आयुधानि वयं मद्यः सर्वे रुद्रपुरोगमाः ।
तस्य सर्वाणि दिव्यानि त्रिशूलादीनि यानि च ।६
सर्वायुधधरा नारी सर्वतेजः समन्विता ।
हनिष्यति दुरात्मान तं पापं मदगर्वितम् ।७

सभी देवता भगवान् विष्णु के प्रिय धाम वैकुण्ठ में जा पहुँचे और अनेक भाँति उनकी स्तुति करने लगे ।१-२। उसके वचनों को सुनकर हँसते हुए भगवान् विष्णु ने कहा कि हम उससे पहिले भी तो युद्ध कर चुके हैं परन्तु वह मारा नहीं जा सका ।३। अब हम देवताओंके तेज से कोई सुन्दर वीर नारी उत्पन्न हो तो वही अपनी शक्ति से उसका संहार कर सकती है ।४। इसलिए उस भगवती पराशक्ति से ही हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हम सबके तेजांश से एक तेजपुंज स्वरूपिणी नारी के रूप में प्रकट हो ।५। उस नारी को हम रुद्र आदि सर्व देवता विविध प्रकार के त्रिशूलादि शस्त्रास्त्र देंगे ।६। तब सर्वायुधों से सुसज्जित हुई वह तेजोमयी नारी उस पापी मदगर्वित दुरात्मा का वध कर देगी ।७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्युक्तवति देवेश ब्रह्मणो वदनात्ततः ।
स्वयमेवोद्बभौ तेजोराशिश्च तीव्र दुःसहः ।८

रक्तवर्ण शुभाकारं पद्मरागमणिप्रभम् ।
किंचिच्छीतं तथा चोष्णं मरीचिजालमंडितम् ।९
निःसृत हरिणं दृष्टं हरेण च महात्मना ।
विस्मितौ तौ महाराज बभूवतुरुरुक्रमौ ।१०

शंकरस्य शरीरात्तु निःसृतं महाददभुतम् ।
रौप्यवर्णमभूत्तीव्रं दुर्दशं दारुणं महत ।११
भयंकरं च दैत्यानां देवानां विस्मयप्रदम् ।
घोररूपं गिरिप्रख्यं तमोगुणमिवापरम् ।१२

ततो विष्णु शरीरास्तु तेजोराशिमिवापरम् ।
नीलं सत्त्वगुणोपेतं प्रादुरास महाद्युति ।१३
ततश्चेन्द्रशरीरात्तु चित्ररूपं दुरासदम् ।
आविरासीत्सुसवृत्तं तेजः सर्वगुणात्मकम् ।१४

भगवान् विष्णु के कहते ही ब्रह्माजी के मुखसे तुरन्त ही एक दुःसह तेजपुंजिका निगत हुई ।८। वह अत्यन्त सुन्दर आकार वाली, रक्तवर्णा और पद्मरागमणि के समान प्रभा वाली थी । वह शीतल और कुल उष्ण किरणों के जल से सम्पन्न थी ।९। उस तेज को निकलते हुए देखकर भगवान् विष्णु और रुद्र दोनों ही अत्यन्त विस्मित हुए ।१०। तभी भगवान् रुद्र के शरीर से भी एक अत्यन्त अद्भुत रौप्य वर्ण का, तीव्र दुर्दश और घोर दारुण तेज निकला ।११। देवताओं को विस्मय में डालने वाला तेज दैत्यों के लिए भयंकर पर्वत के समान विशाल, घोर रूप और साक्षात् तमोगुण ही था ।१२। फिर भगवान् विष्णु के शरीर से भी नीलवर्ण का अत्यन्त ज्योतिर्मान तेजपुंज निकली जो सत्त्वगुण का मूर्तिमान स्वरूप था ।१३। फिर इन्द्र के देह से भी एक अद्भुत रूप का असह्य, वृत्ताकार, त्रिगुणात्मक तेज निकल पड़ा ।१४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुबेरयमवह्नीनां शरीरेभ्यः समन्ततः ।
निश्चक्राम वृहत्तेजो वरुणस्य तथैव च ॥१५
अन्येषां चैव देवानां शरीरेभ्योऽतिभास्वरम् ।
निर्गतं तन्महातेजोराशिरासीन्महोज्जवलः ।१६
तं दृष्ट्वा विस्मिताः सर्वेदेवा विष्णुपुरोगमाः ।
तेजोराशि महादिव्यं हिमाचलमिवापरम् ।१७
पश्यतां तत्र देवानां तेजः पुञ्जसमुद्भवा ।
वभवातिवरा नारी सुन्दरी विस्मयप्रदा ।१८
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः सर्वदेवशरीरजा ।
अष्टादशभुजा रम्या विवर्णा विश्वमोहिनी ।१९
श्वेतानना कृष्णनेत्रा सरक्ताधरपल्लवा ।
ताम्रपाणितला कांता दिव्यभूषणभूषिता ।२०
अष्टादशभुजा देवी सहस्रभुजमण्डिता ।
सम्भूताऽसुरनाशाय तेजोराशिसमुद्भवा ॥२१

तदन्तर कुबेर, यम, अग्नि और वरुण के शरीर से एक महान् तेज सम्मिलित रूप से प्रकट हुआ ।१५। इसी प्रकार अन्य सभी देवताओं के शरीर से एक महान तेजराशि का चमकता हुआ तेज सम्मिलित रूप से आविर्भूत हुआ ।१६। वह तेज हिमालय के समान विशालकाय था, जिसे देखकर विष्णु आदि सभी देवता अत्यंत विस्मित हुये ।१७। तभी उस तेजपुंज से सभी देवताओं के देखते हुए एक अत्यंत सुंदरी और विस्मय में डाल देने वाली उत्पन्न हो गई ।१८। सब देवताओं के शरीरों से आविर्भूत वह त्रिगुणात्मिका नारी साक्षात् महालक्ष्मी थी । उनके अठारह भुजाएँ थीं ।१९। मुख का वर्ण श्वेत, नेत्रों का कृष्ण और अधर पल्लव का लाल था । उनकी हथेली ताम्बे के रङ्ग की थीं ।२०। वे हजार भुजाओं वाली भगवती दैत्योंका संहारा करनेके निमित्त अठारह भुजाओं वाली होकर देवताओ के तेज से आविर्भूत हुई थीं ।२१।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शृणु राजन्महाभाग विस्तरेण ब्रवीमि ते ।
यथामति कुरुश्रेष्ठ तस्या देहसमुद्भवम् ।२२
न ब्रह्मा नहरि साक्षान्न रुद्रो न च वासवः ।
तथातथ्येन तद्रूपं वक्तुमीशः कदाचन ।२३
कथं जानाम्यहं देव्या यद्रूपं यादृशं यतः ।
वाचारंभणमात्रं तदुत्पन्नेति ब्रवीमि यत् ।२४
सा नित्या सर्वदेवास्ते देवकार्यार्थसिद्धये ।
नानारूपा त्वेकरूपा जायते कार्यगौरवात् ।२५
शङ्करस्य च यत्तेजस्तेन मन्मुखपङ्कजम् ।
श्वेतवर्णं शुभाकारमजायत् महत्तरम् ।२६
केशास्तस्यास्तथा स्निग्धा याम्येन तेजसाऽभवन् ।
वक्राग्राश्चातिदीर्घा वै मेघवर्णा मनोहराः ।२७
नयनत्रिततं तस्या जज्ञे पावकतेजसा ।
कृष्णं रक्तं च श्वेतं वर्णत्रयविभूषितम् ।२८

व्यासजी बोले—भगवती की उत्पत्ति का वृत्तान्त कह रहा हूँ, उसे सुनो ।२२। वैसे तो उनके यथार्थ स्वरूप का ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी तथ्य-पूर्वक वर्णन करने में समर्थ नहीं हैं ।२३। तो मैं भी देवी के यथार्थ रूप को कैसे जान सकता हुं फिर भी जहाँ तक मुझ से हो सकता है, तुम्हें बताता हूँ, ।२४। वे भगवती नित्या हैं और देवताओका कार्य सिद्ध करने के लिए एक होकर भी अनेक रूपों को धारण कर लेती हैं ।२५। शिवजी के मुख से निकले हुए तेज के द्वारा उन महालक्ष्मी का वर्ण श्वेत, सुन्दर आकार और मुख सरोज-निर्मित हुआ ।२६। यम के तेजसे उनके चिकने, काले घुँघराले और मेघ जैसे काले वर्ण के केश हुए।२७। पावक के तेज से उनके काले, लाल और श्वेत इन तीन वर्णों के तीन नेत्र बने हैं ।२८।

वक्रे स्निग्धे कृष्णवर्णे संध्ययोस्तेजसा भ्रुवौ ।
जाते देव्याः सुतेजस्के कामस्य धनुषीवते ।२९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायोश्च तेजसा शस्तौ श्रवणौ संबभूवतुः ।
नाति दीर्घौ नातिह्रस्वौ दोलाविव मनोभुवः ।३०
तिलपुष्पसमाजारा नासिका सुमनोहरा ।
संजाता स्निग्धवर्णा वै धनदस्य च तेजसा ।३१
दन्ताः शिखरिणः श्लक्ष्णाः कुन्दाग्रसदृशाः समाः ।
संजाताः सुप्रभा राजन्प्राजापत्येन तेजसा ।३२
अधरचातिरक्तोऽस्याः संजातोऽरुणतेजसा ।३३
अष्टादशभुजाकारा बहवो विष्णुतेजसा ।
वसून तेजसांगुल्यो रक्तावर्णास्तथाऽभवन् ॥३४

दोनों सन्ध्याओं के तेज से टेढ़ी स्निग्ध तथा कृष्ण वर्ण की भौंहें बनीं ।२९। वायु के तेज से झूले के समान, न अधिक बड़े और न अधिक छोटे, सुन्दर कान बने ।३०। कुबेर के तेज से उनकी तिल-पुष्पके समान आकार वाली मनोहर नासिका बनी ।३१। दक्ष प्रजापति के तेज से नुकीले चिकने, चमकीले तथा कुंदाग्र के समान उज्ज्वल प्रभा वाले दाँत बने ।३२। अरुण के तेजसे अत्यन्त लाल वर्णका अधरोष्ठ स्वामी कार्तिकेय के तेज से ऊपर का ओष्ठ बना ।३३। भगवान् विष्णु के तेज से अठारह भुजाएँ और वसुओं के तेज से रक्तवर्ष वाली अँगुलियाँ बनी ।३४।

सौम्येन तेजसा जातं स्तनयोर्युग्ममुत्तमम् ।
ऐन्द्रेणास्यास्तथा मध्यं जातं त्रिवलिसंयुतम् ।३५
जंघोरू वरुणस्याथ तेजसा संबभूवतु ।
नितंबः स तु संजातो विपुलस्तेजसा भुवः ।३६
एवं नारी शुभाकारा सुरूपा सुस्वरा भृशम् ।
समुत्पन्ना तथा राजंस्तेजोराशिसमुद्भवा ।३७
तां दृष्ट्वा सुष्ठु सर्वाङ्गीं सुन्दरीं चारुलोचनाम् ।
मुदं प्रापुः सुराः सर्वे महिषेण प्रपीडिताः ।३८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णुस्त्वाह सुरान्सर्वा-भूषणान्यायुधानि च।
प्रयच्छन्तु शुभान्यस्यै देवाः सर्वाणि सांप्रतम् ।३९।
स्वायुधेभ्यः समुत्पाद्य तेजोयुक्तानि सत्वराः।
समर्पयन्तु सर्वेऽद्य देव्यै नानायुधानि वै ॥४०

चन्द्रमा के तेज से उनका वक्ष-मण्डल और इन्द्र के तेज से त्रिवल युक्त मध्य भाग बना ।३५। वरुण के तेज से जाँघें और ऊरु प्रदेश तथा पृथिवी के तेज से विपुल नितम्ब निर्मित हुआ ।३६।हे राजन इस प्रकार अन्यान्य सभी देवताओं के तेज का मिश्रण होनेपर शुभ आकार, सुन्दर रूप श्रेष्ठ स्वरूप आदि से सम्पन्न एक नारी उत्पन्न हो गई ।३७। सर्वांग सुन्दरी मनोहर नयनवाली उस नारीको देखकर महिषासुर द्वारा उत्पीड़ित हुये सब देवता प्रसन्न हो उठें ।३८। तभी भगवान विष्णु ने कहा—हे देवगण ! अब आप इन्हें सब प्रकार के श्रेष्ठ आभूषण और आयुध दीजिये ।३९। अपने-अपने आयुधों से तेजोमय शस्त्रास्त्र उत्पन्न करके इन देवी को शीघ्रातिशीघ्र समर्पित कर दीजिये ।४०।

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

देवी विष्णुवचः श्रुत्वा सर्वे प्रमुदितास्तदा।
ददुश्च भूषणान्याशु वस्त्राणि स्वायुधानि च ।१
क्षीरोदश्चां वरे दिव्ये रक्ते सूक्ष्मे तथाऽजरे।
निर्मलं च तथा हारं प्रीतस्तस्यै सुमण्डतम् ।२
ददौ चूडामणि दिव्यं सूर्यकोटिसमप्रभम्।
कुण्डले च तथा शुभे कटकानि भूजेषु च ।३
केयूरांककणांदिव्यान्नानारत्नतिराजितान्।
ददौ तस्यै विश्वकर्मा प्रसन्नेन्द्रियमानसः ।४
नूपरौ सुस्वरौ कांतौ निर्मलौ रत्नभूषितौ।
ददौ सूर्यप्रतीकाशौ त्वष्टा तस्यं सुपादयोः ।५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथा ग्रैवेयकं रम्यं ददौ तस्यै महार्णवः ।
अंगुलीयकरत्नानि तेजोवन्ति च सर्वशः ।६
अम्लानपङ्कजां मालां गन्धाढ्यां भ्रमरानुगाम् ।
तथैव वैजयन्तीं च वरुणः सम्प्रयच्छतः ॥७

देवताओं ने देवीको विविध वस्त्राभूषण एवं आयुध प्रदानकिये ।१। क्षीर सागर ने लाल रङ्ग के सूक्ष्म दिव्य वस्त्र दिये और साथही मणि-मण्डित चमकता हुआ हार भी प्रदान किया ।२। विश्वकर्मा ने करोड़ों सूर्यों के समान तेज वाली दिव्य चूड़ामणि, सुन्दर कुण्डल द्वय, वाजूवन्द केयूर और कंकण आदि विभिन्न प्रकार के रत्नों से जड़े हुए कंकण प्रदान किये ।३-४। त्वष्टा ने सुन्दर झंकार वाली, उज्ज्वल रत्न मण्डित सूर्य के से प्रकाश वाली पैजनियाँ पावो में धारण करने के के लिए दी ।५। महासागर ने कण्ठ-हार और अत्यन्त तेजोमयीं रत्न जटित अँगूठी प्रदान की ।६। वरुण ने सदैव खिले रहने वाले कमल पुष्पोंकी वैजयन्ती माला प्रदान की, सुगन्धित से मत्त हुए भ्रमर उस पर मंडरा रहे थे ।७।

हिमवानथ सन्तुष्टो रत्नानि विविधानि च ।
ददौ च वाहनं सिंहं कनकाभ मनोहरम् ।८
भूषणैर्भूषिता दिव्यैः सा राज बरा शुभा ।
सिंहारूढा वरारोहा सर्वलक्षणसंयुता ।९
विष्णुश्चक्रात्समुत्पाद्य ददावस्यै रथांगकम् ।
सहस्रारं सुदीप्तं च देवारिशस्सां हरम् ।१०
स्वत्रिशूलात्समुत्पाद्य शङ्करः शूलमुत्तमम् ।
ददौ दैव्यै सुरारीणां कृन्तनं भयनाशनम् ।११
वरुणश्च प्रसन्नात्मा ददौ शंखं समुज्ज्वलम् ।
हुताशनस्तथा शक्तिं शतघ्नीं सुमनोजवाम् ।१२
प्रायच्छत प्रसन्नात्मा तस्यै दैत्यविनाशिनम् ।१३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ददौ दंडयमः कामं कालदंडसमुद्भवम् ।
येनातं सर्वभूतानामकरोत्काल आगते ॥१४

हिमालय पर्वत ने विविध प्रकार के रत्न तथा सवारी के लिए एक स्वर्णिम रङ्गका सिंह प्रदान किया ।८।तब वह वरारोहा सिंह पर सवार और सर्वाभूषणों से सुसज्जित होकर अत्यन्तशत शोभामयी दिखाई देने लगी ।९। तब भगवान् विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्रके अङ्ग रूपसे उत्पन्न सहस्रधार वाला अत्यन्त तेजोमय चक्र प्रदान किया,जिसमें असंख्य दैत्यों को नष्ट कर देने की शक्ति थी ।१०। भगवान्शंकर ने अपने त्रिशूल का अंशभूत एक त्रिशूल प्रदान किया जो देवताओं का भय दूर करने में समर्थ था ।११। वरुण ने उन्हें एक अत्यन्त उज्ज्वल,शुभ मङ्गलमय तथा घनघोर शब्द करने वाला शंख प्रदान किया ।१२। अग्नि ने दैत्यों और अन्यान्य शत्रुओं के नष्ट करने में सशक्त एवं मन के समान गति वाली एक शक्ति प्रदान की ।१३। यमराज ने अपने काल दण्ड से उत्पन्न हुआ एक दण्ड प्रदान किया, जिसके द्वारा काल सब प्राणियोंका संहार करता था ।१४।

ब्रह्मा कमण्डलुं दिव्यं गङ्गावाप्रपूरितम् ।
ददावस्यै मुद्रा यक्तो वरुणः पाशमेव च ।१५
गदां कोमौदकी त्वष्टा घंटाशतनिनांदिनम् ।
अदात्तस्यै प्रसन्नात्मा सुरशत्रुविनाशिनीम् ।१६
सायुधां भूषणैयुक्तां दृष्ट्वा ते विस्मयं गताः ।
तुष्टुवस्ता सुरा देवीं त्रैलोक्यमोहिनीं शिवाम् ।१७
नमः शिवायै कल्याण्यै शांत्यै पुष्टयै नमौ नमः ।
भगवत्यै नमो देव्यै रुद्राण्यै सततं नमः ।१८
कालराज्यै तथायायै इन्द्रायै ते नमो नमः ।
सिद्ध्यै बुद्ध्यै तथा वृद्ध्यै वैष्णव्यैते नमो नमः ।१९
पृथिव्यां या स्थिता पृथिव्या ज्ञाता पृथिवीं च या ।
अन्तः स्थिता यमयति वन्दे तामीश्वरीं पराम् ।२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मायायां या स्थिता ज्ञाता मायया न च तामजाम् ।
अन्तः स्थिता प्रेरयति प्रेरयित्रीं नमः शिवाम् ॥२१

ब्रह्माजी ने गङ्गाजल से परिपूर्ण अपना कमण्डलु वरुण ने अपना पाश प्रदान किया ।१५। त्वष्टा ने प्रसन्नता पूर्वक कौमोद की गदा भेंट की जिससे सैकड़ों घण्टों के बजने का शब्द निरन्तर होता रहता था, वह गदा दैत्यों को नष्ट करने में समर्थ थी ।१६। इस प्रकार सब आभूषणों और शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित भगवती को देखकर सब देवता अत्यन्त विस्मित हुए और उस त्रिलोक्य-मोहिनी शिवा की भक्ति पूर्वक स्तुति करने लगे ।१७। शिवा कल्याणी, शान्ति, पुष्टि, भगवती, देवी रूद्राणी नामों वाली को बारम्बार नमस्कार है ।१८। कालरात्रि, अम्बा, इन्द्राणी, सिद्धि वृद्धि वैष्णवी रूपिणीहे माता, तुम्हें बारम्बार नमस्कार है ।१९। आप पृथिवी पर विद्यमान भगवती को पृथिवी नही जानती, यद्यपि आप उसके अन्तर में रह कर उसका नियन्त्रण करती हैं, ऐसी आप परमेश्वरी को हम नमस्कार करते हैं ।२०। जिस माया में नित्य स्थित रहने वाली को माया नहीं जानती । यद्यपि माया के अन्तर में विराज कर आप ही प्रेरणा करती हैं, हे माता ! आपको नमस्कार है ।२१।

कल्याणं कुरु भो मातस्त्राहि नः शत्रु तापिताम् ।
जहि पाप हयारित्नं तेजसा स्वेन मोहितम् ।२२
खल मायाविनं घोरं स्त्रीवध्यं वरदर्पितम् ।
दुःखदं सर्वदेवानां नानारूपधरं शठम् ।२३
त्वमेका सर्वदेवानां शरणं भक्तवत्सले ।
पीडितान्दानवेनाद्य त्राहि देवि नमोऽस्तु ते ।२४
एवं स्तुता तदा देवौ सुरैः सर्वसुखप्रदा ।
तानुवाच महादेवी स्मितपूर्वं शुभं वचः ।२५
भयां त्यजन्तु गीर्वाणा महिषान्मन्दचेतसः ।
हनिष्यामि रणेऽद्यैव वरदृप्तं विमोहितम् ।२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा सा सुरान्देवी जहासातीव सुस्वरम् ।
चित्रमेतच्च संसारे भ्रममोहयुतं जगत् ।२७
ब्रह्माविष्णुर्महेशाद्याः सैंद्राश्चान्ये सुरस्तथा ।
कम्पयुक्ता भयत्रस्ता वर्तन्ते महिषात्किल ।२८

हे माता ! कल्याण करिये, हम संतप्त देवताओं की शत्रु से रक्षा कीजिये ।२२। महिषापुर अत्यन्त मायावी, दुष्ट, भयङ्कर, स्त्री के हाथ से मरने का वरदान पाकर गर्वित, देवताओं को दुःख देने वाला और अनेक रूप रखने वाला है ।२३। हे भक्तवत्सले ! देवताओं के लिए तो आप ही आश्रय स्वरूपा हैं, उस महिष दानव द्वारा उत्पीड़ित हम देवताओं की रक्षा करिये । हम आपको नमस्कार करते हैं ।२४। इस प्रकार सब देवताओं से स्तुति होकर भगवती महादेवी देवताओं के प्रति मुसकराती हुई बोली ।२५। हे देवगण ! भव का त्याग करो: मैं उस मन्दमति महिषासुर को मोहित करके आज ही नष्ट कर दूँगी ।२६। देवताओं के प्रति ऐसा कहकर देवी ने सम्पूर्ण विश्व को भ्रमऔर मोह पड़ा हुआ देखकर अट्टाहास कि ा ।२७। अहो ! ब्रह्मा, विष्णु, शङ्कर, इन्द्र आदि महानतम देवता भी उस महिषासुर का नाम सुनकर भय से कांपते हैं ।२८।

इति कृत्वा स्मितं देवी साऽट्टहासं चकार ह ।
उच्चैः शब्दं महाघोरं दानवानां भयप्रदम् ।२९
चकंपे वसुधा तत्र श्रुत्वा तच्छब्दमद्भुतम् ।
चेलुश्च पर्वता सर्वे चुक्षोभाब्धिश्च वीर्यवान् ।३०
मेरुश्चाल शब्देन दिशः सर्वा प्रपूरिताः ।
भयं जग्मुस्तदा श्रुत्वा दानवास्तत्स्वनं महत् ।३१
जया पाहीति देवास्तामूचुः परमहर्षिताः ।
महिषोऽपि स्वनं श्रुत्वा चुकोप मदगर्वितः ।३२
किमेतदिति तांदैत्यान्पप्रच्छ स्वनशङ्कितः ।
गच्छतु त्वरिता दूता ज्ञातुं शब्दसमुद्भवम् ॥३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृतः केनायमत्यग्रः शब्दः कर्णव्यथाकरः।
देवो वा दानवो वाऽपि यो भवेत्स्वनकारकः।३४
गृहीत्वा तं दुरात्मानं मत्समीपं नयत्विह।
हनिष्यामि दुराचरं गर्जन्तं स्मयदुर्मदम्।३५

यह कहती हुई देवी पुनः उठकर हंस पड़ी उनके उठाने का जो अत्यन्त घोर शब्द गूँजा वह दैत्यों को भयभीत करने वाला था ।२९। उस शब्द से पृथ्वी काँप उठी, पर्वत हिलने लगे, समुद्र में ज्वार उठ पड़े ।३०। सुमेरु पर्वत भी काँप उठा, दिशाएँ गूँज गईं और दैत्यगण भय के कारण बेचैन हो उठे ।३१। तब देवताओं ने 'जय' और 'पाहि' का उच्च घोष किया जिसे सुनकर मद से गर्वित हुआ महिषासुर क्रोधित हो उठा ।३२। महिषासुर ने सशंक होकर उस घोर निनाद के विषय में दैत्योंसे पूछा और आदेश दिया कि इस शब्ददका पता लगाओ ।३३। जिस किसी ने भी कानों के लिए कष्ट प्रद यह शब्द किया, वह दैत्य हो या देवता, उसे पकड़ कर ले आओ ।३४-३५।

क्षीणायुष्यं मंदमतिं नयामि यमसादनम्।
पराजिताः सुराः काम मे गर्जन्ति भयातुराः।३६
नासुरा सम वश्यास्ते कस्येदं मूढचेष्टितम्।
त्वरिता मामुपायांतु ज्ञात्वा शब्दस्य कारणम् ।३७
अहं गत्वा हनिष्यामि तं पापं वितथश्रमम्।
इत्युक्तास्तेन ते दूता देवीं सर्वाङ्गसुन्दरीम्।३८
अष्टादशभुजां दिव्यां सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्व लक्षणसम्पन्नां वरायुधधरां शुभाम्।३९
दधतीं चषकं हस्ते पिवन्तीं च मुहुर्मधु।
संवीक्ष्य भयभीतास्ते जग्मुस्त्रस्ताः सुशकिताः।४०
सकाशे महिष स्याशु तमूचुः स्वनकारणम्।
देवी दैत्येश्वर प्रौढा दृश्यते काचिदङ्गना ॥४१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वाङ्गभूषणा नारी सर्वरत्नोपशोभिता।
न मानुषी नासुरी सा दिव्यरूपा मनोहरा ॥४२

देवता तो मुझसे हारकर भयभीत रहते है, वे गर्जन नहीं कर सकते और दैत्य सभी मेरे आधीन हैं,इसलिए उनमें से भी कोई ऐसा नहींकर सकता। तब यह कार्य किस मूढ़ का है ? ।३६-३७। तब मैं उन व्यर्थ की विभींषिका रचने वाले के पास स्वयं जाकर उसे नष्टकर डालुँगा। महिषासुर द्वारा ऐसा कहे जाने पर पता लगाते हुए दूत उन सर्वाङ्ग सुन्दरी भगवती के पास जा पहुँचे ।३८। उनके अठारह भुजाएँ थीं, जिनमें श्रेष्ठ शस्त्रास्त्र सुसज्जित थे, सर्वाभरणों से सज्जित वे भगवती सर्व शुभ लक्षणों से सम्पन्न थीं ।३९। वे अपने हाथ के मधु-पात्र में बारम्बार मधुपान कररहीथीं। उन भगवतीको देखकर दैत्य-दूत भय भीत होकर भाग गये ।४०। तथा महिषासुर के पास जाकर उसे शब्द होने का कारण बताते हुए बोले। हे दैत्येश्वर ! वह प्रोड़ा नारी कोई देवी जैसी प्रतीत होंती है ।४१। वह सर्वाङ्ग से सुसज्जित नारी रत्नाभूषणों से विभूषित, न मानवी हैं न असुर वंशकी है, उसका रूप दिव्य और अत्यन्त सुन्दर है ।४२।

सिंहारूढायुधधरा चाष्टादशकरा वरा।
सा नादं कुरुते नारी लक्ष्यते मदगर्विता ।४३
गच्छ वीर मयाऽऽदिष्टो मन्त्रिश्रेष्ठ बलान्वितः।
सामादिभिरुपायैस्त्वं समानय शुभाननाम् ।४४
अहंत्वा तां वरारोहा त्वमानय ममान्तिकम्।
करोमि पट्टमहिषीं तामरालभ्रु वै मुद्रा ।४५
महिषस्य वचः श्रुत्वा पेशलं मन्त्रिसत्तमः।
जगाम तरसा कामं गजाश्वरथसयुतः ।४६
विनयावनतः श्लक्षणं मन्त्री मधुरया गिरा।
काऽसित्वं मधुरालापे किमत्रागमनं कृतम् ॥४७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृच्छति त्वां महाभागे मन्मुखेन मम प्रभुः ।
स जेता सर्वदेवानामवध्यस्तु नरैः किल ।४८
वां श्रुत्वा त समुपायातां चारुवेषां मनोहराम् ।
प्रदुमिच्छति राजा मे महिषो नाम पार्थिवः ।४९
मानुषं रूपमादाय त्वत्समीपं समेष्यति ।
यथा रुच्येत चार्वङ्गि तथा मन्यामहे वयम् ॥५०

यह अठारह भुजा वाली स्त्री विविध शस्त्रास्त्रों से सजी हुई और सिंह पर सवार है । वह मदसे गर्विता दिखाई देने वाली स्त्री ही गर्जन करती हैं ।४३। यह सुनकर महिषासुर बोला हे मेरे मन्त्री श्रेष्ठ ! मेरी आज्ञा हैं कि तुम सेना के सहित उस स्त्री के पास जाओ और सामादि उपायों के द्वारा उस श्रेष्ठ मुख वाली को यहाँ लिवा लाओ ।४४। मैं उस सुन्दर भौंहों वाली की प्रसन्नता से अपनी पटरानी बना लूँगा ।४५। महिषासुर के वचन सुनकर मन्त्री हाथी, घोड़ा, रथ आदि से युक्त सेना सहित वहाँ गया ।४६। वहाँ पहुँच कर उसने विनव पूर्वक पूछा कि हे मधुर भाषिणी ! तुम कौन हो ? तुम्हारा आना किस लिए हुआ हैं ? ।४७। हे महाभागे ! यह सब मेरे स्वामी ने पूछा है वे सभी देवताओं को जीत चुके हैं ।४८। वे आप जैसी सुन्दरीके विषयमें सूचना पाकर आपको देखने के लिए अत्यन्त उत्सुक हैं ।३९। हे सुन्दर अङ्गों वाली ! यदि आप कहें तो हमारे महाराज महिषासुर स्वयं ही मनुष्य वेश बनाकर उपस्थिय हों, अथवा आप जैसा कहें वैसे ही कार्य मैं करूँ ।५०।

दैत्य मन्त्री और देवी का सम्वाद

इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रहस्य प्रमदोत्तमा ।
तमुवाच महाराज मेघगम्भीरया गिरा ।१
मन्त्रिवर्य सुराणां वै जननी विद्धि मां किल ।
महालक्ष्मीमिति ख्यातां सर्वे दैत्यनिषूदिनीम् ॥२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रार्थिताऽहं सुरः सर्वैर्महिषस्य वधाय च ।
पीडितैर्दाननिवेन्द्रेण यज्ञभागवहिष्कृतैः ।३
तस्मादिहागताऽस्म्यद्य तद्वधार्थं कृतोद्यमा ।
एकाकिनी न सैन्येन सेयुता मंत्रिसत्तम ।४
गच्छ तं महिषं पाप वद मद्वचनादिदम् ।
गच्छ पातालमधुना जीवितेच्छा यदस्ति ते ।५
नोकेत्कृतागसं दुष्टं हनिष्यामि रणाङ्गणे ।
मद्वाणक्षुण्णदेहस्त्वं गंतासि यमसादनम् ॥६

व्यास जी बोले—हे राजन् ! मन्त्रीके वचन सुनकर भगवती हँसी और फिर मेघके समान गम्भीर वाणीमें कहने लगीं ।१। हे मन्त्रिश्रेष्ठ! मैं देवताओं की जननी हूँ, मैं महालक्ष्मी नाम से विख्यात हूँ और सब दैत्यों को नष्ट करना मेरा कर्तव्य है ।२। क्योंकि महिषासुर के अत्याचारों से पीड़ित और यज्ञ-भाग से वहिष्कृत देवताओं ने उसे मारने को मुझसे प्रार्थना की थी ।३। इसीलिए मैं बिना किसी सेना के ही उसका वध करने के विचार से यहाँ एकाकी चलीं आई हूँ ।४। अब तुम उस पापी के पास जाकर यह कह दो कि यदि तुम जीवित रहने की इच्छा रखते हो तो तुरन्त ही पाताल लोक कों चले जाओ।५। अन्यथा मैं तुझ दुष्ट को तुरन्त ही मार डालूँगी और मेरे बाणों से तेरा शरीर नष्ट हो जायगा ।६।

इति देव्या वचः श्रुत्वा चिंतयामास दानवः ।
किं कर्तव्यं मया युद्धं गंतव्यं वा नृप प्रति ।७
विवाहार्थं मिहासप्तो राज्ञा कामातुरेण वै ।
तत्कचं विरसंकृत्वा गच्छेयं नृपसन्निधौ ।८
इयं बुद्धिः समीचीना यद्व्रजामि कलिं विना ।
यथाऽऽगतं तथा शीघ्र राज्ञे सवेदयाम्यहम् ।९
स प्रमाणं पुनः कार्ये राजा मतिमतां वरः ।
करिष्यति विचार्यैव सचिवैर्निपुणैः सह ॥१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहसा न मया युद्धं कर्तव्यमनया सह ।
जये पराजये वापि भूपतेरप्रियं भवेत् ।११
यदि मां सुन्दरी हन्यादह वा हन्मि तां पुनः ।
येन केनाप्युपायेन तं कुष्येत्पार्थिवः किल ।१२
तस्मात्तत्रैव गत्वाऽहं बोधायि यामि तं नृपम् ।
यथाद्याभिहितं देव्या यथारुचि करोतु सः ॥१३

देवीके यह वचन सुनकर दैत्यमन्त्री सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए । युद्ध करूँ या राजा के पास जाऊं? ।७। क्योंकि राजा ने कामातुर-अवस्था में मुझसे कहा था कि जिस प्रकार भी हो सके,उसे विवाहके लिए राजी करना और जहाँ तक सम्भव हो रस-भंग मतकर बैठना ।८। मुझे तो यही उचित प्रतीत होताहै कि विना कलह किये ही मैं यहाँ से लौट चलूं और महाराज से सब बातें निवेदन कर दूँ ।९। तब वे बुद्धिमान महाराज अपने अन्य सचिवों से मन्त्रणा करके, जैसा चाहें, वैसा करे ।१०। मुझे सहसा ही इस स्त्री के साथ युद्ध नहीं करना चाहिए क्योंकि यदि जीत हुई तो भी महाराज को दुःख होगा और हार हुई तो भीं ।११। हो सकता है कि यह स्त्री मुझे ही मार डाले अथवा मैं ही किन्ही उपायों से इसे मार डालूँ तो राजा क्रोधित हो जायगा । ।१२। इसलिए यही ठीकहै कि इसने जो कुछ कहा है, वह सब महाराज से जाकर कह दूँ ।१३।

इति संचित्य मेधावी जगाम नृपसन्निधौ ।
प्रणम्य तमुवांचेदं कृताँजलिरमात्यजः ।१४
राजन्देवो वरारोहा सिंहस्योपरि संस्थिता ।
अष्टादशभुजा रम्या वरायुधधरा परा ।१५
सा मयोक्ता महाराज महिषं भज भामिनि ।
महिषीं भव राज्ञस्त्वं त्रैलोक्याधिपतेः प्रियाः ।१६
पट्टराज्ञी त्वमेवास्य भविता नात्र संशयः ।
स तवाज्ञाकरो जातो वशवर्ती भविष्यति ।१७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रैलोक्यविभवं भुक्त्वा चिरकांज वरानने।
महिषं पतिमासाद्य योषितां सुभगा भव ।१८
इति मद्वचन श्रुत्वा सा स्मयावेशमोहिता।
मामुवाच विशालाक्षी स्मितपूर्वमिदं वचः ॥१९

इस प्रकार निश्चय करके दैत्य-मन्त्री राजाके पास गया और हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए उससे बोला ।१४। हे राजन् ! वह सुन्दरी सदा सिंह पर आरूढ़ रहती हैं, उसकी अठारह भुजाएँ हैं, जिनमें श्रेष्ठ शस्त्रास्त्र सुसज्जित रहते हैं ।१५। हे राजन् मैंने उस स्त्री से कहा था कि हे भामिनी ! तुम महाराज महिषासुर से प्रीति करो और उसकी पटरानी हो जाओ ! क्योंकि तुम ही उनकी पटरानी बनने की सर्वथा योग्य हो। महाराज तुम्हारे सदा ही आज्ञाकारी रहेंगे ।१६-१७। हे सुमुखि ! तुम हमारे महाराज को पति रूपमें वरण करके त्रिलोकी का ऐश्वर्य भोगोगी और नारी जाति में अत्यन्त सौभाग्य शालिनी समझी जाओगी ।१८। मेरी यह बातें सुनकर वह सुन्दरी उत्तेजित हो उठी और मन्द मुसकान दिखेरती हुई बोली ।१९।

महिषीगर्भ संभूतं पशुनामधव किल।
बलिं दास्याम्यहं देव्यै सुराणां हितकाक्ष्यया ।२०
का मूढा कामिनी लोके महिषं वै पति भजेत्।
मादृशी मंदबुद्ध किं पशुभावं भजेदिह ।२१
महिषी महिषं नाथ सशृङ्गा शृङ्गसंयुतम्
कुरुते क्रन्दमाना वै नाहं तत्सदृशी शठा ।२२
करिष्येऽहं मधे युद्धं हनिष्ये त्वां सुराप्रियम्।
गच्छ वा दुष्ट पातालं जीवितेच्छा यदस्ति ते ।२३
पुरुषं तु तया वाक्यमित्युक्तं नृपमत्तया।
तच्छुत्र वाहं समायातः प्रतिचिंत्य पुनः पुनः ।२४
रसभंगं विचत्यैव न युद्धं तु मया कृतम्।
आज्ञां विना तवात्यं तं कथं कुर्यां वृथोद्यमम् ॥२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महिष के गर्भ से उत्पन्न उस पशु को देवताओं के कल्याण के लिए बलिदान कर भगवती को अर्पित करूँगी ।२०। ऐसी कौन मूर्खा नारी होगी जो किसी भैंसे को अपना पति स्वीकार करेगी। तब हे दुःख ! मेद्र समान नारी उस पशु से प्रीति कैसी कर सकती है ।२१। उस सींग युक्त भैंस की पत्नी तो कोई सींग वाली भैंसे ही हो सकती हैं, मैं उसके समान शठ नारी नहीं हूँ ।२२। देवताओं के शत्रु उस महिषासुर का मैं वध करूँगी, यदि अपना जीवन चाहता है तो तुरन्त ही स्वर्ग को छोड़ कर पाताल लोक में चला जा ।२३। हे राजन् ! मद से उन्मत हुई उस स्त्री ने इस प्रकार अनेक कठोर वचन कहे थे, उन्हें सुनकर मैं बारम्बार विचार करता हुआ यहाँ चला आया ।२४। आपके रस-भंग होनेके भय से मैंने उससे विग्रह मोल न ही लिया और आपकी आज्ञा के बिना मैं वैसा करं ही कैसे सकता था ? ।२५।

युद्ध का निश्चय

इति तस्य वचः श्रुत्वामहिषो मदह्विलः।
मंत्रिणः किं च कर्तव्यं विश्रब्धं ब्रूत मा चिरम् ।१
आगता देवविहिता मायेयं शाम्बरीव किम ।२
कार्येऽस्मिन्निपुणा यूयमुपायेषु विवक्षणाः।
सामादिषु च कर्तव्यः कोऽत्र मह्यं ब्रुवन्तुच च ।३
इष्थं निशम्य तद्वाक्यं ताम्रस्तत्त्वविचक्षणः।
उवाच वचनं राजन्निशामय मयोदितम् ।४
अष्टादशभुजा नारी न श्रुता न च वीक्षिता।
केनापित्रिष्ट लोकेष पराक्रमवतीं शुभा ।५
आयुधान्यपि तावंति धृतानि बलवंति च।
विपरीतमिदं मन्ये सर्वं कालकृतं नृप ।६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कातरत्वं न कर्तव्यं ममैतन्मतमित्यलम् ।
कर्तव्य सर्वथा युद्धं यद्भाव्यं तद्भविष्यति ॥७

व्यासजी बोले—हे जनमेजय ! मन्त्रों के वचन सुनकर महिषासुरने अपने वृद्ध मन्त्रियों को बुलाकर कहा ।१। मन्त्रिगण ! अब आप लोग विचार करिये कि हमें क्या करना चाहिए ? ।२। आप सभी कार्यों में निपुण हैं, इसलिए अब मुझे परामर्श दीजिए कि सामादि नीतियों में से किस नीति का प्रयोग करना उचित है ?।३। यह सुनकर तत्वके जानने वाले ताम्र ने कहा कि हे राजन् मेरे वचन सुनिए ।४। ऐसी पराक्रम सम्पन्ना और अठारह भुजाओं से युक्त कोई नारी तो त्रिलोकी भर में कहीं देखी न सुनी ।५। उसकी भुजाओं ने अत्यन्त प्रभावकारी शस्त्रास्त्र सुसज्जित है तो अवश्य यह लक्षण हमारे विपरीत प्रतीत होते हैं ।६। इसलिए मेरा विचार तो यह है कि हमें तुरन्त ही युद्ध चोषित कर देना चाहिए ।७।

गच्छ ताम्र महाभाग युद्धाय कृतनिश्चयः ।
तामानय वरारोहां जित्वा धर्मेण मानिनीम् ।८
इति तद्भाषितं श्रुत्वा ताम्रः कालवशं गतः ।
निर्गतः सैन्यसंयुक्तः प्रणम्य महिषं नृपम् ।९
गच्छन्मार्गे दुरात्माऽसौ शकुनान्वीक्ष्य दारुणान् ।
विस्मयं च भयं प्राप यममार्गप्रदर्शकान् ।१०
स गत्वा तां समालोक्य देवीसिंहोपरि स्थिताम् ।
स्तूयमानां सुरैः सर्वायुधिविभूषिताम् ।११
तामुवाच विनीतः सन्वाक्यं मधुरया गिरा ।
सामभावं समाश्रित्य विनयावनतः स्थितः ।१२
देवि दैत्येश्वरः शृङ्गी त्वद्रूपगुणमोहितः ।
स्पृहां करोति महिषस्तनवष्पणिग्रहणाय ।१३
भावं कुरु विमलाक्षि तस्मिन्नमरदुर्जये ।
पतिं तं प्राप्य मृद्वंगि नन्दने विहराद्भुते ॥१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सुन कर महिषासुर ने कहा—हे ताम्र ! हे महाभाग ! तुम्हीं युद्ध का निश्चय करके रणक्षेत्रमें जाओ और उस मानिनी को धर्मपूर्वक जीत कर यहाँ ले आओ ।८। यह सुनकर ताम्र उसे प्रणाम करके काल के वशीभूत होता हुआ सेना लेकर चल दिया ।९। उस दुरात्मा को मार्ग में यमलोक पथकाप्रदर्शन करने वाले अनेक भयङ्कर शकुन दिखाई दिये, जिनसे वह अत्यन्त आश्चर्य—चकित और भयभीत हुआ ।१०। जब वह देवी के समक्ष पहुँचा तो उसने उन्हें सिंह पर सवार अठारहों भुजाओंमें सब आयुधों से सुसज्जित तथा सब देवताओं द्वारा स्तुत होते हुए देखा ।११। तब उसने साम-नीति के अवलम्बन द्वारा विनय-पूर्वक झुक कर भगवती से मधुर वाणी में कहा ।१२। हे देवि ! दैत्येश्वर आपके रूप-गुण पर मोहित हो गए हैं, हे विशालाक्षि ! महिषासुर को अपना पति बना कर नन्दनकानन में सुख-पूर्वक विहार कीजिए ।१३-१४।

तन्निशम्य वचस्तस्य ताम्रस्य जगदम्बिका ।
मेघगम्भीरया वाचा हसन्ती तमुवाच ह ।१५
गच्छ ताम्र पतिं ब्रूहि मुमूर्षुं मन्दचेतसम् ।
महिषं चातिकामार्तं मूढं ज्ञानविवर्जितम् ।१६
यथा ते महिषी माता प्रौढा यवसभक्षिणी ।
नाहं तथा शृङ्गवती लम्बपुच्छा महोदरी ।१७
प्रबुध्य युध्यतां कामं करोमि यमवाहनम् ।
अथवा मनुजानां वै करिष्ये जलवाहकम् ।१८
जीवितेच्छाऽस्ति चेत्पाप गच्छ पातालमाशु वै ।
समस्तैर्दानवैर्युक्तस्त्वन्यथा हन्मि सङ्गरे ।१९
इत्युक्त्वा सा तदा देवी जगर्ज भृशमद्भुतम् ।
कल्पांतसदृशं नादं चक्रे दैत्यभयावहम् ।२०
ताम्र, श्रुत्वा च तं शब्दं भयत्रस्तमनास्तदा ।
पालयनं ततः कृत्वा जगाम महिषांतिकम् ॥२१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताम्र के वचन सुनकर जगदम्बिका ने हँसकर मेघ के समानगम्भीर वाणी में कहा ।१५। हे ताम्र ! तुम उस मरणोन्मुख महिषासुर के पास लौट जाओ, वह कामार्त्त होकर ज्ञान से हीन हो गया है ।१६। तुम उससे कहना कि जैसे घासादि तृण भक्षण करने वाली तुम्हारी माता है, मैं उसके समान लम्बी पूँछ, मोटे पेट और बड़े सींगों वाली भैंस नहीहूँ ।१७। अतः तू स्वयं उठकर युद्ध कर अन्यथा मैं तुझे यम का वाहन अथवा मनुष्योंका जल ढोने वाला भैंसावना दूँगी।१८। यदि तुझे प्राणों से मोह हो तो तुरन्त ही अपने सब साथियों के सहित पाताल-लोक को गमन कर, नहीं तो मैं सम्पूर्ण दानवोंको नष्ट कर दूँगी ।१९।यह कह-कर देवी ने अद्भुत घोर गर्जन किया, उस कल्पान्त के समान गर्जनको सुनकर-दैत्य भयभीत हो गए ।२०। ताम्र भी उस गर्जनको सूनकर भय से व्याकुल हो भाग चला ।२१।

ताम्रं समागतं दृष्ट्वा हयारिरपि मोहितः ।
चिन्तयामास सचिवैः किं कर्तव्यमतः परम् ।२२
दुर्गग्रहो वा कर्तव्यो युद्धं निर्गत्य वा पुनः ।
पलायने कृते श्रेयो भवेद्वा दानवोत्तमाः ।२३
राजन्युद्धे जयो नोऽद्य भविता वेद्म्यहं किल ।
पलायनं न कर्तव्यं यशोहानिकरं नृणाम् ।२४
इन्द्रादीनां संयुगेऽपि न कृतं यज्जुगुप्तिसम् ।
एकाकिनी स्त्रियं प्राप्य को हि कुर्यात्पलायनम् ।२५
तस्माद्युद्धं प्रकर्तव्यं मरणं वा चेद् रणे जयः ।
यद्भावि तद्भवत्येव काऽत्र चिंता विपश्यतः ।२६
दुर्मुखस्य वचः श्रुत्वा वाष्कलो वाक्यमब्रवीत् ।
प्रणतः प्रांजलिर्भूत्वा राजानं वाक्यकोविदः ।२७

ताम्र को लौटकर आया देखकर महिषासुर विमूढ़ हो गया, उसने तुरन्त ही सब मन्त्रियों को बुलाकर मन्त्रणा की कि अब हमारा क्या कर्तव्य है ? ।२२। हे श्रेष्ठ दानवो ! अब हमें यहीं रहकर आत्म रक्षा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करनी चाहिए या युद्ध करना चाहिए अथवा प्राण बचा कर कहीं भाग चलना चाहिए ? ।२३। दुर्मुख ने कहा—हे राजन् अब युद्ध में हमारी विजय सम्भव नहीं है, फिरभी पलायन किसी प्रकार उचित नहींहै।२४। हम इन्द्रादि देवताओं के सामने से ही युद्ध में कभी नहीं भागे तो अब इस अकेली स्त्री के सामने से भागकर निन्दित क्यों हों ? ।२५। इसलिए हमें युद्ध ही करना चाहिये, फिर जो होना होगा, होता रहेगा, ।२६। दुर्मुख के वचन सुनकर वाणी-विशारद वाष्कल ने हाथ जोड़कर झुकते हुए कहा ।२७।

राजंश्चिन्ता न कर्तव्या कार्योऽस्मिन्कातराप्रिये ।
अहमेको हनिष्यामि चण्डीं चञ्चललोचनाम् ।२८
पश्य बाहुबलं मेऽद्य विहरस्व यथासुखम् ।
भवताऽत्र न गन्तव्यं संग्रामेऽप्यनया समम् ।२९
एवं ब्रुवति राजेन्द्र वाष्कले मदगर्विते ।
प्रणम्य नृपतिं तत्र दुर्मुखो वाक्यमब्रवीत् ।३०
महिषाहं विजेष्यामि देवीं देवविनिर्मिताम् ।
अष्टादशभुजां रम्यां कारणाच्च समागताम् ।३१
तस्मात्कार्यं करिष्यामि गत्वाऽहं रणमस्तके ।
चिन्ता त्वया न कर्तव्या सर्वथा नृपसत्तम ।३२
गृहीत्वा तां दुराचारामागमिष्यामि सत्वरम् ।
पश्य मेऽद्य बलं धैर्यं प्रभुकार्यं स्वशक्तितः ।३३

हे राजन ! इस विषय में आप कातर न हों और न कुछ चिन्ताही करे । उस चञ्चल नेत्र वाली चण्डी का हनन करने के लिए मैं अकेला हीं बहुत हूँ ।२८। महाराज ! आप सुख-पूर्वक विहार करते रहिये, आपको उस नारी के सामने नहीं जाना पड़ेगा । आप मेरे भुज बल को देखिये ।२९। हे राजन ! मद से गर्वित वाष्कल के इस प्रकार कहनेपर दुर्मुख ने राजा को प्रणाम करते हुए कहा ।३०।हे महाराज महिषासुर! देवताओं द्वारा बनाई हुई, अठारह भुजाओं वाली और रहस्य-वश से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकट हुई उस देवी को मैं जीत लूँगा ।३१। हे नृपश्रेष्ठ ! मैं युद्ध क्षेत्र में जाकर आपका कार्य पूर्ण करूँगा इसलिए आप इस विषय में कुछ चिन्ता न करिये ।३२। मैं शीघ्र ही उस दुराचारिणी स्त्री को पकड़ लाऊँगा । मैं अपनी शक्ति से जो कार्य करूँगा उसे आप देखिये तो सही ।३३।

बाष्कल और दुर्मुख का वध

इत्युक्त्वा तौ महाबाहू दैत्यौ बाष्कलदुर्मुखौ ।
जग्मतुर्मदिग्धाङ्गौ सर्वशस्त्रास्त्रकोविदौ ।१
तौ गत्वा समरे देवी मूचतुर्वचनं तदा ।
दानवौ च मन्दोमत्तौ मेघगम्भीरया गिरा ।२
देवि देवा जिता येन महिषेण महात्मना ।
वरय त्वं वरारोहे सर्वं दैत्याधिपं नृपम् ।३
त्रैलोक्यविभवं कामं त्वमेष्यसि शुचिस्मिते ।
महिषे परमं भावं कुरु कांते मनोगतम् ।४
गच्छतं महिषं तूर्णं भूपं बाष्कलदुर्मुखौ ।
वदतं तद्वचो दैत्य गजतुल्यं विषाणिनम् ।५
पातालं गच्छ वाऽभ्येत्य सग्रामं कुरु वा मया ।
रणे जाते सहस्राक्षो निर्भयः स्यादिति ध्रुवम् ।६
हत्वाऽहृत्वां गमिष्यामि नान्यथा गमनं मम ।
इत्थं ज्ञात्वा सुदुर्बुद्धे यथेच्छसि तथा कुरु ॥७

व्यास जी बोले— हे राजन् ! यह कह कर विशाल भुजाओं वाले बाष्कल और दुर्मुख युद्ध के लिए चल दिये ।१। वे मद से उन्मत्त हुए दानव युद्ध स्थल में देवी के सामने आकर मेघ के समान गम्भीर गिरा से कहने लगे।२। हे देवि ! जिन दैत्येश्वर महिषासुर ने सम्पूर्ण देवताओं को पराजित कर दिया है, उनका आप अपने पूर्ण रूप में वरण कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीजिए ।३। हे शुचिस्थिते ! उन्हें पति रूप में प्रेम करने से आपको तीनों लोकों के सम्पूर्ण ऐश्वर्यों की प्राप्ति होगी, इजलिए आपको उनसे प्रीति स्थापित करनी चाहिए ।४। इस पर भगवती ने कहा-हे बाष्कल और दुर्मुख ! तुम दोनों महिषासुर के पास लौट जाओ और उस सींग धारी भीमकाय दैत्य से कहना कि तू या तो पाताल लोक चला जा अथवा स्वयं जाकर युद्ध कर, जिससे इन्द्र निर्भय हो जाँय।५-६। मैं तुझे मार कर ही यहाँ से लौटूँगी । इस बात को भले प्रकार विचार करके फिर जैसा उचित समझे वैसा करें ।७।

इत्युक्तौचतया दैत्यौं कोपा कुलितलोचनौ ।
धनुर्बाणधरौ वीरौ युद्धकामौ बभूवतुः ।८
कृत्वा सुविपुलं नादं देवी सा निर्भया स्थिता ।
उभौ त्र चक्रतुस्तीव्रां वाणवृष्टि कुरूद्वह ।९
भगवत्यपि बाणौघान्मुमोच दानवौ प्रति ।
कृत्वा त्रिमधुरं नादं देवकार्यार्थसिद्धये ।१०
ययोस्तु !वाष्कलस्तूर्णं संमुखोऽभूद्रणाङ्गणे ।
दुर्मुखः प्रेक्षकस्तत्र देवीमभिमुखः स्थितः ।११
तयोर्युद्धमभूद्घोरं देवीवाष्कलयोस्तदा ।
बाणासिपरिघाघातैर्भयदं मन्दचेतसाम् ।१२
अर्धचन्द्रेण बाणेन चिच्छेद च शरासनम् ।
बाष्कलोऽपि गदागृह्य देवीं हन्तुमुपाययौ ।।१३

इतना कहते ही दोनों दैत्यों के नेत्र क्रोध से लाल हो गए और वे धनुष पर वाण चढ़ाकर युद्ध करने के लिए उद्यत हो गए ।८। तब देवी ने घोर गर्जन किया और उन दैत्यों ने देवी पर वाणों की वर्षा आरम्भ कर दी ।९। तब देवी देवताओं की कार्य सिद्धि के लिए मधुर घोषपूर्वक वाण-वर्षा करने लगी ।१०। तदन्तर दुर्मुख प्रेक्षक के रूप में एक बार खड़ा हो गया और वाष्कल ने देवी का सामना किया ।११। इस प्रकार देवी और वाष्कल के मध्य वाण खड्ग और मुदगर आदि शस्त्रास्त्रों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा घोर युद्ध होने लगा, जिनसे निर्बल चित्त वालों को अत्यन्त भय लगने लगा।१२। उस समय देवी ने अपने अर्धचन्द्राकार वाले वाण से वाष्कल का धनुष काट दिया, यह देखकर वह गदा लेकर दौड़ा।१३।

आगच्छन्तं गदापाणिं दानवं मदगर्वितम्।
चण्डिका स्वगदाघातैः पातयामास भूतले।१४
वाष्कलः पतितो भूमौ मुहूर्तादुत्थितः पुनः।
चिक्षेप च गदां सोऽपि चन्डिकां चण्डविक्रमः।१५

तमागच्छन्तमालोक्य देवो शूलेन वक्षसि।
जघान वाष्कलं क्रुद्धा पपात च ममार सः।१६
पति ते वाष्कले सैन्यं भग्नं तस्य दुरात्मनः।
जयेति च मुदा देवाश्चुक्रुशुर्गगने स्थिता।१७
तस्मिंश्च निहते दैत्ये दुर्मुखोऽतिबलान्वितः।
आजगाम रणे देवीं क्रोधसंरक्तलोचनः।१८
देवी चिच्छेद तरसा धनुस्तस्य करे स्थितम्।
तथैव पंचभिर्बाणैबभंज रथमुत्तमम्॥१९

उस मदमत्त दैत्य को गदा लेकर आता हुआ देखा तो देवीने अपनी गदा के प्रहार से उसे पृथ्वी पर गिरा दिया।१४। मुहूर्त भर में वाष्कल स्वस्थ होकर उठा और प्रचण्ड वीर ने चण्डिका पर गदा से प्रहार किया।१५। गदा को अपनी ओर आता देखकर देवी ने क्रोध-पूर्वक उस के वक्षःस्थलमें त्रिशूल भोंक दिया, जिससे वहदुष्ट प्राणहीन होकर गिर गया।१६। वाष्कल के धरांशायी होते ही उसकी सेना भी छिन्न-छिन्न हो गई और गगन-मण्डल में स्थित देवगण देवी का जयगोष करने लगे।१७। वाष्कल को मरा देखकर दुर्धर्ष दुर्गुण क्रोध से लाल नेत्र किये हुए देवी के सामने आया।१८। तभी देवी ने पाँच वाण चलाकर उस का धनुष काटदिया और उसका श्रेष्ठरथ भी चकनाचूर कर दिया।१९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रथे भग्ने महाबाहुः पदातिर्दुर्मुखस्तदा ।
गदां गृहीत्वा दुर्धर्षा जगाम चण्डिकां प्रति ।२०
चकार स गदाघातं सिंहमौलौ महाबलः ।
न चचाल हरिः स्थानात्ताडितोऽपि महाबलः ।२१
अम्बिकां तं समालोक्य गदापाणिं पुरः स्थितम् ।
खड्गेन शितधारेण शिरश्चिच्छेदमौलिमत् ।२२
छिन्ने च मस्तके भूमौ पपात दुर्मुखो मृतः ।
जयशब्दं तदा चक्रुर्मुदिता निर्जरा भृशम् ।२३
तुष्टुवुस्तां तदो देवीं दुर्मुखे निहतेऽमराः ।
पुष्पवृष्टिं तथा चक्रुर्जयशब्दं नभः स्थिताः ॥२४

रथ के टूटने पर महावीर दुर्मुख अपनी दुर्धष गदा उठाकर पैदल ही देवी पर झपट पड़ा।२०। तथा उसने भगवती के सिंहके सिर पर अपनी गदा मारी, परन्तु महावती सिंह उस गदा प्रहार से किंचित भी विचलित नहीं हुआ ।२१। तभी दुर्मुख को अपने हाथ में गदा लेकर खड़ा हुआ देखते ही देवी ने अपनी तीक्ष्ण तलवार से उसका मस्तक काट डाला ।२२। मस्तक कटते वह धराशायी हो गया, यह देखकर देवता जय-जयकार करने लगे।२३। दुर्मुख के मृत होने पर गगन-मण्डल में स्थित हुए सब देवता देवीकी जय बोलते हुए स्तुति तथा पुष्प-पुष्टि करने लगे ।२४।

ताम्र और चिक्षुर का वध

दुर्मुखं निहतं श्रुत्वा महिषः क्रोधमूर्छितः ।
उवाच दानवान्सर्वान्किं जातमिति चासकृत् १
निहतौ दानवौ शूरौ रणे दुर्मुखवाष्कलौ ।
तन्व्या तत्परमाश्चर्यं पश्यन्तु दैवचेष्टितम् ।२
एवं ब्रुवति राजेन्द्रे महिषेऽतिबलान्विते ।
चिक्षुराख्यस्तु सेनानीस्तमुवाच महारथः ।३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन्नहं हनिष्यामि का चिन्ता स्त्रीविहिंसने ।
इत्युक्त्वा स्वबलैर्युक्तः प्रययौ रथसंयुतः ।४
द्वितीयं पार्ष्णिरक्षे तु कृत्वा ताम्रं महाबलम् ।
महता सैन्यघोषेण पूरयन् गगनं दिशः ।५
तमागच्छन्तमालोक्य देवी भगवती शिवा ।
चकार शङ्ख्वज्याघोषं घण्टानादं महाऽद्भुतम् ।६
तत्रसुस्तेन शब्देन ते च सर्वे सुरारयः ।
किमेतदित भाषन्तो दुद्रुवुर्भयकम्पिताः ॥७

व्यासजी बोले—हे राजा जनमेजय ! दुर्मुख का मरण सुनकर दैत्यराज दानवों को बुलाकर कहने लगा अरे, यह क्या हो गया ? ।१। मेरे दो प्रमुख वीर वाष्कल और दुर्मुख उस तन्वङ्गी अवलाके द्वाराही मार दिए गये ।२। महिषासुर द्वारा यह कहे जाने पर उसके सेनापति चिक्षुर ने कहा—हे राजन ! स्त्री का हनन करने में क्या चिंता ? मैं उसे अवश्य मार दूंगा । कहकर चिक्षुर रथ पर चढ़ा और सेना सहित युद्ध करने चल दिया ।३-४। अपने पृष्ठरक्षक ताम्र को भी साथ ले लिया । तब इन दैत्य सेनाओं के घोप से दिशायें और आकाश गूंज उठे ।५। दैत्यों को अपनी ओर आता देखकर भगवती शिवा ने अपने शंख और घण्टे से नाद तथा प्रत्यंचा खींचने का शब्द किया ।६। उस सम्मिलित नाद की घन-घोरता से सभी दैत्य भयभीत होकर दिशाओं में भागने लगे ।७।

चिक्षुराख्यस्तु तान्दृष्ट्वा पलायनपरायणान् ।
उवाचातीव संक्रुद्धः किं भयं वः मागतम् ।८
अद्यैवाहं हनिष्यामि बाणैर्बालां मदोन्नताम् ।
तिष्ठन्त्वत्र भयं त्यक्त्वा दैत्याः समरमूर्धनि ।९
चिक्षुराख्यश्च ताम्रश्च द्वावप्यतिबलोत्कटौ ।
युयुधाते महावीरौ सह देव्या रणांगणे ।१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुपिता च महामाया ववर्ष शरसन्ततिम् ।
चकार दानवान्सर्वान्बाणक्षततनुच्छदन् ।११
असुराः क्रोधसंमूढा बभूवः शरताडिताः ।
चिक्षिपुः शरजालानि देवीं प्रति रुषान्विताः ।१२
बभूव तुमुलं युद्धं ताम्रेण सह संयुगे ।
विस्मयं परम जग्मुर्देवा ये प्रेक्षकाः स्थिताः ।१३
ताम्रो मुसलमादाय लोहजं दारुण दृढम् ।
जघान मस्तके सिंहं जहास च ननदं च ॥१४

उन्हें भागता देखकर चिक्षुर ने क्रोध पूर्वक कहा—अरे तुम में ऐसा भय क्यों छा रहा है ? ।८। उस मद से उन्मत्त हुई बाला को मैं अभी अपने बाण से बाधे देता हूँ इसीलिए हे दैत्यों ! तुम युद्ध-भूमि में डट जाओ ।९। फिर वे दोनों महाबली दैत्य चिक्षुर और ताम्र रणांगण में उतर कर एक साथ ही देवी से संग्राम में तत्पर हुए।१०।तब महामाया ने भी कुपित होकर ऐसी घोर बाण-वर्षा की, कि सभी दानवो के बाण और कवच छिन्न-भिन्न हो गये ।११। उन बाणों से आहूत होकर दैत्य-गण भी क्रोध-विमूढ़ हो गए और अत्यन्त द्रुत वेग से देवों पर बाण-वर्षा करने लगे ।१२। इस प्रकार ताम्र और भगवती के मध्य घोर युद्ध हुआ, जिसे देखकर गमन में देवता विस्मित हो गये ।१३।तभी ताम्रने लोहे का एक भयङ्कर मूसल उठाकर उससे देवी के सिंह पर आघात किया और गर्जन करने लगा ।१४।

नदमानं तदा तं तु दृष्ट्वा देवी रुषान्विता ।
खंगेन शितधारेण शिरश्चिच्छेद सत्वरा ।१५
छिन्ने शिरसि ताम्रस्तु विशोर्षो मुसली बली ।
बभ्राम क्षणमात्रं तु पपात रणमस्तके ।१६
पतितं ताम्रमालोक्य चिक्षुराख्यो महाबलः ।
खंगमादाय तरसा दुद्राव चण्डिकां प्रति ।१७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवत्यपि तं दृष्ट्वा खड्गपाणिमुपागतम् ।
दानवं पञ्चभिर्बाणैर्जघान तरसा रणे ।१८

एकेन पातितं खड्गं द्वितीयेन तु तत्करः ।
कण्ठाच्च मस्तकं तस्य कृन्तितं चापरैः शरैः ।१९

एवं तौ निहतौ क्रूरौ राक्षसौ रणदुर्मदौ ।
भग्नं सैन्यं तयोस्तूर्णं दिक्षु सन्त्रस्तमानसम् ।२०

देवाश्च मुदिताः सर्वे दृष्ट्वा तौ निहतौ रणे ।
पुष्पवृष्टिं मुदा चक्रुर्जयशब्दं नभःस्थिताः ।२१

ऋषयो देवगन्धर्वा वेतालाः सिद्धचारणाः ।
ऊचुस्ते जय देवीति चांबिकेति पुनः पुनः ॥२२

उसे गर्जना करता देखकर देवीभी क्रुद्धहो गई और उन्होंने तुरन्त ही अपने खड्ग से उनका शिरोच्छेदन कर दिया ।१५। शिरके काटनेपर भी उसका धड़ मूसल लेकर कुछ देर तक युद्ध करता रहा और फिर पृथिवी पर गिर गया ।१६। ताम्र को धराशायी हुआ देखकर महाबली चिक्षुर हाथ में खड्ग ग्रहण कर चण्डिका पर झपटा ।१७। उसे अपनी ओर झपटता देखकर देवीने शीघ्रता पूर्वक पाँच बाण छोड़ें ।१८।उसमें से एक बाण द्वारा उसका खड्ग और एक बाण द्वारा हाथ काट दिया और शेष तीन बाणों के द्वारा कण्ठ से मस्तक काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया ।१९। इसप्रकार रणमें न जीते जाने वाले दोनों क्रूर राक्षस देवी द्वारा मृत्युको प्राप्त हुए और उनकी सेनाभी भयसे त्रस्त होकर दिशाओं में भाग निकली ।२०। उस महाबली दैत्य का संहार हुआ देखकर आकाश-स्थित देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए और देवीकी जय बोलते हुए पुष्प वृष्टि करने लगे ।२१। तब सभी ऋषि, देवता, गन्धर्व वेताल, सिद्ध, चारण आदि बारम्बार कहने लगे हे अम्बे ! देवी ! आपकी जय हो ।२२।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दैत्यों का वध

तौ तया निहतौ श्रुत्वा महिषो विस्मयान्वितः।
प्रेषयामास दैतेयांस्तद्वधार्थं महाबलान् ।१
असिलोमविडालाख्यप्रमुखान् युद्धदुर्मदान् ।
सैन्येन महता युक्तान्सायुधान्सपरिच्छदान् ।२
ते तत्र तदृशुर्देवीं सिंहस्योपरि संस्थिताम् ।
अष्टादशभुजां दिव्यां खगखेटकधारिणीं ।३
स्वामिकार्यं परं मत्वा प्राणांतृणवत्तथा ।
इति सञ्चित्य तौ वीरौ संस्थितौ युद्धतत्परौ ।४
प्रथमं तू विडालाख्यः सप्त बाणान्मुमोच ह ।
असिलोमा स्थितो दूरे प्रेक्षकः परमास्त्रवित् ।५
चिच्छेद तांस्तथा प्राप्तानम्बिका स्वशरैः शरान् ।
बिडालाख्यं त्रिभिर्बाणैर्जघान च शिलाशितैः ।६
प्राप्य बाणव्यथां दैत्यः पपात समरांगणे ।
मूर्छितोऽथ ममाराशु दानवो दैवयोगतः ॥७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! चिक्षुर और ताम्र की मृत्यु के समाचार से महिषासुर अत्यन्त विस्मित हुआ और उसने देवी को मारने के उद्देश्य से अन्य महाबली दैत्यों को रणभूमि में प्रेषित किया ।१। उन दैत्यों में असिलोमा व विडालाक्ष नाम के दो दैत्य प्रमुख थे । वे अपने साथ विविध प्रकार के शस्त्रास्त्रों से सम्पन्न दैत्य सेना तथा युद्ध उपयोगी सामग्री भी युद्ध क्षेत्र में ले गये ।२। वहाँ जाकर उन्होंने सिंह,रूढ़ा भगवती का दिव्य स्वरूप देखा जिसकी अठारहों भुजाओं में विभिन्न प्रकार के तलवार आदि शस्त्रास्त्र सुसज्जित थे ।३। तब स्वामी का कार्य ही प्रमुख है, अपने प्राणों को तृण के समान समझना चाहिए । इस प्रकार विचार करके वे दोनों दैत्य वीर युद्ध में तत्पर हो गये ।४। पहिले विडालाक्ष ने देवी पर सात बाणोंसे प्रहार किया और असिलोमा एक ओर खड़ा होकर युद्ध को देखने लगा ।५। अम्बिका ने विडालाक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सातों वाणों से काटकर अपने तीन तीक्ष्ण वाण उस पर चलाए ।६। उन वाणों से व्यथित होकर वह दैत्य रणभूमि में गिर गया और प्राण हीन हो गया ।७।

बिडालाक्षं हतं दृष्ट्वा रणे शस्त्रशरोत्करैः ।
असिलोमा धनुष्पाणिः संस्थितो युद्धतत्परः ।८
ऊर्ध्वं सव्यकरं कृत्वा तामुवाच मितं वचः ।
देवि जानामि मरणं दानवानां दुरात्मनाम् ।९
तथापि युद्धं कर्तव्यं पराधीनेन वै मया ।
महिषो मन्दबुद्धिश्च न जानाति प्रियाप्रियम् ।१०
इत्युक्त्वा शरवृष्टिं स चकार दानवोत्तमः ।
देवीचिच्छेद तान्बाणैर प्राप्तांस्तु निजांतिकम् ।११
अन्यैर्विव्याध तं तूर्णमसिलोमानमाशुगैः ।
वीक्षिताऽमरसंघैश्च कोपपूर्णानना तदा ।१२
असिलोमा गदां गुर्वीं लौहमुद्यम्य वेगतः ।
दुद्राव चण्डिकां कोपात्सिंहं मूर्ध्नि जघान ह ।१३
सिंहोऽपि नखराघातैस्तं ददार भुजांतरे ।
अग्रणम्य गदाघातं कृतं तेन बलीयसा ॥१४

जब असिलोमाने उसका मरण देखा तो वह धनुष वाणग्रहण करके युद्ध के लिए उद्यत हुआ ।८। उसने अपना दायाँ हाथ उठाते हुए कहा कि हे देवि ! मैं जान गया कि दुरात्मा दानवों का मरण काल आ गया है ।९। तो भी पराधीन होने के कारण हमें संग्राम में कूदना ही पड़ेगा। क्योंकि मन्द बुद्धि महिषासुर प्रिय-अप्रिय कुछ भी नहीं जानता ।१०।यह कहकर दैत्य श्रेष्ठ असिलोमा ने भगवती पर वाण-वर्षा आरम्भ की, परन्तु देवी ने उन वाणों को मार्ग में ही काट डाला ।११। फिर उन्होंने प्रतिलोमा के देह को अपने वाणों से बींध डाला। उस समय देवताओं को देवी का मुख क्रोध से लाल दिखाई दिया ।१२। तभी एक लोहे की भारी गदा ग्रहण करके असिलोमा वेगसे देवी की ओर बढ़ा और उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनके सिंह पर गदा से भीषण आघात किया ।१३। परन्तु सिंह ने उस गदाघात की चिन्ता न करके वेग पूर्व अपने तीक्ष्ण नखों से उस दैत्य का हृदय विदीर्ण कर दिया ।१४।

उत्पत्य तरसा दैत्यो गदापाणिः सुदारुणः।
सिंहमूर्ध्नि समारुह्य जघान गदयाऽम्बिकाम् ।१५
कृतं तेन प्रहारं तु वंचयित्वा विशांपते ।
खड्गेन शितधारेण शिरश्चिच्छेद कण्ठतः ।१६
छिन्ने शिरसि दैत्येन्द्रः पपात तरसा क्षितौ ।
हाहाकारो महानासीत्सैन्ये तस्य दुरात्मनः ।१७
जय देवीति देवास्तां तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम् ।
देवदुंदुभयो नेदुर्जगुश्च नृप किन्नराः ।१८
निहतौ दानवौ वीक्ष्य पतितो च रणांगणे ।
निहताः सैनिकाः सर्वे तत्र केसरिणा बलात् ।१९
भक्षिताश्च तथा केचिन्नि ेष तद्रणं कृतम् ।
भग्नाः केचिदायता महिषं प्रति दुखिता ।२०
चुक्रुशू रुरुदुश्चैव त्राहि त्राहीति भाषणैः ।
असिलोमबिडालाख्यौ निहतौ नृपसत्तम ।२१
अन्ये ये सैनिका राजन्सिहेन भक्षिताश्च ते ।
एवं ब्रुवन्तो राजानंतदा चक्रुश्च वैशसम् ।२२
तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां महिषो दुर्मनास्तदा ।
बभव चिन्ताकुलितो विमला दुःखसंयुतः ।२३

तब भी गदा धारण किए हुए दैत्य उछलकर सिंह की मूर्धा पर चढ़ गया और उसने अपनी गदा से देवी के मस्तक पर प्रहार किया ।१५। परन्तु देवी उस प्रहार को बचा गई और उन्होंने तुरन्त ही उस दैत्य का सिर धड़ से पृथक कर दिया ।१६। मस्तक के कटते ही दैत्य वेग पूर्वक धराशायी हुआ, सिसे देखकर दैत्य - सेना में हाहाकार मच गया ।१७। आकाश में स्थित हुए देवतागण अम्बिका का जय घोष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए स्तुति करने लगे ।१८। दैत्यों की मर कर गिरे देखकर देवीके सिंह ने भी दैत्य-सेना को अपने पराक्रम से नष्ट कर दिया ।१९।अनेकानेक सैनिकों का उसने भक्षण कर लिया, यह देखकर वहाँ भगदड़ मच गयी। कुछ मन्द भाग्य दैत्य वहाँ से भागकर महिषासुर की शरण में पहुँचे ।२०। वहाँ त्राहि-त्राहि पुकार कर रोने लगे और बोले—हे नृपश्रेष्ठ ! अहिंसालोमा और विडालाक्ष दोनों ही मारे गये ।२१। हे राजन ! बहुतों को देवी का सिंह खा गया। यह कहते हुए वे दैत्य रुदन करने लगे ।२२। उनके वचन सुनकर महिषासुर व्याकुल होगया। दःख से त्रस्त होकर वह घोर चिन्ता में डूब गया ।२३॥

महिषासुर-वध

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा क्रोधयुक्तो नराधिपः ।
दारुकं प्राह तरसा रथमानय मेऽद्भुतम् ।१
सहस्रखरं संयुक्तं पताकाध्वजभूषितम् ।
आयुधैं संयुतं शुभ्रं सुचक्रं चारुकूबरम् ।२
सूतोऽपि रथमानीय तमुवाच त्वरान्वितः ।
राजन् रथोऽयमानीतो द्वारि तिष्ठति भूषतः ।३
सर्वायुधतसमायुक्तो वरास्तरणसंयुतः ।
अनीतं रथं ज्ञात्वा दानवेन्द्रो महाबलः ।४
मानुषं देहमास्थाय संग्राम गन्तुमुद्यतः ।
विचार्यं मनसा चेति देवी मां प्रेक्ष्य दुर्मुखम् ।५
शृगिणं महिषं नूनं सा भविष्यति ।
नारीणां च प्रियं रूपं तथा चातुर्यमित्यपि ।६
तस्माद्रूपं च चातुर्यं कृत्वा यास्यामि तां प्रति ।
यथा मां वीक्ष्य सा बाला प्रेमयुक्त भविष्यति ॥७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! इन सैनिकों के वचन सुनकर महिषासुर अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसने तुरन्त ही दारुक से कहा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे अद्भुत रथ को उपस्थित करो ।१। उसके रथ में एक हजार गधे योजित थे । उसके चक्र ओर जुआ अत्यन्त मनोहर थे ।२। आज्ञा पाते ही सारथी रथ लाकर बोला कि रथ सुसज्जित होकर आ गया है और द्वार पर स्थित है ।३। यह आयुधों से पूर्ण है, कोमल बिछौना उस पर बिछा हुआ है । यह सुनकर महिषासुर मनुष्य रूप धारण कर चलने को उद्यत हुआ उसने सोचा कि मेरे सींगों–युक्त महिष देह को देखकर देवी विमन हो जायेगी, क्योंकि स्त्रियाँतो सुन्दर रूप और चातुर्यको ही प्रेम करती हैं ।४-६। इसलिए मैं रूप और चतुरता से युक्त हो कर ही उसके समक्ष पहुँचुँगा, जिससे वह बाला मुझ पर अनुरक्त हो जाय ।७।

सेनापरिवृतो देवीं जगाम मदगर्वितः ।
मनोज्ञं रूपमास्थाय मानिनीनां मनोहरम् ।८
तमागतमालोक्य दैत्यानामधिपस्तदा ।
वहुभिः सवृतं वीरैर्देवी शङ्खमवादयत् ।९
स शङ्खनिनदं श्रुत्वा जनविस्मयकारकम् ।
समीपमेत्य देव्यास्तु तामुवाच हसन्निव ।१०
देवि संसारचक्रेऽस्मिन्यतमानो जनः किल ।
नरो वाऽथ तथा नारी सुखं वांछति सर्वथा ।११
सुखं संयोगजं नृणाः, नासंयोगे भवेदिह ।
संयोगो बहुधा भिन्नस्तंब्रवीमि शृणुष्वहि ।१२
भेदान्सुप्रीतिहेतूत्थान्स्वभावोत्थाननेकशः ।
तत्र प्रीतिभवानादौ कथयामि यथामति ।१३

अतः दैत्य मानिनियों का चित्त मोह लेने वाला आकर्षक रूप बनाकर अपनी विस्तृत सेना से घिर कर देवी की ओर चल पड़ा ।८। उस दैत्य के अधिपति महिषासुर को असंख्य सेनाके सहित अपनी ओर आता हुआ देखकर देवीने शंख-ध्वनि की।९।उस ध्वनि को सुनकर सभी विस्मय में पड़ गये । तभी महिषासुर मुसकराता हुआ देवी के समीप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुंचा और उनसे कहने लगा ।१०। हे देवि ! इस संसार-चक्र में विद्यमान रहने वाली स्त्री और पुरुष सभी सर्वथा सुख की इच्छा करते हैं ।११। मनुष्यों के परस्पर संयोग में ही सुख है असंयोग में सुख नहीं हैं उस संयोग के अनेक भेदहै ।१२। उनमें सुप्रीति-संयोग की उत्पत्ति पारस्परिक प्रेम से होती है, हेतूत्थ-संयोग किसी कार्य की सिद्धि के लिए प्रकट होता है और स्वभावोत्थ संयोग स्वयं ही उत्पन्न हो जाता है। अब प्रथम प्रेम से उत्पन्न संयोग को तुमसे कहता हूँ ।१३।

मातापित्रोस्तु पुत्रेण संयोगस्तूत्तमः स्मृतः ।
भ्रातुर्भ्रात्रा तथा योगः कारणान्मध्यमो मतः ।१४
उत्तमस्य सुखस्यैव दातृत्वादुत्तमः स्मृतः ।
तस्मादल्पसुखस्यैव प्रदातृत्वाच्च मध्यमः ।१५
नाविकानां तु संयोगः स्मृतः स्वाभाविको बुधैः ।
विविधावृतचित्तानां प्रसंगपरिवर्तिनाम् ।१६
अल्पाल्पसुखदातृत्वात्कनिष्ठोऽयं स्मृतो बुधैः ।
अत्युत्तमस्तु संयोगः संसारे सुखदुःखद ।१७
नारीपुरुषयोः कांते समानवयसी सदा ।
संयोगो यः समाख्यातः स एवात्युत्तमः स्मृत ।१८
अत्युत्तमसुखस्यैव दानृत्वात्स तथाविधः ।
चातुर्यरूपवेषाद्यैः कुलशीलगुणैस्तथा ।१९
परस्परमुष्कर्षः कथ्यते हि परस्परम् ।
त चेत्करोषि संयोग वीरेण न मया सह ।२०

माता—पिता और पुत्र के मध्य जो संयोग होता है,उसका कारण प्रेम है इसलिए वह सर्वोत्तम है । भाई–भाई के संयोग में कोई उद्देश्य निहित होने से वह मध्यम हैं ।१४। उपरोक्त सर्वोत्तम संयोग से उत्तम सुख की और मध्यम संयोग से मध्यम सुख की प्राप्ति होती है ।१५। विविध कार्य के निमित्त नाव आदि में मिलन होने पर वह स्वाभाविक संयोग कहा गया हैं, उसमें चित्त की विविध वृत्तियों से संयोगके लक्षण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में भी परिवर्तन हो जाता है ।१६। वह संयोग अत्यल्प सुख देने वाला है, इसलिए ज्ञानी जन उसें निकृष्ट श्रेणी का संयोग कहतेहैं इससे सिद्ध हुआ कि अत्युत्तम संयोग ही संसार ही संसार में सुख देने वाला है।१७। हे काते ! समवयस्क स्त्री-पुरुष का संयोग ही अत्युत्तम संयोग कहा जाता है ।१८। उसमें अत्युत्तम सुख की प्राप्ति होती है, एक दूसरे के गुणों का परस्पर बखान किया जाता हैं, इसलिए उत्तम संयोग के लिए तुम मेरे साथ संयोग करो ।१९-२०।

अत्युत्तमसुखस्यैव प्राप्तिः स्यात् न संशयः ।
नानाविधानि रूपाणि करोमि स्वेच्छया प्रिये ।२१
इन्द्रादयः सुराः सर्वे सग्रामे विजिता मया ।
रत्नानि यानि दिव्यानि भवनेऽस्मिन्ममाधुना ।२२
भुक्ष्व त्वं तानि सर्वाणि यथेष्टं देहि वा यथा ।
पट्टराज्ञी भवाद्य त्वं दासोऽस्मि तव सुन्दरि ।२३
वैरं त्यजेऽहं देवैस्तु तव वाक्यान्न संशयः ।
यथा त्वं सुखमाप्नोषि तथाऽहं करवाणि वै ॥२४
आज्ञापय विशालाक्षि तथाऽहं प्रक्ररोम्यथ ।
चित्तं मे तव रूपेण मोहितं चारुभाषिणि ।२५
ब्रह्मादीनीश्वरान्प्राप्य त्वयि तद्विदधाम्यहम् ।
चरितं मम जानन्ति रणे ब्रह्मादयः सुराः ॥२६

हे प्रिये ! इससे तुम्हे अत्युत्तम सुख की प्राप्ति होगी । मैं अपनी इच्छा के अनुसार विभिन्न प्रकार के रूप रखने में भी समर्थ हूँ ।२१। मैंने इन्द्रादि सम्पूर्ण देवताओं को युद्धमें पराजित कर दिया और जितने प्रकार के भी दिव्य रत्न है वे सभी मेरे भवन में विद्यमान हैं ।२२। हे सुन्दरि ! तुम मेरी पटरानी होकर उन रत्नादि का पूर्ण उपभोग करो, अथवा जैसे चाहे दो, मैं तुम्हारा दास हूँ ।२३। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं देवताओं से वैर का त्याग कर दूँ । मैं अवश्यही वह कार्य करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को तत्पर हूँ, जिससे तुम्हें सुख की प्राप्ति हो सके ।२४। हे विशालाक्षि! मुझें जो आज्ञा दोगी, मैं उसीका पालन करूँगा क्योंकि हे चारुभाषिणी मेरा चित्त तुम्हारे रूप पर मोहित हो गयाहै ।२५। ब्रह्मादिक देवताओं के सामने भी मैंने कभी मस्तक नहीं झुकाया,उसे तुम्हारे समक्ष ही झुका रहा हूँ ।२६।

सोऽप्यह तव दासोऽस्मि मन्मुखंपश्य भामिनि ।
इति ब्रुवाणं दैत्यंतुदेवी भगवती हि सा ।२७
प्रहस्य सस्मितं वाक्यमुवाच वरवर्णिनी ।
नाहं पुरुषमिच्छामि परमं पुरुषं विना ।२८
तस्य चेच्छास्म्यहं दैत्य सृजामि सकलं जगत् ।
स मां पश्यति विश्वात्मा तस्याहं प्रकृतिः शिवाः ।२९
तत्सान्निध्यवशादेव चैतन्यं मयि शाश्वतम् ।
जडाऽहं तस्य संयोगात्प्रभवामि सचेतना ।३०
मूर्खस्त्वमसि मन्दात्मन् यत्स्त्रीसङ्गं चिकीर्षसि ।
नरस्य बन्धनार्थाय स्त्रीश्शृङ्खला प्रकीर्तिता ।३१
लोहबद्धोऽपि मुच्येत् स्त्रीबद्धो नैव मुच्यते ।
किमिच्छसि च मन्दात्मन्मूत्रागारस्य सेवनम् ।३२
शमं कुरु सुखाय त्वं शमात्सुखमवाप्स्यसि ।
नारीसंगे महद् दुःखं जानान्कि त्वं विमुह्यसि ॥३३

हे भामिनी ! तुम मेरे मुख की ओर तो देखो,मैं ऐसा वीर होकर भी तुम्हारा दास हो गया हूँ । उसके ऐसा कहने पर देवी हँसी और फिर मुस्कराते हुए कहने लगी कि मैं केवल एक परम पुरुषके अतिरिक्त और किसी पुरुष की इच्छा नहीं करतीं ।२७-२८। हे दैत्य मैं उसी पुरुष की इच्छा शक्ति हूँ । मैं ही सम्पूर्ण जगत् को रचती हूँ ।२९। वे सदा ही मेरे निकट रहते हैं, तभी सदा चैतन्य रहती हूँ । यथार्थ में मैं जड़ हूँ और उन्हीं के संयोग से चैतन्य होती हूँ ।३०। हे मूर्ख ! तू मन्दात्मा है इसलिए स्त्री-संयोग के लिए उत्सुक है । परन्तु स्त्रीतो पुरुष को बन्धन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में डालने वाली शृंखला हैं ।३१। लोहे की जंजीरों में कसा हुआ व्यक्ति कभी बन्धनमुक्त हो सकता है, परन्तु स्त्री के बन्धन में पड़ा हुआ पुरुष कभी भी मुक्त नहीं होता। अरे मन्दात्मा ! तू स्त्रीके मूत्रागार के सेवन हेतु व्याकुल है ।३२। सुख के लिए शान्ति रख, क्योंकि शान्तिही यथार्थ सुख है। स्त्री का सङ्ग तो महा दुःख का देने वाला है। इसे जानकर भी मोह में क्यों पड़ा है ? ।३३।

त्यज वैरं सुरैः सार्धं यथेष्टं विचरावनौ ।
पातालं गच्छ वा कामं जीवितेच्छा यदस्ति ते ।३४
अथवा कुरु संग्रामं बलवत्यस्मि साम्प्रतम् ।
प्रेषिताऽहं सुरैः सर्वेस्तव नाशाय दानव ।३५
सत्यं ब्रवीमि येनाद्य त्वया वचनसौहृदम् ।
दर्शितं तेन तुष्टाऽस्मि जीवन्गच्छ यथासुखम् ।३६
सतां सप्तपदी मैत्री तेन मुञ्चामि जीवितम् ।
मरणेच्छास्ति चेद्युद्धं कुरु वीर यथासुखम् ।३७
अरूपायाश्च मे रूपमजन्मायाश्च जन्म च ।
सुराणा रक्षणार्थाय विवि दैत्य विनिश्चतम् ।३८
सत्यं ब्रवीमि जानीहि प्रार्थिता-हं सुरैः किल ।
त्वद्वधार्थं हयारे त्वां हत्वास्थास्यामि निश्चल ।३९
तस्माद्युध्यस्व वा गच्छ पातालमसुरालयम् ।
सर्वथा त्वां हनिष्यामि सत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥४०

तू देवताओं से वैरत्याग कर स्वेछा-पूर्वक कहीं भी विचरण कर। यदि जीवित रहना चाहता है तो पाताल लोक मे चला जा ।३४। अथवा मेरे साथ युद्ध कर क्योंकि मैं इसके लिए पूर्ण शक्ति-सम्पन्न हूँ ।३५। तेरे सौहार्द-पूर्ण वचनों के कारण ही मैंने तुझे यह सत्य बात बतादी। अब तू मुझे सन्तुष्ट करने के लिए सुख-पूर्वक पाताल लोकको गमन कर ।३६। सज्जनों के मध्य सात शब्दों के उच्चारण मात्र से ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मित्रता हो जाती है, इसलिए तुझे छोड़ती हूँ, और हे वीर! यदि मरने की इच्छा हो तो मुझसे युद्ध कर ले ।३७। हे दैत्य ! यथार्थ में तो मेरा न कभी जन्म हुआ न कोई रूप ही है, फिर भी देवताओं की रक्षा के लिए मुझे मूर्तिमान होना पड़ता है इसे सत्य समझ ।३८।मैं सत्य कहती हूँ कि तुझें मारकर मैं द्विविधा रहित हो जाऊँगी ।३९। अब तू मुझसे युद्ध कर या पाताल लोकमें जाकर रह,अन्यथा मैं तेरा वध कर दूँगी, यह सत्य कह रही हूँ ।४०।

इत्युक्तः स तया देव्या धनुरादाय दानवः ।
युद्धकामः स्थितस्तत्र संग्रामांगणभूमिषु: ।४१
मुमोच तरसा बाणान्कर्णाकृष्टाञ्छिलाशितान् ।
देवी चिच्छेद तान्बाणैः कोधान्मुक्तैः रयोमुखैः ।४२
तयोः परस्परं युद्धं संबभूव भयप्रदम् ।
देवानां दानवानां च परस्परजयैषिणाम् ।४३
मध्ये दुर्धर आगत्य मुमोच च शिलीमुखान् ।
देवीं प्रति विषाक्तान्कोपयन्नतिदारुणान् ।४४
ततो भगवती क्रुद्धा तं जघान शितैः शिरैः ।
दुर्धरस्तु पपातोर्व्यां गतासुर्गिरिश्रृङ्गवत् ।४५
तं तथा निहतं दृष्ट्वा त्रिनेत्रः परमास्त्रवित् ।
आगत्य सप्तभिर्बाणैर्जघान परमेश्वरीम् ।४६
अनागतांस्तु चिच्छेद देवी तान्विशिखैः शरान् ।
त्रिशूलेन त्रिनेत्रं तु जघान जगदम्बिका ।४७

देवी द्वारा इस प्रकार कहा जाने पर दानव ने धनुष उठाया और युद्ध के लिए संग्राम भूमि में डट गया ।४१। तथा भगवती ने अपने बाणों से उसके सभी बाण काट दिये ।४२।तथा प्रकार देवी और दानव के मध्य घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया, जिसे देखकर अपनी-अपनी विजय के आकांक्षी देवता और दानव भयभीत हो गये ।४३- तभी दुर्धर एक दैत्य मध्य में आकर देवी कोधित करता हुआ उन पर बाणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दारुण विषाक्त वाणो को चलाने लगा ।४४। तब भगवती ने अत्यन्त क्रोध-पूर्वक उस पर तीक्ष्ण वाणों का प्रयोग करके उसे धराशायी कर दिया ।४५। उसे मरकर गिरता देखकर त्रिनेत्र नामक दैत्य ने युद्ध क्षेत्र में आकर देवी पर सात वाणों से प्रहार किया ।४६। देवीने उसके सभी वाण मार्ग में ही काट दिए और अपने त्रिशूल से ऐसा भयंकर प्रहार किया कि वह दैत्य वहीं ढेर हो गया ।४७।

अन्धकस्त्वाजगामाशु हतं दृष्ट्वा त्रिलोचनम् ।
गदया लोहमय्याशु सिंहं विव्याध मस्तके ।४८
सिंहस्तु नखघातेन तं हत्वा बलवत्तरम् ।
चखाद तरसा मांसमन्धकस्य रुषान्वितः ।४९
तान्रणे निहतान्वीक्ष्य दानवो विस्मयं गतः ।
चिक्षेप तरसा बाणाननितीक्ष्णाञ्छिलाशितान् ॥५०
द्विधा चक्रे शरान्देवी तानप्राप्तांञ्छिलीमुखैः ।
गदया ताडयामास दैत्यं वक्षसि चांबिका ।५१
स गदाऽभिहतो मूर्छामिवापामरबाधकः ।
विषह्य पीडां पापात्मा पुनरागत्य सत्वरः ।५२
जघान गदया सिंह मूर्ध्नि क्रोधसमन्वितः ।
सिंहोऽपि नखघातेन तं ददार महासुरम् ।५३
विहाय पौरुष रूपं सोऽपि सिंहो बभूव ह ।
नखैर्विदारयामास देवीसिंहं मदोत्कटम् ।५४
तं च केसरिणं वीक्ष्य देवी क्रुद्धा ह्यतोमुखैः ।
शरैरवाकिरत्तीक्ष्णैः क्रूराशीविषैरिव ॥५५

त्रिनेत्र का मरण देखकर अन्धक नामक दैत्य अपनी लोहेकी गदा लेकर आया और उसने सिंह के मस्तक पर वह गदा चलाई ।४८। तब सिंह ने अपने-नखों से दैत्य को फाड़कर भक्षण कर लिया ।४९। अपने उन वीरो का मरण देकर महिषासुर वाणों को देवी पर छोड़ने लगा ।५०। परन्तु उसके वाण मार्ग में ही भगवती के वाणोंसे दो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टूक हो होकर गिर गए, तभी अम्बिका ने महिषासुर के वक्षस्थल पर गदा-प्रहार किया ।५१। देवताओंको पीड़ित करने वाला वह दैत्य उस प्रहार से सूच्छित होकर कुछ समय में ही उड खड़ा हुआ और अत्यन्त क्रोध में भरकर उसने सिंह के मस्तक पर गदा मारी । सिंह ने भी उसे अपनी नखों से घायल कर दिया ।५२-५३। तब उसने मध्य-रूप छोड़ कर सिंह-रूप धारण किया और नखों से देवी के सिंह को आहत करने लगा ।५४। उसे रूप में देखकर कुपित हुई भगवती ने तीक्ष्ण वाणों से उस पर प्रहार किया ।५५।

त्यक्त्वा स हरिरूपं तु गजो भूत्वा मदस्रवः ।
शैलशृगं करे कृत्वा चिक्षेप चण्डिकां प्रति ।५६
आगच्छन्तं गिरेः शृगं देवी वाणैः शिलाशितैः ।
चकार तिलशः खण्डांजहास जगदम्बिका ।५७
उत्पत्य च तदा सिहस्तस्य मूर्ध्नि व्यवस्थितः ।
नखैर्विदारयामास महिषं गजरूपिणम् ।५८
विहाय गजरूपं च बभूवाष्टापदो तथा ।
हन्तुकामो हरिं कोपाद्दारुणो बलवत्तरः ।५९
तं वीक्ष्य शरभं देवी खड्गेन सा रुषान्विता ।
उत्तमांगे जघानाशु सोऽपि ता प्राहरत्तदा ।६०
तयोः परस्परं युद्धं बभूवातिभयप्रदम् ।
महिषं रूपमास्थाय शृङ्गाभ्यां प्राहरत्तदा ।६१
चण्डिकाऽपि च तं पापं त्रिशूलेन बलाद्धृदि ।
ताडयामास तीक्ष्णेन क्रोधादरुणलोचना ।६२
ताडितोऽसौ पपातोर्व्यां मूर्छामाप मुहूर्तकम् ।
पुनरुत्थाय चामुण्डां पद्भ्यां वेगादताडयत् ॥६३

तब महिषासुर सिंहरूप दोड़कर हाथी बन गया और उसने अपनी सूंड़ से एक पर्वत शिखर उखाड़कर देवी के ऊपर फैंका ।५६। तब देवी ने अपनी ओर आते हुए गिरिशृङ्ग को देखकर बाण-वृष्टि करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिल के समान टुकड़ें करके गिरा दिया और अट्टहास करने लगी।५७। तभी देवी के सिंह ने उछल कर हाथी-रूप दैत्यों के सिर पर आसन जमाया और अपने तीक्ष्ण नखों से उसे चीरने लगा ।५८।तब महिषासुर ने हाथी का रूप छोड़कर उस सिंह को मारने के विचार से शरभ का रूप बनाया ।५९। उसे शरभ रूप में देखकर देवी ने क्रोध पूर्वक उसके मस्तक पर खड्ग से वार किया । यह देखकर उसने भी भगवती पर आघात किया ।६०। इस प्रकार दोनोंमें घोर युद्ध होने लगा । तभी वह महिष रूप धारण करके अपने सींगों से देवी पर प्रहार करने लगा।६१। तभी क्रोध से लाल नेत्र करके भगवती चण्डिका ने अपना त्रिशूल लेकर महिषासुर पर घोर प्रहार किया ।६२। उस प्रहार से व्यथित हुआ दैत्य मूर्छित होकर गिर पड़ा और फिर तुरन्त ही उठ कर उसने देवी पर पदाघात किया ।६३।

विनिहत्य पदाघातैर्जहास च मुहुर्मुहुः ।
रुराव दारुणं शब्दं देवानां भयकारकम् ।६४
ततो देवीं सहस्रारं सुनाभं चक्रमुत्तमम् ।
करे कृत्वा जगादोच्चैः संस्थितं महिषासुरम् ।६५
पश्य चक्रं मदांधाद्य तव कण्ठनिकृन्तनम् ।
क्षणमात्रं स्थिरो भूत्वा यमलोकं व्रजाधुना ।६६
इत्युक्त्वा दारुणं चक्रं मुमोच जगदम्बिका ।
शिरश्छिन्नं रथांगेन दानवस्य तदा रणे ।६७
कबन्धस्तस्य दैत्यस्य भ्रमन्वै पतितः क्षितौ ।
जयशब्दश्च देवानां बभूव सुखवर्धनः ।६८
मृते च महिषे क्रूरे दानवा भयपीडिताः ।
मृतशेषाश्च ये केचित्पातालं तेऽयुर्नृप ।६९
आनन्दं परमं जग्मुर्देवास्तस्मिन्नपातिते ।
मुनयो मानवाश्चैव ये चान्ये साधवः क्षितौ ।७०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार बारम्बार पदाघात करते हुए दैत्य ने हँसते-हँसते ऐसा चीत्कार किया कि उससे सब देवता भयभीत हो गये ।६४। फिर देवी ने एक सुन्दर नाभि युक्त सहस्र धार वाला चक्र हाथ में लेकर अपना सानना करते हुए महिषासुर से उच्च स्वर में कहा ।६५। हे मदान्ध ! इस चक्र को देख, यही तेरे कण्ठ का उच्छेद करेगा। क्षण भर ठहर, तुझे सीधा यमलोक भेज देती हूँ ।६६। यह कर भगवती ने उस दारुण चक्र को छोड़ा जिससे तुरन्त ही उस दैत्य का मस्तक काट कर रणक्षेत्र में गिरा दिया ।६७। फिर उस दैत्य का धड़ भी घुमता हुआ पृथिवी पर जा गिरा। यह देखकर देवताओंने सुख बढ़ाने वाला जयघोष किया ।६८। महिषासुरकी मृत्यु होनेसे शेष सभी दानव भयभीत होकर पाताल लोक को भाग गये ।६९। सम्पूर्ण देवता, मुनिगण, मनुष्य और पृथिबीके सभी प्राणी आनन्द में निमग्न हो गये ।७०।

देवताओं द्वारा जगदम्बा की स्तुति

नथ प्रमुदिताः सर्वे देवा इन्द्रपुरोगमाः ।
महिषं निहतं दृष्ट्वा तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम्।१
ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरिदं महेशः ।
शक्त्या तवैव हरते ननु चांतकाले ।
ईशा न तेऽपि च भवन्ति त्वया विहीना—
स्तस्मात्त्वमेव जगतः स्थितिनाशकर्त्री ।२
कीर्तिर्मतिः स्मृतिगती करुणा दया त्वं ।
श्रद्धा धृतिश्च वसुधा कमला जया च ।
पुष्टिः कलाऽथ विजया गिरिजा जया त्वं ।
तुष्टिः प्रभा त्वमसि बुद्धिरुमा रमा च ॥३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्या क्षमा जगति कांतिरपीह मेधा
सर्वं त्वमेव विदिता भुवनत्रयेऽस्मिन् ।
आभिर्विना तव तु शक्तिभिराशु कर्तुं ।
को वा क्षमः सकललोकनिवासभूमे ।४
त्वं धारणा ननु न चेदसि कूर्मनागौ ।
धर्तुं क्षमौ कथमिलामपि तौ भवेताम् ।
पृथ्वी य चेत्त्वमसि वा गगने कथं स्था—
स्यत्येतदैव निखिलं बहुभारयुक्तम् ॥५

व्यासजी बोले—हे जनमेजय ! महिषासुर का वध हुआ देखकर इन्द्रादि देवता अत्यन्त हर्षित हुए और जगदम्बा की स्तुति में तल्लीन हो गए ।१। देवताओं ने कहा—हे जगदम्बे ! आपकी शक्ति ही से ब्रह्मा सृष्टि रचते, विष्णु स्थिति करते और शिव प्रलय करते हैं ।२। आप ही कीर्ति, मति, स्मृति, गति, करुणा, दया, श्रद्धा, धृति पृथिवी, कमला, जया, पुष्टि, कला, विजया, गिरिजा, तुष्टि, प्रभा बुद्धि,उमा और रमा हैं ।३। आप ही तीनों लोकों में प्रसिद्ध विद्या, क्षमा, कांति, मेधा आदि शक्तियाँ हैं । यदि ये शक्तियाँ न हों तो कोई क्या करनेमें समर्थ है ।४। हे अम्बे ! आपकी धारणा शक्ति के अभाव में कूर्म और शेष पृथिवीको कैसे धारण कर सकते थे ? यदि आप पृथिवी के रूप में विद्यमान न होती तो यह भार–युक्त जगत् किसका आश्रय लेता ।५।

ये वा स्तुवन्ति मनुजा अमरान्विमूढा
मायागुणैस्तव चतुर्मुखविष्णुरुद्रान् ।
शुभ्रांशुवह्नियमवायुगणेशमुख्यान्
किं त्वामृते जननि ते प्रभवन्ति कार्ये ।६
ये जुह्वति प्रविततेऽल्पधियोऽम्ब यज्ञं
वह्नौ सुरान्समधिकृत्य हविः समृद्धम् ।
स्वाहा न चेत्त्वमसि ते कथमापुरद्धा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोगप्रदाऽसि भवतीह चराचराणां
स्वांशैर्ददासि खलु जीवनमेव नित्यम् ।७
स्वीयान्सुराञ्जननि षोषयसीह यद्वत्
तद्वत्परानपि च पालयसीति हेतोः ।८
मातः स्वयं विरचितान्विपिने विनोदा—
द्वृंध्यान्पलाशरहितांश्च कटूंश्च वृक्षान् ।
नोच्छेदयन्ति पुरुषा निपुणाः कथंचित्
तस्मात्वमतितरां परिपासि दैत्यान् ।।९

हे जननी ! आपकी माया से मोहित हुए मनुष्य ब्रह्मा, विष्णु शिव चन्द्र, अग्नि, यम, वायु और गणेश आदि को प्रमुख मानकर उनकी उपासना करते हैं परन्तु क्या वे देवता आपकी शक्ति के विना कुछ करने में समर्थ हैं ? हे अम्बे ! यज्ञों में इन्द्रादि देवताओं को आहुति देने वाले अग्नि-होत्री मूर्ख ही हैं, क्योंकि यदि यज्ञ में आपका स्वाहा कहकर आह्वान न हो तो देवता अग्नि में आहुति-द्रव्य को नहीं प्राप्त कर सकते । तब वे मूर्ख आपका यज्ञ क्यों नहीं करते ? ।६-७। हेमाता! संसार के सभी चराचर जीवों के लिए आप ही अपने अंश से भोगप्रद होकर जीवन देती हैं, इस प्रकार आप ही सब देवता दैव तथा अन्याय प्राणियों को भोग प्रदान करने वाली हैं ।८। हे माता स्वयं के लगाये हुए उद्यना मेंकुछ वृक्षों में पत्र आदि न हों अथवा उनके फल कड़वे हों तो भी कोई उन्हें काट देता । इसी प्रकार आप दैत्यों की भी रक्षा करती हैं ।९।

यत्वं तु हंसि रणमूर्ध्नि शरैररातीन् ।
देवाङ्गनासुरतकेलिमतीन्विदित्वा ।
देहान्तरेऽपि करुणारसमाददाना
तत्ते चरित्रमिदमीप्सितपूरणाय ।१०
चित्रं त्वमी यदसुभी रहिता न सन्ति
त्वच्चिनिवेद दनुजाः प्रथितप्रभावाः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येषां कृते जननिदेहनिबन्धनं ते
क्रीडा रसस्तव न चान्यतरोऽत्र हेतुः ।११
प्राप्ते कलावहह दुष्टतरे च काले
न त्वां भजन्ति मनुजा ननु वंचितास्ते ।
धूर्तैः पुराणचतुरैर्हरिशङ्कराणां
सेवापराश्च विहितास्तव निर्मितानाम् ।१२
ज्ञात्वा सुरांस्तव वशानसुरादितांश्च
ये वै भजन्ति भुवि भावयुता विमग्नान् ।
धृत्वा करे सुविमल खलु दीपकं ते
कूपे पतिन्ति मनुजा विजलेऽतिघोरे ।।१३

हे जननि ! करुणा-पूर्ण हृदय वाली हैं क्योंकि आप रण में जिन दैत्यों का वध करती हैं, उनका भी देवङ्गनाओं को प्राप्त करने का मनोरथ पूर्ण कर देती है ।१०। हे माता विस्मय तो यह है कि उन्हें मारने के लिए आपको अवतार लेना पड़ा । इसका कारण यही जान पड़ता है कि आप देह धारण के बहाने लीला ही करना चाहती थी११ हे माता ! इस दुष्टतर कलिकाल से भी जीव आपका भजन नहीं करते इसका कारण यही प्रतीत होता है कि पुराण रखने वाले धूर्तो से ही ब्रह्मा, विष्णु शिव की पूजा में लगाकर उन्हें भ्रम में डाल दिया है।१२। जो लोग दैत्यों द्वारा पीड़ित होनेवाले उन देवताओंकी आराधना करते हैं जो आपके बलवर्ती है, वे हाथ में प्रकाश होते हुए भी अंधकूप में गिरने वाले के समान ही कूप में गिरते हैं ।१३।

विद्या त्वमेव सुखदाऽसुखाऽप्यविद्या
मातस्त्वमेव जननार्तिहरा नराणाम् ।
मोक्षार्थिभिस्तु कलिता किल मत्तधीभिः ।
नाराधिता जननि भोगपरैस्तथाऽज्ञैः ।१४
ब्रह्मा हरश्च हरिरप्यनिशं शरण्यं
पादांबुजं तव भजन्ति सुरास्तथान्ये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तद्वै न येऽल्पमतयो मनसा भजन्ति ।
भ्रांताः पतन्ति सततं भवसागरे ते ।१५
चण्डि त्वदङ्घ्रिजलजोत्थरजः प्रसादै
र्ब्रह्मा करोति सकलं भुवनं भवादौ ।
शौरिश्च पाति खलु संहरते हरस्तु
त्वां सेवते न मनुजस्त्विह दुर्भगोऽसौ ।१६
वाग्देवता त्वमसि देवि सुरासुराणां
वक्तुं न तेऽमरवरा प्रभवन्ति शक्ताः ।
त्वं चेन्मुखे वससि नैव यदैव तेषां
यस्माद्भवन्ति मनुजा न हि तद्विहीना ।१७
शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं
मीनो बभूव कमठः खलु शूकरस्तु ।
पञ्चान्नृसिंह इत्यप्युत वामनोयः
तं सेवतां जननि मृत्युभयं न किं स्यात् ।१८

आप ही सुख देने वाली विद्या और दुःख देने वाली अविद्या हैं आप ही मनुष्योंका दुःख हरण करने वाली हैं । मुमुक्षु जन आपकी उपासना करते और भोगी मनुष्य आपसे सदा दूर रहते हैं, क्योंकि उनकी बुद्धि नष्ट हो गई हैं ।१४। ब्रह्मा विष्णु और शिव आदि देवता भी आपके शरणप्रद चरणों को भजते हैं । परन्तु जो मन्दबुद्धि आपका चिन्तन नहीं करते वही सदा भवसागर में पड़े रहते हैं ।१५। हे चंडिके! आपकी चरण-रज मस्तक पर धारण करके ब्रह्मा सृष्टि,विष्णु पालन और शिव संहार करते है ।१६। आप सब की वाणी की अधिष्ठात्री के अधिष्ठान बिना देवता भी कुछ बोलने में समर्थ नहीं है तो साधारण प्राणी कैसे बोल सकते हैं ? ।१७। हे माता ! महर्षि भृगु के शापवश जिन विष्णुको बारम्बार मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन और नृसिंह का जन्म धारण करना पड़ा, तब उन विष्णु की उपासना करने वाली को मृत्यु का भय क्यों नहीं होगा ।१८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शम्भोः पपात भुवि लिङ्गमिदं प्रसिद्धं
शापेन तेन च भृगोर्विपिने गतस्य ।
तं ये नरा भुवि भजन्ति कपालिनं तु
तेषां सुख कथमिहापि परत्र मातः ।१९
योऽभूद्गजाननगणाधिपतिर्महेशात् ।
तं ये भजन्ति मनुजा वितथप्रयत्नाः ।
जानन्ति ते न सकलार्थफलप्रदात्रीं
त्वां देवि विश्वजननीं सुखसेवनीयाम् ।२०
चित्रं त्वयाऽरिजनताऽपि दयार्द्रभावा
द्धत्वा रणे शितशरैर्गमिता द्युलोकम् ।
वाचेस्वकर्मनिचिते निरये नितांतं
दुःखातिदुःखगतिमापदमापतेत्सा ।२१
ब्रह्मा हरश्च हरिरप्युत गर्वभावाज्
जानति तेऽपि विबुधा न तव प्रभावम् ।
केऽन्ये भवन्ति मनुजा विदितुं समर्थाः
सम्मोहितास्तव गुणैरमितप्रभावैः ।२२
क्लिश्यन्ति तेऽपि मनुयस्तव दुर्विभाव्यं
पादांबुजं न हि भजन्ति विमूढचित्ताः ।
सूर्याग्निसेवनपराः परमार्थतत्वं
ज्ञातं न तैः श्रुतशतैरपि वेदसारम् ॥२३

यह प्रसिद्ध है कि भृगु के शाप से नंगे घूमते हुए शिवकी का उपस्थ कट कर गिर गया, तब उन कापालिक की आराधना से ही इहलोक और परलोक में सुख कैसे मिलेगा ! ।१९। हे देवि ! जो शिव पुत्र गणेश को पूजते हैं वे भी भ्रम में हैं क्योंकि उन्हें यह ज्ञान नहीं है कि आप, चारों पदार्थों के देने वाली की सेवा सरल है ।२०। आपने दैत्यों को मारकर भी स्वर्ग दिया है अन्यथा वे नरक, यातनाओं से मुक्त न हो पाते ।२१। जनमोह में पड़े हुए ब्रह्मा, विष्णु, शिव ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी महिमा को नहीं जानते, तव आपके प्रभावशाली तीनों गुणों से मोहित मनुष्य ही उसे कैसे जान सकते हैं।२२। हे अम्बे ! जो सूर्य और अग्नि को प्रत्यक्ष देव मानकर उनकी उपासना करते हैं और आपकी उपासना नहीं करते वे विभिन्न दुःख उठाते हैं।२३।

सर्वं त्वयेदमखिलं विहितं भवादौ।
त्वं पासि वै हरिहरप्रमुखान्दिगीशान् ।
कालेऽसि विश्वमपि ते चरितं भवाद्ये
जानन्ति नैव मनुजाः क्व नु मन्दभाग्याः ।२४
हत्वाऽसुरं महिषरूपधरं महोग्रं
मातस्त्वया सुरगणः किल रक्षितोऽयम् ।
का ते स्तुतिं जननि मन्दधियो विदामो
वेदा गतिं तव यथार्थतया न जग्मुः ।२५
कार्यं कृतं जगति नो यदसौ दुरात्मा
वैरी हतो भुवनकण्टकदुर्विभाव्यः ।
कीर्तिः कृता ननु जगत्सु कृपा विधेया
ऽप्यस्मांश्च पाहि जननि प्रथितप्रभावे ।२६
एवं स्तुता सुरैर्देवी तानुवाच मृदुस्वरा।
अन्यत्कार्यं च दुःसाध्यं ब्रुवन्तु सुरसत्तमाः ।२७
यदा यदा हि देवानां कार्यं स्यादतिदुर्घटम् ।
स्मर्तव्याऽहं तदा शीघ्रं नाशयिष्यामि चापदम् ।२८
सर्वकृतं त्वया देवि कार्यं नः खलु साम्प्रतम् ।
यद्यं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ।।२९

आरम्भ में आपने ही इस जगत की रचना की है। आप ही ब्रह्मा विष्णु महेशादि प्रमुख देवता और दिक्पालों की रक्षा करती हैं। अन्त काल में इस विश्व को आप ही उदरस्थ कर लेती हैं। हे माता ! आपके जिस चरित्रको देवगण भी नहीं जान पाते, उसे मन्दभाग्य मनुष्य ही कैसे जान सकते हैं ? ।२४। आपने महिष रूपी दैत्य को मारकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवगण की रक्षा की है आपकी अगम्य गति का भेद भी नहीं जानते तो हम मन्दबुद्धि उसे कैसे जान सकते हैं ? ।२५। हे जगदम्बे ! आपने उस दुराचारी और त्रैलोक्य-कंटक महिषासुर का वध करके हमारा बड़ा उपकार किया हैं। आप हमारी सदा रक्षा करती रहें ।२६। इस प्रकार देवताओं द्वारा स्तुतहुई देवी ने मृदुल स्वरमें कहा कि हे श्रेष्ठ देवगण! यदि आपका कोई अन्य दुःसाध्य कार्य हो कहो, उसे भी अवश्य करूँगी ।२७। जब-जब देवताओं का कोई कठिन कार्य आ अटके तो मेरा स्मरण करना, मैं तुम्हारे संकट को तुरन्त दूर करूँगी ।२८। देवताओं ने कहा- हे माता इज समय तो आपने महिषासुर का वध करके हमारा सब कार्य पूर्ण कर दिया है ।२९।

स्मारिष्यामो यथा तेऽम्ब सदैव पदाङ्कजम् ।
तथा कुरु जगन्मातर्भक्तिं त्वय्यप्यचञ्चलाम् ।३०
अपराधसहस्राणि मातैव सहते सदा ।
इति ज्ञात्वा जगद्योनिं न भजन्ते कुतो जनाः ।३१
द्वौ सुपर्णौ तु देहेऽस्मिंस्तयोः सख्यं निरन्तरम् ।
नान्यः सखा तृतीयोऽस्ति योऽपराधं सहते हि ।३२
तस्माज्जीवः सखायं त्वां हित्वा किं तु करिष्यति ।
पापात्मा मन्दभाग्योऽसौ सुरमानुषयोनिषु ।३३
प्राप्य देहं सुदुष्प्रापं न स्मरेत्त्वां नराधमः ।
मनसा कर्मणा वाचा ब्रूमः सत्यं पुनः पुनः ।३४
सुखे वाप्यथ वा दुःखे त्वं नः शरणमद्भुतम् ।
पाहि नः सततं देवि सर्वेस्तव वरायुधैः ।३५
अन्यथा शरणं नास्ति त्वत्पदांबुजरेणुतः ।
एवं स्तुता सुरैर्देवी त्रैवान्तरधीयत ॥३६

हे अम्बे ! अब आप हमें ऐ सी शक्ति प्रदान कीजिए कि हम आपके चरणांदुजों का ध्यान करते हुए सदैव आपकी स्थिर भक्ति से ओतप्रोत रहें ।३०। अपने अपत्य के अपराधों को माता ही सहन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर सकती है, यह जानकर भी मूर्खजन आपका भजन क्यों नहीं करते ? ।३१। इस शरीर रूपी वृक्ष पर जीवात्मा और परमात्मा रूपी दो पक्षी रहते हैं, उनसे घनिष्ठ मित्रता है, परन्तु उनका कोई तीसरी मित्र ऐसा नहीं है जो उनके अपराधों को सहन करे ।३२। अतः आपके समान मित्र को प्राप्त करके कोई भी आपको छोड़ दे तो क्या करने में समर्थ होगा ? वह पापी और अभागा प्राणी तो बारम्बार जन्म-मरण के चक्र में घूमता रहेगा ।३३। जो प्राणी दुर्लभ मनुष्य शरीर को प्राप्त करके भी मन-वाणी द्वारा आपका स्मरण नहीं करता वह नराधम ही हैं। यह सत्य हम बारम्बार दुहराते हैं ।३४। हे देवी सुख दुःख सभी में आपने हमारी अद्भुत रक्षा की है, अतः भविष्य में अपने श्रेष्ठ आयुधों के द्वारा हमारी रक्षाही करती रहें। ।३५। क्योंकि हमें आपकी चरण-रज के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी आश्रय दिखाई नहीं देता। इस प्रकार स्तुत हुई भगवती वहीं अन्तर्धान हो गई ।३६।

शत्रुघ्न को राज्य प्राप्ति

कथितं ते महाभाग गतान्तर्धानमाशु सः।
स्वर्गे वा मृत्युलोके वा संस्थिता भुवनेश्वरी ।१
लयं गता वा तत्रैव वैकुण्ठे वा समाश्रिता।
अथवा हेमशैले सा तत्त्वतो मे वदाधुना ।२
पूर्वं मया ते कथितं मणिद्वीपं मनोहरम्।
क्रीडास्थानं सदा देव्या वल्लभं परमं स्मृतम् ।३
यत्र ब्रह्मा हरिः स्थाणुः स्त्रीभावं प्रपेदिरे।
पुरुषत्वं पुनः प्राप्य स्वानि कार्याणि चक्रिरे ।४
यः सुधासिन्धुमध्येऽस्ति द्वीपः परमशोभनः।
नानारूपैः सदा तत्र विहारं कुरुतेऽम्बिका ।५
स्तुता संपूजिता देवैः सा तत्रैव गता शिवा।
तत्र संक्रीडते नित्यं मायाशक्तिः सनातनी ॥६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवास्तां निर्गतां वीक्ष्य देवीं सर्वेश्वरी तथा ।
रविवंशोद्भवं चक्रभूमिपालं महाबलम् ॥७
अयोध्योऽधिपतिं वीरं शत्रुघ्न नाम पार्थिवम् ।
सर्वलक्षणसम्पन्नं महिषस्यासने शुभे ॥८

जनमेजय बोले—हे ब्राह्मण! हे महाभाग! आपने कहा कि देवी वहीं अन्तर्धान हो गईं, तो वे वहाँ से स्वर्ग लोक चली गईं अथवा मर्त्यलोक में ही कहीं विद्यमान रहीं ? ।१। या वे कहीं विलोप हो गयीं अथवा वैकुण्ठ धाम में या सुमेरु पर्वत में कहीं जा पहुँचीं ।२। व्यासजी ने कहा—हे राजन्! मैं पहिले ही मनोहर मणिद्वीप के विषय में बता चुका हूँ वहीं उनका अत्यन्त प्रिय क्रीड़ा-स्थल है ।३। जहाँ पहुँच कर ब्रह्मा हरि और हर स्त्री रूप हो गये थे और फिर देवी कृपा पाकरपुनः पुरुष हो सके थे ।४। वह द्वीप सुधा सागर के मध्य में स्थित है वहाँ जगदम्बा विविधा रूप धारण कर नित्य विहार करती हैं ।५। जब महिषासुर को मारकर देवताओं द्वारा स्तुति और पूजित होकर भगवती अन्तर्धान हुईं तब उसी द्वीप में चली गईं। वहीं वह सनातनी माया शक्ति नित्य क्रीडा करती हैं ।६। जब देवताओं ने भगवती सर्वेश्वरी अन्तर्धान हुई देखीं, तब उन्होंने सूर्यवंश में अद्भुत शत्रुघ्न नामक वीर अयोध्या नरेश को महिषासुर का राज्य सौंप दिया ।७-८।

दत्वा राज्यं तदा तस्मै देवापुरोगमाः ।
स्वकीयैर्वाहिनैः सर्वे जग्मुः स्वान्यालयानि ते ॥९
धर्मराज्यं बभूवाथ प्रजाश्च सुखितास्तथा ।
गतेषु तेषु देवेषु पृथिव्यां पृथिवीपते ॥१०
पर्जन्यः कालवर्षी च धरा धान्यगुणावृता ।
पादपाः फलपुष्पाढ्या बभूवुः सुखदाः सदा ॥११
गावश्च क्षीरसम्पन्ना घटोध्न्यः कामदा नृणाम् ।
नद्यः सुमार्गगा स्वच्छाः शीतोदाः खगसंयुताः ॥१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मणा वेदतत्त्वाश्च यज्ञकर्मरतास्तथा ।
क्षत्रिया धर्मसंयुक्ता दानाध्ययनत्पराः ॥१३

शस्त्रविद्यारता नित्यं प्रजारक्षणतत्पराः ।
न्यायदण्डधराः सर्वे राजानः शमसंयुताः ॥१४
अविरोधस्तु भूतानां सर्वेषां सम्बभूव ह ।
आकरा धनदा नृणां व्रजा गोयूथसंयुताः ॥१५
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्च नृपसत्तम ।
देवीभक्तिपराः सर्वे संबभूवुर्धरातले ॥१६

इस प्रकार शत्रुघ्न को राज्य पद पर बैठाकर इन्द्रादि सभी देवता अपने-२ वाहनों पर चढ़कर निज-निज स्थानों को चले गये ।९। उन देवताओंके चले जाने पर राजाने पृथिवी पर धर्म राज्य स्थापितकिया, जिसके कारण प्रजा अत्यन्त सुखी हुई ।१०। समय पर वृष्टि होने लगी अन्न का उत्पादन बढ़ गया, वृक्षों पर फल-फूल झूमने लगे जिससे सभी जीव सुखी हो गये ।११। गौयें दूध से परिपूर्ण होकर इच्छानुसार दूध देने लगी, नदियाँ सुमार्ग-गामिनी हो गई ।१२। ब्राह्मण वेद तत्व के ज्ञाता होकर यज्ञानुष्ठानोंमें लग गये।१३। सभी राजागण शान्तिप्रिय हो गये शस्त्रास्त्र में पारंगत होकर प्रजारक्षण में तत्पर हुए, उनका दण्ड विधान न्याय के आश्रय पर टिक गया ।१४। सब प्राणी वैर-भाव रहित हो गये, खाने अपार धन-रत्नादि देने लगीं और गोष्ठ गौओंसे परिपूर्ण दिखाई देने लगा ।१५। भूतल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि सभी वर्ग के मनुष्य भगवती के भक्त बन गये ।१६।

सर्वज्ञ यज्ञयूपाश्च मण्डपाश्च मनोहराः ।
मखैः पूर्णा धराश्चासन् ब्राह्मणैः क्षत्रियैः कृतैः ॥१७
पातिव्रतधरा नार्यः सुशीलाः सत्यसंयुताः ।
पितृभक्तिपराः पुत्रा आसन्धर्मपरायणाः ॥१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न पाखण्डं न वाऽधर्मः कुत्रापि पृथिवीतले ।
वेदवादाः शास्त्रवादा नान्ये वादास्तथाऽभवन् ॥१९
कलहो नैव तत्रासीत् केषांचिन्न नाशुभा मतिः ।
सर्वत्र सुखिनो लोकाः काले च मरणं तथा ।२०
सुहृदां न वियोगश्च नापदंश्च कदाचन ।
नोऽनावृष्टिर्न दुर्भिक्षं न मारी दुःखदा नृणाम् ।२१
न रोगो न च मात्सर्यं न विरोधः परस्परम् ।
सर्वत्र सुखसम्पन्ना नरा नार्यः सुखान्विताः ।२२
न निधनमुपयान्ति प्राणिनस्तेऽप्यकाले ।
सकलविभवयुक्ता रोगहीनाः सदैव ।
निगमविहितधर्मे तत्पराश्चंडिकायाः
चरणसरसिजानां सेवने दत्तचित्ताः ।२३

ब्राह्मणों और क्षत्रियों द्वारा किए जाने वाले यज्ञोंसे सम्पूर्ण पृथिवी व्याप्त हो गयी, सर्वत्र यज्ञयूप और मण्डप दृष्टिगोचर होने लगे ।१७। स्त्रियाँ पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली, सुशील और सत्यवादिनी हो गई तथा पुत्र धर्मपरायण होकर माता-पिता की भक्ति करने लगे । ।१८। भूमण्डल पर कहींभी अधर्म या पाखण्ड शेष नहीं रहा था,वेदवाद और शास्त्र वाद के अतिरिक्त अन्य कोई वाद अस्तित्व में नहीं रहा था ।१९। पारस्परिक कलह निःशेष हो गई । निर्धनता समाप्त हो गई । सब में शुभ मति का आविर्भाव हो गया, अकाल मृत्यु नष्ट होकर सब में सुख छा गया ।२०। सुहृदयों में विछोह का अवसर नहीं आता था, अनावृष्टि और दुर्भिक्ष जैसी दुःखदायी विपत्तियाँ पूर्णतः समाप्त हो गई ।२१। रोग, मात्सर्य और विरोधाभास की इतिश्री हो गई, स्त्री-पुरुष सर्वत्र सुखी दिखाई देने लग ।२२। उस समय प्राणियों का अकाल में मरण नहीं होता था । सबे व्यक्ति रोगहीन और ऐश्वर्य-सम्पन्न हो गये और वेद-समस्त विधि के अनुसार भगवती के चरणाम्बुजों का ध्यान करने लगे ।२३।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुम्भ-निशुम्भ द्वारा स्वर्ग विजय

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि देव्याश्चरितमुत्तमम् ।
सुखदं सर्वजन्तूनां सर्वपापप्रणाशनम् ।१
यथा शुम्भो निशुम्भश्च भ्रातरौ वलवत्तरौ ।
बभूवतुर्महावीरौ अवध्यौ पुरुषैः किल ।२
बहुसेनावृतौ शूरौ देवानां दुःखदौ सदा ।
दुराचरौ मदोत्सिक्तौ बहुदानवसंयुतौ ।३
हतावम्बिकया तौ तु संग्रामेऽतीव दारुणे ।
देवानां च हितार्थाय सर्वैः परिचरैः सह ।४
पुरा शुम्भनिशुम्भौ द्वावसुरौ भूमिमण्डले ।
पातालतश्च सम्प्राप्तौ भ्रातरौ शुभदर्शनौ ।५
तौ प्राप्तयौवनौ चैव चेरतुस्तप उत्तमम् ।
अन्नोदकं परित्यज्य पुष्करे लोकपावने ।६
वर्षाणामयुतं यावद्योगविद्यापरायणौ ।
एकत्रैवासनं कृत्वा तेपाते परमं तपः ॥७

व्यास जी बोले—हे राजन् ! अब मैं भगवती का श्रेष्ठ तथा सब प्राणियों को सुखद एवं पापों के नाश करने वाला चरित्र कहता हूँ, उसे सुनो ।१। प्राचीन समय की बात है-शुम्भ निशुम्भ नामक दो महाबली भाई थे और वे किसी के द्वारा भी नहीं मारे जा सकते थे ।२। उनदोनों वीरोंके पास विशाल सेनाथी । वे दुराचारी और मदोन्मत्त सदाही देवताओं का उत्पीड़न करते रहते थे ।३। देवताओं के हितार्थ अनुचरों सहित उन दैत्यों का भगवती ने घोर युद्ध करके वध कर दिया था ।४। शुम्भ निशुम्भ नामक वे दोनों दैत्य पाताल से पृथिवी पर आ गये तब लोक में अत्यन्त श्रेष्ठ पुष्कर क्षेत्र में जाकर अन्न जल के त्याग पूर्वक तप करने लगे ।६। वे योग विद्या-परायण रहकर एक ही आसन पर बैठकर दश हजार वर्ष तक तपस्या में लीन रहे ।७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तयोस्तुष्टऽभवद ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ।
तत्रागतश्च भगवानारुह्या वरटापतिम् ।८
तावुभौ च जगत्स्रष्टा दृष्ट्वा ध्यानपरौ स्थितौ ।
उत्तिष्ठतं महाभागौ तुष्टोऽहं तपसा किल ।९
वांछितं वा वरं कामं ददामि ब्रुवतामिह ।
कामदोऽहं समायातो दृष्ट्वा वां तपसो बलम् ।१०
इति श्रुत्वा वचस्तस्य प्रबुद्धौ तो समाहितौ ।
प्रदक्षिणक्रियां कृत्वा प्रणामं चक्रतुस्तदा ।११
दण्डवत्प्रणिपातं च कृत्वा तौ दुर्लभाकृती ।
ऊचतुर्मधुरां वाचं दीनौ गद्गदया गिरा ।१२
देवदेव दयासिंधो भक्तानामभयप्रद ।
अमरत्वं च नौ ब्रह्मन्देदि तुष्टोऽसि चेद्विभो ।१३
किमिदं प्रार्थनीयं वौ विपरीतं तु सर्वथा ।
अदेयं सर्वथा सर्वैः सर्वेभ्यो भुवनत्रये ॥१४

उनके घोर तप से ब्रह्मा जी प्रसन्न होकर उनके पास पहुंचे और तपस्वियो से कहा—हे महाभागो ! उठो मैं तुम्हारे तप से अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूँ ।८-९। तुम जो कुछ चाहते हो, मुझे बताओ । मैं तुम्हारे तपोबल से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ और तुम्हारा अभीप्ट पूर्ण करनेको तत्पर हूँ । व्यास जी ने कहा कि—हे राजन ब्रह्मा जी के ऐसे वचन सुनकर उन्होंने समाधि छोड़ दी और उठकर ब्रह्माजी को प्रणाम कर प्रदक्षिणा की ।१०-११। तप से दुर्बल हुए उन दोनों ने दण्डवत् करके ब्रह्माजीसे विनयावनत निवेदन किया ।१४। हे देवदेव ! हे दयासिंधु ! आप हमें अमरत्व प्रदान कीजिये ।१३। ब्रह्माजी बोले—अरे, तुमने यह कैसे वर मांगा है ? यह तो सर्वथा विपरीतहै ऐसा वरदान तो त्रिभुवन में कोई किसी को नहीं दे सकता हैं ।१४।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
मर्यादा विहिता लोके पूर्वं विश्वकृता किल ।१५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्तव्यं सर्वथा सर्वैः प्राणिभिर्नात्र संशयः ।
अन्यं प्रार्थयतं कामं ददामि यच्च वांछितम् ।१६
तदाकर्ण्य वचस्तस्य सुविमृश्य च दानवौ ।
ऊचतुः प्रणिपत्याथ ब्रह्माणं पुरतः स्थितम् ।१७
पुरुषैरमराद्यैश्य मानवैर्मृगपक्षिभिः ।
अवध्यत्वं कृपासिंधो देहि नौ वांछितं वरम् ।१८
नारी बलवती काऽस्ति या नो नाशं करिष्यति ।
न विभीवः स्त्रियः कामं त्रैलोक्ये सचराचरे ।१९
इति श्रुत्वा तयोर्वाक्यं प्रददौ वांछितं वरम् ।
ब्रह्मा प्रसन्नमनसा जगामाथ स्वमालयम् ।२०
गतेऽथ भवने तस्मिन्दानवौ स्वगृह गतौ ।
भृगुं पुरोहितं कृत्वा चक्रतुः पूजनं तदा ।२१

जो जन्म लेता हैं उसे मरना ही होगा, यह अटल मर्यादा है, जो कि विश्व रचयिता द्वारा बनाई गयी है ।१५। निःसन्देह सभी प्राणियों को मरना पड़ता है इसलिए इसके अतिरिक्त कोई अन्य वर माग लो । यह सुनकर उन दानवों ने परस्पर विचार करने के पश्चात् ब्रह्माजी को प्रणाम करके कहा ।१६-१७। हे कृपासिंधो ! यदि अमरत्व असम्भव हैं तो यह वर प्रदान करिये कि हमें देव, पुरुष, मनुष्य मृग या पक्षी आदि कोई भी न मार सके ।१८। क्योंकि कोई स्त्री तो ऐसी बलवती हो ही नहीं सकती जो हमारे वधमें समर्थ हो सके । इसलिए सचराचर जीवों को स्त्री जति से हमें भय कोई नहीं है ।१९। यह सुनकर ब्रह्माजी उनका इच्छित वर देकर प्रसन्न चित्त से अपने लोक को चले गये ।२०। उनके चले जाने पर दानव भी अपने घर पहुँचे और उन्होंने शुक्राचार्य को अपने गुरु-रूप में वरण कर उनका पूजन किया ।२१।

शुभे दिने सुनक्षत्रे जातरूपमयं शुभम् ।
कृत्वा सिंहासनं दिव्यं राज्यार्थं प्रददौ मुनिः ।२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभाय ज्येष्ठभूताय ददौ राज्यासनं शुभम् ।
सेवनार्थं तदैवाशु सम्प्राप्ता दानवोत्तमाः ।२३
चण्डमुण्डौ महावीरौ भ्रातरौ बलदर्पितौ ।
सम्प्राप्तौ सैन्यसंयुक्तौ रथवाजिगजान्वितौ ।२४
धूम्रलोचननामा च तद्रूपश्चण्डविक्रमः ।
शुम्भं च भूपतिं श्रुत्वा तदाऽगाद्बलसंयुतः ।२५
रक्तबीजस्तथा शूरो वरदानबलाधिकः ।
अक्षौहिणीभ्यां संयुक्तस्तत्रैवागत्य संगतः ।२६
तस्यैकं कारणं राजन्संग्रामे युध्यतः सदा ।
देहाद्रुधिरसम्पातस्तस्य शस्त्राहितस्य च ।२७
जयाते तु यदा भूमावुत्पद्यते ह्यनेकशः ।
तादृशाः पुरुषाः क्रूरा बहवः शस्त्रपाणयः ॥२८

फिर शुक्राचार्य ने शुभ नक्षत्र देखकर एक सुन्दर सिंहासन बना कर उन दैत्यों को भेंट किया ।२२। फिर शुम्भ के बड़े होने के कारण उसे राज्यासन पर प्रतिष्ठित किया ।२३। अत्यन्त बल से समृद्ध चण्ड-मुण्ड नामक दो भाई भी अपनी विशाल दैत्य सेना और रथ-घोड़े-हाथी के सहित उनके पास आ गये ।२४। प्रचण्ड पराक्रम वाला धूम्रलोचन नामक दैत्य भी शुम्भ के दैत्यराज होने का समाचार पाकर अपनी सेना सहित उससे आ मिला ।२५। उसी प्रकार वरदानसे अत्यधिक बली हुआ रक्तबीज भी अपनीदो अक्षोहिणी सेना सहित वहाँ आ गया ।२६। हे राजन् ! रक्तबीज इसलिए अभय था कि युद्ध में उसके देह से रक्त की जितनी बूँद टपकती थी उनसे ही क्रूर एवं शस्त्रधारी वीर तत्काल उत्पन्न हो जाते थे ।२७-२८।

अन्ये च बहवः शुराश्चतुरङ्गसमन्विताः ।
शुम्भ च नृपतिं मत्वा बभूवुस्तस्य सेवकाः ।२९
असंख्याता तदा जाता सेना शुम्भनिशुम्भयोः ।
पृथिव्याः सकलं राज्यं गृहीतं बलवत्तया ।३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेनायोगं यदा कृत्वा निशुम्भः परवीरहा ।
जगाम तरसा स्वर्गं शचीपतिजयाय च ।३१
चकारासौ महायुद्धं लोकपालैः समन्ततः ।
वृत्रहा वज्रपातेन ताडयामास वक्षसि ।३२
स वज्राभिहतो भूमौ पपात दानवानुजः ।
भग्नं बलं तदा तस्य निशुम्भस्य महात्मनः ।३३
भ्रातरं मूर्छितं श्रुत्वा शुम्भः परबलार्दनः ।
तत्रागत्य सुरान्सर्वांस्ताडयामास सायकैः ॥३४

उसीप्रकार अन्यान्य दैत्य शूरवीर अपनी-अपनी चतुरंगिणी सेनाओं के सहित वहाँ आ गये और शुम्भ को सम्राट मानकर उसके वशवर्ती हो गये ।२९। इससे शुम्भ निशुम्भ के अधिकार में असंख्य सेना आ गई और उन्होंने पृथिवी के सभी राज्यों को अपने अधीन कर लिया ।३०। इसके पश्चात् निशुम्भ ने विशाल सेना एकत्रित करके इन्द्र पर विजय प्राप्त करने की इच्छा से स्वर्ग लोक पर आक्रमण कर दिया ।३१। वहाँ उसने लोकपालों से भीषण युद्ध किया, जिसमें इन्द्र ने उनके हृदय पर प्रहार किया ।३२। जिससे दैत्य राज का छोटा भाई निशुम्भ धराशायी हो गया और उसकी सेना भी छिन्न-भिन्न होकर भाग गई ।३३। अपने भाई को मूर्छित हुआ सुन कर शत्रु-पर्दक शुम्भ स्वर्ग में पहुँचा और उसने देवताओं पर प्रहार किया ।३४।

कृतं युद्धं महत्तेन शुम्भेनाक्लिष्टकर्मणा ।
निर्जितास्तु सुराः सर्वे सेन्द्राः पालाश्च सर्वशः ।३५
ऐन्द्रं पदं तदा तेन गृहीतं बलवत्तया ।
कल्पपादपसंयुक्तं कामधेनुसमन्वितम् ।३६
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृतास्तेन महात्मना ।
नन्दनं च वनं प्राप्य मुदितोऽभून्महासुरः ।३७
ततो देवा विनिर्धूता हृतराज्या हृतश्रियः ।
सन्त्यज्य नन्दनं सर्वे निर्ययुर्गिरिगह्वरे ॥३८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न प्रापुस्ते सुखं क्वापि स्थानभ्रष्टा विचेतसः।
लोकपाला महाराज दैवाधीनं सुखं किल ।३९

उसी भीषण युद्ध में शुम्भ ने इन्द्र और लोकपालों के सहित सभी देवताओं को पराजित कर दिया ।३५। शुम्भ ने स्वयंही इन्द्र-पद प्राप्त कर लिया तथा कामधेनु और कल्पवृक्ष को भी अपने अधिकार में ले लिया ।३६। नन्दन वन में जाकर वह अत्यन्त आनन्द-विभोर हो गया। उससे तीनों लोकों का राज्य प्राप्त कर लिया और यज्ञभाग भी लेने लगा ।३७। इसप्रकार राज्य और श्री से भ्रष्ट हुए देवता नन्दन वन से भाग कर पर्वत कन्दराओं में छिप कर रहने लगे ।३८। हे राजन् ! अब उन देवताओं को कहीं भी सुख नहीं था। वे अपने ही स्थान से हटा दिये गये थे। उस पर भी सुख तो सदा दैव के अधीन रहता है ।३९।

देवी का प्रादुर्भाव

पराजितः सुराः सर्वे राज्यं शुम्भः शशासह ।
एवं वर्षसहस्रं तु जगाम नृ सत्तम ।१
भ्रष्टाज्यास्ततो देवाश्चिंतामापुः सुदुस्तराम् ।
गुरुं दुःखातुरास्ते तु पप्रच्छुरिदमादृतः ।२
किं कर्तव्यं गुरो ब्रूहिं सर्वज्ञस्त्वं महा मुनिः ।
उपायोऽस्ति महाभोग दुःखस्यापि निवृत्तये ।३
दैवं चैवाप्युपायश्च द्वावेवाभिमतौ नृणाम् ।
केवलं दैवमाश्रित्य न स्थातव्यं कदाचन ।४
उपायः सर्वथा कार्यो विचार्य स्वधिया पुनः ।
तस्माद्ब्रवीमि वः सर्वान्सुविचार्य पुनः पुनः ।५
पुरा भगवती तुष्टा जघान महिषासुरम् ।
युष्माभिस्तु स्तुता देवी वरदानं ददावथ ।६
आपदं नाशयिष्यामि संस्मृता वै सदैव हि ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदा यदा वो देवेशा आपदो दैवसम्भवाः ।७
प्रभवंति तदा कामं स्मर्तव्याऽहं सुरैः सदा ।
स्मृताऽहं नाशयिष्यामि युष्माकं परमापदः ॥८

व्यासजी बोले-हे नृपश्रेष्ठ ! इस प्रकार सब देवताओं के हारनेपर शुम्भ को एक छत्र राज्य हुए एक सहस्र वर्ष व्यतीत हो गये ।१। तब वे राज्यभ्रष्ट देवगण अत्यन्त चिंतितावस्था में उठकर अपने गुरु बृहस्पति के पास पहुँचकर पूछने लगे ।२। हे महामुने ! अब हमारा क्या कर्तव्य है, यह बताइये । इस सङ्कट से मुक्त होने का कुछ तो उपाय करिये ।३। बृहस्पति जी ने कहा-हें देवताओं ! हमें दैव और उपाय दोनों युक्तियों से कार्य लेना चाहिए, केवल दैव के आश्रय से कार्य नहीं चल सकता ।४। इसलिए बारम्बार विचार करके उपाय निश्चित करना चाहिए, मैं भी भले प्रकार विचार करने के उपरान्त ही आप से कहता हूँ ।५। पहिले जब भगवती ने प्रसन्न होंकर महिषासुर का मर्दन किया था, जब स्तुति होने पर उन्होंने आप लोगों को यह वर दिया था ।६। कि जब तुम मेरा स्मरण करोगे तभी मैं तुम्हारा सङ्कट दूर करूँगी ।७-८।

तस्माद्धिमाचले गत्वा पर्वते सुमनोहरे ।
आराधनं चण्डिकायाः कुरुध्वं प्रेमपूर्वकम् ।९
मायाबीजविधानज्ञास्तत्पुरश्चरणे रतः ।
जानाम्यहं योगवशात्प्रसन्ना सा भविष्यति ।१०
दुःखस्यांतोऽद्य युष्माकं दृश्यते नात्र संशयः ।
तस्मिञ्छैले सदा देवी तिष्ठतीति मया श्रुतम् ।११
स्तुता सम्पूजिता सद्यो वांछितार्थान्प्रदास्यति ।
निश्चयं परमं कृत्वा गच्छध्वं वै हिमालयम् ।१२
सुराः सर्वाणि सा वः कामं विधास्यति ।
इति तस्य वचः श्रुत्वा देवास्ते प्रपयर्गिरिम् ।१३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिमालय महाराज देवीध्यानपरायणाः।
मायाबीजं हृदा नित्यं जपतः सर्व एव हि ॥१४

इसलिए अब आप हिमाचल पर जाकर उन्हीं चण्डिका की प्रीति पूर्वक आराधना करिये ।९। मैं योग बल से यह जान गया हूँ, कि आप यदि मायाबीज के विधान को जानकर उसके अनुसार पुरश्चरण करोगे तो वे भगवती अवश्य प्रसन्न हो जायेगी ।१०। इसमें सन्देह नहीं कि अब आपके दुःखों का अन्तकाल समीप है । मैंने सुना हैकि वे हिमाचल पर सदा विद्यामान रहती हैं ।११। वे स्तुत और पूजित होकर साधकके सब अभीष्ट पूर्ण करती हैं, इसलिए उनके पूजन का निश्चिय करके हिमालय पर जाइये ।१२। हे देव-गण ! वे भगवती आप का सम्पूर्ण कार्य सिद्ध करेंगी । यह सुनकर सब देवताओं ने तुरन्त हीं हिमालय को प्रस्थान किया ।१३। वहाँ पहुँचकर उन सभी ने देवी का ध्यान करते हुए मायाबीज का जप आरम्भ किया ।१४।

नमश्चक्रु र्महामायां भक्तानामभयप्रदाम् ।
तुष्टवुः स्तोत्रमन्त्रैश्च भक्त्या परमया युताः ।१५
नमो देवि विश्वेश्वरी प्राणनाथे ।
सदानन्दरूपे सुरानन्ददेते ।
नमोदानवान्तप्रदे मानवाना—
मनेकार्थदे भक्तिगम्यस्वरूपे ।१६
न ते नामसंख्या न ते रूपमीदृक् ।
तथा कोऽपि देवाधिदेवस्वरूपे ।
त्वमेवासि सर्वेषु शक्तिस्वरूपा ।
प्रजासृष्टिसंहारकले सदैव ।१७
स्मृतिस्त्वं धृतिस्त्वं त्वमेवासि बुद्धि—
र्जरा पुष्टितुष्टी तथा कान्तिशांती ।
सुविद्या सुलक्ष्मीर्गतिः कीर्तिमेधे ।
त्वमेवासि विश्वस्य बीजं पुराणम् ।१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदा यैः स्वरूपैः करीषीह कार्यं ।
सुराणां च तेभ्यो नमामोऽद्य शांत्यै ।
क्षमा योगनिद्रा दया त्वं विवक्षा ।
स्थिता सर्वभूतेषु शस्तैः स्वरूपैः ।१९
कृतं कायमार्दो त्वया यत्सुराणां ।
हतोऽसौ महारिर्मदान्धो ह्यारिः ।
दया ते सदा सर्वदेवेषु देवि ।
प्रसिद्धा पुराणेषु वेदेषु गीता ।२०
किमत्रास्ति चित्रं यदम्बा सुतं स्वं ।
मुदा पालयेत्पोषयेत्सम्यगेव ।
यतस्त्वं जनित्री सुराणां सहाया ।
कुरुष्वैकचित्तं न कार्यं समग्रम् ॥२१

साथ ही भक्तों की अभयदात्री महामाया को नमस्कार पूर्वक इन स्तोत्र मन्त्रों से स्तुति करने लगे ।१५। हे देवि ! हे विश्वेश्वरी ! हे प्राणनाथे ! हे सदानन्दरूपे ! हे देवताओंको आनन्द देने वाली,हे दानवों का अन्त करने वाली ! मनुष्यों को बहुतेरे फल देने वाली भक्तिगम्य स्वरूपे ! आपको नमस्कार है ।१६। हे माता ! आपके नांम असंख्य हैं, न आपका यथार्थ रूप दिखाई देता है ।१७। आपही स्मृति धृति, जरा, पुष्टि, तुष्टि, कान्ति, शान्ति, सुविद्या, सुलक्ष्मी, गाति, कीर्ति, मेधा और संसार की पुराण बीज स्वरूपा है ।१८। आप जब जिस-जिस रूपसे देव ताओं का कार्य सिद्ध करती है, तब संसारमें शान्ति की कामना से आप के उस-उस रूप कों प्रणाम करते है । क्योंकि आप ही क्षमा योग-निद्रा दया और विवक्षा-स्वरूप होकर सब प्राणियें में निवास करती हैं ।१९। हे देवि ! पहिले भी आपने महिषासुर का वध करके देव कार्य कियाथा उससे यह सर्वत्र प्रसिद्ध है कि आप हम पर सदा दया रखती हैं । यही वेद-पुराण भी कहते हैं ।२०। हे माता ! अपने बालक का माता द्वारा पोषण किए जाने में क्या विचित्रता है क्योंकि आप हमारी माता और सहायिका हैं ।२१।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवि त्वदंघ्रिजने न जना रता ये
संसारकूपपतिताः पतिता किलामी ।
ते कुष्ठगुल्मशिर आधियुता भवन्ति ।
दारिद्र यदैन्यसहित रहिताः सुखौघैः ।२२
ये काष्ठभार ऽवहने यवसावहारे
कार्ये भवन्ति निपुणा घनदारहीनाः ।
जानीमहेऽल्पमतिभिर्भवदंघ्रिसेवा
पुर्वे भवे जननि तैर्न कृताकदापि ।२३
एवं स्तुता सुरै रम्बिकानरुणान्विता ।
प्रादुर्बभूव तरसा रूपयौनसंयुता ।२४
दिव्याम्बरधरा देवी दिव्यभूषणभूषिता ।
दिव्यमाल्यसमायुक्ता दिव्यचन्दनचर्चिता ।२५
जगन्मोहनलावण्यसर्वलक्षणालक्षिता ।
अद्वितीयस्वरूपा सा देवानां दर्शनं गता ।२६
देवान्स्तुतिपरानाह मेघगम्भीरया गिरा ।
प्रेमपूर्ण स्मितं कृत्वा कोकिलार्मजुवादिनी ।२७
भोः भोः सुरवराः कोऽत्र भवद्भिः स्तूयते भृशम् ।
किमर्थं ब्रूव वः कार्यार्चिताविष्टाः कुतः पुनः ॥२८

देवि ! आपका भजन न करने वाले जीव वारम्बार भवकूप में पतित होते हैं । कुष्ठ, गुल्म, शिर-पीड़ा आदि रोग तथा दरिद्रता और दैत्यों से घिरे रहने के कारण सुखी नहीं रहते ।२२। अवश्य ही जो लकड़ी ढोने या घास काटकर बेचने वाले धनादि से रहित व्यक्ति है उन्होंने भी कभी आपकी चरण-सेवा नहीं की होगी ।२३। देवताओं द्वारा स्तुति किये जाने पर अम्बिका तुरन्त तहाँ प्रकट हो गई ।२४। वे दिव्य वस्त्रा भूषणों से सुसज्जित, दिव्य मालांपें धारण किए हुए और दिव्य चन्दन लगाये हुए थीं ।२५। उन जगत् को मोहित करने वाली लावण्य और अद्वितीय स्वरूप सम्पन्न भगवती में सभी शुभ लक्षण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखाई दे रहे थे ।२६। देवताओं के स्तुत करते-करते को किल समान मंजु-वादिनी भगवती ने मेघ जैसी गंभीर वाणी में कहा ।२७। देवी बोली ! हे देवताओं ! ऐसे तन्मय हीकर स्तुत क्यों कर रहे हो ? तुम्हारा क्या कार्य है ? ।२८।

तच्छ्रुत्वा भाषितं तस्य मोहिता रूपसम्पदा ।
प्रेमपूर्वं हृदुत्साहास्तामूचुः सुरसत्तमा ।२९
देवि स्तुमस्त्वां विश्वेशि प्रणतः स्मः कृपार्णवे ।
पाहि नः सर्वदुःखेभ्यः संविग्नान्दैत्यतापितान् ।३०
अद्य शुम्भनिशुम्भौ द्वावसुरौ घोरदर्शनौ ।
उत्पन्नौ विघ्नकर्तारावहन्यौ पुरुषैः किल ।३१
रक्तबीजश्च बलवांश्चण्डमुण्डौ तथाऽसुरौ ।
एतैरन्यैश्च देवानां हृतं राज्यं महाबलैः ।३२
गतिरन्या न चास्माकं त्वमेवासि महाबले ।
कुरु कार्यं सुराणां वै दुःखितानां सुमध्यमे ।३३
देवास्त्वदंघ्रिभजने निरताः सदैव ।
ते दानवैरतिबलैर्विपदं सुनीताः ।
तान्देवि दुःखरहितान्कुरु भक्तियुक्तान् ।
मातस्त्वमेव शरणं भव दुःखितानाम् ।३४
सकलभुवनरक्षा देवि कार्या त्वयाऽद्य ।
स्वकृतमिति विदित्वा विश्वमेतद्युमादौ ।
जननि जगति पीडां दानवा दर्पयुक्ताः ।
स्वबलमदसमेतास्ते प्रकुर्वन्ति मातः ।।३५

व्यासजी बोले—हे राजन् ! देवी के यह वचन सुनकर रूप ऐश्वर्य से विमोहित देवता कुछ उत्साहित हुए और प्रेम सहित भगवती से बोले ।२९। हे विश्वेश्वरि ! हे कृपार्णवे ! हमें आपको स्तुत युक्त नमस्कार करते हैं । हम दैत्यों द्वारा दुःख पाकर व्याकुल हो रहे हैं, आप हमारी रक्षा कीजिए ।३०। इस समय, शुम्भ-निशुम्भ नामक दो विकराल असुर उत्पन्न होकर विघ्न कर रहे हैं । उन्हें मारने में कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी पुरुष समर्थ नहीं है ।३१। उनके साथी रक्तबीज, चण्ड-मुण्ड आदि अनेकानेक बलवान दैत्यों ने हमारा राज्य छीन लिया।३२। हे महाबले! आपके अतिरिक्त अन्य कोई गति हमें दिखाई नहीं देती। आप हम दुःखित देवताओं का कार्यसिद्धि कीजिए।३३। हम देवगण सदा आपका ही भजन करते हैं फिर भी दैत्य हमें पीवित करते हैं। आप दुःखार्त्त जीवों की रक्षिका है, अतः अपने चरण सेवक हम देवताओं की रक्षा करिए ।३४। हे देवि ! सृष्टिके आदि में आपने ही विश्व को रचा है। उसी विश्व को अहंकारी दानवगण पीड़ित कर रहे हैं परन्तु हे माता ! उस सम्पूर्ण विश्व की रक्षा आपका कर्त्तव्य हैं ।३५।

कौशिकी देवी का आविर्भाव

एवं स्तुता तदा देवैस्तैः शत्रुसन्तापितैः ।
स्वशरीरात्परं रूपं प्रादुर्भूतं चकार ह ।१
पार्वत्यास्तु शरीराद्वै निःसृता चांबिका यदा ।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु पठ्यते ।२
निःसृतायां तस्यां सा पार्वतीतनुव्यत्ययात् ।
कृष्णरूपाऽथ संजाता कालिका साम्प्रकीर्तिता ।३
मषीवर्णा महाघोरा दैत्यानां भयवर्धिनी ।
कालरात्रीति सा प्रोक्ता सर्वकामफलप्रदा ॥४
अम्बिकायाः परं रूपं विरराज मनोहरम् ।
सर्वभूषणसंयुक्तं लावण्यगुणसंयुतम् ।५
ततोऽम्बिका तदा देवानित्युवाच ह सस्मिता ।
तिष्ठन्तु निर्भया यूयं हनिष्यामि रिपूनिह ।६
कार्यं वः सर्वथा कार्यं विहरिष्याम्यहं रणे ।
निशुम्भादीन्वधिष्यामि युष्माकं सुखहेतवे ॥७

व्यासजी बोले हे राजन् ! शत्रुओं द्वारा सताये हुए देवताओं द्वारा इस प्रकार स्तुति किये जाने पर देवी ने अपने देह से एक अद्भुत रूपा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवी को प्रकट किया ।१। उन पार्वती के कोशसे उत्पन्न होने के कारण उन देवी का नाम कौशिकी हुआ ।२। उत्पन्न होते ही उनके शरीर का वर्ण कृष्ण हो गया, इसलिए वे कालिका कही जाने लगी ।३। उनका घोर काला वर्ण होने से वह दैत्यों में भय का संचार करने वाली हुई इसलिए वे काल रात्रि के नाम से विख्यात हुए ।४। सभी आभूषणों से युक्त लावण्यमयी, सुरमणीक उन देवी का रूप अत्यन्त आकर्षक था५ फिर उन अम्बिकाने मुस्कराते हुए देवताओं से कहा—हे देवगण अब तुम निर्भय हो जाओ। मैं तुम्हारे शत्रुओं का संहार कर दूँगी ।६। तुम्हारे हितार्थ मैं रणक्षेत्र में ऐसी क्रीड़ा करूँगी कि सभी दैत्य नष्ट हो जायेंगे ।७।

इत्युक्त्वा सा तदा देवी सिंहारूढा मदोत्कटा ।
कालिकां पार्श्वतः कृत्वा जगाम नगरे रिपोः ।८
सा गत्वोपवने तस्थावंबिका कालिकान्विता ।
जमावय कल तत्र जगन्मोहनमोहनम् ।९
श्रुत्वा तन्मधुरं गानं मोहमीयुः खगा मृगाः
सुदं च परमम्प्रापुरमरा गमने स्थिताः ।१०
तस्मिन्नवसरे तत्र दानवौ शुम्भसेवकौ ।
चण्डमुण्डाभिधौ घोरौ रममाणौ यदृच्छया ।११
आगतौ ददृशाते तु तदा दिव्यरूपिणीम् ।
अम्बिकां गानसंयुक्तां कालिकां पुरतः स्थिताम् ।१२
दृष्ट्वा तां दिव्यरूपां च दानवौ विस्मयान्वितौ ।
जग्मतुस्तरसा पार्श्वं शुम्भस्य नृपसत्तम् ।१३
तौ गत्वा तु समासीनं दैत्यानामधिपं गृहे ।
ऊचतुर्मधुरा वाणीं प्रणम्य शिरसा नृपम् ।।१४

यह कहकर वह मद से मत्त हुई भगवती सिंह पर सवार हो गई और कालिका को लेकर शत्रु के नगर में जा पहुँचा ।८। वहाँ पहुँचकर कालिका के सहित एक उपवन में ठहर कर जगतको मोहित करनेवाले कामदेव को भ्रमित करने के स्वर में गाने लगी ।९। उस गीत को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर पशु-पक्षी भी सुधि भूल गये। यह देखकर आकाश स्थित देवता प्रसन्न हो उठे।१०। उसी अवसर पर शुम्भ के चण्ड मुण्ड नामक दो सेवक विचरणकरते हुएवहाँ आ गये।११।उन्होंने निकट जाकर अम्बिका को गाते हुए एवं कालिका को उनने सामने खड़े हुए देखा।१२। हे नृपोत्तम! देवी के उस दिव्य रूप को देखकर दोनों दैत्य अत्यन्त विस्मित हुए और शुम्भ के भवन में पहुँचकर उन्होंने मस्तक झुकाकर नम्रतापूर्वक कहा।१३-१४।

राजन्हिमालयात्कामं कामिनी काममोहिनी।
संप्राप्ता सिंहारूढा सर्वलक्षणसंयुता।१५
नेदृशी देवलोकेऽस्ति न गन्धर्वपुरे तथा।
न दृष्टा न श्रुता क्वापि पृथिव्यां प्रमदोत्तमा।१६
गानं च तादृशं राजन्करोति जनरंजनम्।
मृगास्तिष्ठन्ति तत्पार्श्वे मधुरस्वरमोहिताः।१७
ज्ञायतां कस्य पुत्रीयं किमर्थमिह चागता।
गृह्यतां राजशार्दूल तव योन्याऽस्ति कामिनी।१८
ज्ञात्वाऽऽनय गृहे भार्यां कुरु कल्याणलोचनाम्।
निश्चितं नास्ति संसारे नारी त्वेवंविधा किल।१९
देवानां सर्वरत्नानि गृहीतानि त्वया नृप।
कस्मान्नेमां वरारोहां प्रगृह्णासि नृपोत्तम॥२०

हे राजन्! हिमालय से कामदेव को भी मोहित कर लेने वाली एक सर्व शुभ लक्षण सम्पन्न सुन्दरी यहाँ आई है, जो सिंह पर सवार है।१५। इस प्रकारकी सुन्दरी तो देवलोक, गन्धर्व-नगरी अथवा पृथिवी पर या अन्य कही भी नही देखी-सुनी।१६। हे राजन्! उसका गीत कैसा मनोहर है कि उसके मृदु स्वरों पर मृग भी मोहित हुए उसके पार्श्व में खड़े हैं।१७। यह ज्ञात कीजिए कि वह किसकी पुत्री हैं, उसके यहाँ आने का अभिप्राय क्या है? हे राजशार्दूल! वह कामिनी आपके ही योग्य है इसलिए अपने पास रख लीजिए।१८। सब बातें जानकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप उसे अपने घर लाकर विवाह कर लीजिए,क्योंकि ऐसी सुन्दरी तो विश्व भर में कहीं भी न मिलेगी ।१९। हे राजन ! आपने देवताओं के सब रत्नादि ले लिए हैं तो इस तारींको भी क्यों नहीं ग्रहण कर लेते । ।२०।

इति श्रुत्वा तयोर्वाक्यं मधुरं मधुराक्षरम् ।
प्रसन्नवदनः प्राह सुग्रीवं सन्निधौ स्थितम् ।२१
गच्छ सुग्रीव दूतस्त्वं कुरु कार्यं विचक्षणः ।
वक्तव्यं च तथा तत्र यथाऽभ्येति कृशोदरी ।२२
सुग्रीवस्तु वचः श्रुत्वा शुम्भोक्तं सुप्रियं पटु ।
जगाम तरसा तत्र यत्रास्ते जगदम्बिका ।२३
सोऽपश्यत्सुखीं कांतां सिंहस्योपरि संस्थिताम् ।
प्रणम्य मधुरं वाक्यमुवाच जगदम्बिकाम् ।२४
वरोरु त्रिदशारातिः शुम्भः सर्वाङ्गसुन्दरः ।
त्रैलोक्याधिपतिः शूरः सर्वजिद्राजते नृपः ।२५
तेन हि प्रेषतो दूतस्त्वत्संकाशं महात्मना ।
त्वद्रूपश्रवणासक्तचित्तेनातिविदूयता ।२६
वचनं तस्य तन्वङ्गि शृणु प्रेमपुरःसरम् ।
प्रणिपत्य यथा प्राह दैत्यानामधिपस्त्वयि ।।२७

व्यासजी बोले—हे राजन् । उनकी मधुर वाणी सुनकर शुम्भ प्रसन्न होकर बोला–हे सुग्रीव ! तुम मेरा दूत–कर्म करो । इस सुन्दरी को किसी प्रकार भी यहाँ ले आओ ।२१-२२। व्यासजी बोले शुम्भ के वचन सुनकर सुग्रीव तुरन्त ही जगदम्बा की ओर चल पड़ा ।२३। वहाँ जाकर उनसे एक अत्यन्त सुन्दरी को सिंह पर सवार देखा और यह तुरन्त जगदम्बिका को प्रणाम करके मधुर वचन कहने लगा ।२४। हे वरोरु । देवताओं के शत्रु राजा शुम्भ सर्वाङ्ग सुन्दर है । उन्होंने सभी वीरों को परास्त करके तीनों लोकों का राज्य पा लिया है ।२५। आप के रूप की प्रशंसा सुनकर वे महात्मा आपकी ओर आकर्षित हुए हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है ।२६। हे कोमलांगी ! दैत्यराज ने जिन प्रेम भरे शब्दों में अपना सन्देश भेजा है उन्हें आप सुनिये ।२७

देवा मया जिताः सर्वे त्रैलोक्याधिपतिस्त्वहम् ।
यज्ञभागानहं कान्ते गृह्णामीह स्थितः सदा ।२८
भोक्ताऽहं सर्वरत्नानां त्रिषु लोकेषु भामिनि ।
वशानुगाः सुराः सर्वे मम दैत्याश्च मानवाः ।२९
त्वद्गुणैः कर्णमागत्य प्रविश्य हृदयांतरम् ।
त्वदधीनः कृतः कामं किंकरोऽस्मि करोमि किम् ।३०
त्वमाज्ञापय रंभोरु तत्करोमि वशानुगः ।
दासोऽहं तव चार्वंगि रक्ष मां कामबाणतः ।३१
इति तस्य वचश्चित्ते विमृश्य मदमन्थरे ।
वक्तव्यं यद्भवेत्प्रेम्णा तद्ब्रूहि मधुरं वचः ।३२
शुम्भाय चंचलापांगि तद्ब्रवाम्यहमाशु वै ।
तद्दूतवचनं श्रुत्वा स्मितं कृत्वा सुपेशलम् ।।३३

उन्होंने कहा कि हे कान्ते! मैंने सब देवताओं को जीतकर त्रिलोकी का राज्य प्राप्त किया है और अब यज्ञ भाग भी मैं ही लेता हूँ ।२८। हे भामिनी ! संसार के सभी रत्नों का उपभोक्ता एकमात्र मैं ही हूँ । सम्पूर्ण देवता, दैत्य और मनुष्य मेरे अधीन है ।२९। परन्तु तुम्हारे गुणों ने जब से मेरे कानों में प्रवेशकिया है, तब से मेरा हृदय तुमपर आसक्त होगया है । इसलिए मैं तुम्हारा दास हो गया हूँ ।३०। हे सुन्दरी मैं तुम्हारी आज्ञा का सदैव पालन करूँगा, क्योंकि मैं सर्वथा तुम्हारे वश से हूँ । इसलिए अब इन अनंग-बाणों से मेरी रक्षा कीजिए ।३१। हे मदामन्थरे ! स्वामी के इन वचनों पर विचार करके आप प्रेम-पूर्वक उत्तर दीजिए ।३२। हे चंचलापांगि ! मैं आपका सन्देश तत्काल ही अपने महाराज शुम्भ के पास पहुँचा दूँगा । यह सुनकर भगवती जगदम्बा मन्द-मन्द मुस्काने लगी ।३३।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तं प्राह मधुराम्वाचं देवी देवार्थसाधिका ।
जानाम्यहं निशुम्भं च शुम्भं चातिबलं नृपम् ।३४
जेतारं सर्वदेवानां हन्तारं चैव विद्विषाम् ।
राशिं सर्वगुणानां च भोक्तारं सर्व सम्पदाम् ।३५
दातारं चातिशूरं च सुन्दरं मन्मथाकृतिम् ।
द्वात्रिंशल्लक्षणैर्युक्तमवध्यं सुरमानुषैः ।३६
श्रुत्वा शुभगुणानत्र प्राप्ताऽस्म्यद्य दिदृक्षया ।
गच्छ दूत महाभाग ब्रूहि शुम्भे महाबलम् ।३७
निर्जने श्लक्ष्णया वाचा वचनं मद्वचनान्मम् ।
त्वां ज्ञात्वा बलिनां श्रेष्ठ सुन्दराणां च सुन्दरम् ।३८
दातारं गुणिनं शूरं सर्व विद्याविशारदम् ।
जेतारं सर्वदेवानां दक्षं चोग्रं कुलोत्तरम् ।३९
भोक्तारं सर्व रत्नानां स्वधनं स्वबलोन्नतम् ।
पतिकामऽस्म्यहं सत्यं तव योग्या नराधिप ॥४०

देवताओं का कार्य सिद्ध करने वाली देवी ने मधुर वाणी में कहा- जानती हूँ कि निशुम्भ और महाबल शुम्भ राजा है ।३४। उन्होंने सब देवताओं को परास्त कर दिया और अन्यान्य शत्रुओं को मार डाला है ।३५। वे महान दाता अत्यन्त पराक्रमी और कामदेव के समान सुन्दर देहवाले तथा बत्तीसों शुभ लक्षणोंसे सम्पन्न और देवताओं तथा मनुष्य में अवध्य हैं ।३६। महाराज शुम्भ के शुभ गुणों को सुनकर ही मैं भी यहाँ चली आई हूँ । हे दूत ! हे महाभाग ! तुम सब जाओ और एकांत में उनसे कहना कि आपके बलवानों में श्रेष्ठ सुन्दरों में सुन्दर दाता गुणी सर्वविद्या-विशारद, देवताओं ने जीतने वाले कार्य-दक्ष, श्रेष्ठ कुलवाले, सभी रत्नों के उपभोग पूर्ण स्वाधीन तथा अपने ही वल से उन्नति को प्राप्त हुए समझकर ही यहां मेरा आगमन हुआ है मैं पति की अभिलाषी हूँ और यह भी सत्य है कि नराधिप ! मैं आपके ही योग्य हूँ ।३७-४०।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वेच्छया नगरे तेऽत्र समाताया महामते ।
ममास्ति कारणं किंचिद्विवाहे राक्षसोत्तम ।४१
बालभावाद्व्रतं किंचित्कृतं राजन्मया पुरा ।
क्रीडंत्या च वयस्याभिः सहैकान्ते यदृच्छया ।४२
स्वदेहबलदर्पेण सखीनां पुरतो सह ।
मत्समानबलः शूरो रणे मां जेष्यति स्फुटम् ।४३
तं वरिष्याम्यहं कामं ज्ञात्वा तस्य बलाबलम् ।
जहसुर्वचनं श्रुत्वा सख्यो विस्मितमानसः ।४४
किमेतया कृतं क्रूर व्रतमद्भुतमाशु वै ।
तस्मात्त्वमपि राजेन्द्र ज्ञात्वा मे ईदृशं बलम् ।४५
जित्वा मां स्वबलेनात्र वांछितं कुरु चात्मनः ।
त्वं वा तवानुजो भ्राता समेत्य समरांगणे ।
जित्वा मां समरेणात्र विवाहं कुरु सुन्दर ।।४६

हे महामते ! यद्यपि मैं स्वेच्छा से ही तुम्हारे नगर से आई हूँ तो भी हे राक्षस श्रेष्ठ ! मेरे परिणय में किंचित प्रतिबन्ध है ।४१। हे राजन् ! जब मेरी बाल्यावस्था थी तभी मैं अपनी समययस्क सहेलियों के साथ खेलती खेलती एक प्रतिज्ञा कर बैठी।४२। अपने शारीरिक बल के अभिमान में सखियों के समक्ष मैंने यह प्रतिज्ञा की थी कि जो मेरे समान बल वाला शूर मुझे युद्ध में पराजित कर देगा, तब मैं बल को देखकर उसीके साथ विवाह करूँगी । पहिले तो मेरी प्रतिज्ञा सुनकर वे विस्मित हुई और ठहाका मारकर हँसने लगी ।४३-४४। फिर बोली इसने इतनी शीघ्र ही ऐसी क्रूर प्रतिज्ञा क्यों करली ? इससे हे राजेन्द्र! मेरे बल के अहंकार को समझ लीजिए ।४५। इसलिए आप अपने बल से मुझे जीतकर अपनी इच्छा पूर्ण कर लीजिए । जब आप अथवा आपने अनुज निशुम्भ रण-क्षेत्र में आकर मुझे जीत लें और तब मेरे साथ विवाह कर लें ।४६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धूम्रलोचन का वध

अथ तद्वचनं श्रुत्वा नीतिमद्बलसंयुतम् ।
हेतुयुक्तं प्रगल्भं च विस्मितः प्रययौ तदा ।१
गत्वा दैत्यपतिं दूतो विचार्य पुनः पुनः ।
प्रणम्य पादयोः प्रह्वः प्रत्युवाच नृपं च तम् ।२
सत्यं प्रियं च वक्तव्यं तेन चिंतापरो ह्यहम् ।
सत्यं प्रियं च राजेन्द्र वचनं दुर्लभं किल ।३
अप्रियं वदतां कामं राजा कुप्यति सर्वथा ।
साक्षात्कुतः समायाता कस्य वा किंबलाऽबला ।४
तया यत्कथितं सम्यक्तच्छृणुष्व महामते ।
मया बाल्यात्प्रतिज्ञेयं कृतं पूर्वं विनोदतः ।५
सखीनां पुरतः कामं विवाह प्रति सर्वथा ।
यो मां युद्धे जयेद्वा दर्पं च विधुनोति वै ।६
त वरिष्याम्यहं कामं पति समबल किल ।
न मे प्रतिज्ञा मिथ्या सा कर्तव्या नृपसत्तम् ।७
तस्माद्युद्ध्यस्व धर्मज्ञ जित्वा मां स्ववशं कुरु ।
तथेति व्याहृतं वाक्यं श्रुत्वाऽहं समुपागतः ।८

व्यासजी बोले—हे राजन देवी के नीति-बल-युक्त तर्क-युक्त एवं सार्थक वचन सुनकर विस्मित हुआ दूत उनकी बातों पर बारम्बार विचार करता हुआ वहां से लौटकर, दैत्य-पति शुम्भ के पास गया और उसके चरणों में प्रणाम करके बोला ।१-२। हे राजेन्द्र ! प्रिय बात कहना अति दुर्लभ है, अप्रिय वचन कहने से राजा के कुपित होने का भय है, मैं यह नहीं जान सका कि वह स्त्री, कौन किसकी पुत्री कहाँ से आई ? ।३-४। हे महामते ! उसके कथन को आप भले प्रकार सुनिये । उसका कहना है कि मैंने बाल्यावस्था में सखियों के साथ खेलते समय यह प्रतिज्ञा की थी कि जो पुरुष मेरे बल-दर्प का खण्डन करके मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युद्ध में जीतेगा, उसी के साथ विवाह करूँगी ।५-७। इसलिए हे धर्मज्ञ! आप मुझे युद्ध करके जीत लीजिए ।८।

निश्चला वर्तते भूप यद्योग्यं तद्विधीयताम् ।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य सुग्रीवस्य नराधिपः ।९
कोपात्संप्रेषायामास पार्श्वस्थं धूम्रलोचनम् ।
धूम्रलोचन गच्छाशु सैन्येन महताऽऽवृतः ।१०
गृहीत्वाऽऽनय तां मुग्धां स्ववीर्यमदमोहिताम् ।
देवो वा दानवो वाऽपि मनुष्यो वा महाबल ।११
तत्पाणिग्राहतां प्राप्तो हन्तव्यस्तरसा त्वया ।
तत्पार्श्ववतिनीं कालीं हत्वा संगृह्यतां पुनः ।१२
शीघ्रमत्र समागच्छ कृत्वा कार्यमनुत्तमम् ।
रक्षणीया त्वया साध्वी मुंचंती मृदुमार्गणाम् ।१३
सर्वथा सा हन्तव्या रक्षणीया प्रयत्नतः ।
इत्यादिष्टस्तदा राज्ञा तरसा धूम्रलोचनः ।१४
प्रणम्य शुम्भं सैन्येन वृतः शीघ्रं ययौ रणे ।
असाधूनां सहस्राणां षष्ट्या तेषां वृतस्तथा ।१५

हे राजन् ! वह अपने निश्चय पर दृढ़ है । इसलिए आप जो चाहें वह करें । दूत की यह बात सुनकर राजा शुम्भ नें क्रोध-पूर्वक अपने पार्श्व में ही बैठें हुए धूम्र-लोचन से कहा हे धूम्रलोचन ! तुम तुरन्तही विशाल सेना लेकर जाओ ।९-१०। और अपने बल से मोहित हुई उस सुन्दरी को यहाँ ले आओ । यदि इस कार्य में देवता, दानव तो मनुष्य कोई भी हस्तक्षेप करे तो उसे तत्काल मार डालो । उस काली को भी समाप्त करके उसे शीघ्र यहाँ लाने का श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न करो । परन्तु उस कोमलांगी की रक्षा करना ।११-१३। क्योंकि वह वध के योग्य नहीं हैं । ऐसा आदेश पाकर धूम्रलोचन उसे प्रणाम करके सेना-सहित शीघ्र ही चल पड़ा ।१४-१५।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स ददर्श ततो देवीं रम्योपवनसंस्थिताम् ।
दृष्ट्वा तां मृगशावाक्षीं विनयेन समन्वितः ।१६
उवाच वचनं श्लक्ष्णं हेतुमद्रसभूषितम् ।
शृणु देवि महाभागे शुम्भस्त्वद्विरहातुरः ।१७
भज शुम्भं त्रिलोकेशं देवदर्पनिवर्हणम् ।
पट्टराज्ञी प्रिया भूत्वा भुङ्क्ष्व भोगानमुत्तमान् ।१८
जेष्यति त्वां महाबाहुः शुम्भः कामबलार्थवित् ।
विचित्रान्कुरु हावांस्त्वं सोऽपि भावान्करिष्यति ।१९
इत्युवाच विरतामासौ वचनं धूम्रलोचनः ।
प्रत्युवाच तदा काली प्रहस्य ललितं वचः ।२०
विदूषकोऽसि जाल्म त्वं शैलूष भाषसे ।
वृथा मनोरथांश्चित्ते करोषि मधुरं वदन् ।२१

वहाँ जाकर उसने भगवतीं को एक उपवन में स्थित देखा और अत्यन्त विनीत भाव से रहस्य पूर्ण वचन कहने लगा । हे देवि ! सुनो महाराज शुम्भ आपके विरहमें व्याकुल हो रहेहैं ।१६-१७। तीनों लोकों के स्वामी और देवताओं का दर्प खण्डन करने वाले राजा कुम्भसे प्रेम करके उनकी पटरानी हो जाइये और श्रेष्ठतम ऐश्वर्यों का उपभोग कीजिए ।१८। महाबाहु शुम्भ कामबल के ज्ञाता हैं और जब आप विभिन्न प्रकार के हाव-भाव प्रदर्शित करेगी तब वे पीछे नही रहेंगे।१९ व्यासजी बोले कि धूम्रलोचन जैसे ही चुप हुआ वैसे ही अट्टहास करके हँसती काली बोल पड़ी ।२०। अरे ! तू तो विदूषक ही है और नट के समान बात कहता है । व्यर्थ ही बातें करके चित्त में वासना उत्पन्न करना चाहता है ।२१।

बलवान्बलसंयुक्तः प्रेषितोऽसि दुरात्मना ।
कुरु युद्धं वृथा वादं मुञ्च मूढमतेऽधुना ।२२
हत्वा शुम्भं निशुम्भं च त्वदन्यान्वा बलाधिकान् ।
देवी क्रुद्धा शराघातैर्व्रजिष्यति निजालयम् ॥२३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गच्छ शुम्भं च वद सत्यं वद सत्यं वचो मम ।
कुरु युद्धं न चेद्याहि पातालं तरसाऽधुना ।२४
तच्छ्रुत्वा वचनं दैत्यः सगृह्य कार्मुकं दृढम् ।
कालिकां तां शरासारैर्वर्षातिशिलाशितैः ।२५
देवास्तु प्रेक्षकास्तत्र विमानवरसंस्थिताः ।
तां स्तुवन्तो जयेत्यूचुर्देवीं शक्रपुरोगमाः ।२६
तयोः परस्परं युद्धं प्रवृत्तं चातिदारुणम् ।
बाणखड्गगदाशक्तिमुसलादिभिरुत्कटम् ।२७
कालिका बाणपातैस्तु हत्वा पूर्वं खरानथ ।
बभंज तद्रथं व्यूढं जहास च मुहुर्मुहुः ॥२८

अरे दुष्ट! तू बलवान है,सेना लेकर आया है, शुम्भ ने युद्धके लिए ही भेजा है, इसलिए व्यर्थ विवाद छोड़कर युद्धकर ।२२। यह देवी जब क्रुद्ध होगा, तब शुम्भ निशुम्भ के साथ तुझें और अन्यान्य बली दैत्यो का संहार करके अपने स्थान को चली जायगी ।२३। तू शुम्भ, निशुम्भ के पास जाकर यह सत्य बात कह दे कि युद्ध करो अथवा पाताल लोक में जाकर रहो ।२४।इन वचनों को सुनकर ही धूम्रलोचन धनुष उठाकर कालिका पर पाषाण से तीक्ष्ण किये गये बाणों की वर्षा करने लगा।२५। उस समय विमानों पर बैठें हुए देवता भगवती की स्तुति और जयजयकार करने लगे ।२६। इस प्रकार कालिका और धूम्रलोचन के मध्य बाण, खड्ग, गदा, शक्ति, मुशल आदि घोर शस्त्रास्त्रों के द्वारा भयंकर युद्ध होने लगा ।२७। तब कालिका ने अपने बाणों से उसके रथमें संयुत खच्चर मार डाले तथा रथ को चूर-चूर कर दिया ।२८।

विरथः परिघं गृह्य सर्वलोहमयं दृढम् ।
आजगाम रथोपस्थं कुपितो धूम्रलोचनः ।२९
वाचा निर्भर्त्सयन्कालीं करालः कालसन्निभः ।
अद्यैव त्वां हनिष्यामि कुरूपे पिङ्गलोचने ॥३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा सहसाऽऽगत्य परिघं क्षिपते यदा ।
हुङ्कारेणैव तं भस्म चकार तरसाऽम्बिका ।३१
दृष्ट्वा भस्मीकृतं दैत्यं सैनिका भयविह्वलाः ।
चक्रुः पलायनं सद्यो हा हाहेति ब्रुवन्पथि ।३२
अम्बिका तद्रणस्थानं त्यक्त्वा दूरस्थलांतरे ।
गत्वा चकार चाप्युग्रं शंखनादं भयप्रदम् ।३३
तं श्रुत्वा दूरशब्दं तु शुम्भः सद्मनि संस्थितः ।
दृष्ट्वाऽथ दानवान्भग्नानार्तान् रुधिरोक्षितात् ।३४
वीक्ष्य शुम्भो निशुम्भश्च क्व गतो धूम्रलोचनः ।
कथं भग्नाः समायाता नानीता किं वरानना ॥३५

रथ के नष्ट होने पर अत्यन्त कुपित हुआ धूम्रलोचन लोह-परिघ लेकर कालिका की ओर दौड़ा और कर्कश स्वर में कहने लगा कि अरी पिङ्गलोचने ! कुरूपा, काली ! मैं अभी तेरा वध किये देताहूँ ।२९-३०। यह कहकर वह जैसे ही काली पर परिघ से प्रहार करने को हुआ वैसे ही अम्बिका ने हुंकार करके उसे भस्म कर दिया ।३१। जब दैत्य सैनिकों ने उसे भस्म हुआ देखा तो वह हाहाकार करते हुए वहाँ से भाग गये ।३२। फिर अम्बिका ने उस युद्ध-स्थल को छोड़कर और कुछ दूर अन्य स्थानपर जाकर भयोत्पादक शंखनाद किया ।३३। जब भवन में स्थित शुम्भ ने उस नाद को सुना और तभी क्षत-विक्षत एवं रुधिर में भीगे हुए शरीर वाले दैत्योंको वहाँ आते हुए देखा।३४। उन्हें देखते ही शुम्भ-निशुम्भ बोले कि अरे, धूम्रलोचन कहाँ गया ? तुम घायल अवस्था में क्यों हो ? उस सुन्दरी को क्यों नहीं लाये ! ।३५।

सैन्यं कुत्र गतं मन्दाः कथयन्तु यथोचितम् ।
कस्यायं शंखनादोऽद्य श्रूयते भयवर्धनः ।३६
बलं च पातितं सर्वं निहतो धूम्रलोचनः ।
कृतं कालिकया कर्म रणभूमावमानुषम् ।३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंखनादोऽम्बिकायास्तु गगनं व्याप्य राजते ।
हर्षदः शूरसंघानां दानवानां च शोककृत् ।३८
तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां शुम्भः परबलार्दनः ।
कनीयांसं समानीय पप्रच्छ रहसि स्थितः ।३९
भ्रातः कालिकयाऽद्यैव निहतो धूम्रलोचनः ।
बलं च शामितं सर्वं गणा भग्नाः समागताः ।४०
पृच्छामि त्वां महाभागं किं कर्तव्यमतः परम् ।
अभोग्या चाम्बिका नूनं कारणदत्र चागता ।४१
ससैन्योऽहं गमिष्यामि रणे तु प्रवराश्रितः ।
हत्वा तामागमिष्यामि तरसा त्वबलामिमाम् ।४२
अथवा बलवद्दैवादन्यथा चेद्भविष्यति ।
मृते मयि त्वया कार्यं विमृश्य च पुनः पुनः ॥४३

अरे मूर्खों ! मेरी सेना कहाँ गई ? यह भयदायिनी शंख-ध्वनि किसने की है ? ।३६। यह सुनकर सैनिक बोले—कालिका ने सब सेना का संहार कर दिया, धूम्रलोचन मार दिया । उसने जो कर्म किया है उसे मनुष्य नहीं कर सकता ।३७। आकाश मण्डल में गूँजने वाला शंख नाद अम्बिका ने किया है, जिसे सुनकर दैत्यों में शोक और देवताओं में हर्ष छा गया ।३८। व्यास जी बोले—शत्रुओं के दल का हनन करने वाले शुम्भ ने सैनिकों की बात सुनकर निशुम्भ को बुलाकर एकान्तमें उससे कहा ।३९। हे भ्राता ! अकेली कालिका ने ही धूम्रलोचनको दैत्य सेना के सहित समाप्त कर दिया, थोड़े से घायल सैनिक ही यहाँ लौट कर आये हैं ।४०। हे महाभाग ! मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि अब हमें क्या करना चाहिए ? ऐसा प्रतीत होता है कि अम्बिका अभोग्या है और वह किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही यहाँ आई है ।४१। इस पर निशुम्भ ने कहा मैं अपनी सेना के साथ युद्ध भूमि जाकर कालिका का वध कर दूँगा और अम्बिका को पकड़ लाऊँगा ।४२। यदि दैव की प्रबलता से वैसा न कर सकूँ और यदि स्वयं ही मारा जाऊँ, तब आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो करें वह वारम्वार सोचकर ही करना ।४३।

इति तस्य वचः श्रुत्वा शुम्भः प्रोवाच चानुजम् ।
तिष्ठ त्वं चण्डमुण्डौ द्वौ गच्छेतां बलसंयुतौ ।४४
शशकग्रहणायात्र न युक्तं गजमोचनम् ।
चण्डमुण्डौ महावीरौ तां हन्तुं सर्वथा क्षमौ ।४५
इत्युक्त्वा भ्रातरं शुम्भः संभाष्य च महाबली ।
उवाच वचनं राजा चण्डमुण्डौ पूरः स्थितौ ।४६
गच्छत चण्डमुण्डौ द्वौ स्वसैन्यपारिवारितौ ।
हन्तुं तामबलां शीघ्रं निर्लज्जां मदगर्विताम् ।४७
गृहीत्वाऽथा निहत्याजौ कालिका पिङ्गलोचनाम् ।
आगम्यतां महाभाग कृत्वा कार्यं महत्तरम् ॥४८
सा नायाति गृहीताऽपि गर्विता चांबिका यदि ।
तदा बाणैर्महातीक्ष्णैर्हन्मव्याऽऽहवपण्डिता ॥४९

यह सुनकर शुम्भ ने निशुम्भ से कहा—अभी तुम ठहरो, पहिले चण्ड मुण्ड अपनी सेना लेकर वहाँ जायें ।४४। खरगोश को पकड़ने के लिए हाथी को नहीं जाना चाहिए, चण्ड-मुण्ड महावली हैं, यह उन्हें मारने में सर्वथा समर्थ हैं ।४५। अपने भाई से यह कहकर शुम्भ ने अपने सामने ही बैठें हुए चण्ड-मुण्ड से कहा ।४६। हे चण्ड-मुण्ड ! तुम दोनों सेनाके सहित जाकर उनदोनों मद गर्विता और निर्लज्जा नारियों को पराजित कर दो ।४७। हे महाभागो ! उस कई नेत्रवाली कालिका को मारकर और अम्बिका को पकड़कर यहाँ ले आओ इस महान कार्य को तुम्हीं करो ।४८। यदि वह अहङ्करिणी अम्बिका पकड़ी जाने परभी यहाँ न आ सके तो उस संग्राम के चाहने वाली का भी वधकर देंना ।४९।

———

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चण्ड-मुण्ड का वध

इत्याज्ञप्तौ तदा वीरौ चण्ड-मुण्डौ महाबलौ।
जग्मतुस्तरसैवाजौ सैन्येन महताऽन्वितौ ।१।
दृष्ट्वा तत्र स्थितां देवीं देवानां हितकारिणीम् ।
ऊचतुस्तौ महावीर्यौ तदा सामान्वितं वचः ।२
वाले त्वं किं न जानासि शुम्भं सुरबलार्दनम् ।
निशुम्भं च महावीर्यं तुराषाडविजयोद्धतम् ।३
त्वमेकाऽसि वरारोहे कालिकासिंहसंयुता ।
जेतुमिच्छसि दुर्बुद्धे शुम्भं सर्वबलान्वितम् ।४
चतुराऽसि पिकालपे पश्य शुम्भबलं महत् ।
प्रत्यक्षं सुरसङ्घानां मर्दनेन महोदयम् ।५
प्रत्यक्षं च परित्यज्य वृथैवानुमितिः किल ।
संदेहसहिते कार्ये न विपश्चित्प्रवर्तते ।६
ऐश्वर्यं सर्वलोकानां प्राप्स्यसे शुम्भशासनात् ।
निश्चयं परमं कृत्वा भर्तारं भज शोभनम् ।।७

व्यास जी बोले—हे राजन् ! महा बलवान चण्ड-मुण्ड शुम्भ की आज्ञा पाकर विशाल सेना लेकर युद्ध के लिये चले ।१। वहाँ देवताओं का हित करने वाली भगवती को देखकर वे उन्हें मधुर वचनों द्वारा समझाने लगे ।२। हे वाले ! क्या आप देव-सेना के संहारक, शुम्भ और विजयोद्धत वीर निशुम्भ को नहीं जानती ।३। हे दुर्बुद्धे ! कालिका और सिंहके बल परही सब प्रकार की सेनाओंसे सम्पन्न महाराज शुम्भ को परास्त करने की इच्छा है ।४। हे पिकवयनी ! आप चतुर हैं, इसे प्रत्यक्ष देख लीजिए कि शुम्भ ने देवताओं का मर्दन करके उनका राज्य ले लिया है ।५। प्रत्यक्ष के सामने अनुमान व्यर्थ है। जिस काममें सन्देह हो उसमें हाथ नहीं डालना चाहिए ।६। शुम्भ के शासन में सब लोकों का ऐश्वर्य भरा पड़ा है, इसलिये आप उन्हें अपना पति बना लें ।७।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति तस्य वचः श्रुत्वा चण्डस्य जगदम्बिका ।
मेघगम्भीरनिनदं जगर्ज पुनरब्रवीत् ।८
गच्छ जाल्प मृषा किं त्वं भाषसे वंचकं वचः ।
त्यक्त्वा हरिहरादींश्चशुम्भं कस्माद्भजे पतिम् ।९
न मे कश्चित्पतिः कार्यो न कार्यं पतिना सह ।
स्वामिनीं सर्वभूतानामहमेव निशामय ।१०
शुम्भा मे बहवो दृष्टा निशुम्भाश्य सहस्रशः ।
धातिताश्च मया पूर्वं शतशो दैत्यदानवाः ।११
क्रमशः सर्वदैत्यानां करिष्याम्यद्य संक्षयम् ।
विषदं त्यज मन्दात्मन्कुरु युद्धं विशांपते ।१२
त्वामहं निहनिष्यामि भ्रातरं तव सांप्रतम् ।
ततः शुम्भं निशुम्भञ्च रक्तबीजं मदोत्कटम् ॥१३
अस्मांश्च दानवान्सार्वान्हित्वाऽहं समरांगणे ।
गमिष्यामि यथास्थानं तिष्ठवा गच्छवाद्रुतम् ।१४
तयेत्थं प्रेरितौ दैत्यो चण्डमुण्डौक्रुधन्वितौ ।
ज्याशब्दं तरसा घोरं चक्रतुर्बलदर्पितौ ॥१५

उसके ये वचन सुनकर जगदम्बा मेघ के समान घोर गर्जन करती हुई बोली ।८। अरे धूर्त! तू कपट-पूर्ण व्यर्थ वकवास क्यों कर रहा है ? ।९। न मुझे पति से कोई कार्य है और न किसी को पति बनाया है क्यों कि मैं स्वयं ही सब प्राणियों की स्वामिनी हूँ ।१०। मैंने असंख्य शुम्भ और सहस्रों निशुम्भ देखे हैं । पूर्वकाल में भी मैं अगणित दैत्य-दानवों को मार चुकी हूँ ।११। हे मन्दात्मा ! मैं क्रम-पूर्वक सब दैत्यों का वध करूँगी इस लिये शोक को त्याग कर युद्ध करो ।१२। तुमको और तुम्हारे भाई को मार कर शुम्भ, निशुम्भ, रक्तबीज तथा अन्यान्य मन्दोमत्त दैत्यों का संहार करके मैं अपने स्थान को लोट जाऊँगी । अब तुम यहां ठहरो अथवा शीघ्र ही भाग जाओ ।१३-१४। व्यास जी बोले कि इस प्रकार की ललकार से चण्ड-मुण्ड क्रोधित हो गये ।१५।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युद्धं परस्परं तत्र जातं कातरभीतिदम् ।
चण्डिकाचण्डयोस्तीव्रं बाणखड्गगदादिभि ।१६
चण्डमुक्ताञ्छरांदेवीं विच्छेद निशितैः शरैः ।
मुमोच पुनरुग्रान्सा बाणांश्च पन्नागानिव ।१७
मुण्डोऽपि सैनिकैः सार्धं पपात तरसा रणे ।
मुमोच बाणवृष्टिदृवै क्रुद्धः परमदारुणः ।१८
बाणजालं महददृष्ट्वा क्रुद्धा तत्राम्बिका भृशम् ।
कोपेन वदनं तस्या बभूव घनसन्निभम् ।१९
कदलीं पुष्पनेत्रं च भ्रकुटीकुटिलं तदा ।
निष्क्रान्ता च तदा काली ललाटफलकाद्द्रुतम् ।२०
व्याघ्रचर्माम्बरा क्रूरा गजचर्मोत्तरीयका ।
मुण्डमालाधरा घोरा शुष्कवापीसमोदरा ।२१
खड्गपाशधराऽतीव भीषणा भयदायिनी ।
खट्वाँगधारिणी रौद्रा कालरात्रिरिवापरा ।२२
विस्तीर्णवदना जिह्वां चालयन्ती मुहुर्मुहुः ।
विस्तारजघना वेगाज्जघानासुरसैनिकान् ।।२३

फिर चण्डिका और चण्ड के मध्य बाण, खड्ग और गदा आदि के द्वारा घोर युद्ध होने लगा, जिससे कायर व्यक्ति डर गये ।१६। चण्ड के बाणों को अपने बाणों से काटती हुई चण्डिका उग्र हो उठी और उस पर सर्प के समान बाणों की वर्षा करने लगी ।१७। तभी मुण्डभी अपने सैनिकों सहित युद्ध में कूद पड़ा और भयङ्कर बाणों की वर्षा करने लगा ।१८। उस महान् बाण-जाल को देख भगवती कुपित हो गई ।१९। उनके नेत्र कदली पुष्प के समान लाल और भौंहें टेढी हो गई, और उनके ललाट से तुरन्त ही काली का उद्भव हुआ ।२०। बाघम्बर धारिणी उन बाली के कण्ठ में मुण्डमाल सुसज्जित थीं। सूखी बावली जैसा शुष्क मोटा पेट और क्रूर तथा भयानक रूप था ।२१। खड्गापाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धारण किये वे भयदायिनी भयङ्कर कालरात्रि के समान प्रतीत होतीथीं ।२२। मुख खोलकर जीभ लपलपाती हुई वह विस्तृत-जघना देवी वेग-पूर्वक असुर-सैनिकों का वध करने लगी ।२३।

चण्डश्चण्डकरच्छायञ्चक्रं चक्रधरायुधम् ।
चिक्षेप तरसा देवीं ननाद मुहुर्मुहुः ।२४
तं जघान शरैस्तीक्ष्णैश्चण्डं चण्डी शिलाशितैः ।
मूर्छितोऽसौ पपातोर्व्यां देवीं बाणार्दितो भृशम् ।२५
पतितं भ्रातरं वीक्ष्य मुण्डो दुःखार्दितस्तदा ।
चकार शरवृष्टिं च कालिकोपरि कोपतः ।२६
अर्द्धचन्द्रेण बाणेन ताड़यामास तं पुनः ।
पतितोऽसौ महावीर्यो मेन्दियां मदवर्जितः ।२७
विहाय मूर्छां चण्डस्तु संगृह्य महतीं गदाम् ।
तरसा ताडयामास कालिकां दक्षिणे भुजे ।२८
वंचयित्वा गदाघातं तं बबंध महासुरम् ।
तरसा बाणपाशेन मन्त्रमुक्तेन कालिका ।२९
उत्थितस्तु तदा मुण्डो बद्धं दृष्ट्वाऽनुजं बलात् ।
आजगाम सुसन्नद्धः शक्तिं कृत्वा करे दृढाम् ।।३०

तभी प्रचण्ड रश्मि-सम्पन्न सूर्य के समान तेज वाले तथा सुदर्शन चक्र के समान भयंकर चक्र को देवी पर छोड़ कर गरजने लगा।२४।यह देखकर चण्डी ने भी तीक्ष्ण वाणों को चण्ड पर चलाया, जिससे वह मूर्छित होकर पृथिवी पर गिर पड़ा ।२५। अपने भाई को गिरता हुआ देखकर दुःखित हुए मुण्ड ने क्रोध पूर्वक कालिका पर भयंकर वाण वर्षा की ।२६।तब उन्होंने एक चन्द्रा कार वाणसे मुण्ड पर प्रहार किया और वह मद रहित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ।२७। तभी मूर्छा त्याग चण्ड ने एक महती गदा उठाई उसका गदा का आघात चुकाकर कालिका ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्त्राभिमन्त्रित पाश से महासुर को बाँध लिया ।२८-२९। तभी मुण्ड भी मूर्च्छा से उठा और अपने भाई को पाशास्त्र के बन्धन में देखकर शक्ति सहित कालिका की ओर दौड़ा ।३०।

आगच्छतं तदा काली दानवं वीक्ष्य सत्वरम् ।
बवन्फ तरसा त्रं तु द्वितीयं भ्रातरं भृशम् ।३१
गृहीत्वा तौ महावीर्यो चण्डमुंडौ शशाबिव ।
कुर्वती विपुलं हासमाजगामांबिकां प्रति ।३२
आगत्य तामवोचाच गृहाणेमौ पशू प्रिये ।
रणयज्ञार्थमानीतौ दानवौ रणदुर्जयौ ।३३
आलभं च करिष्यामि यथा हिंसा न जायते ।
इत्युक्त्वा सा तदा देवी खंगेन शिरसी तयोः ।३४
चकर्त तरसा काली पपौ च रुधिरं मुदा ।
एवं दैत्यौ हतौ दृष्ट्वा मुदितोवाच चाम्बिका ।३५
कृतं कार्यं सुराणां ते ददाम्यद्य परं शुभम् ।
चामुण्डे सुविख्यात भविष्यति धरातले ।३६

द्रुत वेग से आता हुआ देखकर कालिका ने उसे भी अपने पाश में जकड़ लिया ।३१। उन दोनों महा पराक्रमियों की शशों के समान बाँध कर अट्टहास करती हुई कालिका अम्बिका के निकट पहुँचीं ।३२।वहाँ आकर उन्होंने कहा इन रण दुर्जय दानवों की रण-यज्ञ में आहुति देने के लिए पशुओं के समान बाँध लाई हूँ, इन्हें सम्भालिए ।३३। मैं इनकी बलि इस प्रकार चढ़ाऊँगी, जिससे हिंसा नहीं मानी जायेगी । यह कह कर देवीने अपने खड्गसे उनके मस्तक उड़ा दिये और उनका रक्तपान कर ने लगी । इस प्रकार दैत्यों का संहार हुआ देखकर अम्बिका प्रसन्न होकर बोलीं ।३४-३५। तुमने इनके वध द्वारा देवताओं का कार्य पूर्ण किया है, इसलिये मैं तुम्हें यह शुभ वर देती हूँ कि भविष्य में पृथिवी पर तुम 'चामुण्डा' नाम से प्रसिद्ध होगी ।३६।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्तबीज का रण-क्षेत्र को प्रस्थान

हतौ तौ दानवौ दृष्ट्वा हतशेषाश्च सैनिकाः ।
पलायनं ततः कृत्वा जग्मुः सर्वं नृति ।१
गत्वा दैत्यपतिं सर्वे चक्रुर्वुम्बारवम्मुहुः ।
रक्ष रक्ष महाराज भक्षयत्यद्य कालिका ।२
तया हतौ महावीरो चण्डमुण्डौ सुरार्दनौ ।
भक्षिताः सैनिकाः सर्वे वयं भग्ना भयातुराः ।३
भीतिदं च रणस्थानं कृतं कालिकया प्रभो ।
पतितैर्गजवीराश्वैर्दासिरकपदातिभिः ।४
कुलं रक्ष महाराज पातालं गच्छ सत्वरम् ।
क्रुद्धा देवी क्षयं जद्य करिष्यति न संशयः ।५
इति तेषां वचः श्रुत्वा शुम्भः सुरबलार्दनः ।
उवाच वचनं तथ्यं वीरवयं गुणान्वितम् ।६
मौनं कुर्वन्तु भो मन्दा यूयं भग्ना रणाजिरात् ।
शीघ्रं गच्छत पातालं जीविताशा वलीयसी ।।७

उन दानवों को मरा हुआ देखकर शेष सैनिक शुम्भ के सामने जाकर पुकार करने लगे—हे महाराज ! हमारी रक्षा करिये । कालिका हमारा भक्षण किये जा रही हैं ।१-२। महावलीं चण्ड को उसने मार दिया, असंख्य दैत्यों का भक्षण कर लिया। इससे भयभीत होकर हम यहाँ भाग आये ।३। हे राजन् ! कालिका के असंख्य हाथी, घोड़े ऊँट आदि के सवार और प्यादों को छिन्न-भिन्न कर रणक्षेत्र को भयावना बना दिया है । हे महाराज ! आप दैत्य-कुल की रक्षा के लिए तुरन्त ही पाताल लोक को गमन कीजिए, अन्यथा वह क्रुद्ध देवी निःसन्देह सबको मार डालेगी ।५। उसके वचन सुनकर देवताओं का बल मर्दन करने वाले शुम्भ ने वीर रस से ओत-प्रोत वचन कहे ।६। अरे मन्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धि वाली, मौन हों जाओ, तुम युद्ध में पीठ दिखाकर भाग आये हो, यदि जीवन का ऐसा मोह है तो तुम्हीं पाताल लोक को चले जाओ ।७

देवाधीन जगत्सर्वं का चिन्ताऽत्र जये मम ।
देवास्तथैव ब्रह्माद्या दैवाधीना वयं तथा ।८
उद्यमे च कृते कार्य सिद्धि यात्येव सर्वथा ।
कदाचित्तस्य न्यूनत्वे कार्यं नैव भवेदपि ।९
देशकाल च विज्ञाय स्ववलं शत्रुजं वलम् ।
इति कार्यं भवत्येवं बृहस्पतिवचो यथा ।१०
इति निश्चित्य दैत्येन्द्रो रक्तवीज महासुरम् ।
प्रेषयामास संग्रामे सन्येन महताऽऽवृतम् ।११
रक्तबीज महावाहो गच्छ त्वं समरांगणे ।
कुरु युद्धं महाभाग यथा ते बलमाहितम् ।१२
महाराज न ते कार्या चिन्ता स्वल्पतराऽपि वः ।
अहमेनां हनिष्यामि कपिष्यामि वशे तव ।१३
इत्याभाष्य कुरुश्रेष्ठ रक्तबीजो महासुरः ।
जगाम रथमाह्यरु स्वसैन्यपरिवारितः ॥१४

यह विश्व देव के अधीन है । जैसे ब्रह्मादि देवता दैव के अधीन रहते हैं, वैसे ही मैं रहता हूँ । मुझें विजय के विषय में क्यों चिन्तित होना चाहिए ।८। तो भी उद्यम करने से सर्वथा कार्य-सिद्धि सम्भव हैं । काल तथा शत्रु के और अपने वल को देखकर कोई कार्य करे तो उसमें सफलता मिलती है ।९-१०। व्यासजी वोले—हे राजन ! दैत्येन्द्र शुम्भ ने इस प्रकार निश्चय करके दैत्य-सेनापति रक्तवीज को भारी सेना के सहित रणक्षेत्र में भेजा ।११। उस समय शुम्भ ने कहा—हे रक्तबीज ! हे महावाहो ! तुम अभी रणभूमि को प्रस्थान करो और युद्ध में अपनी पूरी शक्ति लगा दो ।१२। तव रक्तवीज ने कहा—हे महाराज ! आप चिन्ता न करिये, मैं उस [illegible] अवश्य ही आपके वश में कर दूंगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथवा मार डालूँसा ।१३। व्यासजी बोले हे कुरुश्रेष्ठ ! यह कह कर रक्तबीज रथ पर चढ़कर विशाल सेना के साथ चल पड़ा ।१४।

तमागतं समालोक्य देवी शंखमवादयत् ।
भयदं सर्वदैत्यानां देवानां मोदवर्धनम् ।१५
श्रुत्वा शंखस्वनं चोग्रं रक्तबीजोऽतिवेगवान् ।
गत्वा समीपे चामुण्डां वभाषे वचनं मृदु ।१६
बाले किं मां भीषयति मत्वा त्वं कातरं किल ।
शंखनादेन तन्वङ्गि वेत्सि किं धूम्रलोचनम् ।१७
रक्तबीजोऽस्मि नाम्नाऽहं त्वत्सकाशमिहायतः ।
युद्धेच्छा चेत्पिकालापे सज्जा भव भयं न मे ।१८
रसानां च नवानां वै द्वावेव मुख्यता गतौ ।
शृङ्गारकः शान्तिरसो विद्वज्जनसभासु च ।१९
तयोः शृङ्गार एवादौ नृपभावे प्रतिष्ठितः ।
अप्राप्तभोगविभवा ये चान्ये कातरा नराः ।२०
लोभे क्रोधे चो दुर्धर्षे मोहे मतिविनाशके ।
तस्मात्वमपि कल्याणि कुरु कीत मनोहरम् ।२१
शुम्भं सुराणां जेतारं निशुम्भ वा महाबलम् ।
इत्युक्त्वा रक्तबीजोऽसौ विरराम पुरः स्थितः ।२२
श्रुत्वा जहास चामुण्डाकालिका चाविका तथा ॥२३

उस दल-बल से आता देखकर देवीने शंखनाद किया, जिसे सुनकर देवता प्रसन्न और दैत्य भय-भीत हो गये ।१५। उस उग्र शंखनाद को सुनकर रक्तबीज तुरन्त ही भगवती चामुण्डाके पास जाकर बोला ।१६। हे बाले ! क्या तुम मुझे कायर समझ कर शंख नाद से भयभीत कर रही हो, क्या मुझे भी धूम्रलोचन समझती हो।१७। मेरा नाम रक्तबीज है । यदि युद्ध करने की अभिलाषा है तो आ जाओ, मैं किंचित् भी नहीं डरता ।१८। विद्वानों से नौ रस बताये हैं, उनमें, शृङ्गार रसको राजा समझो । जिन प्राणियों को भोग अथवा वैभव उपलब्ध नहीं हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे तो निरे कायर ही हैं ।१९-२०। लोभ, क्रोध और मतिनाशक दुर्धर्ष मोह पर विजय पाना सरल कार्य नहीं है, इसलिये हे कल्याणि आप सुन्दर, महावली देवताओं के विजेता शुम्भ अथवा निशुम्भ को अपना पति बना लीजिए यह कहकर रक्तबीज चुप हो गया और उसके ऐसे वचन सुनकर चामुण्डा कालिका और अम्बा तीनों ही अट्टहास करने लगीं ।२१-२३।

मातृगणों द्वारा दैत्यों का संहार

कृत्वा हास्यं ततो देवी तमुवाच विशाम्पते ।
मेघगम्भीरया वाचो युक्तियुक्तमिदं वचः ।१
पूर्वमेव मया प्रोक्तं मन्दात्मन्कि विकत्थसे ।
दूतस्याग्रे यथायोग्यं वचनं हितसंयुतम् ।२
त्वं वै तदाज्ञया प्राप्तस्तस्य कार्यविसिद्धये ।
संग्रामं कुरु पातालं गच्छ वा पतिना सह ।३
तच्छ्रुत्वा वचनं देव्याः स दैत्योऽमर्षपूरितः ।
मुमोच तरसा बाणान्सिंहत्थोपरि दारुणान् ।४
अम्बिका तांछरान्वीक्ष्य गगने पन्नगोपमान् ।
चिच्छेद सायकैस्तीक्ष्णैर्बहुस्ततथा क्षणात् ।५
अन्यर्जघानं विशिखं रक्तबीजं महासुरम् ।
अम्बिका चापनिर्मुक्तैः कर्णाकृष्टैः शिलाशितैः ।६
देवीबाणैर्हतः पापी मूर्छामाप रथोपरि ।
पतिते रक्तबीजे तु हाहाकारो महानभूत् ॥७

व्यासजी बोले-हे जनमेजय, अट्टहास के पश्चात् देवी के मेघ जैसी गम्भीर वाणी में ये वचन कहे ।१। हे मन्दात्मा ! मुझे जो कुछ हितकर और उचित बात कहनी थी वह पहले ही दैत्य-दूत सुग्रीव से कह चुकी हूँ । फिर तू वृथा बातें क्यों बनाता है ? ।२। अब तू शुम्भ के आदेशानुसार यहाँ आया है,इसलिये उनकी कार्य-सिद्धि के लिये युद्धकर अथवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने स्वामी के सहित पाताल लोक को प्रस्थान कर ।३। यह सुनकर रक्तबीज क्रोध में भर गया और उसने देवी के सिंहपर एक साथ अनेक बाणों से प्रहार किया ।४। आकाश में सर्पके समान उड़ते हुए उन बाणों को भगवती ने देखते ही अपने बाणों से काट गिराया।५। फिर अम्बिका के पाषाण पर घिस कर तीक्ष्ण किए हुए बाणों से रक्तबीज घोर आहत होकर रथ में ही मूर्च्छित हो गया ।६-७।

सैनिकाश्चवुक्रशुः सर्वा हताःस्म इति चाब्रुवन् ।
ततो वुम्बारवं श्रुत्वा शुम्भः परमदारुणम् ।८
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ।
निर्यातु दानवाः सर्वे काम्बोजाः स्वबलैवृताः ।९
अन्येऽप्यतिबलाः शूराः कालकेया विशेषतः ।
इत्याज्ञाप्तं बलं सर्वं शुम्भेन च चतुर्विधम् ।१०
विजंगाम मदाविष्टं देवीसमरमण्डले ।
तमागतं समालोक्य चण्डिका दानवं बलम् ।११
घटानादं चक्काराशु भीषणं भवदमुहुः ।
ज्याम्बनं शंखनादं च चकार जगदम्बिका ।१२
तेन गादेन सत जाता काली विस्तारिताननाः ।
श्रुत्वा तन्निनदं घोर सिंहो देव्याश्च वाहनम् ।१३
जगर्ज सोऽपि बलाञ्जनयन्भयमद्भूतम् ।
तन्निनादमुवश्रुत्य दानवाः क्रोधमूर्छिताः ॥१४

उसके साथी सैनिक भी 'हाय मरे' चिल्लाने लगे। उनकी पुकार सुनकर दैत्यपति शुम्भ ने सब दैत्यों के लिये युद्धार्थ तैयार होने का आदेश किया। शुम्भ बोला—कम्बोज देश के सभी दैत्य योद्धागण अपनी-अपनी सेनाओं के सहित रण-भूमि को प्रस्थान करें ।८-९। फिर अन्यान्य वीर और विशेष रूपसे कालकेय योद्धा रथ-भूमि को चल दें। इस आज्ञा को सुनकर चतुरङ्गिणी दैत्य सेना रणक्षेत्र की ओर चल पड़ी उस सेना को आती देखकर कालिका भयप्रद घण्टा बजाने लगी और अम्बिका शङ्खनाद तथा ज्या की टङ्कार करने लगीं।१०-१२। उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय काली मुख खोलकर भयानक शब्द कर रही थी। देवी का वाहन सिंह भी अपनी गरजना से शत्रुओं मे भय उत्पन्न कर रहा था जिससे दैत्यगण अत्यन्त क्रोधित हो गये।१३-१४।

सर्वे चिक्षिपुरस्त्राणि देवी प्रति महाबला।
तस्मिन्नेवावते वृद्धे दारुणे लोमहर्षतो।१५
ब्रह्मादीनां च देवानां शक्तयश्चण्डिका ययुः।
यस्य देवस्य यद्रूपं तथा भूषणवाहनम्।१६
तादृग्रूपास्तदा देव्यः प्रययुः समरांगणे।
ब्रह्माणी वरदारूढा साक्षसूत्रकमण्डलु।१७
आगता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणीति प्रतिश्रुत्वा।
वैष्णवी गरुड़ारूढा शंखचक्रगदाधरा।१८
पद्महस्ता समायाता पीताम्बर विभूषिता।
शाङ्करी तु वृषारूढ़ा त्रिशूलवरधारिणी।१९
अर्धचन्द्रधरा देवी तथाऽहिवलया शिवा।
कौमारी शिखिसंरूढ़ाशक्तिहस्ता वरानना।२०
युद्धकामा समायाता कार्तिकेयस्वरूपिणी।
इन्द्राणी सुष्ठुवदना सुश्वेतगजवाहना।२१
वज्रहस्ताऽतिरोषाढ्यौ संग्रामौभिमुखी वयौ।
वाराही सूकराकारौ प्रोढप्रेतासना मता॥२२

इस प्रकार दैत्यों ने विभिन्न प्रकारके शस्त्रास्त्रों की वर्षा आरम्भ की। उस लोम-हर्षक और भयङ्कर युद्ध हो देखकर ब्रह्मादिक देवताओं की शक्तियाँ भी रणभूमि में उतर आई। जिस देवता का जो रूप, भूषण और वाहनादि था, वैसे ही रूप भूषण और वाहन से देवियाँ भी सम्पन्न थी। ब्रह्माणी रुद्राक्ष की माला हंस और कमण्डलु से युक्त थी। पीताम्बर धारिणी वैष्णवी शङ्ख-चक्र गदा-पद्म धारण किये गरुड़ पर बैठी थीं। शिवा शक्ति बैल पर सवारी किये थीं। उनके हाथों में सर्पों के कंगन त्रिशूल और मस्तक पर अर्द्धचन्द्र सुशोभित था। स्वामी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्तिकेय के रूप में उनकी कौमारी शक्ति मोर पर सवार तथा हाथ में शक्ति लिए हुए थी। इन्द्राणी शक्ति हाथमें वज्र धारण किये धवल गज पर सवार थी। बाराही शक्ति शूकर के रूप में एक विशाल प्रेत पर सवार होकर आई ।१५-२२।

नारसिंहो नृसिंहस्य बिभ्रती हदृशं वपुः।
याम्या महिषारूढा दण्डहस्ता भयप्रदा ।२३

समायाताऽथ संग्रामे यमरूपाशुचिस्मिता।
तथैव वारुणी शक्तिः कौबेरी च मदोत्कटा ।२४

एवं विधास्तथाकारा ययुः स्वबलैर्वृताः।
आगतास्ताः समालोक्य देवी मुदमवाप च ।२५

कालिका शूलपातैस्तान् गदाशक्तिविदिरितान्।
कुर्वती व्यचरत्तत्र भक्षयन्ती च दानवान् ।२६

कमण्डलुजलाक्षेपगतप्राणान् महाबलान्।
ब्रह्माणी चाकरोत्तत्र दानवान्समरांगणे ।२७

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलूनातिरन्हसा।
जघान दानवांसंख्ये पातयामास भूतले ।२८

वैष्णवी चक्रपातेन गदापातेन दानवान्।
गतप्राणांश्चकारामु चोत्तमाँगविवर्जितात् ॥२९

भगवान् नृसिंह के समान रूपधारिणी नारसिंही शक्ति और महिष पर सवार भय प्रदायिका याम्या शक्ति हाथ में दण्ड लिये हुए आ गई तथा वारुणी शक्ति और कुबेर की कावेरी शक्ति भी वहाँ आ गई ।२३-२४। इसी प्रकार अन्यान्य देवताओं की शक्तियाँ भी अपने-अपने यथार्थ रूप में रणक्षेत्र में आगईं। उनका आगमन जानकर देवी अत्यन्त प्रसन्न हुई ।२५। उस समय कालिका शूल, महाशक्ति से दैत्यों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारती और भक्षण करती हुई युद्ध क्षेत्र में घूमतीं थीं।२६। ब्राह्मणीभी अपने कमण्डलु से जल ले-लेकर दैत्यों पर फेंकती हुई विचरती थीं, जिससे दैत्य चेतना-हीन होते जा रहे थे ।२७। माहेश्वरी शिवा वृषभ पर आरूढ़ होकर त्रिशूल से दैत्यों को मार रहीं थीं ।२८। वैष्णवी भी चक्र और गदा-प्रहार दानवों के संहार में तत्पर थीं ।२९।

एवं मातृगणेनाजावतिवीर्यपराक्रमम् ।
मर्दितं दानवं सैन्यं पलायनपरं ह्यभूत् ।३०
बुम्बारवस्तु सुमहानभूत्तत्र बलार्णवे ।
पुष्पवृष्टिं तदा देवाश्चक्रुर्देव्या गणोपरि ।३१
गर्जमानांस्तथा देवान्वीक्ष्य दैत्यो महाबलः ।
रक्तबीजस्तु तेजस्वी रणमभ्याययौ तदा ।३२

इस प्रकार इन मातृ-शक्तियोंने महा पराक्रमी दैत्यों का संहारकर दिया तब शेष बची हुई सेना वहाँ से भाग खड़ी हुई ।३०। उस समय सेना रूपी सागर में हाहाकार मचने लगा और देवगण प्रसन्नहोकर पुष्प वृष्टि करने लगे।३१। दैत्योंमें होने वाले हाहाकार और देवताओं द्वारा होने वाले जयकार तथा दैत्यों की भगदड़ देखकर रक्तबीज कुपित हो गया । देवताओके गर्जन को न सहकर तेजस्वी और महाबली रक्तबीज उड़कर युद्धक्षेत्र में आ गया ।३२।

रक्तबीज का वध

वरदानमिदं तस्य दानवस्य शिवार्पितत्र ।
अत्यद्भुततर राजञ्छृञ्णु तत्प्रब्रवीम्यहम् ।१
तस्य देहाद्रक्तबिंदुर्यदा पपात भूतले ।
समुत्पतन्ति दैनेयास्मद्रूपास्तत्पराक्रमाः ।२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असंख्याता महावीर्या दानवा रक्तसम्भवा ।
प्रभवन्त्विति रुद्रेण दत्तोऽस्त्यद्भुतहरो वरः ।
स तेन वरदानेन दर्पितः क्रोधसंयुतः ।
अभ्यगात्तरसा संख्ये हन्तुं देवीं सकालिकाम् ।४
स दृष्ट्वा वैष्णवीं शक्तिं गरुड़ोपरि संस्थिताम् ।
शक्त्या जघान दैत्येन्द्रस्तां वै कमललोचनाम् ।५
गदया वारयामास शक्तिः सा शक्तिसंयुता ।
अताडयच्च चक्रेण रक्तबीजं महासुरम् ।६
रथांगहतदेहास्तु बहुसुखाव शोणितम् ।
वज्राहतगिरेः शृङ्गान्निर्झरा इव गैरिकाः ॥७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! उस रक्तबीज को भगवान शंकर ने एक अद्भुत वर दिया था, उसे बताता हूँ ।१। उसके देह से रक्त की जितनी बूँदें पृथिवीपर गिरेंगी उतनीही संख्यामें महाबली दैत्य उत्पन्न हो जायेंगे ।२। उन सबका आकार रक्तबीज जैसा ही होगा। यह अद्भुत वर भगवान रुद्र ने उसे दिया था ।३। उसी वरदान के अहंकार में भरा हुआ वह दैत्य क्रोध पूर्वक देवी को मारने के उद्देश्य से वेग पूर्वक रणभूमि में सामने आया ।४। वहाँ उसने गरुड़ पर प्रतिष्ठित कमल-लोचनी वैष्णवी शक्ति को देखकर उन पर शक्ति से प्रहार किया ।५। उस देवी ने उसके प्रहार को अपनी गदा से व्यर्थ करके, उस दैत्य पर अपना चक्र चलाया ।६। लगते ही उसके हृदे से पर्वत से गेरू की तरह रक्त धारा बहने लगी ।७।

यत्र यत्र यदा भूमौ पतन्ति रक्तविन्दवः ।
समुत्तस्थुस्तदाकाराः पुरुश्च सहस्रशः ।८
ऐन्द्री तमसुरं घोरं वज्रेणाभिजघान च ।
रक्तबीज क्रुधाविष्टा निःससार च शोणितम् ।९
ब्रह्माणी ब्रह्मदण्डेन कुपिता ह्यहनद्भृशम् ।
माहेश्वरी त्रिशूलेन दारयामास दानवम् ।१०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारसिंही नखाघातेस्तु विव्याध महासुरम् ।
अहनत्तुण्डघातेन क्रुद्धा तं राक्षसाधमम् ।११
तस्य देहाश्च सुस्राव रुधिर बहुधा तु यत् ।
तस्मात्तत्सदृशः शूराः प्रादुरासन्सहस्रशः ।१२
प्रहरन्तश्च तान्दृष्ट्वा बीजाननेकशः ।
भयभीता सुरास्वेसुर्विषण्णाः शोककर्षिताः ।१३
एवं देवा भयोद्विग्नाश्चितामापुर्महत्तराम् ।
यदा तदांविका प्राह कालीं कमललोचनाम् ॥१४

उस देह से टपकती हुई शोणित बूँदें जहाँ जहाँ गिरीं वहीं वैसेही आकार के सहस्रों वीर उत्पन्न हो गये ।८। इन्द्राणी ने भी वज्र का प्रहार किया, इससे भी बहुत सा रक्त निकलकर गिरा ।९। ब्रह्माणी के ब्रह्मदण्ड और शिवा के त्रिशूल से रक्तबीज का देह विदीर्णहो गया।१०। नारसिंही ने नख से और वाराही ने दाँतों से प्रहार किया ।११। इस सब से रक्तबीज के देह से जो बहुत सा रक्त निकल कर गिरा, उससे उसी के समान हजारों रक्तबीज उत्पन्न हो गये ।१२।उन असंख्य दैत्यों को प्रहार करते देखकर देवता अत्यन्त त्रस्त, भयभीत और शोकाकुल हुए ।१३। व्यासजी बोले कि देवता इस प्रकार भयभीत और उद्विग्न हो रहे थे, तभी अम्बिका ने कमललोचनी काली से कहा ।१४।

चामुण्डे कुरु विस्तीर्णं वदनं त्वरिता भृशम् ।
मच्छस्त्रपातसम्भूतं रुधिरं पिव सत्वरा ।१५
तथा कुरु विशालाक्षि पान तद्रुधिरस्य च ।
विन्दुमात्रं यथा भूम्यां न पतेदपि साम्प्रतम् ।१६
इत्युतांऽविकया देवी चामुण्डा चण्डविक्रमा ।
पपो च क्षतजं सर्वं रक्तबीज शरीरजम् ।१७
अम्बिका तु जघानाशु खड्गेन मुसलेन च ।
चखाद देहशकलाञ्चामुण्डा तान्कृशोदरी ।१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येऽन्ये रुधिरजः क्रूरा रक्तबीजा महबलाः ।
तेऽपि निष्पातिताः सर्वे भक्षिता गतशोणिताः ।१९
कृत्रिमा भक्षिताः सर्वे यस्तु स्वभाविकोऽसुरः ।
सोऽपि प्रपातितो हत्वा खड्गेनातिविखण्डितः ।२०
रक्तबीजे हते रौद्रे ये चान्ये दानवा रणे ।
पलायनं ततः कृत्वास्तु भयकम्पिताः ॥२१

हे चामुण्डे ! तुम तुरन्त ही अपने मुख को विस्तृत करो और मेरे शस्त्रों के धाघात से रक्तवीज के देह से जितना भी रुधिर निकले उस को तुरन्त ही पान करलो ।१५। जिससे रक्तवीज की एक बूँद भी पृथ्वी पर न गिर सके ।१६। तव चण्डिका रक्तवीज के शरीर से निकलते ही रक्त ले लेती ।१७। अम्बिका खड्ग और मुशल लेकर रक्तबीज को मारने लगे और अम्बिका उससे कटते हुए टुकड़ोंका भक्षण करने लगीं ।१८। उसक रक्तसे उत्पन्न हुए अन्याय रक्तवीजों का रक्त भी कालिका ने पान कर लिया । इस प्रकार से रुधिरहीन होकर निर्बल हो गए तव उन्होंने उन कृत्रिम रक्तवीजों का भक्षण कर लिया ।१९। कृत्रिम रक्तवीजों का भक्षण करने के पश्चात् यथार्थ रक्तवीज के भी अम्बिका ने टूक-टूक कर दिए ।२०। इस प्रकार उस रौद्ररूप रक्तवीज के समाप्त होने पर अन्य दानव भय के कारण काँपते हुए वहाँ से भाग गये ।२१।

हहेति ब्रिब्रुवन्तस्ते शुम्भं प्रोचुः सुविह्वलाः ।
रुधिररक्तदेहाश्च विगतास्त्रा विचेतसः ।२२
राजन्नंबिकया रक्तवीजोऽसौ विनिपातित ।
चामुण्डा तस्य देहाप्तु पपौ सर्वं च शोणितम् ।२३
ये चान्ये दानवाः शूरा वाहनेनातिरंहसा ।
सिंहेन निहताः सर्वे काल्या च भक्षिताः परे ।२४
आश्चर्यमेतदलं यन्नारी हन्ति राक्षसान् ।
रक्तबीजोऽपि निहतः पतं तस्यापि शोणितम् ।२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरं पातालगमनं तस्याः सेवाऽथवा वरा।
न तु युद्ध महाराज कार्यमम्बिकया सह ।२६
न नारी प्राकृता ह्येषा देवकार्यार्थसाधिनी।
मायेयं प्रबला देवी क्षपयन्तीयमुत्थिता ।२७
यूयं गच्छत पातालं शरणं वा भयातुराः।
हनिष्याम्यहमत्रैव तां च ताश्चे समुद्यतः ।२८
जित्वा सर्वान्सुरानाजौ कृत्वा राज्यं सुपुष्कलम्।
कथं नारीभयोद्विग्नः पातालं प्रविशाम्यहम् ॥२९

हाहाकार पुकारते हुए वे दैत्य शम्भु के पास जा पहुँचे ।२२। वहाँ उन सैनिकों ने कहा हे राजन् ! अम्बिका ने रक्तबीज का वधकर डाल और चामुण्डा ने उनका रक्तपान कर लिया ।२३। अन्य दैत्य वीरों को देवी के सिंह ने मार दिया और काली ने उनका भी भक्षण कर लिया ।२४। अहो, कैसा आश्चर्य कि अकेली स्त्री राक्षसों को मार रही है ।२५। इसके तो यही उचित हैकि हम पाताल चलें अथवा अम्बिका की अधीनता मान ले, परन्तु उसके साथ युद्ध करना उचित नहीं है ।२६। क्योंकि देवताओं का कार्य साधन करनेके निमित्त आने वाली वह नारी साधारण प्रतीत नहीं होती,ऐसा लगता हैकि वह दैत्योंका संहार करने को ही आई है ।२७। शुम्भ बोला—अरे डरपोको ! पाताल को चले जाओ या उसके अधीन हो जाओ। मैं तो अब उन सबको मारकर ही चैन लूँगा ।२८। मैं सभी देवताओं को परास्त करके अपने अपने राज्य और विस्तृत करूँगा। मैं नारी के भय से घबराकर पाताल कैसे चला जाऊँ ? ।२९।

अहमद्य हविष्यामि गत्वा दुष्टां च कालिकाम्।
आनयिष्यम्यहं शीघ्र गृहीत्या तामथांबिकाम् ।३०
नो चितां कुरु पाजेन्द्र वराकायास्तु कारणे।
क्वेषा बाला क्व मेव वीर्य विश्वशङ्करम् ।३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्यक्त्वातिविपुलां भ्रातर्भुंक्ष्व भोगाननुत्तमाम् ।
आनायष्याम्यहं काम मानिनी मानसंयुताम् ।३२
मयि तिष्ठति ते राजन्युक्तं गमनं रणे ।
गत्वाऽहमानयिष्यामि तवार्थे वै जगश्रियम् ।३३
इत्युक्त्वा भ्रातरं ज्येष्ठं कनीयान्वलगर्वितः ।
रथमास्थाय विपुलं सन्नद्धः स्ववलावृतः ।३४
जगाम तरसा तूर्णं सङ्गरे कृतमङ्गलः ।
संस्तुतो वन्दिसूतैश्च सायुधः सपरिष्करः ।३५

निशुम्भ बोला—मैं अभी जाकर उसदुष्टा कालिका को मारे देता और शीघ्र ही अम्बिका को पकड़ कर यहाँ लाता हूँ ।३०। हे राजेन्द्र ! आप उस तुच्छ बाला के विषय में किंचित् चिन्ता न करिए । कहाँ तो वह तुच्छ स्त्री और कहाँ संसार को वशमें कर लेने वाला मेरा भुजवल ।३१। आप व्याकुलता छोड़ कर श्रेष्ठ भोगों के उपभोग में लगिये । मैं उस मानिनी स्त्री को अवश्य ले आऊँगा ।३२। हे राजन् मेरे रहते हुए आप रणभूमि में न जाइये । मैं आज विजयश्री को लेकर ही यहाँ आऊँगा ।३३। अपने ज्येष्ठ भ्राता से यह कह कर वल से गर्वित हुआ निशुम्भ रथ पर सवार होकर अपनी सब प्रकार सुसज्जित सेनासे घिर कर चल दिया । उस समय वन्दीजन और सूतगण स्तुति करने लगे, मङ्गलाचार होने लगा, निशुम्भ ने प्रस्थान किया ।३४-३५।

शुम्भ निशुम्भ का वध

निशुम्भो निश्चयं कृत्वा मरणाय जयाय वा ।
सोद्यमः सवलः शूरो रणे देवीमुपाययौ ।१
निशुम्भोऽथ रणे गत्वा धनुरादय शार्ङ्गकम् ।
चकार शरवृष्टिं स भीषणञ्जगदम्बिकाम् ।२
धावमोनस्तु तरसाऽसिना सिंहं मदोत्कटम् ।
जघानातिबलान्मूर्ध्नि भ्रमयञ्जगदम्बिकाम् ।३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ततो देवी स्वगदया वंचयित्वाऽसिपातनम् ।
ताडयामास तं बाहौ मूले परशुना तदा ।४
खंगेन निहतः सोऽसि बाहुमूले महामदः ।
संस्तम्य वेदानां भूयो जघान चण्डिकां तदा ।५
सोऽपि घण्टास्वनं घोरं चकार भयदं नृणाम ।
पपौ पुनः पुनः पानं निशुम्भं हन्तुमिच्छती ।६
एवं परस्परं युद्धं बभूवातिभयप्रदम् ।
देवानां दानवानां च परस्परजयैषिणम् ॥७

व्यासजी बोले—हे राजन्! अपनी मृत्यु अथवा विजयके दृढ़ निश्चय को लेकर निशुम्भ अपनी सेना रहित वहां आया ।१। सींग के बने हुए धनुष को हाथ में लेकर जगदम्बा को भयभीत करता हुआ भीषण बाण वर्षा करने लगा ।२। समीप पहुँचकर उसने मदोत्कट सिंह पर असि से वार किया और जगदम्बा पर भी प्रहार किया ।३। तब देवी ने गदासे उसके प्रहारों को बचाते हुए फरसे के द्वारा उसके कन्धों पर आघात किया ।४। कन्धे पर लगी भीषण चोट को भी सह कर उसने चण्डिका पर प्रहार किया ।५। तब भगवती अपने भयदायक घण्टे को बजाकर निशुम्भ का वध करने के लिए रक्त पान करने लगी ।६। इस प्रकार परस्पर विजय प्राप्ति की इच्छा से देवताओं और दैत्यों के मध्य घोर संग्राम होने लगा ।७।

पतिततान्दानवान्दृष्ट्वा निशुम्भोऽतिरुषान्वितः ।
प्रययौ चण्डिकां तूर्णङ्गदामादाय दारुणाम् ।८
सिंहं जघान गदया मस्तके मदगर्वितः ।
प्रहृत्य स्मितं कृत्वा पुनर्देवीमताड़यत् ।९
सोऽपि तं कुपिताऽतीव निशुम्भ पुरतः स्थितम् ।
प्रहरन्तं समीक्ष्याऽथ देवी वचनमब्रवीत् ।१०
तिष्ठ मन्दमते तावद्यावत्खड्गमिदं तदा ।
ग्रीवाद्यां प्रेरयाम्यरस्मादृगन्ताऽसि यमसदनम् ।११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा तरसा देवी कृपाणेन समाहिता ।
चिच्छेद मस्तकं तस्य निशुम्भस्याथ चण्डिका ।१२
तस्मिन्निपतिते दैत्ये निशुम्भे भीमविक्रमे ।
हाहाकारो महानासीत्तत्सैन्ये भयकम्पिते ।१३
त्यक्त्वाऽऽयुधानि सर्वाणि सैनिकाःक्षतजाप्लुताः ।
जग्मुस्वाखं सर्वे कुर्वाणा राजमन्दिरम् ।१४
तानागतान्सुसंप्रेक्ष्य शुम्भः शत्रुनिषूदनः ।
पप्रच्छ क्व निशुम्भोऽसौ कथं भग्नाः पलायिताः ॥१५

उसने दानवों को भारी संख्या में धराशायी होते देखकर निशुम्भ अत्यन्त क्रोधपूर्वक एक भयङ्कर गदा लेकर चण्डिका की ओर दौड़ा ।८। निकट पहुँच कर उसने सिंह के मस्तक पर प्रहार किया और फिरकुछ मुस्कराकर देवी पर गदा चलाई ।९। इससे कुपित होकर देवीने अपने सामने खड़े हुए निशुम्भ को देखते हुए कहा ।१०। देवी बोली—अरे मूर्ख ! ठहर, मैं अभी अपनी तलवार से तेरी ग्रीवा काटकर यमलोक भेजे देती हूँ ।११। यह कर देवी ने कृपाण ग्रहण की और तुरन्त ही निशुम्भ का मस्तक उड़ा दिया। ।१२। इस प्रकार निशुम्भ को मरकर गिरता देखकर भयसे काँपती हुई दैत्य सेवामें हाहाकार मचगया ।१३ सब सैनिक हथियारो को छोड़कर शीघ्रतासे शुम्भ के राजभवन की ओर भाग गये ।१४। शुम्भ ने उन्हें इस प्रकार आता देखकर पूछा कि निशुम्भ कहाँ है और तुम क्यों भाग आये ।१५।

तच्छ्रुत्वा वचनं राजस्ते प्रोचुः प्रणता भृशम् ।
राजस्ते निहतो भ्राता शेते समरमूर्धनि ।१६
तया निपातिता शूरास्ते च तेऽप्यनुजानुगाः ।
वयं त्वां कथितुं सर्वं वृत्तान्तं समुपागताः ।१७
निशुम्भो निहतस्त्र तथा चण्डिकयाऽधुना ।
नहि युद्धस्य कालोऽद्य तत्र राजन् रणांगणे ॥१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवकार्यं समुद्दिश्य काऽपीयं परमांगना ।
हन्तुं दैत्यकुलं नूनं प्राप्नोति परिचिन्त्य ।१९
नानारूपधरातीव मायामूलविशारदा ।
विचित्रभूषणा देवी सर्वायुधधरा शुभा ।२०
इति तेषां वचः श्रुत्वा शुम्भो दैत्यपतिस्तथा ।
उवाच सैनिकानाशु कोपाकुललितलोचनः ।२१
जाल्माः किं ब्रूतं दुर्वाच्यं कृत्वा जीवितुमुत्सहे ।
निहत्य सचिवान्भ्रातृन्निर्लज्जो विचरामि किम् ।२२
कालः कर्ता शुभानां वाऽशुभानां बलवत्तरः ।
का चिंता मम दुर्वारे तस्मिन्नीशेऽप्यरूपके ॥२३

यह सुनकर सैनिकों ने नम्रता पूर्वक कहा—हे राजन् ! आपके भाई निशुम्भ मार डाले गये ।१६। उनके सब सहायकों का देवी ने वध कर दिया ।१७। हे महाराज ! अभी चण्डिका निशुम्भ को मार चुकीहै इसलिए हमारे विचार से तो अभी आपको युद्ध-क्षेत्र में नहीं जाना चाहिए ।१८। प्रभो ! अवश्य यह स्त्री साधारण नहीं है ।१९। यह अनेक प्रकार के रूपों को धारण करने वाली और मायातत्व के जानने वाली है। अदभुत आभूषणों को धारण करके भी आयुधों से सुसज्जित हो रही हैं ।२०। उन सैनिकों के ऐसे वचन सुनकर दैत्यपति शुम्भ ने क्रोध भरे नेत्रों से देखते हुए कहा ।२१। अरे धूर्तों ! तुम क्या कह रहे हो ? क्या मैं अपने भाई और मन्त्रियों की हत्या कराकर निर्लज्ज के समान घूमूँ ? ।२२। काल परम बलवान है, वही शुभ-अशुभ का कर्त्ता है, तब यदि वह काल ही ईश्वर है तो मेरे द्वारा चिंता करने से ही क्या होगा ! ।२३।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
अध्रुवेऽस्मिञ्छरीरे तु रक्षणीयं यशः स्थिरम् ।२४
रथो मे कल्प्यतां शीघ्रं गमिष्यामि रणाजिरे ।
जयो वा मरणं वापि भवंत्वद्यैव दैवतः ।२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा सैनिकांछुम्भो रथमास्थाय सत्वरः ।
प्रययावम्बिका यत्र संस्थिता तु हिमाचले ।२६
सैन्यं प्रचलितं तस्य सगे तंत्र चतुर्विधम् ।
हस्त्यश्वरथपादातिसंयुतं सायुधं बहु ।२७
तत्र गत्वाऽचले शुम्भः संस्थितां जगदम्बिकाम् ।
त्रैलोक्यमोहिनीं कांनामपश्यत्सिंहवाहिनीम् ।२८
सर्वाभरणभूषाढ्यां सर्वलक्षणसम्वृताम् ।
स्तूयमानां सुरैः खस्थैर्गन्धर्वयक्षकिन्नरैः ।२९
पुष्पैश्च पूज्यमानां च मन्दारपादपोद्भवैः ।
कुर्वाणां शंखनिनदं घण्टानादं मनोहरम् ॥३०

जो उत्पन्न हुआ, उसका मरण अवश्यभावी हैं। मरा है, यह भी जन्म लेगा ही। तब इस नष्ट होने वाले देह के द्वारा स्थिर यशकी रक्षा करनी चाहिए।२४। मेरा रथ सजाओ, मैं अभी रणक्षेत्रमें जा रहा हूँ। दैववश विजय मिले अथवा मृत्यु वही स्वीकार है ।२५। सैनिकोंसे ऐसा कहकर शुम्भ तुरन्त रथ पर चढ़कर हिमालय की ओर चल पड़ा जहाँ अम्बिका स्थित थीं।२६। उसके साथ विविध प्रकार के आयुधों से सुसज्जित रथ, हाथी, घोड़े तथा प्यादों युक्त चतुरंगिनी सेना ने कूच किया।२७। वहाँ पहुँच कर उसने सिंह पर सवार त्रैलोक्य-मोहिनी भगवती को देखा।२८। उन सर्व लक्षण सम्पन्ना, दिव्याभूषण-भूषिता देवी की आकाशस्थ देवता गन्धर्व यक्ष किन्नर आदि स्तुति कर रहे थे और भगवती घण्टा और शंख का नाद कर रही थीं।२९-३०।

दृष्ट्वा तां मोहमगमच्छुम्भः कामविमोहितः ।
पप्रच्छाणाह कामं मनसा समचितयत् ।३१
कामकांतासमा रूपे सर्वलक्षणलक्षिता ।
अम्बिकेयं किमेतत्तु हन्ति सर्वान्महाबलान् ।३२
उपायः कोऽत्र कर्त्तव्या येन मे वशगा भवेत् ।
न मन्त्रो वा मरालाक्षीसाधने सन्निधौ मम ।३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किं कर्तव्यं क्व गन्तव्यं विषमे समुपस्थिते ।
मरणं नोत्तमं नात्र स्वीकृतं तु यशोऽपहृत् ।३४
न दानैश्चालितुं योग्या नानाशस्त्रविभूषिता ।
भेदस्तु विकलः कामं सर्वदेववशानुगा ।३५
तस्मात्तु मरणं श्रेयो न संग्रामे पलायनम् ।
जयो व मरणं वाऽद्य भवत्वेव यथाविधि ।३६

उनका मोहोत्पादक रूप देखकर शुम्भ काम से विमोहित होकर बारम्बार विचार करने लगा ।३१। अहो, यह सुन्दरी कामदेव की पत्नी जैसी रूपवती और सर्व शुभ लक्षणों से सम्पन्न है। फिर यह हमारे वीरों को क्यों मार रही है ? ।३२। अब मैं इसे वश में करने का कौन सा उपाय करूँगा ? मुझे क्या करना चाहिए ? मैं कहाँ जाऊँ ? इसके हाथ से मरना भी ठीक न होगा, क्योंकि मेरे वैसे वीर का एक तुच्छ नारीके द्वारा मरण भी अपयश का कारण बन जायगा ।३३-३४। यह विविधायुधों से विभूषित और बलसे सम्पन्न है। सब देवता इसके बश में रहते हैं तो यह न प्रलोभन में आयेगी और न भेद नीति से ही प्रभावित होगी ।३५। इसलिए मर जाना ही श्रेयस्कर है, युद्धसे भागना तो किसी प्रकार उचित नहीं, चाहें जीत हो या मृत्यु ।३६।

इति संचित्य मनसा शुम्भः सत्वाश्रितोऽभवत् ।
युद्धाय सुस्थिरो भूत्वा तामुवाच पुरः स्थिताम् ।३७
देवि युध्यस्व कान्तेऽद्य वृथाऽयं ते परिश्रमः ।
मूर्खाऽसि किल नारीणां नायं धर्मः कदाचन ।३८
नारीणां लोचने वाणा भ्रुवावेव शरासनम् ।
हावभावास्तु शस्त्राणि पुमांल्लक्षविचक्षणः ।३९
वीणानादं परित्यज्य घण्टानादं करोषियत् ।
रूपयौवनया सर्वं विरोधि वरवर्णिनि ।४०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति ब्रुवाणं कामार्तं वीक्ष्य त जगदम्बिका ।
स्मितपूर्वमिदं वाक्यमुवाच भरतोत्तम ।४१
किं विषीदसि मन्दात्मन्कामबाणविमोहितः ।
प्रेक्षिकाऽहं स्थिता मूढ कालिकया मृधम् ।४२
चामुण्डया वा कुर्वंते तव योग्ये रणांगणे ।
इत्युक्त्वा कालिकां प्राह देवी मधुरया गिरा ।४३

व्यास जी बोले हे राजन शुम्भ ने ऐसा निश्चय करके धैर्य धारण किया और युद्ध के लिए तत्पर होता हुआ देवी के समक्ष जाकर बोला ।३७। हे देवी ! हे कान्ते ! युद्ध कीजिए, परन्तु आपका परिश्रम व्यर्थ ही होगा, क्योंकि आप मूर्ख हैं जो यह भी नहीं जानती कि युद्ध करना स्त्री का धर्म नहीं है ।३८। स्त्रियों के लोचन ही बाण हैं भौंहें धनुष है तथा हाव-भाव ही शस्त्र हैं जिनसे पुरुषों का शिकार किया जाता है ।३९। वीणानाद को छोड़कर आपके द्वारा किया जाने वाला घण्टा-नाद आपके रूप और यौवन ने सर्वथा विरोधाभास प्रकट करता है ।४०। व्यासजी बोले–हे भरतश्रेष्ठ ! उसे इस प्रकार कहता देखकर जगदम्बिका ने मुसकारते हुए कहा ।४१। देवी बोली अरे मूर्ख ! तू विषाद में क्यों पड़ता है ? मैं प्रेक्षिका होकर एक ओर खड़ी होती हूँ, तू कालिका और चामुण्डा के साथ ही युद्ध कर, ऐसा कहकर भगवती ने कालिका से कहा ।४२-४३।

जह्येनं कालिके क्रूरे कुरूप-प्रियमाहवे ।
इत्युक्त्वा कालिका कालप्रेरिता कालरूपिणी ।४४
गदां प्रगृह्य तरसा तस्थावाजौ कृतोद्यमा ।
तयोः परस्परं युद्धं बभूवातिभयानकम् ।४५
पश्यतां सर्वदेवानां च मुनीनां महामनाम् ।
गदामुद्यम्य शुम्भोऽथ जघान कालिकां रणे ।४६
कालिका दैत्यराजानं गदया न्यहनद्भृशम् ।
बंभजास्य रथं चण्डी गदया कनकोज्ज्वलम् ।४७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खरान्हत्वा जघानाशु दारुकं दारुणस्वना ।
स पदांगदां गुर्वीं समादाय क्रुधान्वितः ।४८
कालिकां भुजयोर्मध्ये प्रहसन्नहनत्तदा ।
वञ्चयित्वा गदाघातं खड्गमादाय सत्वरा ॥४९

हे कालिके ! हे क्रूरे ! इस कुरूप से प्रेम करने वाले दैत्य का वध करो और तब शुम्भ और कालिका के मध्य संग्राम छिड़ गया ।४४-४५ उस युद्ध को सब देवता, मुनिगण और महात्मा खड़े हुए देख रहे थे, तभी कुम्भ ने कालिका पर गदा प्रहार किया ।४६। उसके प्रहार को बचाकर कालिका ने अपने गदाघात द्वारा उसका स्वर्णिम रथ तोड़ डाला ।४७। उस रथके खच्चर और सारथी का भी वध कर डाला,तब वह पैदल ही गदा लेकर क्रोधपूर्वक दौड़ा ।४८। उसने तुरन्त ही कालिका की भुजा पर गदा प्रहार किया, जिसे व्यर्थ करके कालिका ने खड्ग ग्रहण किया ।४९।

चिच्छेदास्य भुजं सव्यं सायुध चन्दनार्चितम् ।
स छिन्नबाहुर्विरथो गदापणिः परिप्लुतः ।५०
अचिरेण समागम्य कालिकामहनत्तदा ।
काली च करवालेन भुजं तस्यापि दक्षिणम् ।५१
चिच्छेद प्रहसंती सा स गदं किल सांगदम् ।
कर्तुं प्रादप्रहारं स कुपितः प्रययौ जवात् ॥५२
काली चिच्छेद चरणौ ख नास्य त्वरान्विता ।
स च्छिन्नकरपादोऽपि तिष्ठ तिष्ठे ति च ब्रुवन् ।५३
धावमानो ययावाशु कालिकां भीषयन्निव ।
तमागच्छन्तमालोक्य कालिका कमलोपमम् ।५४
चकर्त मस्तकं कण्टाद्रुधिरौघवहं भृशम् ।
छिन्नेऽसौ मस्तके भूमौ पात गिरिसन्निभः ॥५५

खड्ग द्वारा कालिका ने शुम्भ की बाँई भुजा काट दी, तब उसने अपनी दक्षिण भुजा में गदा लिए हुए कालिका पर आघात किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब कालिका ने भी उस वार को बचाकर करवाल से उसकी दक्षिण भुजा काट डाली ।५०-५१। गेदा युक्त भुजा के कट जाने पर वह कुपित होकर कालिका पर पद-प्रहार करने लगा ।५२। तब कालिका ने अपने खड्ग से उसके पाँव काट डाले, तब भी वह ठहर-ठहर कहता हुआ कालिका पर बड़े वेग से झपटा । कालिका ने उसका मस्तक काट दिया और वह धराशायी हो गया ।५३-५५।

प्राणा विनिर्ययुस्तस्य देहादुत्क्रम्य सत्वरम् ।
गतासुं पतितं दैत्यं दृष्ट्वा देवाः सवासवाः ।५६
तुष्टुवस्तां तदां देवीं चामुण्डां कालिकां तथा ।
ववुर्वाताः शिवास्तत्र दिशश्च विमला भृशम् ।५७
बभूबुश्चाग्नयो होमप्रदक्षिणाशिखा शुभाः ।
हतशेषाश्च ये दैत्याः प्रणम्य जगदम्बिकाम् ।५८
त्यक्त्वाऽऽयुधानि ते सर्वे पातालं प्रययुर्नृप ।
एतत्ते सर्वमाख्यातं देव्याश्चरितमुत्तमम् ।५९
शुम्भादीनां वधं चैव सुराणां रक्षणं तथा ।
एतदाख्यानकं सर्वं पठन्ति भुवि मानवाः ।६०
शृण्वति च सदा भक्त्या ते कृतार्थाभवन्ति हि ।
अपुत्रो लभते पुत्रान्निर्धनश्च धनं बहु ।६१
रोगी च मुच्यते रोगात्सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
शत्रुतो न भयं तस्य य इदं चरितं शुभम् ।
शृणोति पठते नित्यं मुक्तिमांजायते नरः ।।६२

उसके प्राण निकलने पर सभी देवता अम्बिका, कालिका और चामुण्डा की स्तुति करने लगे । उस समय सुख देने वाली समीर प्रवाहिम होने लगी और दिशायें स्वच्छ हो गयी ।५६-५७। हवन कुण्ड में प्रज्वलित हुए अग्निदेव शुभ हो गये, उनकी शिखा दक्षिण ओरमें उठने लगी । मरने से शेष रहे दैत्यों ने जगदम्बा को प्रणाम किया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने आयुधों को त्याग कर पाताल का मार्ग किया। व्यासजी बोले- हे राजन्! इस प्रकार भसवती का श्रेष्ठ चरित्र मैंने तुम्हारे प्रति कहा है।५८-५९। इसमें शुम्भादि दैत्यों का देवी द्वारा वध और देवताओं की रक्षा का वर्णन किया गया है। पृथिवी पर जो मनुष्य इस आख्यान को भक्ति भाव पूर्वक पढ़ते या सुनते हैं, वे कृतार्थ हो जातेहैं। पुत्रहीन को पुत्र और धनहीन को विपुल धनकी प्राप्ति होती है।६०-६१। रोगी रोग मुक्त होता है इस प्रकार इससे सभी अभिलाषायें पुर्ण हो जातीहैं। इसके पढ़ने-सुनने से शत्रु-भय नष्ट होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है।६२।

राजा सुरथ की पराजय

महिमा वर्णितः सम्यक्चण्डिकायास्त्वया मुने।
केन चाराधिता पूर्वं चरित्रत्रययोगतः।१
स्वारोचियेऽन्तरे पूर्वं सुरथो नाम पार्थिवः।
बभूव परमोदारः प्रजापालनतत्परः।२
दानशीलोऽविरोधी च धनुर्वेदैकपारगः।
एवं पालयतो राज्यं म्लेच्छाः पर्वतवासिनः।३
बलाच्छत्रुत्वमापन्नाः सैन्यं कृत्वा चतुर्विधम्।
हन्त्यश्वरथपादातिसहितास्ते मदोत्कटाः।४
कोलाविध्वसिनः प्राप्ताः पृथ्वीग्रहणतत्पराः।
सुरथः सैन्यतादाय सम्मुखः समपद्यत।५
युद्धं समभवद्घोरं तस्य तैरतिदारुणैः।
म्लेच्छानां बलं स्वल्पं राज्ञस्तद्बलमद्भुतम्।६
तथापि तैर्जितो बुद्धे दैवाद्राजा पराजितः।
भग्नश्च स्वपुरं प्राप्तः सुरक्षं दुर्गमंडितम्॥७

जनमेजय ने कहा— आपने चण्डिका के चरित्र का शुभ वर्णन किया है। अब कृपया यह बताइये कि पूर्व वर्णित तीनों चरित्रों का मनन करके उनकी आराधना किसने की।१। व्यासजी बोले—हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन स्वारोचिष मन्वन्तर में सुरथ नाम के एक राजा हुएथे। वे प्रजा पालन में सदैव तत्पर तथा उदार थे।२। वे दानशील, किसी से भी विरोध न रखने वाले एवं धनुर्वेद के ज्ञाता थे। बड़ें स्नेह से प्रजा का पालन करते थे। परन्तु पर्वत पर रहने वाले म्लेच्छोंने उनसे शत्रु-भाव किया और चतुरंगिणी सेना लेकर उन पर आक्रमण बोलदिया। वे ही कोला राज्य को विध्वंस करके सम्पूर्ण पृथिवी पर अपना एकछत्र राज्य स्थापित करने की अभिलाषा से सुरथ के राज्य में आये तो सुरथ भी सेना सहित युद्ध में तत्पर हुए।३-५। यद्यपि राजा के पास विशाल सेना थी और शत्रु म्लेच्छ अल्प संख्या में तो भी सुरथ की पराजय हुई। ।६-७।

योजनत्रयमात्रं तु मुनेराश्रममुत्तम् ।
ज्ञात्वा जगाम भूपालस्तापसस्य सुमेधसः ।८
शिष्याध्ययनशब्दाढ्यं मृगयूथशतावृतम् ।
नीवारान्नसुपक्वाढ्यं सुपुष्पफलपादपम् ।९
होमधूमसुगन्धेन प्रीतिदं प्राणिनां सदा ।
वेदध्वनिसमाक्रान्तं स्वर्गादपि मनोहरम् ।१०
आसज्य पादपेऽश्वं तु जगाम विनयान्वितः ।
दृष्ट्वा तं मुनिमासीनं सालच्छायासु संश्रितम् ।११
तं वीक्ष्य भूपतिर्भूमौ पपात दण्डवत्तदा ।
तदग्रेऽश्रुजलापूर्णनयनः प्रेमसंयुतः ।१२
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भद्रं ते तमुवाच तदा मुनिः ।
शिष्यो ददौ वृसीं तस्मै गुरुणा नोदितस्तथा ।१३
उत्थाय नृपतिस्तस्यां समासीनस्तदाज्ञया ।
पप्रच्छात्र कुतः प्राप्तः कस्त्वं चिंतापरः कथम् ॥१४

फिर उन्हें ज्ञात हुआ कि यहाँ से तीन योजन दूर महर्षि सुमेधा का आश्रम हैं। वे वहाँ गये।८। जाकर उन्होंने शिष्यों के अध्ययन का शब्द सुना, मृगों के समूह को विचरते हुए तथा नीहार को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लहलहाते और अन्याय वृक्षों को फलते-फूलते देखा ।९। होम के धुँए से सुगन्ध उठ रही है, स्वर्ग से भी श्रेष्ठ आश्रम में वेदध्वनि गूँज रही है तथा सभी जीव आनन्दित हो रहे हैं ।१०। तब उन्होंने अपने अश्व को वृक्ष से बाँधा और आश्रम के भीतर गये । वहाँ उन्होंने सालवृक्षकी छाया मुनि को बैठे हुए देखा ।११। उन्हें देखते ही राजा मुनिको दण्ड-वत करते हुए उनके चरणों में गिर गए । उनके नेत्रों से अश्रु उमड़ पड़ें ।१२। यह देखकर मुनि ने कहा—उठिए, उठिए आपका कल्याण हो ।१३। मुनि की आज्ञा से राजा उठकर आसन पर बैठगये तब मुनि ने पूछा—आप कहाँ से आये है ? कौन हैं ? आपको क्या चिन्ता है ? यह बताइये ।१४।

सुरथो नाम राजऽहं शत्रुभिश्च पराजितः ।
त्यक्त्वा राज्यं गृहं भार्यामहं ते शरणं गतः ।१५
शत्रुभ्यो मे भयं घोरं प्राप्तोऽस्म्यद्य तवांतिकम् ।
त्रायस्व मुनिशार्दूल शरणागतवत्सल ।१६
निर्भयं रस राजेन्द्र नात्र ते शत्रवः किल ।
आगमिष्यन्ति बलिनो निश्चयं तपसो बलात् ।१७
इति तस्य वचः श्रुत्वा निर्भतः स नृपस्तदा ।
सवासाश्रम एवासौ फलमूलाशनः शुचिः ।१८
कदाचित्स नृपस्तत्र वृक्षच्छायां समाश्रितः ।
चिंतयामास चिन्तार्तो गृह एव गताशयः ।१९
तदाऽऽजगाम वैश्यस्तु कश्चिदातिपरस्तथा ।
नृपेण पुरतो दृष्टः पार्श्वे तत्रोपवेशितः ।२०
पप्रच्छ तं नृपः कोऽसि कुत एवागतो वनम् ।
कोऽसि कस्माच्च दीनोऽसि सरिणः शोकपीडितः ॥२१

राजा ने कहा—मैं सुरथ नाम का राजाहूँ, शत्रुओं ने मुझे परास्त कर दिया । मैं अपने राज्य, घर, पत्नी को त्यागकर आपकी शरण में उपस्थित हूँ।१५। हे मुनिशार्दूल ! हे शरणागत वत्सल ! मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शत्रुओं से घोरभय प्राप्त हुआहै, इसलिए आपकी सेवा में आया हूँ,मेरी रक्षा करिए ।१६। ऋषि बोले–हे राजेन्द्र ! आप भय छोड़कर निवास करे, मेरे तपोवल के कारण आपके वलवान शत्रु यहाँ नहीं आ सकते ।१७। मुनिके वचन सुनकर राजाने भयछोड़ दिया और फलमूल भक्षण करते हुए वे उसी आश्रममें निवास करने लगे ।१८। एकदिन राजा सुरथ एक वृक्ष की छाया में बैठकर अत्यन्त खेद पूर्वक अपने घर और राज्यादि के विषय में चिन्ता कर रहे थे ।१९। तभी वहाँ एक दुःखित वैश्य आ पहुँचा और राजा नें उसे देखा तो अपने पार्श्व में बैठा लिया ।२०। फिर उससे पूछा कि तुम कौन हो ? इस दीन दशा को कैसे प्राप्त हुए और शोक से पीले क्यों पड़े हौ ? ।२१।

मित्राहंवैश्यजातीयः समाधिर्नाम विश्रुतः ।
धनवान्धर्मनिपुणः सत्यवागनसूयकः ।२२
पुत्रदारैर्निरस्तोऽहं धनुलुब्धैरसाधुभिः ।
स्वजनेन च संत्यक्तः प्राप्तोऽस्मि वनमाशु वै ।२३
कुटुम्बं मे मिरालम्ब मया हीनं सुदुःखितम् ।
भविष्यति च चिन्तार्तं व्याधिशोकोपतापितम् ।२४
ममापिराज्यजं दुःखं दुनोति किल मानसम् ।
पृच्छावोऽद्य मुनिं शांतं शोकनाशनमौषधम् ।२५
इति कृत्वा मतिं तौ तु राजा वैश्यश्च जग्मतुः ।
मुनिं तौ विनयोपेतौ प्रष्टुं शोकस्य कारणम् ।२६
गत्वा तं प्राणिपत्याह राजा ऋषिमनुत्तमम् ।
आसीन सम्यगासीनः शांतं शांतिमुपागतः ॥२७

वैश्य बोला—हे मित्र ! मैं वैश्य जाति में उत्पन्न समाधि नामक एक धनाढ्य, धर्म, निपुण और सत्य बोलने वाला हूँ, मैं किसी के दोषों को नहीं देखता ।२२। धन के लोभी और क्रूर स्वभाव वाले पत्नी पुत्रादि ने मुझें घर से निकाल दिया है, इसलिए उनके द्वारा परित्यक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर ही वन में आया हूँ ।२३। मेरा कुटुम्ब अभी निराश्रय है, वे मेरे विषय में चिन्ता करते-करते रोग और शोक में पड़ जायेंगे ।२४। इस पर राजा बोले मुझे भी राज्यविषयक चिन्तायें व्याकुल किये रहती हैं इसलिए चलो हम उन महर्षि से शोक नष्ट होने का कोई उपाय पूछें ।२५। इस प्रकार निश्चय करके राजा और वैश्य दोनों ही अपने शोक कारण पूछने के उद्देश्य से महर्षि के समीप विनीत भाव से पहुँचे ।२६ वहाँ जाकर उन्होंने महर्षि को प्रणाम किया और उचित आसन पर बैठकर शान्ति का अनुभव करते हुए मुनि से बोले ।२७।

देवी माहात्म्य

मुनेवैंश्योऽयमधुनावैवने मे मित्रतां गतः ।
पुत्रदारैर्निरस्तोऽयं प्राप्तोऽत्र मम सङ्गमम् ।१
कुटुम्बविरहेण सौ दुःखिताऽतीव दुर्मनाः ।
न शांतिमुपयात्येष तथैव मम सांप्रतम् ।२
गतराज्यस्य दुःखेन शोकार्तोऽस्मि महामते ।
निष्कारणं च मे चिंता हृदयान्न निवर्तते ।
हया मे दुर्बला स्युःकिं गजाः शत्रु वशं गताः ।३
भृत्यवर्गस्तथा दुःखी जातः स्यात्तु मया विना ।
कोशक्षयं करिष्यन्ति रिपवोऽतिवलात्क्षणात् ।४
न पुत्रा न च मित्राणि येषां दुःखं दुनोति माम् ।
भ्रमोऽयमिति जानमि तथापि मम मानसः ।५
मोहो नैवापसरति किं तत्कारणमद्भुतम् ।
स्वामिस्त्वमसि सर्वज्ञः सर्वसंशयनाशकृत ।६
शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कारणं बन्धमोक्षयोः ।
महामायेति विख्याता सर्वेषां प्राणिनामिह ।।७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा सुरथ बोले—हे मुने ! यह एक वैश्य हैं, इनसे इजी वन में मेरी मित्रता हुई। इनके पत्नी-पुत्रादि ने इन्हें घर से निकाल दिया है ।१। यह अपने कुटुम्बियों के विरह में अत्यन्त दुःखी है, इनके मन को किसी प्रकार शान्ति नहीं मिल रही है उसी प्रकार मेरी भी दशा है ।२ राज्य चला गया, इससे मैं भी शोकार्त्त हूँ, व्यर्थ की चिन्तायें हृदय से नही हटती कभी सोचता हूँ कि शत्रु के वश में पड़े मेरे हाथी घोड़े बलहीन हो गये होंगे ।३। मेरे बिना भृत्य-वर्ग भी दुःखी होगा और शत्रु मेरे कोष को बुरी तरह नष्ट कर रहे होंगे ।४। यद्यपि मैं जानता हूँ कि जिनके कारण मैं दुःखी हो रहा हूँ, वे पुत्र मित्र आदि मेरे नहीं हैं। फिर भी मोह नहीं मिटता। आप सर्वज्ञ है और संशय दूर करने में समर्थ हैं ।५-६। ऋषि बोले—हे राजन ! मैं बन्धन और मोक्ष का कारण कहता हूँ, उसे सुनो ।७।

सर्वे देवा मनुष्यश्च गन्धर्वोरगरराक्षसाः ।
वृक्षाश्च विविधा वल्यः पशवो मृगपक्षिणः ।८
मायाधीनाश्च ते सर्वे भाजनं वैधमोक्षयोः ।
तया सृष्टामिद सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।९
ब्रह्मे शवासुदेवाद्या ज्ञाने सत्यपि शेषतः ।
तेऽपि रागवशाल्लोके भ्रमन्ति परिमोहिताः ।१०
मोहदा ज्ञानदा देव वन्धमोक्षप्रदा सदा ।
भगवन्ब्रूहि मे तस्या स्वरूप बलमुत्तम ।११
उत्पत्तिकारणं वापि स्थानं परमं च यत् ।
न चोत्पत्तिरनादित्वान्नृप तस्याः कदाचन ।१२
नित्यैव सा परा देव कारणानां च कारणम् ।
वर्तते सर्वभूतेषु शक्तिः सर्वात्मना नृप ।१३
शववच्छक्तिहीनस्तु प्राणी भवति सर्वथा ।
चिच्छक्तिः सर्वभूतेषु रूपं तस्यास्तदेव हि ।१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब देवता, मनुष्य गन्धर्व, उरग, राक्षस, वृक्ष, लता, पशु, मृग पक्षी आदि माया के वश में रहकर बन्धन और मोक्ष को प्राप्त होतेहैं ।८-९। ब्रह्मा विष्णु महेश परम ज्ञानी होकर भी रागके वश में पड़कर विमोहित हुए विश्व में भ्रमते हैं ।१०। वे महामाया मोह अथवा ज्ञान दोनों के ही उत्पन्न करने में समर्थ हैं । राजा बोले भगवान् ! आप उनके स्वरूप और श्रेष्ठ बल के विषय में उपदेश कीजिए ।११। उनकी उत्पत्ति किस प्रकार हुई ? उनका परम स्थान कहाँ है ? यह सुनकर ऋषि बोले हे राजन् ! वे तो अन्नादि हैं, इसलिए कभीभी उत्पन्न नहीं होती ।१२। वे पराशक्ति नित्य कारणों की भी कारण हैं ।१३। उनकी शक्ति से हीन होने पर प्राणी निर्जीव हो जाताहै । वे ब्रह्म-रूपिणी सभी प्राणियों में चित्शक्ति रूप से विद्यमान रहती है ।१४।

आविर्भावतिरोभावौ देवानां कार्यसिद्धये ।
यदा स्तुवन्ति तां देवा मनुजाश्च विशांपते ।१५
प्रादुर्भवति भूतानां दुःखनाशाय चांबिका ।
नानारूपधरा देवी नानाशक्तिसमन्विता ।१६
आविर्भवति कार्यार्थं स्वेच्छया परमेश्वरी ।
देवाधीना न सा देवी यथा सर्वे सुरा नृप ।१७
न कालवशगा नित्यं पुरुषार्थप्रवर्तिनी ।
अकर्ता पुरुषो द्रष्टा दृश्यं सर्वमिदं जगत् ।१८
दृश्यस्य जननी सैव देवी सदसदात्मिका ।
पुरुष रंजयत्वेका कृत्व ब्रह्माण्डनाटकम् ।१९
रंजिते पुरुषे सर्वे संहरत्यतिरंहसा ।
तयाहिमितभूतास्ते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।२०
कल्पिताः स्वस्वकार्येषु प्रेरिता लीलया त्वमी ।
स्वांशं तेषु समारोप्य कृतास्ते बलवत्तराः ।२१
दत्ताश्च शक्तयस्तेभ्यो गोलक्ष्मीर्गिरिजा तथा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते तां ध्यायन्ति दुर्वेशाः पूजयन्ति परां मुदा ।२२
ज्ञात्वा सर्वेश्वरीं शक्तिं सृष्टिस्थितिविनाशिनीम् ।
एतत्ते सर्वमाख्यातं देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥२३

हे राजन् ! उनका आविर्भाव अथवा तिरोभाव देवताओं का कार्य सिद्ध करने से सम्बन्धित है। जब देवता या मनुष्य उनकी स्तुति करते हैं, तभी वे संकट दूर करने के लिए विविध रूप धारण करके अपनी शक्तियों के सहित प्रकट हो जाती हैं। वे देवी कभी देव के अधीन नहीं रहती, जिस प्रकार कि सब देवता और दैत्य रहतेहैं ।१५-१७। वे अपने पुरुषों से सब कार्य करती हैं तथा कभी कामके अधीन भी नहीं रहतीं। पुरुष इस सम्पूर्ण संसार का द्रष्टा है, परन्तु स्रष्टा नहीं हो सकता ।१८। वे सत् असत् स्वरूपा भगवती ही इस दिखाई देने वाले विश्व की जननी हैं, वे ही इस ब्रह्माण्ड नाटक को रचकर परम पुरुष को प्रसन्न करतीहैं ।१९। उनके कार्य को देखकर जब परम पुरुष प्रसन्न हो जाता है तब वे विश्व का अन्त कर देती हैं। ब्रह्मा, विष्णु और सहेश्वर तीनों क्रमशः स्रष्टा, पालक और संहारक कहलाकर भी उन कार्यों में निमत्त मात्र ही हैं ।२०। क्योंकि वे भगवती ही उन त्रिदेवों को लीला के लिए उत्पत्ति करके उन्हें कार्य सौंपकर अपने अंश बल से सम्पन्न करती हैं ।२१। उन्हीं ने सरस्वती, लक्ष्मी और गिरिजा रूपिणी अपनी शक्तियों से त्रिदेवोंको सम्पन्न किया। इसलिए वे देवता उन भगवती को प्रसन्न होकर पूजन करते है ।२२। क्योंकि वे जानते हैं कि सृष्टि, स्थित और विनाश की सामर्थ्य उन्हीं देवी में है ।२३।

देवी की आराधना विधि

भगवन्ब्रूहि मे सम्यक्तस्या आराधने विधिम् ।
पूजाविधिं च मन्त्राश्च तथा होमविधिं वद ।१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि: तस्या: पूजाविधिं शुभम् ।
कामदं मोक्षदं नृणां ज्ञानदं दु:खनाशनम् ।२
आदौ स्नानविधिं कृत्वा शुचि: शुक्लांवरो नर: ।
आचम्य प्रयत: कृत्वा शुभमायतनं निजम् ।३
ततोऽवलिप्तभूम्यां तु संस्थाप्यासनमुत्तमम् ।
तत्रोपविश्य विधिवत्त्रिराचम्य मुदान्वित: ।४
पूजाद्रव्यं सुसंस्थाप्य यथा शक्त्यनुसारत: ।
प्राणायामं तत: कृत्वा भुतशुद्धिं विधाय च ।५
कुर्यात्प्राणप्रतिष्ठां सम्भारं प्रोक्ष्य मन्त्रमा: ।
कार्यज्ञानं तत: कृत्वा न्यासं कुर्याद्यथाविधि ।६
शुभे ताम्रमये पात्रे चन्दनेन सितेन च ।
षट्कोण विलिखेद्यंत्रं चाष्टकोणं ततो बहि: ॥७

राजा सुरथ ने कहा—हे भगवान् ! उन देवी आराधना पूजा, मन्त्र एवं हवन-विधि बताने की कृपा करिये ।१। ऋषि बोले हे राजन् सुनो मैं उनकी पूजा-विधि कहता हूँ ।२। प्रारम्भ से विधिवत् स्नानकरके शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे और आचमन करके अपने घर को शुद्धकरे ।३। फिर लिपी हुई भूमि पर श्रेष्ठ आसन रखकर बैठे और तीन बार हर्ष पूर्वक आचमन करे ।४। अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूजन द्रव्य एकत्रित करके यथास्थान रखे और प्राणायाम करने के उपरान्त भूत शुद्धि ।५। फिर उस एकत्रित हुई सामग्री पर मन्त्रोच्चारण पूर्वक जलके छींटे दे तथा मास-तिथि आदि को कहता हुआ संकल्प और न्यास आदि विधि-पूर्वक करे । फिर ताँबे का पात्र लेकर उस पर श्वेत या लाल चन्दन से षट्कोण अथवा अष्टकोण यन्त्र बनावे ।६-७।

नवाक्षरस्य मन्त्रस्य बीजानि विलिखेत्तत: ।
कृत्वा यन्त्रप्रतिष्ठां च वेदोक्तां संविधाय च ।८
अर्चां वा धातवीं कुर्यात्पूजामन्त्रै: शिवोदितै: ।
पजंनं पृथिवीपाल भगवत्या: प्रयत्नत: ।९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृत्वा वो विधिवत्पूजामायमोक्तां समाहितः ।
जपेन्नावाक्षरं मन्त्रं सततं ध्यानपूर्वकम् ।१०
होमं दशांशतः कुर्याद्दशांशेन च तर्पणम् ।
भोजनं ब्राह्मणानां च तद्दशांशेन कारयेत् ।११
चरित्रत्रयपाठं च नित्यं कुर्याद्विसर्जयेत् ।
नवरात्रव्रतं चैव विधेयं विधिपूर्वकम् ।१२
आश्विने च तथा चैत्रे शुक्लपक्षे नराधिप ।
नवरात्रोपवासो वै कर्त्तव्यः शुभमिच्छता ।१३
होमः सुविपुलः कार्यो जप्यमन्त्रैः सुपायसैः ।
शर्कराघृतमिश्रैश्च मधुयुक्तैः सुसंस्कृतैः ॥१४

उस यन्त्र के एक-एक दलमें नवाक्षर मन्त्रका एक-एक अक्षर लिखे और यन्त्र के मध्य में नवमाक्षर लिखकर वेदोक्त विधान से यन्त्र की प्रतिष्ठा करे ।८। यदि यन्त्र न बन सके तो सोने आदि किसी धातु की प्रतिमा की शिवोक्त मन्त्र-विहित विधि से पूजा करे ।९। एकाग्र मन से शिवोक्त विधि द्वारा देवी पूजन करे तथा ध्यान पूर्वक नवाक्षर मन्त्र को निरन्तर जपे ।१०। किए हुए जपकी दशांश आहुति देकर होमकरे तथा होम का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश ब्राह्मणों को भोजन करावे ।११। चरित्र-त्रय का नित्य पाठ करने के पश्चात विसर्जन करे । इसी प्रकार नवरात्र व्रत भी विधिपूर्वक करना चाहिए ।१२। हे नराधिप ! अश्विन और चैत्र के शुक्ल पक्ष में नवरात्र आते हैं, जो लोग शुभ चाहते है उन्हें नवरात्र में उपवास पूर्वक व्रत करना उचित है ।१३। जिस मन्त्र से जप किया हो, उसी के द्वारा खीर में शर्करा घृत और मधु मिलाकर होम करे ।१४।

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां च विशेषतः ।
कर्तव्यं पूजनं देव्या ब्राह्मणानां च भोजनम् ।१५
निर्धनो धनमाप्नोति रोगीरोगात्प्रमुच्यते ।
अपुत्रो लभते पुत्राञ्छुभांश्च वशवर्तिनः ॥१६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राज्यभ्रष्टो नृपो राज्यं प्राप्नोति सार्वभौमिकम् ।
शत्रुभिः पीडितो हंति रिपुं मायाप्रसादतः ॥१७
विद्यार्थी पूजनं यस्तु करोति नियतेन्द्रियः ।
अनवद्यां शुभां विद्यां विंदते नात्र संशयः ।१८
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा भक्तिसंयुतः ।
पूजयेज्जगतां धात्रीं स सर्वसुखवाग्भवेत् ।१९
नवरात्रव्रतं कुर्यान्नरनारीगणश्च यः ।
वांछितं फलमाप्नोति सर्वदा भक्तितत्परः ।२०
आश्विने शुक्लपक्षे तु नवरात्रव्रत शुभम् ।
करोति भावसंयुक्तः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥२१

अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी के दिन विशेष रूप से देवी का पूजन करना और ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए ।१५।इससे निर्धन को धन प्राप्त होता है रोगी रोग से छूट जाता है, पुत्रहीन सुन्दर और सदा वश में रहने वाला पुत्र—लाभ करता है ।१६। राज्य से भ्रष्ट हुआ इस व्रत के द्वारा सार्वभौमिक सत्ता प्राप्त करता है और शत्रु द्वारा पीड़ित हुआ मनुष्य महामाया के प्रसाद से शत्रुओं कों नष्ट कर डालता है ।१७। भगवती का संयम-पूर्वक पूजन करने वाला विद्यार्थी शुभ एवं सराहनीय विद्या का लाभ करता है ।१८। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र कोई भी हो भक्ति-पूर्वक उन जगद्धात्री का पूजन, करके सब प्रकार के सुखों को प्राप्त होता हैं ।१९। स्त्री हो या पुरुष, व्रत करने पर उसे अवश्य ही वांछित फल की प्राप्ति होतीहै ।२०। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में जो इस नवरात्र व्रत की भावना करता हैं,उसके सभी कार्य सिद्ध होते हैं ।२१।

विधिवन्मडलं कृत्वा पूजास्थान प्रकल्पयेत् ।
कलशं स्थापयेत्तत्र वेदमंत्रविधानतः ।२२
यंत्रं सुरुचिरं कृत्वा स्थापयेत्कलशोपरि ।
वापयित्वा यवांश्चारूम्पार्श्वतः परिवर्तितः ।२३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृत्वोपरि वितानं च पुष्पमालासमावृतम् ।
धूपदीपसुसंयुक्तं कर्तव्यं चण्डिकागृहम् ।२४
त्रिकालं तत्र कर्तव्या पूजा शक्त्यनुसारतः ।
वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं चण्डिकायाश्च पूजने ।२५
धूपैर्दीपैः सुनैवेद्यैः फलपुष्पैरनेकशः ।
गीतवाद्यैः स्तोत्रपाठैर्वेदपारायणैस्तथा ।२६
उत्सवस्तत्र कर्तव्यो नानावादित्रसंयुतैः ।
कन्यकानां पूजनं च विधेयं विधिपूर्वकम् ।२७
चन्दनैर्भूषणैर्वस्त्रैर्भक्ष्यैश्च विविधैस्तथा ।
सुगन्धतैलमाल्यैश्च मनसा रुचिकारकैः ।२८
एवं संपूजनं कृत्वा होमं मन्त्रं विधानतः ।
अष्टम्यां वा नवम्यां च कारयेद्विधिपूर्वकम् ।२९

विधिपूर्वक मण्डल बनाकर पूजा-स्थान निश्चित करे और उस पर वेद-मन्त्रों से कलश का स्थापन करे ।२२। उपरोक्त विधि से सुन्दर यंत्र बनाकर उसे कलश के निकट स्थापित करे और फिर कलश के चारों के ओर जौ बो दें ।२३। उपर वितान टाँगकर उसे पुष्पों-मालाओं से सजावे, इस प्रकार चण्डिका देवी का गृह-निर्माण करके धूप-दीपादि से युक्त करे ।२४। अपनी शक्ति के अनुसार तीनों कालों में देंवीं का पूजन करे। चण्डिका-पूजन में सामर्थ्य हो तो धन के व्यय में कृपणता न करे ।२५। धूप, दीप, नैवेद्य और अनेक भाँति के फल-पुष्पादि एकत्रित करके, गीत, वाद्य स्तोत्र पाठ, वेद-घोष आदि के सहित उत्सवका आयोजन करके विधि-पूर्वक कन्याओं का पूजन करे ।२६-२७। कन्या पूअन में चन्दन, आभूषण, वस्त्र, भोजन,सुगन्धित तेल एवं माला आदि का यथाशक्ति प्रयोग करना चाहिए,अष्टमी-नवमीको होमकरे।२८-२९।

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्पारिणं दशमीदिने ।
कर्तव्यं शक्तितो दानं देयं भक्तिसमन्वितैः ।३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं या कुरुते भक्तया नवरात्रव्रतं नरः ।
नारी वा सधवा भक्तया विधवा वा पतिव्रता ।३१
इह लोके सुख भोगान्प्राप्नोति मनसेप्सितान् ।
देहांते परमं स्थानं प्राप्नोति व्रततत्परः ।३२
जन्मांतरेऽम्बिकाभक्तिर्भवत्यव्यभिचारिणी ।
जन्मोत्तमकुले प्राप्य सदाचारो भवेद्धिः सः ।३३
नवरात्रव्रतं प्रोक्तं व्रतानामुत्तमं व्रतम् ।
आराधनं शिवायास्तु सर्वसौख्यकरं परम् ।३४
अनेन विधिना राजन्समाराधय चंडिकाम् ।
जित्वा रिपूनस्खलित राज्यं प्राप्स्यस्यनुत्तमम् ।३५
सुखं च परमं भूप देहेऽस्मिन्स्वगृहे पुनः ।
पुत्रदारान्समासाद्य लप्स्यसे नात्र संशयः ।३६

फिर ब्राह्मणों को भोजन करावे और दशमी को स्वयं धारण करे तथा भक्ति पूर्वक यथाशक्ति ब्राह्मणों को दान दक्षिणा दे ।३०। इस प्रकार भक्ति-भाव-पूर्वक, पुरुष, नारीं, सधवा विधवा, पतिव्रता जो भी हो, नवरात्र व्रत करके इहलोक में इच्छित सुखों को प्राप्त करते हुए अन्त में परम स्थान को प्राप्त होते हैं ।३१-३२। जन्मान्तर में भी देवी का आराधक उनकी अव्यभिचारिणी भक्ति को प्राप्त करता है । श्रेष्ठ कुल में जन्म लेकर वह स्वभाव से ही सदाचारी होता है ।३३। हे राजन् ! यह नवरात्र व्रत सभी व्रतों में श्रेष्ठ है । भगवती शिवा का आराधन सभी सुखों का देने वाला है ।३४। इसी विधि से हे राजन् ! आप भी भगवती चण्डिका की आराधना करो तो आप अपने सब शत्रुओं पर विजय और निष्कंटक राज्य प्राप्त कर लेंगे ।३५। आप स्त्री-पुत्रादि से युक्त अपने गृह को प्राप्त होकर इसी देह से परम सुख का उपभोग करेंगे ।३६।

वैश्योत्तम त्वमेवाद्य समाराधय कामदाम् ।
देवीं विश्वेश्वरीं मायां सृष्टिसंहारकारिणीम् ।३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वजनानां च मान्यस्त्वं भविष्यसि गृहे गतः ।
सुखं सांसारिकं प्राप्य यथाभिलषितं पुनः ।३८
देवीलोके शुभे वासो भविता ते न संशयः ।
नाराधिता भगवती यैस्ते प्राणिनो नरकभागिनः ।३९
इह लोकेऽतिदुःखार्ता नानारोगैः प्रपीडिताः ।
भवति मानवा राजक्रछत्रुभिश्च पराजिताः ।४०
निष्कलत्रा ह्यपुत्राश्च तृष्णार्ताः स्तब्धबुद्धयः ।
विल्वदलैः करवीरैः शतपत्रैश्च चंपकैः ।४१
अर्चिता जगतां धात्री यस्तेऽतीवविलासिनः ।
भवति कृतपुण्यास्ते शक्तिभक्तिपरायणाः ।४२
धनविभवसुखाढ्या मानवा मानवन्तः ।
सकलगुणगुणानां भाजनंभारतीशाः ।
निगमपठितमन्त्रैः पूजिता यैर्भवानी
नृपतितिलकमुख्यास्ते भवन्तीह लोके ।।४३

वैश्य श्रेष्ठ! तुम भी उन्हीं कामदा भगवती विश्वेश्वरी,सृष्टिसंहार कारिणी माया देवीकी आराधना करो।३७।इससे स्वजनों में मान्यहोकर अपने घर में सभी इच्छित सुखों को प्राप्त करोगे और अन्त में देवी के लोकको जाओगे इसमें सन्देह नहीहै । जो प्राणी देवीकी आराधना नहीं करते, उन्हें तो मृत्यु के पश्चात् नरक की प्राप्ति होती है ।३८-३९। वे इस लोक में भी दुःखार्त्त और विभिन्न रोगो से पीड़ित रहते हैं और उन्हें शत्रुओं से सदा पराजय प्राप्त होती है ।४०। वे स्त्री पुत्रो के लिए तरसते हैं, तृष्णा से उनकी बुद्धि भ्रमितहो जाती है । परन्तु जो व्यक्ति विल्वपत्र, करवीर, शतपत्र, और चम्पा आदि के पुष्पों से जगद्धात्रीको पूजते हैं, वे पुण्य में तत्पर एवं भक्ति भाव युक्त रहनेके कारण अत्यन्त भोगों को प्राप्त करते है ।४१-४२। हे राजन् ! तान्त्रोक्त मन्त्रों के द्वारा देवी को पूजने वाले मनुष्य सब प्रकार से सुखी रहते हैं ।४३।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवती का प्रत्यक्ष दर्शन

इति तस्य वचः श्रुत्वा दुःखितौ वैश्यपार्थिवौ ।
प्रणिपत्य मुनिं प्रीत्या प्रश्रयावनतौ भृशम् ।१
हर्षेणोष्फुल्लनयनावूचतुर्वाक्यकोविदौ ।
कृताञ्जलिपुटौ शान्तौ भक्तिप्रणतचेतसौ ।२
भगवन्पावितावद्य शान्तौ दीनौ शुचान्वितौ ।
तवसूक्तसरस्वत्या रङ्गयेव भगीरथः ।३
धन्यावावां कृतकृत्यौ जातौ सूक्तिसुधासारसात् ।
पावितौ भवदा ब्रह्मन्कृपया करुणार्णव ।४
गृहाणास्तत्करौ साधो नथ पारं भवार्णवे ।
मग्नौ श्रांताविति ज्ञात्वा मन्त्रदानेन सांप्रतम् ।५
तपः कृत्वाऽतिविपुलं समाराध्य सुखप्रदम् ।
इति संचोदितस्ताभ्यां सुमेधा मुनिसत्तमः ।६
सम्प्राप्य दर्शनं भूयो यास्यावो निजमन्दिरम् ।
ददौ मन्त्रं शुभं ताभ्यां ध्यानबीजपुरःसरम् ।।७

व्यासजी बोले—हे राजन् महर्षि सुमेधा के ये वचन सुनकर राजा और वैश्य दोनों ने महर्षि के समक्ष मस्तक झुकाया और हाथ जोड़ कर उनसे कहा ।१-२। हे भगवत ! आपने हम दीन और अशान्त प्राणियों को अपनी सूक्ति रूपा सरस्वती के द्वारा वैसे ही पावन कर दिया जैसे भगीरथ ने गङ्गा को लाकर सब जीवों को किया था। आपके सूक्ति-सुधारस का पान करके हम दोनों धन्य हो गए हैं ।३-४।हे हे साधो ! हम श्रान्त होकर इस भवसागर में डूबें जा रहे हैं, अतः आप हमें मन्त्रदान देकर इससे उबारिये ।५। हम घोर तपस्या द्वारा भगवती की सुख प्रदायिनी आराधना करना चाहतेहैं और उनका दर्शन प्राप्त करके हम अपने-अपने घर चले जाएँ ।६। व्यासजी बोले—हे जनमेजय ! उन दोनों का ऐसा आग्रह देखकर मुनि श्रेष्ठ सुमेधाने उन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान और बीज से युक्त भगवती का नवाक्षर मन्त्र दिया ।७।

तौ च प्राप्य मुनेर्मन्त्रं संमंत्र्य गुरुदेवतौ ।
जग्मतुर्वैश्यराजानौ नदीतीरमनुत्तमम् ।८
एकांते विजने स्थाने कृत्वासनपरिग्रहम् ।
उपविष्टौ स्थितप्रज्ञौ तावतीव कृशोदरौ ।९
मन्त्रजाप्यरतौ शांतो चरित्रत्रयपाठकौ ।
पादांबुजे भवान्यास्तु स्थिराबुद्धिस्मथाप्यलम् ।१०
कदाचित्पामयोर्गत्वा मुनेस्तस्य महात्मनः ।
कृतप्रणामावागत्य तस्थतुश्च कुशासने ।११
पूर्णे वर्षद्वये जाते कदाचिद्दर्शनं च तौ ।
प्रापतुः स्वप्नकाध्ये तु भगवत्या मनोहरम् ।१२
रक्तांबरधरां देवीं चारुभूषणभूषिताम् ।
कदाचिन्नृपति स्वप्नेऽपश्यज्जगदम्बिकाम् ।१३
वीक्ष्य स्वप्ने च तौ देवीं प्रीतियुक्तौ बभूवतुः ।
जलाहारैस्तृतीये तु स्थितौ संवत्सरे तु तौ ।१४
तदा भगवती दत्वा प्रत्यक्षं दर्शनं तयोः ।
प्राह प्रीतिभरोद् भ्रांतौ दृष्ट्वा तौ दुःखितौ भृशम् ।१५

इस प्रकार मन्त्र को विधिपूर्वक जानकर राजा सुरथ और समाधि वैश्य नदी को गये ।८। जो कृशोदर और शांत चित्त हो गये थे, वे राजा और वैश्य दोनों उस नदी तीर के एक निर्जन स्थान में जाकर आसन लगाकर बैठें और शान्त मनसे नवाक्षर मन्त्रका जप और तीनों चरणों का पाठ करने लगे तब उनके मनमें भगवती के पदाम्बुजों की भक्ति उत्पन्न हुई तथा बुद्धि स्थिर हो गई ।९ १०। वे दोनों ही नित्य प्रति महर्षि सुमेधा के चरणों में पहुंचते और उन्हें प्रणाम करके अपने स्थान पर लौटकर कुशासन पर स्थित हो जाते ।११। इस प्रकार तप करते हुए जब दो वर्ष पूर्ण हो हुए तब उन दोनों को स्वप्न में भगवती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मनोहर स्वरूप का दर्शन हुआ।१२। भगवती लाल वस्त्र और सुन्दर आभूषणों से विभूषित थीं।१३। स्वप्न में भगवती को देखकर वे प्रीति विभोर हो जल-आहार करते हुए तप करने लगे।१४। तब भगवती ने साक्षात् प्रकट हो उन्हें दर्शन दिया और उनसे बोलीं।१५।

वरं वरय भो राजन्यत्ते मनसि वांछितम्।
तुष्टाऽहं तपसा तेऽद्य भक्तोऽसि त्वं मतो मम्।१६
वैश्यं प्राह ततो देवी प्रसन्नाऽहं महामते।
किं तेऽभीष्टं ददाम्यद्य प्रार्थयाशु मनोगतम्।१७
तच्छ्रुत्वा वचनं राजा तामुवाच मुदान्वितः।
देहि मेऽद्य निजं राज्यं हतशत्रु बलं बलात्।१८
तमुवाच तदा देवी गच्छ राजन्निजं गृहम्।
शत्रवः क्षीणसत्वास्ते गमिष्यन्ति पराजिताः।१९
मन्त्रिणस्ते समागम्य ते पतिष्यन्ति पादयोः।
कुरु राज्यं महाभाग नगरे स्वं यथासुखम्।२०
कृत्वा राज्यं सुविपुलं वर्षाणामयुतं नृप।
देहान्ते जन्म संप्राप्य सूर्याच्च भविता मनुः।२१
वैश्यस्तमाप्युवाचेदं कृतांजलिपुटः शुचिः।
न मे गृहेण कार्यं वै न पुत्रेण धनेन वा।२२

देवी ने कहा—हे राजन्! मन वांछित वर माँगो। मैं तुम्हारी प्रीति देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई हूँ। तुम निश्चित ही मेरे भक्त हो।१६। फिर उन्होंने वैश्य से कहा हे महामते! तुम्हारी भक्ति से भी मैं प्रसन्न हूँ। तुम्हारा क्या अभीष्ट है, अपनी मनचाही वस्तु मुझसे माँगलो, वही दूँगी।१७। व्यासजी बोले—भगवती के वचन सुनकर राजा हर्षित हुए और बोले—हे देवी! मैं अपने शत्रु को बल पूर्वक नष्ठ करके अपना गया हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर लूँ वही वर मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीजिए ।१८। इस पर भगवती ने कहा कि हे राजन् ! अब तुम अपने घर लौट जाओ तुम्हारे शत्रु क्षीण होकर भाग जायेंगे।१९। हे महाभाग! वे तुम्हारे चरणों में आ गिरेंगे इसलिए तुम अपने नगर में जाकर सुख पूर्वक राज्य करो ।२०। इस प्रकार दस हजार वर्ष अपने विस्तृत राज्य का सुख भोगकर देहान्त होने पर तुम भगवान भास्कर के पुत्र होंगे । ।२१। व्यासजी बोले कि फिर वैश्य ने भी हाथ जोड़कर भगवती से कहा—हे माता ! अब मुझे न घर से कार्य है और न पुत्र अथवा स्त्री से ।२२।

सर्वं बन्धकरं मातः स्वप्नवन्नश्वरं स्फुटम् ।
ज्ञानं मे हि विशदं मोक्षदं बन्धनाशनम् ।२३
असारेऽस्मिञ्च संसारे मूढा मज्जन्ति पामराः ।
पण्डिताः संतरतीह तस्मान्नेच्छन्ति संसृतिम् ।२४
तदाकर्ण्य महामाया वैश्यं प्राह पुरः स्थितम् ।
वैश्यवर्यं तव ज्ञानं भविष्यति न संशयः ।२५
इति दत्वा वरं ताभ्यां तत्रैरातरधीयत ।
अदर्शनं गतायां तु राजा तं मुनिसत्तमम् ।२६
प्रणम्य हयमारुह्य गमनाय मनो दधे ।
तदैव तस्य सचिवास्तत्रागत्य नृपं प्रजाः ।२७
प्रणेमुर्विनयोपेतास्तमूचुः प्राञ्जालिस्थिताः ।
राजस्ते शत्रवः सर्वे पापाच्च निहता रणे ।२८

यह सभी भव-बन्धन में डालने वाले है और स्वप्नवत नाशवानहैं, इस संसार में अज्ञानी डूबते हैं, इसलिए ज्ञानीजन पुर्नजन्म की इच्छा नहीं करते ।२३-२४। व्यासजी बोले भगवती ने समाधि वैश्य का उत्पत्ति होगी, इसमें संशय नहीं है ।२५। उन दोनों को इस प्रकार वर प्रदान करके भगवती अन्तर्धान हो गई । यह देखकर वे दोनों महर्षि सुमेधा की सेवा में उपस्थित हुए ।२६। राजा ने महर्षि को प्रणाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके उनसे घर लौटने की अनुमति ली तथा अपने घोड़े पर सवार होने लगे, तभी उनके प्रजागण और सचिवगण वहाँ आ गये ।२७। और हाथ जोड़कर बोले-हे महाराज! आपके शत्रु बड़े पापाचारी थे,इसलिए हमने युद्ध करके उनका वध कर दिया ।२८।

राज्यं निष्कंटकं भूप कुरुष्व पुरमास्थितः ।
तच्छ्रुत्वा वचनं राजा नत्वा तु मुनिसत्तमम् ।२९
आपृच्छ्य निर्यर्यो तत्र मन्त्रिभिः परिवारितः ।
संप्राप्य च निजं राज्यं दारान्स्वजनबांधवान् ।३०
बभुजे पृथिवीं सर्वां ततः सागरमेखलाम् ।
वैश्योऽपि ज्ञानमासाद्य मुक्तसङ्गः समन्ततः ।३१
कालाऽपिवाहनं तत्र मुक्तबन्धश्चकार ह ।
तीर्थेषु विचरन्गायन्भगवत्या गुणानथ ।३२
एतत्ते कथितं देव्याश्चरितं परताद्भुतम् ।
आराधनाफलप्राप्तिर्यथावद्भूपवैश्ययोः ।३३
दैत्यानां हननं प्रोक्तं प्रादुर्भावस्तथा शुभः ।
एवंप्रभावा सा देवी भक्तानामभयप्रदा ।३४
यः शृणोति नरो नित्यमेतदाख्यानमुत्तमम् ।
स प्राप्नोति नरः सत्यं संसारसुखमद्भुतम् ।३५
ज्ञानदं मोक्षदं चैव कीर्तिदं सुखदं तथा ।
पावनं श्रवणान्नूमेतदाख्यानमद्भुतम् ॥३६

अब आप नगर में चलकर निष्कटक राज्य करिये। यह सुनकर राजा महर्षि की आज्ञा लेकर घर लौटे। वहाँ सुख पूर्वक राज्य करने लगे। उधर समाधि वैश्यभी सम्पूर्ण विषयासक्तियोंसे निवृत्तहोकर ज्ञानी बन गया ।२९-३०। वह बन्धन-मुक्त होकर तीर्थयात्रा पर निकल पड़ा वहाँ भगवती का गुण-गान करता हुआ उनकी भक्ति का प्रचार करने लगा ।३१-३२। हे राजन् ! इस प्रकार मैंने देवीका परम अद्भुत चरित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनाते हुए राजा सूरथ और समाधि वेश्य के सिद्धि प्राप्त होने की बात कही ।३३। इसी प्रसङ्ग में दैत्यों का वध करने के निमित्त हुए देवी के प्रादुर्भाव का वृत्तान्त भी कह दिया । उन अभय प्रदान करने वाली देवी का ऐसा प्रभाव है ।३४। जो मनुष्य इस श्रेष्ठ चरित्र को श्रद्धापूर्वक नित्य सुनता है उसे यथार्थ सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है ।३५। यह आख्यान ज्ञान, मोक्ष, कीर्ति और सुख का देने वाला, परम पवित्र और अद्‌भुत हैं । इसके सुनने से सर्वसुख उपलब्ध हो जाते हैं ।३६।

त्रिशिरा की तपस्या

सूत सूत महाभाग मिष्टं ते वचनामृतम् ।
न तृप्ताः स्मो वयं पीत्वा द्वैपायनकृत शुभम् ।१
पुनस्त्वां प्रष्टुमिच्छामः कथां पौराणिकीं शुभाम् ।
वेदेऽपि कथितां रम्यां प्रसिद्धां पापनाशिनीम् ।२
वृत्रासुर इति ख्यातो वीर्यवांस्त्वष्टुरात्मजः ।
स कथ निहतः संख्ये वासवेन महात्मना ।३
त्वष्टा सुरपक्षीयस्तत्पुत्रो बलवत्तरः ।
शक्रेण घातितः कस्माद्‌ब्रह्मयोनिर्महाबलः ।४
अन्यायवर्तिनोऽत्यर्थं भवन्ति सुरसत्तमाः ।
सदाचारेण युक्तेन देवाः शिष्टत्वमागताः ।५
एवं विशिष्टधर्मेण शिष्टत्वं कीदृशं पुनः ।
हत्वा वृत्रन्तु विश्वस्तं शक्रेण छद्मना पुनः ।६
प्राप्तं पापफल नो वा ब्रह्महत्यासमुद्‌भवम् ।
किं च त्वया पुरा प्रोक्तं वृत्रासुरवधः कृतः ।७
श्रीदेव्या इति तच्चापि चित्तं मोहयतीह नः ।
शृण्वन्तु मुनयो वृत्तं वृत्रासुरवधाश्रयम् ॥८

ऋषियों ने कहा—हे सूत ! हे महाभाग ! मुनीश्वर द्वैपायन द्वारा रचित कथाओं संहित आपके सरस वचनामृत का पान करते-करते हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तृप्त नहीहो पातेहैं। इसलिए अब आप पुराणोकी श्रेष्ठ पाप-नाशिनी, प्रसिद्ध और वेदों द्वारा समर्पित कथाओ का वर्णन कीजिए।१-२। हमें यह वतलाइये कि त्वष्टा के पराक्रमी वृत्रासुर नामक पुत्र का महात्मा इन्द्र ने किस लिये वध किया था।३। त्वष्टा तो देवताओं के पक्ष के थे, इन्द्र ने उस ब्रह्मयोनि में उत्पन्न हुए वृत्रासुर का हनन क्यों किया ? इन्द्र जैसे श्रेष्ठ देवता भी अन्यायवर्ती हो गये।४। उनका शिष्टत्व कहाँ रहा ? उन्होंने तो वृत्रासुर का विश्वास पात्र वनकर छल पूर्वक उसकी हत्या करदी।५। इस ब्रह्महत्या से होने वाले पाप का फल उन्हें प्राप्त हुआ अथवा नहीं ? परन्तु आपने पहिले यह कहा था कि वृत्रासुर का वध भगवती श्रीदेवी ने किया था। इससे मेरा चित्त भ्रम में पड़ गया है। तव सूतजी वोले—हे ऋषियों ! अब आप वृत्रासुर के वध का प्रसङ्ग सुनिये।६-८

यथेन्द्रेण च सम्प्राप्तं दुःखं हत्याससुद्भवम् ।
एवमेषु पृष्टो व्यासः सत्यवतीसुतः ।९
पारीक्षितेन राज्ञाऽपि स यदाह च तद्ब्रुवे ।
कथं वृत्रासुरः पूर्वं हतो मघवता मुने ।१०
सहायं विष्णुमासाद्य छद्मना सात्विकेन ह ।
कथं च देव्या निहतो दैत्योऽसौ केन हेतुना ।११
कथमेकवधो द्वाभ्यां कृतः स्यान्मुनिपुङ्गव ।
तदेतच्छ्रोतुमिच्छामि परं कौतूहलं हि मे ॥१२
महतां चरितं शृण्वत्को विरज्येत मानवः ।
कथयाम्बावैभवं त्वं वृत्रासुरवधाश्रितम् ।१३
धन्योऽसि राजंस्तव वुद्धिरीदृशी
जातापुराणश्रवणेऽपि सादरा
पीत्वाऽमृतं देववरास्तु सर्वथा
पाने वितृष्णाः प्रभवंति वै पुनः ।१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्र को उस हत्या से महा दुःख की प्राप्ति हुई थी। आपने जैसे पूछा है वैसे ही सत्यवती-पुत्र व्यासजी से पहिले राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने भी पूछा था कि हे मुने! इन्द्र ने वृत्रासुर को क्यों मारा था? ।९-१०। इन्द्र तो सात्विक वृत्ति के थे, फिर उन्होंने विष्णु की सहायता से उसे किसकारण मारा था? ।११।हें मुनिपुङ्गव! दो भिन्न भिन्न देवता एक ही व्यक्ति का वध करें, इस प्रसङ्ग को सुनने के लिए मेरे चित्त में बड़ा कौंतूहल हो रहा है ।१२। ऐसा कौन मनुष्य होगा जो महापुरुषों के चरित्रों को न सुनना चाहे? इसलिए आप मेरे प्रति वृत्र वध की कथा कहिये ।१३। व्याज जी ने कहा-हे जनमेजय! आप अत्यन्त धन्य है जो पुराण के सुनने में ऐसे उत्सुक रहते हैं। आपतो कथा-रूपी अमृत-पान करके तृप्त ही नहीं हो पाते ।१४।

न जातु मोहं क्षपितुं नरः क्षमः
कश्चिद्भवेद्भूप परावरार्थवित्।
विमोहितस्तैस्त्रिभिरेव मूलतो
वशीकृतात्मा जगतीतले भृशम् ।१५
अथ तौ मायया विष्णुर्वासवो मोहितौ भृशम्।
जघ्नतुश्छद्मकौ वृत्रं स्वार्थसाधनतत्परौ ।१६

तदहं सम्प्रवक्ष्यामि वृतांतमवनीपते।
कारणं पूर्ववैरस्य वृत्रवासवयोर्मिथः ।१७
त्वष्टा प्रजापतिर्ह्यासीद्देवश्रेष्ठो महातपाः।
देवानां कार्यकर्ता च निपुणो ब्राह्मणप्रियः ।१८
सपुत्रं वै त्रिशिरसमिन्द्र द्वेषा त्कलासृजत्।
विश्वरूपेति विख्यातं नाम्ना रूपेण मोहनम् ।१९
त्रिभिः स वदनैःश्रेष्ठैर्व्यरोचयत मनोहरैः।
त्रिभिर्भिन्नानि कार्याणि मुखैः समकरोन्मुनिः ।२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदानेकेन सोऽधीते सुरां चैकेन सोऽपिबत् ।
तृतीयेन दिशः सर्वा युगपच्च निरीक्षते ॥२१

हे राजन् ! इस पृथ्वी पर ऐसा कोई भी नहीं हैं जो मोह से मुक्त हो सके ।१५। इसीलिए माया में मोहित होकर ही विष्णु और इन्द्र ने छल से वृत्रासुर को मारा था ।१६। हे पृथिवीपते ! अब मैं वृत्र और इन्द्र के मध्य हुए वैर का जो कारण है, वह सब तुम्हें बताता हूँ ।१७। देव-श्रेष्ठ त्वष्टा देवताओं के कार्य-साधक, तपस्वी ब्राह्मणों के प्रिय तथा प्रजापति थे ।१८। परन्तु इन्द के प्रति उनका सद्भाव नहीं था, इसलिए उन्होंने तीनसिर वालाएक मनमोहक पुत्र उत्पन्न किया,जिसका नाम विश्वरूप था ।१९। वह अपने श्रेष्ठ तीन मुखों से अत्यन्त सुन्दर और मनोहर प्रतीत होता था और तीन मुखों से विभिन्न तीन कार्यों को एक साथ करने में समर्थ था ।२०। वह एक मुखसे वेद-पाठ करता, दूसरे से सुरापान करता और तीसरे से सब दिशाओं को देखताथा।२१

त्रिशिरा भोगमुत्सृज्य तपश्चक्रे सुदुष्करम् ।
तपस्वी स मृदुर्दांता धर्ममेव समाश्रितः ।२२
पञ्चाग्निसाधनं काले पादपाग्रे निवेशनम् ।
जलमध्ये निवासं च हेमन्ते शिशिरे तथा ।२३
निराहारो जितात्माऽसौ त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।
तपश्चचार मेधावी दुष्करं मन्दबुद्धिभिः ।२४
तं च दृष्ट्वा तपस्यंतं खेदमाप शचीपतिः ।
विषादमगमत्तत्र शक्रोऽयं मास्मभूदिति ।२५
तथैवात्र प्रकर्तव्यं भोगासक्ता भवेद्यथा ।
इति संचिंत्य मनसा बुद्धिमान्बलमर्दनः ।२६
आज्ञापयत्सोऽप्सरसस्त्वष्टृपुत्रप्रलोभने ।
उर्वशीं मेनकां रम्भां घृताचीं च तिलोत्तमाम् ।२७
तच्छ्रुत्वा वचनं नार्यः ऊचुस्तं प्रणताः पुरः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मा भयं कुरु देवेश यतिष्यामः प्रलोभने ।।२८

उन त्रिशिरा ने सभी भोगों को त्याग कर दुष्कर तपस्या की और मृदु संयमी तथा धर्म-परायण हो गया ।२२। वह ग्रीष्म में पचाग्नि से तपसा दर्षा में वृक्ष शाखा से पाँव बाँधकर उल्टा लटका रहता और हेमन्त तथा शिशिर ऋतुओं में जलके मध्य रहकर तप करता था।२३। वह निराहार, जितात्मा तथा वासनाओं का त्यागी और मेधावी, ऐसा कठोर तप करने लगा ।२४। उसकी तपस्या से इन्द्र को बड़ा खेद हुआ, वे सोचने लगे कि कहीं यह मेरा इन्द्रासन न छीनले ।२५। इसलिए अब मुझें कोई ऐसा यत्न करना चाहिए कि यह तप छोड़ कर विषयों में आसक्त हो जाय । ऐसा विचार कर इन्द्र ने उर्वशी मेनका, रम्भा, घृताची, तिलोत्तमा आदि अप्सराओं को बुलाकर त्वष्ठा के पुत्र को प्रलोभन में फँसाने का आदेश दिया ।२६-२७। इन्द्र की आज्ञा सुनकर उन स्त्रियों ने विनय पूर्वक कहा—हे देवेश ! आप भय न करिए, हम उसे प्रलोभन में फँसा लेंगी ।२८।

वृत्याभाष्य हरिं नार्यो ययुस्त्रिशिरसोऽन्तिकम् ।
कुर्वन्त्यो विविधान्भावान्कामशास्त्रोचितानपि ।२९
गायन्त्यस्तालभेदैस्ता नृत्यंत्यः पुरतो मुनेः ।
तं प्रलोभयितुं चक्रुर्नानाभावान्वरांगनाः ।३०
नापश्यत्स तपोराशिरङ्गनानां विडम्बनम् ।
इन्द्रियाणि वशे कृत्वा मूकाँधबधिरः स्थितः ।३१
दिनानि कतिचित्तस्थुर्नर्यस्तस्याश्रमे वरे ।
कुर्वन्त्यो गाननृत्यादि प्रपंचानतिमोहदान् ।३२
न चचाल यदा कामं ध्यानाच्च त्रिशिरा मुनिः ।
परावृत्य तदा देव्यः पुनः शक्रमुषस्थिताः ।३३
कृतांजलिपुटाः सर्वा देवराजमथाब्रुवन् ।
श्रांता दीना भयत्रस्ता विवर्णवदना भृशम् ।३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवदेवमहाराज यत्नश्च परमः कुलः।
न स शक्यो दुराधर्षो धैर्याच्चा लयितुं विभो ।३५
विसृज्याप्सरसः शक्रश्चिंतयामास मन्दधीः।
तस्यैव च वधोपायं पापबुद्धि रसांप्रतम् ।३६
विसृज्य लोकलज्जां स तथा पापभयं भृशम्।
चकार पापबुद्धिं तु तद्वधाय महीपते ॥३७

व्यासजी वोले इन्द्र से इस प्रकार कहकर अप्सरायें त्रिशिराके पास पहुँची और विभिन्न भावों का प्रदर्शन करने लगी।२९।वे कभी विभिन्न स्वर ताल देकर मधुर स्वर में गातीं और कभी नृत्य करती थीं । इस प्रकार विभिन्न भावों द्वारा उसे वंश में करने के उपाय में लगीं ।३०। तो भी उस तपस्वी ने उन अप्सराओं की ओर दृष्टिपात भी नही किया इन्द्रियों को नियन्त्रित किये मूक, बधिर और अन्धे के समान बैठा रहा ३१। इस प्रकार मोहित करने वाले नृत्यगान आदि भावों को प्रदर्शित करती हुई वे अप्सरायें कुछ दिन आश्रम में ही ठहरी ।३२। इस पर भी तपस्वी त्रिशिरा का ध्यान न हटा । देखकर वे स्त्रियाँ इन्द्र के पास लौट आई ।३३। उन्होंने शान्त दीन तथा भय से त्रस्त होकर हाथ जोड़े हुए जाकर इन्द्र से कहा—हे देवदेव ! हे महाराज ! हमने बहुतेरा यत्न किया परन्तु यह मुनि किंचित् भी विचलित नहीं हो पाया । तब उन मन्द बुद्धि वाले इन्द्र ने अप्सराओं को तो विदा कर दिया और स्वयं त्रिशिरा को मारनेका विचार करने लगे क्योंकि उनकी बुद्धि पाप युक्त हो गई थी ।३६। उन्सोंने लोक-लाज और पाप का भय छोड़कर त्रिशिरा-वध के लिए पाप बुद्धि का संहारा लिया ।३७।

त्रिशिरा का वध

अथ स लोभमुपेत्य सुराधिपः समधिगम्य गजासनसंस्थितः।
त्रिशिरसं प्रति दुष्टमतिस्तदा मुनिमपश्यदमेयपराक्रमम् ।१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तमभिवीक्ष्य दृढासनसंस्थितं जितगिरं सुसमाधिवर्णगतम् ।
रविविभावसु सन्निभमोजसा सुरपतिः परमापदमभ्यगात्२

कथमसौ विनिहन्तुमहो मया मुनिरपापमतिः किल संमतः ।
रिपुरयं सुसमिद्धतपोबलः कथमुपेक्ष्य इहासनकामुकः ।३

इति विचिन्त्य पविं परमायुधं प्रति मुमोच मुनितपसिस्थितम्
शशिदिवाकरसन्निभमाशुगं त्रिशिरसं सुरसंघपतिःस्वयम्।४

तदभिघातः स धरातले किल पपात ममार च तापसः ।
शिखरिणः शिखरं कुलिशादितंनिपतितंभुविचाद्भुतदर्शनम्५

तं निहत्य मुदमाप सुरेशश्चुक्रु शुश्र मुनयस्तु संस्थिताः ।
हा हतेति भृशभार्तनिस्वनाः किं कृतं शतमखेन पापिना ।६

तं निहत्य तरसा सुरराजो निजगाम निजन्दिरमाशु ।
स हतोऽपि विरराज महात्मा जीवमान इव तेजसां निधिः७

व्यासजी बोले इन्द्रासन छिनने के भय से इन्द्र त्रिशिरा के तपोवन में पहुँचे । वहाँ उन्होंने देखा कि त्रिशिरा दृढ़ आसन लगाये समाधिस्थ हैं ।१-२। उन्होंने सोचा यह तो बड़ें स्वच्छ विचार के प्रतीत होते हैं, इनका वध कैसे करूँ ? किन्तु इनका तपोवल निरन्तर वृद्धि पर है, यह मेरे पद को भी छीनने के इच्छुक हैं, तो ऐसे शत्रु को छोड़ना उचित नहीं हैं।३। देवताओं के सधाधिष्ठाता इन्द्र ने यह सोचकर सूर्य चन्द्र जैसे तेजस्वी एवं तपोनिष्ठ त्रिशिरा मुनि पर अपना परमायुक्त वज्र छोड़ दिवा ।४। पूर्वकाल में इन्द्र के वज्रघात से त्रिशिरा ऋषि आहत होकर गिर पड़े ।५। उनका वध करके इन्द्र तो बड़े प्रसन्न हुए, उस वन में निवास करने वाले अन्यान्य मुनियों ने 'हाहाकार' करते हुए कहा कि पापी इन्द्र ने यह कैसा काण्ड किया है।६। मुनिको मारकर इन्द्र चलने को ही थे फिर भी उन्हें त्रिशिरा मुनि महा तेज के कारण जीवित जैसे दिखाई देने लगे।७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तं दृष्ट्वा पतितं भूमौ जीवन्तमिव वृत्रहा ।
चिंतामापातिखिन्नाङ्गः किं वा जीवेदयं पुरः ।८
विमृश्य मनसाऽतीव तत्क्षणं पुरतः स्थितम् ।
मघवा वीक्ष्य तं प्राह स्वकार्यसदृशं वचः ।९
तक्षंश्छिधि शिरांस्यस्य कुरुष्व वचनं मम ।
मा जीवतु महातेजा भाति मे जीवन्नियम् ।१०
त्वं लोभाभितः पापं करोति मघवन्निह ।
तं विनाहंकथं पापं करोमि वद मे विभो ।११
मखेषु खलु भागं ते करिष्यामि सदैव हि ।
शुल्केनानेन छिधि त्वं शिरांस्यस्य कुरु प्रियम् ।१२
एतच्छ्रुत्वा महेन्द्रस्य वचस्तक्षो मुदान्वितः ।
कुठारेण शिरांस्यस्य चकर्त सुदृढेन हि ।१३
छिन्नानि त्रीणि शीर्षाणि पतितानि यदा भुवि ।
तेभ्यस्तु पक्षिणः क्षिप्रं विनिष्पेतुः सहस्रशः ।।१४

धाराशायी होने परभी जीवित होने वाले त्रिशिराको देखकर इन्द्र को चिन्ता हुई कि कहीं यह पुनः जीवन प्राप्त न करले ।८। इस प्रकार विचार करते हुए इन्द्र ने एक बढ़ई को देखकर उससे कहा ।९। कि हे बढ़ई ! तुम मेरे कहने से इन मुनि के शीश को काट दो ।१०। इस पर बढ़ई ने कहा हे भगवन् ! आप तो लोभवश ऐसा पाप करने जा रहे है, परन्तु मुझें यह बतलाये कि मैं यह पाप क्यों करूँ ।११। इन्द्र ने कहा मैं ऐसी व्यवस्था कर दूँगा कि तुम्हें यज्ञ भाग प्राप्त होता रहेगा। इस शुल्क के बदले में तुम इनका शीश काट मेरा प्रिय कार्य करो ।१२। व्यासजी बोले—इन्द्र का यह वचन सुनकर वह बढ़ई प्रसन्न हो गया और उसने अपनी कुल्हाड़ी से मुनि के मस्तक को काट डाला ।१३। ज्योंही उनके मस्तक कटकर पृथिवी पर गिरे त्यों ही उनमें से सहस्रों पक्षी निकल पड़े ।१४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलविंकास्तित्तिरयस्तथैव च कपिञ्जलाः ।
पृथक्पृथग्विनिष्पेतुर्मुखतस्तरसा तदा ।१५
येन वेदानधीतेस्म सोमं च पिबते तथा ।
तस्माद्वक्त्रात्किलोत्पेतुः सद्य एवं कपिञ्जलाः ।१६
येन सर्वा दिशः कामं पिबन्निव निरीक्षते ।
तस्मात्तु तित्तिरास्तत्र निःसृतास्तिग्मते तेजसः ।१७
यत्सुरापं तु तद्वक्त्रं तस्मात्तु चटकाकिल ।
विनिष्पेपुस्त्रिशिरस एवं ते विहगा नृप ।१८
एवं विनिःसृतान्दृष्ट्वा तेभ्यः शक्रस्तदाण्डजान् ।
मुमोद मनसा राजञ्जगाम त्रिदिवं पुनः ।१९
तं श्रुत्वा निहतं त्वष्टा पुत्रं परमधार्मिकम् ।
चुकोपातीव मनसा वचनं चेदमब्रवीत् ।२०
अनागसं मुनिं यस्मात्पुत्रं निहतवान्मम ।
तस्मादुत्पादयिष्यामि तद्वधाय सुतं पुनः ॥२१

कलविंक, तित्तिर और कपिञ्जल पक्षी उनके मुखों से निर्गत हुए ।१५। जिससे वे वेदाध्ययन करते और सोम रस पीते थे उससे कपिञ्जल पक्षी तत्काल ही प्रकट हो गये ।१६। जिस मस्तक से देखते ये मद्य पीते थे, उससे चटक पक्षी निकल आये ।१७-१८। उन पक्षियों को इस प्रकार निकलते हुए, इन्द्रने देखा और प्रसन्न होते हुए वे अपने लोककों लौट गये ।१९। इधर पुत्र की मृत्यु हुई सुनकर त्वष्टा क्रोधित हो बोले- इन्द्र ने मेरे निरपाध पुत्र की हत्या की है । इसलिए उसे मारने के लिए, मैं अब दूसरा पुत्र उत्पन्न करूँगा ।२०-२१।

इत्युक्त्वाऽग्निं जुहावाथ मन्त्रैराथर्वणोदितैः ।
पुत्रस्योत्पादनार्थाय त्वष्टा क्रोधसमाकुलः ।२२
कृते होमेऽष्टरात्रं तु संदीप्ताच्च विभावसोः ।
प्रादुर्बभूव तरसा पुरुषः पावकोपमः ।२३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तं दृष्ट्वाऽऽग्रे सुतं त्वष्टा तेजोवलसमन्वितम् ।
वेगात्प्रकटितं वह्नेर्दीप्यमानमिवानलम् ।२४
उवाच वचनं त्वष्टा सुतं वीक्ष्य पुरः स्थितम् ।
इन्द्रशत्रो विवर्धस्व प्रतापात्तपसो मम ।२५
इत्युक्ते वचने त्वष्ट्रा क्रोधप्रज्वलितेनहि ।
सोऽवर्धत दिवं स्तब्धा वैश्वानरसमद्युतिः ।२६
सातः स पर्वताकारः कालमृत्युसमः स्वराट् ।
किं करोमीति तं प्राह पितरं परमातुरम् ।२७
कुरु मे नामकं नाथ कार्यं कथय सुव्रत ।
चिन्तातुरोऽसि कस्मात्वं ब्रूहि मे शोककारणम् ।।२८

यह कह कर क्रोध से अभिभूत हुए त्वष्टा पुत्रोत्पादन के उद्देश्य से अथर्व मन्त्रों के द्वारा अग्नि में आहुतियाँ देने लगे ।२२। इस प्रकार निरन्तर अष्ट रात्रि पर्यन्त हवन चलता रहा, तब अग्नि से सहसा एक अग्नि के समान तेजस्वी पुरुष प्रकट हुआ ।२३। वेदी में प्रज्वलित अग्नि जैसे तेजोमय पुत्र को हवन कुण्ड से उत्पन्न होकर अपने समक्ष स्थित देखकर त्वष्टा बोले—हे इन्द्रगणो ! मेरे तप के प्रताप से तुम शीघ्र बुद्धि को प्राप्त होजो ।२४-२५। क्रोधित त्वष्टा के ऐसा कहने पर वह अग्नि जैसा तेजस्वी पुत्र शीघ्र ही वृद्धिको प्राप्त होने लगा, यह देखकर देवता विस्मिता हो गये । बड़ते-बढ़ते वह शीघ्र ही पर्वताकार होकर काल-पुरुष जैसा प्रतीत होने लगा और अपने पिता से बोला बताओ मैं क्या करूँ ?।२६-२७। हे नाथ, पहिले मेरा नाम रखियें और फिर अपने शोक व चिन्ता कारण मुझसे कहिए ।२८।

नाशयाम्यद्य ते शोकमिति मे व्रतमाहितम् ।
तेन जातेन किं भूयः पिता भवति दुःखितः ।२९
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य त्वष्टा पुत्रस्य पेशलम् ।
प्रत्युवाचातिमुदितस्तं सुतं पर्वतोपमम् ।३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृजिनात्त्रातुमधुना यच्माच्छक्तोऽसि पुत्रक ।
तस्माद्वृत्र इति ख्यातं तव नाम भविष्यति ।३१

भ्रातः तव महाभाग त्रिशिरा नाम तापसः ।
त्रीणि तस्य शीर्षाणि ह्यभवन्वीर्यवन्ति च ।३२

शक्रेण तु हतः सोऽद्य वज्राघातेन साम्प्रतम् ।
विनाऽपराधं सहसा छिन्नानि मस्तकानि च ।३३

तस्मात्वं पुरुषव्याघ्र जहि शक्रं कृतागसम् ।
ब्रह्महत्यायुतं पापं निस्त्रपं दुर्मतिं शठम् ।३४

इत्युक्त्वा च तदा त्वष्टा पुत्रशोक समाकुलः ।
आयुधानि च दिव्यानि चकार विविधानि च ।३५

ददावस्मै सहस्राक्षवधाय प्रवलानि च ।
दत्वाऽसौ प्रेरयामास त्वष्टा क्रोधसमन्वितः ॥३६

जिसे जानकर आपके शोक को दूर कर सकूँ, क्योंकि पुत्र के होते हुए भी जिसका पिता शोकाकुल रहे तो उस पुत्र से ही क्या लाभ है । ।२९। पुत्र के वचनों से त्वष्टा अत्यन्त प्रसन्न हुए और वे उससे बोले ।३०। हे पुत्र वृजिन ! अर्थात् कष्ट से त्राण करने वाला होने के कारण तुम्हारा नाम वृत्र होगा ।३१। हे महाभाग ! तुम्हारा भाई त्रिशिरा नामक तपस्वी था इतना घोर तप कर रहाथा, जिसे देखकर शिलोकी के जीव विस्मित हो गये ।३२। परन्तु इन्द्र ने उस निरपराध को वज्र प्रहार द्वारा मार दिया और उसके तीनों शिर काट डाले।३३। इसलिए हे पुरुष व्याघ्र ! तुम उस उपकर्मा, ब्रह्म हत्यारे, निर्लज्ज दुर्जन एवं शठ इन्द्र का वध करना ।३४। पुत्र के शोक में व्याकुल हुए त्वष्टा ने यह कहूकर नाना प्रकार के दिव्य शस्त्रास्त्र बनाए । वे सभी शस्त्रास्त्र उन्होंने इन्द्र को मारने के लिए वृत्र को प्रदान किए और उन्होंने क्रोध पूर्वक वृत्र को इंद्र वध के लिए प्रेरित किया ।३५।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृत्रासुर द्वारा तपस्या

कृतस्वस्तययनो वृत्रो ब्राह्मणै र्वेदपारगैः ।
निर्जगाम रथारूढो हन्तुं शक्रं महाबलः ।१
तदैव राक्षसाः क्रूरा पुरा देवपराजिताः ।
समाजग्मुश्च सेवार्थं वृत्रं ज्ञात्वा महाबलम् ।२
इन्द्रदूतास्तु तं दृष्ट्वा युद्धाय तु समागतम् ।
वेगादागत्य वृत्तांतं शंससुस्तस्य चेष्टितम् ।३
एतस्मिन्नंतरे तत्र भीता देवगणाः भ्रशम् ।
आगत्योचुः सुरपतिं शृण्वन्तं दूतभाषितम् ।४
मघवन्दुर्निमित्तानि भवन्ति त्रिदशालये ।
बहूनि भयशंसीनि पक्षिणां विरुतानि च ।५
काकगृध्रास्तथा श्येनाः ककाद्या दारुणाः खगाः ।
रुदन्ति विकृतैः शब्दैरुत्कारै र्भवनोपरि ।६
प्रपतन्ति ध्वजास्तूर्णं विना वातेन मानद ।
प्रभवन्ति महोत्पाता दिवि भूम्यन्तरिक्षजाः ॥७

व्यासजी बोले—हे राजन् वेदपाठी ब्राह्मणों से स्वस्ति-वाचन करा कर वृत्र रथ पर सवार हुआ और इन्द्र का वध करने के विचार से चल पड़ा।१। उसी अवसर पर पहिले कभी देवताओंसे परास्त हुए क्रूर राक्षसादि व्रत को महापराक्रमी समझकर उसकी सेवा में गए ।२। जब इन्द्र के दूतों ने वृत्र को आक्रमण के लिए तत्पर पाया तभी तुरन्त इंद्र के पास जाकर उन्होंने वरपक्ष का पूर्णसमाचार सुनाया ।३। जिस समय इन्द्र अपने दूतों द्वारा वृत्रके आगमनके समाचार सुन रहे थे तभी अनेक भयभीत देवता भी वहाँ उपस्थित हुए ।४। देवताओंने कहा—हे भगवान हे प्रभो ! इस समय बड़े अपशकुन हो रहे हैं, भवनों के ऊपर पक्षियोंके भयावन शब्द सुनाई पड़ रहेहैं।५। कौआ, गृध्र, बाज, चील आदि दारुण रक्षी घरों के ऊपर बैठकर रुदन करते हैं ।६। हे मानद ! वायु के न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलते हुए भी ध्वजाये टूट-टूटकर पृथिवी पर गिर रही हैं तथा पृथिवी अन्तरिक्ष और स्वर्ग में उत्पात हो रहे हैं ।७।

कृष्णाम्बरधरा नार्यो भ्रमन्ति च गृहेगृहे ।
यातु यातु गृहात्तूर्ण कुर्वत्यो विकृताननाः ।८
इति तेषां वचः श्रुत्वा चिंतामाप सुरेश्वरः ।
बृहस्पतिं सताहाय पप्रच्छ च मनोगतम् ।९
किं करोमि सहस्राक्ष त्वयाऽद्य दुष्कृतं कृतम् ।
अनःगसं मुनिं हत्वा किं फलं समुपार्जितम् ।१०

अत्युग्रं पुण्यपापानां फलं भवति सत्वरम् ।
विचार्य खलु कर्तव्यं कार्यं तद्भूतिमिच्छता ।११
परोपतापनं कर्म न कर्तव्यं कदाचन ।
न सुखं विंदते प्राणी परपीडापरायणः ।१२
मोहाल्लोभाद्ब्रह्महत्या कृता शक्र त्वयाऽधुना ।
तस्य पापस्य सहसा फलमेतदुपागतम् ॥१३
अवध्यः सर्वदेवानां जातोऽसौ वृत्रसंज्ञकः ।
हन्तु त्वां स समायाति दानवैर्बहुभिर्वृतः ॥१४

काले वस्त्रों को धारण किये हुए विकृत मुखवाली स्त्रियाँ घर-घर घूमती हुई कहतीहैं कि घर छोड़कर चले जाओ ।८। व्यासजी बोले कि हे राजन् ! देवताओं के वचन सुनकर अत्यन्त चिंतत हुए इन्द्र ने देव गुरु बृहस्पति को बुलाकर उस मानसिक व्याकुलता का कारण पूछा ।९। बृहस्पति ने कहा—हे इंद्र, क्या करें तुमने कैसा जघन्य कार्य किया है, उस निरपराध मुनि को मार तुम्हें क्या उपलब्धि हुई हैं ? ।१०। प्रत्येक कार्य, विचार-पूर्वक करना चाहिए, क्योंकि अपने द्वारा किए पाप-पुण्य का फल सभी प्राणियों को भोगना होता है ।११। किसी को सताना कदापि उचित नहीं हैं, क्योंकि पीड़ित करने वाले को सूख की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी प्राप्ति नहीं होती ।१२। हेइन्द्र, तुमने लोभ और मोह के वशीभूत होकर ही ब्रह्म-हत्या की है उसी पाप का फल प्रत्यक्ष सामनें आ गया है ।१३। वृत्र नामक त्वष्टा-पुत्र देवताओं के द्वारा जन्म से ही अवध्य है जो दैत्य-सेना के साथ तुम्हारे वध के उद्देश्य से आ रहा है ।१४।

कोलाहलस्तदा जातस्तथा ब्रुवति वाक्पतौ ।
गन्धर्वा किन्नरा यक्षा मुनयश्च तपोधनाः ।१५
सदनानि विहायैवामराः सर्वे पलायिताः ।
तद्दृष्ट्वा महदाश्चर्यं शक्रश्चिंतापरायणः ।१६
आज्ञापयामास तदा सेनोद्योगाय सेवकान् ।
आनयध्वं वसून्रुद्रानश्विनौ च दिवाकरान् ।१७
पूषणं च भगं वायुं कुबेरं वरुणं यमम् ।
विमानेषु समारुह्याग्र सायुधाः सुरसत्तमाः ।१८
समागच्छंतु तरसा शत्रु रायांति सांप्रतम् ।
इत्याज्ञप्य सुरपतिः समारुह्य गजोत्तमम् ।१९
बृहस्पतिं पुरोधाय निर्गतो निजमन्दिरात् ।
तथैव त्रिदशाः सर्वे स्वं स्व स्वं वाहनमास्थिताः ।२०
युद्धाय कृतसंकल्पा निर्ययुः शस्त्रपाणयः ।
वृत्रोऽथ दानवैर्युक्तः संप्राप्तो मानसोत्तरम् ।२१

बृहस्पति अभी यह कह ही हैं थे कि सहसा अत्यन्त कोलाहल होने लगा और सब गन्धर्व, किन्नर यक्ष एवं मुनि आदि तपस्वी अपने-अपने घर छोड़कर भाग गये । यह देखकर इन्द्र को बड़ी चिन्ता हुई।१५-१६। फिर उन्होंने अपनें सेवकों को बुलाकर सेना एकत्रित करनें का आदेश बेते हुए कहा कि वसुगण रुद्रगण, अश्विद्वय, आदित्यगण, पूषा,भग,वायु कुवेर, वरुण, यम येह सभी अपनें-अपनें आयुधों से सुसज्जित होकर विमानारूढ़ हो और तत्काल यहाँ आवे क्योंकि शत्रु वेगपूर्वक चला आ रहा हैं । यह कहकर ईद्र अपनें ऐरावत पर चढ़े गये ।१७-१९।देवहित बृहस्पति को आगे करके अपने भवन से चले तथा अन्याय देंवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी अपने-अपने बाहनों पर चढ़कर चल दिए ।२०। उन सभी देवताओं युद्धका निश्चय करके शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित होकर प्रस्थान किया तभी अपनी विशाल सेना के सहित वृत्र भी मान-सरोवर के उत्तर तट पर आ गया ।२१।

पर्वतं देवतावासं रम्य पादप शोभितम् ।
इन्द्रोऽप्यागत्य संग्रामं चकार मानसोत्तरे ।२२
पर्वते देवतायुक्तो वाचस्पति पुरः सरः ।
तत्राभूद्दारुण युद्धं वृत्रवासवयोस्तदा ।२३
गदासिपरिघैः पाशैर्बाणैः शक्तिपरश्वधैः ।
मानुषेण प्रमाणेन संग्रामः शरदां शतम् ।२४
बभूव भयदो नृणामृषीणां भावितात्मनाम् ।
बरुणः प्रथमं भग्नस्ततो बायुगणः किल: ।२५
यमो बिभावसुः शक्रः सर्वे ते निर्गता रणात् ।
पलायनपरान्दृष्ट्वा देवानिन्द्रपुरोगमान् ।२६
वृत्रोऽपि पितरं प्रागादाश्रमस्थं मुदान्वितम् ।
प्रणम्य प्राह त्वष्टारं पितुः कार्यं मया कृतम् ।२७
इन्द्रः पदातिरगमन्मयाऽऽनीतो गजोत्तमः ।
ऐरावतोऽयं भगवन्गृहाण द्विरदोत्तमम् ॥२८

इंद्र ने वहीं कपनी रक्षा पंक्ति बनाई और उसी स्थान पर वृत्रासुर और इन्द्र के मध्य घोर संग्राम हुआ ।२२-२३। गदा, असि, परिध, आदि आयुधों के द्वारा चलते युद्ध को सौ मानवी वर्ष हो गए ।२४। मनुष्य और ऋषि अत्यन्त आतंकित होंउठे । तभी वरुण भाग खड़े हुए और फिर वायुगण ने भी पलायन कर दिया।२५। फिर यम,अग्नि और इन्द्रादि सभी देवता युद्ध-भूमि की छोड़कर भाग गये । यह देखकर प्रसन्नताको प्राप्त हुआ वृत्रासुर आश्रम मैं निवास करने वाले अपने पिता त्वष्टा के पास जाकर बोला—हे पिताजी ! मैंने आपकी आज्ञानुसार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्य सम्पन्न कर डाला ।२६-२७। इन्द्र तो पैदल ही भाग गया । उसके ऐरावत को मैं यहाँ ले आया हूँ, उसे आप स्वीकार कीजिए ।२८।

इति पुत्रवचः श्रुत्वा त्वष्टा प्राह मुदान्वितः ।
पुत्रवानद्य जातोऽस्मि सफलं मम जीवितम् ।२९
शृणु वक्ष्याम्यहं पुत्र हितं तेऽद्य निशामय ।
तपः कुरु महाभाग सावधानः स्थिरासनः ।३०
विश्वासो नैव कर्तव्य केषांचित्पाकशासनः ।
शत्रुस्ते छलकर्ताऽस्ति नानाभेदविशारदः ।३१
तपसा प्राप्यते लक्ष्मीस्तपसा राज्यमुत्तमम् ।
तपसा वलवृद्धिः स्यात्संग्रामे विजयस्तथा ।३२
आराध्य द्रुहिणं देवं लब्ध्वा वरमनुत्तमन् ।
जहि शक्रं दुराचारं ब्रह्महत्यासमावृतम् ।३३
सावधानः स्थिरोभूत्वा दातारं भज्ञशङ्करम् ।
वांछितं सत्वरं दद्यात्सन्तुष्टश्चतुराननः ।३४
तापसो मे हतः पुत्रो निरागः पाप्मनायतः ।
न विंदामि सुख वृत्रं त्वं मामुद्धर दुःखितम् ।३५

व्यासजी वोले पुत्र के ये वचन सुनकर त्वष्टा से प्रसन्न होकर कहा—मैं अपने पुत्र को आज जान रहा हूँ, आज मेरा जीवन सुफल हो गया है ।२९। हे पुत्र अब मैं तुम्हारे हित की जो वात कहता हूँ, उसे सुनो । हे महाभाग ! अव तुम स्थिर आसन लगाकर सावधानी पूर्वक तपस्या करो।३०। किसीपर विश्वास कभी मत करना, क्योंकि विभिन्न भेद-नीतियों में विशारद शत्रु महा मछली इन्द्र अभी जीवित हे ।३१। तप से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तप से श्रेष्ठ राज्य, वल तथा युद्ध में विजय श्री उपलब्ध होती है ।३२। इसलिए आप भी तप करके ब्रह्माजी को प्रसन्न करो और उनसे श्रेष्ठवर प्राप्त करके उस दुराचारी एव ब्रह्म-हत्यारे इन्द्र का वध कर डालो ।३३-३४। हे पुत्र !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस पापी ने मेरे तपस्वी और निरपराध पुत्र की हत्या की है, इसलिए हे वृत्र मेरा चित्त सुखी नहीं है। अब मुझें दुःखित को उबारकर सुखी करो।३५।

तदाकर्ण्य पितुर्वाक्यं वृत्रः क्रोधयुतस्तदा।
आज्ञामादय च पितुर्जगाम तपसे मुदा।३६
गन्धमादनमासाद्य पुण्यां देवधुनीं शुभाम्।
स्नात्वा कुशासनं कृत्वा संस्थितश्च स्थिरासनः।३७
त्यक्त्वान्नं वारिपानं च योगाभ्यासपरायणः।
ध्यायन्विश्वसृजं चित्ते सोपविष्टः स्थिरासने।३८
मघवा तं तपस्यां तं ज्ञात्वा चितासुरो ह्यभूत्।
गन्धर्वान्प्रेषयामास विघ्नार्थं पाकशासनः।३९
यक्षांश्च पन्नगान्सपन्किन्नरानमितैजसः।
विद्याधरानप्सरसो देवदूताननेकशः।४०
उपायास्तैः वृताः सम्यक्तपोविघ्नाय मायिभिः।
न चचाल ततो ध्यानात्वांष्ट्रः परमतापसः॥४१

व्यासजी बोले—पिता के ये वचन सुनकर वृत्र क्रौध में भर गया और आज्ञा लेकर तपस्या करने के लिए चला। गन्धमादन पर्वत पर पहुँचकर मन्दाकिनी में स्नान किया और फिर कुशके आसन पर स्थिर होकर बैठ गया।३६-३७।उसने योगाभ्यास करतेहुए अन्न और जलका परित्याग कर दिया और विश्व रचयिता ब्रह्मा का ध्यान करने लगा।३८। उसके तप की बात जानकर चिंतित हुए इन्द्र ने विघ्न उपस्थित करने के लिए गन्धर्वों को वहाँ भेजा।३९। उनके पीछे-पीछे यक्ष,पन्नग, सर्प, किन्नर, विद्याधर, अप्सरागण और देवदूतोंको भेजा।४०। उनसभी मायावियों ने वृत्र के तप में विघ्न डालने के अनेक सम्मिलित प्रयास किए, परन्तु उसका ध्यान भङ्ग करने में उन्हें किंचित् भी सफलता नहीं मिली।४१।

———

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृत्रासुर को वर प्राप्ति

निर्गत्तास्ते परावृत्तास्तपोविघ्नकरा सुराः ।
निराशाः कार्यसंसिद्ध्यै तं दृष्ट्वा दृढचेतसम् ।१
जाते वर्षशते पूर्णे ब्रह्मा लोकपितामहः ।
तत्राजगाम तरसा हंसारूढश्चतुर्मुखः ।२
आगत्य तमुवाचेदं त्वष्ट्ट पुत्र सुखी भव ।
त्यक्त्वा ध्यानं ब्रूहि ददामि तव वांछितम् ।३
तपसा तेऽद्य तुष्टोऽस्मि त्वां दृष्ट्वाचातिकर्शितम् ।
वरं वरय भद्रं ते मनोऽभिलषितं तव ।४
वृत्रस्तदाऽतिविशदां पुरतो निशम्य
वाचं सुधासमरसं जगदेककर्तुः ।
संत्यज्य योगकलनां सहसोदतिष्ठत
सैजातहर्षनयनाश्रुकलाकलापः ।५
पादौ प्रणम्य शिरसा प्रणयाद्विधातु
र्बद्धांजलिः पुरत एव समाससाद ।
प्रोवाच तं सुवरदं तपसा प्रसन्नं
प्रेम्णाऽतिगद्गदगिरा विनयेम नम्रः ।६
प्राप्तं मया सकलदेवपदं प्रभोऽद्य
यद्दर्शन तव सुदुर्लभमाशु जातम् ।
वाञ्छास्ति नाथ मनसि प्रवणे दुरापा
तां प्रब्रवीमि कमलासन वेत्सि भावम् ।।७

व्यासजी बोले—हे जनमेजय ! वृत्र की दृढ़ता देखकर विघ्नकारी सभी देवता कार्य सफल होने से निराश होकर लौट गये ।१। वृत्र को इस प्रकार कठिन तपस्या करते-करते सौ वर्ष व्यतीत हो गये, तब हंसारूढ़ चतुर्मुख ब्रह्माजी सहसा उसके समक्ष प्रकट हुए ।२। उन्होंने आते ही कहा कि हे त्वष्टासुत ! सुखी हो । ध्यान को छोड़कर अपना इच्छित बता, वही पर तुझे दूंगा ।३। तुम्हें तपस्या से ऐसा दुर्बल देख-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर मैं प्रसन्न हुआ हूँ। तुम्हारा कल्याण हो, अपना मन-चाहा वर माँगलो ।४। व्यासजी बोले—हे राजन्! विश्वमें एक मात्र स्रष्टा ब्रह्माजी को अपने सामने देखकर वृत्रासुर ध्यान छोड़कर खड़ा हुआ। उस समय उसके नयनों से हर्ष के आँसू बहने लगे ।५। उसने प्रीति सहित उनको प्रणाम किया और हाथ जोड़कर गद् गद् कंठसे कहने लगा ।६।हे प्रभो! यद्यपि आप मेरे मन को जानते हैं, फिर भी मैं अपनी दुर्लभ इच्छा निवेदित करता हुँ ।७।

मृत्युश्च मा भवतु मे किल लोहकाष्ठ-
शुष्कार्द्र वंशनिचयैरपरैश्च शस्त्रैः।
वृद्धिं प्रयातु मम वीर्यमतीव युद्धे
यस्माद्भवामि सबलैरमरैरजेयः ।८
इत्थं सप्रार्थितो ब्रह्मा तमाह प्रहसन्निव।
उत्तिष्ठ गच्छ भद्रं ते वांछित सफलं सदा ।९
न शुष्केण न चाऽऽर्द्रेण न पाषाणेन दारुणा।
भविष्यति च ते मृत्युरिति सत्यं ब्रवीम्यहम् ।१०
इति दत्वा परब्रह्मा जगाम भुवनं परम्।
वृत्रस्तु तं वरं लब्ध्वा मुदितः स्वगृहं ययौ ।११
शशंस पितुरग्रे तद्वरदानं महामतिः ।
त्वष्टा तु मुदितः प्राप्तं पुत्रं प्राप्तवरं तदा ।१२
स्वस्ति ते-स्तु महाभाग जहि शक्रं रिपुं मम।
हत्वाऽऽगच्छ त्रिशिरसो हन्तारं पापसंयुतम् ।१३
भव त्वं त्रिदशाधीशः संप्राप्य विजयं रणे।
ममार्धिं छिंधि विपुलं पुत्रनाशसमुद्भवम् ।।१४

मेरी मृत्यु, लोह, काष्ठ, शुष्क, आर्द्र, गाँसों द्वारा बने किसी शस्त्र से न हों और मै देवताओं से कभी जीता न जा सकूँ ।८। व्यास जी बोले—वृत्र की प्रार्थना सुनकर मुस्काते हुए ब्रह्माजी ने कहा—अच्छा वत्स ! उठकर अपने घर जा, तेरी सब कामनायें पूर्ण होंगी ।९। किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।९। किसी शुष्क या आर्द्र पदार्थ, काष्ठ या पाषाण आदि से निर्मित शस्त्रास्त्र में तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी, यह मैं सत्य कहता हूँ ।१०। इस प्रकार वर देकर ब्रह्माजी अपने लोक को गये और प्रसन्न होता हुआ वृत्र अपने घर चला गया ।११। उससे अपने पिता को वर-प्राप्ति की बात सुनाई ।१२। वे प्रसन्न होकर बोले हे महाभाग ! तुम शीघ्र ही मेरे पुत्र त्रिशिरा के वधिक इन्द्र को मार डालो ।१३। इससे तुम देवताओंको जीतकर राजा बनोगे और तुम हत्यासे उत्पन्न मेरी व्याकुलता दूर करोगे ।१४।

इति तस्य वचः श्रुत्वा वृत्रः परमदुर्जयः ।
रथमारुह्य तरसा निर्जगाम पितुर्गृहात् ।१५
तमागच्छंतमाज्ञाय तुषाराडपि सत्वरः ।
सेनोद्योगं भयत्रस्तः कारयामास भारत ।१६
गृध्रव्यूहं ततः कृत्वा संस्थितः पाकशासनः ।
तत्राजगाम वेगात्तु वृत्रः परबलार्दनः ।१७
देवदानवयोस्तावत्संग्रामस्तुमुलोऽभवत् ।
वृत्रावासवयोः संख्ये मनसा विजयैषिणोः ।१८
ततः प्रववृते युद्धं तयोर्लोकभयप्रदम् ।
वर्षाणामयुतं यावद्दारुणं लोमहर्षणम् ।१९
यदा व्यवर्धत रणे वृत्रो वरमदावृतः ।
पराजितस्तदा शक्रस्तेजसा तस्य धर्षितः ।२०
जग्मुस्त्यक्त्वा रणे सर्वे देवा इन्द्रपुरोगमाः ।
गृहीतं देवसदनं वृत्रेणाऽऽगत्य रंहसा ॥२१

व्यासजी बोले—हे राजन् ! पिता के वचन सुनकर वृत्र रथ पर चढ़कर घर से चल दिया ।१५। हे भारत ! उसके आगमन का समाचार सुनकर भयभीत हुए इन्द्र ने भी अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दी ।१६। इस प्रकार गृध्रव्यूह की रचना करके इन्द्र युद्ध क्षेत्र में जा डटे । तभी बड़े वेगपूर्वक वृत्र भी विशाल सेना सहित वहाँ आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुँचा ।१७। तब देवताओं और दैत्यों में घोर संग्राम छिड़ गया । इन्द्र और वृत्रासुर के मध्य वह भीषण युद्ध पूरे दस हजार वर्षों तक निरंतर चलता रहा ।१८-१९। वर के मद से उन्मत्त वृत्रासुर उस युद्ध में प्रबल रहा और इंद्र उससे पराजित हो गये ।२०। जब इंद्रादि सब देवता युद्ध क्षेत्र से पलायन कर गये, तब वृत्रासुर ने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया ।२१।

वृत्रः सुरपदं प्राप्य बभूव मदगर्वितः ।
त्वष्टाऽतीव सुखं प्राप्य मुमोद सुतसंयुतः ।२२
अमन्त्रयन्हितं देवा मुनिभिः सह भारत ।
किं कर्तव्यमिति प्राप्ते विचिन्त्य भयमोहिताः ।२३
जग्मुः कैलासमचलं सुरा शक्रसमन्विताः ।
महादेवं प्रणम्योचुः प्राञ्जलयो भृशम् ।२४
देवदेव महादेव कृपासिन्धो महेश्वर ।
रक्षास्मन्भयभीतांस्तु वृत्रेणाऽतिपराजितान् ।२५
ब्रह्माणं पुरतः कृत्वा वयं सर्वे हरेः क्षयम्
गत्वा समेत्य तं विष्णुं चिंतयामोऽवधोद्यमम् ।२६
इति संचिन्त्य ते सर्वे ब्रह्मा शक्रः सशंकरः ।
जग्मुर्विष्णोः क्षयं देवाः शरण्यं भक्तवत्सलम् ।२७
गत्वा विष्णुपदं देवास्तुष्टुवुः परमेश्वरम् ।
प्रत्यक्षोऽभूज्जगन्नाथस्तेषां स कमलापतिः ।२८
सम्मान्य च सुरान्सर्वानित्युवाच पुरः स्थितः ।
किमागताः स्मः लोकेशा हरब्रह्मसमन्विताः ।२९
इति श्रुत्वा हरेर्वाक्यं नोचुर्देवा रमापतिम् ।
चिन्ताविष्टाः स्थिताः प्रायः सर्वे प्रांजलयस्तदा ।३०

स्वर्ग का राज्य पाकर वृत्रासुर और भी मदोमत्त हो गया, जिसय से प्रसन्न हुए त्वष्टा उस राज्य में अपने पुत्र के सहित विहार करने लगे ।२२हे राजन्! कि कर्त्तव्य-विमूढ़ और भय ग्रस्त हुए देवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुनियों के पास जाकर अपनें कष्ट दूर होने का उपाय पूछने लगे।२२। अंत में इंद्र सहित सभी देवता कैलाश पर्वत पर जाकर शिवजी को प्रणाम करके कर बद्ध निवेदन करनें ।२४। हे देवदेव हे महादेव ! हे कृपासिंधो ! हम वृत्रासुर से पराजित होकर अत्यंत भय-ग्रस्त हो रहे हैं, हमारी रक्षा कीजिए ।२५। शिवजी बोले हम ब्रह्माजी को आगे करके विष्णु के पास चलें, तब उनके साथ मिलकर वृत्र-नाश का उपाय सोचेंगे ।२६। व्यासजी बोले—यह निश्चय करके शङ्कर सहित ब्रह्मा और इंद्रादि सब देवता भक्तवत्सल भगवान् विष्णु की शरण में गये ।२७। वहाँ जाकर उन्होंने उन परमेश्वर की स्तुति की तब वे जगन्नाथ कमलापति उसके समक्ष प्रकट हुए ।२८। उन्होंने सब देवताओं का सम्मान करते हुए पूछा कि हे लोकपालों ! आप सब ब्रह्मा और शिव को साथ लेकर यहाँ किस लिए पधारे हैं ।२९। व्यासजी बोले कि देव गण भगवान विष्णु को कुछ उत्तर न दे सके और हाथ जोड़कर चिन्ता तुर भाव मौन खड़े रहे ।३०।

देवी का वरदान

तथा चिन्तातुरान्वीक्ष्य सर्वान्सर्वार्थतत्ववित् ।
प्राह प्रेमभरोद्भ्रातान्माधवो मेदिनीपते ।१
किं मौनमाश्रिता यूयं ब्रुवंतु कारणं सुराः ।
सदसद्वाऽपि यच्छ्रुत्वा यतिष्ये तन्निवारणे ।२
किमज्ञातं तव विभो त्रिषु लोकेषु वर्तते ।
सर्वं वेद भवान्कार्यं किं पृच्छसि पुनः पुनः ।३
त्वया पूर्वं बलिर्बद्धः शक्रो देवाधिपः कृतः ।
वामनं वपुरास्थाय क्रान्तं त्रिभुवनं पदैः ।४
अमृतं त्वाहृतं विष्णो दैत्याश्च विनिपातिताः ।
त्वं प्रभुः सर्वदेवानां सर्वापद्विनिवारणे ।५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न भेतव्यं सुरवरा वेद्म्युपायं सुसंमतम् ।
तद्वधाय द्रवक्ष्यामि येन मौख्यं भविष्यति ।६
अवश्यं करणीय मे भवतां हितमात्मना ।
बुद्धया बलेन चार्थेन येन केन छलेन वा ।७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! सभी तत्वों के ज्ञाता भगवान विष्णु ने देवताओं को चिन्तातुर देखकर कहा।१। अरे तुमने मौन का अवलम्ब क्यों लिया है, उसका कारण कहना चाहिए, मैं उसके निवारण का कुछ उपाय करूँगा।२। देवता बोले-हे विभो ! आप सर्वज्ञ हैं फिर भी हमारे तीन पैर से पृथिवी नाप कर इन्द्र को पुनः राज्य दिया था ।४। आपने ही अमृत छीन कर दैत्यों का नाश किया था । इस प्रकार देवताओं के सब संकट आप ही दूर करते हैं ।५। विष्णु बोले—हे देवताओं वृत्रासुर वध का उपाय मैं जानता हूँ, आप उसे सुनकर प्रसन्न होंगे । वृद्धि, बल, धन अथवा छल कपट आदि किसी भी उपाय से मुझे आपका हित करना पड़ेगा ।६-७।

दुःसाध्योऽसौ सुराः शत्रु विना सामप्रतारणम् ।
प्रलोभ्य वशमानेयो हन्तव्यस्तु ततः परम् ।८
भवन्तः सहिताः सर्वे देवीं भगवतीं शिवाम् ।
गच्छध्वं शरणं भावैः स्तोत्रमन्त्रैः सुरोत्तमाः ।९
वन्दामहे सदा देवी सात्विकीं प्रकृतिं पराम् ।
सिद्धिदां कामदां कामां दुरापामकृतात्मभिः ।१०
इन्द्रोऽपि तां सताराध्य हनिष्यति रिपुं रणे ।
मोहिनी सा महामाया मोहयिष्यति दानवम् ।११
मोहितो मायया वृत्रः सुखसाध्यो भविष्यति ।
प्रसन्नायां पराम्बायां सर्वं साध्यं भविष्यति ।१२
नोचेन्मनोरथावाप्तिर्न कस्यापि भविष्यति ।
अन्तर्यामिस्वरूपा सा सर्वकारणकारणा ।१३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्मात्तां विश्वजननीं प्रकृतिं परमादृताम् ।
भजध्वं सात्विकैर्भावैः शत्रुनाशाय सत्तमाः ।१४

हे देवगण ! सामनीतिके द्वारा कूटनीतिका प्रयोग करना चाहिए। इसलिये प्रलोभन देकर उसे वश में करना और फिर अवसर देख कर मार डालना चाहिए ।८। भगवती शिवां की शरण में जाकर स्तोत्र मंत्रों से उनकी स्तुति करनी चाहिए ।९। हम सभी उन सात्विकी परा-प्रकृति, भगवती की वन्दना करते हैं ।१०। उन्ही भगवती की आराधना द्वारा इन्द्र भी अपने शत्रु को मारने में समर्थ होंगे। वे भगवती ही उस दानव को विमोहित कर सकती हैं ।११। जब वह मोहित हो जायगा, तब उसका मारना सुगम होगा। उन पराशक्ति अम्बिका के प्रसन्न होने पर कार्य सिद्ध हो जायगा ।१२।अन्य कोई उपाय आपकी कामना-सिद्धि का नहीं है। वे सबकी कारण–क्या भगवती घट-घट की जानने वाली हैं ।१३। इसलिए हे श्रेष्ठ सुरगण ! शत्रु के विनाशार्थ आप श्रद्धा पूर्वक उन्हीं विश्व जननी परमा प्रकृति का सात्विक भाव से भजन कीजिए ।१४।

सर्वथा कार्यसिद्धिं सा करिष्यति सुरोत्तमाः ।
एवं ते दत्ततयो विष्णुना प्रभविष्णुना ।१५
जग्मुस्ते मेरुशिखरं मन्दारद्रुममण्डितम् ।
एकान्ते संस्थिता देवाः कृत्वा ध्यानं जपं तपः ।१६
तुष्टुवुर्जगतां धात्रीं सृष्टिसंहारकारिणीम् ।
भक्तकामदुधामंबां संसारक्लेशनाशिनीम् ।१७
देवि प्रसीद पारिपाहि सुरान्प्रतप्तान्
वृत्रासुरेण समरे परिपीडितांश्च ।
प्राप्तांस्त्वदंघ्रिकलं शरणं सदैव ॥१८
त्वं सर्वविश्व ननीं परिपालयास्मान्
पुत्रानिवार्तिमरनान्नरिपुसकंटेस्मिन् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मातर्न तेऽस्त्यविदितं भुवनत्रयेऽपि
कस्मादुपेक्षसि सुरानसुरप्रतप्तान् ।१९
वृत्रे दया तव यदि प्रथिता तथापि
जह्येनमाशु जनदुःखकरं खलं च ।
पापात्समुद्धर भवानि शरैः पुनाना
नोचेत्प्रवास्यति तमो ननु दुष्टबुद्धिः ।२०
ते प्रापिताः सुरवनं विबुधारयो ये
हत्वा रणेऽपि विशिखैः किल पावितास्ते ।
त्राता न किं निरयपातभयाद्दयार्द्र
यच्छत्रवोऽपि न हि किं विनिहंसि वृत्रम् ॥२१

वे भगवतीं सर्वथा कार्य-सिद्ध करेगी। भगवान विष्णु का ऐसा परामर्श पाकर वे एकान्त ध्यान, जप में लग गये।१५-१६। इस प्रकार वे सृष्टि संहार कर्त्री, भक्तों को काम्य देने वाली, संसार क्लेश-नाशिनी देवी की स्तुति में तन्मय हुए।१७। देवता बोले हे देवी! प्रसन्न होइये, वृत्रासुर ने हम देवताओं को पराजित कर दिया है, सब हम आप पर मार्थ रूपिणी की शरण में आये हैं।१८। आप सभी की माता है। शत्रु सङ्कट में पड़े हुए हम देवताओं को अपनी पुत्र समझ कर हमारी रक्षा कीजिए, तीनों लोकों की सब घटनायें आपको विदित हैं फिर भी आप हमारी उपेक्षा क्यों करती हैं?।१९। हे माता! यदि आप वृत्र को भी अपना पुत्र समझकर उस पर दया करती हो, तो भी उसका वधकर दीजिए। क्योंकि वह दुराचारी आपके बाणोंके प्रहार से मृत्यु को प्राप्त होकर नरकगामी होने से बच जायगा।२०। पहिले भी आपने जिन दैत्यों का वध किया था, वे नन्दन-काननमें बिहार कर रहे हैं तो वैसे ही वृत्र को मारकर भी आप उसका उद्धार क्यों नहीं कर देती।२१।

एवं स्तुता सुरदेवी प्रत्यक्षा साऽभवत्तदा ।
चारुरूपधरा तन्वी सर्वाभरणभूषिता ।२२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाशांकुशवराभीतिलसद्बाहुचतुष्टया ।
रणत्किंकिथिकाजालरशनाबद्धसत्कटिः ।२३
कलकंठीरवा कांता क्वणत्कंकणनूपुरा ।
चन्द्रखण्डसमावद्धरत्नमौलिविराजिता ।२४
मन्दस्मिताऽरविन्दास्या नेत्रत्रयविभूषिता ।
पारिजातप्रसूनाच्छारुणवर्णसमप्रभा ॥२५
रक्ताम्बरपरीधाना रक्तचन्दनचर्चिता ।
प्रसादसुमुखी देवी करुणारससागरा ।२६
प्रणेमुस्तां समालोक्य सुरा देवीं पुरः स्थिताम् ।
तानाहं प्रणतानंवा किं वः कार्यं ब्रुवन्तु माम् ।२७
मोहयैनं रिपुं वृत्रं देवनामतिदुःखदम् ।
आयुधेनो बलं देहि हतः स्याद्येन नो रिपुः ।२८
तथेत्युक्त्वा भगवती तत्रैवांतरधीयत ।
स्वानि स्वानि निकेतानि जग्मुर्देवा मुदान्विताः ॥२९

व्यासजी बोले इस प्रकार देवताओं द्वारा स्तुत हुई देवी सहसा प्रकट हो गयीं । वे सर्वाभरणों से विभूषित कोमलांगी और सुन्दर वेश से युक्त थी ।२२। उनके हाथोंमें पाश, अंकुश पर मुद्रा और अभयमुद्रा सुशोभित थीं तथा कटि कोंधनी के घुंघरुओं से मंजु घोष हो रहा था ।२३। वे करों के कङ्कण और चरणों में नुपुर तथा मस्तक पर अर्द्धचन्द्र और रत्नमणि मण्डित मुकुट धारण किए हुए थीं ।२४। उनके मुखारविन्द पर मुस्कराहट खिली हुई थीं, परिजात कुसुम जैसी लाल देह कान्ति और तीन नेत्र थे ।२५। लाल रंग के परिधानों और लाल चंदन से चर्चित देह वाली प्रसन्न-वन्दना भगवती करुणारस की समुद्र थी ।२६। उन देवी को सामने देखकर उन देवताओंने उन्हें प्रणाम किया । तब देवी ने पूछा कि आपका क्या कार्य है. सो कहिए ।२७। देवता बोले कि हे माता ! आप देवताओं के शत्रु वृत्रासुर को मोह मे डाल दीजिए जिससे हम अपने शत्रु से विनाश में समर्थ हो सकें ।२८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यासजी बोले—'ऐसा ही हो' कहकर भगवती अन्तर्धान हो गईं और देवता भी प्रसन्न होकर अपने-अपने स्थान को चले गये ।२९।

वृत्रासुर वध

एवं प्राप्तवरा देवा ऋषयश्च तपोधनाः ।
ददृशुस्तत्र तं वृत्र ज्वलंतमिव तेजसा ॥१
धक्ष्यंतमिव लोकास्त्रीन्ग्रसंतमिव चामरान् ।
ऋषयोऽथ ततोऽभ्येत्य वृतमूचुः प्रियं वचः ।२
देयकार्यार्थसिद्ध्यर्थं समायुक्तं रसात्मकम् ।
वृत्र वृत्र महाभाग सर्वलोकभयंकर ।३
व्याप्तं त्वयैतत्सकल ब्रह्मांडमखिलं किल ।
शक्रेण तव वैरं यत्तत्तु सौख्यविधातकम् ।४
युवयोर्दुःखदं कामं चितावृद्धिकरं परम् ।
न त्वं स्वपिषि संतुष्टो न चापि मघवा तथा ।५
सुखं स्वपिति चिंतार्तो द्वयोर्यद्वैरिजं भयम् ।
युवयोर्युध्यतोः कालो व्यतीतस्तु महानिह ।६
पीड्यन्ते च प्रजाः सर्वाः सदेवासुरमानवाः ।
संसारेऽत्र सुख ग्राह्यं दुःखं हेयमिति स्थितिः ॥७

व्यासजी बोले—वर प्राप्त होने पर देवताओं ने ऋषियों के साथ जाकर वृत्रासुर को असाधारण तेज से जगमगाते हुए देखा ।१। वह अपने तेज से त्रिलोकी को भस्म कर देने वाला प्रतीत हो रहा था। ऋषियों ने उजके पास जाकर सामनीति युक्ति मधुर वाणी में कहा। ऋषि बोले—हे वृत्र ! हे महाभाग ! हे सबलोक भयङ्कर ! आप अखिल विश्व में व्याप्त हो रहे हैं। इन्द के साथ चलने वाली शत्रुता आपके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख में बाधा उपस्थित किये हुए हैं ।२-४। उस वैर के कारण आप दोनों ही चिन्तित रहते हैं और कभी भी सुख की नींद नहीं सो पाते। इस पर भी आपको युद्ध करते-करते बहुत काल व्यतीत हो गया है ।५-६। आपके संघर्ष से देवता, दैत्य और मनुष्य सभी सन्तप्त हैं। इस लिए सुख को ग्रहण करके दुःख का त्याग कर देना ही उचित है ।७।

सख्यं भवतु ते वृत्र शक्रेण सह नित्यदा।
अवाप्स्यसि सुख त्वं च शक्रश्चापि निरन्तरम् ।८
सुखवासं गमिष्यामः शांते वैरेऽधुनैव वाम्।
संग्रामे युवयोर्धीर वर्तमाने दिवानिशम् ।९
पीड्यन्ते मुनयः सर्वे गन्धर्वाः किन्नरा नराः।
सर्वेषां शांतिकामानां सख्यमिच्छामहे वयम् ।१०
साक्षिणं पावकं कृत्वा मुनीनां सन्निधौ किल
वृत्रस्तु वचनैस्तस्य विश्वासमगमत्तद ।११
बभूव मित्रवच्छक्रो सहचर्यापरायणः।
कदाचिन्नंदने चोभौ कदाचिद्गन्धमादने ।१२
कदाचिदुदधेस्तीरे मोदमानौ विचेरतुः।
एवं कृते च संधाने वृत्रः प्रमुदितोऽभवत् ।१३
क्षक्रोऽपि वधकामस्तु तदुपायानचिन्तयत् ।
रन्ध्रान्वेषो समुद्विग्नस्तदाऽसीन्मघवा भृशम् ।।१४

हे वृत्र ! हम चाहते हैं कि इन्द्र के साथ आपकी स्थिर मैत्री हो जाय इससे आप और इन्द्र दोनोंही निरन्तर सुख प्राप्त करते रहेंगे ।८ आप दोनोंकी शत्रुता नष्ट होने पर हमें अत्यन्त सुख होगा, युद्ध से भी अत्यन्त पीड़ित हैं। शान्ति की कामना से हम आप दोनों की मित्रता के अभिलाषी हैं ।९-१०। तभी उन मुनियों के समक्ष इन्द्र ने अग्नि को साक्षी बनाकर सन्धि की शपथ ली, इससे वृत्र को उस पर विश्वास हो गया ।११। वृत्र और इन्द्र दोनों ऐसे मित्र हो गये। वे दोनों साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही साथ रहते तथा कभी नन्दन कानन और कभी गन्धमादन पर्वत पर विहार करते ।१२। कभी-कभी हर्षित हुए समुद्र तट पर विचरण करते थे । इस सन्धि से वृत्र को बड़ी प्रसन्नता हुई थी ।१३। परन्तु इंद्र सदा उसे मारने का उपाय सोचा करते थे ।१४।

एवं चिंतयतस्तस्य कालः समभिवर्तितः ।
विश्वासं परमं प्राप वृत्रः शक्रेऽतिदारुणे ।१५
एवं कतिचिदब्दानि गतानि समये कृते ।
वृत्रस्य मारणोपायान्मनसीन्द्रोऽयचिंतयत् ।१६
स कदाचित्समुद्रान्ते तमपश्यन्महासुरम् ।
संध्याकाल उपावृत्ते मुहूर्तेऽतीवदारुणे ।१७
संध्येय वर्तते रौद्रा न रात्रिर्दिवसो न च ।
हंतव्योऽयं मया चाद्य बलेनैव न संशयः ।१८
एकाकी विजने चात्र सम्प्राप्तः समयोचितः ।
एवं विचार्य मनसा संस्मार हरिमव्ययम् ।१९
तत्राजगाम भगवानदृश्यः पुरुषोत्तमः ।
वज्रमध्ये प्रविश्यासौ संस्थितो भगवान्हरिः ।२०
अजेयं सर्वथा सर्वदेवैश्च दानवैस्तथा ।
य द वृत्रं न हन्म्यद्य वंचयित्वा महाबलम् ।२१
न श्रेयो मम नूनं स्यात्सर्वथा रिपुरक्षणात् ।
अपां फेनं तदाऽपश्यत्समुद्रे पर्वतोपमम् ।२२

इस प्रकार विचार करते हुए कुछ वर्ष व्यतीत हो गये, परन्तु वृत्र इन्द्र पर पूर्ण विश्वास करने लगा ।१५। इस प्रकार मेल हुए कुछ वर्ष व्यतीत हो गये, तब तक इंद्र ने उसके वधका उपाय सोच लिया ।१६। तभी एक दिन इंद्र ने उस महान असुर को समुद्र तट पर भ्रमण करते देखा । उस समय अत्यंत दारुण संध्या काल ।१७। इंद्र ने सोचा कि संध्या हो गई,न दिन हैं न रात्रि । इसलिये अब इसे प्रयत्न पूर्वक मार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डालना चाहिए। इस समय वह अकेला है और समय भी उचित है, यह सोच कर इंद्र ने हरि का स्मरण किया।१८-१९। स्मरण करते ही भगवान विष्णु अदृश्य रूप में आकर इंद्र के वज्र में प्रविष्ट हो गए।२०। तभी इंद्र ने सोचा कि यह दानव सर्वथा अजेय है इसलिये इस लिये इसे सामना करके तो नहीं मारा जा सकता। यदि धोके से मारने पर यह बच जाता है तो फिर मेरा कल्याण नहीं है। तभी इंद्र ने समुद्र में पर्वत के समान ढेर देखा।२१-२२।

नायं शुष्को नाचार्द्रोऽयं न च शस्त्रमिदं तथा।
अपां फेनं तदा शक्रो जग्राह किल लीलया।२३
पराशक्तिं च सस्मार भक्त्या परमया युतः।
स्मृतमात्रा ततो देवी स्वांश फेने न्यधापयत।२४
वज्रं तदावृतं तत्र चकार हरिसंयुतम्।
फेनावृतं पवि तत्र शक्रश्चिक्षेप तं प्रति।२५
सहसा निपपाताशु वज्राहत इवाचलः।
वासवस्तु प्रहृष्टात्मा बभूव निहते तदा।२६
ऋषयश्च महेन्द्रं तमस्तुवन्विविधैः स्तवैः।
हतशत्रुः प्रहृष्टात्मा वासवः सह देवतैः।२७
देवीं सम्पूजयामास यत्प्रसादाद्धतो रिपुः।
प्रसादयामास तदादेवीं स्तोत्रैर्नानाविधैरपि।२८
देवोद्याने पराशक्तेः प्रसादमकरोद्धरिः।
पद्मरागमयीं मूर्ति स्थापयामास वासवः।२९

न यह शुष्क है, न गोला है,और न यह कोई शस्त्रही है यह सोचकर इन्द्र ने जल के उस फेन को उठाया।२३। फिर भगवती पराशक्ति का भक्ति-भाव से स्मरण किया तो भगवती ने तुरन्त उस फेन में अपना अंश स्थापित कर दिया।२४। भगवान विष्णु जिसमें प्रविष्ट हो चुकेथे, उस वज्र को फेन आवृत्त करके इन्द्र ने वृत्र पर प्रहार किया।२५। वज्र का आघात होते ही वज्र से विचूर्ण होने वाले पर्वत के समान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृत्र छिन्न-भिन्न हो गया, इस प्रकार वृत्र को मारकर इंद्र प्रसन्न हो उठे। तभी उन इंद्र की ऋषियों ने आकर स्तुति की और शत्रु नाश से देवता अत्यंत हर्षित हुए।२७। फिर जिन भगवती के प्रसाद से शत्रु मारा गया, उन अम्बिका का स्तोत्रादि के सहित इंद्रादि देवताओं ने पूजन किया।२८। नंदनकानन में भगवान् विष्णु ने भगवती का एक मंदिर बनवाया, जिसमें इंद्र ने भगवती की परागमणि युक्त मूर्ति स्थापित की।२९।

त्रिकालं महतीं पूजां चक्रुः सर्वेऽपि निर्जराः ।
तदाप्रभृति देवानां श्रीदेवी कुलदैवतम् ।३०
विष्णुं त्रिभुवनश्रेष्ठं पूजयामास वासवः ।
ततो हते महावीर्ये वृत्रे देवभयंकरे ।३१
प्रणत्रौ च शिवो वायुर्जहर्षदेवतास्तथा ।
हते तस्मिन्सगन्धर्वा यक्षराक्षसकिन्नराः ।३२
इत्थं वृत्रः पराशक्तिप्रवेशयुतफेनतः ।
तया कृतविमोहाच्च शक्रेण सहसा हतः ।३३
ततो वृत्रनिहन्त्रीति देवी लोकेषु गीयते ।
शक्रेण निहतत्वाच्च शक्रेण हत उच्यते ॥३४

तब से देवगण तीनों काल भगवती का पूजन करने लगे और वे श्री देवी देवताओं की कुलदेवी हो गई।३०। फिर इंद्र ने भगवान् विष्णु का पूजन किया और वृत्रके मरने पर शीतल मंद समीर प्रवाहित होने लगी। वृत्र का मरण होने पर देवता गंधर्व, यक्ष राक्षस, सभी प्रसंन हुए।३१-३२। भगवती के समुद्र फेन में प्रविष्ट होने से वृत्र को मतिभ्रम हो गया था इसलिए वह इंद्र के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ।३३। इसलिए वे पराशक्ति 'वृत्रघ्नी' नाम से प्रसिद्ध हुई और प्रत्यक्ष में इंद्र ने वृत्र का वध कर दिया था, इसलिए वह वृत्र हंता' कहे जाने लगे।३४।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहुष को इन्द्रपद-प्राप्ति

अथ तं पतितं दृष्ट्वा विष्णुर्विष्णुपुरीं ययौ ।
इन्द्रोऽपि भयसंत्रस्तो ययाविन्द्रपुरीं ततः ।१
त्वष्टा तु निहतं श्रुत्वा पुत्रमिद्रेण भारत ।
शशापैन्द्रं स शोकार्तः पापिष्ठं मित्रघातकम् ।२
यथा मे निहत पुत्रः प्रलोभ्य शपथैर्भृशम् ।
तथेंद्रोऽपि महद्दुःखं प्रानोतु विधिनिर्मितम् ।३
इति शप्त्वा सुरेशानं त्वष्टा तापसमन्वितः ।
मेरोः शिखरमास्थाय तपस्तेपे सुदुष्करम् ।४
न स्वास्थ्य प्राप गेहऽसौ सर्वसिद्धिसमन्विते ।
पौलोमो तं सभाहीनं दृष्ट्वा प्रोवाच वासवम् ।५
निःश्वसतं भयत्रस्तं नष्टसंज्ञं विचेतसम् ।
किं प्रभोऽद्य भयार्तोऽसि मृतस्ते दारुणो रिपुः ।६
नारातिर्बलवान्मेऽस्ति न शान्तिर्न सुखं तथा ।
ब्रह्महत्याभयद्राज्ञि विभेमि-सततं गृहे ॥७

व्यासजी बोले—हे राजन् ! वृत्र को पृथिवी परा गिरा देखकर भगवान विष्णु अपने धाम को चले गये तथा इन्द्र भी ब्रह्महत्या से व्याकुल होते हुए अपने लोक को चले गये ।१। हे भारत ! जब त्वष्टा को ज्ञात हुआ कि इन्द्र ने उनके पुत्र की हत्या कर दी है तो उन्होंने शोकार्त्त होकर पुत्रघाती इन्द्र को शाप दिया ।२। जिस प्रकार इन्द्र ने मेरे पुत्र को प्रलोभन देकर मार डाला है, वैसे ही वह विधाता द्वारा प्रदत्त महान दुःखों को प्राप्त होगा ।३। इन्द्र को इस प्रकार शाप देकर त्वष्टा सुमेरु पर्वत पर जाकर घोर तप करने लगे ।४। सर्वसिद्धि सम्पन्न गृह के होते हुए भी इन्द्र के चित्त में शान्ति नहीं थी, वे सभी में भी नहीं बैठते और अचेत से रह जाते, यह देखकर इन्द्राणी ने पूछा—हे प्रभो ! आपका दारुण बैरी तो नष्ट हो गया, फिर भी आप भयाकुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों है ? ।५-६। इस पर इन्द्र बोले–हे रानी ! कोई बलवान् शत्रु शेष न होते हुए भी में ब्रह्महत्या के भय से ऐसा व्याकुल हूँ कि मुझे अपने घर में भी सुख और शान्ति नहीं मिलती ।७।

किं करोमि क्व गच्छामि क्व शर्म मम जायते ।
इत्युक्त्वा वचनं शक्रः प्रियां परमकातराम् ।८
निर्जगाम गृहान्मन्दो मानसं सर उत्तमम् ।
पद्मनाले प्रविष्टोऽसौ भयार्तः शोककर्षितः ।९
असहायस्तुरापाडैश्चिन्तार्तो विकलेन्द्रियः ।
ततः प्रणष्टदेवेन्द्रे ब्रह्महत्याभयार्दिते ।१०
सुराश्चितातुराश्चासनुत्पाताश्चाभवन्नथ ।
ऋषयः सिद्धगन्धर्वा भयार्ताश्चाभवन्भृशम् ।११
अराजकं जगत्सर्वमभिभूतमुपद्रवैः ।
अवर्षणं तदा जातं पृथिवी क्षीणवैभवा ।१२
विच्छिन्नस्रोतसौ नद्यः सरांस्यनुदकानि वै ।
एवं त्वराजके जाते देवता मुनयस्तथा ।१३
विचार्य नहुषं चक्रुः सर्वे दिवौकसः ।
संप्राप्य नहुषो राजा धर्मिष्ठोऽपि रजोवलात् ।१४
बभूव विषयासक्तः पंचबाणशराहतः ।
अप्सरोभिर्वृतः क्रीडन्देवोद्यनिषु भारत ॥१५

मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ जिससे सुख प्राप्त हो व्यासजी बोले–अपनी पत्नी से यह कर अत्यन्त दुःखित हुए इन्द्र घर त्याग कर मानसरोवर चले। भय से कम्पित और शोकार्त्त इन्द्र की शक्ति का ह्रास हो गया था, वहाँ उस श्रेष्ठ सरोवर में जाकर वे एक कमल-नाल में प्रविष्ट हो गये ।८-९। अब उनकी सहायता करने वाला कोई नहीं था, वे चिन्तातुर और विकलेन्द्रिय इन्द्र जब वहाँ चले गयेथे ।१०। तब देवगण अत्यन्त चिंतित हो उठे तथा ऋषि, सिद्ध, गन्धर्व आदि सभी भयभीत हो गये ।११। इस प्रकार अराजकता के कारण सम्पूर्ण विश्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपद्रव ग्रस्त हो गया, अवृष्टि के कारण पृथिवी उपजाऊ नही रही।१२ जल-स्रोत सूखगये, नदियाँ जल-हीन हो गईं तब देवताओं और मुनियों ने विचार करके नहुषको इन्द्र पर प्रतिष्ठित कर दिया। तब धर्मात्मा नहुष में राजसी वृत्त उत्पन्न हो गयी और वह विषयासक्त होकर अप्सराओं से साथ विहार में निमग्न हो गया ।१३-१५।

शक्रपत्नीगुणाञ्छ्रुत्वा चकमे तां स पार्थिवः ।
ऋषीनाह किमिन्द्राणी नोपगच्छति मां किल ॥१६
भवद्भिश्चामरैः सर्वैः कृतोऽहं वासवस्त्विह ।
प्रेषयध्वं सुराः कामं सेवार्थं मम वै शचीम् ।१७
इति तस्य वचः श्रुत्वा देवाश्च मुनयस्तथा ।
तमूचुश्चातिसन्त्रस्ता नहुषं मदनातुरम् ।१८
इन्द्राणीमानयिष्यामः सामपूर्वं तवान्तिकम् ।
इत्युक्त्वा ते तदा जग्मुर्बृहस्पतिनिकेतनम् ।१९
ते गत्वांगिरसः पुत्रं प्रोचुः प्रांजलः सुराः ।
जानीमः शरणं प्राप्तामिद्राणीं तव वेश्मनि ।२०
सा देया नहुषायाद्य वासवोऽसौ कृतो यतः ।
वृणोत्वियं वरारोहा पतित्वेन वरवर्णिनी ।२१
उपायोऽन्नः प्रकर्तव्यो येन सोऽद्य प्रसीदति ।
अन्यथा कोपसंयुक्तो दुराराध्यो भविष्यति ।२२

फिर इन्द्राणी शची के रूप की प्रशंसा सुनकर नहुष ने उन्हें प्राप्त करने के विचार से ऋषियों से कहा कि इन्द्राणी मेरे निकट क्यों नहीं आती ? ।१६। हे देवगण ! जब आपने मुझे इन्द्र बनाया है तो शची को भी मेरी सेवा के लिए यहाँ भेज दीजिए ।१७। उस कामातुर नहुष के वचन सुनकर अत्यन्त भय-त्रस्त हुए देवता और मुनि उससे बोले ।१८। अच्छी बात है हम इन्द्राणी को सामनीति से यहाँ लावेंगे। यह कह कर वे बृहस्पति के घर गये ।१९। व्यासजी बोले कि वहाँ जाकर देवताओं ने बृहस्पति से कहा—हे गुरो ! शची ने आपके यहाँ शरण प्राप्त की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं ।२०। इन्द्र रूपी नहुष को उन्हें देना आवश्यक होगा, वह उसे पति रूप में स्वीकार कर ले ।२१। अथवा कोई अन्य उपाय हो तो करिए जिससे नहुष प्रसन्न हो जाय, अन्यथा, क्रोधित होने पर वह घोर अनर्थ कारी हो जायगा ।२२।

इन्द्रस्यागमने यत्नं कुरुताद्य कृतोद्यमाः ।
श्रुत्वा तद्वचनं देवा इन्द्राण्या रसवच्छुचि ।२३
मन्त्रयामासुरेकाग्राः शक्रार्थं नृपसत्तम ।
ते गत्वा वैष्णवं धाम तुष्टुवुः परमेश्वरम् ।२४
आदिदेवं जगन्नाथं शरणागतवत्सलम् ।
ऊचुश्चैनं समुद्विग्ना वाक्यं वाक्यविशारदाः ।२५
देवदेवः सुरपतिर्ब्रह्महत्याप्रपीडित ।
अदृश्यः सर्वभूतानां क्वापि तिष्ठति वासवः ।२६
त्राहि नः परमापन्नन्मोक्षं तस्य विनिर्दिश ।
देवानां वचनं श्रुत्वा कातरं विष्णुरब्रवीत् ।२७
यजतामश्वमेधेन शक्रपापनिवृत्तये ।
पुण्येन हयमेधेन पावितः पाकशासनः ।२८
पुनरेष्यति देवानामिन्द्रत्वमकुतोभयः ।
हयमेधेन सन्तुष्टा देवी जगदम्बिका ।२९

तब शची ने उन देवताओं से कहा कि आप तो बड़े उद्यमी हैं, मेरे पति के यहाँ लाने का प्रयत्न कीजिये । यह सुनकर देवता प्रयत्न पूर्वक इन्द्र के विषय में सोचने लगे और फिर वे भगवान् विष्णु आदि देव, जगदीश्वर और भक्ति वत्सल हैं,उनसे वाणी-कुशल देवताओंने कहा हे देवदेव ! सुरराज इन्द्र ब्रह्महत्या के शेष से प्रपीड़ित होकर कहीं छिपते हुए समय व्यतीत कर रहे ।२५-२६। हम घोर सङ्कट-ग्रस्तों की आप रक्षा करिये । हे प्रभो इन्द्र उस पापसे मुक्त हो जाय, वैसा उपाय बताइये । यह सुनकर भगवान विष्णु बोले ।२७। इस पाप से मुक्त होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए वे अश्वमेध करें तो सम्पूर्ण पाप धुल जायेंगे और भय-मुक्त होकर वे पुनः तुम्हारे इन्द्र बन सकेंगे। अश्वमेध देवी श्री जगदम्बा को प्रसन्न करने का एक सफल साधन है।२८-२९।

ब्रह्महत्यादिपापानि नाशयिष्यत्यसंशयम् ।
इन्द्राणी कुरुतान्नित्य भगवत्याः प्रपूजनम् ।३०
आराधनं शिवायास्तु सुखकारि भविष्यति ।
ते तु श्रुत्वा शुभां वाणीं विष्णोरमिततेजसः ।३१
जग्मुस्तं देशमनिशं यत्रास्ते पाकशासनः ।
तमाश्वास्य सुराः शक्रं बृहस्पतिपुरोगमाः ।३२
कारयामासुरखिलं हयमेधं महाक्रतुम् ।
विभज्य ब्रह्महत्यां तु वृक्षेषु च नदीषु च ।३३
पर्वतेषु पृथिव्यां च स्त्रीषु चैवाक्षिपद्विभुः ।
तां विसृज्य च भूतेषु विपापः पाकशासनः ।३४
विज्वरः समभूद्भूयः कालाकांक्षी स्थितो जले ।
अदृश्यः सर्वभूतानां पद्मनाले व्यतिष्ठत ॥३५

ब्रह्महत्या आदि पापों को वे निःसन्देह दूर कर देती है । इन्द्राणी को भी नित्य उन्हीं भगवती का पूजन करना चाहिये।३०। उन शिवा का आराधना सुखकारी होता है। अमित तेजस्वी भगवान विष्णु की बात सुनकर बृहस्पति कों आगे करके सब देवता वहाँ गये, जहाँ इन्द्रको आश्वासन देकर उस श्रेष्ठ यज्ञकी व्यवस्थाकी और जब वह यज्ञ सपंन्न हो गया तब वहाँ भगवान विष्णु ने आकर ब्रह्महत्या के विभाग किये तथा ये भाग वृक्षों नदियों और स्त्रियों में वितरितकर दिये। इसप्रकार इन्द्र ब्रह्महत्यासे मुक्त एवं शुद्धहो गये।३१-३४। यद्यपि वे सब चिन्ताओं से मुक्त हो गये थे, फिर भी वे कुछ दिन उसी कमलनाल में छिप कर ठहरे रहे।३५।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवास्तु निर्गताः स्थाने कृत्वा कार्यं तदद्भुतम् ।
पौलोमीं तु गुरुं प्राह दुःखिता विरहाकुला ।३६
कृतयज्ञोऽपि मे भर्ता किमदृश्यः पुरन्दरः ।
कथं द्रक्ष्ये प्रियं स्वामिस्तमुपायं वदस्व मे ।३७
त्वमाराधय पौलोमि देवीं भगवतीं शिवाम् ।
दर्शयिष्यति ते नाथं देवी विगतकल्मषम् ।३८
आराधिता जगद्धात्री नहुषं वारयिष्यति ।
मोहयित्वा नृपं स्थानात्पातयिष्यति चांबिका ।३९
इत्युक्त्वा सा तदा तेन पुलोमतनया नृप ।
जग्राह मन्त्रं विधिवद्गुरोर्देव्याः संसाधनम् ।४०
विद्यां प्राप्य गुरोर्देवीं श्रीभुवनेश्वरीम् ।
सम्यगाराधयामास बलिपुष्पार्चनैः शुभैः ।४१
कालेन कियता तुष्टा प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ ।
सौम्यरूपधरा देवी वरदा हंसवाहिनी ।४२
सर्वेश्वरी च सर्वज्ञा कूटस्थाऽक्षररूपिणी ।
तामुवाच प्रसन्ना सा शक्रपत्नीं कृतोद्यमाम् ।४३
मेघ गम्भीरशब्देन मुदमाददती भृशम् ।
वरं वरय सुश्रोणि वांछितं शक्रवल्लभे ॥४४

उनके इस प्रकार छिपे रहने पर विरह से व्याकुल इंद्राणी ने बृहस्पति से कहा कि हे भगवान् ! यज्ञ के सम्पन होने पर भी मेरे पति प्रत्यक्ष नहीं होते ? मुझे इन्हें देखने का कोई उपाय बताइये ।३६-३७। बृहस्पति ने कहा हे इंद्राणी तुम भगवती शिवा की आराधना करो, उन्हीं भगवती की कृपा से तुम्हें अपने पति के दर्शन होंगे ।३८। तुम्हारी आराधना से प्रसंन हुई भगवती नहुष की विमोहित कर देंगीं तब यह इंद्रासन से पतित हो जायगा ।३९। हे राजन् ! बृहस्पति के कहने पर इंद्राणी ने उनसे भगवती का मंत्र प्राप्त किया और उनकी अर्चना विधि भी जानली ।४०। इस प्रकार विद्या प्राप्त करके शची ने भगवती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीभुवनेश्वरी देवी का भले प्रकार आराधना आरम्भ किया ।४१। कुछ समय व्यतीत होने पर उन भगवती ने सौम्य स्वरूप धारण-पूर्वक हंस पर सवार होकर इन्द्राणी को दर्शन दिया ।४२। उन सर्वेश्वरी सर्वज्ञ कुटस्था एवं अक्षर स्वरूपिणी भगवतीसे प्रसन्न होकर मेघ जैसी गम्भीर वाणी में इन्द्राणी से कहा । देवी बोली—हे सुश्रोणि ! हे शक्रवल्लभे ! तुम अपना इच्छित वर माँगो ।४३-४४।

इत्युक्त्वा सा तदा देवी तामाह प्रणता पुरः ।
शक्रपत्नी भगवतीं प्रसन्ना परमेश्वरीम् ।४५
वांछामि दर्शनं मातः पत्युः परमदुर्लभम् ।
नहुषाद्भयनाशं च स्वपदप्रापणं तथा ।४६
गच्छ त्वमनया दूत्या सार्द्धं श्रीमानसं सरः ।
यत्र मे मूर्तिरचला विश्वकामाभिधा मता ।४७
तत्र द्रक्ष्यसि शक्रं त्वं दुःखितं भवविह्वलम् ।
मोहयिष्यामि राजानं कालेन कियता पुनः ।४८
स्वस्था भव विशालाक्षि करोमि तव चेप्सितम् ।
भ्रंशयिष्यामि भूपालं मोहितं त्रिदशासनात् ।४९
देवीदूतीं गृहीत्वा तां शक्रपत्नीं त्वरान्विता ।
प्रापयामास सान्निध्यं स्वपत्युः परमेश्वरीम् ।५०
सा दृष्ट्वा तं पतिं बाला सुरेशं गुप्तसंस्थितम् ।
मुदिताऽभूद्वरं वीक्ष्य बहुकालामिवांछितम् ।।५१

उन भगवती के ऐसा कहने पर इन्द्राणी ने उन प्रसन्न—वदना से कहा हे माता ! मुझे मेरे पति का दर्शन नहीं हो रहा है, मैं उनकी अभिलाषिणी हूँ और मैं नहुष के भयसे मुक्त हो जाऊँ और अपना वह पद पूर्ववत् प्राप्त करूँ ।४५-४६। तब भगवती बोली हे इन्द्राणी ! तुम मेरी दूती के साथ मानसरोवर पर जाओ, वहाँ 'विश्वकामा' नामक विख्यात मेरी एक प्रतिमा स्थापित है । वहीं तुम्हारी भय-दुःखित इंद्र से भेंट होगी । मैं राजा नहुष को भी विमोहित कर दूँगी ।४७-४८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तुम स्वस्थ होओ, मैं तुम्हारा इच्छित करूँगी मेरे द्वारा विमोहित हुआ नहुष इंद्रासन से भ्रष्ट हो जायगा ।४९। व्यासजी बोले हे राजन्! फिर देवी की एक दूती इंद्राणी को इंद्र के पास ले गयी तब उन दोनों में भेंट हुई। वहीं देवी की प्रतिमा के दर्शन हुए। इस प्रकार इंद्राणी की पति-दर्शन-लालसा भगवती की कृपा से पूर्ण हो गयी। इससे इन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई ।५०-५१।

रक्तबीज का वध

तां वीक्ष्य विपुलापांगीं रहः शोकसमन्विताम् ।
आखडलः प्रियां भार्यां विस्मितश्चाब्रवीत्तदा ॥१
कथमत्रागता कान्ते कथं ज्ञातस्त्ववा ह्यहम् ।
दर्शय सर्वभूतानां संस्थितोऽस्मि सुखानने ।२
दव देव्याः प्रसादेन ज्ञातोऽस्म्यद्य भवानिह ।
पुनस्तस्याः प्रसादेन प्राप्ताऽस्मि त्वां दिवस्पते ।३
नहुषो नाम राजर्षिः स्थापितो भवदासने ।
त्रिदशैर्मुनिभिश्चैव स मां बाधति नित्यशः ।४
पतिं मां कुरु चार्वंगिं तुराषाडं सुराधिपम् ।
एवं वदति मां पाप्म किं करोमि जनार्दन ॥५

व्यासजी बोले—हे राजन्! चिन्तित-हृदया इंद्राणी को वहाँ देख कर इंद्र ने विस्मय-पूर्वक कहा ।१। सु-प्रिये तुम यहां कैसे आ सकी? मेरे यहाँ रहने की बात तो किसी को ज्ञात नहीं है, फिर तुम कैसे जान गईं? ।२। शची बोली—हे देव देवी की कृपा से मैं आपके स्थान को जान सकी और उन्हीं के प्रसाद से यहाँ आ पहुँची ।३। हे प्रभो! सब देवता और मुनियों ने नहुष नामक एक राजर्षि को इंद्रासन पर बैठा दिया था, उसके द्वारा मैं सताई जा रही हूँ ।४। हे जनार्दन! वह पापी मुझसे कहता है कि मैं देवताओं का अधिपति हूँ, इसलिए तुम मुझे पति रूप में वरण करो। इस स्थिति में हेस्वामिन्! मुझे बताइये कि मैं क्या करूँ? ।५।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कालाक्षांक्षी वरारोहे संस्थितोऽस्मि यदृच्छया ।
तथा त्वमपि कल्याणि सुस्थिरं स्वमनां कुरु ।६

इत्युक्ता तेन सा देवी पतिनाऽतिप्रशंसिना ।
निःश्वसंत्याह तं शक्रं वेपमानाऽतिदुःखिता ।७

कथं निष्ठे महाभाग पापात्मा मां वशनुगाम् ।
करिष्यति मदोन्मत्तो वरदानेन गर्वितः ।८

देवाश्चऋषयः सर्वे मामूचुस्तद्भयाकुलः ।
तं भजस्व वरारोहे देवराजं स्मरातुरम् ।९

बृहस्पतिस्तु शत्रुघ्न वाडवो बलवर्जितः ।
कथं मां रक्षितुं शक्तो भवेद्देवानुगः सदा ।१०

तस्माच्चिताऽस्ति महती नीर्यंह वशवर्तिनी ।
अनाथा किं करिष्यामि विपरीते विधौ विभो ।११

नार्यस्म्यहं न कुलटा त्वच्चिताऽतिपतिव्रता ।
नास्ति मे शरणं तत्र यो मां रक्षति दुःखिताम् ।१२

इन्द्र बोले— हे वरारोहे ! मैं जैसे अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा में रुका हुआ हूँ, वैसे ही तुम स्थिर चित्तमे समय-यापन करो ।६। व्यासजी बोले कि पति के इन वचनों से इन्द्राणी का चित्त स्वस्थ नही हुआ और उन्होंने लम्बी साँस खीचते हुए तथा काँपते हुए कहा ।७। हे महाभाग मैं किस प्रकार रहूँ ? वह अत्यन्त दुराचारी नहुष अवश्य ही अपने वश में कर लेगा, क्योंकि वह वर-प्राप्त के अहङ्कार में भरा हुआ है ।८। उससे भयभीत हुए देवता और मुनि भी मुझसे उसे अपना पति बना लेने को कहते हैं ।९। बलहीन बृहस्पति ही नहुष के चंगुल से मेरी रक्षा कैसे कर सकेंगे, जबकि वह स्वयं भी देवताओं के अनुयायीहैं ।१० हे प्रभो ! मैं आपकी वशवर्तिनी पत्नी हूँ, विधाता ही विपरीत है तो मैं अनाथ क्या कर पाऊँगी ? ।११। मैं कुलटा नहीं हूँ सदैव आपका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिन्तन करने वाली पतिव्रता हूँ इस समय मुझ दुःखिया का कोई भी रक्षक दिखाई नहीं देता ।१२।

उपायं प्रब्रवीम्यद्य ते कुरुष्व वरानने ।
शीलं ते दुःखिते काले परित्रातं भविष्यति ।१३
परेण रक्षिता नारी न भवेच्च पतिव्रता ।
उपायै कोटिभिः कामं भिन्नत्तिताऽतिचञ्चला ।१४
शीलमेव हि नारीणां सदा रक्षति पापतः ।
तस्मात्त्वं शीलमास्थाय स्थिरा भव शुचिस्मिते ।१५
यदा त्वां नहुषो राजा बलादाकर्षयेत्खलः ।
तदा त्वं समय कृत्वा गुप्तं वंचय भूपतिम् ।१६
एकान्ते तत्समीपे त्वं गत्वा वदे मदालसे ।
ऋषियानेन दिव्येन मामुपैहि जगत्पते ।१७

इन्द्र बोले ! श्रेष्ठ मुख वाली ! मैं जो उपाय कहताहूँ उसके करने से तुम्हारा शील बच जायेगा ।१३। पराये रक्षण में रहकर स्त्री करोड़ों उपाय करके भी अपने शील की रक्षा कर नहीं पाती क्योंकि उसका चित्त अत्यन्त चंचल होता है ।१४-१५। वह पापी नहुष जब तुम्हें प्राप्त करना चाहे तब तुम छल द्वारा उससे अपनी रक्षा करना ।१६। तुम नहुषके पास एकान्त में जाकर कहना कि आप मुझे ग्रहण करने के लिए ऐसे दिव्य वाहन पर सवार होकर आना जिसे ऋषिगण ढोकर ल.वें ।१७।

एवं तत्व वशे प्रीता भविष्यामीति मे व्रतम् ।
इति तं वद शृ श्रीणि तदा तु परिमोहितः ।१८
कामाधः स मुनीन् याने योजयिष्यति पार्थिवः ।
अवश्यं तापुतो भूपं शापदग्धं करिष्यति ।१९
साहाय्यं जवदम्बा ते करिष्यति न संशयः ।
जगदम्बाप्रसादात्तु संकटान्न कदाचन ।२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इत्याख्याता शची तेन जगाम नहुषं प्रति।
नहुषस्तां समालोक्य मुदितो वाक्यमब्रवीत् ।२१
स्वागतं सत्यवचनैस्त्वदधीनोऽस्मि कामिनी।
दासोऽहं तव सत्येन पालितं वचनं त्वया ।२२
कार्यं वद विशालाक्षि करिष्यामि तवं प्रियम्।
सर्वं कृतं त्वया कार्यं मम कृत्रिमवासव ।२३
मनोरथोऽस्ति मे देव शृणु चित्तेऽधुना विभो।
वांछितं कुरु कल्याण त्यद्वशाऽहमतः परम ।२४

जब आप इस प्रकार मेरे पास आवेंगे तब मैं प्रसन्नता से आपकी हो जाऊँगी। तब वह कामान्ध नरेश मुनियों को पालकी ढोनेमें नियुक्त करेगा और उन्हीं के शाप से भस्म हो जायेगा ।१८-१६। इस कार्य में भगवती जगदम्बा भी तुम्हारी सहायता करेंगी, क्योंकि जगदम्बा का स्मरण करने वाले पर कभी संकट नहीं आता ।२०। व्यास जी बोले—हे जनमेजय ! यह कहने पर शची वहाँ से नहुष के पास गई जिसे देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न होता हुआ बोला ।२१। हे कामिनी! तुम्हारा स्वागत है, तुमने अपने वचन निभाये हैं, यह देखकर मैं तुम्हारा दास हो गया हूँ ।२२। हे विशालाक्षि ! तुम्हारी कोई इच्छा हो तो मुझे बताओमैं उसे पूर्ण करूँ। शची बोली—हे कृत्रिम इन्द्र आपकी कृपा से मेरे सभी कार्य सिद्ध हो गए हैं ।२३। परन्तु देव ! मेरी एक इच्छा है, उसे सुनकर पूर्ण कर दीजिए तब मैं आपके वश में हो जाऊँगी ।२४।

ब्रवीमि मानसोत्साहं त्वं कर्तुमिहार्हसि।
कार्यं त्वं ब्रूहि चन्द्रास्ये करोमि तव वांछितम् ।२५
अलभ्यपिम दस्यामि तुभ्यं सुभ्रु वदस्व माम्।
कथं ब्रवीमि राजेन्द्र प्रत्ययो नास्ति मे तव ।२६
शपथं कुरु राजेन्द्र यत्करोमि प्रियं तव।
राजानः सत्यवचसा दुर्लभा एव भूतले ।२७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पश्चाद्ब्रवीम्यहं राजञ्ज्ञात्वा सत्येन मन्त्रितम् ।
कृते चेद्वांछिते भूप सदा ते वशवर्तिनी ।२८
भविष्यामि तुराषाड् वै सत्यमेतद्वचो मम ।
अवश्यमेव कर्तव्यं वचनं तव सुन्दरि ।२९
इन्द्रस्य हरयो वाहा गजश्चैव रथस्तथा ।
गरुडो वासुदेस्य यमस्य महिषस्तथा ।३०
वृषभः शंकरस्यापि ब्रह्मणो वरटापतिः ।
इच्छाम्यहमपूर्वं वै वाहनं ते सुराधिपः ।३१
यन्न विष्णोर्न रुद्रस्य नासुराणां न रक्षसाम् ।
वहंतु त्वां महाराज मुनयः संशितव्रताः ।३२
सर्वे शिविक्रया राजन्नेतद्धि मम वाछितम् ।
सर्वेदेवाधिकं त्वां वै जनामि वसुधाधिप ।३३

तस्यास्तद्वयनं श्रुत्वा प्रयस्य ज्ञानदूर्बलः ।
उवाच वचनं भूपः संस्तुवन्वासवप्रियाम् ।३४
सत्यमुक्तं त्वया तन्वि वाहनं रुचिर मम ।
करिष्यामि सुकेशांते वचनं तव सर्वथा ।३५

यह सुनकर अत्यन्त उत्साहित हुए नहुष ने कहा हे चन्द्रमुखी ! तुम अपना अभीष्ट बतलाओ तो सही, मैं उसे अभी पूरा करूँगा ।२५। हे श्रेष्ठ भौंहों वाली, मुझसे कहो तो सही,मैं दुर्लभ वस्तुको भी तुम्हारे लिये तुरन्त सुलभ कर दूँगा । शची बोली—हे राजन्, आप मुझ पर पूर्ण रूपेण विश्वास नहीं कर रहे तो मैं अपना इच्छित कैसे प्रकट करूँ ।२६। आप मेरा प्रिय करने की शपथ लें तो अपनी कामना व्यक्त करूँ । क्योंकि पृथिवी पर सत्यवादी राजा बहुत कम होतेहैं ।२७ हे राजन् ! मैं सत्य कहती हूँ कि आपका मन्तव्य जानकर और अपनी इच्छा पूर्ण हुई देखकर अवश्य ही आपकी वशवर्तिनी हो जाऊँगी ।२८। मेरा यह वचन सत्य है । नहुष बोले कि—हे सुन्दरी, तुम्हारा वचन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवश्य मानूँगा।२९। यह सुनकर शची ने कहा—हे राजन् ! इन्द्र के वाहन तो घोड़े-हाथी हैं, भगवान् का गरुड और यम का भैंसा है।३०। शिवजी का वाहन बैल और ब्रह्मा का वाहन हंस है, इसलिए हे देवाधिपति ! मेरी इच्छा है आपका वाहन उन सबसे अपूर्वहो।३१। विष्णु, रुद्र और असुरगण भी जिसका प्रयोग न कर सके हों,वैसा वाहन वह हो सकता है जिसे दृढ़व्रती मुनिगण वहन करें। हे राजन् ! उन मुनियों को पालकी में जोत दिया जाए, ये ही मैं चाहती हूँ, आप ऐसा करने में समर्थ हैं, क्योंकि आप सब देवताओं में विशिष्ट हैं।३२-३३ व्यासजी बोले—जनमेजय ! इन्द्राणी के वचन सुनकर वह नहुष हँस पड़ा और उसकी प्रशंशा करता हुआ बोला।३४। नहुष बोला—हे तन्वंगी तुमने मेरे मन के लिये सत्य वचन कहे है मैं तुम्हारे कथानुसार ही कार्य करूँगा।३५।

इत्युक्त्वा तां सुसंतुष्टो विससर्ज हरिप्रियाम्।
मुनीनाहूय सर्वांस्तातित्युवाच स्मरान्वितः।३६
अहमिन्द्रोऽद्य भो विप्रा सर्वशक्तिसमन्वितः।
कार्यमत्र प्रकुर्वंतु भवतो विगतस्मयाः।३७
इन्द्रासनं मया प्राप्तं नेन्द्राणी मामुपेति च।
आकारिता च मां ब्रूते प्रेमपूर्वंतिदं वचः।३८
मुनियानेन देवेन्द्र मुमुपैहि सुराधिपः।
देवेदेव महाराज मत्प्रियं कुरु मानद।३९
एतत्कार्यं मुनिश्रेष्ठा ममात्यंतं दुरासादम्।
भवद्भिस्तु प्रकर्तव्यं सवथैव दयालुभिः।४०
मनो दहति मे कामः शक्रपत्न्यां प्रवर्तितम्।
भवन्तः शरणं मेऽद्य कुरुध्वं कार्यमद्भुतम्।४१

व्यासजी बोले—हे राजन् ! इस प्रकार के वार्तालाप से सन्तुष्ट हुए नहुष ने इन्द्राणी को जाने की आज्ञा देकर सभी मुनियों को अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकट बुलाया और कहने लगा।३६। नहुष बोला—हे विप्रगण ! मैं सर्वशक्ति-सम्पन्न इंद्र हूँ, इसलिए आप सब मेरा प्रिय करें।३७। इंद्रासन तो पा चुका हूँ, परन्तु इंद्राणी अभी नहीं आई है,उसने मुझसे कहा है कि हे देवेन्द्र ! मुझे प्राप्त करने के लिए आप उस वाहन पर चढ़कर आइये जिसे मुनिगण वाहन करें, यह मेरी इच्छा आप पूर्ण करें।३८-३९। हे श्रेष्ठ मुनि गण ! यद्यपि मेरा यह कार्य कठिन है परन्तु आप दयालु हैं। मेरा चित्त इंद्राणी की आसक्ति में दग्ध हो रहाहै अतः इस अद्भुत कार्य को सम्पन्न करके मेरे लिए आश्रय-रूप हों।४०-४१।

अगस्तिप्रमुखास्तस्य श्रुत्वा वक्यमसत्करम्।
अंगीचकुश्च भावित्वात्कृपया परमर्षयः।४२
अङ्गीकृतेऽथ तद्वाक्ये मुनिभिस्तत्वदर्शिभिः।
मुदं प्राप नृपः कामं पौलोमीकृतमानसः।४३
आरुह्य शिविकां रम्यां संस्थितस्त्वरयाऽन्तिः।
बाहान्कृत्वा मुनीन्दिव्यान्सर्प सपति चाब्रवीत्।४४
कामार्तः सोऽपृशन्मूढः पादेन मुनिमस्तकम्।
कशया ताडयामास पंचबाणशराहतः।४५
तं शशाप मुनिः क्रुद्धः कशाघातमनुस्मरम्।
सर्पो भव दुराचार वने घोरवपुर्महान्।४६
बहुवर्षसहस्राणि तत्र क्लेशो महान्भवेन्।
एवं शप्तः स राजर्षिः स्तुत्या तं मुनिसत्तमम्।४७
स्वर्गात्पपात सहसा सर्परूपधरोऽभवत्।
बृहस्पतिस्ततो गत्वा तरसा मानसं प्रति।४८

उस मुनि प्रमुख महर्षि अगस्त्य ने भावी वश नहुष की बात स्वीकार कर ली।४२। यह देखकर उस कामासक्त राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई।४३। वह तत्काल एक पालकी पर सवार हुआ और मुनियों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके वहन में नियुक्त करके सर्प, सर्प, (चलो, चलो) कहने लगा ।४४। उस समय काम के वेग से नहुष की बुद्धि मारी गई थी, इसलिए वह मुनि के मस्तक पर अपना पद प्रहार करके कोड़ा भी चला बैठा ।४५। तब महर्षि ने कोड़े के आघात लगने से अत्यन्त व्याकुल और क्रोधित होकर उसे शाप दिया कि अरे दुराचारी ! तू चोर-काय सर्प होकर वन में हजारों वर्ष विचरण करता हुआ भीषण यन्त्रणा सहन करेगा । व्यासजी बोले कि इस प्रकार शापित होने पर नहुषने उन महामुनि की स्तुति की ।४६-४७। फिर वह तुरन्त ही सर्प—रूप होकर स्वर्गसे पतित हो गया । यह देखकर बृहस्पति मान सरोवर पर गये ।४८।

इन्द्राय सर्ववृत्तान्तं कथयामास विस्तरात् ।
इच्छ्रुत्वा मघवा राज्ञः स्वर्गात्प्रच्यवनादिकम् ।४९
मुदितोऽभून्महाराज स्थितस्तत्रैव वासवः ।
देवाश्च मुनियो दृष्ट्वा नहुषं पतितं भुवि ।५०
जग्मुः सर्वेऽपि तत्रैव यत्रैन्द्रः सरसि स्थितः ।
तमाश्वास्य सुराः सौ सुनिभिः सहितास्तदा ।५१

स्वर्गं समानयामासुर्मानपूर्वं शचीपतिम् ।
तमागतं यतः शक्रं सर्वे ते मुनय. सुराः ।५२
स्थापयित्वाऽऽसने पश्चादभिषेकं दधुः शिवम् ।
इन्द्रोऽपि स्वसनं प्राप्य शच्या सह सुरालये ।५३

उन्होंने वहाँ जाकर इन्द्र को सब समाचार सुना दिया, नहुष के स्वर्ग से गिरने की बात से इन्द्र बहुत प्रसन्न हुए तभी सब देवता और मुनिगण इन्द्र के पास पहुँच गये और उन्हें आश्वस्त करके स्वर्ग में ले आये ।४९-५२। फिर उन्हें स्वर्ग के सिंहासन पर अभिषिक्त किया । इस प्रकार इन्द्र आसन को पुनः प्राप्त करके शची के साथ स्वर्ग में रहने लगे ।५३।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिकीड नन्दने रम्ये कानने प्रेमयुक्तया ।
एवं मिद्रेणसंप्राप्तं दुःखं परमदारुणम् ।५४
हत्वाऽसुरं कामरूपं विश्वरूपं महामुनिम् ।
पुनर्देव्याः प्रसादेन स्वस्थानं प्राप्तवन्नृप ।५५
एतत्ते सर्वमाख्यातं वृत्रासुरवधाश्रयम् ।
यत्पृष्टोऽहं त्वया राजन्कथानकमनुत्तमम् ।५६
यादृशं कुरुते कर्म तादृशं फलमाप्नुयात् ।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।५७

देवराज इन्द्र सुरम्य नन्दन कानन के सुखों का प्रेम सहित उपभोग करने लगे व्यासजी बोले कि हे राजन् ! इस प्रकार इच्छित रूपधारी महामुनि स्वरूप असुर को मारने के कारण, ब्रह्महत्या के फल स्वरूप उपलब्ध परम दारुण दुःखों को पुनः प्राप्त कर लिया ।५४-५५। हे राजन् ! वृत्रासुर के वध की यह अत्यन्त अद्भुत कथा मैंने तुम्हें सुनाई है ।५६। जो प्राणी जैसा कर्म करता है उसे उसका वैसा ही फल मिलता हैं, क्योंकि शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना होता है ।५७।

❀ श्री देवी भागवत प्रथम खण्ड समाप्त ❀



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri